॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

दिगंबर जैन.

THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिर्विविधश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्तताम्, दैगम्बरं जैन समाज-मात्रम् ॥

वर्ष. | वीर संवत् २४४६ वैशाख. विक्रम सं० १९७६. | अंक

"नव वर्ष"

नाथ दयामय ! धन्य धन्य है करुणा तेरी,
प्रेम, हर्ष, आनंद-जन्य है करुणा तेरी।
तेरी करुणा कोर व्योम, रवि, शशि, तारोंमें,
वन उपवनमें फैल रही है वह सारोंमें।
वही मधुर करुणा-भरी कृपा प्रभो! हम पर रहे,
पत्र 'दिगम्बर जैन' जो पथपर नित दृढ़तर रहे ॥ १ ॥

नव वत्सर भगवान् हमारा, सुखमय होवे,
पारस्परिक विद्वेष भाव भूतलमें खोवे।
डटा रहे कर्तव्य मार्ग पर अविचल होकर,
गिर न पड़े यह कभी लाख भी खाकर ठोकर।
धन-निर्भिक सदैव यह पथ दिखलाता ही रहे,
कभी सीख सुखदा सदा यह सिखलाता ही रहे ॥ २ ॥

जैसा यह गत वर्ष समुन्नत पत्र रहा है,
जिस अर्क ३ दन बने दुःख सुख सभी सहा है।
वैसा ही अभ्युदित अचल यह रहे सदा ही,
जो कुछ भी आपड़े हर्षसे सहे सदा ही।
ऐक्य स्नेह समतादिका करता रहे प्रचार यह,
स्वार्थ-रहित रह कर सदा करे स्वपर उपकार यह ॥ ३ ॥

जैन जाति जग जाय ज्योतिमें, ज्ञानारुणकी,
झोंक फटे छल, कपट, स्वार्थ हिंसा, दुर्गुणकी।

पांच वर्षकी विना न्यायकी नज बंदीसे पं लेश भी क्लेश नहीं हो,
अर्जुनलालजी
सेठीजी । ए० तीन चार ही बी पत्रिक असत्यावेश नहीं हो ।
मुक्त हुए हैं और हा स्वयं इसको शुभ सन्देश दे,
अजमेरमें निवास कर रहे हैं और आप ही इसे प्रेम-दान प्रेमेश दे ॥ ४ ॥
आंदोलनमें योग देने लगे हैं वर्ष हर्ष उत्कर्ष पूर्ण हो,
और विना कारण बताये १०००) का प वृन्दका हृदय चूर्ण हो ।
मांगने लगी उसको अस्वीकार से यह करे सुसेवा,
आपने जयपुर रहना छोड़ दिया आरता-फलका मेवा ।
स्वास्थ्य अब ठीक है और सार्व यदि सुधा-सिञ्चित रहे ।
के साथ २ आपको जैनसमाज ग्रंथोंका निश्चिन्तित रहे ॥ ५ ॥
ये भी करना चाहिये । आप बडे ज्येष्ठ सुदी हीं मिलेगा ?
मी हैं और आपकी निःस्वार्थ सेवाका भंडार खोल हीं मिलेगा ?
ल पाठकोंके हृदयमें अहर्निश रहे इसीलिये जिनको गत्ते मिलेगा ?
आपका चित्र जो इस अंकके साथ ७ माहका यदि ग्रन्थोंकी हीं मिलेगा ?
जैन तिथि दर्पण भेजा गया है उसमें प्रकट कर लीजिये और फूलें फलें,
दिया है । आगामी कार्तिक मासमें वीर सं० शास्त्रोंको विराज देशि चले ॥ ६ ॥
२४४७का तिथि दर्पण प्रकट होगा ही इसी- स्कंध विष कस्तूला ।
लिये दिवाली तकका ही प्रकट किया है जिससे नोंको एक (पुन
नवीन वर्ष फिर कार्तिकसे ही प्रारम्भ होसके। जोर शास्त्र करके नंदसे

आगामी ज्येष्ठ सुदी ५ को हमारा महान पर्व "श्री श्रुतपंच- मी पर्व" आता है । कोई १५ वर्ष हुए जैन- समाज सेवक बाल ब्रह्मचारी पं० पन्नालालजी बाकलीवालने इस पर्वको माननेकी चर्चा प्रारम्भ की थी तबसे इस पर्वको माननेकी परिपाटी पुनः चालू हुई है । श्रुतस्कंध विधान (शास्त्र- पूजा) करनेका यह वार्षिक पर्व है । इसी निमि-

श्रुतपंचमी ।

पने मंदिरमें न हो वे
प्रबंध उसी प्रकार कीजिये । ग्रामको या
एक सभा करके सब भाई और बा
श्रुतपंचमी और हमारे कर्तव्यपर व्या
कराके सब ध्यान प्राचीन ग्रन्थ जीर्णो
तरफ खींच चाहिये । अब बहुतसे ग्रन्थ
चुके हैं इससे छपे हुए ग्रन्थकी एकर
हरएक में होनी चाहिये क्योंकि छपे
ग्रन्थकोंको भी पढ़ लेते हैं और आम
मुनि के अभावमें स्वाध्याय करनेसे
हम जो बहुत कुछ परिचय पा सकेंगे ।

हमारे स्वर्गीय दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणिकचंदजीके स्मरणमें

माणिकचंद ग्रन्थ-माला। बम्बईमें एक 'माणिकचंद ग्रन्थमाला' नामक संस्कृत ग्रन्थमाला चार पांच वर्षसे स्थापित की गई है जिसकी ओरसे आजतक १४ ग्रन्थ प्रकट हो चुके हैं और लागतके मूल्य पर सबको दिये जाते हैं। इसमें फंडकी कमी होनेसे गत वर्षमें श्रीमान् ब्र० शीतलप्रसादजीने बहुत कुछ परिश्रम करके इसमें १००००) और भरवा दिये हैं जिससे अब इसका कार्य लगातार चालू रहेगा। हरएक मंदिरमें इस ग्रन्थमालाके ग्रन्थ संग्रह करने चाहिये तथा संस्कृतके विद्यार्थियोंको मंगाकर बांटने चाहिये। बम्बईसे और हमारे पुस्तकालयसे भी इस ग्रन्थमालाके सभी ग्रन्थ मिल सकते हैं।

થોડો લાભ મળે તો તેથી સંતોષ માનશોજી એમ આશા છે હવે પછીના બધા અંકો દર મહિને નિયમિત બહાર પાડવામાં આવશેજી દિવાળી સુધીનું લવાજમ માત્ર ચાર આના દરેક ગ્રાહકે મનિઓર્ડરથી મોકલી આપવા નહિ તો આવતો અંક પંદર આનાની વી. પી. થી મોકલવામાં આવશે

× × ×

પાવાગઢના ઠરાવો. આપણી ગુજરાત દિગંબર જૈન પ્રાંતિક કોન્ફરન્સ (સભા) ની વાર્ષિક બેઠક ગત માહ માસમાં સિદ્ધક્ષેત્ર શ્રી પાવાગઢમાં શેઠ રાવજી સખારામ દોશી સોલાપુર નિવાસીના પ્રમુખપણે મળી હતી જે સમયે વિશેષ આંદોલનના અભાવે તથા 'દિગંબર જૈન' બંધ હોવાથી જો કે વિશેષ સભ્યોની હાજરી નહોતી તોપણ તેમાં પસાર થયેલા ઘણા ઠરાવો અતિ મહત્વના હોવાથી તેનો ટુંક સાર નીચે આપીએ છીએ–

(૧) આવતા શિયાળામાં નામદાર પ્રિન્સ ઓફ વેલ્સ હિંદુસ્તાન આવનાર છે ત્યારે તેમને દિગંબર જૈનો તરફથી માનપત્ર આપવું આ બાબત આપણી મહાસભાએ અત્યારથીજ પ્રયાસ કરવો જોઈએ અને પ્રોગ્રામમાં આપણા તરફના માનપત્રનો સમય નક્કી કરી લેવો જોઈએ. (૨) જ્યાં જ્યાં ન હોય ત્યાં દરેક સ્થળે જૈન પાઠશાળા અને કન્યા પાઠશાળા સ્થાપવી જોઈએ ગુજરાતમાં આંગળીના વેઢા પર પણ ગણાય એટલી પાઠશાળાઓ નથી રહી વળી જે ચાલુ પાઠશાળાઓ બંધ પડી છે તો બંધ થએલી પાઠશાળાઓ ચાલુ કરવી જોઈએ તથા ન હોય ત્યાં સ્થાપવી જોઈએ. ઉપ-ચના અભાવે જ્ઞાન મેળવવાનો ઉત્તમ ઉપાય પાઠશાળાજ છે માટે એ તરફ ગુજરાતના ભાઈઓનું અમે લક્ષ ખેંચીએ છીએ (૩) ગુજરાતમાં ગુજરાતી ભાષા જાણનાર એક પણ પંડિત નથી જેથી ગુજરાતી પંડિતો ઉત્પન્ન કરવા માટે ગુજરાતમાં એક સંસ્કૃત વિદ્યાલય ખુલવાની અત્યંત જરૂર છે જે પાવાગઢ કે અમદાવાદ જેવે સ્થળે સ્થપાય તો ઘણો લાભ થાય (૪) સજાતિ વિભાગો દેવ

धर्मशाला बनानेके लिये दिगम्बर जैन सज्जनोंसे अपील करते हैं।

देहलीकी–जैन ऐंग्लो संस्कृत हाईस्कूलको करीब एक लाख रुपये स्व० सोहनलालजीकी ओरसे दिये गये और स्कूलका नाम अब हीरालाल जैन ऐं० सं० हाईस्कूल पड़ा है। लाला जग्गीमलजीका प्रयास अतीव प्रशंसनीय है।

खंडेलवाल–दि० जैन महासभाकी स्थापना हो चुकी है और प्रारम्भिक अधिवेशन इन्दौर या बम्बईमें होनेकी कोशिश हो रही है। महामंत्री पं० पन्नालालजी चंदावाडी गिरगाम बम्बई है।

गोपाल विद्यालय–स्वर्गीय पं० गोपालदासजी बरैया द्वारा स्थापित मुरेनाके जैन सिद्धांत विद्यालयको एक लाख रु. का स्थायी फंड हो गया और अब विद्यालयके साथ पंडितजीका नाम जोड़ा गया है।

अकलतरा–और जबलपुरके मेलेमें परवार महासभाकी बैठकें हुई थीं जिसमें औद्योगिक विद्यालय खोलनेके लिये ९०००) का चंदा हुआ था।

सागवाड़ा–(डुंगरपुर) में विद्यालय और बोर्डिंगकी स्थापना हो गई है।

महासभा–मगसर मासमें अजमेरमें भारत दि० जैन महासभाका अधिवेशन रा० ब० शेठ टीकमचंदजी सोनीके सभापतित्वमें सफलतासे हुआ था। सभापतिजीने ९९०१) सभाको दिये थे तथा राजपूताना दि० जैन प्रांतिक सभा स्थापित हुई थी।

फीरोजपुर–में एनीमल्स फ्रेन्ड सोसायटी स्थापित हुई है जिसका उद्देश प्राणियोंमें मैत्रीभाव और सुवर्ताव बढ़ानेका है। सबको इसका सभासद बनना चाहिये। मंत्री भगतरामजी फीरोजपुर हैं।

आसाममें धर्म प्रभावना—खास आमंत्रण होनेसे श्रीमान ब्र० शीतलप्रसादजी और पं० कस्तूरचन्दजी गत मासमें आसाम प्रांतमें करीब एक माह तक स्थान२ पर घूमे थे और हरएक स्थानपर आम सभाएं करके उसमें अंग्रेजी तथा हिन्दी भाषामें जैन धर्मके सिद्धांत पर व्याख्यान दिये थे जिसमें बड़े २ ओफिसर तथा अनेक प्रतिष्ठित अजैनोंने हजारोंकी संख्यामें योग दिया था। प्रथम डिब्रुगढ़की सभामें जाति-सुधारके प्रस्ताव पास हुए थे तथा आसाम दि० जैन प्रां० सभा स्थापित हुई थी। ब्रह्मचारीजीके प्रयाससे दानकी वर्षा भी इस प्रान्तमें अच्छी हुई है यानि करीब ४०००) काशी, हस्तिनापुरकी संस्था, मालवा सभा। औषधालय और महासभा इन चार संस्थाओंको पलासवाड़ी, हिली, मनीपुर, कोहीमा और डिब्रुगढ़से मिले थे तथा हिलीमें चैत्यालयके लिये १७०१), कोहीमामें चैत्यालय बनानेको ४७१९), डीमापुरमें मंदिरके लिये २१९४, का चंदा हुआ था। इस भ्रमणसे आसाममें जैन धर्मकी अच्छी प्रभावना हुई है और वहांके जैनियोंमें धर्म जागृतिका बीज बोया गया है।

ઔષધાલય-કેતકી નિમગાંવમાં વૈશાખ સુદ ૧૩ ને દિને મ્હેતા માણેકચંદ નવજીના નામથી જૈન ઔષધાલયની સ્થાપના થઈ છે જેને ૧૪૦૦૦) ની રકમ શ્રીમતી જીવુબાઈ માણેકચંદે આપીછે.

जैन समाजकी आवश्यकतायें ।

(लेखक—श्री सत्यभक्त)

यह किसीसे छुपा नहीं है कि वर्तमान समयमें जैनसमाज घोर अनवति पूर्ण दशामें पड़ा हुआ है ।सामाजिक दृष्टिसे, राजनैतिक दृष्टिसे, धार्मिक दृष्टिसे सभी प्रकार वह हीन हो गया है और दिन पर दिन गिरता जाता है । यद्यपि आज कल संसारमें युगान्तरकारी परिवर्तन हो रहे हैं, जगतकी अवस्था क्षण क्षणमें बदल रही है, पराधीन लोग स्वाधीन होनेका उद्योग कर रहे हैं, दुर्बल सबल होनेकी चेष्टामें, नीचे गिरे हुये ऊपर चढनेका प्रयत्न कर रहे हैं, सोते हुये आंखें खोल कर सावधान हो रहे हैं; पर जहां तक मालूम पड़ता है जैन समाज पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा, उसमें कोई खास परिवर्तन, बदलाव, उन्नतिके लिये उद्योग, सुधारकी चेष्टा देखनेमें नहीं आती ।

[illegible] कारण है कि जब समस्त जगत अवन[illegible]से छुटकारा पानेको व्याकुल है, आगे [illegible] लिये हाथ पैर मार रहा है, अपनी [illegible]क्तिको उन्नति, सुधारके लिये खर्च [illegible] तब जैन जाति अपनी दशाको [illegible] प्रकार बेखबर है, लापरवा और [illegible] है । क्या उसे अपने भले बुरेका [illegible] नहीं, अथवा उसे अपने नाश होनेकी [illegible] नहीं; या उसमें ऊपर उठने सुधार करकी शक्ति नहीं ? क्यों इस युग परिवर्तनकारी कालमें भी वह इस प्रकार आंखें बंद करके पडी है; नाना प्रकारकी प्राचीन थोथी, हानिकारिणी प्रथाओंका पल्ला पकड़े हुये है, नाशकारिणी कुरीतियों पर मोहित है ?

जहां तक जाना जा सकता है इस समस्त अवाञ्छनीय, अनुचित, असामायिक, नाशक व्यवस्थाका प्रधान कारण जैनियोंमें फैला हुआ **अज्ञानान्धकार** है। कोई भी समाज, जाति, देश, राष्ट्र उस समय तक उन्नति पथपर अग्रसर नहीं हो सकता जब तक उसमें फैला हुआ अज्ञान दूर करके ज्ञानका प्रचार नहीं किया जाता । ज्ञान, विद्या आदिके द्वारा ही मनुष्य अपनी दशा, संसारकी गति, कालकी चाल, उन्नतिके उपाय, सुधारका मार्ग आदि बातोंको जान सकता है । जब तक मनुष्यकी आंखोंके सामने अज्ञानका पर्दा पडा रहता है तब तक उससे अपने भले बुरे समझ सकनेकी आशा करना एकदम बेकार है । अतएव जिस जाति, समाजको अपनी उन्नति, सुधार, तरक्कीकीअभिलाषा—आकांक्षा हो उसका कर्तव्य है कि, सबसे प्रथम अपनेमें फैले हुए अज्ञानको दूरकर ज्ञान फैलानेका उद्योग करे। जब ज्ञानका सूर्य प्रकाशित होगा तो स्व अपने आप हृदयमेंसे अज्ञानान्धकार निकल भागेगा और लोग अपनी भलाई बुराईको समझने हुये ठीक

ठीक संचार देव सकनेमें समर्थ हो सकेंगे।

यद्यपि समाज, जातिमेंसे अज्ञानको दूर करके उसे उन्नति पथ पर अग्रसर हो सकने योग्य बनानेके अनेकों मार्ग हैं पर न तो समस्त प्रत्येक समयमें किये जा सकते हैं और न सब कोई उनके कर सकनेमें समर्थ हो सकते हैं। अतएव हमको यहां ऐसी दो एक बातों पर विचार करना चाहिये कि जिनको व्यवहारिक रूप देसकना सहज श्रमसाध्य और विशेष आडम्बरशून्य हो तथा जिनसे लाभ भी पर्याप्त हो सके। हम यहां पर केवल दो बातें बतलायेंगे, ठीक हो सका तो इनसे अधिक उपायोंका वर्णन करनेकी चेष्टा फिर कभी की जायगी।

अज्ञानको दूर करनेका मुख्य उपाय विद्याका प्रचार है। जिस जातिमें विद्याके प्रति प्रेम होता है, जिसके बच्चोंको आरम्भ ही से बुद्धिमान सच्चारित्र सुशील बनानेकी चेष्टा की जाती है उसमें अज्ञानका स्थिर रह सकना सम्भव नहीं। यद्यपि आजकल जैनी लोग विद्याके प्रति कुछ प्रेम प्रगट कर रहे हैं और सैंकडो हजारों जगह पाठशाला विद्यालय आदि भी खोले जा रहे हैं पर वास्तवमें इनसे कोई विशेष लाभदायक फल प्राप्त कर सकनेकी आशा नहीं की जा सकती। संसारमें सदा समयानुकूल बातोंका अवलम्बन करनेसे ही सफलता प्राप्त होती है। संसारकी गतिके विरुद्ध किसी बातको प्राचीनता अथवा अन्य किसी दृष्टि महत्व दे कर ग्रहण करनेसे विडम्बनाके सिवाय और कुछ नहीं मिलता। इसीमें कहने वहा है कि "जैसी चले बयार पीठ तब तैसी दीजे।" संसारके विरुद्ध चल कर न आज तक कोई सफलता प्राप्त कर सका है न आगे प्राप्त कर सकना संभव है।

इस प्रकार विचार करनेसे पता चलता है कि, इस क्रांतिकारी कालमें जैनियोंको इन पुराने ढर्रेकी नौ दिनमें ढाई कोस कर मार्ग तय करनेवाली, दूषित नियमों–प्रणालियोंसे भरी हुई पाठशालाओं आदिके द्वारा अज्ञानको दूर करके ज्ञान फैलनेकी उम्मेद रखना बुद्धिमत्ताके विरुद्ध है। क्या इन तोतोंकी तरह बालकों इधर उधरके श्लोक रटा देनेवाली पाठशालाओंकी शिक्षासे जैन नव युवकोंके मस्तिष्क बुद्धिका विकाश हो सकता है? क्या इनमें पढ़कर वे प्रकृत बुद्धिमान बन सकते हैं? क्या इन पाठशालाओंसे निकले हुये विद्यार्थी वर्तमान समयके कंटका कीर्ण दुरुह जीवन-संग्राममें सफलता प्राप्त कर सकते हैं?

यदि जैनियोंको वास्तवमें उन्नति सुधारकी अभिलाषा है, यदि वे अवनति अन्धकारके गहरे गढेमेंसे निकल कर उन्नति, ज्ञानकी चोटी पर चढ़ना चाहते हैं; यदि उनकी इच्छा है कि संसारकी जातियोंकी दौड़में हम दूसरोंके बराबर रहें; यदि वे चाहते हैं कि, हम कुछ समय तक संसारमें स्थित कायम रहें, तो सबसे पहली बात यह करनी आवश्यक है कि, अपने बालकोंको आधुनिक ढंगकी, लाभजनक, जीवन संग्रामके योग्य बनानेवाली उत्कृष्ट शिक्षा दिलानेका उपाय करें। खेदकी बात है कि, जैनियोंका ध्यान इस ओर बिल्कुल नहीं है। जब हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, आर्यसमाजी, थियोसफिस्ट तथा अन्यान्य सभी छोटी बड़ी

जातिवाले अपने अपने बच्चों, युवकोंकी शिक्षाके लिये स्कूल, कालिज खोल रहे हैं वहाँ जैनी लोग इस ओर दृष्टिपात भी नहीं करते। ऐसी दशामें अज्ञानके दूर होने तथा उन्नति और सुधार होनेकी आशा किस प्रकार की जा सकती है।

हमारे कहनेका आशय यह नहीं कि, आधुनिक स्कूल और कालिजोंकी शिक्षा प्रणाली सर्वथा निर्दोष, लाभदायक और उत्तम है। वरन् हम यह भली भांति जानते हैं कि, कमसे कम भारतवर्षके कालिज और स्कूलोंमें जिस प्रकारकी शिक्षा दी जाती है उसमें बड़े बड़े दोष मौजूद हैं और जहां उसे विद्यार्थियोंको कुल लाभ पहुंचता है वहां हानि भी कम नहीं होती। यह कौनसी जरूरी बात है कि आधुनिक स्कूल, कालिजोंकी बिलकुल नकल की जाय। बुद्धिमान मनुष्य सदा गुणको ग्रहण और औगुणको त्याग करते हैं। हमको भी वर्तमान शिक्षा–प्रणालीमेंसे अच्छी अच्छी बातें लेकर तथा अन्य आवश्यकीय बातें उसमें सम्मिलित करके अपने बच्चोंकी शिक्षाका प्रबन्ध करना चाहिये। यदि ऐसा किया जाय तो जैनसमाजके युवक निस्सन्देह प्रकृत शिक्षा प्राप्त करके वास्तविक मनुष्य बन सकते हैं और फिर जैनियोंके उत्थानमें भी विशेष विलम्ब न लगेगा।

यदि जैनीलोग इस कार्यकी उपयोगिताको समझ कर इसे पूरा करना चाहें तो इसका हो सकना भी कुछ कठिन नहीं है। क्योंकि जैनियोंकी धनाढ्यताकी बात सारे देशमें प्रसिद्ध है और यदि चाहें तो एक एक सेठ एक एक कालिज चला सकते हैं। पर हमारा निवेदन है कि अब वह जमाना गया जब कि लोग प्रत्येक छोटे बड़े कार्यके लिये सेठों, बड़े लोगोंके मुंहकी ओर ताका करते थे। यह युग सर्व साधारण श्रमजीवियोंकी प्रधानताका युग है। अब धनी लोगोंका पतन, अवनति और गरीबोंका उत्थान, उन्नति सर्वथा निश्चित है। अतएव साधारण लोगोंका कर्तव्य है कि स्वयं चन्दे द्वारा एक दो नहीं अनेकों आधुनिक ढंगके कालिज खोल कर अपने बालकोंको सच्चा मनुष्य बनानेवाली, जीवनसंग्राममें विजयी बननेका मंत्र सिखलानेवाली शिक्षा देनेका प्रयत्न करें।

दूसरी आवश्यकता सुसम्पादित निर्भीक समाचारपत्रोंकी है। यद्यपि इस समय भी जैनियोंके पत्रोंकी संख्या कम नहीं है तथापि वे बिचारे शायद ही कभी धर्म और समाजके दायरेसे बाहर निकलते हों। उनको नहीं मालूम कि संसारमें क्या हो रहा है और दुनियां किस तरफको जा रही है, न वे इसका ज्ञान रखते हैं कि हमारी जातिमें संसारकी अन्य उन्नत जातियोंके मुकाबलेमें कौन कौनसी त्रुटियां हैं और उनको दूर करके किस प्रकार वह अन्य जातियोंके साथ साथ कदम रख कर चल सकती है। इस लिये आवश्यकता है कि जैनियोंमें इस प्रकारके दो चार पत्र निकलें जो इधर उधरकी थोथी निकम्मी बातोंको छोड़कर लोगोंको कुछ कामकी बातें बतलावें जो प्राचीन रूढियोंका भय न करके समाज–सुधारके सम्बन्धमें उचित सम्मति दे सकें और आन्दोलन कर सकें जो बिना तनिक भी डरे, हिचके राजनैतिक समस्याओं तथा घटनाओंकी स्पष्ट आलोचना कर सकें।

जो आधुनिक जगतके नूतन भावपूर्ण, युग परिवर्तनकारी, क्रांतिजनक संदेशोंको जैन जातिके कानों तक पहुंचा सके। जो जातिमें होनेवाले अन्यायों, अत्याचारोंको बिना किसी बडे छोटे, सेठ साहूकार अमीर गरीबका ध्यान किये निर्भयतापूर्वक तीव्र विरोध प्रतिवाद कर सकें। जिनके सम्पादकोंको आधुनिक संसारका ज्ञान हो तथा जिनके हृदय किसी प्रकारसे दबनेवाले, भयभीत होनेवाले पक्षपाती और संकीर्ण न हों। यदि इस प्रकारके दो चार पत्र भी प्रकाशित होकर सोये हुये जैनियोंकी आंखोंको खोल कर संसारकी गतिकी ओर आकर्षित करने लगें, उनके मुरझाये हुये हृदयोंमें नये युगकी वाणी पहुंचाएं, उनको वास्तविक धर्म अधर्मकी पहिचाने बतलायें; उनको कुरीतियों, कुप्रथाओं तथा सामाजिक और धार्मिक अन्ध विश्वासके फन्देसे छुड़ा कर स्वाधीनचेता, आत्मनिर्भर, प्रकृत, धार्मिक तथा सच्चे धर्म नियमों पर चलनेवाला बनायें, उनको संसारमें होनेवाले परिवर्तनों, सुधारोंकी सूचना देकर कर्तव्य मार्ग दिखलायें; फूट, कलह, अनैक्यको नष्ट कर जातिमें ऐक्य, प्रेम फैलायें, तथा लोगोंको उन्नति पथपर अग्रसर होनेको उत्तेजित करें और ऐसा बतलायें तो थोड़े ही समयमें बहुत कुछ कार्य हो सकता है और दिन पर दिन गिरती हुई नष्टप्रायः जैन जाति पुनः उन्नतिपथकी पथिक बन सकती है। परमात्मासे प्रार्थना है कि वह जातिके नेता, विद्वानों, हितचिंतकोंको सुबुद्धि प्रदान करे जिससे वे जातिकी उन्नतिके सच्चे मार्गको देख सकें। और इस विषयमें पूर्ण रूपसे प्रयत्न कर सकें।



(લેખક—નાનચંદ પુંજાભાઈ બી. એ. વડોદરા)

વડોદરાની કલાકૌશલ્ય અને હુન્નર શીખવતી **કલાભવન** નામની સંસ્થા લગભગ ત્રીશ વર્ષથી ચાલે છે. પણ તેની વીગતવાર માહિતી ઘણા થોડાનેજ હોય એમ લાગે છે. ખુદ વડોદરાના કેટલાક વતનીઓને નામ સિવાય વિશેષ માહિતી હોય એમ જણાતું નથી. આની હુન્નરશાળાઓમાં શું અભ્યાસ થાય છે તે દરેકે જાણવાની જરૂર છે. હાલ કેટલાક પાંચ છ ધોરણ ઇંગ્રેજીનાં કરી કારકુની કરે છે, કેટલાક સાત ધોરણ (મેટ્રીક) પાસ કરી સરકારી નોકરી રૂ. ૨૦ વીશની કબુલ કરે છે, તેઓની જીંદગી માસિક રૂ. ચાલીસ પચાસમાં પુરી થઇ જાય છે. કેટલાક માબાપને માહિતીજ નથી હોતી કે અમારા દીકરાને માટે કયો રસ્તો સારો છે. ત્રણ ચાર ઇંગ્રેજી ચોપડી ભણી ઉઠી જાય છે, રઝળતા ફરે છે, ખરાબ સોબતે ચઢે છે અને પછી દશ બારની ગુમાસ્તીમાં જીંદગી ગાળે છે. આવા છોકરાઓ માટે અને જેઓને થોડા ખર્ચમાં આટોપવું હોય તેમને માટે પણ આવી કલાભવન જેવી સંસ્થા ઉત્તમ છે.

આ ભવનમાં શિક્ષણની ૭ શાખાઓ છે. (૧) શિલ્પશાળા, આમાં સીવીલ એન્જીનીયરીંગનો અભ્યાસ થાય છે. આ અભ્યાસ ત્રણ વર્ષનો છે. તેમાં સુથારીકામ; ફરનિચર બનાવવાનું કામ અને લાકડાનું કોતરકામ શીખવવામાં આવે છે. શિલ્પશાસ્ત્ર, મકાનનું બાંધકામ, સર્વેઇંગ. લેવલીંગ, પબ્લિક વર્કસ, રસ્તા અને માટીકામ વીગેરેનો પણ આ શાખામાં સમાવેશ થાય છે. આ શાખામાથી પસાર થયેલા વિદ્યાર્થીઓ સર્વેયર, ડ્રાફ્ટસમેન, સબ ઓવરશીઅર અને મકાન બાંધવા માટે

મીસ્ત્રી અને કૉન્ટ્રાકટરના ધંધા માટે લાયક થાય છે.

(૨) યંત્રશાળા. Mechanical engineering—આ શાખામાં જુદા જુદા સાચા કામની સમજ ને તેનો ઉપયોગ શીખવવામાં આવે છે. અભ્યાસક્રમ ત્રણ વર્ષનો છે. ત્રણ વર્ષનો અભ્યાસ પૂરો થયે થર્ડ ક્લાસ એન્જીનીઅર (મુંબઈ)ની પરીક્ષામાં બેસી શકાય છે. ચોથે વર્ષે જેઓની ઇચ્છા હોય તેઓને ઇલેક્ટ્રીકલ એન્જીનીયરીંગ, ઇલેક્ટ્રીકલ ડ્રૉઈંગ, મોટરકાર, એન્જીનીઅરીંગ વીગેરેનું કામ બતાવવામાં આવે છે.

(૩) રંગશાળા Chemical technology-આ શાખામાં સુતર, ઉન, રેશમ વીગેરે ઉપર જાતજાતના કાચા અને પાકા રંગ ચઢાવવાનું, છાપવાનું તથા રંગ કાઢવાનું શીખવવામાં આવે છે. આ અભ્યાસ બે વર્ષનો છે. આ શાખામાં શીખેલા વિદ્યાર્થી કોઇ પણ પ્રકારના રંગવા છાપવાના કારખાનામાં મેનેજર અથવા ડાઇંગ માસ્તર તરીકે પણ સારો પગાર મેળવી શકે છે. કોઈ પણ રસાયનિક ઉદ્યોગ સ્વતંત્ર રીતે ખીલવી શકે છે.

(૪) ઔદ્યોગિક રસાયણ Industrial Chemistry—આ શાખામાં સોડા, ગંધકનો તેજાબ બનાવવાનું, તેલો, ચરબીઓ, સાબુ બનાવવાનું, મિણબત્તી, ગ્લીસીટ કામ વીગેરે શીખવાય છે.

(૫) વણતરશાળા Textile Manufacture.—આ શાખાનો અભ્યાસક્રમ ત્રણ વર્ષનો છે. વણાટનો હુન્નર, વણતરની જુદી જુદી ભાત, યોજના, ડીઝાઇન વીગેરે શીખવાય છે. આ શાખાના ત્રણ વર્ષના અભ્યાસ પછી વીવીંગ માસ્તર તરીકે મીલોમાં કામ કરી શકાય છે અથવા પોતે સ્વતંત્ર કારખાનું પણ ઉઘાડી શકે છે.

(૬) ચિત્રશાળા Art School આ શાખામાં ચિત્રકળા, આર્કિટેકચર, મોડેલીંગ, રીપ્રુસેર્ક, પ્રોસેસ વર્ક શીખવાય છે. આ પાચમાંનો કોઈ પણ વિભાગ શીખતા પહેલાં ડ્રોઈંગનું કામ બે વરસ શીખવું પડે છે. પછી આ દરેક કામ ચાર વરસ સુધી શીખવાડવામાં આવે છે.

(૭) વ્યાપારશાળા Commerce-શાખાનો અભ્યાસક્રમ ત્રણ વર્ષનો છે. ઇંગ્રેજી છઠ્ઠું ધોરણ પાસ કરેલાનેજ દાખલ કરવામાં આવે છે. આ વ્યાપારી શિક્ષણ આપવાનો વખત ૭-૧૦ અને સાંજના ૪-૬ રાખવામાં આવ્યો છે કે જેથી કોઇ પણ હાઇસ્કુલમાં ભણતો વિદ્યાર્થી અથવા નોકરી કરતો લાભ લઇ શકે. હાઇસ્કુલના વિદ્યાર્થીઓ માટે દરેક ટર્મની ફી રૂ. ૬ રાખી છે જ્યારે બીજાઓ માટે રૂા. ૧૦ છે. આ શાળામાં પાસ થયેલાઓ, એકાઉન્ટન્ટ, સેક્રેટરી, ટાઇપીસ્ટ, શોર્ટહેન્ડ રાઇટર તરીકે જગા મેળવી શકે છે.

યંત્રશાળામાં દાખલ થવા માટે મેટ્રીક પસાર થયેલાને પ્રવેશક પરિક્ષા વગર અને મેટ્રીક સુધી અભ્યાસ કરેલાને પ્રવેશક પરિક્ષા લઇને દાખલ કરવામાં આવે છે. શિલ્પશાળા, કોમર્સ અને આર્કિટેકચર માટે ઇંગ્રેજી છઠ્ઠું ધોરણ પાસ કરેલું હોય તેવાઓને પ્રવેશક પરીક્ષા સિવાય અને નાપાસ થયેલાઓને પ્રવેશક પરિક્ષા લેઇને દાખલ કરવામાં આવે છે. રંગ, વણતર અને રસાયન શાળામાં અંગ્રેજી પાચમું ધોરણ પાસ થયેલાને દાખલ કરવામાં આવે છે. વધુ માહિતી માટે કલાભવનના પ્રિન્સિપાલને લખવું. કેટલાક વિદ્યાર્થીને મફતમાં પણ રાખવામાં આવે છે. વળી કલાભવનમાં કેટલીક સ્કોલરશિપો પણ છે. આજ હજારો રૂપીઆ ખરચી બાઆબાઇ બી. એ. થઈ ચાલીસ પચાસ રૂપીઆની નોકરી કરવા કરતાં આવા કોઇ હુન્નરમાં નિપુણતા મેળવવી વધારે લાભદાયક છે.



(लेखक- जैन कवि ज्योतिप्रसादजी, देवबन्द)

प्रातःकाल उठ कर ईश्वर परमात्मासे यह प्रार्थना की जाती है कि हे परमात्मन् ! हमारी नाककी रक्षा करना क्योंकि नाक बड़ी ही कोमल वस्तु है। सरदी लग जाय तो जुकाम हो जाय और गरमी लग जाय तो नज़ला। और जो कहीं सरदी गरमी दोनों एक साथ लग गई तो वेचारी नाककी और भी मुसीबत आगई। वैसे तो नाक एक जरासी मांसकी डली है। और वह भी पतली दुबली और खोखली, परन्तु जीवनका सहारा है। जिस दमको आदमका दम बतलाया जाता है वह नाकके ही द्वारा लिया जाता है। आंखें तो केवल सांसारिक वस्तुओंके रंग और रूपको ही देखती हैं, लेकिन नाक उनके सत्य स्वभाव अर्थात् सुगन्ध दुर्गन्ध आदि बातोंका पता देती है। स्वास्थ्यके लिये नाक एक माना हुआ यंत्र है। जिस वस्तुसे स्वास्थ्यके बिगड़नेका भय होता है उसके सेवनसे नाक तत्काल रोक देती है। वैसे तो इस नाक जैसी कोमल और हावभाव बनानेवाली चीजमें प्रत्येक समय एक दुर्गन्धित मेल भरा रहता है जिसके कारण भले मनुष्योंका तो नाकमें ही दम आ जाता है, लेकिन अपने घरकी दुर्गन्धिका विचार न करके नाक दूसरोंकी दुर्गन्धियों पर सदैव नाक भौं सिकोड़ती है।

कन्नौज और जौनपुर आदिकके इत्र और रूईके कारखाने केवल इस नाकके ही लिये खोले गये हैं। बड़े बड़े बहुमूल्य रूमाल यद्यपि फेशनमें गिने जाने लगे हैं, पर सच पूछो तो उनको भी नाककी सेवाके ही वास्ते अपना अमूल्य जीवन अर्पण करना पड़ा है। बाग बगीचोंके सुन्दर और सुगन्धित फूलोंको देख कर सम्भव है कि आंखें दूरसे ही अपना कलेजा ठण्डा कर लेतीं, परन्तु नाक कब माननेवाली थी। उसने उन वेचारे फूलोंको पुष्पवाटिकासे जुदा कराकर ही छोड़ा। इसकी इस कार्रवाईसे वे वेचारे अपने अमूल्य जीवनसे बहुत ही शीघ्र हाथ धो बैठे। और खाकमें मिल गये। आपने तो बहुत बार देखा होगा कि किसी व्यक्तिने ज्योंही नाक चढाया और त्योंही गज़ब हो गया अर्थात् नाकका चढ़ना कमानके चढ़नेसे भी अधिक हानिकर है। जिस प्रकार नाक बहुतसी बातोंके लिये लाभदायक है उस ही प्रकार मुखकी शोभाके लिये भी शरीरका एक आवश्यक अंग है। यदि किसीके मुखपर नाक हो तो वह अपने मुखको घिसे हुये पैसेकी भांति लिये फिरै, जाय-कोई भी पसन्द न करेगा, परन्तु नाकवाला और वह भी सुडौल नाकवाला चेहरा सचमुच ऐसा प्यारा होता है कि जैसे मुकुट सहित शिर। नाक लम्बी भी होती है और गोल भी। उभरी हुई भी होती है और चपटी भी, लेकिन लम्बी और उभरी हुई नाक अच्छी मालूम होती है। लोग कह दिया करते हैं कि अमुक पुरुषकी नाक विधाताने स्वयं अपने ही हाथोंसे बनाई,

है। वाह वाह ! क्या ही सुन्दर है अर्थात् जादू भर दिया है। जो देखता है उस ही-की महिमा गाता है, परन्तु किसी २ की नाक बहुत ही भद्दी और बुरी मालूम हुआ करती है। उस पर दृष्टि तो कोई क्या डालेगा? वहां तो दृष्टिका पहुंचना तक भी कठिन होता है। जिम्याके अपराधका फल जिस प्रकार सरकी गरीब खोपरीको चखना पड़ता है अर्थात् बुरे भले शब्द तो जिम्या कह बैठती है और चांदमारी बेचारी खोपरीकी होती है। इस ही प्रकार मनुष्योंके कुकर्मोंका फल बेचारी नाकको भोगना पड़ता है क्योंकि दुखी मनुष्यका हाथ दुःख देनेवालेके नाक पर पड़ता है। दुःखी मनुष्य कह उठता है कि बचा नाककी खैर न मानना। मेरा हाथ होगा और तेरा नाक। कैसी अनोखी बात है! अपराध तो करे मनुषा-का सारा शरीर और पड़े गरीब नाकके। यह भी एक प्राकृतिक नियम ही समझो अर्थात् मुसी-बतके मुल्कमें सदा निर्बलोंको ही पड़ना पड़ता है। जैसे देवताओंकी भेंट बकरीका बच्चा ही दिया जाता है-केहरीसिंह कहीं भी नहीं, इस बेचारी नाकको वर्तमान समयके मनुष्योंकी ही बुरी भलीसे अपनी रक्षा करनी पड़ती हो ऐसा नहीं है किन्तु इन पर तो प्राचीन समयके ऋषि मुनि भी कटाक्ष कर गये हैं और दृष्टांत दे दे कर इसके विरुद्ध आन्दोलन (एमी-टेशन) फैला गये हैं-वे कह गये हैं कि नाक भी एक इंद्री है जो मनुष्यके प्राणोंको मृत्युके मुखमें डाल देती है। जैसे गरीब अलि (भौंरे) की नाक अम्बुज (कमल)की सुगन्ध लेनेके लिये बेचारे भौंरेकी जीवन लीला समाप्त करा देती है, बात असत्य नहीं है परन्तु भौंरेकी रत्तीभर नाकसे मनुष्यकी तीन चार तोले वाली नाककी क्या समानता? बड़े आदमी फिर भी बड़े होते हैं। भला सामर्थ्यवान भी कभी दोषी माने गये हैं। यह तो एक साधारणसी बात है अर्थात् समरथको नहि दोष गुसाईं। यह तो कोई कह नहीं सक्ता कि ऋषि मुनियोंने नाककी निन्दा करके कुछ भूल की हो या नाकसे द्वेष किया हो क्योंकि वे तो वीतरागी थे और ज्ञानवान थे परन्तु यही क्या ठीक बात है कि एक नियम सब ही जगह काम देजाय। यदि अनेकान्त नयसे देखा जाय तो एक बात जो एक समयमें अनुकूल होती है वही बात किसी दूसरे समयमें प्रतिकूल भी हो जाती है। खैर, जाने दो। अब यह देखो कि मनुष्य देवता नाकका कितना सन्मान करते हैं और जो करते हैं वह बनावटी होता है या सत्यताको लिये हुये। हम तो और हम ही क्यों सारा संसार यह देख रहा है कि गरीब नाकको गरमी सरदीसे बचनेके लिये एक अङ्गलका चीथड़ा भी नहीं जुड़ता। चाहिये तो यह था कि ऐसी लाभदायक और काम आनेवाली कोमल चीजको बहुमूल्य मोति-योंकी तरहसे किसी सोने चान्दीकी डिबियामें रेशमी रूमालोंकी तह लगाकर बड़े भारी प्रबन्धके साथ रखा जाता, परन्तु इसके विरुद्ध जो कुछ किया जा रहा है उसे मालूम करके आप आश्चर्य मानेंगे अर्थात् उपकारके बदले अपकार किया जा रहा है। भला कितने आश्चर्यकी बात है कि जो नाक जरासी गरमी

सरदी तकको न उठा सकी हो उसको लोहेकी सुइयोंसे वींधा जाता है और विंधे हुये सूराखमें नथ, लटकन, बुलाक आदिक लटकाये जाते हैं अर्थात् नाकका भी नाकमें दम किया जाता है। कमलके फूलकी डण्डीसे हाथी बांधना यही तो कहलाता है, लेकिन नाक ऐसी निर्लज्जतासे जीवित है कि जिसका कुछ भी ठिकाना नहीं। अन्यथा ऐसे जीवित रहनेसे तो मर जाना ही लाख दरजे अच्छा है।

आप कहेंगे कि जनाब नाकको यह कष्ट तो अनपढ़ स्त्रियें या मूर्ख मनुष्य दे रहे हैं अन्यथा शिक्षित समाज तो नाककी हर तरहसे प्रतिष्ठा ही करती है। भारत देशके इत्र फुलेल ही नहीं किन्तु इसके वास्ते इङ्गलेंड तकसे तेल और लवेंण्डर मंगा रही है। पुराने फटे कपड़ोंके टुकड़ोंको काममें न लाकर इसके वास्ते मुलायम और उम्दा रूमाल काममें ला रही है अर्थात् बहुतसा रूपिया खर्च कर रही है।

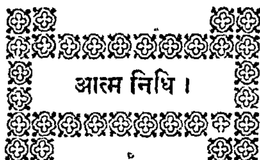
बात वास्तवमें सही है और यह हम ही क्या सब कोई देख भी रहे हैं, परन्तु भाई नाककी कोमल और नन्हीसी नोक पर चश्मों और ऐनकोंकी कमानियोंका बोझ रखते हैं तब बेचारी नाकको चीं बोल माती है और यह बहुत ही बेचैन हो जाती है। यदि नाकके ऊपर इतनी कठोरता सीधे साधे मनुष्य करते तो इन भले आदमी नाकका पक्ष लेकर उनको बुरा भला भी कह डालते परन्तु पश्चिमी शिक्षाके पण्डितोंको कौन कुछ कहे? यहां तो नाक भी मौन धारण किये हुए कान विंधवा रही है। "रानीसे कौन कहे कि तू परदा कर" सब जानते हैं कि हम पश्चिमी शिक्षाके पंडितोंसे पहिले ही फटकार खाये बैठे हैं। यदि नाकका पक्ष लेकर जरा भी जबान खोली तो न हमारी खैर है और न नाककी, दोनोंका बायकाट जरासी देरमें हुआ रखा है। अब बेचारी नाक अपनी जगह पर खड़ी हुई बोझ ही तो उठा रही है और यदि कहीं सब आन्दोलनके अपराधमें देश निकालेकी सज़ा पागई तो फिर क्या होगा इस वास्ते सब मौन साधे हुये हैं और कष्टको सहन कर रहे हैं।

बाबा नाक बनी रहे। घर रहे या जाय। बिरादरीमें नाक रखनेके वास्ते क्या कुछ करना पड़ता है। क्या इससे आप परिचित नहीं हैं। मुरारीलालने छोटे बेटेके विवाहमें रहनेवाला मकान बन्धक करके बिरादरीकी ज्यौनार केवल नाक रहनेके लिये की है। चान्दनारायणने बापके मर जाने पर अपनी कुल आमदनीका मार्ग बन्द करके बिरादरीका नुकता नाककी ही रक्षाके लिये किया है और मन्नूलालने बेटेके होनेकी खुशीमें लाल कोठीके दाम उठाकर रण्डियोंका नाच नाकके ही बचे रहनेको कराया है। यदि यह लोग ऐसा न करते तो फिर इनकी नाक कहां थी और यह इन्होंने ही थोड़ा किया है। यह तो बिरादरीके सब ही मनुष्य करते हैं और कहा करते हैं कि साहब क्या करैं। आखीर बिरादरीमें नाक भी तो रखनी ही है। यदि नाक कट गई तो फिर जीना ही निष्फल है अर्थात् नाकका ख्याल यहां तक है कि चाहे दाल और रोटी भी मांग कर खाना पड़े परन्तु नाक बच जाय—भाई नाक! कहो

कोई लाख, लेकिन पुण्य तूने खूब किया है। क्या हुआ जो तू एक दो तोले मांसकी डली है परन्तु भाग्य तो तेरा बहुत ही ऊंचा है। शरीरके अन्दर और जितने भी अङ्गोपाङ्ग हैं वे बड़े हैं या छोटे, हल्के, या भारी, बुरे हैं या भले, लाभदायक हैं या हानिकर परन्तु उन सबसे तेरा ही दरजा ऊंचा है। तेरे ऊपर संसारके मनुष्य तन–मन–धन सब न्यौछावर किये बैठे हैं और कहा करते हैं कि जांय लाख और रहे नाक– यह सब तेरे सौभाग्यकी ही बात है। बस यही तो कारण है कि यह अमरदेव भी सदैव तेरी ही खैर मनाता रहता है–

शेर।

घरमें ऐ यार मेरे धूल रहे–खाक रहे।
पर यह ख्वाहिश है मेरी मुंह पे मेरे नाक रहे॥



आत्म निधि।

ले०-प० लोकमणि जैन, गोटेगाव।

समस्त संसारकी बाहरी भीतरी अवस्थाओंको अवलोकन करनेवाले हम ही तो हैं क्योंकि वह हमारी आत्मनिधि है। सांसारिक अथवा आत्मभिन्न पदार्थोंमें हमारी सत्ता नहीं है और न वह आत्मनिधि ही है। जिन २ पदार्थोंमें हमारी सत्ता है वे सब हमारे हैं। इसी लिए वे हमारी निधिस्वरूप हैं। जिन २ पदार्थोंको हम उत्पन्न और नाश होते देखते है उनका अस्तित्व हमारी आत्मामें नहीं है। हमारी अजर अमर आत्मा क्षणिक (नाशमान) पदार्थोंसे प्रीति नहीं करती क्योंकि वे आत्माके अस्तित्वसे भिन्न और अल्प समय साथ देनेवाले हैं। इसी लिए सदा आत्मामें रहनेवाली अनित्य, अविनाशी गुणवाली ही सच्ची आत्मनिधि है।

कभी नर्कमें, कभी स्वर्गमें, कभी तिर्यंचोंमें और कभी देवोंमें आत्मदेव क्रीडार्थ जाते हैं पर तत्रस्थ पदार्थोंको निजनिधि नहीं मानते, यह एक बडी विलक्षणता है। आत्मदेव हमारे इतने पवित्र और अकथनीय गुणोंके भण्डार हैं, निरन्तर अनेक पर पदार्थोंके साथ रहने पर भी अपनी उज्वलता पदार्थोंमें नहीं पहुंचने देते, और न उनसे कुछ लेकर आत्मनिधि

बनाते हैं। हमारे आत्मदेव कभी क्रोधाग्निमें धंस जाते हैं। कभी मानगिरिकी सैर करने चले जाते हैं, कभी मायाकी संगतिसे अपने कहने विचारने और करनेमें भेद कर लिया करते हैं और कभी लोभकी चुंगलमें फंस बाह्य धनको अपना समझने लगते हैं, इतने पर भी जब निज निधिका अवलोकन करते हैं तब क्रोध, मान, माया और लोभ इनमेंसे एकको भी आत्मनिधिमें नहीं पाते हैं। क्यों न हो, आत्मदेव ही तो ठहरे। सबमें रह कर भी सबसे पृथक् अपनेको रखना यही तो आत्मदेवकी आत्मनिधि है।

आत्मदेवकी संपत्ति छीननेके लिए इस जगतमें कर्मने अनेकानेक ठगिया भेज दिए। आत्मदेवके साथ उन डाकुओंका मेल मिलाप भी रहने लगा है। आत्मदेव इनकी करामात देखनेके लिए अपनी निधिको ताला बंद कर इनहीकी हांमें हां मिलने लगे। कर्म दूतोंने अपनी सफलता समझ आत्मदेवकी निधि लूटनेका प्रयत्न किया। आत्मदेवने निधिको न वतलाया। आत्मदेव बोले, भाई मैं तो गरीव हूं। तुम्हारे दिए ही पदार्थोंसे लाग निकालता हूं। तुमने यह शरीर रहनेको दिया, यह जीभ स्वादके लिए दी। यह नाक सूंघनेको दी। नेत्र देखनेको और कान सुननेके लिए दिए। तुम जब घर बदलनेको कहते हो शीघ्र दूसरे घरकी तलाशी कर लिया करता हूं। कभी तुम अकेला शरीर ही देते हो तो सादर ग्रहण कर लिया करता हूं। यदि साथमें कुछ२ इंद्रिया दे देते हो तो मैं ले लिया करता हूं। मेरे पास तुम्हारे देने लायक है ही क्या जो तुम्हें समर्पण करूं। कर्मोंके दूतोंने समझा कि सचमुचसे आत्म देव गरीब हैं, इनके पास कुछ नहीं है, यदि कुछ होता तो ए रखते कहां? आत्मदेव इतने गरीब हैं तो हमें इनकी निधि लूटनेको क्यों भेजा? कर्म दूत घबड़ाए और अपने राजा "मोह" के पास आत्मदेवकी शिकायत मनमानी करने लगे।

मोहराज भी आत्मदेवके पास अनेक सेवकोंको साथ लेकर आए, बोले—आत्मदेव, तुम अपना स्वरूप छिपाते हो। तुम्हारे पास अगणित रत्न हैं, तुम शीघ्र ही दे दो नहीं तो हम तुमको तीव्र यातनाएं देवेंगे। यह सुन कर आत्मदेव किंचित हसे पर बोले कुछ नहीं। आत्मदेवकी मंद मुस्कान मोहराजके लिए तीरका काम कर गई। उन्हें भारी क्रोध आया। सेवकोंसे बोले—इसी वक्त इसको कैद कर तीव्र दुःख दो। विना ढिठाईके यह अपनी आत्मनिधि न बतावेगा। मोहराजका हुक्म हुवा कि आत्मदेव कैद हो गए। कोई आत्मदेवको मारने लगा, कोई घसीटने और कोई उलटा टांगने लगा। आत्मदेवको कोई चक्की पिसाने लगा, कोई स्त्रियोंको उनके पास रख गया, कोईने उनको झंझटके लिए बच्चे लाकर दिए, कोईने तान तेल ऊपर सिंचन किया, इतने पर भी आत्मदेव कुछ न बोले। जब सतानेसे आत्मदेवसे कुछ न पाया तब स्वयं मोहराज आए। आत्मदेवको अचेत कर दिया, फिर गैम

किया, कभी भोगनेको स्त्री दी, कभी धन दिया, कभी शरीर सुख दिया और कभी२ पुत्र छीनकर रुलाया, कभी धन विहीन कर भीख मंगवाई, कभी कुछ और कभी कुछ उपसर्ग आत्मदेवके किये पर आत्मदेव किंचित भी न बोले। आत्मदेव जब कर्मोंकी सब करामात देख चुके-जलमें उत्पन्न कमलकी तरह अपने ऊपर कुछ भी कर्मोंकी सत्ता न देख बोले—कर्मो, तुम हार गए अनतानंत काल साथ रहने पर भी तुम मेरे स्वरूपको न जान सके। तुम्हारा पराक्रम भी मैं समझ गया। तुम समझते होगे आत्मदेवको हम सता रहे हैं, लुभा रहे-लिला रहे हैं, आत्मदेव हमारे होगए, हमारे राज्यमें ए निवास करने लग गए, इनका खजाना हमें मिल गया, हमने इन्हें मटियामेंट कर चकना चूर कर दिया, पर यह सब जानना तुम्हारी भूल है, तुम्हारे सेवक मेरेको स्पर्श भी नहीं कर सके। तुम्हारे द्वारा दिए गए दुःख मेरे पास तक आ ही नहीं सके। जो तुम प्रहार करते थे वे सब तुम्हारी दी हुई वस्तुओं पर ही आकर चोट पहुचाते थे। तुमने रागद्वेष बढ़ाने वाली चीजें जो मेरे पास भेजी थीं उनको मैंने स्पर्श भी नहीं किया। तुम समझते होगे आत्मदेवको हमने दरिद्र कर दिया, समस्त निधि छीन ली पर यह सब कुछ भी हुआ। मेरी निधि तुम्हें नजर भी नहीं आई। मेरी निधि अक्षय-अनंत-और तुम्हारे अगोचर है ही और रहेगी।

कर्मो, तुमने मेरे प्रति अनेक उपसर्ग किए अथवा मेरे साथ बहुत समय तक रहे। तुमने अगणित अपराध किए। अच्छा, लो मैं अपनी निधिमेंका एक अमोलिक रत्न निकाल क्षमा नामक तुम्हें वितरण करता हूं। इस रत्नके माहात्म्यसे संसार वशमें हो जाता है, वैरी वैर छोड देता और विपत्तिया पास नहीं आती। इस रत्नके प्रकाशसे सूर्य चन्द्रकी रोशनी छिप जाती है। इसका गुण अपार है। संसारी जीव यदि तुम्हारी नगरीसे पृथक् होना चाहे तो इसके प्रभावसे अलग हो सकते है। यह तो मेरा एक रत्न है। ऐसे २ अनन्त रत्न मेरे पास हैं। मैं कभी किसीको मारता नही। किसीसे मैं मरता नही। मैं सबपर समदृष्टि रखता हूं। मैं क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौचादि दश धर्मोंका स्वामी हूं। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यगचारित्र इनका प्रभुजी मैं हूं। मैं सद्गुणोंका भंडार हूं, और यही मेरी आत्मनिधि है।

जितने भी सद्गुण है, जिससे प्राणी समस्त पाप क्रियाओंसे रहित हो सकते हैं, जिनसे सुख और शान्तिका अनुभव प्राणियोंको होता है, वे सब रत्न आत्मनिधि स्वरूप हैं। जो प्रयोग प्राणियोंकी रक्षा करते हैं, जिन उपायोंसे कर्मबंधन टूटते हैं वे सब आत्मनिधिके सुमन (पुष्प) हैं। आत्मदेव सच्ची आत्मनिधिसे विभूषित हो स्वपर कल्याण करें। यही आत्मदेवकी भावना है।

दक्षिण भारतमें--
जैन पुरातन शिल्प।

(लेखक–एम. एम. पेग्वि)

पाठकों! आपको यह बता देना आवश्यक है कि इस लेखमें जैन धर्मके प्राचीनता विषयक इतिहासका कुछ संबंध नहीं है। इस लेख-द्वारा केवल दक्षिण कनाराके जैन स्तूप आदिका वर्णन ही किया जायगा। इस प्रांतकी विशेष डीलडौलकी पत्थरकी चट्टानोंकी मूर्तियां मिश्र देशके "पैरामिड" (Pyramids) के समान ही हैं। सुतरां इस प्रकारकी मूर्तियोंमें सबसे बड़ी हैं। दर्शनीय वस्तुओंमें इनकी गणना होनेके कारण अनेकों पथिक, दर्शक यूरप, अमेरिका आदि दूरस्थ देशोंसे आते हैं।

पाठक! इन अनोखी मूर्तियोंके निर्मापित कर्ताओंके विषयमें लिखना नितान्त योग्य और मनोरंजनदायक होगा। कनारा, जहां दक्षिण भारतमें भी जैनधर्म कालके प्रभावसे ह्रास अवस्थाको प्राप्त है, जनवरी सन् १९११ की मनुष्य गणनाके अनुसार केवल ९००० जैन जन संख्या मंगलोर, उप्पिननगड्डी, और उदीपी तालुकोंमें हैं। इस पर भी इस संख्याका कुछ विशेष कारणोंवस ह्रास होता जाता है। और यदि इसी वेगसे ह्रासका पहिया दुलकता रहा तो जैनियोंकि भी अस्तित्वका अन्त इस शताब्दिके अन्तके साथ हो जायगा।

जातिकी अपेक्षा दक्षिण कनाराके जैन मुख्यतः दो दलोंमें विभक्त हैं। अर्थात 'इन्द्र' पुजारी, जो अपने अन्तराधिकारमें साधारण रीतिको व्यवहारमें लाते हैं और 'श्रावक' जो 'अलिया-सन्तान'की रीति व्यवहारमें लाते हैं। जैनियों और बूंटों–जो सदैवके निवासी हैं–के सामाजिक रीतियोंमें, रिवाजोंमें, और जीवनकी क्रियाओंमें विशेष सदृशता है। ब्राह्मणोंकी तरह जैनी भी यज्ञोपवीत धारण करते हैं। और इसीसे वे बूटोंसे भिन्न प्रतिभासित होते हैं। जैनी मांसभोजन और मादक वस्तुओंका भी व्यवहार नहीं करते हैं। जैनियोंकी मृत्यु--पातक विषयक रीतियाँ १६ दिवस पश्चात् मंदिरजीमें 'अभिषेक' करनेसे पूर्ण हो जाती हैं।

* * *

वास्तविकतामें बौद्धधर्मका दक्षिण भारत पर आक्रमण विदित नहीं होता है। ऐसी ही उपलब्ध ऐतिहासिक व्याख्यायोंसे, यही विदित होता है कि सबसे प्राचीन अवस्थामें कनाराके राजा नास्तिक धर्मी थे। मैसोरके हिन्दूबल्लाल राजाओंने और उनके पडोसी जैन कारकलके वैरासु वोडियर राजाओंने भी अपनी स्वतंत्रता प्राप्तार्थ प्रयत्न किए थे। और अन्तमें जैनराजाओंकी विजय हुई। जैन मेमारीके कर्ता राज मैसोरमेंसे उठ कर कनारामें अपना कार्य करने लगे। समस्त प्रांत मंदिरों, मूर्तियों, स्तूपों द्वारा परिपूर्ण हो गया। इनमें वरकुर सन् १६०८में मैसोरके लिंगायत राजाओं द्वारा विध्वंस कर दिये गए थे। मैसोरके उपयुक्त मेमारोंने एक हिन्दु और जैन भावोंसे मिश्रित रीतिसे उपयुक्त मंदिर आदि बनाए थे।

कारण कि एक समय दोनो जातियोंमें पूर्ण प्रेम था। बरकूरके खंडहर अनुमानतः दो वर्गमीलोंमें फैले हुए हैं। और उनमें समय समय पर अच्छे २ निकासीके कामके नमूने निकले हैं। उनमें गढ़ा हुआ खजाना भी अनुमान किया जाता है। कारण वहांसे ग्रामवासियों द्वारा कुछ निकाला भी गया था। दक्षिण कनारामें जैन राज्यवंश इस प्रकार थे कि मूड़बद्रीमें चौतार नन्दावरमें बनगर अल्दनगद्दीमें अजालर, बदनगद्दीमें मौव्यर और मुल्कीमें सावन्त, जो अन्तमें टीपु सुल्तान द्वारा विध्वंस कर दिए गए थे। वर्तमान समयमें भी बहुतेरे घराने उपर्युक्त राज्योंके वंशज मिलेंगे और उन्हें उनके पूर्वजोंकी जमीनके कुछ भाग पर अधिकार मिला हुआ है।

* * *

कनारामें पुरातन जैन शिल्पके मुख्य चार स्थान हैं। अर्थात (१) **कारकल** (२) **वेनूर** (३) **मूड़बद्री** (४) **और गुरुवंकेरी**। प्रथम दो स्थानोंमें मंदिरोंके अतिरिक्त दो विशाल मूर्तियां भी हैं। समस्त संसारमें विशाल मूर्ति श्रवणवेलगोलकी है। यह मूर्तियां साधारणतया "बद"के नामसे इस कारण प्रसिद्ध हैं कि वे एक पत्थरकी दिवाल द्वारा वेष्टित हैं। "बस्ती" अथवा मंदिर और स्तंभ शेष दो स्थानोंमें हैं। तीनों ही विशाल मूर्तियां प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेवके पुत्र बाहुबलिकी मूर्तियां हैं। कनाराकी मूर्तियोंमें कारकलकी जो ४१ फीट ५ इंच ऊंची है, सबसे बड़ी है। यह सन् १४३२ ई०में बनी थी। वेलगोलाकी मूर्तिके निकट यह छोटी है। वेलगोलाकी मूर्ति ५७ फीट ऊँची है और राजा चामुण्डरायद्वारा सन् ९७७ से ९८४में बनवाई गई थी।

कारकल—की मूर्ति एक बिल्लोरी पत्थरके चट्टानके ऊपर उपस्थित है। और कोसों दूरसे दृष्टिगोचर होती है। कारकलकी मूर्तिकी मुद्रा देखनेसे शांतिका अनुभव होता है। और जैसा ही दर्शक उसके निकट पहुँचता जाता है वैसे ही उसकी विशालता बढ़ती जाती है। वह चट्टान भी एक तालाबके निकट खड़ा है। यह तालाब अथाह है, और पुराने मच्छोंसे पूर्ण है, ऐसा कहा जाता है। और यह भी प्रसिद्ध है कि यह मूर्ति चंद्रवंशीय भैरवेन्द्रके पुत्र वीर पाण्ड्या द्वारा श्री बाहुबली स्वामीके रूपमें बनवाई गई थी।

निम्नलिखित मूर्तिका वर्णन 'फ्रेजरस मेगजिन' (Fraser's Magazine) के मई सन् १८७९ के अंकसे दिया जाता है। वर्णन चाहे बौद्धोंकि चीन और लंकाकी मूर्तियोंका हो यथार्थ है, कारण कि गौमटेश्वरका भी यथार्थ वर्णन है। कारकलके ही निकट एक पथरीली, विशेषतया गोलाकार पहाडी है। पहाड़ीकी जड़ तो पत्थरों और झाड़ियोंसे भरी पड़ी है। परन्तु ऊपरकी चढ़ाई चिकनी और सीधी है। कुछ दूरीसे पहाड़ीकी चोटीकी ओर देखनेसे वही कहानियोंके किले आदि दृष्टिके सन्मुख नाचने लगते हैं कारण कि चोटी पर एक दुर्गके समान

दिवाल है जिसमें महराबदार दरवाजा है। और उन दिवालोंसे ऊँचा एक मूर्तिका धड़ इतना शरीर निकला दिखाई पड़ता है। यह मूर्ति इस प्रान्तकी अन्य मूर्तियोंके समान हैं। विशालता मिश्रदेशीय है। और भारतवर्षमें केवल येही मूर्तियाँ ऐसी हैं। पहाड़ीकी चोटी पर चौतरफा दिवालसे वेष्टित चबूतरा ५ फीट ऊँचा है उसी परसे यह मूर्ति ४९ फीट ऊँची बनी हुई है। नग्न बिल्लोरी पत्थरकी एक ही साबित चट्टानसे उकेरी हुई, शताब्दियोंके पानी हवासे काली पड़ी हुई, विशाल मूर्ति बिल्कुल सीधी सुयोग्य रीतिमें दोनों बगलोंमे हाथ लटकाए हुए खड़ी है। हाँ! उनकी आकृति कुछ वक्रता लिए हुए है परन्तु एकसादे गौरव-प्रभावकी छटाको दर्शा रही है। स्वरूप और आकृति वैसे ही हैं जैसे कि लंकासे चीन तक अधिकतर तातारी जातिके रूपमें गौतमबुद्धकी हैं। और यह भी एक अद्भुत बात है कि मूर्तिका ढंग-रूप हिन्दुओंकी मूर्तियोंसे कुछ भी भिन्न नहीं है। बाल घूंघरवाले और घने हैं। बड़े भरे हुए कपालोंसे मुखकी आकृति भारी हो जाती यदि उनके शांतिपूर्ण और सम्मुख-दृष्टि-आरोपित नेत्र और लम्बी, नुकीली नाकसे उनकी मुखाकृति प्रभावशाली और गौरवान्वित न होती। मस्तक आकृतिके योग्य ही है। ओंठ भरे हुए और मोटे हैं। ऊपरका ओंठ कुछ लम्बा है जिससे अच्छी, निकली हुई ठुड्डी आच्छादित हो जाती है। रांगों तक नीची भुजाएँ कुछ लम्बी हैं। और सुयोग्य हाथ और उंगलियां घुटनों पर ही रक्खी हैं। मूर्तिकी स्थितिके कारण कंधे बहुत चौड़े हैं। प्रत्येक चरण ४ फीट ९ इंच लम्बे हैं। और उसी चट्टानमेंसे उकेरे हुए चबूतरे पर स्थिति हैं। और यह चबूतरा मूर्तिकी विशाल आकृति और बोझ ८० टनके अयोग्य है। एक कमलकी डंडी प्रत्येक चरणसे निकलती हुई टांगों और भुजाओंमें लिपटी हुई है। तिस पर भी मूर्ति जोखम सहित है। सात वर्षमें एक दफे सर्वत्रके जैनी मूर्तिका नारियलके क्षीरसे अभिषेक करने अर्थ एकत्रित होते हैं। जैनियोंने अपने ही खर्चसे दर्शकों और यात्रियोंके लाभार्थ सीढ़ियां उकरवा दी हैं जिससे चढ़ाईमें सरलता हो गई है। गोमट्ट स्वामीके अतिरिक्त कारकलमें दो वस्तियां व एक स्तम्भ है। हिलंगगदी बस्ती ग्रामसे अनुमानतः २ मीलकी दूरी पर है। और एक ऊंची पहाड़ीकी तलहटीमें बना हुआ है। इस पहाड़ी परसे समुद्र जो १५ मील है, का पूर्ण दृश्य दिखलाईपडता है। वस्तीमें मुख्य दर्शनीय वस्तु एक ५० फीट ऊंचा पत्थरका स्तम्भ है। जो कि उसके दरवाजे पर बना हुआ है। और अच्छी चांदी और धातुकी प्रतिमाएं भीतर विराजमान हैं। स्तंभ समस्त कनारामेंसे सुन्दर माना जाता है। डीलडौलकी अपेक्षा वह अवश्य सबसे बड़ा है परन्तु कारीगरीमें वह मूड़बद्रीके और खास कर वेनूरके एक स्तंभसे अच्छा नहीं है। कारकलमें सर्वोत्तम मंदिर 'चतुर्मुख' नामक है। जो गोमट्ट

स्वामीसे कुछ दूरी पर है। वह मंडपके रूपमें बनाया गया है। और उसके बीचमें एक बड़ा द्वार है। और उसके चारों तरफ एक बरान्डा है। छत वेलोरी पत्थरके चौकोंसे पटी हुई हैं। किसी समयमें वह मठके तौर पर समझा जाता होगा। बाहरी दीवाल और स्तंभों पर सुन्दर नकाशीका काम है। नकाशीमें देवताओंकी मूर्तियां चंद्र सूर्यादि बहुत ही महीन और मनोज्ञ हैं। जैसे कि चीनी हाथीदांतका काम होता है स्तंभोंके आसपास वैसी ही नकाशीके कामके झाड आदि हैं। और विशेषतया दीवालके पत्थर पर सैकड़ो नाग एकत्रित लिपटे हुए अथवा एक हास्यजनक सिर फूलपत्तोंसे शोभित उकेरे हुए हैं और भीतर बाहर धातुकी खड्गासन जैन मूर्तियां विराजमान हैं।

वेनूर—वेनूरके गोमट्टस्वामी ३९ फीट ऊंचे हैं। और एक ईंटोंके चबूतरे पर खडे हुए हैं। यह मूर्ति भी कारकलकी मूर्तिके समान उत्तरकी ओर मुख किए हुए हैं। इस कारण सूर्यका प्रकाश इसके धुंधले मुखकी आकृतिको नहीं चमका सकता। वह मूर्ति गुरपुर नदीके बाएं तट पर उपस्थित हैं। मूर्ति पर एक बिगडा हुआ लेख है। जहां तक वह पढा गया है उसका सारांश यही है कि चामुण्ड वंशीय थिम्मराजाने बेलगोलाके भट्टारक चारुकीर्तिके कहनेपर यह मूर्ति बनवाई थी। चारुकीर्ति थिम्मराजाके धर्माचार्य थे। मूर्ति सन् १६०४ ई०में निर्मापित की गई थी।

वेनूरमें एक शांतेश्वर नामक जैन मंदिर और है उसमें भी एक मानस्तंभ है। यह स्तंभ भी कनारामें सर्वोत्तम समझा जाता है। उसीके निकट एक वेदी है जिसके द्वारकी चौखट नकाशीका एक अद्भुत नमूना है। यह चौखट एक प्रकारके पत्थरमें उकेरी हुई है। अनुमानतः मैसूरसे लाई गई होगी। वेदीमें काले पाषाणकी २ फीट ऊंची एक ही पंक्तिमें २४ तीर्थंकरोंकी प्रतिमाएं विराजमान हैं। प्रत्येक प्रतिमा एक गोलाकार महिरावमें विराजमान हैं।

मूडबद्री—मूडबद्री विशेषतया जैन मेमारीके कामका चन्द्रनाथके मंदिरके कारण सर्वोत्तम नमूना है। यह मंदिर कारकलको आनेवाली मुख्य सडककी एक शाखा पर प्रायः १० मीलकी दूरीपर है। भीतर जानेके द्वार पर एक अति सुंदर नकाशीका काम है। उसके पीछे मानस्तंभ हैं। उन पर भी नकाशीका काम अच्छा है। मंदिरकी आकृति चीनाइयों (chinese) की तरह तीन खंडी है। छत एक दूसरेके ऊपर एक अद्भुत रीतिमें बनी हुई है। और पत्थरके चौकोंसे लदी हुई है, परन्तु सबसे ऊपरी खंडमे पत्थरके चौकोंकी जगह तांबेके चौके हैं। मंदिर एक सहस्र स्तंभोंके नामसे प्रसिद्ध है। कारण कितने ही स्तंभ अनेकों प्रकारकी सुंदरताको लिए हुए बने हैं। भीतर जानेकी मनाई है। परन्तु दर्शकोंके लिए द्वार खोल दिया जाता है। एक बत्ती अंधेरेमें टिमटिमाती हुई और स्वं तीर्थंकर श्री चंद्रनाथकी धातुकी प्रतिमा दृष्टिगोचर होती है।

मृतक स्थानोंपर—स्मृतिमें बनाए हुए चबूतरे अंग्रेजी मृतकस्थानके सदृश दर्शक वहीं निकटमें दूसरे स्थान पर देखेगा। स्मृति-चिन्ह प्रदर्शक

बूतरे—जो जीर्ण हो रहे हैं—जैन मुनियोंके तक स्थान पर एक प्रकारके पत्थर और बिलोरी त्थरके बनाए गए हैं। आयताकार रूपमें चिलत हिन्दुओंके कठाके मंदिरके सदृश हैं। मूड़बद्री मैंगलोरके उत्तर पूर्वमें एक मैदानकी लहटीमें २२ मील पर है।

गुरुयंकेरी—वेल्तनगढ़ीसे दो मील गुरुकेरीके खंडहर अधिक प्रशंसनीय नहीं हैं। केवल दो मंदिर शांतेश्वर और चंद्रनाथके हैं। और एक सुंदर मंडप ऊँचे २ स्तंभोंका है। तीनों इमारतें एक दूसरेके निकट हैं। उनके बाहर मानस्तंभ हैं। इसकी नकाशीका काम जिले भरमें अति सुन्दर है।

इस प्रकार कनारामें जैनियोंके स्तूप हैं।*

अनुवादक—"भारत" अलीगंज (एटा)

* अंग्रेजी जैन गजटके लेखसे अनुवादित।

जैन समाज सुधार।

હરિગીત છંદ.

જાગો વ્હાલા ? જાગો પ્યારા ? તિમિર અધ દૂર ભાગવા,
તમ સ્થિતિને સુધારીને, નિજ જ્ઞાતિને ઉદ્ધારવા.
પૂર્વ દિશાનો સૂરજ આવી. એમ કહે છે ? ભાઈઓ ?
પશુ પક્ષી બી સબ ઉઠ ચાલે, શયન કરો કેમ જૈનીઓ ?
તમ બંધુઓ પીડાય છે, સંકટ તણા પરતાપથી,
સુસ્તીને વળગી રહી, નિર્ધન બન્યા તે ખંતથી.
વળી જ્ઞાન વિણુ હલકા ઠર્યા. તે જૈન શબ્દ ત્યજાવતા,
નિજ ફરજ ત્યજી ખંતથી, નિજ માત તાત લજાવતા.
તેજ જનને બોધ દેવા, ખંત રાખી આવજો,
બોધ દઇ તે આત્મને, ઉમંગ થકી સુધારજો.
તમ કુળમાં કલંક કુડાં, બાળ લગ્ન સમાન જે,
નાની વયની બાળા સાથે. વૃદ્ધ પરણી જાય તે.
વળી યોગ્ય અયોગ્ય જોડાં, જાતિમાં જોડાય જે,
નિજ કન્યકાનું દ્રવ્ય લઇ, સુખમાં સમાતો તાત તે;
વળી કુળનું અભિમાન રાખી સુત શત્રુ થાય જે,
નાની વયમાં મોટી કન્યા, લાવી ખુબ પસ્તાય તે.
એ અને બિજા ઘણા કુચાલ, જે છે જ્ઞાતિમાં,
કમ્મર કસીને દુર ભગાવો, શુભ થાયે જાતિમાં;
તેજ જનની વિદ્વતા, આવી ખરા પ્રમાણની,
જો જાતિ બંધુ યોગ્ય રસ્તે, ચાલે પુરણ પ્યારથી.
હું અને તમો બધાએ, પુત્ર વિરના છે અરે,
પછી ભિન્નતા શી રાખવી, છે ધિક્કાર તેથી આજરે;
શ્વેત વસ્ત્ર ધારણ કરે-શ્વેતાંબરો પેખાય છે,
નગ્ન મુદ્રા ધારવે, દિગંબરો દેખાય છે.
ભેદ ભાવ છે કલ્પનાએ, શાસ્ત્ર બન્ને એક છે,
નામ રાખ્યાં દુસરાં એ, ગુરુનો નિજ ટેક છે;
જ્ઞાનવિણુ જય જીંદગી, હતી તમારા લોકની,
ત્યારે જુદા પડયા તમ, જૈન એ શુભ શબ્દથી.
જ્ઞાન પામ્યા ચાલુ કાળે, લાગીયા કંઇ જાણવા,
તો ભિન્નતા સૌ છોડી ધો, રૂષિ ધર્મ ઉદ્ધારવા
તમ જ્ઞાતિલા સેવે ઘણા, મિથ્યાત્વિ જેવા દેવતા;
ઉપદેશ આપો તેમને, તે થાય જેથી દેખતા.
પાશ્ચાત્ય વિદ્યા પામેલા, યુવાન વર્ગો માનજો,
નિજ જ્ઞાતિલાને સ્હાય આપી, પ્રેમ ધરી ઉદ્ધારજો;
આ સમય કહેવાનો નથી, પણ કરી બતાવા કારણે,
કરી બતાવો કામ ઉંડાં, આવી ઘરથી બારણે.
તેજ આ જૈનો તણો, ઉદય થશે આવેશથી,
તમ બધુઓ ધર્મે રહી, ધન ધાન્ય ધાન્ય પામે પ્રેમથી;
વળી વંશની વૃદ્ધિ થઇ, બળવાન પુત્રો પાકશે;
નિજ આત્મબળથી, સ્હાય આપી જૈનને ઉદ્ધારશે.
જ્ઞાતિની ચડતી થઇ, સંસારમાં સુખ પામશે,
વૃદ્ધ જન આનંદથી, આશીરવાદો આપશે.
વળી વિર વાકય સાચવ્યાનું, પુણ્ય તમને લાગશે;
મિત્ર વર્ગનું શ્રેય દેખી, સુખ મોહન જાણશે.

દોહરો.

જૈની જન આ ધારજો, પત્રરૂપી ઉપદેશ.
અક્ષર પણ મનમાં ધરો, વર્તો સુણી આદેશ. ૧
કાવ્ય પ્રમાણે ચાલજો, સુત-સુખ અવધાર,
મોટી ઉમરમાં કરો, હસ્ત ગ્રહણ નિજ બાળ. ૨
વર મોટા કન્યા લઘુ, એહ સંબંધમાં સાર,
વૃદ્ધોને બાળા દીધો, બળે એહ સંસાર. ૩
કન્યા આપો આપશે, માતતાતને શિર,
અનર્થ પોતે આદરે, માટે સમજો વીર. ૪
સંબંધ એવા નવ કરો, જેથી થાયે દુઃખ,
લાયક જોડાં મેળવો, મોહન પામે સુખ. ૫

કાણીસા મિત્ર મંડળી.

वीर वस्तुपाल !

" Lives of great men all remind us,
We can make our lives sublime ! "
hence:—

'Live to some purpose; catch time as it flies
For time is a taper that burns,
A gem of great value, a rich floating prize,
Once departed it never returns "

यह बात निर्विवाद है कि जिस मार्गको प्रतिष्ठित–उदार आत्माओंने ग्रहण किया हो उस ही मार्गके अनुयायी अन्यान्य श्रेणीके मनुष्य हो जाते हैं। हम अपने पूर्वके महान पुरुषोंके जीवनसे अपने जीवनसंग्रामको सुदृढ़ बना सक्ते हैं। इस व्याख्याकी सत्यतामें इतिहास तो है ही परन्तुः यह स्वतः प्रमाण है। आपके समक्ष उदाहरण उपस्थित है कि आज कर्मवीर-म० गांधीके प्रखर–प्रचुर चारित्रने हजारो हृदयोंको अपनी ओर आकर्षित ही नहीं कर लिए है सुतरां बहुतेरे तद्रुप आचरण भी करने लगे हैं। भारतवर्षमें सदैवसे ऐसे ही रत्न पैदा होते आए हैं जिनसे भारत–सन्तानका गौरव बढ़ता रहा है परन्तु खेद है कि हमारी लापरवाहीसे पूर्वकी कितनीक महान आत्माएं लुप्त हों गई हैं। जैनियोंमें अनेको भारत रत्नोंने जन्म ले इसके अब तकके कलंक–अकर्मण्यताके कलंकको धो दिया है। परन्तुः आश्चर्य कि हमारी समाजने इन महात्माओंके जीवनचरित्ररुपी शक्तिसे अपने सन्तानके हृदय बलवान नहीं किए हैं। आवश्यक्ता है शीघ्र ही दिगं-जैन रत्नोंसे दमदमाते हुए एक रत्न-भारकी ! श्वेताम्बर समाजमें मि० उमरावसिंह टांकाने राजपूतानेके प्रसिद्ध जैन महान् आत्माओंका चरित्र अंग्रेजी भाषामें प्रकाशित किया है। उसीके अनुसार आज हम एक प्रसिद्ध महात्माका जीवन आपके समक्ष उपस्थित करते हैं। जैन मंत्रियों, सेनापतियों,में हमारे चरित्रनायककी जीवनी विशेष मनोरंजन कारक है। वस्तुपाल सर्वगुणसम्पन्न थे–वे निपुण राजनीतिज्ञ, वीर योद्धा, अध्यात्मिक कविताके प्रेमी थे। आपके दानशीलताकी सीमा नहीं थी और उदारता भेदभाव जानती ही न थी। आप जैन धर्मानुयायी थे परन्तु आप सर्व संप्रदायों पर कृपा रखते थे। आपने मुसलमानोंके लिए मसजिदें बनवाईं और आपसी प्रेमको दृढ़ किया। ऐसे ही वीरोंके चरित्र हिंदू मुसलमानोंमें समभाव पैदा करनेको कार्यकारी हैं और इसीसे आशा है कि:—

हिंदू, मुसल्मां जैन ईसाई, परस्पर चखेंगे प्रेम मिठाई!

'मेरु विजय'के अनुसार वस्तुपाल और उनके भ्राता तेजपालका जन्म सन् ११०९ ई० (वि० सं० ११६१)में उनकी माता कुमारदेवीसे और उनके द्वितीय पति बघेलोंके सेनापति असराज द्वारा हुआ था। कुमारदेवी अति रूपवान और अन्नहिलवद पट्टनकी निवासिनी थी। इनकी अल्प अवस्थामें ही इनके पतिका देहांत हो गया। एक दिवस यह हरिभद्र सूरिका व्याख्यान सुनने गई थी और वहां असराज इस परम सुंदरीके लावण्यमयि० रुपके प्रेमबाणों द्वारा बीधे गए। कुमारदेवी पूर्ण सती साध्वी थी, परन्तु असराज अति कामातुर हो रहे थे, परन्तु सतीका शील डिगाना टेढ़ी खीर थी।

अन्तमें वह बलात्कार उस सुंदरीको वहांसे लेकर रातों रात असापल्ली (अहमदाबाद) पहुंच गया। अब इधर असराजका तीव्र अनुरोध और उधर कुमारदेवीकी चढ़ती अवस्था ! अंतमें दोनोंकी लग्न शुभ महूर्तमें हो गई। और कुछ दिनोंमें उसके चार पुत्र रत्न उत्पन्न हुए-लुनिगा, मल्लदेव, वस्तुपाल, और तेजपाल। ई० १२१७ में वस्तुपाल ललितादेवीसे प्रेम-विवाह बंधनमें बंध गए। और थोड़े समय पश्चात तेजपालने अनुपमा देवीसे विवाह संस्कार कर लिया।

चालुक्य साम्राज्यके अधिःपतन-खंडहरों पर ही बघेलोंका वंश खड़ा हुआ था। द्वितीय भीम (ई० ११७८-१२४१) एक अयोग्य सम्राट इस चालुक्य वंशमें हुए। इन्हींके राज्य-कालमें चालुक्य साम्राज्य जो पहिले ही एकता शक्तिको नष्ट कर चुका था अधःपतनकी ओर अ... हुआ। जब भीम अपने अधिकारमें उत्तर भाग लानेका प्रयत्न कर रहे थे उस समय दक्षिणमें लवणप्रसाद धोलकामें एक स्वतंत्र राज्याधिकारी बन बैठा। और अपने साम्राज्यको खूब फैलाया-इतने पर भी वे अनिहलवड़के सम्राटके आधिन रहे। वस्तुपाल और तेजपाल वीरधवल महाराजके विख्यात् मंत्री रहे थे। वीरधवल महाराजके सुयोग्य-सोनेके विचारोंको शीघ्र ही इन भाइयोंने अपना लिया। और महाराजने उनके महत्वको जान उन्हींके सुपुर्द राज्यकार्य कर दिया। वास्तवमें विद्वान ही विद्वानोंकी परीक्षा और मान कर सका है। गुणी ही सर्व ठौर मान्य है। वे भी उधर पूर्ण सुचारु राज्य प्रबन्धक और रणनीतिनिपुण सेनापति निकले-जिससे महाराजके और भी विश्वासपात्र हो गए। उन्होंने स्वतंत्रतासे विचारपूर्वक न्याययुक्त बर्ताव किया और समयानुसार महाराजके अयोग्य कार्योंके करनेसे वर्जित रखनेमें संकोच न किया। एक समय दिल्लीके सुल्तानके मुल्ला-धर्माचार्य मक्का शरीफकी ज्यारतको जाते हुए धोलकामेंसे निकले इस समय महाराज वीरधवल इनको पकड़कर अपना बंधी बनाना चाहता था, परन्तु इन भ्राताओंने महाराजको उसके शरीर तकको न छूने दिया। इतनाही नहीं बल्कि उन्होने इस यात्रीका न्योताकर राज्य नियमानुसार अतिथि सत्कार किया। इस कृतज्ञ यात्रीने लौटने पर सुलतानसे इन भ्राताओंकी विशेष तारीफ की और इन्हीं द्वारा सुल्तान और धोलका नरेशमें मैत्रीपूर्ण संधि हो गई। उस समय एक निवासी आंखों देखी तौर पर वस्तुपालका राज्य प्रबंध इस प्रकार वर्णन करता है:—

'वस्तुपालके राज्य प्रबंधमें नीच मनुष्योंने-शूद्रोंने घृणित कार्यों द्वारा जीवनोपार्जन करना छोड़ दिया था। बदमाश पीले पड़ जाते थे और सुचरित्री दिनदूनी उन्नति करते थे। वस्तुपालने समुद्रकी डकैतीका अन्त कर दिया और दूधकी दुकानों (Diary)में चबूतरे बनवा हर-एक जातिको छुआछुतसे बचा दिया। इन्होंने पुरानी इमारतोंकी मरम्मत की, वृक्ष लगवाए, कुए खुदवाए, बगीचे लगवाए और शहरको फिरसे बनवाया। " इन भ्राताओंके सुयोग्य कार्योंका अंत यहीं न समझिए। उन्होंने अपने सम्राटके साथ रणस्थलोंके दुःखोंको भी सहन कर

महाराजको विजयलक्ष्मीसे शोभित किया। उनके वीरतापूर्ण कार्य रूपी कमलों पर कवि भ्रमर मुग्ध हो उस समय भन्नाते–कविता करते रहे थे। केम्बे(Cambay)के बलवान सरदारको परास्त करना दिल्लीके मुहम्मद घोरी सुलतान मुइज़ुद्दीन बहरामशाह ऊपर उनकी विजय, और उनके द्वारा गोधाके अधिकारी घुंघुलका कैद होना–यही इन भ्राताओंके वीरतापूर्ण कार्य उनको भारतमाताके महान् योद्धाओंकी श्रेणीमें रखनेको बाध्य करते हैं। ए जैन भ्राताओं! वीर पराक्रमी नर महावीर संतानके अतिरिक्त कोई अन्य व्यक्ति नहीं हैं। परन्तु वर्तमानकी हम सदृश संतानके समान भीरु–कायर नहीं हैं। इन्हींमें वास्तविक "जैनत्व" था। सन् १२२०में वस्तुपालने श्री शेत्रुंजयजी व गिरनारजीका पवित्र संघ चला 'संघपति'की पदवीसे अपनेको विभूषित किया था। सन् १२२८में सुधारक जगच्चंद्रने तप–गच्छको अवतीर्ण किया। इन भाइयोंने इस कार्यको अपनाया। पुन्यवान् जीव अपनी लक्ष्मीको भी सुफल करनेके हेतु उसको उत्तम कार्योंमें लगानेसे नहीं चूकते। इन दोनों भाइयोंने भी मन्दिर धर्मशालादि बनवा अपनी लक्ष्मीको सार्थक बनाया। सुप्रसिद्ध मेमार सोमदेवने उनके आबूके मन्दिर बनाए थे। यह मंदिर विमलशाह द्वारा निर्मापित मन्दिरके निकट है और सन् १२३० में बनकर तैयार हुआ था। जैसे निम्न श्लोकोंसे विदित होता है:–

"वैक्रमे वसुवस्वाशा १०८८ मितेब्दे भूरिरैव्ययात्। सत्प्रासादं सविमलवसत्याह्वं व्यधापयत् ॥ ४० ॥ वैक्रमे वसुवस्वर्के १२८८ मितेऽब्दे नेमिमंदिरम्। निर्ममे ल्हणिगवसत्याह्वयं सचिवेंदुना ॥ ४३ ॥ कषोपलमयं बिंबं श्रीतेजःपाल मंत्रिराट्। तत्र न्यास्थत्स्तंभतीर्थ निष्पन्नं दृक्सुधाजनम् ॥ ४४ ॥ मूर्तीः स्वपूर्ववंश्यानां हस्तिशालं च तत्र सः। न्यवीविशद्दिशांपत्युः श्रीसोमस्य निदेशतः॥४५॥ महो शोभनदेवस्य सूत्रधार शिरोमणे। तच्चैत्यरचनाशिल्पान्नाम लेभे यथार्थताम्॥४६॥ तीर्थ द्वयेऽपि भग्नेऽस्मिन् दैवान्म्लेच्छैः प्रचक्रतु.। अस्योद्धारं द्वीशकाब्दे वह्निवेदार्क संमिते १२४३ ॥४८॥ तत्राद्यतीर्थस्योद्धर्त्ता लल्लो महणसिंहभूः। पीथडीस्त्वतरस्याम् द्वयवहृच्चंड सिंहजः ॥४९॥ कुमारपालभूपालश्चौलुक्य कुल चन्द्रमाः। श्रीवीर चैत्यमस्योच्चैः शिखरे निरमीमपत् ॥ ५० ॥

श्री अर्बुदकल्पः समाप्तः।

यह मंदिर अति सुंदर और मेमारीके कामका नमूना है। और मि० फरग्यूसनके वाक्योंमें इसकी उकारनेकी तरतीब और हवाला देनेकी. खूबसूरती अक्सर इस मुल्कमें भी लासानी है। इसी वर्ष वस्तुपालने १ मंदिर गिरनार पर और शेत्रुंजय गिरि पर बनाये। वस्तुपालकी कवित्वशक्ति भी कुछ ऐसी वैसी न थी। आपका कवि नाम वसंतपाल था। सोमेश्वरने इनकी विद्यानिपुणता पर मुग्ध हो इन्हें "सरस्वती–पुत्र" कह कर लिखा है। **मेरुतुंगने इनकी** कवित्वशक्तिके उपलक्षमें इन्हें एक महान कवि कह कर पुकारा है। 'नरनारायणानंद' नामक इनकी पुस्तकोंमें जिसमें इन्होंने महाराजा कृष्ण और अर्जुनके गिरनार पर्वतपर विचरन और अर्जुन

द्वारा सुभद्रा हरणका वर्णन है अत्युत्तम है। इन्होंने अनुमान तीनके अति विशाल पुस्तकालय स्थापित किए थे। वीरधवल सन् १२३८ में स्वर्गवासी हो गए। इनकी प्रजाकी इनसे इतनी भक्ति थी कि १९० मनुष्योंने उन्हींकी चिता-पर स्वप्राण विसर्जन कर दिए। इससे बढ़ कर राज्यभक्ति शायद ही और कहीं उपलब्ध होगी। भारतवासी सदैवसे न्याय, राजा और धर्मके लिए अपना 'सर्वस्व' अर्पण करनेको तैयार रहे हैं। दोनों भ्राता इस समय भी स्थिरचित्त थे। उन्होंने अंतमें चिताके और पास एक सरल पहिरा खड़ा कर दिया जिससे कोई अन्य मनुष्य अपने अमूल्य जीवनका अंत न कर दे। वीरधवलकी मृत्युसे उनके दो पुत्रों वीरम् और विसलमें झगड़ा हुआ, परन्तु वस्तुपालकी कृपासे विसलको ही गद्दी मिली। और विसलदेवके ही राज्यकालमें दोनों भ्राताओंके मंत्रीकालका अन्त हुआ। एक दन्तकथासे यह इस प्रकार है कि राजाके मामासे वस्तुपालने कुछ झगड़ा कर लिया था अर्थात् एक समय राजाके मामा सिंहने एक निर्दोषी मुनिको विशेष दुःख पहुँचाया था। जब वस्तुपालको यह मालूम हुआ तो उन्होंने सिंहकी उंगलियां काट लीं। सिंहने राजासे शिकायत कर इन्हें प्राणदंड आज्ञा दिलाई परंतु सोमेश्वरके बीचमें पड़नेसे राजाने क्षमा कर दिया। वस्तुपालको इस अकारण अपमानसे हृदयमें अति दुःख हुआ। कुछ ही समय पश्चात् इनका शरीर अस्वस्थ हुआ और इन्हें ज्वरने आ घेरा। कारणवश एक स्थान परिवर्तनकी राय ठहरी। अतः वस्तुपाल शत्रुंजयकी यात्रार्थ रवाना हुए परन्तु रास्तेमें इनकी हालत विशेष खराब होनेसे इन्हें साधु अकेवल्यकी कुटियामें ले गए। वहाँ इन्हें एक ग्रामीण चौपारमें ठहरा दिया। इनके पुत्र जित्रपाल और भ्राता तेजपाल इनकी सेवामें उपस्थित थे, परंतु इनकी स्थिति चिन्ताजनक होती गई। अंतमें एक साधुने इन्हें सम्बोधा और अन्त समय श्री ऋषभदेवका नाम लेते हुए यह निम्न श्लोक पढ़ा था:—जिसका अर्थ होता है कि मैंने कोई साधुमनोंकी प्रशंसाजनक कार्य नहीं किए हैं, इसी प्रकार मेरा जीवन पूर्ण होता है। थोड़े समयके खामोशीके पश्चात् मृत्युशय्या पर पड़े हुए मंत्रीने अरहंतोंको नमस्कार कर प्राण त्याग दिये। यह समय सन् १२४१ में था। प्रत्येक मनुष्यको इस असामायिक मृत्युसे असीम दुःख हुआ। अंतमें इनके पुत्रादिने अन्त समयकी क्रियां की थीं। और जहां पर इनकी दग्ध क्रिया हुई थी वहां पर इनके पुत्रने श्री ऋषभदेव मूलनायकका मंदिर निर्मापित कराया था। पाठको! समयकी महिमा विचित्र है। उसहीकी महिमासे हम भी आपसे विदा होते हैं जिसने वीर-वस्तुपालके तेजमय-ओज पूर्ण जीवन लीलाको क्षणोंमें नष्ट कर दिया।

रोजाना इधरकी साबित है, यहांसे दिल उठा अपना।
किसीके घरमें शादी है कहीं हंगामए गम है॥

परन्तुः मित्रो! इससे दुनिया सारपूर्ण है यही समझिए क्योंकि वस्तुपालने इसी दुनियामें ही रहकर अपनी जीवनलीला ओजपूर्ण बनाई थी। इस लिये कुछ वास्तविक कार्य करके दिखाइए। इति शुभम्।

विनीतः—**कामताप्रसाद** जैन, अलीगंज (एटा)।

"विद्यार्थीगृह" याने बोर्डिंग हाउस।

-(લેખક—નાગરદાસ ન. સંઘવી, કેરવાડા)

બોર્ડીંગ હાઉસ આપણામાં પૂર્વકાળના ગુરૂકુળનું રૂપાન્તર છે. ગુરૂકુળોમાં સચવાતી આર્ય પવિત્રતા અને સાદા સ્નેહે પોતાનું રૂપ એ રૂપાન્તર સાથે, પ્રાશ્ચાત્ય સ્વચ્છતા અને આત્મ મોદ (સ્વાર્થ)માં ફેરવી નાખ્યું છે. કેટલાક ઇંગ્લીશ ભાષા ભિજ્ઞ સજ્જનો એમ માને છે કે આ તો ઉન્નતિક્રમનો પરિવર્તન કાળ છે. કેટલાક જુના વિચારના વિદ્વાન પુરૂષો એને અધોગતિની સીડી કહે છે. આ વિવાદ ગ્રસ્ત પ્રશ્નનું નિરાકરણ કરેલું નથી. કદાચ તેમ હોય, પરંતુ જે સ્થિતિમાં આપણે છીએ, તે સ્થિતિને સુધારી દેશ કાળને અનુસરતાં જે, જે, સાધનો આપણી પાસે હાલ હોય તેમનો સદુપયોગ કરવા સંબંધી વિચાર કરવો ખાસ જરૂરી છે,

આપણી બોર્ડિંગોને એવા ધોરણ ઉપર મુકવી જોઇએ કે, પોતાની મેળે પોતાનો નિભાવ કરી શકે. આ કાર્ય બે રીતે થઇ શકે એમ છે-એક તો બાહેર મદદથી અને બીજું એમાં રહેના વિદ્યાર્થિઓની મદદથી. પહેલાંના સમયમાં ચાલતા ગુરૂકુળ, પુરાણાદિક ઉપરથી માલુમ પડે છે કે, તે કાળ સામગ્રી વિદ્યાર્થિઓની પરસ્પર સહાયથીજ ચાલતાં હતા. કાલમાં નવી દાખલ કરવામાં આવેલી યોગમાં આવતું બંધ થયું હોય તો પણ કોઇક વખત આપણા ઉપયોગમાં આવવાનું છે, અને એવીજ રીતે હમેશ આપણુંજ રહેવાનું છે. આ સ્વતઃસિદ્ધ સત્ય આપણે જાણીએ છીએ તોપણ અમલમાં મુકતા આપણું હૃદય આનાકાની કરે છે અને પાછું હઠી જાય છે. આવી ભાવનાઓ વિદ્યાર્થિ સમાજમાં દાખલ થાય તો અનેક રીતે આ કાર્ય સાધી શકાય છે.

અમેરિકામાં વિદ્યાભ્યાસ કરવા જતા કેટલાએક ભાઅવી હિંદી વિદ્યાર્થિઓ સ્કુલમાંથી રજા વગેરેના અવકાશના વખતે જોઇતો સામાન મેળ કરીને ત્યાંનું અતિ ખર્ચાળ જીવન ચલાવે છે; અને વિદ્યાભ્યાસ કરે છે. આમાં કેટલેક અંશે એ દેશનું રાજ્ય બંધારણ અને સામાજીક બંધારણ મદદ કર્તા હતુ હશે ખરું અને તે દેશના લોકોએ પોતાના સ્વદેશીય લોકોના હિતને માટે એવી અનુકુળતાઓ કરી આપી હશે અને તેનો લાભ પરદેશીય વિદ્યાર્થિઓને પણ મળતો હશે. આ કાંઇ બેશક ત્યના વિદ્યાર્થિ સમાજની કુશળતા બતાવે છે.

આપણી વર્તમાન સ્થિતિ, ધીમે ધીમે યુરોપ અમેરિકા દેશોના જેવી ખર્ચાળ થતી જાય છે. એક આખા કુટુંબના ભરણ પોષણને માટે થતા ખર્ચ જેટલી રકમનો વ્યય એકજ વિદ્યાર્થિને ઉંચુ શિક્ષણ આપવાના કાર્યમાં કરવો પડે છે. હવે જો આપણે તેમની સ્થિતિનું એક રીતે અનુકરણ કર્યું છે, તો હવે બીજી રીતે પણ ખાસ જરૂરીઆતવાળી સ્થિતિમાં એમની સ્વાશ્રયી પદ્ધતિનું અનુકરણ હિંદુસ્થાનને (આપણને) કરવુંજ પડશે, નહિ તો આપણેજ આપણું ભવિષ્ય હાથે કરીને બગાડનાર નીવડીશું એ નિઃસંશય છે.

એટલુંજ નહિ પરંતુ એક ગુલામ પ્રજાને અમેરિકાના શહેરીઓની સમાનતામાં લાવી મુકી.

એજ મહાશયે સ્થાપન કરેલી ટસ્કેજી સંસ્થામાં હાલ કેવી શિક્ષણ પ્રણાલિકા ચાલુ છે, તે નીચેના હિંદી લેખ ઉપરથી લીધેલી હકીકત ઉપરથી માલુમ પડે એમ છે એ લેખ 'અમેરિકાના એક યાત્રી' લેખકે 'સરસ્વતિ' માસિકના જુન માસના અંકમાં લખી મોકલ્યો છે. ત્યાં જે શિક્ષણ આપવામા આવે છે તેમાંથી, વિદ્યાર્થિને ઔદ્યોગીક શિક્ષણ મળે છે અને તેની સાથે સંસ્થાનું કાર્ય ચલાવવાને અને વિદ્યાર્થિને પોતાને પોતાનું ભરણ પોષણ કરવાનું સાધન પેદા થાય છે." ટસ્કેજી સંસ્થાના ફાયદાને માટે બે વર્તમાન પત્ર[1] અને ચાર માસીક પત્ર ત્યાંથી છાપીને પ્રગટ કરવામાં આવે છે. આ વિના બીજું પણ કેટલું કુટકર કાર્ય પાસેના નગરો તથા પાઠશાલાને માટે કરવામાં આવે છે. આ વિભાગમાં થતા કાર્યનું મૂલ્ય શને ૧૯૧૧ માં ૧૬૨૧૭ ડોલરનું અનુમાન કરવામાં આવે છે.

પાઠશાલાનું મુખ્ય મકાન શને ૧૮૮૯ માં બનાવવામાં આવ્યું હતું એ વખતે પાઠશાલાની સમીપમાં બહુ મોટી ઝાડી હતી. એ ઝાડીને કાપીને લાકડાં વેચવામાં આવે તો બહુ મોટો ફાયદો થાય એમ માલુમ પડવાથી તે ઝાડીને કાપી શને ૧૯૧૦માં મકાન વગેરેના ખપમાં લાગે એવાં કુટ ૭૮૦૦૦ લાકડાને વહેરીને તૈયાર કરવામાં આવ્યાં, કુટ ૧૫૩૪૦૦ લાકડાનાં પીઠ પાટીયાં વગેરે બનાવવામાં આવ્યાં અને ૧૦૫૦૦૦૦ કુટ ઘડીને તૈયાર કરવામાં આવ્યાં અને બીજા ઘણા લાકડાં બલતણના ઉપયોગમાં આવ્યાં.

પાઠશાળામાં કામ કરનાર એક મજુરે બહારની કેટલીક વસ્તુઓની મદદથી એક સામાન્ય ગાડી બનાવી. અને ત્યાર પછી શન ૧૮૮૮માં ગાડી અને પૈડાં બનાવવાનું કારખાનું એ સંસ્થાને અંગેજ ખોલવામાં આવ્યું. એવીજ રીતે ખેતીના કામમાં જરૂર પડતાં યંત્રો અને સડકો બનાવવા

૧ અઠવાડીક કે દૈનિક તે મૂળ લેખમાં લખ્યું નથી.

વગેરેનું કામ પણ એ સંસ્થામાં રહેતા વિદ્યાર્થિઓ કરતા હતા.

સંસ્થાને માટે ધાતુનાં વાસણનું ખર્ચ ઘણું પડતું હતું. જો ધાતુના વાસણો બનાવવાનું કારખાનું સંસ્થાને અંગે ખોલવામાં આવે તો ઘણો ફાયદો થાય એમ જણાવાથી લુઇશ આદમ નામના એક સીંધીને નોકર તરીકે રાખવામાં આવ્યો. આ માણુસ મોચીનું કામ પણ જાણતો હતો. એની મારફતે વિદ્યાર્થીઓને એ કામ શીખવાડવામાં આવ્યું.

હાલમાં એ વિભાગમાંથી ઘણે ભાગે જુનાં નવાં મળીને ૩૦૦૦ વાસણ તૈયાર થાય છે. મોટી મોટી ઇમારતોને માટે અહિંઆં ઢોળ ચડાવેલાં પતરા છત વગેરે જડવામાં કામ લાગે તેવાં તૈયાર કરવામાં આવે છે. કોરૂગેટેડ પતરાં (છાપરાં ઉપર જડી શકાય એવાં) પણ ત્યાં તૈયાર કરવામાં આવે છે.

મોચીઓના કારખાનામાં જુના જોડાઓને થીંગડાં મારવાનું કામ તથા નવા જોડા બનાવવાનું કામ કરાવવામાં આવે છે. તે સાથે ઘોડાનો સરસામાન, ગાડીઓની ગાદી વગેરેનું કામ પણ કરાવવામા આવે છે. આ કામથી એ સંસ્થાએ શને ૧૯૧૧મા ડોલર ૩૫૬૪ પેદા કર્યા હતા.

લોઢું ગાળવાનું યંત્ર પણ ત્યાં રાખવામાં આવ્યું છે. તેમા દર્વાજા, ખાટલા તથા બીજા જુદા જુદા પ્રકારનાં યંત્ર વગેરે પણ બનાવવામાં આવે છે

આ સંસ્થા તરફથી ૯૫૪૫ કુટ ગ્યાસના તથા ૩૦૯૩૭ કુટ પાણીના નળ નાખવામાં આવ્યા છે. આ વિભાગમા સને ૧૯૧૧માં ડોલર ૬૧૭૯ નું કામ કરવામાં આવ્યું હતું. આ સંસ્થામાં રહેતા ૧૬૦૦ માણુસોના તમામ કપડાં ધોવાનું કામ એ સસ્થામાં અભ્યાસ કરતી વિદ્યાર્થિનીઓજ કરે છે. દર વર્ષ ૧૪૩૨૦૨૩ કપડા તેમને ધોબીખાનામાં ધોવાં પડે છે.

લેખન વાંચનનું શિક્ષણ.

પાઠશાલામાં સામાન્ય શિક્ષણ આપવાની શાળા 'કાલીસ પી. હનટીંગટન મેમોરીઅલ બીલ્ડીંગ'ના નામે

થી ઓળખાઇ છે. આ મકાન મહાશય હનર્ટીંગટનની પત્નિએ પોતાની પતીની યાદગીરી જાળવવા બંધાવી આપ્યું છે. એક બાજુએ સાધારણ શિક્ષાનું કામ ઔદ્યોગીક શિક્ષાને અનુસરીને આપવામા આવે છે. આને લીધે ઔદ્યોગીક શિક્ષણ ભાર રૂપ માલુમ નહિ પડતા ઉલ્સાહની સાથે ખાસ ઉપદેશ સચવાય છે. બીજી બાજુએ સિદ્ધાંતોનું શિક્ષણ આપવામા આવે છે. આમા મેળવેલા જ્ઞાનનો વાસ્તવીક ઉપયોગ ઔદ્યોગિક વિભાગમા થઇ જાય છે.

સાધારણ શિક્ષા વિભાગમા, દીવસની શાળા અને રાત્રીશાળા છે બે ભાગના છોકરા દિવસે શિક્ષણ લે છે, અને એક ભાગના રાત્રીએ શિક્ષણ લે છે. દર અઠવાડીઆમાં ચાર દીવશ રાત્રે ૬ાા થી ૮ાા વાગ્યા સુધી અને એક દીવશે રાત્રે ૬ાા થી ૮ વાગ્યા સુધી શાળામા જવાનું હોય છે.

દીવસમાં અભ્યાસ કરનારા વિદ્યાર્થિઓને અઠવાડીઆમા ૩ દીવસ ૯ાા થી ૧૨ વાગ્યા સુધી અને ૧ાા થી ૪ વાગ્યા સુધી શાળામા રહેવું પડે છે. રાત્રીશાળા એટલા માટે રાખવામા આવે છે કે જે થોડી ફી દીવસની શાળામા અભ્યાસ કરનાર પાસેથી લેવામાં આવે છે, તેટલી પણ ફી જેઓ આપી ન શકે તેમને માટે છે. આ રાત્રીશાળામા મફત શિક્ષણ આપવામા આવે છે.

સાધારણ વિભાગને માટે શિક્ષકો તૈયાર કરવાને ગર્મીની રજામા દર વર્ષે શિક્ષણ આપવાની ગોઠવણ કરવામા આવે છે. આ પાઠશાળા ચાર અઠવાડીઆ ચાલે છે.

ધર્મ શિક્ષણ આપવાને માટે 'ફ્રોગ્સ બાઇબલ' પાઠશાળા છે. તેમા સને ૧૮૯૨ થી આજ સુધી પુરૂષ ૬૧૧, સ્ત્રી ૬ એ આ શિક્ષણ લીધું છે તેનસી પુરૂષ ૮૪ ને અને સ્ત્રી ૬ ને ઉપાધિઓ મળી છે.,

ઘર રંગવાનું, ખુરસીઓ પોલીસ કરવાનુ, સાઇનબોર્ડ બનાવવા વિગેરેનું કામ કરવામા આવે છે દરજી ખાનામા વિદ્યાર્થિઓના પોશાક બનાવવામા આવે છે. આ વિભાગમા ૬૫ વિદ્યાર્થિ કામ કરે છે. ખેતીવાડીને માટેના યંત્રોના નકશા બનાવવા, મકાનોના નકશા બનાવવા વગેરેનું કામ કરવાથી એ વિષયમાં વિદ્યાર્થિઓની ખાસ નિપુણતા વધતી જાય છે.

સ્ત્રીને માટે કામ કરવાની સંસ્થા અલગ રાખવામા આવે છે. સને ૧૯૦૮મા 'ડોરોથીહાલ' નામનું અલાયદુ મકાન તેમને માટે બાંધવામાં આવ્યુ હતું. તેમા એક ધોબીખાનુ, એક પાકશાળા (રસોડું), દરજીખાનુ અને ટોપીઓ બનાવવાનું કારખાનુ છે. એ ઉપરાંત અહીંઆં સાદડીઓ, સાવરણીઓ અને શાણુ વગેરે પણ બનાવવામા આવે છે.

પહેલા વિદ્યાર્થિનીઓ પોતાનો ખોરાક જાતે બનાવતી હતી પણ હવે શિક્ષણ લીધા પછી ફક્ત પીરસવાનું કામ કરવું પડે છે. બીજી ઉંચી જાતની પાક તથા ગૃહ-વ્યવસ્થાની શિક્ષા જુદા સ્થાનમા આપવામા આવે છે. શિક્ષણ લીધા પછી ફક્ત એક માસ તેમને સસ્થાના રક્ષકોમા કામ કરવું પડે છે. ત્યાર પછી એ રસોડાની પાસે નાનુ એક ઘર છે તેમા ઉંચા ધોરણની છોકરીઓ પોતાની મેળે પોતાનુ ઘર ચલાવે છે. આ ગૃહ વ્યવસ્થાના કામને માટે એમને થોડા ધનની મદદ પાઠશાળામાથી મળે છે તેમ.થી કર કસર કરીને ઘર ચલાવવું પડે છે.

પોશાક તથા ટોપી વગેરે બનાવવાનુ કારખાનું હમણાજ ખોલવામા આવ્યુ છે. એનો હેતુ વિદ્યાર્થિઓને માટે ધધાદારીની ગોઠવણ કરવાનો છે. પહેલુ જે કારખાનુ હતું તેમા ફક્ત સાધારણ કામ કરવામા આવતું હતું. સને ૧૯૧૦મા સ્ત્રી વિભાગમા નીચે મુજબ માલ તૈયાર કરવામા આવ્યો હતો.

સખ્યા	વસ્તુઓનું નામ .
૧૮૪૯	ઝાડુ (સાવરણીઓ)
૬૨૫	ગાલ્લા
૧૦	સાદડીઓ
૪૮૪	પડદા
૧૫૩	ટેબલ કલોથ
૨૬૩	બીછાનાના ઓશીકા
૨૦૬૧	તકીયાનાં ,,
૧૨૩	બારીના પડદા
૮૯	જુદી જુદી જાતના પડદા

બધા મળીને ડાલર ૨૫૭૫ નું કામ કરવામાં આવ્યું હતું.

સત્યકારી શિક્ષણ આપવાને એક શાસન-ભુવન પણ એ સંસ્થાનો વહીવટ ચલાવવામાં ઉપયોગી થાય એવું સ્થાપવામાં આવ્યું છે. ઔષધાલય પણ એ સંસ્થાનું પોતાનું આગવું છે તેમાં ડૉક્ટરો અને નર્સો તૈયાર કરવામા આવે છે.

આખા સમાજના વિચાર કેળવવાને દર વર્ષે નીગ્રો કોન્ફરન્સ બોલાવવામાં આવે છે. ખાસ કરીને કૃષી વિદ્યા ઉપર પ્રીતી ઉપજે એવા આશયથી એ કોન્ફરન્સ કામ કરે છે અને પ્રદર્શનો વગેરેથી એ શાળાને ઉત્તેજન આપે છે. આ સિવાય આખા સમાજની સ્થિતિ સુધારવાને જુદા જુદા રૂપમાં અનેક મહાન કાર્યો થાય છે. અને એ બધામાં આ સંસ્થા (મોટું બોર્ડીંગ હાઉસ)ના વિદ્યાર્થિઓ વગેરે પ્રધાન ભાગ લે છે

સૈનીક શિક્ષણ પણ સંસ્થાના વિદ્યાર્થિઓને આપવામાં આવે છે. તેમાં શિક્ષણ લઈ તૈયાર થયેલા વિદ્યાર્થિઓ પોલીસ તથા ચોકીદારનું કામ સંસ્થાને અંગે કરે છે.

મહાશય કારનેગીની ડૉલર ૨૦૦૦૦)ની મદદથી સને ૧૯૦૨ માં એક પુસ્તકાલય ખોલવામાં આવ્યું છે. તેમાં હાલ પુસ્તક ૧૫૦૦૦) છે.

આ બધી વિગતો ઉપરથી જણાય છે કે વિદ્યાર્થિઓ પોતાને માટે કેટલું કરી શકે છે ?

મહાશય વૉશીંગ્ટન આ યોજનાના મહાન ઉત્પાદક હતા; પરંતુ કાર્ય તો એ સંસ્થાના વિદ્યાર્થિઓએ કર્યું છે. ધીમે ધીમે ગુલામગીરીમાંજ ઉછરેલી પ્રજાએ પોતાનું કાર્યક્ષેત્ર ખુલ્લું કર્યું તેવીજ રીતે આપણને અનુકૂળ કાર્ય કરવાનાં ક્ષેત્ર પણ આપણેજ ઉત્પન્ન કરવાં પડશે. સ્વામી સત્યાનંદે એમના અમેરિકાના પ્રવાસમાં વિદ્યાભ્યાસ કરવાના ખર્ચ માટે મ્યુનીસીપાલીટીના મજુરો સાથે કામ કરવાની, ખેતરોમાં મજુરોની સાથે ખોદવાની અને એવાં એવાં અનેક પ્રકારનાં મજુરીનાં કામ કરવાની વાતો લખી છે. એક કોલેજમાં અભ્યાસ કરનાર વિદ્યાર્થિઓને મજુરો સાથે કામ કરવામાં હલકાઈ ન જણાય તો, આપણા સામાન્ય હાઈસ્કુલોમાં ભણતા વિદ્યાર્થિઓને એથી શું હીણપત લાગવું જોઈએ?

આપણે જો એકદમ એટલે સુધી જઈ ન શકીએ તો કેટલાક ગૃહ ઉદ્યોગોથી પણ કાંઇક પેદા કરી શકાય. આપણે ત્યાંની અંગ્રેજી સ્કુલો વર્ષમાં આઠ મહીના કામ કરે છે બાકીના ચાર મહિના વિદ્યાર્થિઓ રખડવામાં ગુમાવી નાખે છે. આ ચાર મહીના દરમ્યાન આપણી હાલની બોર્ડીંગોને અંગે વણાટકામને અનુસરતાં, છાપવા કામને અનુસરતાં, ખેતીના કામને અનુસરતાં કામ મેળવવાની યોજના કરવામાં આવે, અને વિદ્યાર્થિ બંધુઓ ઉત્સાહથી એવાં કાર્ય કરી સ્વતંત્ર કમાણી કરતાં શીખે તો, દેશ તેમજ આપણી કેળવણીની પ્રગતીમાં ઘણો મોટો લાભ થવાનો સંભવ છે.

મહાત્મા ગાંધીએ અમલમાં મુકેલી રાષ્ટ્રિય ગુજરાતી શિક્ષણની યોજના ફતેહમંદ નીવડે તો આ દેશમાં ઘણું અજવાળું પડે એમ છે. એમાં વિદ્યાભ્યાસના કામમાંજ વણાટકામ અને ખેતીનું કામ શીખવવાનું દાખલ કરેલું છે. કેટલાંએકનું એમ માનવું થાય કે વિદ્યાભ્યાસના શ્રમ પછી, લેવા જોઈતા આરામના વખતમાં કામ કરવાથી શરીર નબળું પડી જાય. આ માન્યતા અનુભવ થયા પછી ભુલ ભરેલી માલુમ પડશે. ઉત્સાહથી નિયમીત કામ કરનારની તંદુરસ્તિ વધે છે. ઉલટા જેઓ તદન નીરૂદ્યમી રહીને રજાના વખતમાં ઉંઘવામાં અને ટેલ ટપ્પા મારવામાં વખત પુરો કરે છે, તેમની તનદુરસ્તી બગડે છે.

આપણા હાલના, વર્ષમાં ચાર મહીનાના આરામ લેનારા અંગ્રેજી ભણતા વિદ્યાર્થિ બંધુઓની શારીરિક સ્થિતિ એમાં ખાસ દાખલા રૂપ છે. બપોરના ચાર પાંચ કલાક કલાશમાં કામ કર્યા પછી જે જે ભાઈઓ, ચિતરકામનો અથવા કસરત વગેરેનો વધારાનો અભ્યાસ કરવાનો કલાક ભરતા હશે, તેમને અનુભવ થયો હશે કે, ચિત્ર કાઢવાનું શીખવવામાં બપોરના એકલા મગજના કામથી કંટાળેલા મગજનો શ્રમ એક કલાકમાં તદન નાશ

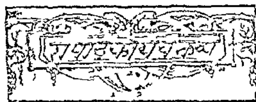
|| श्रीवीतरागाय नमः ||

दिगंबर जैन.

THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिर्विविधश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्तताम्, दैगम्बर जैन समाज मान्यम् ॥

वर्ष १३ वाँ. || वीर संवत् २४४६ ज्ये. विक्रम सं० १९७६. || अंक २.



इसी मासमें अजमेरके राय सेठ टीकमचंदजी के पुत्र भागचंदजीका

बड़ोंकी शादी। विवाह इन्दौरमें राय बहादुर सर सेठ हुकमचंदजीकी पुत्रीके साथ अतीव धूमधामके साथ हो गया जिसमें कमसे कम तीन लाख रुपये खर्च हुए होंगे। बारातियोंकी संख्या लगभग १२०० थी। सेठ टीकमचंदजीकी ओरसे इस मौकेपर वेश्य नृत्य लेश मात्र भी नहीं कराया गया और करीब (५०००) धर्मार्थ निकाले गये हैं। आपको यहां वर्द्धमान ज्ञान प्र. सभाकी ओरसे मानपत्र भी दिया गया था उस वक्त भी आपने इन्दौरकी संस्थाओंको १२०१ का दान किया था।

सेठ टीकमचंदजी हमारी महासभाके सभापति इस वर्ष हुए थे और आपके कथनानुसार आपने इस मौके पर वेश्या नृत्य जैसी निंद्य कृति नहीं की परंतु यह लिखते हमें दुःख और खेद होता है कि कन्या पक्षवाले सर सेठ हुकमचंदजी जो कि हमारी महासभाके स्थायी सभापति हैं और दि. जैन समाजके अग्रगण्य नेता हैं तथा आपने ही शिखरजी तथा पालीतानाके अधिवेशनमें वेश्या नृत्यका निषेध किया था तौभी पुत्र हीरालालजीकी शादीके समय वेश्या नृत्य कराया था जब समाजमें कई टीका टिप्पणी होने लगी थी तब सेठजीने इन्दौरमें एक सभामें खास प्रतिज्ञा ली थी कि मैं अबसे वेश्या नृत्य नहीं कराऊंगा, क्या सेठजी इस प्रतिज्ञाको भी भूल गये ? या जानबूझ कर ही प्रतिज्ञा पर दृढ़ न रह सके ? इस शादीमें यह बात बड़ी मार्केकी हुई थी कि जब बारात नहीं आई थी वहां तक तो वेश्या नृत्य होता रहा था परंतु बारात आते ही वह बंद करना पड़ा था क्योंकि वर पक्षके सेठ टीकमचंदजी इसमें शामिल भी नहीं होनेवाले थे क्योंकि आपको वेश्या नृत्य न देखनेकी भी प्रतिज्ञा थी इससे आप ही न आवे तो सेठजीको बुरा लगे इससे ही बंद रखना पड़ा था ! सेठ हुकमचंदजीने भी इस शादीकी खुशालीमें बड़ी भारी रकम दानकी निकाली है ऐसा सुना है वह खबर मिलनेसे प्रकट करेंगे, परंतु यह तो कहना पड़ेगा कि समाज अगुएके पीछे २

चलती है इसलिये अगुओंको तो समाजके सुधारनेका प्रयत्न करते रहना चाहिये और अपनी प्रतिज्ञापर दृढ़ रहना चाहिये। अन्यथा ऐसे सभापतियोंके व्याख्यानका असर कभी भी न पड़ सकेगा। हर्ष है कि इस मौकेपर इंदौरमें १२ वर्ष हुए खंडेलवालोंमें झगड़ा था वह मिट कर एका हो गया।

* * *

बम्बईमें धर्मशाला और सरस्वति भवन। बम्बईमें सेठ माणिकचंदजीकी एक 'हीराबाग', धर्मशाला तो है और एक दूसरी आलीशान धर्मशालाके लिये सेठ गुरुमुखराय सुखानंदजीने तीन लाख रुपयेका मकान खरीद किया है जिसकी उद्घाटन क्रिया दिवाली तक होनेवाली है। इसमें सेठजी पुस्तकालय भी खोलनेवाले हैं। अभी श्रीमान् त्यागी ऐलक पन्नालालजी महाराज तथा ब्र० शीतलप्रसादजी बम्बई पधारे थे तब सबका विचार हुआ कि झालरापाटनमें बड़ा भारी परिश्रम करके त्यागीजीने सरस्वति भवन स्थापित कराया है जिसमें करीब २००० ग्रंथ हैं और इसके लिये करीब रु. ३६०००) का चंदा भी त्यागीजीने एकत्र करवाया है परंतु इसके लिये झालरापाटन स्थान योग्य नहीं है इस लिये बम्बईमें ही यह भवन लाया जाय और बड़े भारी रूपमें इस धर्मशाला में यह सरस्वति भवन स्थापित हो तो अतीव उपयोगी और दृढ़ हो सके। त्यागीजीने इस बातकी स्वीकारता दी और सेठ सुखानंदजीने भी भवनके लिये दो बड़े २ कमरे देना स्वीकार किया है और कार्तिकमें बहुत करके इसका मुहूर्त होनेवाला है। यह बड़ी भारी खुशीके समाचार हैं और साथमें हम एक सूचना सेठ सुखानंदजीसे यह भी करते हैं कि भवनके साथ इस धर्मशालामें एक बड़ा भारी **वाचनालय** भी खोलना चाहिये और उसमें अंग्रेजी, हिंदी, मराठी आदि भाषाके जैन और अजैन अच्छे २ समाचारपत्र और मासिक आदि मगाने चाहिये। इस वाचनालयको भी बड़े भारी रूपमें खोलना चाहिये क्योंकि इससे जैनोंके साथ२ अजैनोंको भी बडा भारी लाभ पहुच सकेगा क्योंकि अजैनों भी अन्य पत्रोंके साथ २ जैन पत्र भी वांचेंगे और जैन पुस्तकें आदि भी वांचनेका उन्हें मौका मिलेगा। इस भवनके लिये योग्य मंत्रीकी बड़ी भारी आवश्यक्ता है तब ही अच्छे ढगपर भवन और वाचनालय उत्तरोत्तर उन्नतिपर चल सकेगा। आशा है सेठ सुखानंदजी साहब हमारे इस निवेदन पर अवश्य ध्यान देंगे।

कलकत्ता—में जैन हाईस्कूल, बोर्डिंग, संस्कृत विद्यालय और एक बड़ी धर्मशाला बनानेके लिये ब्र० शीतलप्रसादजीके परिश्रम और उपदेशसे ४ लक्ष रुपयेका फंड करना निश्चित हुआ है और उसके लिये कमेटी भी बन गई है। इसमें रामचंद बलदेवदासने १६००१) और किशोरीलालजी पाटनी मत्रीने १०००१) भरे हैं और विशेष रकम भरी जा रही हैं। आशा है कि कलकत्तेके भाई इस कार्यकी शीघ्र ही पूर्ति करेंगे। कलकत्ता बडा भारी केन्द्र है। और यहां धनिकोंकी कमी नहीं है। यदि धनिक लोग इस बातपर लक्ष देवे तो ४ क्या १८ लाखका चंदा सहजमें हो सकता है।

हर्षकीर्तिकी लीला।

हमारे प्रायः सर्व पाठकगण दाहोदवाले हर्षकीर्तिसे परिचित हैं ही। तो भी ऐसे बहुतसे भोले भाई हैं जो कि हर्षकीर्तिकी मीठी और ठगनेवाली बातोंमें आकर फंस जाते हैं और धोखा खाते हैं। समाचारपत्रोंमें अनेक वार लिखा गया है, तो भी उसकी नवीन धूर्तता पुनः प्रकाशन कर सर्व भाईयोंको सावधान रहनेके लिये प्रार्थना है।

यह हर्षकीर्ति कौन है ? बहुतसे भाई हर्षकीर्तिको दिगम्बर जैन धर्मका अनुयायी मुनि समझते हैं, परन्तु वास्तविक वह मुनि नहीं है। शास्त्रकारोंने **मुनिका लक्षण** इस प्रकार कहा है—

विषयाशावशातीतो निरारम्भो परिग्रहः ।
ज्ञानध्यानतपोरक्त स्तपस्वी सः प्रशस्यते ॥

अर्थात्–जो विषय–आशा–आरम्भ और परिग्रह रहित हो। जब तक उसने समस्त परिग्रहसे मूर्छा नहीं त्याग की हो, और बाह्य मुद्रा यथावत् नग्न दिगम्बर न धारण की हो, तब तक वह मुनि नहीं हो सक्ता।

मुनिकी खास पहिचान ही यही है कि जिसकी बाह्य मुद्रा (नग्न दिगम्बरपना) यथावत् हो फिर मुनियोंके मूलगुण पालन करे। सैद्धांतिक ग्रंथोंमें मुनिका लक्षण बाह्य यथावत् मुद्रा कही है। वह मुद्रा नियमित यावज्जीवन पर्यन्त पालनी चाहिये। उस मुद्रामें किसी भी प्रकार अतिचार व अनाचार नहीं होना चाहिये। न वह मुद्रा कभी, कथंचित् भी भंग करनी चाहिये। जिस समय वह मुद्रा (नग्न दिगम्बरपना) भंग हुई कि, उसका मुनिपना भी सर्वदा लोप हो गया।

दिगम्बर जैन इस शब्दकी व्याख्यासे भी यही अर्थ प्रतीत होता है कि जिसका मूल नग्न दिगम्बरपना ही उस धर्मका चिन्ह है। वह धर्म कभी भी त्याज्य नहीं हो सक्ता। इसलिये सर्व भाईको ध्यानसे विचारना चाहिये कि, दिगंबर जैन धर्म जिसका मुख्य उद्देश्य वीतराग अवस्था प्राप्त करनेका है और वह वीतराग अवस्था जब तक हम वीतराग (वीतः दूरीकृतः रागो मोहो यस्मात् स वीतरागः) अर्थात् मोहको नष्ट करनेवाले कारणोंको नहीं प्राप्त होंगे तब तक उसका मिलना असंभव है। मोह पर पदार्थोंसे होता है, और उसका मुख्य कारण परिग्रह है। जब तक परिग्रहका पूर्ण त्याग नहीं होगा तब तक वीतराग अवस्थाका प्रत्यक्ष कारण-मुनिपना कभी भी, किसी भी प्रकार, कैसे भी नहीं हो सक्ता। इसलिये मुनि होनेके लिये परिग्रह (वस्त्र लंगोटी आदि सर्व,का सर्वदा त्याग करना चाहिये।

यह बात आम तौरसे सर्वत्र प्रसिद्ध भी है कि दिगंबर जैन साधु नग्न ही होते हैं। सर्व मत मतांतरोंमें भी यही बात प्रसिद्ध है। तो फिर हर्षकीर्ति जिसके **मर्यादा रहित परिग्रह** है, बाग है, बगीचा है, महल है, खेती होती है, फल फूलोंकी बिक्री होती है, सर्व प्रकारका आरम्भ और परिग्रह अपरिमित है, जिन भाइयोंको संदेह हो दाहोद जिला पंचमहलमें जाकर स्टेशनके पास स्वयं देखलें। वह

मुनि कैसे हो सक्ता है ? जहां पर वह जाता है वस्त्र पहन कर जाता है, भला वस्त्रादिकोंका भी तो त्याग नहीं, बाह्य मुद्रा नहीं, नग्न दिगंबरपना नहीं, विषयकषायोंका त्याग नहीं, पापाचरणका त्याग नहीं, ऐसेको मुनि कहना कैसे मजेकी बात है ! क्यों साहब ! क्या मुनि **चेली** रख सक्ते हैं ? मुनि बाग बगीचा रख सक्ते हैं ? तो क्या हर्षकीर्ति भट्टारक है ? हर्षकीर्ति भट्टारक भी नहीं है और न भट्टारकोंके ऐसे बुरे आचरण हो सक्ते हैं। भट्टारकोंको चेली चाउंटीसे क्या मतलब ? बाग बगीचासे क्या लाभ ? भट्टारकका पद भी महान है। भट्टारक लोग जितेन्द्रिय–धर्म रक्षक, व्रती धर्माचार्य होते हैं। और वे किसी पदके अधिकारी होते हैं। हर्षकीर्ति भट्टारक है तो किस पट्टका अधिकारी है ? क्या उसके पास इसका प्रमाण (सबूत) है ? यदि है तो समाजके सन्मुख पेश करे ? क्यों नहीं करता है ? गुपचुप बगलोंके समान क्यों समाजको ठगता है ? परन्तु यह बात नहीं है। वह भट्टारक भी नहीं है, और न उसके पास किसी प्रकारका प्रमाणपत्र है। न वह किसी पट्ट (गादी)का अधिकारी है। और भट्टारकोंकेसे पवित्र आचरण भी उसके नहीं है। इसलिये भट्टारक सर्वथा नहीं है। तो क्या हर्षकीर्ति क्षुल्लक है ? नहीं नहीं सर्वथा नहीं। **वह क्षुल्लक भी नहीं है**। क्षुल्लकके परिग्रह कहांसे होय ? क्षुल्लकका ऐसा निंद्य कृत्य नहीं हो सक्ता ? तो क्या हर्षकीर्ति ब्रह्मचारी है ? नहीं, नहीं, ब्रह्मचारीके चेली चाउंटीसे क्या मतलब ? ब्रह्मचारी तो सर्व प्रकारकी स्त्रियोंका त्याग करता है। इसके तो एक भी प्रतिमा नहीं है। फिर ब्रह्मचारी कैसे होसक्ता ? तो हर्षकीर्ति है कौन ? यह ठगोरा है, भेष धारण कर ठगता है। कभी क्षुल्लक बनता है, कभी मुनि बन जाता है। किसीके यहांसे पैसा लाता है, तो किसीके यहांसे आभूषण, किसीके यहांसे जो हाथ पडा सो। सुना है देहली (दिल्ली)से स्फटिक प्रतिमा चुराई थी। यह **दिगम्बरी जैनी भी नहीं है**। ठगनेके लिये **दिगंबर जैन** बन रहा है, समाजको धोखा देता है, भेष बदल कर छलता है। **दिगंबर जैन नहीं है।**

जब दिगंबर जैन श्रावक ही नहीं है तो दिगंबर जैनियोंके पूज्य मुनि ऐसे ढोंगी धुतारा-ठगी पुरुषको कहना और उसकी बातोंमें फसकर पैसा, रुपया, आभूषण, और सामान देना जैन धर्मकी हँसी करना है। भला मुनि तो इसका त्याग करचुके हैं तो फिर मुनि बन कर द्रव्यका क्या प्रयोजन ? और क्यों ले ? इनको लेनेकी क्या जरूरत ? बहुतसे भाइयोंको यह कह पैसा और द्रव्य लेता है कि मुझे मेरे मंदिरका जीर्णोद्धार करना है ? परन्तु यह सब ठगनेकी बदमासी है। दाहोदके पंच (जहांपर यह रहता है) इसके साथ बिलकुल वर्त्ताव नहीं करते हैं, और उनके इसके साथ किसी भी प्रकारका सरोकार नहीं रखा है। इसके पास घर चैत्यालय है उसके यहांसे ठगता है. अस्तु। भाइयोंको चाहिये इसको एक पाई भी न देकर धोखेसे बचें और अधिक ढोंग करें तो पुलिसके आधिन करें।

हर्षकीर्ति है कौन ? जब यह दिगंबर जैन धर्मका अनुयायी नहीं तो है कौन ? **यह है**

श्वेतांबर। प्रथम इसने श्वेतांबर संघमें दीक्षा ली थी, परंतु मन और इंद्रिय अपने काबूमें न रहा, संयम न पाल सके, श्वेतांबर साधुओंके विरुद्ध अनेक भले बुरे आचरण किये इस लिये वहांसे निकाल दिये गये। **श्वेतांबर संघको भी ऐसे आचरणवाला साधु पसंद नहीं आया और श्वेतांबर संघने त्याग कर दिया।** श्वेतांबर संघसे आश्रय छूट जानेसे उसने फिर अपनी यह कूट माया दिगंबर जैनमें फैलायी। और भावनगरमें ज्येष्ठ सुदी १० सं. १९५१ गुरुवारके दिनपसे अपनेको दिगंबर धर्मका मुनि प्रकट करने लगा। भावनगरके भाइयोंसे सर्व भाई खुशीसे पूछ सक्ते हैं। वे भी एक वार इस की मायामें फस कर पछताये थे। अब वहांके पंच इसको क्या समझते वह उनसे दरियाफ्त कर निर्णय कर लें।

जबसे हर्षकीर्ति अपनेको दिगंबरी जाहिर करने लगा तबसे उसने क्या२ काम किये इस विषयकी सूची बहुत बडी होगी, वह हम सर्वथा पूर्ण रूपसे यहांपर देनेमें असमर्थ हैं और दे भी नहीं सक्ते, उसके लिये एक स्वतंत्र ग्रन्थ बनाना पडे तब पूर्ण रूपसे आपके कार्योंकी सूची बन सके तोभी थोडे बहुतसे इनके कार्य ये हैं जो जैन दिगंबर धर्मसे सर्वथा विरुद्ध और शास्त्र विरुद्ध हैं। लश्करमें आपने आटेके मुर्गा–बकरे पाडा और जीव बनाकर हवन किये। आपने सुना है कि यशोधरके जीवने एक मुर्गा आटेका चढ़ाने पर कितना दुःख उठाया था। जैन धर्मका मुख्य तत्व अहिंसा है और जो कोई मनुष्य कृत्रिम अथवा अकृत्रिम जीवकी हिंसाकर हवन करे वह जैनी नहीं हो सक्ता। वैदिक अनुयायीमें अहिंसाकी छाप पाडनेवाला **जैन धर्म ही** है ऐसा महात्मा **तिलकका** मत है। इसी प्रकार अनेक जगह आटे आदि-के जीव बनाकर होम करनेवाले हर्षकीर्ति महाराज हैं क्या ये जैन हैं? धुलियासे को किस प्रकार चुंगलमें फसाई? मंदसोर प्रतापगढमें क्या किया? बडनगरमें कितना मान्त्र फलाया, मारवाडा (चापलपुर)मे प्रतिदिन माटी के जलभरे १०० घडोंसे स्नान करना और सब चीज खाकर मस्त रहना यह मुनि धर्म है क्या? विचारे भोले भाइयोंको मंत्र तंत्रके वहानेसे ठगना अच्छा नहीं? हम हरएक वातको लिखना पसंद नहीं करते। क्या वह देवी आर्यका बनकर द्रव्य नहीं ठगती है? और वह द्रव्य नोकर चाकर खेतीवाडीमें नहीं लगता है? क्या यही मुनिव्रत है? अस्तु।

आप जहांपर विहार करते हैं वहांपर बीस पंथ और तेरह पंथका झगडा हो? वहां एक दूसरेको लडाकर अपना काम बना लेते हैं इस तरहके मीठे २ जादू फेंके जाते हैं। एक भाई अपने दूसरे भाईसे विरुद्ध करे बस आपकी झगडेमें बनआती है और मतलब गांठकर पौबार हुए।

बीसपंथी भाइयोंमें हवन, फूल चढाना, केशर चढाना आदि विषयोंसे उश्केरणी करते हैं। यंत्र तंत्र टोना टपकाका लोभ दिया जाता है बस काम हुआ? शास्त्रकारोंने यह विषय खुली

रीतिसे स्पष्ट वर्णन किया है उसको कौन नहीं मानता है? शास्त्रकी आज्ञा सबको प्रमाण हैं। परंतु बीसपंथी भाई वस्त्रधारीको मुनि नहीं कहते। स्वयं भट्टारकोंसे मुनिका लक्षण पूछा जाय तो वे बिचारे स्पष्ट कहते हैं कि मुनि निर्ग्रन्थ होते हैं, परिग्रह धारी मुनि नहीं हैं।

मैंने सुना है और उदयपुरके भाई साहवान् (जहांसे वह हालमें पांचसे रुपया ले आया) उसको **पुलाक जातिका मुनि** बतलाते हैं।

पुलक मुनिका लक्षण शास्त्रकारोंने यह लिखा है–

अपरिपूर्णव्रता उत्तरगुणहीनाः पुलाकाः उत्तरगुणेष्वनापेतमनसो व्रतेश्वपि कोशचित्कचित् परिपूर्णतामपरि प्राप्नुवंतः अविशुद्ध पुलाक सादृश्यात्पुलाक व्यपदेश मर्हति निर्ग्रन्थरूपं भूपावेशायुधविरहितं तत्सामान्य योगात् सर्वेषु हि पुलाकादिषु निर्ग्रन्थ. शब्दो युक्तः। ननु भग्न व्रत्ते वृतावति प्रसंग इति चेन्न **रूपाभावान्** यदि भग्नव्रतेपि निर्ग्रन्थ शब्दो वर्तते श्रावकेऽपिस्यादिति चेन्न **रूपाभावात् निर्ग्रन्थ रूपमत्र नः प्रमाणं** न च श्रावके तद्स्तीति" (राजवार्तिके भट्टाकलंक देवाः)

जिसके उत्तर गुण नहीं परंतु व्रतमें कभी क्षेत्र और कालकी अनुकूलतासे अपूर्णता हो वह पुलाक है। और उसका बाह्य निर्ग्रन्थ रूप (नग्न दिगंबरपना) ही प्रमाण है। विना निर्ग्रन्थताके मुनि नहीं कहला सक्ता है। उदयपुरके भाइयो! सोचो, भला परिग्रहधारीको कहां मुनि कहा है? आप भी राजवार्तिकका प्रमाण चाहते थे। उपरोक्त वाक्य राजवार्तिकके ही हैं, देख लें और ब्राह्मण पंडितजीसे अर्थ करावें। इसका खुलासा श्लोकवार्तिकमें इस प्रकार है:—

"पुलाकाद्या मताः पंच निर्ग्रन्था व्यवहारतः
निश्चयाच्चापि नैर्ग्रन्थ्य सामान्यस्याविरोधतः
ये वस्त्रादि ग्रहेप्याहुर्निर्ग्रन्थत्वं यथोदित्तं
मूर्छानुद्भूतितस्तेषा व्याद्यादानेपि किं न तत्
वस्त्रादि ग्रन्थ संपन्न स्ततोऽन्येति गम्यते
बाह्य ग्रन्थस्य सद्भावे ह्यन्तर्ग्रन्थो न नश्यति
विषयग्रहण कार्यं मूर्छा स्यात्तस्य कारणं
न च कारण विध्वंसे जातु कार्यस्य संभवः
विषय कारण मूर्छा तत्कार्यमिति यो वदेत
तस्य मूर्छोदयेऽपर्वं विषयस्य न सिद्ध्यति
तस्मान्मोहोदयान्मूर्छा स्वार्थे तस्य ग्रहस्ततः
स यस्यास्ति स्वयं तस्य न नैर्ग्रन्थ्यं कदाचन ॥"

अर्थात्–पुलाकादि मुनि सर्वथा निर्ग्रन्थ दिगंबर है। पुलाकादि मुनिके वस्त्रादि परिग्रह रहनेसे अंतरंग परिग्रहका भी नाश नहीं होता है। जो लोग वस्त्रादि परिग्रह रखकर पुलाकादिकोंको निर्ग्रन्थ मुनि कहे तो स्त्री आदि कुटुंब रखकर मुनि होनेमें क्या हानि है? और घरमें केवलज्ञान प्राप्त करनेमें क्या कठिनता है? क्यों दीक्षा ली जाय? जब तक विषयोंमें मुर्छा है, मोह है, तब तक मुनिपना किसी भी प्रकार नहीं हो सक्ता है। और दिगंबर मुनिका यह चिन्ह है।

पाठकगण, समझे, हर्षकीर्ति श्वेतांबरी है इस लिये वस्त्रादि परिग्रह धारण करनेपर भी मुनि कहे जाते हैं, दिगंबर जैन नहीं है, ठगनेको, दिगंबर जैन बने हो। दिगंबर मुनि तो मूर्छा रहित हो निर्ग्रन्थ होगा। बिचारो भाइयो,

कौनसे शास्त्रमें पुलाक मुनिको वस्त्र रखना कहा है ? और आहारके समय नग्न होना कहा है ? इसी प्रकार एकवार श्रीमान लाला जग्गीमलजी रहीस देहलीको यह धोखा दिया कि पुलाक मुनि वस्त्र रख सके हैं और आहारके समय नग्न हो जाते हैं। प्रमाण मांगा तो नदारत ? कभी कभी आप **श्वेतांबर आचार** सूत्रकी गाथाका पाठ कर (क्योंकि आप श्वेतांबर हैं) साबित करते हैं कि गृहस्थ भोजनके समय नग्न हो जाता है परन्तु उनके यहां भी ऐसा नहीं माना है और हो भी तो हमे प्रमाण नहीं है। आप किसी दिगम्बर जैन ग्रन्थका प्रमाण बतला कर साबित करें तो आपकी खूबी है। हां, भोले लोगोंको ठगना दूसरी बात है। आप शास्त्रार्थकी कई वार डींग मार चुके हैं। यदि आपको शास्त्रार्थकी अधिक खाज है तो साम सामने मैदानमें आ जाइये। हमेशा तैयार हैं। देहलीमें मैं आपके-शास्त्रार्थकी परीक्षा कर चुका हूं। फिर भी आइये। हा, पुलाक मुनिके वस्त्र पहरना बगीचा बनवाना नोकर चाकर रखना सिद्ध कीजिये ? देखें तो सही क्या करते हैं ?

मुझे हालमें उदयपुरके भाई साहिबान मिले थे। और श्रीमान पूज्य पं० घनालालजी कासलीवाल मुंबई, व लाला भगवानदासजी बडनगरके समक्ष उदयपुरके पंचोंका कहना सुना, सबने समझाया भी। इससे सत्य घटना सबको मालूम होगई है। तो भी कोई हर्षकीर्तिके मीठे मन्त्र-जालमें फंसकर हठसे यह कहे कि पुलाक मुनि वस्त्रादि सर्व परिग्रह रखते हैं तो कृपाकर शास्त्रकी आज्ञा बतलावें। अखबारोंमें वह प्रमाण प्रसिद्ध करें। अन्यथा बिना पढ़े लिखे भोले लोगोंको इधर उधरके मनगढत श्लोकोंका झूठा साचा अर्थकर बहकाकर ठगना दूसरी बात है। एक लेख उदयपुरका हमें देखनेमें आया है उसमें भी शास्त्रार्थकी डींग मारी है, केवल बक-बक करनेसे कुछ भी लाभ नहीं, आइये, प्रमाण बतलाइये, हम सहर्ष तैयार हैं। यदि शास्त्राज्ञा होगी तो मान लेंगे इसमें क्या हानि है परंतु एक वार समक्ष आकर अपनी करतूत दिखलाइये।

श्रुत सागरीमें स्पष्ट कहा है कि "निर्ग्रन्थप्रव्रजिताः इति" इसका तो अर्थ खुलासा यही है कि पुलाक निर्ग्रन्थ ही होते हैं। गृहस्थ पुलाक जातिके मुनि नहीं कहलाते। यदि गृहस्थ भी खाली आहार लेते समय नग्न हो जाय और समस्त विषय कषाय और परिग्रहका सेवन करते हुए भी मुनि कहलावे तो मुनि और गृहस्थमें क्या भेद है ? आप साबित करें। अंतमें भाइयोंसे प्रार्थना करूंगा कि हर्षकीर्तिके फंदेमें न फंसे, पूरा ठग है।

मंदनलाल जैन वैद्य, ईडर।



સહાયતા મળી—બોરાણુની દિ૦ જૈન પાઠશાળાને લગ્નની ખુશાલીમાં ગાંધી બહેચર પુંજીરામ સોનાસણવાળા તરફથી ૨૫), સામચંદ કસ્તુરચંદ ધનીયોળ ૨૧), મગનલાલ બહેચર ૨૧) તથા મણીલાલ છગનલાલ તરફથી ૨૧) સહાયતા મળી છે.

સોજીત્રા—માં આ વર્ષે વૈશાખ માસમાં લગભગ ૫૦ લગ્નો વીસા મેવાડા ભાઇયોમાં થયા હતા જેમાં માત્ર બેજ લગ્ન જૈન વિધિથી થયા હતા. અજબ જેવું છે કે એ લોકોમાં વ્હેમ ભરાઈ ગયો છે કે જૈન વિધિથી લગ્ન કરીએ તો "વર કન્યા સુખી થતાં નથી!" ગુજરાતના ભોળા ભાઇયો, ગણપતિ વગેરેની પૂજા કોઇ દિવસે તો તમે કરો નહિ ને લગ્ન જેવે શુભ પ્રસંગે તમે હાથે કરીને મિથ્યાત્વી દેવોને પૂજો અને તે રૂઢિને બાપ દાદાના વારસાની માફક ન છોડો તથા જૈન શાસ્ત્રાનુસાર પૂજન હોમ વગેરે કરવામાં વ્હેમ માનો એ કેટલું હાંસીને પાત્ર છે?

સુરત—માં નરસિંગપુરા જ્ઞાતિના શા૦ ખીમચંદ સવાઈચંદે આમોદમાં સમાન ગોત્રમાં લગ્ન કર્યાં છે એમ તેમની ન્યાતને માલમ પડવાથી એ લગ્ન ધર્મ વિરૂદ્ધ ગણી એ ન્યાતે એ ભાઇનો વ્હેવાર બંધ કર્યો છે અને તેની શ્હેમાં તણાઈ જઇને પાંચગોટે (દિ૦ જૈન સંઘે) પણ એમનો વ્હેવાર બંધ કર્યો છે.!!

શ્રુત પંચમી ઉત્સવ—આ વર્ષે ઝાલરાપાટન, લલિતપુર, મોર્સી, સોલાપુર, ભિંડ, કલકત્તા, રોહતક, સાંગલી, મુસારી, સાહુમલ વગેરે સ્થળે ઉજવાયાના સમાચાર આવ્યા છે પણ ખેદ છે કે ગુજરાતમાં એક પણ સ્થળે આ પર્વ ઉજવાયાના સમાચાર મળ્યા નથી. ગુજરાતના ભાઇયો ઘોર નિદ્રામાંથી હજુ ક્યારે જાગ્રત થશે? મોટા મોટા શાસ્ત્ર ભંડારોની સાર સંભાળ ને ઉદ્ધાર હજુ પણ નહીં કરશો તો પછી સડીને ઉધાઇ ખાઇને નાશ થઇ જશે ત્યારે જાગશો!

શ્રાવિકાશ્રમ—મુંબાઇ ગરમીની રજા પછી તા૦ ૭ જુનથી ખુલ્યું છે.

ललितपुर—के सेठ मथरादासजी टडैयाका देहान्त हो गया। आपके पीछे पाठशाला, औषधालय तथा पुराने मंदिरोंकी मरम्मतके लिये ११०००) निकाले गये हैं।

स्वर्गवास—आदिसागरजी नामक दक्षिणके एक निर्ग्रंथ मुनि महाराजका पूनामें ज्येष्ठ वदी ३को स्वर्गवास हो गया।

भट्टारक विद्यार्थी—लातुरकी गादी पर विशालकीर्ति नामक १० वर्षके अपढ़ बालकको भट्टारक करके बैठा दिया है और जिसको बहुतसे सेतवाल भाई नहीं मानते हैं उनके अनुयायी मित्रोंने मिलकर १८ आदमीको कमेटी नियत करके उनको पढ़ानेका प्रबंध किया है और वे औरंगाबाद पाठशालामें पढ़ रहे हैं। पहले तो बालकको भट्टारकजी बना दिये और अब विद्यार्थी बनाये गये यह कैसी उल्टी बात है?

बड़ौत (मेरठ)—में ता. २०-४-२०को ब्र० शीतलप्रसादजीके हस्तसे जैन हाईस्कूलके द्वारोद्घाटनका उत्सव हुआ था जिस समय ब्रह्मचारीजीको एक अभिनंदन पत्र दिया गया था जिसमें ब्रह्मचारीजीकी अपार जाति सेवाका वर्णन किया गया है। यहां दो आम व्याख्यानमें ब्रह्मचारीजीने जैन धर्मका महत्त्व और अहिंसा धर्म पर अच्छा प्रकाश पाड़ा था।

समाज नेताओंसे प्रार्थना।

(लेखक-प. नंदनलाल जैन, इंदर।)

इस वर्ष श्रीमती दिगंबर जैन प्रांतिक सभा मुंबईने अपने पावागढके वार्षिकोत्सवमें एक बड़े ही महत्वका प्रस्ताव पास किया है वह यह है कि "गुजरात देशमें एक दिगंबर जैन संस्कृत महाविद्यालय स्थापित करना चाहिये। गुजरातमें दिगंबर जैन भाईयोंकी संख्या ठीक है, परंतु अज्ञान इस देशमें सबसे अधिक है। इस देशकी स्थिति सुधारनेके लिये सबसे प्रथम दानवीर नररत्न सेठ माणकचंदजीकी दृष्टि इस तरफ हुई थी। और आपने रतलाम तथा अहमदाबादमें इसी उद्देश्यसे बोर्डिंगकी स्थापना की, किन्तु खेद है कि उक्त बोर्डिंगोंसे आज तक एक भी विद्वान पंडित निष्पन्न नहीं हुआ और न धार्मिक कार्योंकी जाग्रति करानेवाला एक धर्मात्मा समाजनेता उत्पन्न हुआ। अस्तु, यहां पर इस ऊहापोहकी आवश्यकता नहीं है कि बोर्डिंगोंसे लाभ होगा या नहीं ?

भारतवर्षके प्रत्येक प्रान्तमें प्रायः संस्कृत विद्यालय होना चाहिये जिससे समग्र भारतवर्षमें धार्मिक जाग्रति नियमित बनी रहे। भारतवर्षमें अनेक भाषायें हैं। एक प्रान्तसे दूसरे प्रान्तकी भाषा भिन्न होनेसे शिक्षामें बड़ा व्याघात पहुंचता है। बालकोंके हृदयमें जितनी सरलता और सुगमताके साथ अपनी अपनी मातृभाषामें जो ज्ञान हो सक्ता है वह बहुत व्यय करने पर और घोर परिश्रम करने पर भी उतने समयमें अन्य भाषासे नहीं होता है। यह एक सिद्धान्त बात है कि ज्ञानकी श्रेणी मातृभाषा है। शिशु वर्गकी शिक्षा हृदयमें व्याघात पहुंचानेवाली न होनी चाहिये किन्तु जिस प्रकार बन सके उस प्रकार आनंद और खुशीमें हसते खेलते हुए धार्मिक अंशों (बातों) की शिक्षा बालकोंके कोमल हृदयमें देनी चाहिये। वही शिक्षा आकर्षण करनेवाली जीवन पर्यन्त स्थिर रहनेवाली होती है उसका उपाय यही कि मातृ भाषामें धार्मिक शिक्षा उन्नत होनी चाहिये जिससे धीरे २ बालकोंको इतना मजा आता है कि वे उच्च धार्मिक ज्ञानके अध्ययन में लीन होजाते हैं। साथमें यह भी कहना पड़ेगा कि सिद्धान्तोंका असली मर्म (ज्ञान) विना संस्कृत पढ़े आ ही नहीं सक्ता। कारण न्यायशास्त्रका आप किसी भाषामें ट्रांसलेशन (अनुवाद) कीजिये, नहीं होता है। एक तो संस्कृत सिवाय अन्य भाषाओंमें वे शब्द ही नहीं है जिनसे न्याय शास्त्रोंके असली भावोंका अनुवाद कर सकें। दूसरे जितने दार्शनिक ग्रंथ हैं वे प्रायः संस्कृतमें ही हैं। संस्कृत भाषामें वह खूबी है कि एक २ शब्दके प्रसंगोपात अनेक अर्थ स्वयमेव प्रतिभास होते हैं वे इतर भाषासे नहीं हो सक्ते। जिन धार्मिक गूढ सिद्धांतोंका रहस्य संस्कृत पढनेसे निकलता है वह अनुवाद किये हुए भाषाके ग्रन्थसे कल्पांतकाल पर्यन्त नहीं निकलता है। इस लिये विना संस्कृत पढे धार्मिक तत्वोंकी खोज व सच्चा ज्ञान न हो कर यह भी कमी २ होता है कि भाषामें कितने ही शब्दोंके न होनेसे विपरीत ज्ञान हो

जाता है। अनुमान-अनुमानाभास-हेतु-हेत्वाभास आदिका ज्ञान भाषामें होना असंभव है। और जब तक इनका ज्ञान न हो तब तक पदार्थोंका सच्चा ज्ञान नहीं हो सक्ता है। इस लिये धार्मिक तत्वोंके जाननेके लिये संस्कृत भाषाका ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है।

गुजरदेशमें-एक भी संस्कृतका ज्ञाता विद्वान नहीं है। हर समय सर्वत्र यही जोर शोरसे पुकार मची रहती है कि **हमें पंडित चाहिये**"। हमारी पाठशाला बंद है। क्या करें पंडित नहीं मिलता है। अभी थोडे दिन पहले नवागांवमें एक लुहारको धर्मशिक्षा देनेके लिये नियत किया था वह विचारा धर्मशिक्षाको क्या समझे? जैन धर्म क्या है? इस नाम तकको नहीं जानता है फिर जैन धर्मके तत्वोंकी शिक्षा किस प्रकार दे सक्ता है? यह आप ही निर्धारित कीजिये परन्तु किया क्या जाय? जैन पंडित मिलते कहां है? और मिलते भी हैं वे हिन्दी भाषाके ज्ञाता जिससे लाभ कम होता है। ग्राम २ में **उपदेशकों**की अतिशय आवश्यकता है परन्तु उपदेशकोंकी भाषा हिन्दी होती है इसलिये उपदेशकोंका असर उतना नहीं होता है और खर्च बहुत ही अधिक पड़ता है। सिवाय उपदेशक बड़े २ शहरमें जहां पर रेलका साधन है भ्रमण करते हैं किंतु छोटे २ ग्रामोंमें नहीं जाते हैं। समाजको आवश्यकता है ग्रामीण भाइयोंके सुधार करनेकी। कारण नागरिक (शहरी) जनतामें संसर्गसे भी बहुत कुछ शिक्षा मिलती है परन्तु जिनको णमोकार मंत्र तक नहीं आता ऐसे भाईयोंका सुधारना ही परम आवश्यक है। थोड़ेसे नागरिक लोग सुधरनेसे राष्ट्र और धर्म उन्नत नहीं हो सके हैं। धर्मकी व्यापकताके लिये ग्रामीण जनताका सुधार करना सबसे अधिक जरूरी है। इस लिये भिन्न २ प्रांतोंके लिये तद्देशीय उपदेशकोंकी जरूरत है जो कि वे अपने प्रान्तकी भाषा जानते हों, साथमें संस्कृत भाषाके भी जानकार हों तो ग्रामीण जनता उन उपदेशकोंके हृदयंगम भावोंको समझकर अपना कल्याण कर सक्ती है और समाजका द्रव्य भी व्यर्थ व्यय नहीं होगा। गुजरातमें न तो कोई पंडित ही है और न उपदेशकका काम करनेवाला गुजराती भाई है। बोर्डिंगोंसे पढ़े लिखे मनुष्य इस तरफ ध्यान ही नहीं देते हैं या बोर्डिंगोंमें ऐसे विद्वान पैदा करनेकी शक्ति ही नहीं है। समाजसेवी मनुष्योंकी आवश्यकता है वह अंगरेजी पढ़े लिखे मनुष्य करते नहीं है। कदाचित कोई करनेको तैयार भी होता है तो उसके विचार जैन धर्मसे कम मिलते हैं। ऐसा करनेसे परिणाम यह निकलता है कि कोई ऐसा वक्ता (उपदेशक) एक ग्राममें जाकर विधवा विवाह करनेका उपदेश देने लगा। उसको सुनकर ग्राममें परस्पर विरोध फैल गया। धर्म कार्यकी उन्नति एक तरफ रही। अवनतिके बीज पैदा हो गये। यहां पर मेरा ऐसा अभिप्राय नहीं है कि अंगरेजी विद्या पढ़ना ही नहीं चाहिये। किन्तु हमें समाजसेवी मनुष्योंकी जरूरत है। यदि ये लोग (अंगरेजी पढ़े लिखे) इस कार्योंको करें तो अधिक लाभ है परंतु धर्म

सिद्धान्तको अच्छी तरह समझकर ही इन लोगोंको इस तरफ अपना कर्तव्य करना चाहिये नहीं तो हानि विशेष होनेकी संभावना है।

गुर्जर देशमें अधिक अज्ञान है, शहरोंको छोड़कर (गुजरातमें शहरोंमें प्रायः दिगंबर जैनी भाईयोंकी वस्ती बहुत ही कम है) ग्रामोंमे दिगंबर जैनी भाईयोंकी स्थिति अतिशय खराब है! शिक्षा प्राप्त करनेके साधन गामोंमें प्राय होते नहीं। गुजरात, वागट, मेवाड़ प्रांत (जिनमें दिगम्बर जैन भाईयोंकी संख्या विपुल है) देशी रियासतमें अधिक भाग होनेसे शिक्षा नाम मात्रको भी नहीं मिलती है। न तो सर्कारी स्कूल ही हैं, और न पाठशालायें हैं। ऐसे बहुतसे ग्राम हैं जहां पर शिक्षाका साधन कुछ भी नहीं है। जहां पर शिक्षा ही नहीं है, ऐसे देशमें धर्म ज्ञान कहांसे हो सक्ता है? प्रजाकीय जाग्रतिका तो कोई नाम तक नहीं जानता है। इस प्रांतके निवासी अपना लेनदेन व्यापार आदि भीलोंके साथ करते हैं, रात्रि दिवस इनकी ही संगति मिलती है जिससे यह फल निकलता है कि बाह्यवृत्ति भी बुरी संगतिसे खराब हो रही है, और अंतरंगवृत्ति भी ज्ञान विना मलिन है फिर धर्म कर्मका ज्ञान कहांसे रहे? इन लोगोंके आचरण भी ऐसे मलिन हो रहे हैं कि शुद्धता बहुत ही कम मिलती है, उच्छिष्टताका ज्ञान ही नहीं है। दर्शन पूजन किसी कोईको आता हो, नहीं तो भगवानको चरणारविंद पर केसर चढाई कि पूजनकी इतिश्री समाप्त हुई। शुद्ध णमोकार मंत्रका उच्चारण करना नहीं आता है। हे समाज नेताओ! जरा तो चेतिये। आपके भाईयोंकी इस शोचनीय अवस्थाको देखिये। ये अपने गुर्जर देश निवासी भाई (खास कर वागड़ प्रांतवासी) कितने अज्ञ हैं। इनका जीवन किस प्रकार निरर्थक नाश होता है यह भी एक वार सोचिये। जैन धर्म क्या है? इस छोटीसी बातका भी उत्तर विचारे नहीं दे सक्के हैं। यह कितने खेदकी बात है? सुधरी हुई नागरिक जनताकी तरफ हमारे समाज नेताओंका ध्यान आकर्षित रहता है परंतु जिनको सुधारनेकी खास जरूरत है उस तरफ किसी नेताने लक्ष नहीं लिया।

जैनधर्मभूषण श्रीमान् पूज्य ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीका कुछ समयसे इस तरफ ध्यान आकर्षित हुआ है। आपके परिश्रमसे वांतवाडामें एक विद्यालय स्थापित हुआ है जिसके लिये समाज चिर आभारी है।

गुर्जरदेश अतिशय भोला है, उदार है, धर्म भीरु है, परन्तु अज्ञ है इसका कारण यह है कि गुजरात देशमें बहुत समयसे भट्टारकोंका प्रबल साम्राज्य रहा है। पूर्व समयके भट्टारक सद्गुणी-सदाचारी-ज्ञानी और धर्मरक्षक होते थे। इनका जीवन धर्मरक्षार्थ ही व्यतीत होता था। पूर्व समयके भट्टारकोंका समय अपने कर्तव्योंको पूर्ण करनेमें, धर्म रक्षा करनेमें और सामाजिक व्यवस्था रखनेमें ही व्यतीत होता था। भट्टारक सुरेन्द्रकीर्तिने अपने जीवनमें तीन हजार ग्रामोंमें भ्रमण किया था। असंख्य ब्राह्मण और क्षत्रियोंको जैन बनाया था तथा शिथिल हुए जैनियोंको पुनः जैन धर्ममें दृढ किया था जिसके दस्तावेज मिलते हैं। एक एक भट्टार

क्योंकि पास कमसे कम १०–१५ पंडित और ८–१० ब्रह्मचारी रहते थे। ये सब मिल कर धर्मकी जाग्रति करते थे, ग्रंथ रचना करते थे, सामाजिक व्यवस्थाका सुधार करते थे परन्तु कुछ समयसे ऐसे भट्टारक होने लगे जो कि समाजको सुधारनेके बदले समाजके बिगाडनेमें ही अपना हित समझने लगे कारण वे विचारते हैं कि समाज यदि पढ़ी लिखी ज्ञानवान होगी तो हमें कोई भी नहीं पूछेगा इसलिये इन लोगोंने समाजमें शिक्षा और सदाचारके ऊपर पूरा २ अंकुश रखा है। एक भट्टारकने अपने चोपडा (वही) में भक्तामरका पाठ सुनानेके ४९) रुपया जमा किये है। वर्तमानमें इस वागड प्रांतमें ४ भट्टारक मोजूद है। (ईडर, डुंगरपुर, सूरत और नरसिंहपुरा भाइयोंके भट्टारक इस प्रकार ४ भट्टारक) जिनमें एक एकका मासिक खर्च ५००) रुपयासे अधिक है। ये खर्च गाडी घोडे और पालकीको उठानेवाले भोई सिपाई आदिमें व्यर्थ खर्च होता है। वर्तमान भट्टारकोंकी दशासे समाज परिचित है। मोजशोख और मजामें समाजका द्रव्य खर्च होता है। धर्म सेवनके बदले ये लोग मोज मजाके लिये समाजको लूट रहे हैं। क्या इनकी तरफ आपका ध्यान कभी गया है? ये लोग स्वयं नहीं पढते और न समाजको ही पढने देते हैं। इन भट्टारकोंका यही विचार है कि अधिक पढनेसे क्या फायदा? हिसाब और व्यापारी आना चाहिये। इसका अर्थ यही है कि यदि समाज सुधर गई तो हमें कौन मानेगा?

समाज रूढियोंकी गुलाम बनी हुई है। इस गुजरात प्रांतके भोले भाइयोंका पुराना ख्याल अभी तक वैसा ही बना है। गुरु विना ज्ञान नहीं है। चाहे गुरु पाखंडी-ढोंगी-लुटेरा और पापी ही क्यों न हो! विना गुरुके रहना ठीक नहीं है। समाजका जितना द्रव्य इन पाखंडी गुरूओंके मोज मजामें खर्च होता है उतना द्रव्य यदि समाज सुधारनेके काम लगाया जाय तो कितना लाभ होगा, परन्तु **इस प्रांतकी समाज बहुत ही भोली** है, धर्म भीरु है, सरल है, अपने भले बुरेको नहीं जानती है। धर्मके बहानेसे धूर्तोंकी इस देशमें बड़ी मजा है। गुर्जर देशमें एक भी विद्यालय नहीं है जिससे गुजराती भाई शिक्षा लें और देश तथा समाज सुधारें। धर्मके बहानेसे होनेवाले अत्याचारोंको जाने। अपनी रक्षा अपने आप कर सके। धर्मकी हंसी न हो ऐसे कार्योंका त्याग करे। ऐसे धूर्तोंसे बाज आवे जो विषयोंके लिये समाजको लूट रहे हो।

इन धर्मके बहानेसे होनेवाले अत्याचारोंको व (जिनसे धर्मकी हंसी होती है) दूर करनेके लिये जनतामें ज्ञानके प्रसारकी अतिशय आवश्यकता है। जब तक जनतामें ज्ञान नहीं होगा ये अत्याचार कभी भी दूर नहीं हो सक्ते हैं। इस प्रांतमें हरएक ग्रामके दिगंबर जैन मंदिरोंमें प्रतिमाओंपर आंगी (सोनेचांदीके वस्त्र आभूषण विगेरः) चढाई जाती है, समझाने पर भी इस प्रांतके भाई अपनी अज्ञानता नहीं छोडते हैं, कारण यही है कि इन भाईयोंमें देव शास्त्र और गुरुका ज्ञान नहीं है। श्वेतांबर इस देशमें अधिक बस्ती होनेसे उनकी

रिवाजकी प्रवृत्तियां अपनी दिगंबर समाजमें विशेषतासे हो रही हैं। इसका परिणाम यह होता है कि अनेक मंदिर श्वेतांबर भाइयोंके अधीन हो जाते हैं। देशकी अज्ञानता विना ज्ञानके प्रसारके सिवाय और किसी प्रकार दूर नहीं हो सकेगी।

गुर्जर देशमें दिगम्बर जैनोंका साहित्य प्रचुर भरा हुआ है। स्थान २ पर भंडार हैं। ईडर सागवाडा सोजित्रा कर्मसद डुंगरपुर प्रभृति ग्रामोंमें भंडार हैं परंतु कोई भी जिसकी मातृभाषा गुजराती हो और संस्कृतका ज्ञाता हो ऐसा दिगंबर जैनी विद्वान इस साहित्यका विकास कर जैन धर्मको उन्नत बनाये नहीं है। गुजरातीके साथ २ संस्कृत जाननेवाले विद्वान पंडितकी इतनी कमी है कि जिसके कारण जैन समाजकी बड़ी भारी हानि होनेके सिवाय अनेक कार्य अव्यवस्थित हो रहे हैं। इसलिये **गुजरातमें संस्कृत विद्यालयकी** कितनी जरूरत है यह पाठकगण ही स्वयं अनुभव कर सक्ते हैं। गुजराती भाइयोंको पग २ पर पंडितोंके लिये पराधीन होना पडता है। विवाहादि संस्कार मिथ्यापद्धतिसे होते हैं कारण जैन विधिसे करानेवाला पंडित नहीं मिलता है। सभाओंके प्रस्ताव हमेशा यही होते हैं कि संस्कारोंका प्रचार होना चाहिये परंतु अमली कार्रवाई नहीं होती है। अमली कारवाई हो कैसे ? करानेवाले पंडित नहीं मिलते हैं ? विदेशसे बुलानेमें खर्च अधिक होता है इससे प्रत्येक गरीब और साधारण स्थितिवाले मनुष्य इतना खर्च कर विधि करवा नहीं सके। श्रीमानोंको इतना लक्ष नहीं है। सभा अपने प्रस्ताव पास कर एक वर्षकी रात्रि मानकर निश्चिन्त गाढ़ निद्रागत होती है। जबतक प्रत्येक प्रान्तमें अपनी अपनी रीति रिवाजके जाननेवाले समाजसेवी निःस्वार्थ विद्वान न उत्पन्न होंगे तब तक समाजका अभ्युत्थान होना असंभव है। समाजमें विद्वान बनानेके लिये प्रत्येक प्रांतमें एक २ संस्कृत महा विद्यालयकी जरूरत है। इन संस्कृत महाविद्यालयोंमें राजकीय भाषा भी नियमित पढाई जाय। साथमें देशोन्नतिके लिये वाणिज्य शिक्षाका प्रचार किया जाय तो समाजका अभ्युदय अल्प कालमें हो सकेगा। वर्तमान कालमें संस्कृत विद्यालयोंकी अतिशय आवश्यकता है। समाज नेताओंको इस तरफ पूर्ण ध्यान देना चाहिये।

गुजरातमें "संस्कृत दिगंबर जैन विद्यालयों"की जरूरत ऐसा प्रस्ताव मुंबई दिगंबर जैन प्रांतिक सभाने पास किया है। सुनते हैं कि प्रथम प्रांतिक सभाका विद्यालय संबंधी ध्रुवफंड भी है। यदि है तो उसका उपयोग अवश्य करना चाहिये। दानवीर नररत्न **सेठ माणेकचंदजीके** फंड (२१ लाख) मेंसे जो कुछ भाग ३३ टका प्रमाण निकाला है उसका उपयोग इस विद्यालयमें सेठ साहबके उद्देश्योंको पूर्ण करनेके लिये होना चाहिये। अवशेष खर्च जनतासे लिया जाय। मुझे आशा है कि श्रीमान सेठ ठाकुरभाई भगवानदासजी-जोंहरी, सेठ ताराचन्द नवलचन्द, सेठ लल्लुभाई लखमीचन्द प्रभृति गणमान्य सज्जन इस तरफ

लक्ष लेंगे। यह विद्यालय बागड़ और गुजरातकी सीमापर स्थापित किया जाय। मेरी रायसे निम्न लिखित स्थानोंमेंसे एक स्थानमें होना चाहिये। अमदावाद, पावागढ, ईडर, डुंगरपुर, सागवाडा, उदेपुर या दाहोद। आशा है आप इस विज्ञप्ति पर ध्यान देंगे।



भाषा और भाव।

(लेखकः-पं. दीपचंदजी परवार नरसिंहपुर)

संसारके सभी देश जो उन्नत हुवे दृष्टिगोचर होते हैं सब हीने सर्व प्रथम अपने देशमें साहित्यका प्रचार किया और उसके द्वारा प्राचीन (भूत) और वर्तमान स्थितिको देख कर भावी दुःखोंका आदर्श निश्चिन करके अपने सन्मुख रक्खा। तत्पश्चात् जिसे उन्होंने आदर्श बनाया उसे प्राप्ति करनेको जो जो साधन आवश्यक समझे गये उन पर गंभीरतासे विचार करके आरूढ़ हो साधनेमें दत्तचित्त हो गये और 'श्रेयांसि बहु विघ्नानि'की कहावतको विचार करके विघ्नोंसे न डर कर उन्हें अपने प्रारंभित कार्यमें जो यत्किंचित् सफलता दृष्टिगोचर हुई उससे अधिकाधिक उत्साहित होकर कार्यमें अग्रसर होते गये। उसीका फलस्वरूप यह बात देखी जाती है कि ये देश जो कि किसी समय अपनेको मनुष्य जातिकी गणनामें गिनानेकी योग्यता नहीं रखते थे आज सभ्य संसारके सन्मुख अपनेको आदर्श बता रहे हैं। ठीक ही है "जिन ढूंढ़ा तिन पाइया, गहरे पानी पैठ" अर्थात् जिन्होंने खोज की उन्होंने सफलता भी पाई इसमें आश्चर्य ही क्या है? उद्यम करनेसे क्या नहीं हो सक्ता है? पुरुषार्थी पुरुषोंको संसारमें कुछ भी अशाध्य नहीं है, कुछ भी दूर नहीं है, कुछ भी दुर्लभ नहीं है "वास्तवमें दैवेन देयमिति का पुरुषा वदंति" अर्थात् दैव (कर्म)में होगा तो मिलेगा ऐसा कथन कायर मनुष्योंका ही है क्योंकि "नहीं सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः" अर्थात् सोते हुवे सिंहके मुखमें अपने आप कोई भी पशु (शिकार) नहीं पड़ जाता है किंतु उसे अपने भोजनकी चिंता करना पड़ती है और ज्यों ही वह पुरुषार्थको आगे करके निकलता है कि बातकी बातमें अपना भोजन कहींसे प्राप्त करके सुखपूर्वक अपने स्थान पर जा कर सो जाता है। क्या सिंहको भोजनके लिये कोई स्थान नियत है? जहांसे वह ले आता है परन्तु उसमें पुरुषार्थही उसका नियत है। जिस समय वह अपनी गुफासे निकल कर दहाड मारता है कि सारा वन कांप जाता है, फिर वह स्वेच्छा पूर्वक जिस दिशामें चला जाता है वहीं उसका अभीष्ट सिद्ध हो जाता है। पुरुषार्थके संसार सर्वत्र संपत्ति ही संपत्ति दिखाई देती है, सब संसार आनन्ददायक प्रतीत होता है। भय क्लेश उनके हृदय तक पहुंच ही नहीं सक्ता है। हम क्या करें? यह प्रश्न उनके कोष (डिक्सनरी)में ही नहीं मिलता है। वे लकीरके फकीर नहीं होते हैं, वे अपना मार्ग अपने आप बना लेते हैं। एक भाषा कविने क्या ही अच्छा कहा है?

"लीक लीक गाडी चले लीक हि चले कपूत,
लीक छोड़ तीनों चलें, शायर सिंह सपूत"

अर्थात् लीक (रूढि पर गाड़ी और कुपूत चलते हैं परंतु पुरुषार्थी पुरुष अपना मार्ग स्वयम् बनाते है। सिंह, कवि और सुपुत्र ये तीनों उच्छिष्ट नहीं खाते हैं किसीके मुंहका भोजन नहीं छीनते है, उनके मस्तिष्कमें नवीन २ विचार उत्पन्न होते रहते है। वे अनेकोको मार्ग बता देते हैं। हमारे इस भारत देशमें इतिहास और पुराणोंके देखनेसे पूर्व कालकी स्थितिका पता लगता है कि किसी समय यह देश धन धान्यादि संपत्तिसे परिपूर्ण था। यहाकी सभ्यता जगद्विख्यात थी। बल वीर्यादिके दृष्टान्तमें रामचन्द्र लक्ष्मण रावण कौरव पाडवादिके पुराण प्रसिद्ध है। शिल्पकलामें भी किसी प्रकार यह देश पीछे नहीं था। इसके नमूने आबू आदिके मन्दिर, ताजमहल आदि भी जीते जागते दृष्टान्त हैं। अध्यात्मिक विषयका तो यह महासागर था। जहा बडे२ योगीश्वर आदि विचरते थे, जिनके बनाये हुवे ग्रन्थ आज भी इस भारतकी अचल कीर्तिको हरीभरी कर रहे है इत्यादि सब कुछ होते हुवे भी जब भारतकी वर्तमान स्थितिकी ओर दृष्टिपात करते हैं तो हमको सिवाय उदासीके और कुछ नहीं दीखता है। धन धान्यादिकी तो बात यों हो गई है कि बड़े बड़े गृहस्थोंके घरोंमें प्राय नित्यकी भोजन सामग्री बाजारसे आती है। यदि भोजनके समय कोई आगन्तुक आजावे, तो बाजारके हलवाईयोंकी दुकानें देखना पड़ती है। साधु व व्रती श्रावक उदासीन त्यागी महात्मा तो उनका चौका देख ही नहीं सके क्योंकि वे लोग बाजारका सामान खानेवाले और व्रती जन घरका बना हुवा शुद्ध भोजन ग्रहण कर सकते है, सो उनको तो इन श्रीमानोंके यहा तक आने भोजन करनेका कष्ट ही नही दिया जाता है और दीन दुखी दरिद्रीको भी जब कुछ मिल सके कि जब चौकेमें कुछ बचे। यहा तो जीमते २ ही दूसरी वार आटा गुदना पडता है। ज्यादातर ऊपरका लिफाफा देखा जाता है। अच्छे धोबीके धुले हुवे कलफदार कपडे, लुकदार बूट, चिल्लेदार पगडी या फेल्ट केप हेट आदि, जरीका दुपट्टा या कम्फर्टर कंधे पर, हाथमें कोई कम्पनीका सुचीपत्र, बैठकमे कुर्सी टेबिल या गादी आदि, सिगरेटका डब्बा या लम्बा हुक्का और घरके भीतरका हाल तो चूहे जाने जो घरको खोद २ कर भूखके मारे मर जाते हैं और लोगोंको प्लेगकी आशंका पैदा कर देते है इत्यादि कहनेका तात्पर्य यह है कि लोगोंकी आर्थिक स्थिति अच्छी नही है, शारीरिक बल हो ही कहासे? प्रथम निर्बल माता पितावोंसे उत्पत्ति सो जड ही पत्थर पर जमी है फिर बाल्यावस्थामें व्याह करके संतान उत्पन्न करना, फिर घी दूध आदि पौष्टिक पदार्थोंकी तो बात क्या, भरपेट अन्न भी न मिलना, तिस पर भी चिंतावोंकी चितामें निरंतर जलते रहना। अब बल कहासे आवे? उल्टे तो जीवनके शेष दिन भी भार रूप हो रहे हैं। अब साहसका हाल यह है कि रातको सोते हुवे यदि बाहरसे पत्तेकी भी खरराहट सुनी जावे तो और भी चुपकी मार कर सो जावे, चाहे यों ही डाकाके

कारण नींद न आवे परन्तु इतना साहस कहां कि वे किवाड खोल कर देख लेवें और निःशंक होकर सोवें, शिल्प विद्याकी बात तो यहां तक गई कि विदेशी वस्तुवोंके आगे हमारी वस्तुएं लोगोंको पसंद ही नहीं आतीं। यहां तक कि भोजन बनाने तककी क्रियायें लोग भूल गये हैं और अब बाजारके तैयार माल पर ही जिव्हाका स्वाद रह गया है। व्यापारमें सदा ही का बाजार गर्म दिखता है। योगी और साधुवोंका हाल तो ग्रन्थोंमें लिखा होनेसे जाना जाता है, क्योंकि जबतक तत्त्वज्ञान होकर अध्यात्म दृष्टि न होवे और विषय भोगोंसे विरक्ति न उत्पन्न होवे कोई साधू नहीं हो सक्ता है और यदि किसी समय किसीको कुछ विरक्ति हुई और वह इस मार्गमें लग गया तो फिर उसके भोजन पानका भी सुभीता नहीं लगता है। इसीसे ऐसे उदाहरणके आदर्श परम दिगम्बर साधु दृष्टिगोचर नहीं होते हैं, अध्यात्म चर्चाके बदले वकीलोंकी बहसें और देवगुरु व तीर्थोंकी प्रदक्षिणाके बदले कोर्टस् (अदालतों)के इर्दगिर्द चक्कर लगाये जाते हैं इत्यादि अवनति अवस्था देखी जाती है जिसकी पूर्व और वर्तमान कालकी तुलना करना मेरी शक्तिसे बाहर है। जो कुछ भी हो, जिस पर जो कुछ बीतती है वह अवश्य ही जानता है। मुझे इसमें विवाद नहीं है, परंतु मुझे यहां यह विचारना है कि यह अवस्था क्यों हुई और कैसे दूर होकर पुनः पूर्ववत् इस भारत देशमें सुख और शांतिका साम्राज्य हो सक्ता है? मैं अपने इस लेखके प्रारंभमें ही बता चुका हूं कि आज तक जितने देश उन्नत हुवे हैं वे सब साहित्यकी शरणमें प्राप्त हो कर ही हुवे हैं। हमारे देशमें भी साहित्यका भंडार कुछ कम नहीं था और न अब भी कम है परन्तु हमारा साहित्य भंडार बहुत अग्नि देवने भक्षण कर लिया, बहुतसा जल देवताके अर्पण हो गया, बहुतसा दीमक आदि जन्तुओंकी क्षुधा तृप्तिके काम आया, वह मनुष्योंके काम नहीं आया, और अब एक भी प्रायः उसी अवस्थामें बहुतसा प्राचिन साहित्य पंडितों व पंचोंके जेलखानों (कारागृहोंमें) बंद है। और जो कुछ थोड़ा बहुत प्रसिद्ध हुवा है सो बहुत अल्प संख्यामें और भिन्न २ भाषामें। ऐसी अवस्थामें उसका लाभ सर्व साधारण व समस्त देशवासियोंको नहीं मिल सक्ता है। और उसका किंचित् लाभ उसी प्रांत व भाषा जाननेवाले ही उठा सक्ते हैं कि जिस प्रांतीय भाषामें वह छपा हो। इस लिये इस बातकी बडी भारी आवश्यता है कि सम्पूर्ण देशमें अनेकों भाषाओंके रहते हुवे भी राज्य भाषाके समान एक राष्ट्र भाषा हो। और ग्रन्थोंका प्रकाशन उसी राष्ट्रभाषामें सर्व प्रथम किया जाय, ताकि उसका लाभ समस्त देशवासियोंको प्राप्त हो सके। देशके बड़े २ नेतावोंने बहुत सोच विचार कर यह निश्चित किया है कि भारत देशकी भाषा (राष्ट्रभाषा) हिन्दी और लिपि नागरी (हिन्दी ही जिस भाषा व लिपिमें यह लेख है) हो सक्ती है। इसलिये देशके समस्त प्रांतवासियोंका यह परम कर्तव्य है कि वे हिन्दी भाषाको उत्तेजन देवें। और नवीन२

साहित्यसे तथा प्राचिन साहित्यसे हिन्दीके भंडारको भरपूर कर देवें। जिस समय देशकी एक सर्वमान्य भाषा होजावेगी तो एक सिरेसे दूसरे सिरे तक किसी भी प्रांतवासीको व्यापारार्थ अथवा तीर्थयात्रादि करनेमें चिट्ठी पत्री आदि व्यवहार करनेमें कष्ट न होगा। इससे केवल लौकिक उन्नति ही नहीं होगी किन्तु धार्मिक पारमार्थिक उन्नतिमें भी बहुत प्रकाश पड़ेगा। क्योंकि प्राय जितनी प्राचीन ग्रन्थोंकी टीकाएं मिलती हैं वे सब नागरी लिपि और हिन्दी भाषामें ही मिलती हैं और उन्हें हिन्दीमें ही प्रकाशित करनेमें विशेष सुभीता होता है। हिन्दी भाषा भाषी प्रजा भी बहुत है और हिन्दी भाषा सब भाषाओंसे सरल भी है। किसी भी भाषा भाषी इस सरल हिन्दी भाषाको बहुत शीघ्र सीख सक्ता है। इसलिये एक ही भाषामें पुस्तक प्रकाशित होनेसे सब लोग उसका लाभ उठा सक्ते हैं। भाषा उसे कहते हैं जिसके द्वारा बोल कर मनुष्य अपने मनके भावोंको दूसरों पर व्यक्त कर सक्ता है। यह भाषाकी परिभाषा बहुत विस्तृत है यह किसी भी प्रांतीय भाषा पर नहीं घटती है किंतु केवल एक हिंदी (राष्ट्र भाषा) पर ही घट सक्ती है। अन्य भाषाएं एक एक प्रांतीय हैं और उस प्रांतके मनुष्य अपने विचार व भाव अन्य प्रांतवालेको कदापि नहीं बता सक्ते हैं जब तक कि वे अपने साम्हनेवालेके प्रांतीय भाषा या हिंदी भाषाका प्रयोग न करें। और जब तक वे अपने विचार औरोंको न बता सकें तो किस प्रकार लाभ उठा सके हैं। एक महाराष्ट्र (मराठी भाषी) विद्वान गुजरातमें जाकर मराठीमें कथा कहे तो कौन सुनेगा और समझेगा। परन्तु वह हिंदीमें कहता है तो सब समझ जाते हैं इत्यादि, इस लिये हम सबको उचित है कि यदि हम लौकिक और पारमार्थिक दोनों प्रकारकी उन्नति चाहते हैं तो हिंदी भाषाको उत्तेजन देवें, हिंदीमें साहित्य प्रचार करें, व्याख्यान देवें, समाचार पत्र निकालें, बातचीत चिट्ठीपत्री व्यवहार करें, बालकों व स्त्रियोंको पढावें, हिंदीकी पुस्तकें बाचें, हिंदी भाषामें ही विचार करें। बस फिर हमारी उन्नतिमें देर न लगेगी और इस प्रकार संसारमें सुख और शांति फैलेगी।

स्याद्वादनी सिद्धि ।

(લેખક-મણીલાલ નથ્થુભાઈ દોશી, બી. એ. અમદાવાદ)

કુમારપાલને જૈન ધર્મનો પ્રતિબોધ આપી મધ્યકાળમાં જૈન ધર્મનો ગુજરાતમાં પ્રચાર કરવામાં અગ્રગણ્ય ગણાતા સાડા ત્રણ કરોડ શ્લોકના લેખક શ્રી હેમચંદ્રાચાર્યે પોતાના પ્રસિદ્ધ હૈમ વ્યાકરણમાં લખ્યું છે કે સિદ્ધિઃ સ્યાદ્વાદાત્ । અર્થાત્ સ્યાદ્વાદથી સર્વ બાબતની સિદ્ધિ થઇ શકે છે. સ્યાદ્વાદ અથવા અનેકાંતવાદમાં સર્વ વસ્તુઓની સિદ્ધિ કરવાનું સામર્થ્ય રહેલું છે. પણ અત્યારે એવો સમય આવ્યો છે કે જ્યાં સ્યાદ્વાદની સિદ્ધિ કરવાની જરૂર પડે છે. સ્યાદ્વાદના ઘણા ખોટા અર્થ કરવામાં આવે છે. આપણે કહીએ છીએ કે પરધર્મીઓ આ સ્યાદ્વાદના અપૂર્વ સિદ્ધાંતને સમજતા નથી. માટે તેનો ખોટો અર્થ કરે છે, પણ જૈનો પોતે પણ ઘણે થોડે અંશે તેનો અર્થ સમજતા માલુમ પડે છે; અને કદાચ કોઇ સમજતા હશે પણ જ્યાં તેને વ્યવહારમાં મૂકવાની-જીવનમાં ઉતારવાની વાત આવે છે, ત્યાં તો મોટે ભાગે શૂન્યતા નજરે પડે છે.

સ્યાદ્વાદને કેટલાંક લોકો અનિશ્ચિતવાદ, અથવા તો ગાંડા મનુષ્યનો પ્રલાપ કહી નિંદે છે. તેઓ કહે છે કે આ એ ખરૂં અને પેલું એ ખરૂં, આવું કહેનારા સ્યાદ્વાદીઓ કોઈ પણ નિશ્ચય ઉપર આવી શકતા નથી. તેઓ જ્યાં બંધાઇ જાય ત્યાં છૂટવાની બારી તરીકે આ સ્યાદ્વાદમતની પ્રરૂપણા કરે છે. આ આક્ષેપ તદ્દન અજ્ઞાન મૂલક છે.

સ્યાદ્વાદ એ અપેક્ષાવાદ છે, એ અનેકાંત વાદ છે. તે અમુક અપેક્ષાએ અમુક વસ્તુને પ્રતિપાદન કરે છે, અને બીજી અપેક્ષાએ બીજી વસ્તુ પ્રતિપાદન કરે છે. આમાં કાંઇ પણ સંશય પામવા જેવું છે નહિ. જગતનો બધો વ્યવહારજ આ રીતે ચાલે છે. એકની એક વસ્તુ સ્થળ ભેદે જુદી જણાય છે. વળી તેજ વસ્તુ કાળ ભેદે જુદી લાગે છે. માટે કઇ અપેક્ષાએ કહેવામાં આવ્યું છે, તે ધ્યાનમાં રાખી આપણે અમુક બાબત સત્ય કે અસત્ય કહી શકીએ.

આપણે કેટલાક દૃષ્ટાંતો આપી આ નિયમને સિદ્ધ કરીશું. દાખલા તરીકે 'રેત' લઇએ. રેત ભારે કે હલકી. રેત 'ભારે' કે 'હલકી' કહી શકાય નહી કઇ અપેક્ષાએ કઇ વસ્તુને આશ્રયી તમે રેતને 'ભારે' કે 'હલકી' પૂછો છો ? જો તમારા એક હાથમાં સીસું રાખો અને બીજા હાથમાં રેત રાખો અને પૂછો કે રેત ભારે કે હલકી તો તરતજ સ્યાદ્વાદી જવાબ આવશે કે રેત હલકી છે. વળી એક હાથમાં ઘઉંનો લોટ રાખો, અને બીજા હાથમાં રેત રાખો અને ઉપર પ્રમાણે પ્રશ્ન પૂછો તો તરતજ જવાબ મળશે કે રેત ભારે. માટે રેતનું ભારેપણું અથવા હલકાપણું બીજી વસ્તુને આશ્રયી રહેલું છે. જૈનો એવા મૂર્ખ નથી કે રેતને એક અવાજમાં ભારે તેમજ હલકી કહે.

આપણે એક બીજો દૃષ્ટાંત લેઇએ. કાળિદાસ મોતીલાલનો બાપ થાય, પણ તેજ કાળિદાસ ભોગીલાલનો પુત્ર થાય. માટે કાળિદાસ બાપ કે દીકરો એ પ્રશ્નનો જવાબ કોઇ આપી શકે નહિ. કોની અપેક્ષાએ તે પ્રશ્ન પૂછવામાં આવ્યો છે, તેનાપર તેના પ્રત્યુત્તરનો આધાર છે.

કાલીદાસ મોતીલાલની અપેક્ષાએ પિતા છે, તેજ કાલીદાસ ભોગીલાલની અપેક્ષાએ પુત્ર છે, વળી તેનો તે કાલીદાસ ત્રીજાનો મામો થાય, ચોથાનો ભાણેજ થાય, પાંચમાંનો કાકો થાય, છઠ્ઠાનો ભત્રીજો થાય એ રીતે એક મનુષ્ય ઘણા સંબંધે રહી શકે છે. માટે સંબંધ વિચારી વાત કહેવામાં આવે તે સત્ય, અને સંબંધ કે અપેક્ષા વિના જે કહેવામાં આવે તે અસત્ય.

બીજો એક દાખલો લઇએ. એક ગાય ધોળી છે તેના શરીર પર કેટલાક લાલ છાંટા છે. હવે સામાન્ય રીતે આપણે તેને ધોળી ગાય કહીએ છીએ પણ આ ગાય 'ધોળીજ' છે, એમ કહેવું એ સ્યાદ્વાદની દૃષ્ટિએ નયાભાસ છે. કારણ કે,

' થોભીજ ' છે એમ કહેવામા તેનાં બીજા ગુણોનો આપણે અપલાપ કરીએ છીએ. જ્યાં મુખ્ય ગુણ કહેવામાં આવે, પણ બીજા ગુણોનો અનાદર કરવામાં ન આવે ત્યાં આપણે સત્યની સમીપ આવીએ છીએ.

સત્ય એટલું વિશાળ છે કે તેને સર્વ અપેક્ષાએ સર્વ બાજુએથી, સર્વ દિશાઓથી કોઈ જોઈ શકે નહિ. કેટલેક અંશે આપણે તે જોઈ શકીએ. જેટલે અંશે આપણે જોઈ શકીએ, તેટલે અંશે આપણે તે જાણીએ તો તેમાં આપણે સત્ય કહીએ છીએ, પણ તે ' આમજ છે ' અથવા ' આમ નથીજ ' એમ કહેવામાં ભૂલ કરીએ છીએ. કારણકે બધી અપેક્ષાઓ દરેક મનુષ્ય સમજી ન પણ શકે.

' હાલ અમેરિકામાં એવી એક માન્યતા ચાલી રહેલી છે કે બધા શારીરિક રોગોનું મૂળ કારણ મનના વિચારો છે. મનુષ્યના વિચારો રોગોરૂપે બહાર પડે છે. ' મનુષ્યની ચિંતાઓ, ઈર્ષ્યા, દ્વેષ, ઉદ્વેગ, ક્રોધ, અશુભ ભાવનાઓથી લોહી ઝેરી બને છે, અને તે ઝેરી લોહીથી અનેક પ્રકારના રોગો ઉદ્ભવે છે આ વાત સત્ય છે, પણ રોગોનું મૂળ વિચારોજ છે અને વિચારો સિવાય બીજું કંઈ નથી એમ કહેવું તે સ્યાદ્વાદની દ્રષ્ટિએ અર્ધ સત્ય છે અથવા નયાભાસ છે. કારણકે હદ બહાર ખાવાપીવામાં આવે, ઉજાગરા કરવામાં આવે, મળમૂત્રનો નિરોધ કરવામાં આવે તો શુભ ભાવનાવાળાને પણ રોગો પેદા થાય એમાં નવાઈ નથી. માટે અશુભ વિચારો એ રોગોનું કારણ મોટે ભાગે છે; એમ કહેવું એ વ્યાજબી છે, પણ અશુભ વિચારોજ રોગનું કારણ છે એમ કહેવામાં ભૂલ થાય છે.

જગતમાં જેટલા ઝઘડા કજીયા થયા છે, હાલમાં થાય છે, અને ભવિષ્યમાં થશે, તે બધાનું કારણ એ છે કે મનુષ્યો સામાનું દ્રષ્ટિબિન્દુ જોઈ શકતા નથી. પોતાની વસ્તુ સ્થાપન કરવામાં તેઓ એટલા બધા આતુર હોય છે કે સામો કઈ અપેક્ષાએ અથવા કેવા આશયથી કહે છે, તે વિચારવાનો શ્રમ લેતા નથી, અને તેથીજ બન્ને ખરા હોવા છતાં લડી મરે છે. ઢાલની એક બાજુ સોનાથી મઢેલી હોય, અને બીજી બાજુ રૂપાથી મઢેલી હોય સામસામા ઉભા રહી જોનારા બન્ને પોતાનો પક્ષ ખરો છે, એમ દ્રઢતાથી પ્રતિપાદન કરે તો તેમાં આશ્ચર્ય શું ? પણ જે તટસ્થ મનુષ્ય બન્ને બાજુઓ જોઈ શકે છે તે બન્નેને સમજાવી શકે કે "ભાઈ તમારી બાબત સાચી છે, પણ બીજી બાજુ પણ એટલીજ સાચી છે, અને બન્ને બાજુઓ ભેગી કરી કહેવામાં આવે તો આપણે સત્યની સમીપ આવીએ છીએ ઢાલ એક બાજુએથી રૂપેરી છે, અને બીજી બાજુએથી સોનેરી છે. માટે તેને કેવળ રૂપેરી કે કેવળ સોનેરી કહેવામાં ભૂલ થાય છે.

નીતિના સિદ્ધાંતોના સંબંધમાં પણ સ્યાદ્વાદ ઘણો પ્રકાશ નાખે છે. એક સમય એવો હતો કે જ્યારે લડાઈમાં પકડાયેલા કેદીઓને એક મોટા જમાન વાસ્તે રાખી મૂકવામાં આવતા હતા. તે દિવસે તેમને મારીને તેમનું માંસ રાંધી મીજબાની આપવામાં આવતી હતી. હવે એક ડાહ્યા પુરૂષે સૂચવ્યું કે આવી રીતે આવા કેદીઓને મારી નાખવા કરતા તેમને જો ગુલામ બનાવવામાં આવે, તો આખી જીંદગી સુધી તેઓ આપણને કામ લાગે. કોઈ પણ પ્રકારનું મહેનતાણું આપ્યા સિવાય આપણે તેમની પાસેથી નોકરી લઈ શકીએ. હવે આ ગુલામગીરીએ આપણી હાલની સ્વતંત્રતાની ભાવના પ્રમાણે હલકું પગથિયું છે, પણ ઉપર જણાવેલી સ્થિતિ કે જ્યા કેદીઓને મારી નાખવામાં આવતા હતા, તે સ્થિતિની અપેક્ષાએ આગળનું પગથિયું ગણી શકાય માટે સ્યાદ્વાદ ગુલામગીરીને તદ્દન હલકું પગથિયું કહેતા અટકશે કારણકે કઈ અપેક્ષાએ એ પ્રશ્ન પૂછવામાં આવ્યો છે તેઉપર તેના પ્રત્યુત્તરનો આધાર છે.

સ્યાદ્વાદી સામા મનુષ્યને પોતાનું દ્રષ્ટિબિન્દુ છોડવાનું કહેતો નથી. તે દ્રષ્ટિબિન્દુમાં રહેલું સત્ય પોતે સમજે છે, અને સમગ્ર સત્યમાં તે

સ્યાદ્વાદની સિદ્ધિ।

(લેખક-મણીલાલ નથ્થુભાઈ દોશી, બી. એ. અમદાવાદ)

કુમારપાલને જૈન ધર્મનો પ્રતિબોધ આપી મધ્યકાળમાં જૈન ધર્મનો ગુજરાતમાં પ્રચાર કરવામાં અગ્રગણ્ય ગણાતા સાડા ત્રણ કરોડ શ્લોકના લેખક શ્રી હેમચંદ્રાચાર્યે પોતાના પ્રસિદ્ધ હૈમ વ્યાકરણમાં લખ્યું છે કે સિદ્ધિઃ સ્યાદ્વાદાત્ । અર્થાત્ સ્યાદ્વાદથી સર્વ બાબતની સિદ્ધિ થઈ શકે છે. સ્યાદ્વાદ અથવા અનેકાંતવાદમાં સર્વ વસ્તુઓની સિદ્ધિ કરવાનું સામર્થ્ય રહેલું છે. પણ અત્યારે એવો સમય આવ્યો છે કે જ્યાં સ્યાદ્વાદની સિદ્ધિ કરવાની જરૂર પડે છે. સ્યાદ્વાદના ઘણા ખોટા અર્થ કરવામાં આવે છે. આપણે કહીએ છીએ કે પરધર્મીઓ આ સ્યાદ્વાદના અપૂર્વ સિદ્ધાંતને સમજતા નથી. માટે તેનો ખોટો અર્થ કરે છે, પણ જૈનો પોતે પણ ઘણે થોડે અંશે તેનો અર્થ સમજતા માલૂમ પડે છે; અને કદાચ કોઇ સમજતા હશે પણ જ્યાં તેને વ્યવહારમાં મૂકવાની-જીવનમાં ઉતારવાની વાત આવે છે, ત્યાં તો મોટે ભાગે શૂન્યતા નજરે પડે છે.

સ્યાદ્વાદને કેટલાંક લોકો અનિશ્ચિતવાદ, અથવા તો ગાંડા મનુષ્યનો પ્રલાપ કહી નિંદે છે. તેઓ કહે છે કે આ એ ખરૂં અને પેલું એ ખરૂં, આવું કહેનારા સ્યાદ્વાદીઓ કોઈ પણ નિશ્ચય ઉપર આવી શકતા નથી. તેઓ જ્યાં બંધાઇ જાય ત્યાં છૂટવાની બારી તરીકે આ સ્યાદ્વાદમતની પ્રરૂપણા કરે છે. આ આક્ષેપ તદ્દન અજ્ઞાન મૂળક છે.

સ્યાદ્વાદ એ અપેક્ષાવાદ છે, એ અનેકાંત વાદ છે. તે અમુક અપેક્ષાએ અમુક વસ્તુને પ્રતિપાદન કરે છે, અને બીજી અપેક્ષાએ બીજી વસ્તુ પ્રતિપાદન કરે છે. આમાં કાંઇ પણ સંશય પામવા જેવું છે નહિ. જગતનો બધો વ્યવહારજ આ રીતે ચાલે છે. એકની એક વસ્તુ સ્થળ ભેદે જુદી જણાય છે. વળી તેજ વસ્તુ કાળ ભેદે જુદી લાગે છે. માટે કઇ અપેક્ષાએ કહેવામાં આવ્યું છે, તે ધ્યાનમાં રાખી આપણે અમુક બાબત સત્ય કે અસત્ય કહી શકીએ.

આપણે કેટલાક દૃષ્ટાંતો આપી આ નિયમને સિદ્ધ કરીશું. દાખલા તરીકે 'રેત' લઇએ. રેત ભારે કે હલકી. રેત 'ભારે' કે 'હલકી' કહી શકાય નહી કઇ અપેક્ષાએ કઇ વસ્તુને આશ્રયી તમે રેતને 'ભારે' કે 'હલકી' પૂછો છો ? જો તમારા એક હાથમાં સીસું રાખો અને બીજા હાથમાં રેત રાખો અને પૂછો કે રેત ભારે કે હલકી તો તરતજ સ્યાદ્વાદી જવાબ આવશે કે રેત હલકી છે. વળી એક હાથમાં ઘઉંનો લોટ રાખો, અને બીજા હાથમાં રેત રાખો અને ઉપર પ્રમાણે પ્રશ્ન પૂછો તો તરતજ જવાબ મળશે કે રેત ભારે. માટે રેતનું ભારેપણું અથવા હલકાપણું બીજી વસ્તુને આશ્રયી રહેલું છે. જૈનો એવા મૂર્ખ નથી કે રેતને એક અવાજમાં ભારે તેમજ હલકી કહે.

આપણે એક બીજો દૃષ્ટાંત લઇએ. કાળિદાસ મોતીલાલનો બાપ થાય, પણ તેજ કાળિદાસ ભોગીલાલનો પુત્ર થાય. માટે કાળિદાસ બાપ કે દીકરો એ પ્રશ્નનો જવાબ કોઇ આપી શકે નહિ. કોની અપેક્ષાએ તે પ્રશ્ન પૂછવામાં આવ્યો છે, તેનાપર તેના પ્રત્યુત્તરનો આધાર છે.

કાલીદાસ મોતીલાલની અપેક્ષાએ પિતા છે, તેજ કાલીદાસ ભોગીલાલની અપેક્ષાએ પુત્ર છે, વળી તેનો તે કાલીદાસ ત્રીજાનો મામો થાય, ચોથાનો ભાણેજ થાય, પાંચમાંનો કાકો થાય, છઠ્ઠાનો ભત્રીજો થાય એ રીતે એક મનુષ્ય ઘણા સંબંધે રહી શકે છે માટે સંબંધ વિચારી વાત કહેવામાં આવે તે સત્ય, અને સંબંધ કે અપેક્ષા વિના જે કહેવામાં આવે તે અસત્ય.

બીજો એક દાખલો લઇએ. એક ગાય ધોળી છે તેના શરીર પર કેટલાક લાલ છાંટા છે. હવે સામાન્ય રીતે આપણે તેને ધોળી ગાય કહીએ છીએ પણ આ ગાય 'ધોળીજ' છે, એમ કહેવું એ સ્યાદ્વાદની દૃષ્ટિએ નયાભાસ છે. કેમ કે,

'ધોળીજ' છે એમ કહેવામાં તેનાં બીજા ગુણોનો આપણે અપલાપ કરીએ છીએ. જ્યાં મુખ્ય ગુણ કહેવામાં આવે, પણ બીજા ગુણોનો અનાદર કરવામાં ન આવે ત્યાં આપણે સત્યની સમીપ આવીએ છીએ.

સત્ય એટલું વિશાળ છે કે તેને સર્વ અપેક્ષાએ સર્વ બાજુએથી, સર્વ દિશાએથી કોઈ જોઈ શકે નહિ. કેટલેક અંશે આપણે તે જોઇ શકીએ. જેટલે અંશે આપણે જોઇ શકીએ, તેટલે અંશે આપણે તે જાણીએ તો તેમાં આપણે સત્ય કહીએ છીએ, પણ તે 'આમજ છે' અથવા 'આમ નથીજ' એમ કહેવામાં ભૂલ કરીએ છીએ. કારણકે બધી અપેક્ષાઓ દરેક મનુષ્ય સમજી ન પણ શકે.

હાલ અમેરિકામાં એવી એક માન્યતા ચાલી રહેલી છે કે બધા શારીરિક રોગોનું મૂળ કારણ મનના વિચારો છે. મનુષ્યના વિચારો રોગરૂપે બહાર પડે છે. મનુષ્યની ચિંતાઓ, ઇર્ષ્યા, દ્વેષ, ઉદ્વેગ, ક્રોધ, અશુભ ભાવનાઓથી લોહી ઝેરી બને છે, અને તે ઝેરી લોહીથી અનેક પ્રકારના રોગો ઉદ્ભવે છે આ વાત સત્ય છે, પણ રોગોનુ મૂળ વિચારોજ છે અને વિચારો સિવાય બીજું કંઈ નથી એમ કહેવું તે સ્યાદ્વાદની દ્રષ્ટિએ અર્ધ સત્ય છે અથવા નયાભાસ છે. કારણકે હદ બહાર ખાવાપીવામાં આવે, ઉજાગરા કરવામાં આવે, મળમૂત્રનો નિરોધ કરવામાં આવે તો શુભ ભાવનાવાળાને પણ રોગો પેદા થાય એમાં નવાઇ નથી માટે અશુભ વિચારો એ રોગોનું કારણ મોટે ભાગે છે; એમ કહેવું એ વ્યાજબી છે, પણ અશુભ વિચારોજ રોગનું કારણ છે એમ કહેવામાં ભૂલ થાય છે.

જગતમાં જેટલા કજીઆ કંકાસો થયા છે, હાલમાં થાય છે, અને ભવિષ્યમાં થશે, તે બધાનું કારણ એ છે કે મનુષ્યો સામાનું દ્રષ્ટિબિન્દુ જોઇ શકતા નથી, પોતાની વસ્તુ સ્થાપન કરવામાં તેઓ એટલા બધા આતુર હોય છે કે સામો કઇ અપેક્ષાએ અથવા કેવા આશયથી કહે છે, તે વિચારવાનો શ્રમ લેતા નથી, અને તેથીજ બન્ને ખરા હોવા છતાં લડી મરે છે. ઢાલની એક બાજુ સોનાથી મઢેલી હોય, અને બીજી બાજુ રૂપાથી મઢેલી હોય સામસામા ઉભા રહી જોનારા બન્ને પોતાનો પક્ષ ખરો છે, એમ દ્રઢતાથી પ્રતિપાદન કરે તો તેમાં આશ્ચર્ય શું ? પણ જે તટસ્થ મનુષ્ય બન્ને બાજુઓ જોઇ શકે છે તે બન્નેને સમજાવી શકે કે "ભાઇ તમારી બાબત સાચી છે, પણ બીજી બાજુ પણ એટલીજ સાચી છે, અને બન્ને બાજુઓ ભેગી કરી કહેવામાં આવે તો આપણે સત્યની સમીપ આવીએ છીએ ઢાલ એક બાજુએથી રૂપેરી છે, અને બાજી બાજુએથી સોનેરી છે. માટે તેને કેવળ રૂપેરી કે કેવળ સોનેરી કહેવામાં ભૂલ થાય છે.

નીતિના સિદ્ધાંતોના સંબંધમાં પણ સ્યાદ્વાદ ઘણો પ્રકાશ નાખે છે. એક સમય એવો હતો કે જ્યારે લડાઇમાં પકડાયેલા કેદીઓને એક મોટા જશન વાસ્તે રાખી મૂકવામાં આવતા હતા. તે દિવસે તેમને મારીને તેમનું માંસ સુધી ગીજબાની આપવામાં આવતી હતી. હવે એક દયાળુ પુરૂષે સૂચવ્યું કે આવી રીતે આવા કેદીઓને મારી નાખવા કરતાં તેમને જો ગુલામ બનાવવામાં આવે, તો આખી જીંદગી સુધી તેઓ આપણને કામ લાગે. કોઇ પણ પ્રકારનું મહેનતાણું આપ્યા શિવાય આપણે તેમની પાસેથી નોકરી લઇ શકીએ. હવે આ ગુલામગીરીએ આપણી હાલની સ્વતંત્રતાની ભાવના પ્રમાણે હલકું પગથિયું છે, પણ ઉપર જણાવેલી સ્થિતિ કે જ્યાં કેદીઓને મારી નાખવામાં આવતા હતા, તે સ્થિતિની અપેક્ષાએ આગળનું પગથિયું ગણી શકાય માટે સ્યાદ્વાદ ગુલામગીરીને તદ્દન હલકું પગથિયું કહેતાં અટકશે કારણકે કઇ અપેક્ષાએ એ પ્રશ્ન પૂછવામાં આવ્યો છે તેપર તેના પ્રત્યુત્તરનો આધાર છે.

સ્યાદ્વાદી સામા મનુષ્યને પોતાનું દ્રષ્ટિબિન્દુ છોડવાનું કહેતો નથી. તે દ્રષ્ટિબિન્દુમાં રહેલું સત્ય પોતે સમજે છે, અને સમગ્ર સત્યમાં તે

દૃષ્ટિબિન્દુનું ક્યું સ્થાન છે, તે પણ તે સમજે છે, અને તેથી સામા મનુષ્યને બીજાં દૃષ્ટિબિન્દુઓ સમજાવી તેના સત્યને સંપૂર્ણ બનાવવાનું શીખવે છે. આથી સામા મનુષ્યના સ્વાભિમાનને હાનિ પહોંચતી નથી, અને તે ત્વરાથી બીજું દૃષ્ટિબિન્દુ અથવા બીજાં દૃષ્ટિબિન્દુ સ્વીકારે છે.

મહાવીર સ્વામીએ અગીઆર ગણધરો પ્રતિ આવીજ રીત અંગીકાર કરી હતી. તેમણે તેમના મનનો તિરસ્કાર કર્યો ન હતો. તેમણે દરેક ગણધરને કહ્યું કે " ભાઇ ! તારા દૃષ્ટિ બિન્દુથી આ વાત આમ લાગે છે, પણ તેની સાથે જો આ નવુ દૃષ્ટિ બિન્દુ ઉમેરવામાં આવે તો તને પડતી શંકા દૂર થઇ જશે, અને તુ સંપૂર્ણ સત્ય સમજી શકેશ " આ રીતે ખરા સ્યાદ્વાદીનું અનુપમ દૃષ્ટાંત તેણે પોતાના જીવનથી પૂરૂં પાડ્યું છે.

એમ કહેવામાં આવે છે કે મહાવીર પ્રભુની પરિષદમાં ૫૬૩ જુદા જુદા મતના અનુયાયીઓ હતા. તેમણે તેમનો કદાપિ અનાદર કર્યો નથી. તે બધા એકાંતવાદી હતા. જેટલે અંશે તેઓ પોતાનો પક્ષ સમર્થન કરતા હતા, તેટલે અંશે તેઓ સત્યથી વિમુખ થતા હતા. મહાવીર પ્રભુ તેમના પક્ષનું સમર્થન કરતા હતા, પણ સાથે બીજા પક્ષો પણ ખરા છે, એમ કહેતા હતા, અને બધાં પક્ષોનો સમન્વય કરી સંપૂર્ણ સત્ય બતાવતા હતા.

સ્યાદ્વાદી નિરંતર ઉદાર દીલીનો હોય છે—હોવો જોઇએ. કારણ કે તે સત્યને અનેક બાજુએથી જોઈ શકે છે.

અત્યારે જૈનો મોટે ભાગે સંકુચિત વિચારના થઇ ગયા છે, તેમનામાંથી ઉદારતા ચાલી ગઇ છે, કારણકે સ્યાદ્વાદ દૃષ્ટિ પણ ચાલી ગઇ છે. તેઓ પોતે પણ અનેકાંતવાદી મટી મોટે ભાગે એકાંતવાદી બન્યા છે. એટલે અમુક બાબતોજ સત્ય, અને તે સિવાયની બીજી બધી અસત્ય, એમ તેઓ પ્રૈધક્ક જણાવે છે. આથી તેઓ સત્યને તેના નવા અને વિશાળ સ્વરૂપમાં ગ્રહણ કરી શકે, એવી સ્થિતિ રહી નથી. જે સ્યાદ્વાદ દૃષ્ટિથી તેઓ અન્ય પંથવાળાઓને સત્યની વિવિધ અપેક્ષાઓ સમજાવી સત્ય માર્ગ તરફ વાળતા હતા, તેજ દૃષ્ટિનો આજે વિલોપ થવાથી તે સ્યાદ્વાદ મતના ઉપાસકો પોતાની સંકુચિત અને અનુદાર દૃષ્ટિથી પોતાનાજ સ્વધર્મી બંધુઓને જૈન ધર્મથી વિમુખ બનાવવાનાં અનેક કારણો ઉભાં કરે છે, એ અતિશય શોચની વાત છે.

ખરો સ્યાદ્વાદી જેટલે જેટલે અંશે અન્ય પંથ, અન્ય ધર્મ, કે અન્ય સંપ્રદાયમાં સત્યના અંશો મળે તેને ગ્રહણ કરી પોતાના સત્યને પ્રબળ બનાવે છે, અને તે તે અંશો માટે તે ધર્મની સ્તુતિ કે પ્રશંસા કરતાં જરાપણ આચકો ખાતો નથી. આથી સત્યને ટેકો મળે છે, અને ધર્મોના ઝઘડાઓનો અંત આવે છે. આ સંબંધમા ગિરનારપર આવેલા અશોકના ૧૨ મા શિલાલેખમાં જણાવેલું છે કે:—

" નજીવાં કારણોસર બીજા ધર્મની નિંદા કરીને પોતાના ધર્મનું મહત્વ કોઇએ વધારવું નહિ; કારણકે એક અથવા બીજા કારણસર દરેક ધર્મ માનને પાત્ર છે. આ પ્રમાણે વર્તવાથી મનુષ્ય પોતાનું મહત્વ વધારી શકે છે, તેમજ બીજા પંથ ઉપર ઉપકાર કરે છે. આથી વિરૂદ્ધ વર્તવાથી મનુષ્ય પોતાના પંથને નુકશાન કરે છે; અને બીજા પંથને અપકાર કરે છે. હું મારા ધર્મની કીર્તિ વધારૂં છું, એવું સમજીને, પોતાના ધર્મ ઉપરના અતિશય રાગને લીધે બીજા ધર્મની નિંદા કરીને પોતાના ધર્મને માન આપે છે, તે પોતાના આવા વર્તનથી પોતાનાજ ધર્મને ભારે હાનિ પહોચાડે છે. "

જે મનુષ્ય તત્વજ્ઞાનની એક વિચાર શ્રેણીને વળગી રહીને જણાવે છે કે આ ઉત્તમોત્તમ છે, અને તેને સૌથી શ્રેષ્ઠ ગણી તેનાથી ભિન્ન એવી દરેક વિચાર પદ્ધતિને હલકી ગણે છે, તે મનુષ્યે હજુ વાદ વિવાદની વૃત્તિ ઉપર જય મેળવ્યો નથી.

દેશ કાળ, ભાવ, દ્રવ્ય વગેરે ભેદથી દરેક વસ્તુની સ્થિતિ બદલાય છે નાના બાળકો લખોટીઓ રમે છે. તેમાં તેમને આનંદ પડે છે તે તેમને મન સત્ વસ્તુઓ છે આપણે તેની પેલીપાર ગયા છીએ આપણને તેમાં રસ પડતો નથી. આપણે મન તે લખોટીઓ અસત્ છે આપણે હાલ રૂપીઆમાં આનંદ પામીએ છીએ, તે મળે સુખી થઇએ છીએ, તે જાય દુખી બનીએ છીએ તેથી રૂપીઆ આપણે મન સત્ વસ્તુ છે. પણ જેને રૂપીઆની રતિ માત્ર સ્પૃહા નથી તેવા યોગીને મન આ રૂપીઆ અસત્ છે. લખોટીઓ સારૂ લડી મરતા બાળકોને જોઇ આપણે એમ વિચારીએ કે આ બાળકો કેમ લડતા હશે ? યોગી પણ રૂપીઆને સારૂ આપણને લડતા જોઇ, એવોજ વિચાર કરે એ સ્વાભાવિક છે તીર્થંકરો અને આપ્ત વાક્યરૂપ ગણાતા સૂત્રો અને આગમો એમ જણાવે છે કે ખરૂ સત્ય એટલુ ભવ્ય, એટલુ વિશાળ, અને એટલી બધી અપેક્ષાવાળુ છે કે તીર્થંકરો પણ તે વાણીમાં પુરી રીતે દર્શાવી શકે નહિ, તો પછી તેને સમજીને લખનારાઓ ગ્રન્થોમાં તે પૂર્ણ રીતે શી રીતે મૂકી શકે ? ઘણા ગ્રન્થો વિચ્છેદ ગયા છે માટે હાલ જે ગ્રન્થો મળી આવે છે, તે ગ્રન્થોમાં મળી આવતા જ્ઞાન શિવાય બીજુ સત્ય હોઈ શકે નહિ, એમ કોણ કહી શકે ? શુ સત્યનો તેઓએ ઇજારો રાખ્યો છે ? જો એમ હોય તો આ જગતમાં વિજ્ઞાનશાસ્ત્રના પ્રયોગોથી જે નવી નવી શોધો થાય છે તે વિષે શુ કહેશો ? માટે ખોટો અભિમાન તજો, હૃદયના દ્વાર ખુલ્લા રાખો સત્યના ઉપાસક બનો અને હૃદયમાં સ્યાદ્વાદ દૃષ્ટિ રાખી સત્યની જુદી જુદી અપેક્ષાઓ સમજો પણ તે સ્યાદ્વાદદૃષ્ટિનો અનાદર કરી એકાંતવાદી બનવાની ભૂલ કદાપિ કરશો નહિ સત્ય આટલુ જ, અને આથી વધારે હોય નહિ, એવુ કોઇ કહી શકે નહિ માટે મારૂં એટલુ જ સારૂ એમ માનવાને બદલે સારૂં તે મારૂં એમ માનવાની બુદ્ધિ રાખો તો તમે સત્યની સમીપમાં આવશો, અને જૈન ધર્મમાં રહેલા સત્યોને તમે વધારે દીપાવી શકશો

जैन धर्मकी प्राचीनता और उसकी उत्पत्ति।

(लेखक-बाबू सुपार्श्वदास गुप्त बी ए आरा।)

जैन धर्मकी उत्पत्ति कालके सम्बधमें विद्वानोंके अनेक मत हैं। कुछ लोगोंका ख्याल है कि यह धर्म ईसाकी छठी सदीमें आविर्भूत हुआ। इस सिद्धांतके प्रचारकोंमें मुख्यतया लेथब्रिज और एलफिन्सटन महाशय हैं। यद्यपि आप लोगोंके विचार अब विद्वन् मंडलीमें नहीं माने जाते तो भी अब भी ऐसी पुस्तकोंका अभाव नहीं है जिनमें उन्हींके सिद्धांत प्रतिपादित किये गये हैं। वास्तवमें उनका जैन साहित्य सबंधी ज्ञान बहुत ही कम था और जिस समय वे हुए उस समय जैन साहित्य कम प्रकाशित हुआ था।

उसके बाद कुछ यूरोपियन विद्वान ऐसे हुए जिन्होंने जैन धर्मकी प्राचीनता ईसासे पूर्वकी मानी, पर बौद्ध धर्मको इसका उद्भव स्थान समझनेकी भूल की। दोनो धर्मोंकी कई अंगोंकी समानताने उनके ज्ञान चक्षुओं पर अज्ञानका पर्दा डाल दिया और वे इस मोह जालमें फसे रहे कि बौद्ध धर्मसे जैन धर्म निकला है। इस मतके प्रचारक विलसन, लैसन तथा वेबर जैसे विद्वान थे।

कुछ वर्षों तक इनके इस मतका ऐतिहासिक संसारमें इतना आदर हुआ, कि उनके सामने जैनियोंकी कुछ भी दाल न गल सकी। पर जैसे जैसे जैन साहित्यका प्रकाश फैलने लगा और उसके आलोकमें वस्तुओंका वास्तविक

स्वरूप प्रकट होने लगा, लोग समझने लगे कि दूसरा मत भी भूलसे भरा हुआ है। वास्तवमें दोनों धर्मोंके मत एक दूसरेसे विभिन्न हैं; इतना ही नहीं बल्कि जैन धर्म बौद्ध धर्मसे प्राचीन है। इस मतका प्रतिपादन पहले पहल डाक्टर हरमन जैकोबीने अपने कल्पसूत्रकी टीकामें ऐसे अकाट्य प्रमाणों द्वारा किया, कि आपका सिक्का साहित्य जगत्में देखते देखते ऐसा जमा, कि सभी प्राच्य विद्वान आपके मुरीद होगये। आपका कहना है, कि जैन और बौद्ध धर्म, दोनों हिंसाके परम विरोधी हैं। अतएव इनका जन्म उन लोगोंके द्वारा हुआ, जो वैदिक हिंसाको घृणाकी दृष्टिसे देखते थे। दूसरे शब्दोंमें यह कि ये दोनों धर्म वैदिक धर्मसे निकले हैं। पर जैकोबी महाशयका यह मत भी ठीक नहीं समझा जाता और न यही ठीक समझा जाता है कि महावीर जैन धर्मके संस्थापक थे। अब इस बातका पता तो पूर्ण रूपसे ऐतिहासिक सामग्रियोंसे लगता है, कि पार्श्वनाथ नामके भी कोई धर्म प्रचारक थे और उनका धर्म भी ठीक महावीरके धर्मकी तरह था। प्रो० जैकोबीके मतका खंडन कई प्रकारोंसे हो जाता है। संसारमें अभी किसी भी ऐसी पुस्तकका पता नहीं लगा है जो ऋग्वेदसे पुराने हो। इसलिये यदि ऋगवेदमें ही जैनियोंका जिक्र हो अथवा उनके सिद्धांतोंकी ओर इशारा हो तो मानना होगा, कि उस वेदसे भी पुराना जैन धर्म है। एक स्थलमें यजमान कहता है कि हमलोग नग्न देवताओंकी उपासना करते हैं, जो स्वयं पवित्र हैं और दूसरोंको भी पवित्र करते हैं। यजुर्वेदमें ऋषभदेव, अजितनाथ और अरिष्टनेमि इन तीन तीर्थंकरोंके नाम आये हैं। ऋगवेदमें लिखा है कि मगधदेशमें एक ऐसा संप्रदाय था जो यज्ञको घृणाकी दृष्टिसे देखता था। भागवतमें साफ ही लिखा है कि ऋषभदेव जैनधर्मके प्रचारक थे। वाराह और अग्नि पुराणोंमें भी श्री ऋषभदेवका नाम है जिससे उनकी ऐतिहासिकता मालूम होती है। उनकी माताका नाम मरुदेवी और पुत्रका भरत दिया है। इन्हीं भरतके नामसे इस देशका नाम भारतवर्ष पड़ा। भागवत पुराणके अनुसार ऋषभदेव विष्णुके नवें अवतार समझे जाते हैं और उनका अवतार वामन, राम, कृष्ण और बुद्धदेवके अवतारोंके पहले हुआ था। वामन अवतार पंद्रहवां अवतार है और इसका जिक्र ऋगवेदमें आया है। इससे मालूम होता है कि ऋगवेदके बननेके पहले यह अवतार हुआ था। इसलिये ऋषभदेवका अवतार जो नवां था, ऋगवेदके बननेके और भी बहुत पहले हुआ होगा।

इससे साफ मालूम होता है कि जैन धर्म वेदोंके बननेके पहले भी वर्तमान था। इसलिये यह कहना कि जैन धर्म वैदिक धर्मसे निकला है, जो उसके पीछे हुआ, अंगरेजी कहावतके अनुसार घोड़ेमें गाड़ी जोतना है।

अब बड़ा गंभीर प्रश्न यह उपस्थित होता है कि वैदिक धर्म कहांसे आया और इसका जैन धर्मसे कुछ संबंध है या नहीं।

वैदिक धर्मकी उत्पत्तिका पता लगानेके पहले मैं यह देखना चाहता हूं कि ऋगवेदमें

है क्या ? उनमें कौन कौनसी बातें लिखी हैं। यूरोपियन विद्वानोंने उसकी समालोचना करते हुए लिखा है कि वह ग्रंथ उस समयका मालूम होता है, जिस समय संसारकी सभ्यता बाल्यावस्थामें थी। उनके अनुसार ऋगवेद उस समय बना, जब लोग सूर्य, चन्द्रमा, बिजली, वर्षा आदि प्राकृतिक दृश्योंको देखकर आश्चर्य और भयमें पड़ जाते थे और उनकी शान्तिके निमित्त उनकी उपासना करते थे। ऋगवेदकी उपासना बड़ी ही सरल और साधारण है। आधुनिक वैदिक धर्मावलम्बियों अथवा जैनोंने पूजादि विधिको जितना जटिल बना दिया है उतना वैदिक कालीन उपासनामें न थी। इससे पाश्चात्य विद्वान् यह सिद्धान्त निकालते हैं कि वैदिक धर्म सबसे प्राचीन धर्म है, क्योंकि जो धर्म जितना सरल होता है, उतना ही पुराना होता है। पर यह उनकी भूल है। पहली बात तो यह है कि वैदिक कालिन भारतवासी न इतने कम असभ्य थे जितना उन लोगोंने समक्ष रखा है, और न जैन धर्म उतना जटिल था, जितना वह इस समय नजर आता है। वैदिक कालकी हिन्दू सभ्यताका वर्णन करते हुए डाक्टर विल्सन लिखते हैं कि वैदिककालके आर्य अपने जीवन निर्वाहके लिए सिर्फ घूमा फिरा ही नहीं करते थे, बल्कि उन्होंने नगर और ग्राम भी बसाए थे जिनके मुखिया हुआ करते थे। वे नाना प्रकारके हथियारों और यंत्रोंका व्यवहार जानते थे और भोगविलासकी सामग्रियां काममें लाते थे। वे धागा कातना और कपड़ा बुनना जानते थे, जिससे उनके शरीरकी रक्षा होती थी। वे लोहेकी लाभलायकतासे अपरिचित न थे और न वे लोहारी, सोनारी, ठठेरी, बढ़ई अथवा अन्य कारीगरोंके व्यवसायसे अनभिज्ञ थे। वे लड़ाईके सभी हथियार, जैसे तलवार, धनुष, तीर, बर्छे तथा बख्तर आदि बनाते थे और गहरी लड़ाईयां लड़ा करते थे। वे घरके सभी बासन बर्तन बनानेमें पक्के थे।

वे सोने चांदी आदि धातुओंके गहने भी बनाने जानते थे। क्योंकि वे कानोंमें बालियां और गलेमें जवाहिरातोंके नेकलेस भी पहरते थे। वे गाय, बैल, घोडे आदिको लडाईमें काममें लाते थे और छोटे बडे सभी तरहकी नौकाएं बना कर द्वीपोंकी सैर करते थे जिनसे देशके व्यापारकी वृद्धि होती थी। कभी कभी तो वे नौकासेनाएं लेकर विदेशी राज्यों पर आक्रमण भी किया करते थे। वे गान विद्यामें भी दक्ष थे और नाना प्रकारके बाजाओंका प्रयोग करते थे।

वैदिक कालीन आर्योंकी यही सभ्यता थी। भला जिस जातिकी इतनी उच्च कोटिकी सभ्यता हो, उन्हें अग्नि वर्षादिसे भयभीत हुआ बताना और वे उनकी उपासना करते थे ऐसा कहना कहां तक न्यायसंगत हो सकता है? जो जाति अग्निको स्वयं पैदा कर सकती और अपने दबावमें रख सकती हो, वह भयके कारण उपासना करती थी ऐसा कहना आंखोंमें धूल डालना अथवा बिलकुल नासमझकी तरह बात करना है। वे इन्द्र और अग्निको प्राकृतिक शक्ति नहीं समझते थे बल्कि उनसे उनका तात्पर्य आत्माकी अनेक शक्तियोंसे था।

वैदिक ऋषियोंने अग्नि आदिकी प्रशंसामें जो इतने गीत बनाये, उसका प्रधान कारण यह था कि उससे आत्मामें जागृति पैदा होती थी और उसका महत्व सदा हृदयपट पर अंकित रहता है। इससे यह भी मालूम होता है कि जिस आत्माकी अनेक शक्तियोंको वे अग्नि तथा इन्द्रादिके रूपमें पूजते थे, उसके तत्वको भी वे जरूर जानते थे। वेदमें सूर्य, अग्नि और इन्द्र ये ही तीन देवता प्रधान माने गये हैं। वे आत्माके तीन प्रधान स्वरूपोंके द्योतक हैं। आत्माकी केवल ज्ञानावस्थाका स्वरूप सूर्य हैं–उसकी भोगावस्थाका स्वरूप ईन्द्र है और उसकी निर्जरा यानी तप द्वारा कर्मके बंधनोंसे छुटकारा पानेकी अवस्थाका नाम अग्नि है।

जिन ऋषियोंने आत्माके भिन्न स्वरूपोंको इस तरह पहचाना, उन्हें जरूर आत्मा संबंध गूढ ज्ञान था और जहांसे उन्हें यह गूढ ज्ञान प्राप्त हुआ उन लोगोंका आत्मज्ञान गूढ ही नहीं बल्कि वैज्ञानिक रहा होगा। अब प्रश्न उपस्थित होता है कि यह वैज्ञानिक ज्ञान किस धर्ममें उस समय पाया जा सकता था। वेदमें तो था ही नहीं क्योंकि वेदोंके सिवा गीतोंके और कुछ महत्वपूर्ण वस्तु देखनेमें नहीं आती। तब यही कहना पडता है कि यह ज्ञान जैन धर्मसे ही उन्हें प्राप्त हुआ जि का जिक्र ऋग-देवमें भी पाया जाता है। हिन्दू धर्मके अंदर तो किसी समयमें सर्वांग पूर्ण आत्मिक ज्ञानका प्रतिपादन नहीं किया गया। सांख्य योग, यथा वैशेषिक आदि छ दर्शन परस्पर लडते कटते हैं। वह हिंदू धर्म है जिसमें प्रत्येक कालमें कुछ न कुछ नई बात जोडी गयी जिसमें उसका स्वरूप हर तरहसे संपूर्ण नजर आवे।

प्रत्येक दर्शन वेदको प्रमाण मानता है और उसे अपने मतका आधार समझता है। फिर भी प्रत्येकके सिद्धान्त बाकी दर्शनोंके सिद्धान्तोंसे भिन्न हैं। जिस धर्ममें बराबर नई बातें जोड़ी गयीं और जोड़ी जाती हैं और ऐसी बातें जो परस्पर विरोधी हैं, वह ईश्वरीय धर्म कहा नहीं जा सकता। ईश्वरके मुखसे निकला हुआ धर्म कभी अपूर्ण नहीं हो सकता और न ऐसा ही होसकता है कि उसके अनेक अर्थ लग सकें। ईश्वरको क्या गर्ज है कि वह अपना ज्ञान ऐसे शब्दोंमें प्रकट करे, जिसके अनेक अर्थ हो सकें और जिनसे लोग संशयमें पड़े। इस लिये वेदको ईश्वर प्रणीत मानना बिलकुल गल्त है। सभी जानते हैं कि ईश्वर जड़ वस्तु नहीं है। वह एक शक्ति है। पर शब्द जड़ वस्तु है। मनमें जब कोई बात प्रकट करनेकी इच्छा उत्पन्न होती है, तब उसका सम्बन्ध आत्माके भीतरी दो शरीरोंसे होता है और उससे सूक्ष्म गति पैदा होती है, जो बाह्य वायुके द्वारा श्रोताओंके कान तक पहुंचती है। यदि कोई मनुष्य अपनेको एक ऐसे स्थानमें बन्द करे, जिसमें सूक्ष्मसे भी सूक्ष्म जड़ वस्तु प्रवेश नहीं कर सकती तो वह बाहरी आवाजको नहीं सुन सकता। इससे मालूम होता है कि शब्द (Sound) जड़ वस्तु है और जड़ वस्तु शुद्ध परमात्मासे जिसका सम्बन्ध जड़से लेश मात्रका भी नहीं है, पैदा नहीं हो सकती इस लिये वेदके वाक्य किसी परमात्माके वचन

नहीं हो सकते । इससे यही सिद्धान्त निकलता है कि वेद ईश्वर प्रणीत नहीं हैं । वे ऋषि महर्षियोंके ज्ञानका फल है । उनकी धर्म और आत्मा संबन्धी बातें जैन धर्मसे ली गयी थीं । उस समयके लोग असभ्य न थे । वेदोंमें यज्ञादिमें पशु और नर वधकी जो बातें हैं वे पीछे किसी कारणवश जोड़ दी गयी हैं । क्योंकि उसीमें एक स्थानमें यह लिखा है कि " मांस भक्षक सन्तान ही न हों" वेदोंमें राक्षसोंकी बडी निन्दा है । इतना ही नहीं बल्कि पीछे हिन्दुओंने वैदिक हिंसा द्योतक वाक्योंका दूसरी प्रकारसे अर्थ लगानेकी जो चेष्टा की या यह कहा कि वैदिक हिंसा हिंसा न भवति, उससे स्पष्ट मालूम होता है कि हिंसा उनके धर्मका अङ्ग नहीं है और वेदमें समयके बुरे प्रभावसे या वेदोंके शत्रुओंके कारण परिक्षिप्त हुआ है ।

प्रोत्साहन ।

दशाको निहारो हुई क्या हमारी,
नहीं तेज हैगा नसोंमें हमारी ।
विद्या औ कलासे हुए हाथ रीते,
जगो जैन भाई गया काल बीते ॥
जगो नींदको शीघ्र हीसे भगावो,
पड़े भाइयोंको उठो तो जगावो ।
करो जाति सेवा डरो नाहि प्यारे,
हटावो कुरीतें हिये प्रीति धारे ॥
तजो स्वार्थको औ चलो प्रेम मेवा,
विद्याको बढ़ावो यही सुख देवा ।
उठावो गिरी जातिको शीघ्र यारो,
हटो नाहिं पीछे दशाको सुधारो ॥
करो जन जातीयका पार खेवा,
हिये धारी प्रीती करो जाति सेवा,
करो भावना भी जरा काम यारो,
उठो क्यों पड़े हो हमारे दुलारो ॥

मन्खनलाल जैन, दमोह ।

नेता कहां ?

(लेखक:-गोपीचंद पाड़ीवाल वकील)

जैन जाति उन जातियोंमेंसे है जिनको हम नेता हीन जाति कहें । जो यहां नेतृत्वका दम भरनेको हरएक छोटा मोटा तैयार होता है पर उसका नेतृत्व स्वीकार नहीं किया जाता है । इसका कारण नेतृत्वके गुणोंका अभाव है । अनुभव, स्वार्थत्याग, विशाल हृदय, परोपकार बुद्धि, सहनशीलता, निष्कपटता, उत्साह और संगठनशक्ति (Cooperative Spirit) का अभाव हमारे नेतृत्वका दम भरनेवालोंका प्रभाव जन साधारण पर नहीं गिरने देता और इन गुणोंके अभावसे जातिमें स्वार्थ, संकीर्णता और कपट बहुत बढ गया है और बढता जाता है । हमारे उच्च महात्माओंके जीवन उनके उपदेश, उनकी पूजा, हमारा उत्तम श्रेणिका साहित्य, वैराग्य पूर्ण स्तवन, कथाएं इत्यादि मनोहर मंदिर, तीर्थ इत्यादि प्रभावहीन होते जाते हैं ।

संकीर्णताका पर्दा हमको हमारे साहित्यकी सुन्दरता, सिद्धांतकी अटलता, वैराग्यकी उच्चता, और हमारे पूज्य महात्माओंके जीवन और उपदेशके रहस्यसे अपरिचित ही रखता है । अगर कोई मंदिरोंमें नित्य पूजा पाठ करनेवाला, आधुनिक सभा सोसाइटियोंमें उच्च पद पर बैठनेवाला, कुंवारी कन्या पर एक पवित्र स्थानमें ही बलात्कार करता न हिचकिचावे, तो क्या हम कह सकते हैं कि शास्त्रोंका या मंदिरोंका उसके चारित्र पर कुछ असर पड़ा ?

चालीस वर्षकी आयुमें एक स्त्री होते हुये एक १२-१३ वर्षकी कन्यासे विवाह करलेना क्या यह साबित नहीं करता कि वह व्यक्ति धर्मके प्रभावसे बाहिर है। हमारे सैंकडो धर्मकार्यमें पैसा खर्चनेमें आगे रहनेवाले अगर घरमें उपपत्नियां रख छोड़ें तो क्या हम कह सकते हैं कि उन पर धर्मका कुछ असर पड़ा। अपनी ख्यातिके लिये या उदर पूर्तिके अनुचित साधनके लिये यदि कोई लोग श्वेतांबर और दिगम्बरोंमें झगडा पैदा करते रहें तथा उसे नित्य सींचते रहें जिससे द्वेषाग्नि भभकती रहे क्या हम कह सकते हैं कि उन व्यक्तियोंमें तीर्थ भक्ति है? सिवाय कहीं कहीं रातको अन्न न खानेके हमारी जातिमें कौनसी ऐसी बात है जिससे हम यह कह सकें कि हम पर हमारे आचार्योंका या शास्त्रोंका प्रभाव पडा। इसका कारण क्या? यह मंदिर व तीर्थ वे ही हैं जिनके सहारेसे अनंत जीव मोक्ष गये और यह सिद्धांत भी वही है जो अनंत जीवोंको निर्वाण पद प्राप्त करानेमें फलीभूत हुए है। हमारी सम्मतिमें कारण यह है कि **जातिमें कोई नेता नहीं**। महात्माओंका वचन है कि "**धर्म पांगला है**" जब तक धर्मको चलानेवाला अर्थात् नेता न हो तब तक वह ...में कुछ प्रभाव नहीं डाल सकता या यों कहिये ...क उसका अभाव ही है। महात्मा गांधीकी आज्ञा पर लाखों पढे और अनपढ अपने प्राण न्योछावर करने तैयार हो जाते हैं। हमारे नेतृत्वका दम भरनेवाले बतलावें उनकी आज्ञा माननेवाले कितने हैं? बम्बईमें बैठे महात्मा गांधी आज्ञा दें कि सभाएं करो और कलकत्तेमें एक एक लाख मनुष्योंकी सभाएं एकत्रित हो जावें।

हमारे नेता गले फाड फाड कर मरजावें तो भी उस जगहके लोग भी एकत्रित न हों! गांधी गिरफ्तार किये जावें और देश भरमें हडताल हो जावे। हमारे नेता जेलमें सडा करें पर हमारे जीसे उफ भी न निकले। महात्माको वर्षगांठ पर हजारोंकी थैलियां भेजी जावें, हमारे नेता कालिजों, स्कूलों इत्यादिके लिये वर्षों चिल्लावें मगर पैसा न मिले। यह क्यों? हमारे नेताओंमें नेतृत्व नहीं, उनके हृदय कपटसे, पालीसीसे, संकीर्णतासे मुक्त नहीं। जन साधारणके लिये उनके हृदयमें हिकारत, खुदके चमकनेकी भूख, कष्ट सहनेको तय्यार नहीं, उनका चारित्र निर्दोष नहीं। ऐसे पुरुषोंका प्रभाव जाति पर कब पड़ सकता है? श्वेतांबर समाजमें धर्मगुरु साधु व जती हैं। जतियोंके चारित्र पतनके साथ उनका प्रभाव भी उठ गया। साधुओंकी भक्ति उनके गुणोंकि अनुसार मौजूद है। जिस अंशमें उनमें त्याग इत्यादि गुण मौजूद हैं उसी अंशमें उनका प्रभाव भी मौजूद है। पर उनमें संसार त्यागकी वजहसे जितने नेतृत्वके गुण होने चाहिये उतने न होनेके कारण उनका प्रभाव भी जितना होना चाहिये उतना नहीं है। हमारे उत्तम साधु भी कभी कभी उस कमजोरीका परिचय दे देते हैं जिसके कारण उनके होते हुये भी हमें कहना पडता है कि जैन जातिमें नेता नहीं। दिगम्बर समाजमें धर्मगुरु प्रायः पंडित लोग ही हैं। भट्टारकोंका

प्रभाव जतियोंकी तरह उठ हीसा गया। पडि तोंका प्रभाव जातिपर जैसा चाहिये तेसा नहीं है। क्योंकि इनमें प्राय सबसे बडा अवगुण धनिकोंका सहारा ढूढना, उनमेंसे स्वाधीनता-का गुण नष्ट करके चापलूसी पैदा कर देना है। धनिक प्राय धनसे मदांध होते हैं। उच्च शि-क्षाका वहा नाम नहीं होता जिससे उनमें उच्च विचार पैदा हो सकें। उनमें नेतृत्व ढूढना व्यर्थ है। अकसर उनमें औरोंसे अवगुणोंही-की मात्रा अधिक मिलेगी। जातिमें परस्पर झगडोंका कारण यदि खोजा जाय तो प्राय यही धनिक मिलेंगे। उन्नतिके बाधक, कुरीतिके प्रचारक, सुधारके मार्गमे कटक प्राय यही श्री-मत मिलेंगे क्योंकि जन साधारण धनके कारण इनके दोषोंका प्रतिरोध नहीं करते और जो कुछ थोडेसे कार्यकर्ता है तो वे मानो इन श्रीमतों के बिक ही गये है।

जो थोडी बहुत संस्थाऐं जातिमें है उनमें इन्हींका पैसा अधिक होनेके कारण उनका काम आदर्श श्रेणी पर नहीं पहुंचता। कार्यकर्ता ओंको सदा इनकी खुशामद करनी पडती है और इनको प्रसन्न रखनेके लिये इन्हींकी मर्जीके मुवाफिक कार्य करना पडता है, जन-साधारणकी सम्मतिकी कुछ कदर नहीं होती। इसी कारणसे हमारी सस्थाओंसे वास्तविक लाभ नहीं पहुंचता। यदि हमारी सस्थाऐं धनिकों पर निर्भर न रहकर जन साधारणके स्वार्थ त्यागसे दिये हुये और पसीनेसे कमाये हुये धन पर आधार रखने लग जावें तो नि स-देह वे बहुत ऊंची न होने हुये भीलाभ बहुत पहूंचा सक्ती है। तात्पर्य यह है कि धनिक लोगोंके नेतृत्वमे हमारी उन्नति नही होसक्ती क्योंकि वे नेतृत्व गुण विहीन है।

एक श्रेणी और है जो कि नेतृत्वका दम भरती है वह है। अंग्रेजी पढे लिखोंकी श्रेणी जो कि दिगम्बर समाजमें बाबू पार्टीके नामसे नामाकित है। इनमे बेरिस्टर, वकील, डाक्टर, ग्रेज्युएटसे लेकर स्कूलके छात्रों तक शामिल हैं। यह लोग भी अपनेको नेता समझते हैं। इन लोगोंमें विद्या है, वक्तृत्व शक्ति है, पर नेताके लिये यह काफी नहीं है। इनमें कुछ दोष ऐसे है कि जिनके कारण इनके यह गुण भी छिप जाते है। उदाहरणार्थ यह लोग फिजूलखर्ची-पर भाषण देने खडे होते हैं, विवाहोंपर बिरा दरीको जिमानेमे, मन्दिरोंके आडम्बरोंमें, स्त्रि-योंके जेवरोंमें फिजूल खर्चीके विरुद्ध बड़े युक्ति-पूर्ण भाषण देते है, पर जन साधारण पर इसका बिलकुल असर नही पडता। कारण क्या? यह कि इनके भाषण (Sincere) नहीं, हृदयसे नहीं निकलते, वे स्वय बढिया कोट पतलून और अंग्रेजी जूते पहने फिरते है जो कि देशी पो-शाकसे कदापि सस्ते नहीं। वे अपनी स्त्रियोंको विलायती दुकानोंमें बनी हुई सोनेकी चूडिया तथा गहनोंसे, बढिया फेशनेबल तेल इत्यादिसे सुसज्जित करते है जोकि भारतीय गहनोंसे कदापि सस्ते नहीं पडे सकते। अपने मित्रो तथा अफसरोंको गार्डन पार्टी देते है जो कि बिरादरीके भोजनसे कम फिजूल या कम खर्चके या अधिक उपयोगी नहीं कहलाये जा सकते।

इसी कारण इस पार्टीका प्रभाव जन साधारण पर नहीं पड सकता । इस श्रेणीके कई व्यक्ति जन साधारणसे एक विदेशीके भांति अलग ही रहते हैं और उनकी हरएक बातको नीची निगाहसे देखते हैं । इसलिये भी यह नेता नहीं बन सकते ।

इस प्रकारसे नेता होनेका दम भरनेवाले लोगोंकी हम जांच करें तो हमको पता लगेगा कि हमारी जातिमें नेता कोई नहीं है । जो अपने आपको नेता समझता है वह स्वयं धोखा खाता है और दूसरोंको धोखा देता है । यह निस्संदेह खेदकी बात है । उचित है कि वे लोग धोखेसे बचे, अपने आपमें नेतत्वके गुण उत्पन्न करनेकी कोशिश करें और पूजा सत्कारका ध्यान न दे । विशेष कर युवकोंको चाहिये कि अपना चारित्र दढ़ करें जिससे वे वास्तविक नेता बन सकें ।

संसार स्वर्ग !

स्नेह स्वर्ग संसारनुं, सकल शास्त्र नीधान,
स्नेह स्वर्गनुं सत्व छे, ते वीण व्यर्थ विधान.
गृहस्थी ! गृह–शालामां—
शीखाये स्नेहनां–सूत्रो,
प्रवाशी ! पुष्प–पुंजोमां—
शीखो निःस्वार्थनां-सूत्रो.
प्रवेशी 'स्नेह–शाला'मां—
शीख्या जो 'स्नेहनां–सूत्रो'.
तजी सौ भेद अंतरनो—
लहो, सौ स्नेह–स्नेहिनो.
"स्नेहयोगी।"

पति पत्नि संवाद ।

विवाहका उद्देश्य ।

(लेखक:-अमृतलाल जैन, रोहतक)

पत्नि–यह क्या पढ़ रहे हो । मुझे भी तो सुनाओ ।

पति–लो सुनो पढ़ता हूं ।

पत्नि–चिल्लाकर न पढ़ना उधर दादाजी बैठे हैं ।

पति–क्या मैं ऐसा वेशरम हूं जो तुम्हारे लिये इतना चिल्लाकर पढूं कि घरके बड़े बूढे सुनलें ।

पत्नि–नहीं, यह तो नहीं । तो भी आजकल कुछ लोग ऐसे ही हैं । रिसहे न होओ । कोई यह सुन पावेगा तो तुम्हारी निन्दा करेगा और वह मुझसे सही न जायगी इसीसे धीरे पढनेको कहती थी । अच्छा, पढो ।

पति–पढता हूं–साहस करके कह सकते हैं कि हमारे देशके सदृश पति–पत्निकी ऐक्यता और मिश्रण कहीं भी देखनेमें नहीं आता । विवाहके समय हिन्दू स्त्री पुरुषकी पृथकता दूर होकर दोनो एक हो जाते हैं। विवाह समाप्त होते ही दम्पति एक ही दृष्टिमें आते हैं । यह ऐक्यता ही हिन्दू विवाहका मुख्य उद्देश्य है ।–मेरी ओर क्यों ताक रही हो क्या कुछ समझमें नहीं आया ?

पत्नि–कुछ भी नहीं समझ पड़ा । यह क्या कह गये ? यह किसकी कहानी है ?

पति-कहानी नहीं, यह एक लेख है।

पत्नि-लेख सही, पर बात क्या है?

पति-विवाहकी बात है। स्वामी क्या है स्त्री क्या है उनका आपसमें क्या संबन्ध है यही सब कुछ इसमें बताया है।

पत्नि-भला यह क्या हुआ? ऐसी बातके लिखनेसे लाभ! मैं समजी कोई बड़ी अच्छी कहानी है जिसे इतने ध्यानसे पढ़ रहे हो। विवाहकी बात तो सभी जानते हैं।

पति-अच्छा क्या जानते हैं?

पत्नि-यही कि स्त्री स्वामीकी अर्ध शरीरी है। और तो क्या यह तो आठ वर्षकी लडकी भी बता सक्ती है।

पति-(सहर्ष) ठीक कहा परंतु इसका मतलब क्या?

पत्नि-मतलब सतलब तो मैं जानती नहीं। जैसे सब कहते हैं वैसे सुनती हूं, यही कहावत है कि स्त्री पुरुषका अर्द्धांग ही है।

पति-ठीक है स्त्री-पुरुषका अर्द्धांग ही है इसी लिये अर्द्धांगिनी भी कहते हैं, परंतु यह बताओ कि इसका तात्पर्य क्या है, आधा शरीर तो किसीका भी नहीं होता। सबके दो हाथ दो पैर होते हैं तिसपर अर्द्धांग कहलानेका क्या अर्थ है?

पत्नि-इतना तो मैं समझती नहीं। क्या इस पोथीमें इसकी कुछ बात लिखी है?

पति-हां लिखी है। और भी अनेक बात लिखी हैं। सुनेगी?

पत्नि-सुनूं तो सही, परन्तु समझ न सकूंगी।

पति-अच्छा, पुस्तक बन्द करके वैसे ही समझाता हूं। बताओ मनुष्य क्यों जन्म लेता है।

पत्नी-पूर्व जन्ममें किये हुए पापोंके फल भोग करनेके लिये। जब तक ये पाप नहीं मिटेंगे योंही जन्म मरण होता रहेगा?

पति-फिर तो हमें पापोंके क्षय करनेका उपाय अवश्य करना चाहिये।

पत्नि-हां, वार वार की गर्भयातना कुछ कम कष्ट और दुःखकी बात है।

पति-कह सकती हो क्या करनेसे पाप क्षय होना संभव है।

पत्नि-यह मैं क्या जानूं? इसके लिये अनेक दुःख उठाते हैं, कोई सन्यासी बनता है, कोई बनवास लेता है, कोई घर रह कर ज्ञान, ध्यान, जप, दान करता है और क्या २ बताऊं?

पति-यह सब ही ठीक है परंतु इन सबमें अच्छा कौन है?

पत्नि-धन्य २, आप मुझसे यह बात पूछते हैं! हम तो बड़ी बूढियोंसे ही केवल ऐसी चर्चा सुनती हैं विशेष क्या जाने? सो दादीजी कहती थी कि कहनेको सन्यासी और ब्रह्मचारी सभी बड़े हैं, परन्तु गृहस्थके समान कोई भी नहीं है। बाल बच्चोंमें रहकर धर्मपूर्वक रहनेके समान कोई भी धर्माचरण नहीं है।

पति-दादीजीकी बात सच है पर तब भी गृहस्थ धर्म बड़ा कठिन है।

पत्नि-इसमें क्या झूंठ? गृहस्थीकी लाज भगवान ही रखता है।

पति-इस बातसे मेरा प्रयोजन नहीं है। इसको जाने दो। यह बताओ कि गृहस्थधर्मकी उत्पत्ति कहांसे है।

पत्नी–न जाने आप क्या पूछते हैं, कुछ समझ नहीं पड़ा।

पति–समझी नहीं। अच्छा बताओ गृहस्थ किसे कहते हैं।

पत्नि–यही कि जिसके स्त्री पुत्र घर द्वार हो वह गृहस्थ है।

पति–क्या पुरुष ही गृहस्थ होता है स्त्री नहीं?

पत्नि–क्यों नहीं? यों सही कि जिसके स्वामी पुत्रादि हों वह गृहस्थ है।

पति–अब समझो कि ववाहसे ही गृहस्थाश्रमकी उत्पत्ति है। पति पत्नि पुत्रादि सब विवाह से ही होते हैं।

पत्नि–जान पड़ा इसी लिये स्त्री मरने पर लोग कहा करते हैं कि " उसका घर बिगड़ गया।"

पति–हां, इस लिये ही सब आश्रमोंकी अपेक्षा जो श्रेष्ठ गृहस्थ हैं वह विवाहसे ही बनता है, इस गृहस्थके धर्मोके प्रतिपालन करने हीसे लोग पुन्य संचय और पाप क्षय कर सक्ते हैं।

पत्नि-गृहस्थ धर्मसे पाप क्षय कैसे होता है?

पति–सो क्या तुम समझेगी? गृहस्थके लिये आत्म संयम, परोपकार, अतिथि सेवा, परिजन प्रतिपालन इत्यादि कर्म बताये गये हैं। इनके करनेसे निकृष्ट वृत्ति दूर होकर उत्कृष्ट वृत्तियां उदय होती हैं। गृहस्थाश्रम अपने सुखके लिये नहीं है परंतु धर्म और परोपकारके लिये है।

पत्नि–यह तो बड़ा आनंद है कि गृहस्थीके कर्म धर्म रूप समझे जाते हैं, पर असल बात तो रह ही गई। स्त्री अपने पतिकी अर्धांगिनी क्यों है यह बात तो आई ही नहीं।

पति–ठहरो, सब बताऊंगा, पहिले तुम ही बताओ कि स्त्री और स्वामीका परस्पर क्या कर्तव्य है?

पत्नी–एक दूसरेको प्यार करे। जब जिसके मनमें जो बात हो वह दूसरेको बोले। एकके सुखसे दूसरा सुखी और दुःखसे दुःखी हो। परस्पर आनंद पूर्वक रहे।

पति–वाह! अच्छा कर्तव्य बताया। विवाहका उद्देश्य समझने पर भी स्त्री पुरुषका कर्तव्य न समझा गया। बस तुमसे वृथा सिर मारनेसे चुप ही अच्छी।

पत्नी–क्यों इतने गुस्से क्यों होते हो? मैं नहीं समझी तो आप ही बतादो।

पति–अच्छा, मैं ही बताता हूं। थोडीसी बातमें समझनेके लिये सार यह है कि परस्पर एक दूसरेको गृहस्थ धर्म पालनेमें सहायक बनें, उत्साहित और उत्तेजित करें, जिस कर्मसे एककी असद्वृत्ति दूर होकर सद्वृत्तियोंका विकास हो-दूसरेको वही करना चाहिये।

पत्नी–और मैंने जो कुछ कहा वह कुछ बात ही नहीं हुई। एक दूसरेकी स्नेह न करें?

पति–क्यों नहीं करें?

पत्नी– क्यों नहीं करें? स्नेह तो कुछ ठहरा ही नहीं, आज तुम्हे हुआ क्या है?

पति–हुआ तो कुछ नहीं। तनक धीरज धरके सुनो तो सब बात हो। मैं जो कहता था उसमें स्नेहकी बात भी है।

पत्नी–फिर मेरी बात पर ऐसे बिगड़े क्यों थे?

पति–केवल स्नेहसे पूरा नहीं पडता। मैंने जो कहा है उस पर ध्यान देनेसे दम्पतिमें प्रेम आप ही उदय होता है। जो स्त्री पुरुष विवाहके उद्देश्यको पूर्ण करनेकी चेष्टा करते हैं उनमें प्रेम तो मूर्तिमान् होकर आ विराजता है। मैंने जो सद्वृत्तिका शब्द कहा था उसमें क्या समझी?

पत्नि–मैं तो कुछ भी नहीं समझी।

पति–अच्छा, यह स्नेह भी एक वृत्तिका नाम है।

पत्नि–स्नेह वृत्ति कैसे हो सक्ती है।

पति–जैसे खाना पीना शारिरिक वृत्ति है उसी भांति स्नेह एक मानसिक वृत्तिका नाम है। जैसे उचित रूपसे खानपान शरीरको पुष्ट करता है उक्त जाति धर्मानुसार स्नेहसे मन पुष्ट होता है। स्त्रीके लिये स्वामी और स्वामीके लिये स्त्री स्नेहपात्र है। जैसे वे परस्पर धर्मपालनमें सहायक हैं उसी भांति इस वृत्तिको भी पोषण करते हैं और यह धर्मरूप प्रेम जगत् प्रसिद्ध है इससे परस्पर सुख और धर्मचर्या दोनो बतें बन जाती हैं।

पत्नि–फिर तुम स्नेहको ऐसी तुच्छतासे क्यों देखते थे?

पति–इसकी चर्चा करनेसे कुछ भी लाभ नहीं है। स्त्री पुरुषको आपसमें स्नेह करना चाहिये ऐसी शिक्षा ही अनावश्यक है, परंतु इस स्नेहके सिवाय अन्य कर्मोकी शिक्षा परमावश्यक है। केवल स्नेह २ सिखानेसे स्त्रियोंको और कुछ ध्यान नहीं रहता। केवल यही इच्छा रहती है कि रात दिन दोनों एक दूसरेके मुंहकी ओर देखते रहें और सर्व गृहस्थ धर्म चूल्हेमें पड़े। इन्हे अपने प्यारसे काम।

पत्नि–ठीक है, इस बातको मैं भी मानती हूं। आजकल बहुतेरी बहू इसी लिये न्यारी (पृथक्) होनेका झगड़ा उठाती रहती हैं। उन्हें गृह कर्म भारी लगता है, केवल आरामतलबी को ही जी चाहता है।

पति–चलो अब मेरा श्रम सफल हुआ। अब केवल यह कहना है कि स्त्री स्वामीकी अर्द्धांगिनी क्यों है। पहिले कह चुका हूं कि गृहस्थ न अकेली स्त्री हो सक्ती है न पुरुष। दोनोंके मिलापसे ही गृहस्थ बनता है इसी भांति गृहस्थके समस्त धर्म कर्म जबतक दोनों मिलकर न करें पूरे नहीं होवे और इसीसे स्त्री पतिकी अर्द्धांग कहलाती है अस्तु। पतिके सांसारिक कार्योंमें सहायता देना स्त्रीके लिये परमावश्यक है। गृहस्थीके लिये परिवार प्रतिपालन और आये गयेकी शुश्रूषा आदि अति गुरुतर कर्तव्य है। हिन्दू परिवारमें केवल 'मियां बीबी' ही नहीं वरन् माता पिता भग्नि तथा अन्य सम्बन्धी भी परिगणित है, सबको प्रसन्न रखना पडता है, अपना सुख त्याग कर दूसरोंको सुख पहुंचानेकी चेष्टा करना परम बश्यक होता है, इन कामोंमें कितने ही स्वामीके करनेके हैं और कितने स्त्रीके–अर्थात् जीविका प्राप्ति करना पतिका काम और पतिके उपार्जनसे समस्त परिवारके खानपानका प्रबन्ध स्त्रीका काम है। पतिमें जब स्नेह है तो पतिके उचित धर्म कर्मोंमें सहायता न देना यह स्नेहवही स्त्रीके लिये कभी उचित नहीं हो सक्ता। हिन्दू पत्नि सहधर्मिणी स्त्री इसीलिये कहलाती है कि वह पतिके सुख दुःखकी सदा साथिनी रहे।

ग्यारा प्रतिमाकी लावनी।

पांच उदम्बर सात विसनको मन वच तनसे त्याग करो।
　　शंकादिक दोषोंसे रहित गुण आठ निःशंकित आदि धरो॥
पाल शुद्ध सम्यक्त्व सार यह **दर्शन प्रतिमा** प्रथम खरो।
　　पूर्ण व्रतोंका मूल यह इसका आदर किया करो॥ १॥
मन वच तनसे त्रस जीवोंके प्राणोंकी रक्षा करना।
　　वही अहिंसा अणुव्रत जानो भान सहित पालन करना।
पर हितकारी पर सुखकारी मिष्ट वचन मुखसे कहना।
　　मिथ्या वचको त्याग कर सत्याणुव्रतको गहना॥ २॥
भूले पड़े हुए परिधनको मन वच युत त्यागन करना।
　　निज त्रियमें सन्तोष धारकर परत्रियको त्यागन करना।
कर परिग्रह परमाण लोभको सब प्रकारसे क्षय करना।
　　शुभ गति दाता जान ये पंच अणुव्रत आदरना॥ ३॥
दिशा और विदशाओंमें जाने आनेका नियम करो।
　　हदसे बाहर न किंचित् आगे गमनागमन करो॥
पाप-उपदेश दान हिंसाको प्रमाद चर्या नहीं करो।
　　दुश्रुत अरु अपि ध्यान त्याग यह अनर्थदंड व्रत चित धरो॥४॥
खाद्य स्वाद्य भोगादि पदारथ अथवा वस्त्राभूषण वे।
　　कर इनका परिणाम इन्द्रियोंको फिर वश कर पावे वे॥
लिया पूर्व दृगव्रत उसमें दिवस आदिका नियम करो।
　　ग्रामादिक घरकी सीमा रख उसके भीतर गमन करो॥ ५॥
तीनो योग सम्हार पियारे सामायक त्रैकाल करो।
　　षट् प्रकार जीवनके ऊपर समता भाव प्रदान करो॥
आरंभ सकल निवार पर्वमें प्रोषध धार पुवास करो।
　　चौ प्रकारका त्याग आहार स्व-आतम ध्यान धरो॥ ६॥
परम पात्रको असन दान दे पीछे स्वयं आहार करो।
　　यही अथित संविभाग व्रत है इसका आदर किया करो॥
ये बारा व्रत पाल नियमसे कर्म कलंक विनास करो।
　　यह **व्रत प्रतिमा** दूसरी इसको अपने चित्त धरो॥ ७॥

॥ श्रीवीतरागाय नमः॥

दिगंबर जैन.

THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिर्विविधश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्तताम्, दैगम्बरं जैन समाज-मानसम् ॥

वर्ष १३ वाँ.	वीर संवत् २४४६. भाद्रपद. विक्रम सं० १९७६.	अंक ९.

उत्तम क्षमा।

(लावनी)

सज्जनो कहूँ कर ज़ोर अरज़ एक तुमसे, अब करो मेरा अपराध क्षमा तन मनसे ॥टेक॥
यह आश्विन कृष्ण प्रतिपदा दिन आया, है धन्य दिना यह बार पुन्यसे पाया ।
इस दिनके समान न और कोई दिन है, सब करो परस्पर क्षमा लगाओ न छिन है ।
दो राग द्वेष सब त्याग बहुत जरदीसे, अब करो मेरा अपराध क्षमा तन मनसे ॥१॥ सज्जनो०

* * * *

जिन धर्म करो प्रचार जगतमें सारे, जिन धर्म बिना नहीं कोई भविदधि तारे ।
जिन धर्म पाय अब क्षमा सर्व पर लाये, अब मनुष्य जन्मको पाय सफल कर भइये ।
सब करो धर्म प्रचार एक हो जीसे, अब करो मेरा अपराध क्षमा तन मनसे ॥२॥ सज्जनो०

* * * *

सब मिलो ऐक्यता करो भाई हर्षाई, जो वात्सल्यका अंग कहा है जिनराई ।
जिससे जगमें बढे प्रीत बहु भेरी, सब कर लेउ समता भाव सुनों नरनारी ।
पुनि मग जांय सब ही पार क्षमाके गुणसे, अब करो मेरा अपराध क्षमा तन मनसे ॥३॥ सज्जनो०

* * * *

जो किया मैंने अपराध आपका भाई, मैं हूं छद्मस्थ अज्ञान ज्ञान मोहि नाहीं ।
जो कुछ हो गया अपराध देओ निरवैरी, अब करो लड्डूर पर क्षमा करो मत देरी ।
अब करता समता भाव सर्व जीवनसे, अब करो मेरा अपराध क्षमा तन मनसे ॥४॥ सज्जनो०
सज्जनो, कहूँ कर ज़ोर अरज एक तुमसे, अब करो मेरा अपराध क्षमा तन मनसे ॥

लड्डूरमल जैन, कोसी ।



हमारे महान धार्मिक दिन याने पर्यूषण पर्वके दिन अभी व्यतीत हो

दशलाक्षणी पर्व रहे हैं और शीघ्र ही भादों सुदी चतुर्दशी आते ही देखतेर पूर्ण भी हो जावेंगे। इस पर्वमें परापूर्वकी रीत्यनुसार मंदिरोंमें अभिषेक पूजा आदि होते हैं तथा अनेक स्थानोंपर सुबह शाम शास्त्र सभा आदि भी होती हैं परन्तु जैसा कि व्याख्यान सभाका विपुल प्रचार और उत्साह हमारे श्वेताम्बर भाइयोंमें है वैसा हमारेमें नहीं है उसका कारण हमारेमें उपदेष्टाका अभाव ही है। हमारे रहे सहे त्यागी ब्रह्मचारी भट्टारककोंमें सिर्फ ईनेगिने त्यागी ब्रह्मचारीगण जैसे कि श्री० त्यागी ऐलक पन्नालालजी, श्रीमान् जैनधर्मभू० ब्र० शीतलप्रसादजी, ब्र० ज्ञानचंदजी, ब्र० भगीरथजी वर्णी, ब्र० पार्श्वसागरजी आदि तो जहां पर भी होते हैं उपदेशामृत सुनाते ही हैं परन्तु इतनेसे काम कैसे चले? हां, हमारे पंडितगणने त्यागियोंका कार्य बहुत समाल लिया है और अनेक स्थानपर अनेक पंडितगण इस पर्वमें तत्वार्थ सूत्रजीके अर्थ और दशलक्षण धर्मका स्वरूप सुनाते हैं परन्तु समयानुसार इस भादों सुदी १४ के दिन हरएक ग्राम और शहरमें एक आम सभा होनी चाहिये और उसमें दशलक्षण पर्व और हमारा कर्तव्य पर अवश्य व्याख्यान होना चाहिये।

इस पर्वमें चतुर्दशीके दिन तो सब भाईयों अपनार कारोबार बंध करके बहुत करके उपवास करते हैं और समय धर्मध्यानमें बीताते हैं तो इसी दिन हमें क्या २ कर्तव्य करना आवश्यकीय है वह हम नीचे संक्षिप्तमें सूचित करते हैं—

(१) इस पर्वमें अनेक भाइयों और बहिनों १०–५–२ या १ उपवास करते हैं उसमें दस पांच उपवास करनेवाले बहुत प्रकारका खर्च करके उत्सव करते हैं परन्तु उसमें वास्तविक खर्चकी तरफ ध्यान नहीं दिया जाता, सिर्फ अपनी नामवरीके लिये ही खर्च करते हैं ऐसा न होकर हरएक व्रतकी खुशीमें पुस्तकोंकी प्रभावना करनी चाहिये और अपनी सभा संस्थाओं जिसमें कि चारों प्रकारके दानका कार्य हो रहा है उसमें अच्छी रकम दानमें भेजनी चाहिये।

(२) अनेक स्थानों पर अब भी विदेशी भ्रष्ट शक्करके बतासे और विलायती अशुद्ध केशरका वर्ताव करते हैं वह न करके पुस्तकों या तो बादाम, श्रीफल आदि प्रभावनामें बांटना चाहिये और मंदिरोंमें शुद्ध स्वदेशी केशर ही वर्तनी चाहिये।

(३) विना निमित्त कोई भी कार्य नहीं होता इस लिये पर्युषण पर्व दान करनेका बड़ा भारी निमित्त कारण है उसमें (वर्षमें एक वार तो) हरएक स्थान पर मंदिरोंमें सब भाई एकत्रित होते हैं वहां एक खास आदमीको खड़े हो जाना चाहिये और एक दानका चंदा लिखाना चाहिये और जो कुछ रकम हो वह नीचे लिखी हमारी संस्थाओंको भेजनी चाहिये–(१) श्री

ब्रह्मचर्याश्रम मेरठ यु० पी०, (२) स्या० महाविद्यालय, काशी। (३) महाविद्यालय मथुरा, (४) श्री कुलभूषण दि० जैन विद्यालय, कुंथलगिरी पो० पिंपलगांव, सोलापुर, (५) श्राविकाश्रम, ताड़देव बम्बई, (६) सतर्क सुधा० पाठशाला सागर, (७) देहली अनाथालय, (८) बडनगर औषधालय, (९) बड़नगर नवीन अनाथालय, (१०) जैन सिद्धांत विद्यालय मोरेना आदि।

(४) जहां भी देखो फूटका साम्राज्य अति प्रबल है इस लिये इसी उत्तमक्षमादि दश धर्मोंके दिनोंमें **उत्तम क्षमाका** भाव हृदयसे लाकर ज्ञाति या तो मंदिरमें किसी भी प्रकारका झगड़ा हो उसको निपटाकर मेल कर लेना चाहिये। सच्ची उत्तम क्षमा तो यही है। पत्रों द्वारा 'उत्तम क्षमा' लिख देना तो मामूली बात है।

(५) हमारे मंदिरोंमें द्रव्य और उपकरणकी कमी नहीं है परन्तु यदि कमी है तो यह व्यवस्थाकी कमी है। प्रतिमाजी, शास्त्र, उपकरण आदिकी सूची शायद ही होती है तथा हिसाब भी वर्षोंसे प्रकाशित नहीं होता, हिसाबमें क्या है सो लिखनेवाला ही जानता है ऐसा न होकर मंदिरकी प्रतिमाओंकी एक सूची संक्षिप्त लेख सहित बना कर रखनी चाहिये तथा जितने भी बर्तन उपकरण हो उनकी सूची बना कर उसको हर वर्ष मिलाते रहना चाहिये तथा जितने शास्त्र मंदिरजीमें हो उनकी एक विगतवार (कर्ता, संवत, विषय, भाषा आदिकी) सूची बना लेनी चाहिये। जितने शास्त्र हों उनका लीस्ट बनाकर गत्तेपर चिपका कर रखना चाहिये और स्वाध्याय करनेके लिये आग्रहपूर्वक भाइयों और बहिनोंको मंदिरमें या घर पर लिखकर देना चाहिये।

(६) हमारे बहुतसे शास्त्र छप चुके हैं और छपे शास्त्र पढनेमें सरलता होती है इसलिये मंदिरमें जो शास्त्र न होवें वे अवश्य मगा लेनेका निश्चय करके ओर्डर लिख देना चाहिये। छपे शास्त्रोंकी एक सूची भी इसी अंकके साथ बांटी गई है। विशेष करके माणिकचंद ग्रंथमालाके संस्कृत ग्रन्थ, गोमटसारजी, आदिपुराणजी आदि ग्रन्थ तो मंदिरमें अवश्य संग्रह करने चाहिये।

(७) हमारी संख्याका दिनोंदिन ह्रास होता ही चला जाता है उसकी जानकारीके लिये चतुर्दशीके दिन सबको अवकाश रहता है तो उसी दिन दो चार स्वयंसेवकोंको खड़े होकर अपने २ ग्राम और शहरकी मनुष्यगणना कर लेनी चाहिये उसमें जाति, आयु, पुरुष या स्त्री, विवाहित या अविवाहित, सधवा या विधवा, कुंवारिका, कुंवारे आदि सब हाल दाखिल करके लिख लेना चाहिये। परवार और जैसवाल जैनोंने अपनी मनुष्य गणना करनेका कार्य हस्तगत किया है उसी प्रकार हरएक जातिको अपनी मनुष्य गणना करनी चाहिये।

(८) अनेक स्थानों पर चतुर्दशी पूनम या तो प्रतिपदाके दिन जलयात्रा उत्सवका जुलूस निकलता है उसमें बहुत अविनय होता है यहां तक कि बहुत भाई जूते तक नहीं निकालते हैं ऐसा न करके जहां तक हो विनयको प्राधान्य पद देकर स्थान २ पर जुलूसको ठहरा कर जैनधर्मके

भजन होने चाहिये और उसके साथ २ धर्मो पदेश भी होना चाहिये जिससे कि आम लोगों पर जैनधर्मका प्रभाव पड़ सके।

(९) जहां सभा पाठशाला हो वहां उसका उत्सव होना चाहिये तथा जहां सभा पाठशाला न हो स्थापित करनेका प्रबंध करना चाहिये और बंद पड़े तो उसको फिर चालु कर देना चाहिये।

(१०) हरएक स्थानपर जैन लायब्रेरी (वाचनालय) की आवश्यकता है जिसमें जैन अजैन पत्र मगाये जाय तथा धार्मिक राजकीय आदि ग्रन्थों। संग्रह किया जाय। विना फीस ही सबको बांचनेका प्रबंध होना चाहिये।

(११) हमारे समाजमें इने गिने ही पत्र हैं और सबकी आर्थिक दशा अच्छी नहीं है उसका खास कारण उसकी ग्राहक संख्याका कम होना है और समाजका जीवन तो समाचार पत्र ही है। दि० जैनकी साडेबारह लाखकी बस्तीमें कमसे कम सवालाखकी गृहसंख्या होगी तो भी उसमेंसे एक १ पत्रके दो २ हजार भी ग्राहक न हो फिर हमारी उन्नति कैसे होसके! बड़े २ शहरोंमें १००-२०० गृहसंख्या होते हुए भी दस बीस ग्राहक शायद ही किसी पत्रके होते हैं इसी लिये आज हम समाजका ध्यान इस ओर आकर्षित करते हैं कि वे इस पर्युषण-पर्वके मौके पर 'जैनमित्र' (सुरत), जैनगजट (मथुरा), ये दो साप्ताहिक पत्र तथा पद्मावती पुरवाल (कलकत्ता), दिगम्बर जैन, जैसवाल जैन (आगरा), जैन मार्तंड (हाथरस), गोलापूर्व जैन (सागर), खंडेलवाल जैन (सीतापुर), प्रगति-जिनविजय मराठी (बेलगाव), जैन प्रचारक उर्दू (मेरठ), जैन प्रदीप उर्दू (देवबंद), अंग्रेजी जैन गेझेट (मदरास) आदिके अवश्य ग्राहक बननेके लिये पत्र लिख देवे।

(१२) समयका प्रवाह हमें यह बता रहा है अब हमें पराश्रयी न होकर स्वाश्रयी होना चाहिये। सरकारी स्कूलोंमें हमें योग्य शिक्षा नहीं मिलती न वहां धर्म शिक्षा मिलती हैं इसलिये हमें हरएक स्थान पर निजी स्कूल स्थापन करना चाहिये जिसमें जैन अजैन सभीको सब शिक्षाके साथ २ जैन धर्मकी शिक्षा भी दी जावे। ईन्दौर, देहली, मेरठ, सोलापुर, बांदा आदि स्थानों पर ऐसी स्कूलें स्थापित हो चुकी हैं उनका सब स्थानोंपर अनुकरण होना चाहिये। विशेषमें बम्बई, कलकत्ता, देहली आदि बड़े २ केन्द्रोंमें एक २ जैन कालेज भी स्थापित करनेका विचार करना चाहिये। यदि रास्ता बतानेवाला हो और कार्य करनेवाले हो तो जैनोंमें द्रव्य की कमी नहीं है। हर्ष है कि अभी ही देहलीमें ब्र० शीतलप्रसादजीके प्रयत्नसे जैन संस्कृत व्यापारी विद्यालय खुलनेवाला है। ऐसा ही विद्यालय नागपुर प्रां० खंडेलवाल दि० जैन समाकी शिक्षा प्रचारक कमेटीको खोलनेके लिये हम आग्रह करते हैं। बिन्द्रावनमें "प्रेम महाविद्यालय" है उसीके ढंग पर हमारे विद्यालय खुलने चाहिये तभी ही धार्मिक और व्यावहारिक उन्नतिकी आशा रख सकते हैं।

(१३) हमारे देशकी उन्नति हमारे देशमें ही बनी हुई वस्तुओंको व्यवहारमें लानेसे हो सकेगी। विदेशी वस्त्रमें अनेक प्रकारकी

अशुद्धि रहती है तथा चमडे, हड्डी आदिकी अनेक अशुद्ध चीजें वर्तनेसे हम हिंसाके व्यापारको पुष्ट करते हैं इसलिये हमें स्वदेशी वस्तुका ही व्यवहार करनेकी दृढ़ प्रतिज्ञा इस पर्युषण पर्वमें लेनी चाहिये तथा देशी भी अशुद्ध वस्तुओंको तो कभी भी नहीं वर्तना चाहिये।

(१४) हमारे तीर्थों और मंदिरोंकी रक्षाके लिये हमारी "भारत० दि० जैन तीर्थ कमेटी" प्रयास कर रही है परन्तु दिन रातका खर्च चलानेको द्रव्यकी आवश्यक्ता रहती है इसलिये हरएक गृह पीछे वार्षिक एक २ रुपया लेनेका जो प्रस्ताव कमेटीने किया है उसका अमल कीजिये और अपने ग्राम या शहरसे हरएक गृहका कमसे कम एक २ रुपया एकत्रित करके तीर्थक्षेत्र कमेटी कार्यालय, हीराबाग बम्बईको भेज दीजिये।

(१५) पर्युषण पर्वमें उपरोक्त सूचनाओंमेंसे अपने यहां क्या २ हुआ उसका हाल हमें आश्विन वदी ५ तक अवश्य लिख भेजिये ताकि वह आगामी अंकमें प्रगट कर सकें।

* * *

तीर्थ रक्षा। हमारे तीर्थोंकी रक्षा करना हमारा परम धर्म है। वर्षोंसे हमारे अनेक तीर्थ जैसे-श्री सम्मेदशिखरजी, अंतरीक्षजी, मक्सीजी, सोनागिरीजी, तारंगाजी आदिमें श्वेतांबरी भाइयोंसे झगडे चल रहे हैं और लाखों रुपये वकील बेरिस्टरों और अदालतोंमें स्वाहा हो रहे हैं। हमारे कई प्रयत्न होने पर आपसमें निबटेरा नहीं होता तब हमें विवश हो अदालती कार्य करना पड़ता है। आजकल शिखरजी केसमें अपार खर्च हो रहा है और द्रव्यकी कमी है यह बात अभीकी बम्बईकी तीर्थक्षेत्र कमेटीकी मीटिंगसे ज्ञात होती है जिसमें बीस लाख रुपये-का फंड एकत्र करनेका प्रस्ताव पास हुआ है जिस पर हम पाठकोंका ध्यान आकर्षित करते हैं। तीर्थक्षेत्र कमेटीके महामंत्रीके स्थान पर धर्मात्मा परोपकारी सेठ चुन्नीलाल हेमचंद जरीवाले जो कि हमारे स्वर्गीय सेठ माणेकचंदजीके समान ही हैं नियुक्त हुए हैं और आप यदि चाहें तो अपनी दुकानका कार्य चार पुत्रोंको सौंप कर सेठ माणेकचंदजीकी तरह हीराबागमें बैठ २ कमेटीका कार्य बराबर करा सकते हैं और खर्चमें भी बहुत फायदा करा सकते हैं। आशा है कि सेठ चुन्नीलालजी हमारे इस निवेदन पर अवश्य खयाल करेंगे। सेठ माणकचन्दजी कम ही पढ़े हुए थे और बहुत ही कार्य कर गये तो क्या आप निवृत्त होकर नहीं कर सकेंगे? अवश्य कर सकते हैं। शिखरजीके लिये चन्दा करनेके लिये भी हम धनिकोंसे इस पर्युषण पर्वके मौके पर आग्रह करते हैं।

* * *

અમદાવાદની બોર્ડિંગ જો કે અમદાવાદની દિગંબર જૈન બોર્ડિંગમાં માસ્ટર છોટેલાલજી પગાર ને સુપ્રિન્ટેન્ડન્ટ વગેરે રાખ્યા છે ત્યારથી ધર્મ શિક્ષણની વ્યવસ્થા સારી થયેલી છે પણ ગત મુંબઈ દિ. જૈન પરીક્ષાલયની પરીક્ષામાં એ બોર્ડિંગમાંથી એક પણ વિદ્યાર્થી બેઠેલો જણાયો નથી તેના કારણો એના સેક્રેટરીએ જણાવવાની જરૂર છે. વળી એ બોર્ડિંગમાં જુદા જુદા પ્રકારની બિમારીઓ ચાલે છે તેમજ

વિદ્યાર્થીઓ તરફથી થતી સાંભળવામાં આવે છે તેનું ખાસ કારણ એને ચલાવવાના બંધારણની ખામી છે. વિઝીટીંગ કમેટી નીમી હતી તે નામનીજ હતી ને તે પણ હવે હસ્તીમાં હોય એમ સંભવતું નથી તેમજ સુપ્રિન્ટેન્ડન્ટને તથા સ્થાયી સેક્રેટરીને જે જે સત્તાઓ હોવી જોઇએ તે ન હોવાથીજ અનેક વાર ગુંચવાડા ઉત્પન્ન થયા છે. વળી વર્ષો થયાં આ બોર્ડિંગનો વાર્ષિક મેળાવડો પણ થયો નથી જેથી એની આંતરિક રિત તિથી પણ પુરેપુરી રતે વાકેફ થવાયું નથી. દરેક વર્ષે એ મેળાવડો થવાથી ગુજરાતના ભાઇઓને અનેક લાભો થતા હતા એ જાણીતું છે. એના બાહોશ સેક્રેટરી પરી. લલ્લુભાઇના વિયોગ પછી તેમના કાર્યની કદર બુઝવાને વાર્ષિક મીટિંગ ભરવાની ખાસ જરૂર છે તથા તે પ્રસંગે કાર્યક્રમ ચલાવનારી પેટા કમેટી નીમવા બાબત વિચાર કરવાની પણ જરૂર છે. આશા છે કે એના હાલના સેક્રેટરી ભાઇ લલ્લુભાઇ લખમીચંદ એ બાબત કોશિશ કરી આવતા માસમાં અવશ્ય વાર્ષિક મેળાવડો કરવા ગોઠવણ કરશે.

* * * *

મુંબાઇમાં કુદકે અને ભૂસ્કે વસ્તી વધતી જાય છે ને લોકોને મકાન

દિગંબર નિવાસની મેળવવાની અતિશય સુ-જરૂર શ્કેલી નડે છે જેથી ત્યાં નોકરી માટે આવીને રહેનારા સામાન્ય વર્ગના દિ૦ જૈન ભાઇઓ માટે સસ્તા ભાડાના મકાનોની ખાસ જરૂર છે. આ બાબત આ અંકમાં એક લેખ પ્રગટ કરવામાં આવ્યો છે ને એવીજ બાબતના બીજા બે લેખો અમને મળ્યા છે, જે પ્રગટ ન કરતાં એટલુંજ જણાવીશું કે જેવી રીતે શ્વેતાંબરી ભાઇઓમાં સસ્તા ભાડાના મકાનની યોજના થઇ છે, તેજ મુજબ આપણા દિગંબર ભાઇઓએ એકત્ર મળીને યા તો એકાદ શ્રીમાને આ કાર્ય કરી કોમની આશીષ લેવી જોઇએ. શ્રીમાન શેઠ સુખાનંદજી જેઓ ખરચે ધર્મશાળા ખુલ્લી મુકનાર છે તેને બદલે તેનેજ દિગંબર નિવાસનું રૂપ આપે તો તે બની શકે તેમ છે. અથવા તો અમારા સાંભળવા મુજબ શેઠ ડાહ્યાભાઇ પ્રેમચંદ ઝવેરી લાખ બે લાખની મોટી સખાવત કરવા કેટલાક સમયથી ઇચ્છા રાખે છે અને વિચારમાં ને વિચારમાં વખત વહ્યો જાય છે અને એમણે આજ સુધી દાનનું કોઇ ભારી કાર્ય કર્યું નથી કે જે કરવા તેઓ પૂર્ણ શકિતમાન છે તો તેમણે હવે વિલંબ ન કરતાં આ "દિગંબર જૈન નિવાસ" પોતાના નામે સ્થાપિત કરવાની પહેલ કરવાની જરૂર છે. આ સાથે મુંબાઇમાં જૈન વ્યાપારી વિદ્યાલય ખુલવાની ખાસ જરૂર છે, તે તરફ પણ અમે શ્રીમાનોનું ધ્યાન ખેંચીએ છીએ.

મુંબાઈમાં વસતા દિગમ્બર જૈનોની હાડમારી.

ચાલુ જમાનામાં જ્યારે મુંબઇની તમામ પ્રજા પોતાના જ્ઞાતિ બંધુઓને રહેવાની તેમજ ધંધા વગેરેની સગવડતા માટે ગોઠવણ કરી આપે છે અને હજી કર્યા જાય છે, તેમજ ચાલુ જમાનામાં જ્યારે દરેક આગળ વધતી રહે છે ત્યારે અમારી કોમમાં શ્રીમંતો-લક્ષાધિપતીઓ તેમજ કરોડાધિપતીઓ (જે આપણી કોમમાં હૈયાત છે તેમને માટે અમારે અભિમાન રાખવું પડે છે.) મોજુદ છે, છતાં તેઓનું એ બાબત તરફ લક્ષ ખેંચાતું નથી એ શોચનીય છે. હાલના ચાલુ મોંઘવારીના જમાનામાં બહારગામ ધંધાની અંગવડતાને લીધે આપણા દિગંબરી ભાઇઓને ધંધાર્થે મુંબાઇ આવવું પડે છે. તેમને રહેવાની બીલકુલ સગવડતા નથી. હાલમાં આપણી કોમના ૫૦-૬૦ માણસો શેઠ માણેકચંદ પાનાચંદની પેઢી જે આપણી કોમના દાનવીર શેઠ છે તેમની દુકાન પર સુઇ રહે છે અને તેઓ પોતાની અડચણો વેઠી લઇને તે ભાઇઓને સુવા દે છે. વળી જણાવવાની જરૂર નથી કારણ કે કેટલાક વરસથી તેમને તેવીજ તસ્દી આપ્યા કરીએ છીએ. અને હવે દીવસેદીવસે સંખ્યામાં વધારો થતો જાય છે.

એટલે અમો એવી આશા રાખીએ છિયે કે અમારા શ્રીમાન સખી ગ્રહસ્થો (જે કામ તેમને સહેજમાં બની શકે તેમ છે.) સસ્તા ભાડાનું એક મકાન "દિગંબર નિવાસ" તરીકે ગોઠવણ કરી બંધાવી કોમને આભારી કરશે. વળી અમારે મગરૂર થવા જેવું છે કે અમારી કોમના સખી ગ્રહસ્થ દાનવીર શેઠ માણેકચંદ પાનાચંદ જેમણે મુંબાઇ જેવા કીમતી સ્થળમાં "શેઠ હી० ગુ० જૈન બોર્ડિંગ સ્કુલ તારદેવ" સ્થાપી છે, જેનો વીસ વરસથી આપણી કોમના જુવાન વિદ્યાર્થીઓ લાભ લે છે, તેમજ એજ સખી શેઠે મુંબાઇના જગ જાહેર કીમતી લત્તામા "હીરાબાગ" નામની ધર્મશાળા બંધાવી આપી સઘળી હીંદુ કોમને આભારી કરી છે, તેમજ તેવી સખાવતો બહાર દેશાવર ખાતે પણ ઘણી કરેલી જણાય છે.

અમારા સાંભળવા મુજબ અમારી કોમના શ્રીમાન શેઠ ગુરૂસુખરાય સુખાનંદજી જેઓ રૂના એક બાહોશ વેપારી તરીકે મશહુર છે, તેઓએ પણ ભુલેશ્વર જેવા કીમતી લત્તામા ચાર લાખની કીમતનું મકાન લીધેલુ છે અને આપણી કોમના વપરાસ માટે થોડા વખતમા ખુલ્લું મુકનારે છે. ઉપરના ગૃહસ્થો સિવાય આપણી કોમમા ર. બા. સર શેઠ હુકમચંદજી, શેઠ જુહાર-મલ મુલચંદજી, શેઠ બિનોદીરામ બાલચંદ, શેઠ લાલતરામ કુંદનમલ, શેઠ કાળાભાઇ પ્રેમચંદ, શેઠ ચુનીલાલ હેમચંદ, શેઠ ચુનીલાલ પ્રેમાનંદ વગેરે સખી ગ્રહસ્થો ન્યાતીમા હૈયાત છે છતાં આપણી કોમનું દુઃખ નિવારણ ન થાય તો તેના જેવું શોચનીય બીજું શું ગણાય ?



छिंदवाडा—में आगामी आसोज सुदी १३–१४–१५ को नागपुर प्रां० दि० जैन खंडेलवाल समाका वार्षिक अधिवेशन होगा। स्वागत कमेटी भी बन गई है जिसके सभापति सेठ लालचंदजी पाटणी और मंत्री सेठ उमेद-चंदजी पाटणी नियुक्त हुए हैं।

तीर्थक्षेत्र कमेटीकी मीटिंग—भारतव-र्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटीकी खास मीटिंग गत ता. २३से २६ आगस्त तक बम्बईमें हीराबागमें सेठ बल्देवदासजी सुपुत्र सेठ सेदमल दयाचंद कलकत्ताके सभापतित्वमें उत्साहके साथ हुई थी जिसमें लाला देवीसहायजी, लाला जम्बूप्र-सादजी, सेठ हरनारायणजी, सर सेठ हुकमचंदजी आदि खास पधारे थे। इसमें कुल २१ प्रस्ताव पास हुए हैं जिसका सारांश इस प्रकार है। (१) **सेठ चुनीलाल हेमचन्दजी** जरीवाले बम्बई निवासी **महामंत्री नियुक्त** होना, (२) सेठ ठाकुरसीदास निहालचन्द तीसरे स० महामंत्री नियुक्त होना, (३) सेठ बल्देवदासजी दयाचंदजी कलकत्ता चौथे स० महामंत्री नियुक्त होना, (४) श्री सम्मेद शिखरजी पर्वत रक्षा संबंधी मुकद्दमोंके लिये प्रचुर द्रव्यकी आवश्यकता होनेसे रुपसे कम २०००००) बीस लाखका फंड एकत्र किया जाय (५), शिखरजीकी रक्षाके लिये प्रत्येक प्रान्तमें पांच२ मुख्य मददगार नियत

किये जांय जो कार्य पड़नेपर चिट्ठी पहुंचते ही नियत स्थानपर पहुंच जावे, (६) गुलजार बागके मंदिरकी व्यवस्था ठीक न होनेसे कमेटीके आधीन ली जाय, (७) ईसरी स्टेशनपर प्लेटफोर्म बनवाने तथा मेल ट्रेन ठहरानेके लिये विशेष कोशिश की जावे (८) नियम वली संशोधनार्थ ५ मेम्बरोंकी कमेटी नियुक्त होना जो ३ माहमें रिपोर्ट तैयार करके महामंत्रीको भेज देवे (९) १९४४-४५का हिसाब जांचनेके लिये अमृतलाल धामी और चांदमलजी अजमेरा नियत किये जांय, (१०) गजपंथाजी तीर्थकी कमेटीके मंत्री सेठ भीवराज गौतमचंदजी नियत किये जांय, (११) मुक्तागिरी पर जूते पहिन कर न जानेके लिये सर्कारको हुकम निकालनेकी प्रार्थना की जाय, (१२) लाला प्रभुदयालजी पर करीब ६०००) लेना बकाया है वह पर्वत रक्षा खाते खर्चमें मांड दिया जाय! (१३) बीस लाख रु० का फंड करनेके प्रस्तावकी पूर्तिके लिये प्रत्येक प्रान्तसे एक २ डेपुटेशन पार्टी नियत की जाय आदि। चौथा प्रस्ताव पास होते ही १००००) लाला देवीसहायजी, ५००००) लाला जम्बूप्रसादजी और १००००) रु. कलकत्ता पंचायतकी तरफसे स्वीकारता मिली थी तथा और भी चंदा लिखा जाकर कुल २५००००)का चंदा लिखा गया था।

देहलीमें सं० व्यापारी विद्यालय—श्रीमान् ब्र० शीतलप्रसादजीका चातुर्मास इस बार देहलीमें होनेसे वहां बहुत धर्म जाग्रति हो रही है। कई मंदिरमें शास्त्र सभा होने लगी हैं तथा पाठशालाके लिये चंदा हुआ है और एक बड़ा भारी कार्य यह हो रहा है कि यहां पर एक **दि० जैन संस्कृत व्यापारिक विद्यालय** खोलनेके लिये करीब ५०००) रु.सिक्का चंदी लिखा जा चुका है और इस विद्यालयकी स्थापना भी भादो सुदी १२ शुक्रवारको बड़े भारी समारोहसे होनेवाली थी।

इन्दौर—की सेठ स्व० हु० दि० जैन पारमार्थिक संस्थाओंकी वार्षिक मिटिंग ता० ११-८-२० को हुई थी जिसमें रिपोर्ट हिसाब आदि पास हो कर आगामी वर्षके लिये ३७५८१)का खर्चका बजट पास किया गया तथा संस्थाओंका ट्रस्ट करना निश्चित हुआ।

काशी—में ब्र० ज्ञानानंदजीके सभापतित्वमें पं० गणेशप्रसादजी वर्णीने 'पशुपालन', पर प्रभावशाली व्याख्यान गत ता० २८-८-२० को दिया था और प्रतिज्ञा ली कि जब तक रतौनाका कसाईखाना बंद न होगा मैं रेलवे व अन्य गाड़ीमें नहीं सफर करूंगा और आजन्म स्वदेशी वस्त्र पहनूंगा। ता० २९ को १६ विद्यार्थियोंका यज्ञोपवित संस्कार पं० सत्यंधर व माणचंदजीने कराया था और संध्याको रक्षाबंधन पर विवेचन होनेके बाद ब्र० ज्ञानानंदजीने प्रतिज्ञा ली थी जब तक मैं १०० मनुष्योंको मांस भक्षण तथा १०० मनुष्योंको चमड़ेका जूता पहनना न छुड़वा दूंगा तब तक मीठाई नहीं खाऊंगा और अहिंसा धर्म प्रचारार्थ "अहिंसा" नामक साप्ताहिक पत्र प्रकट करूंगा। इस पत्रका वार्षिक मूल्य ३॥) रखा गया है। ग्राहक होनेवाले ब्र० ज्ञानानंदजी, स्या० महाविद्यालय काशीको लिखें।

लोकमान्य तिलकका जीवन वृत्तान्त

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलकका जन्म, रत्नागिरिमें २३ जुलाई १८५६ ई० में हुआ। आपके पिताका नाम गंगाधर रामचन्द्र तिलक था। आप बड़े विद्वान थे और कुछ दिन रत्नागिरिमें द्वितीय मास्टर होनेके पश्चात् थाना स्कूलके डिप्टी इन्सपेक्टर हुए; पर बाल गंगाधर अधिक दिनतक पितृ सुखका स्वाद भोग न सके, १६ वर्षकी उमरमें ही उनके पिताका स्वर्गवास हो गया। श्रीमान् तिलकने रत्नागिरिमें इन्ट्रेंस पास कर डेकन कालेजसे सम्मानपूर्वक बी० ए० की उपाधि प्राप्त की और तीन वर्षके पश्चात् बम्बईमें वकालतकी परीक्षा पास की; पर उनका उद्देश्य वकालतकर केवल रुपया कमाना नहीं था। विद्यार्थी जीवनमें आपको एक दूसरे उन्नतहृदयसे जिनका नाम आगरकर था, जानपहचान तथा मित्रता हो गई थी। दोनोंने विचार किया, कि देशहितके लिये सरकारी नौकरीके फेरमें न पड़ना ही बहुत अच्छा है। उन्होंने विद्या प्रचारको अपने जीवनका प्रधान कर्तव्य निश्चय किया और शिक्षा प्रदानके लिये कोई कमखर्च रास्ता ठीक करने लगे। सौभाग्यवश इसी समय उन लोगोंकी जानपहचान एक दूसरे देशभक्तसे हुई, जिनका नाम विष्णु कृष्ण चपलूनकर था। ये महाराष्ट्रमें मराठीके बड़े भारी प्रसिद्ध लेखक हुए हैं। इन लोगोंके शिक्षा प्रचारमें दत्तचित्त होनेका परिणाम यह हुआ, कि २ जनवरी १८८० ईस्वीमें एक अंग्रेजी स्कूल खोला गया, जिसमें म० तिलक, नामजोशी और चपलूनकर महाशयने शिक्षकका कार्य ग्रहण किया। एक ही वर्षमें स्कूलके काममें बी० एम० आपटे और श्रीमान् आगरकरने भी आकर कार्यभार लिया; पर इन लोगोंकी देशसेवाका जोश केवल इतने हीमें खतम न हो गया। इन लोगोंने मिलकर दो पत्र निकालना भी शुरू किया। जिनके प्रभाव आज महाराष्ट्रमें अद्वितीय हो रहे हैं, इनके नाम "मराठा" और "केशरी" हैं। केशरी देशी (मराठी) भाषामें और महराठा अंग्रेजी भाषामें निकलता है। पहले केशरीकी ग्राहकसंख्या केवल १००० थी; पीछे बढ़कर ५००० हुई और आजकल तो यह इतना जनप्रिय हो रहा है, कि २२००० से अधिक लोग इसके स्थायी ग्राहक हो गये हैं।

"केशरी" और "महराठा" की युक्तियां अकाट्य होती हैं और उनके विचार अत्यन्त निडर और गम्भीर होते हैं। श्रीमान् तिलक किसीसे डरनेवाले तो थे नहीं। उनसे नाबालिग कोल्हापुरके महाराज सिवाजीरावके प्रति होते हुए अत्याचार न देखे गये, और अपने पत्रोंमें उनकी उन्होंने बड़ी ही कड़ी आलोचना निकाली। इस पर महात्मा तिलक और आगरकर महाशयपर मुकदमा चलाया गया, और वे लोग ४ महीनेके लिये बिना परिश्रमके साथ कारागार भेजे गये। लोकमान्यकी सत्य-श्रद्धा, निर्भयता तथा देशसेवाकी यह पहली जांच हुई थी। पर इस जांचमें वे बहुत ही उच्च श्रेणीमें उत्तीर्ण हुए और बिना हताश हुए श्रीमान्

जोशीके साथ विद्या प्रकारके कार्य्यमें फिर लिप्त हुए।

१८८४ ई०में उन्होंने Deccan Educational Society याने डेकेनमें विद्याप्रचारिणी समिति कायम की। कुछ दिन बाद स्वनाम धन्य प्रो० बी० वी० केलकर, प्रो० घटोप इत्यादि महानुभावोंने भी इनका इस कार्य्यमें हाथ बढ़ाया और १८८९में आजकलके प्रसिद्ध फरगुसन कौलिजका स्थापन हुआ। पर महाराज तिलककी अपने सहयोगियोंके साथ उद्देश्यमें भिन्नता पड़नेकी वजहसे १८६० में फरगुसन कौलेजसे अपना सम्बन्ध तोड़ देना पड़ा। १८८८में आगरकर महाशयने धार्मिक और सामाजिक विषयमें मतभेद होनेके कारण "केशरी" पत्रसे सम्बन्ध तोड़ डाला। अब "केशरी" और 'माहठेका' संचालन महात्मा तिलक, केलकर और गोखले महाशयके साथ करने लगे, पर कुछ दिनोंबाद इन लोगोंने भी किसी कारणवश 'केशरीसे' सम्बन्ध तोड़ लिया और इसके बाद उन पत्रोंका संचालन भार स्वयं महाराजके हाथोंमें आया। महाराजकी लेखनी बहुत ही जोशीली और तर्क बड़े अकाट्य होते थे। इसी समय Age of Consent बिलको सरकारने पास करना स्थिर किया। महात्मा तिलकने उसका घोर विरोध करना आरम्भ किया। उनका कहना था, कि हिन्दूसमाजकी रीति और नियमोंमें हस्तक्षेप करनेका अधिकार सिवाय हिन्दुओंके किसी दूसरेको नहीं है, और खास कर एक विदेशी और विधर्मी जाति द्वारा, इसमें हस्तक्षेप होना तो नितान्त ही अन्याय है। कुछ लोगोंको जो समाजमें सुधारके लिये बहुत ही अधिक उत्कंठित थे, उन्हें महाराज तिलकका यह विचार अच्छा न लगा; और पुनामें म० तिलकके विरूद्ध एक सनातनी, दूसरा नवीन दल खड़ा हो गया। महात्मा तिलकने एक स्कूल खोल रक्खा था, जिसमें लोगोंको कानूनकी शिक्षा दी जाती थी; पर वे इतने परिश्रमी थे, कि इतने कार्य्य होते हुए भी उन्होंने वेदके आदि-कालपर एक अपूर्व्व महत्वशाली पुस्तक लिख-ड.ली। उसकी एक प्रति लन्दनमें होनेवाली अंतर्जातीय कांग्रेसमें भेजी गई। मेक्समूलर, और वेबर जैसे विद्वानोंको भी इस पुस्तकको पढ़कर मुग्ध होना पड़ा और सबने एक मुखसे उसकी प्रशंसा की।

इसके बाद जब लो० तिलक १८९० ई०से राजनीति विषयोंमें प्रधानरूपसे भागलेने लगे, तब उन्हें कांग्रेसका भी कार्य्य करना पड़ा। उन्हींके यत्नसे बम्बई प्रादेशिक सभा पहले पहल बैठी थी। बम्बईमें जब हिन्दू मुसलमानोंमें बखेड़ा हुआ था, उस समय लोकमान्य अपना विचार स्पष्ट यह लिखा था, कि यह झगड़ा केवल सरकारकी कूटनीतिका फल है और सरकारकी इस नीतिपर कड़ी आलोचना की थी। वह आलोचना इतनी कड़ी थी कि सरकारकी इनपर तीव्र दृष्टि पड़ी; पर तौभी दो बार बम्बई लेजिस्लेटिव कौन्सिलके मेम्बर चुने गये और ये बम्बई युनिवर्सिटीके सदस्य तथः म्युनिसिपल मेम्बर भी रहे। १८९१में ये पूना कांग्रेसके सेक्रेटरी चुने गये। कुछ लोगोंने

समस्त भारतवर्षीय सामाजिक सभाको कांग्रेस मण्डपमें ही करना निश्चय किया। म० तिलकको ये बातें पसन्द न थी, अतएव आपने कार्यकर्त्ताके पदसे इस्तीफा दे दिया, पर इस्तीफा देनेपर भी कांग्रेसके कार्यमें विशेषरूपसे सहायता दी।

१८९६ ई०में अकाल पडा। उस समय महात्मा लो० तिलकके कार्यने लोगोंको मुग्ध-कर डाला। गरीब और दुखियोंके दुःखको हटानेके लिये इस महात्माने कोई यत्न उठा न रखा। जगह २ पर सुलभ दुरयपर अन्न बेचनेवाली दूकानें खोलीं, उन्होंने लोगोंके दुःख देखने और उन्हें दूर करनेका उपाय सोचनेके लिये सोलापुर और नागपुर इत्यादि स्थानोंमें भ्रमण किया और लोगोंके दुःखको हटानेका उपाय निश्चय किया। सरकारने उनके उपायोंको कार्यमें परिणत करनेकी अनिच्छा प्रगट की। जब पूनेमें पहले पहल प्लेगका आगमन हुआ तो सरकारकी कार्रवाइयोंसे लोगोंमें आतंक फैल गया। इस समय महात्मा तिलकने लोगोंको असीम सहायता पहुंचाई। सरकारके कार्यकी निडर होकर पूरी आलोचना की। जब कि सब लोग प्लेगसे भाग जा रहे थे, तब पूनेमें ही आप डटे रहे और अस्पताल खोल कर दवाएं बटवाईं।

छत्रपति शिवाजी महाराष्ट्रके बडे प्रतापी वीर होगये हैं। हिन्दुस्थानके इतिहासमें उनका नाम सर्वदा स्वर्णाक्षरमें लिखा जायगा, पर लोगोंमें इस प्रकारकी अविद्या होगई है, कि उन्हीं हिन्दूवीरोंका मन्दिर गिर रहा था और कोई उसे मरम्मत करनेवाला भी नहीं। हमारे महाराष्ट्र वीर लो० तिलकसे मन्दिरकी बुरी अवस्था न देखी गई और मन्दिर मरम्मत करने और शिवाजीके नामको जनताके हृदयपर उचित स्थान दिलानेके लिये कटिबद्ध हो गये। उस समय महाराष्ट्रदेशमें प्लेगकी विशेष धूम थी; पर लो० तिलकके काममें प्लेग बाधा दे न सकता था, और शिवाजीकी जयन्ती १८९७ ई० में बहुत ही धूमधामके साथ मनाई गई, जोशीले व्याख्यान हुए। सारे देशमें अत्यन्त ही जोश फैल रहा था। इस जयन्तीकी कार्यवाही केशरीमें निकली थी।

ठीक इसी समय मि० रैन्ड और लेफटिनैन्ट ऐरस्टकी हत्या हुई। ऐंग्लो इन्डियन पत्र तो पहलेसे ही लो० तिलकपर घात लगाये बैठे थे। और उन लोगोंको यह अच्छा मौका भी मिला। सबके सब कहने लगे, कि रैन्ड साहबकी हत्या "केशरी"में निकले लेखोंके कारण हुई है। सरकारने भी इन एंग्लो इन्डियनोंकी बात मान ली और तिलक महाराजपर राजविद्रोहीका मुकद्दमा चलाया गया। वे ता० २७ जूनको पकडे गये। प्रेसिडेन्सी मजिस्ट्रेटने हजार कोशिस होनेपर भी इनको जमानतपर छोडना मंजूर न किया। हाईकोर्टसे भी जमानतकी दर्खास्त नामन्जूर हुई। २ अगस्तको हाईकोर्टमें इनका मुकदमा पेश हुआ। फिर भी जस्टिस तैयबजीके सामने जमानतके लिये दरख्वास्त दी गई। महाराजकी पैरवी उस समय मि० ग्यू और दावर साहब जो पीछे हाईकोर्टके जज हुए—कर रहे थे। तैयबजीने जमानत मन्जूर

कर ली। इस मुकद्दमेमें जो जूरी थे, उनमें ६ अंग्रेज और ३ हिन्दुस्तानी थे। ३ हिन्दुस्थानियोंने इनको निर्दोष बताया; पर ६ अंगरेजोंने इनको दोषी बताया। जज साहबने अंगरेज जूरियोंकी ही बात स्वीकार की और लोकमान्यको १८ महीनेके लिये जेल जानेका हुक्म दे दिया। प्रिवी काउन्सिलमें आजकलके प्रसिद्ध मि० एस्कीथ, महाराज तिलकके बारिस्टर थे। बम्बईके इस मुकद्दमेमें महाराज तिलकने कानूनमें अपनी अपूर्व योग्यता दिखाई। कहा जाता है, कि जब मि० प्यू इत्यादि प्रिवी काउन्सिलमें अपील करनेके लिये कागज लिखनेके लिये बैठे और महात्मा तिलकके जेलसे भेजे हुए कागजात खोले, तो उसमें लो० की पेन्सीलसे लिखी हुई अपीलका एक मसौदा मिला। मसौदाको पढ़कर सब कोई दंग रह गये। यद्यपि म० तिलकने बिना किसी कानूनकी पुस्तकका सहारा लियेहुए मसौदा बनाया था-तथापि बारिस्टर लोगोंकी रायमें इससे अच्छा मसौदा बनाना कठिन था। प्रिवी काउन्सिलसे जब मुकद्दमा खराब हो गया तो मक्समूलर साहब इत्यादिको न रहा गया। ये लोग महात्मा तिलकके उपरोक्त 'ओरियन' पुस्तकके कारण, उनपर बहुत श्रद्धा रखते थे; अतएव उनलोगोंने महारानी विक्टोरियासे उनपर दया करनेके लिये प्रार्थना की। कुछ दिनों पीछे बाद ६ सेप्टेम्बर १८९८ ई० में महात्मा तिलक छोड़ दिये गये। १९०३ ई० में वेदकी प्राचीनतापर इनकी एक पुस्तक निकली, जिसमें इन्होंने भूगर्भ विद्या तथा अन्य युक्तियोंसे सिद्ध किया था, कि वेदवादियोंका वासस्थान पहले आर्कटिया प्रदेशमें याने एसियाके उत्तरी भागमें था। इस पुस्तककी भी अत्यंत प्रशंसा हुई।

इस पुस्तकके निकलनेके थोड़े दिन बाद ही तिलकको एक बड़े ही अपमान जनक मुकद्दमेके चक्करमें पड़ना पड़ा। यद्यपि इस मुकद्दमेके अन्तमें महाराजकी जीत हुई; और उनपर लगाई गई लांछनाएं सबकी सब झूठी साबित हुईं; तथापि इस मुकद्दमेने तिलक महाराजको बहुत बड़े तरद्दुदमें डाल दिया था। यह मुकद्दमा इस समय "ताई महाराज केस" के नामसे प्रख्यात है। श्री बाबा महाराज पूनाके एक सरदार थे और एक बड़े पुराने घरके थे। इनसे महाराज तिलककी गाढ़ी मित्रता थी। इनके राज्यमें बहुत करजा हो गया था। जब ये मरने लगे तो एक विल लिख गये। इस विलके अनुसार उन्होंने महात्मा तिलक पर राज्यका कार्य्य-भार सौंपा और एक लड़का चुन कर अपनी रानीको गोद लेनेकी आज्ञा दी। महारा० तिलक राज्यका सुप्रबन्ध कर, राज्यको बचानेके जीजानसे कोशिश करने लगे, और उन्होंने रानीको खोरिस बहुत अधिक नहीं देनेका विचार किया। हर जगह लम्पट लोग होते हैं, अतः यहां भी बहुतोंने रानीका कान भरनेका यत्न किया। रानीको समझाया गया, कि यदि तुम अपने मनसे एक लड़का चुन कर अपने मन मुताबिक शर्तों पर गोद लो तो बहुत अच्छा होगा। अतमें १८ जून १९०१ में औरंगाबादमें एक लड़का चुन कर गोद लिया गया।

जब सब औरंगाबादसे लौटे तो उस रानीने दूसरोंके फेरमें पड़ कर विलको तोड़नेके लिये पूनाकी जजीमें नालिस दायर की । जब साहबने विलको बे कानूनी और नाजायज समझा और विलको रद्द कर दिया, पर उन्हें इतनेहीसे तसल्ली न हुई और जज महोदयने म० तिलक पर जालसाजीका मुकद्दमा चलानेका हुक्म दिया। इसका प्रथम लक्ष्य लोगोंकी श्रद्धा महाराज तिलककी ओरसे हटानेका था। महाराज पर सात प्रकारके दोष आरोपित हुए । हाईकोर्टसे विलका रद्द होना तो नाजायज समझा गया; पर फौजदारी न रुकी । फौजदारीसे महात्माजीको १८ महीनाकी सजा फिर हुई । अपील पर सेशन जज लूकस साहिबने सजा घटा दी। उनका कहना था, कि महाराज तिलकका व्यवहार और आचरण नितांत शुद्ध है और उन्होंने कुछ भी छल न किया था । हाईकोर्टने इस सजाको भी हटा दिया और खुले शब्दोंमें तिलकको पूर्ण रूपसे निर्दोष और शुद्ध आचरणका स्वीकार किया ।

इस दुःखके फंदेसे निकल कर लोकमान्य तिलकने अपनेको एकदम देशसेवामें लगा दिया और राजनीतिक सुधारकी ओर दत्तचित्त हुए ।

सन १९०५ में बंगविच्छेद हुआ । बंगालियोंने लाख चिल्लाहट मचाई; पर गवर्नमेंट इससे मस न हुई । देशमें घोर अशांति फैल गई । इस मौके पर महात्मा तिलकने लोगोंको अपनी गलतियां सुधारनेके लिये कहा । उनको विश्वास हो गया था, कि सिलमंगीसे कार्य न होगा । केवल सरकारकी कृपाके सहारे हमलोगोंकी माताकी तृप्ति न होगी, अतः यह नितांत आवश्यक है, कि लोग अपना कार्य्य स्वयं देखें और दशा सुधारें; तब कहीं लोगोंकी भलाई होगी । इन सब विचारोंसे बनारसकी कांग्रेसमें जिसके सभापति गोखले महाशय थे, यह पास हुआ, कि विदेशी माल न व्यवहार किया जाय; क्योंकि इसी कार्यसे हमलोगोंकी दशा सुधर सकती है । १९०६ में कलकत्ता नगरमें कांग्रेस बैठनेकी बात थी । श्री विपिनचन्द्र पालने सभापतिके लिये लोकमान्यका नाम लिया और उसके लिये यत्न करने लगे। लोकमान्यका विदेशी बायकाटके बड़े पक्षपाती थे । अतः विपिन बाबूको सभापतिके लिये लोकमान्य नाम लेते देख कर माडरेटोंके देवता कूच कर गये । वे लोग लोकमान्यके कठिन तेजको किसी प्रकार कांग्रेससे हटा कर अलग कर देनेका विचार करने लगे । अंतमें उन्होंने चालाकीसे वृद्ध दादाभाई नौरोजीको प्रेसिडेन्ट बनाना चाहा । जब यह बात लोगोंको मालूम हो गई, तब लोकमान्यके लिये लोगोंने यत्न करना छोड़ा; पर इतना होने पर भी कलकत्ता कांग्रेसमें बायकाटके ऊपर बहुत ही जोशीली वक्तृताएं हुईं और अंतमें फिर बायकाट करनेका कांग्रेसमें प्रस्ताव पास हो गया । दूसरे साल नागपुरमें कांग्रेस होनेवाली थी; पर जब नर्मदलवालोंने देखा, कि यहां पर महाराज तिलकका प्रभाव बहुत अधिक है, तब वे लोग चाल चल कर कांग्रेसको सूरत ले गये, जहां पर नरमदलके प्रधान सर फिरोजशाह मेहताका प्रभाव

अधिक था। वहां पर वे लोग सर रासबिहारी घोषको सभापति बनाना चाहते थे, पर यह तिलक महाराजके दलको पसंद नहीं था। अन्तमें नतीजा यह हुआ, कि सभामण्डपमें ही कुरसियां तक चल गईं और बहुत हल्लाके बाद कांग्रेस नहीं हुई। इसके बाद १९१६ तक कांग्रेससे तिलक महाराजका दल जिसका दूसरा नाम राष्ट्रीय दल भी है, अलग रहा।

इन सब बातोंके कारण महा० तिलक नरम दलवालोंकी आंखोंके कांटे हो रहे थे। ये लोग किसी प्रकार इन्हें राजनीतिक क्षेत्रसे हटाने पर कटिबद्ध हो गये। जब नरम दलवालोंकी यह हालत थी, तो सरकारके विचारके विषयमें तो कुछ पूछना ही व्यर्थ है। उन लोगोंका मनोरथ भी तुरत सफल हुआ।

१९०८ ई०के अप्रेलमें मुजफ्फरपुरमें खुदीराम बोसने दो अंगरेजोंपर बंम चलाया। उनपर मुकद्दमा चला और उन्हें फांसी दी गई। उस समय सरकारने अत्यन्त भीषण रूप धारण कर लिया था। कई पत्र बंद कर दिये गये, बहुतेरे पत्रोंके सम्पादक जेलोंमें ठूंस दिये गये। बम्बईमें 'काल' इत्यादि पत्रके सम्पादक पर मुकद्दमा चलाया गया। ऐसी हालतमें संपादक श्रेष्ठ, जनताके हृदयसम्राट म० तिलक कैसे बच सकते थे? ता० २३ जूनको यह निश्चय हुआ, कि उनपर भी मुकदमा चलाया जाय। ता० २४ जूनको ९ बजे सन्ध्याके समय बम्बईके सरदार गृहमें (वही गृहमें जहांपर वे सर्वदाके लिये अखन्ड महा निद्रामें ता० १को सो गये) पकड़े गये। उसी दिन पूनामें उनके घर और 'केसरी' औफिसकी खानातलासी ली गई। ता० २८ को महात्मा तिलक प्रेसिडेन्सी मैजिष्ट्रेटके पास लाये गये। प्रेसिडेन्सी मजिष्ट्रेटने जमानत पर छोड़ना कबूल नहीं किया और महाराजको जेलमें भेज दिया। पहले उनपर केसरीमें लिखे एक लेखके कारण मुकद्दमा चलानेका विचार किया गया था; पर जब यह देखा गया, कि इससे मुकद्दमा कमजोर पड़ता है तो 'केशरी' में पहलेके प्रकाशित लेख ढूंढ़ निकाले गये और मुकद्दमा चलानेके कारण वे लेख शामिल किये गये। १९ जूनको हाईकोर्टमें उनपर मुकद्दमा चलाया गया। हाईकोर्टने भी उनको जमानत पर छोड़ना नामंजूर किया और इसकी पुष्टि यह कारण दिखा कर की गई कि मि० तिलकको पहले मुकद्दमें जस्टिस दावरका जमानत पर छोड़नेका विचार जो था वह ठीक नहीं था। सरकारी वकीलने अब फिर पुरानी चाल चली और अपनी सम्मति दी कि मुकद्दमा जूरी द्वारा निर्णय किया जाय। तिलक महाराजके वकीलोंने लाख आपत्ति की; पर उनकी एक भी न सुनी गई। और मुकद्दमाकी जांचके लिये कुछ अंगरेज जूरी नियत किये गये। अंगरेज जूरी "केशरी" के उन लेखोंको जिनके कारण मुकद्दमा चला था, नहीं समझ सकते थे; क्योंकि वे लोग मराठी नहीं जानते थे; पर जहां तिलक महाराजको जेल देना ही प्रधान लक्ष्य था; वहां ऐसी ऐसी बात क्यों कर सुनी जाती? खैर मुकद्दमा चला और १३ जुलाईको मुकद्दमा आरम्भ हुआ।

अवश्य महाराज तिलकने किसी वकीलका

रखना व्यर्थ समझा और मुकद्दमेकी पैरवी आप ही करने लगे। पहले ही कह आये हैं, कि जो लेख मुकद्दमेकी जड थे, वे मराठीमें थे और मुकद्दमेके लिये उसका उलथा अंगरेजीमें हुआ था। मुनासिब था, कि जिस सरकारी औफिसर पर लेख उलथा करनेका भार था, वही गवाही देता जिससे लेखके उलथा करनेमें जो गलती हुई हो वह साबित की जाय, पर सरकारने ऐसा करना पसंद न किया और एक दूसरे आदमीको ही जिसका नाम "जोशी" था, जिरहके समय उपस्थित किया। जिरहमें यह बात साबित की गई, कि उलथा भ्रमपूर्ण और गलत है, इससे यथार्थ मतलब न निकल उल्टा ही मतलब निकलता था; पर इसकी परवाह किसीको न थी। पूनामें खोनातलाशीके बाद एक पोस्टकार्ड मिला था, जिसमें दो बंम बनानेके नियम बतानेवाली पुस्तकोंके नाम थे। वह गवाहीमें शामिल किया गया और केवल यही पत्र इसके लिये काफी सबूत समझा गया कि म० तिलककी इच्छा सरकारसे विद्रोह करने या करानेकी थी। उनसे उत्तर देनेका हक छीन लिया गया। महात्मा तिलक लाख दिखाते रह गये, कि जिन जिन बातोंका समावेश उनके अखबारमें था, वही बातें और भी दूसरे देशी और अंगरेजीके अखबारोंमें भी थीं; पर कोई सुननेवाला न था। दो दिन मुकद्दमा होता रहा। तिसरे दिन महाराज तिलक अपने ऊपर किये गये दोषारोपणका खण्डन स्वयम् करने लगे। ४ दिन तक आपने बहस कर, कई तर्क दे, यह साबित किया, कि हम निर्दोष हैं। कुल २१ घंटा तक उन्होंने बहस की; उन्होंने जूरीसे यह याद रखनेको कहा, कि आप लोगोंके राजनीतिक विचार मेरे एकदम प्रतिकूल हैं, वह जूरियोंसे दया नहीं चाहते थे; पर इन्साफ अवश्य चाहते थे। महात्माने जूरियोंसे कहा, कि इंग्लैन्डमें जूरी लोग बहुत ही उदारतासे काम लेते हैं। आप लोग भी उस उदारताको न भूलियेगा। उन्हींके ऐसा लेख और विचारकी स्वतन्त्रताको अपनाये रखियेगा; पर उनपर तिलकके कहनेका कुछ असर न पड़ा और अन्तमें ९ जूरियोंने जिनमें ७ अंगरेज और दो पारसी थे, तिलक महाराजको दोषी ठहराया। तिलक महाराजको ६ वर्ष कैद और १०००) हजार जुर्मानेकी सजा हुई। इसपर तिलक महाराज हताश न हुए; बल्कि कहा:—

" जूरी मुझे दोषी भले कहें; पर मैं दावेके साथ कहता हूं, कि मैं निर्दोष हूं। संसारमें मनुष्यके भाग्य विधाताकी कोई दूसरी ही शक्ति है। शायद ईश्वरकी इच्छा है, कि हमारा जो उद्देश्य है, उसकी सिद्धि स्वयम् मेरे द्वारा होनेके बदले हमारे कष्ट सहनसे ही अधिक होगी। "

यह वाक्य वीरोंके है, और तिलक महाराजकी यह वीरतापूर्ण अभयवाणी चिरकाल तक भारत सन्तानकी कानोंमें गूंजती रहेगी। तिलक महाराज यथासाध्य शीघ्र महाराष्ट्रसे बाहर हटाये गये और उनको सुदूर बर्माके मंडाले जेलमें स्थान मिला। इसी बीचमें सरकारने उनपर सपरिश्रम कारागारके बदले अपरिश्रम कारागारमें रहनेकी आज्ञा निकाली। एक हजा-

रका जुर्माना भी माफ हो गया। प्रिवी कौन्सिलमें अपील हुई; पर अपीलके विषयमें सलाह करनेमें केवल पांच मिनट लगा और दस लाईनमें फैसला लिख कर सुना दिया गया। अपील नामञ्जूरी हुई।

तिलक महाराज जेलमें थे; पर उनकी आत्मा भारतमें सदा घूमकर भारतको जागृत कर रही थी। लोग इस आशपर कि तिलक महाराज केवल ६ ही वर्षके लिये गये हैं, उनके उद्देश सिद्धिमें दत्तचित्त थे। ६ वर्षके बाद वे कारागारसे बाहर आये और साथ अपनी विद्वत्ताकी अपूर्व निसानी भी लेते आये। उनकी जेलमें लिखी हुई पुस्तक "गीता रहस्य" उनके पाण्डित्यका एक श्रेष्ठ नमूना है। भारतसंतान इसको पढ़कर जन्मजन्मान्तर तक अपना लोकपरलोक बनावेगी। जेलसे निकलने पर उनका स्वास्थ्य बुरा तो अवश्य ही हो गया था; पर उनके जोश और आशामें तनिक भी कमी नहीं पहुंची थी।

उनके जेलसे आनेके पहले ही उनकी सहधर्म्मिणी इस लोकसे, महाराजके लिये उस लोकमें स्थान बनानेके लिये, प्रस्थान करगई थीं। इसी समय मि० एनीबेसेन्ट कांग्रेसके फूटको हटानेके लिये तन मनसे यत्न कर रही थी; आप स्वराज्यके लिये तन मन दोनों न्योछावर कर चुकी थीं। महात्मा तिलक १९१४में यहां आये; एनीबेसेन्टकी सहायता, समयका जोश, महाराजके प्रभावका फल यह हुआ, कि १९१६में लखनऊमें होनेवाली कांग्रेसमें महाराजने अपने दल सहित कांग्रेस मन्डपको सुशोभित किया। उस समयकी शोभा अपूर्व थी। लोगोंमें उत्साहकी नदियां उमड़ रही थीं, लोगोंने अपने भूले हुए, छीने गये नेताको फिर सामने देख अपनेको धन्य माना; पर महाराजको लोगोंकी तारीफ या निंदाकी कोई चिंता न थी। वे फिर अपने राजनीतिक सुधारके कार्यमें लगे।

जगह जगह घूम कर वे स्वराज्य संघके लिये चंदा इकट्ठा करने लगे और लोगोंमें स्वराज्यकी चर्चा पूर्ण रूपसे फैला दी। पाठक जानते होंगे, कि इसी समय एनी बेसन्ट भी मद्रासमें इसी धुनमें थी। सरकारको यह बात फिर असह्य हुई। उसने इधर तो एनीबीसेंटको नजरबंद किया। उधर तिलक महाराज पर ४००००) रुपयेकी जमानत, इस वास्ते देनेको कहा, कि फिर वे जोशीले व्याख्यान न देने पावें। सहर्ष कहना पड़ता है, कि इस जमानतके मुकदमेमें बम्बई हाईकोर्टने अधिक उदारता दिखाई और महाराजको जमानत देनेसे बरी किया। महाराज तिलक पूर्ववत् कार्य करते रहे। १९१७की कांग्रेसमें, आपका स्वराज्य पर जोरदार भाषण हुआ। आजकल लोकमान्य तिलक जनताके हृदयके भूषण हो रहे थे, महाराज ही कांग्रेस हो रहे थे, उनका विचार ही कांग्रेसका विचार था। जनता उन पर किस प्रकार श्रद्धा रखती है, उसका अंदाज केवल इसी बातसे लग सकता है, जब होमरूलके डेपुटेशनके खर्चोंके लिये उन्हें विलायत जाना पड़ा, तो एक महीनेसे कम समयमें ही दो लाख रुपये मिल गये। मार्च १९१८ ई०

में महात्मा तिलक होमरूल डेपुटेशनके सभापति हो मद्रास होते इंग्लैंडके लिये रवाना हुए। यहां यह कह देना अवश्य है, कि तिलक महाराज पुरानी रीतिके सेवक थे और उन्हें समुद्र यात्रा मान्य नहीं तो भी वे इङ्गलैण्ट गये। जानेका कारण यह बताया, कि यदि एक हमारे जातिच्युत होनेसे हिंदुस्तानका भाग्य फिरे तो हमें यह मान्य है। यह डेपुटेशन भाग्यवश इङ्गलैंड न जा सका। जब ये लोग कौलम्बोमें ही थे, तभी विलायत जानेकी मनाही वहांकी सरकारसे आई और वे लोग आगे न जा सके।

१९१८ के अप्रेलमें जर्मनी बड़े वेगसे आगे बढ़ रहा था और सर्वत्र घोर आतंक छा गया था। इङ्गलैंडके मंत्रीने वायसरायके पास पत्र भेजा और उन्हें युद्धमें अधिक मदद देनेको लिखा। देहलीमें देशी राजाओं, राजनैतिज्ञोंकी एक सभा हुई; पर उसमें ऐनीबीसेंट और तिलक न बुलाये गये। देशभरने इसपर आपत्ति की, जब बम्बईके गवरनर वेलिङ्गटनने बम्बईमें सभा की तो तिलक महाराजको भी बुलाया। प्रथम भाषणमें गवर्नर साहबने होमरूलपर कटाक्ष किया, और जब तिलक महाराज स्वयं बोलने लगे तो छेड़छाड़ शुरू हुई। इस पर तिलक महाराज अपने अनुगामियों सहित सभा छोड़ बाहर चले गये। महात्मा गान्धीजीके सभापतित्वमें बम्बईमें गवर्नरके इस कुचारका घोर विरोध किया गया।

इसके बाद ही जब सुधारयोजनापर मोन्टेगू चेम्सफोर्ड रिपोर्ट निकली, तब तिलक महाराजने इसको एकदम नापसंद किया। इसपर पूनाके मजिस्ट्रेटने इनको वक्तृता देनेसे मना किया; पर यह मनाही बम्बईके स्पेशल कांग्रेसके समय हटा ली गई थी। १९१८के दिसम्बरमें लोकमान्य इंगलैन्ड गये और वहांपर सर वेलेन्टाईनपर, उनकी लिखी हुई 'इन्डियन अनरेस्ट" नामकी पुस्तकमें अपनेपर किये हुए आक्षेपोंके कारण मुकद्दमा दायर किया। मुकदमेमें जूरी लोंकी राय म० तिलकसे बरखिलाफ हुई और मुकदमा खारिज किया गया। जिस समय महाराज इङ्गलेन्डमें ही थे, उस समय हिन्दुस्थानमें देहलीकी १९१८की कांग्रेसके सभापति एक मतसे आपही चुने गये; पर आपने इङ्गलैन्डमें सुधार सम्बन्धी महत् कार्य छोड़ सभापतिका आसन ग्रहण करनेके लिये हिन्दुस्तान आना न चाहा। गत लाहौर कांग्रेसमें महाराजका जो स्वागत और मानगत हुआ उसे देखकर कहना पड़ता है कि भारतवर्षके एक ही प्रधान नेता आप माने जाते थे।

इङ्गलेन्डमें रहकर आपने हिन्दुस्थानके प्रश्नोंकी ओर वहांकी जनताका ध्यान आकृष्ट किया और वहांके मजदूरदलको, जो आजकल बहुत प्रभावशाली हो रहा है अपनी ओर सहानुभूति खींची। यह केवल उन्हींके यत्नका फल है कि आज मजदूर दल हिन्दुस्तानके हित चिन्तनमें इस प्रकार लग रहा है। इङ्गलेण्डमें महाराजने लाखों पेंफलेट बटवाये। वहांकी कामिन कमीटिमें जीवप्रदान कर नई रीतिसे उसका सुधार किया। वहांपर अपना गम्भीर विचार ज्वायन्ट कमीटीके सामने पेश

किया। उन्होंने प्रेसिडेन्ट विलसन और पीस कौन्फरेन्सके पास हिन्दुस्तानकी सच्ची हालत लिखकर उनका ध्यान हिन्दुस्थानकी गिरी दशाकी ओर आकर्षित किया। लाला लाजपत-राय जो स्वराज्यका बल अमेरिकामें बढ़ा रहे थे, महाराजसे बहुत सहायता पा चुके हैं।

महाराजके इस प्रकारका कार्य्य और जनतामें इस प्रकार आदर देख बहुतसे लोग उनसे कुढ़ गये थे। मा० सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, मि० ऐनी बेसेन्ट, श्रीनिवास शास्त्रीने कांग्रेसपर श्रीमान् तिलकका इतना प्रभाव देख और यह देखकर कि वहांपर केवल तिलक महाराजके ही पृष्टपोषण करने वाले हैं और इन लोगोंके विचार लोग हृदयङ्गम नहीं करते, कांग्रेसको इधर २ वर्षसे छोड़ कर एक नया दल कायम किया है; पर आज कांग्रेसमें महाराजके कारण नवीन जोश आ गया है और कांग्रेस भारतीय जनताका एक सजीव दल हो गई है। सरकार भी कांग्रेसके विचारोंको अब अधिक महत्व देने लगी है। यह केवल महात्मा तिलकके प्रभावका फल है। उनके विचारमें भीख मांगनेसे कुछ नहीं मिलता, जो लेनेका बल रखता है, वही पा सकता है। जो बदला ले सकता है, इसीके साथ इन्साफ किया जाता है। महात्मा तिलकने भारतीय जनतामें जिस बलका संचार किया है, उसके सहारे आज हमलोग कुछ कुदने फांदने भी लगे हैं।

सोलापुरमें जब बम्बईकी प्रादेशिकसभा हुई थी, तब उस समय कुछ नरमदल वालोंने यह कह कर कि महात्मा समाजसुधारके पक्षपाती नहीं, उनका प्रभाव घटानेका यत्न किया। बहुत रुपया खर्च कर बहुतसे वोटर सभामें लाये गये थे, मि० ऐनी बेसेन्ट भी वहांपर अपनी ओजस्विनी भाषासे लोकमान्यके विचारका खंडन करनेके लिये पधारी थीं; पर महाराजके ऊपर लोगोंकी श्रद्धा इतनी थी और उनके विचार इतने गम्भीर होते थे, कि जिस समय वे व्याख्यान देकर बैठे, सभाभवन तालियोंकी गड़गड़ाहटसे गूंज उठा, और लोगोंकी कौन पूछे, जो लोग केवल लोकमान्यके विरुद्ध वोट देनेको कमर कस कर आये हुए थे, वे भी महात्माके विचारोंसे सहमत हुए।

लोकमान्य तिलककी अवस्था गत २३ जुलाईको ६१वर्षकी थी। ६५ वीं जयन्ती मनानेके बाद वे जैसेही बम्बई पहुंचे उन्हे कालरूप रोगने आ घेरा और ता. १ ली अगस्तको उन्होंने भारत माताको छोड़ परलोकमें हिन्दुस्तानकी फरियाद सुनानेके लिये महायात्रा की।

"पाटलिपुत्र"

जैन धर्म क्या है?

ले० कामताप्रसाद जैन, अलीगंज।

जैन धर्म एक स्वतंत्र वैज्ञानिक धर्म है। वह आज्ञाप्रधान धर्म नहीं है। और न जैन धर्म अपनेको ईश्वर प्रणीत धर्म प्रदर्शित करता है। सुतरां उसके तत्वादि वैज्ञानिक ढंग पर होते हुए उन महात्माओं द्वारा प्रतिपादित किए गए थे जिन्होने केवलज्ञान अथवा सर्वज्ञता इन तत्वादिके ही मथन करनेसे प्राप्त की थी। ऐसे वैज्ञानिक ढंग पर न आज्ञाप्रधान ही की और न पुराण आदिकी ही पहुंच है। और यह कहना तो निरर्थक ही है कि विज्ञान अथवा वैज्ञानिक ढंगसे ही शीघ्र और निर्भ्रांति फल प्राप्त होते हैं।

जैन धर्मके समझनेके लिए यह आवश्यक है कि पहिले हम 'धर्म'का अर्थ समझ लें। हम निशदिन धर्म २ कहा करते हैं परन्तु उसके यथार्थ भावको समझनेमें असमर्थ हैं। भला जब इतने वर्तमान प्रचलित मत ही विविध विविध प्रकारका थोथा धर्म निरूपण करें तो उपर्युक्त असमर्थतामें संशय ही क्या है?

साधारणतया संसारमें चक्कर काटते हुए हम सदृश जीवोंको सांसारिक दुःख और पीडाओंसे हटा मुक्तिके सच्चे मार्गमें लगानेको धर्म कह सके हैं। सर्व प्राणीसमुदाय भी-मनुष्य, पशु, पक्षी आदि-प्रत्येक वस्तु और कार्य्यमें सुखकी वाञ्छा करते हैं। संसारमें ऐसा कोई जीव नहीं है जो अगाध जीवन और किसी न किसी रूपमें वास्तविक आनंदका अभिलाषी न हो। धर्म ही एक ऐसा विज्ञान है जो इसकी दवा है। धर्मसे ही हमें वह सुख और आनंद मिल सक्ता है जिसके लिए प्राणीमात्र लालायित हो भटक रहे हैं। परन्तु विस्मय है कि कितने ही प्रचलित धर्म केवल आज्ञाओं और निरर्थक गुप्त समस्याओं पुराणादिकका निरूपण कर ही चुप हो रहे हैं जब कि इनके स्थानमें वैज्ञानिक ढंगकी आवश्यक्ता है। यह पहिले ही दर्शा दिया है कि विज्ञान (Science) ही एक ऐसा साधन है कि जिससे शंकाएं शीघ्र और निर्भ्रांतिरूपमें दूर कर दी जा सक्ती हैं और इक्षित पदार्थकी सिद्धि हो सक्ती है। जैन धर्ममें अन्य धर्मोंसे यही विलक्षणता है कि वह एक शुद्ध निर्भ्रांति, और अपूर्व विज्ञान है और न उसमें निरर्थक रीतियोंका ही निरूपण है और न भयोत्पादक पूजा आदिसे ही पूर्ण है। जैनधर्ममें अंधश्रद्धाका भी अभाव है। वह अपने अनुयायियोंको प्रत्येक तत्वको न्यायपूर्ण परीक्षाकी कसौटी पर कसकर और उनके यथार्थ भावको समझ कर ही श्रद्धान करनेकी अनुमति देता है।

प्रारम्भमें जैनधर्ममें सर्व-प्राणी-समुदाय तृषित सुखके यथार्थ रूपका निरूपण है। यद्यपि कुछ कालके लिए विषय सुख इन्द्रियोंको साता सी पहुचा देते हैं परंतु यह तो प्रत्यक्ष ही है कि इन्द्रियजनित विषय सुखोंसे जीवोंकी तृषा नहीं बुझती। इन्द्रियजनित सुख पूर्णतया क्षणभंगुर हैं अन्य वस्तुओं और देहधारियोंके मेल

पर निर्भर है। इनकी प्राप्ति दुःख पूर्ण है और अंत भी दुःखदायी। आपसमें वैमनस्योत्पादक है। और वृद्धावस्थामें अथवा इन्द्रिय-शिथिलता पर पूर्ण अशांतिके दाता है। जिन व्यक्तिने अपनी आंतिरिक इच्छाओं पर विचार किया होगा तो उसे विदित हुआ होगा कि वह विषयसुख उसे उसके इच्छित पदार्थ अथवा सुखकी पूर्ति कर शांति प्राप्त नहीं कराते। इनसे उसकी अशांति उत्तरोत्तर बढ़ती ही जाती है। यथार्थमें जिस सुखकी प्राणीमात्र रक्षा करता है वह सुख ईश्वरीय सुखके सदृश अक्षय, अपरिमिति है तथैव आत्माको सुखका उत्पादक है। वह इंद्रियलोलुपताकी पूर्तिके सदृश नहीं है। वह अपूर्व आनंद अथवा सुख है।

यह अपूर्व आनंद न क्षणभंगुर ही है और न इंद्रियजनित सुखके सदृश दुःख अथवा पीड़ा उत्पादक। यह आनंद आत्माका ही निजी स्वभाव है। यद्यपि अज्ञानतमके कारण वह प्रकट नहीं है। इस वक्तव्यकी सत्यताका प्रमाण मनोवाञ्छाकी पूर्तिमें हमारी आत्माको सुखका अनुभव स्वतः ही हृदयसे बाह्य इन्द्रिय साहाय्यके बिना ही अनुभवित होनेमें है। गंभीर विचार करनेसे ऐसा सुख पूर्ण स्वतंत्रतामें ही प्रदर्शित होता है। वस्तुतः जब कभी भी आत्मासे यह आच्छादित वर्ण अथवा उनका अभाव हो जायगा तब ही स्वाभाविक आनंद झलक उठेगा। संसारी आत्मा स्वकृत्योंसे पूर्ण है अतः इन बाह्य बोझा बढ़ानेवाले कार्यादि उसे भारस्वरूप दुःखपूर्ण प्रतीत होते हैं। इन पर पदार्थोके क्षय होनेपर आत्माको यथार्थ सुख अर्थात् स्वतंत्रता (मोक्ष) प्राप्त हो जाती है जिसकी कृपासे आत्मा वास्तविक आनन्दका रसास्वादन करती है। अन्ततः अब यह प्रत्यक्ष है कि इन बाह्य भारस्वरूप पदार्थोंमें ही आत्माका स्वाभाविक आनन्द प्रदर्शित होता है और वह सुख स्वाभाविक होनेके कारण अक्षय है।

अज्ञान ही वह वस्तु है जिसके वश हो आत्मा स्वाभाविक आनन्दके उपभोगसे वंचित रहती है। कठिनतासे सहस्रों प्राणधारियोंमें कोई एक मिलेगा जो इस स्वाभाविक आनन्दके स्वरूपकी झलकसे भिज्ञ हो, नहीं तो सब ही मनुष्य अपने इर्दगिर्दकी बाह्य वस्तुओंसे इस स्वाभाविक आनन्दको प्राप्त करना चाहते हैं। परन्तु यह बाह्य वस्तुसमुदाय अपने स्वभावसे ही उसे देनेमें असमर्थ हैं। यदि मनुष्य अपने आन्तिरिक भावोंपर ही विचार करे तो भी उसे विदित हो जाय कि जिस समय सच्चा आनन्द अनुभवगोचर होने लगे उसी समय उसकी पूर्ण मुक्ति हो जाय। आत्माके स्वाभाविक आनन्दके स्वरूपकी अनिभिज्ञता अज्ञानकारी ही आत्मा और सच्चे सुखके बीचमें रोड़ा है। अतः ज्ञान ही सच्चे सुखका मार्ग है।

आजकलके स्कूलों और कालिजोंमें जो ज्ञान सिखाया जाता है उससे यह सच्चा ज्ञान विशेष समझने योग्य और पूर्ण है। इस सच्चे ज्ञानमें उन वस्तुओंका स्वभाव और प्रकृतिकी उन शक्तियोंका वर्णन है जिससे आत्माका स्वाभाविक आनन्द नष्ट हुआ है और पुनः प्राप्त हो सका है। अन्य चाहे कोई ज्ञान मनुष्यको हितकर भी हो परन्तु सच्चे सुखके अभिलाषीके लिए

यही ज्ञान अभीष्ट एव श्रेष्ठ है।

इस ज्ञानके मुख्य सात ग्राह्य आवश्यकीय पदार्थ हैं, जिनको जैनागममें तत्व कहते हैं। ये इस प्रकार हैं (१) जीतव्य अथवा चेतन पदार्थ अर्थात् जीव तत्व (२) अचेतन अर्थात् अजीव तत्व (३) आश्रवतत्व अर्थात् आत्मामें पुद्गलका आना (४) बध तत्व (५) सवर तत्व (६) निर्जरा और (७) मोक्ष तत्व। इनका विशेष वर्णन निम्न प्रकार है—

(१) जीव तत्व एव जीतव्य पदार्थ है और वह वास्तवमें परमोत्कृष्ट चेतना स्वरूप है। उसकी उत्पत्ति किसी दृष्टिसे भी पुद्गलसे नहीं है। स्वभावत जीव तत्व सर्वदर्शी और सर्वानन्द पूर्ण है तथा अपरिमित अतुल और अक्षय वर्ण-वीर्य्य सयुक्त है। जैसे अन्य सर्व पदार्थ अनादिनिधन है वैसे ही जीवतत्व है यह अमूर्तीक है इसलिए इन्द्रियोंद्वारा जानाजा नहीं सका है। परन्तु दूसरी तरफ पूर्णतया निराकार भी नहीं है क्योंकि जितने पदार्थोंकी सत्ता सिद्ध है उतने समस्त पदार्थोंकी साकार होना आवश्यक है। जीव सदैवसे सत्तामें है। और सदैवसे ही पुद्गलसे सम्बन्धित है। इस कारण अपने स्वाभाविक गुण अनन्त ज्ञान, अनन्त बल और अनन्त सुखके उपभोगसे वचित है। सम्यक् चारित्रके अनुसार वर्तन करनेसे उन मलरूपी शक्तियोंका क्षय होजाता है जो आत्मा के चार अनन्त चतुष्टय-(१) अनन्तदर्शन (२) अनन्तज्ञान (३) अनन्तसुख (४) अनन्तबल-नामक गुणको प्रकट नहीं होने देते हैं।

(२) अजीव तत्व चेतना रहित है और पाच प्रकारका है (१) पुद्गल (२) धर्म (३) अधर्म (४) आकाश और (५) काल। जैन धर्मके अनुसार सृष्टिका कार्य्य अथवा विकास इन पच अजीव पदार्थोंके एक या ज्यादाके और जीवोंके अभावमें नहीं हो सक्ता है। आकाश स्थान देनेके लिए आवश्यक है तो काल भी उतना ही चलाव-बढावके लिए आवश्यक है धर्म और अधर्म चलनेमें व अवकाश ग्रहण करनेमे क्रमश सहकारी हैं। पुद्गल शरीरोंकी सामिग्रीका देनेवाला है और जीव जीतव्य ज्ञान और सुखोपभोग करने हेतु आवश्यक है। इन छ द्रव्योंका वर्णन जैनाचार्यों ने जैन ग्रन्थोंमें विशेष रूपसे किया है अत. यहा उनका वर्णन करना उचित नहीं है।

(३) तीसरा तत्व आश्रव है। आत्मा में कार्माण पुद्गल वर्गणाओंका आश्रवित होना अथवा आनेका नाम आश्रव है। आश्रवके उदयरूपमें आत्मा पुद्गल परमाणुओंको स्वत ही आकर्षित करने लगता है और इसके विविध कषायों वश ये परमाणु आत्मासे मिल जाते हैं। जिससे आत्माके निजगुण ढक जाते हैं और बध बध जाता है। जैनधर्म आत्माको अनादिसे ही इन कर्मोंके आश्रव और बधके कारण दूषित मानता है जिसके कारण जीवात्मा अनादिसे ही जन्ममरण धारण कर भ्रमण करता फिर रहा है। यह कर्मबध आत्मा और पुद्गलके मेलसे होते हैं। और इन्हींसे जीव अपने स्वाभाविक पूर्णता और स्वतन्त्रतासे हाथ धो बैठता है। इस प्रकार एक बधयुक्त-कर्म शरीरोंसे जकडी हुई आत्मा उस

चिड़ियाके सदृश है जिसके पंख सी दिए गए हों, जिसके कारण वह उड़ नहीं सकती है। आत्मा अथवा जीव, चिड़ियाके तरह वास्तवमें स्वतंत्र है। परंतु पुद्गलके सम्बन्धके कारण अपने पंख कटे हुए सा समझता है और अपने स्वाभाविक सुख व स्वतंत्रताका उपभोग नहीं कर सका है।

(४) **बंध** आत्मामें कर्म्म वर्गणाओंका आश्रवित होकर काल स्थितिके लिए मिल जाकर ठहर जाना ही है जैसा ऊपर वर्णन कर चुके हैं।

निर्वाण अथवा मोक्ष प्राप्त करनेके पहिले इन कितने ही प्रकारके बंधनोंको तोड़ना ही पड़ता है।

(५) **संवर** तत्व आश्रवका प्रतिकारक है अर्थात् आत्मामें कर्ममलको एकत्रित होनेसे रोकता है। प्रत्यक्षतः जब तक आत्मासे कर्म बंधकी पुद्गल वर्गणाऐं दूर नहीं कर दी जायगीं तब तक मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती है। अतः संवर अर्थात हर समय आत्मामें आनेवाली कर्मवर्गणाओंको आश्रवित न होने देना मुक्ति प्राप्त करनेके मार्गमें प्रथम श्रेणी अथवा पादुकाके रूपमें है।

(६) जब अन्य पुद्गल वर्गणाओंका आश्रव होना रुक जाता है तब दूसरी श्रेणीमें उन पूर्व संचित कर्मवर्गणाओंको एक एक कर निकालना रह जाता है। यही दूसरी श्रेणी **निर्जरा** तत्व है। जब समस्त कर्मबंध तोड़ दिए जाते हैं और आत्माका पुद्गलसे किसी प्रकारका संबंध नहीं रहता तब आत्मा अपने स्वाभाविक गुण स्वतंत्रता, सुख और केवलज्ञानका अनुभव करती है।

(७) वां और अंतिम तत्व आत्माके वास्तविक उद्देश्यकी पूर्ति है। अर्थात आत्माके निज स्वरूपका स्वतंत्रता, मोक्ष अथवा सुखका पा लेना ही है। इस **मोक्ष** तत्वको आत्मा अपने साथ लगे हुए समस्त पुद्गलोंके दूर करने पर प्राप्त करती है।

इस प्रकारका इन तत्वोंका स्वरूप है। थोड़े हीमें जैन धर्मकी शिक्षा इस प्रकार है कि पुद्गल और मूर्तीक पदार्थोंसे वेष्टित संसारके जीव चेतन पदार्थ हैं। इनमें पूर्णपने और सर्वदर्शिताकी शक्ति विद्यमान् है। ये शक्तियां उनकी उन्हें अपने सम्यक् वर्तावसे प्राप्त होती हैं। इन जीवोंके अनन्तदर्शन और अनन्त सुख संयुक्त पूर्णपनेका अभाव स्वोपार्जित कर्मोदयके कारण हुआ है। अर्थात् इन जीवोंने स्वतः ही पर पदार्थोंको अपनाया है जिसके कारण वे अपने ही कृत्यों वश इन कर्म्म रूपी पुद्गल वर्गणाओंसे बांधे गये हैं। और अपने यथार्थ स्वरूपको भूल रहे हैं। अतः अब केवल यही आवश्यक है कि जीव अगाड़ी अन्य पुद्गल वर्गणाओंका समावेश न होने दे और जो पूर्व संचित बंध स्वरूप सत्तामें है उनको विध्वंश कर दे। जिस समय यह किया जायगा उसी समय आत्माकी स्वाभाविक सर्वदर्शिता और पूर्णपना प्राप्त हो जायंगे और स्वतंत्रता, अतेन्द्रियता और आनन्दका उपभोग होने लगेगा। इस मतमें किसीसे प्रार्थना अथवा याचना करनेकी आवश्यका तो है नहीं। और ध्यान देने योग्य विशेषता यह है कि कोई भी अन्य द्वार ऐसा नहीं है जो मोक्ष अथवा सुखमेंसे किसी

एकको भी दिला सके जिनके लिए जीवात्माएँ मारे मारे फिर रहे हैं। समुचित प्रणालीका ढंग कारण-कार्य्यके सिद्धान्तपर निर्भर है।

उपर्युक्त वर्णित कारणवश ही जैन धर्ममें किसी भी व्यक्तिसे सुख अथवा मोक्षकी याचना करनेका अथवा तदप्राप्ति हेतु उनकी पूजा करनेका निषेध है। ये सुख और मोक्ष आत्मा की निज वस्तुएं हैं। इस कारण बाह्य प्रकरणोंसे प्राप्त नहीं हो सक्ती। अत. अन्य प्रचिलित सैद्धान्तिक मतोंके सदृश जैन धर्म परमात्मपदका निरूपण नहीं करता है और उन सर्व पूर्ण सिद्धोंकी उपासना उसी ढंगसे करनेका उपदेश देता है जिस ढगसे हम अपने गुरुओंकी विनय करते हैं। सर्वोच्चतम विद्वान् गुरुके लिए परमोत्कृष्ट विनयकी आवश्यक्ता यथेष्ट ही है। और सर्वज्ञ तीर्थंकरोंसे बढकर कोई अन्य गुरु हो ही नहीं सक्ता है। तीर्थंकर त्रिकालकी समस्त वस्तुओंके ज्ञाता है और उनका ज्ञान पूर्ण है जिसके फल स्वरूप उन्हें पूर्णपना अर्थात् सिद्धता प्राप्त है। इस प्रकारकी शिक्षा जैनधर्मकी है। और यह नितान्त ही सीधी साधी वैज्ञानिक ढंगकी है। गुप्त समस्यायों और भेदोंका तो नाम तक नहीं है जैसा कि अन्य मतोंमें पाया जाता है। जैनधर्मके अनुसार निर्वाणका मार्ग सम्यक् चारित्र कर संयुक्त है।

अब यह देखना शेष है कि जैन धर्मका आधुनिक सभ्यतापर क्या प्रभाव पड़ता है? कोई २ 'सभ्य' मनुष्य तो आजकल धर्मके नामसे ही घबड़ाते हैं। उनका विश्वास है कि धर्मके पालनके साथ ही साथ विचारी-सभ्यताका भी अन्त हो जायगा। परन्तुः यह भ्रमपूर्ण विश्वास नितांत प्रमाण रहित ही है और उन्हीं लोगोंका है जो आत्माएं यथार्थ दृश्यसे अनिभिज्ञ हैं और उनके निकट आत्मा इस जन्मके उपरात फिर अगाड़ी जन्म धारण ही नहीं करेगी। सभ्यताको इन्द्रिय लोलुपता मान कर उसका अनर्थ करना न्याय संगत नहीं है। यथार्थमें सभ्यताके अर्थ आत्म-शिक्षासे ही सम्बन्ध रखते है कारण कि जीवात्माओं यहां भी निरन्तर विकाशको प्राप्त होती रहती है और दूसरे जन्मोंमें भी। इन्द्रियलोलुपता कितनी भी सुदृष्टि क्यों न हो परन्तु अंततः अनंत आत्माके गुणोंकी घातक ही है कारण पहिले तो आत्माका अस्तित्व ज्ञान ही प्रगट नहीं होने देती और फिर इन पापाचारोंके कारण उसे नर्क अथवा तिर्यञ्च गतिके दु खोंमें ले पटकती है। प्राचीन कालके मनुष्य बुद्धि, विद्या अथवा उस वस्तुविज्ञानसे किसी प्रकार भी अनिभिज्ञ अथवा अल्पज्ञानी नहीं थे जिस ज्ञानके आधारसे इस आधुनिक सभ्यताका निर्माण हुआ है। सुतरा उनमें विशेषता और थी कि उनको विश्वास था कि इन्द्रियलोलुपता दु खोत्पादक और आत्माको निकृष्ट बनानेवाली है। इसी कारण उन्होंने आवश्यकीय सीमाके अंतर्गतके उपरांत आत्म-गुणको नष्ट करनेवाली शारीरिक इन्द्रिय पुष्टि-कारक कला अथवा विज्ञानका निरूपण नहीं किया था। मनुष्य और पशुमें केवल ज्ञान शक्तिने बड़ा अंतर डाल दिया है कारण कि ज्ञानकी महिमासे मनुष्य तो अपने स्वाभाविक पूर्णपनेको प्राप्त कर सक्ता है परन्तु पशु ज्ञानके

अभावमें असमर्थ हैं। अतः पशु-गतिमें तो दशा सुधारनेका कोई कारण उपलब्ध नहीं है परन्तु इस मनुष्यावस्थामें जीवात्माओंको अपनी दशा सुधार इस जीवन और अन्य जीवनकी पीड़ाओंसे छुटकारा पानेकी उपयुक्त अवस्था प्राप्त है। जो दुःखोंसे जल्दी छुटकारा दिला सुखका उपभोग कराए वही वास्तविक सभ्यता है और यही न्यायकी तीव्रालोचनासे भी सिद्ध है न कि वह आधुनिक सभ्यता जो इंद्रिय विषय वासनाओंमें फंसा हमें पशु सदृश बनानेमें कुछ कसर नहीं रखती। आधुनिक सभ्यतामें ध्यान देने योग्य विषय वर्तमानमें जीवन निर्वाह व्यय है। आजकल दिनोदिन यह जीवन-निर्वाह-व्यय अथवा ग्रहस्थीका खर्च बढ़ता जाता है। इस कारण इस सभ्यताकी कृपा दृष्टिसे हर समय ही-दिन अथवा रात-में परिश्रम कर गृहस्थीका खर्च एकत्रित करनेमें और उन साधनोंके मिलनेकी चेष्टामें जिनसे मनुष्य अपनी समाजमें " कोई आदमी " समझा जाता है मनुष्यका उपयोग लगा रहता है। इस प्रकार वर्तमान समयमें मनुष्य जीवनमें आत्मिक विकासके लिए कोई भी समय उपलब्ध नहीं होता है परन्तुः वास्तविक सुख प्राप्ति हेतु अथवा मनुष्य जन्मकी सार्थकताके हेतु कर्म बंधनोंका क्षय कर अपनी अपूर्व निधीः प्राप्त करना आवश्यक है।

प्राचीन सभ्यतामें आधुनिककी नितान्त विपरीततामें मनुष्यको आत्मविकासकी ओर पूर्ण ध्यान था। इसी कारण उस समय जीवन निर्वाह इतना सुगम था कि थोड़ेसे परिश्रममें ही मनुष्य स्वतंत्रता पूर्वक आनन्दसे जीवन व्यतीत करता था और साथ ही साथ शेष समयमें परमात्मोपासनामें अथवा अपने आत्मविकाशमें व्यय करता था।

जैनधर्मने मोक्षाभिलाषी जीवात्माओंके लिए दो तरहके चारित्रका निरूपण किया है। (१) मुनिधर्म। (२) गृहस्थधर्म। मुनिधर्मकी विषमता और चारित्रकी निर्मलता इसीसे विदित है कि उसमें उसी भवसे मोक्षप्राप्तिका प्रयत्न किया जाता है और गृहस्थ धर्म उन आत्माओंके लिए है जो मुनि धर्म धारण करनेमें असमर्थ हैं।

अतः जैनधर्मका आधुनिक सभ्यतासे संबंध होने पर किसी प्रकारकी भी क्षति उसके किसी अंगको प्राप्त नहीं हो सक्ती है सुतरां इससे उसको इस अपूर्णताका अभाव हो जायगा जिसकी कृपासे आधुनिक सभ्य समाज आत्माको कोई वस्तु नहीं समझती और मनमाने पापाचरण कर इस भव और दूसरे भवोंमें दुःख उठाती है।

अन्तमें प्रिय पाठक ! आपसे जैनधर्मको वैज्ञानिक ढंगसे अध्ययन करनेका ही निवेदन है और यदि आप आत्माके वास्तविक उद्देश्यको ध्यानमें रक्खे रहोगे तो जैनधर्म ही उस उद्देश्यकी पूर्ति हेतु परमोत्कृष्ट मार्ग प्रदर्शित होगा। एवम् भवतु ! *

ॐ शांति ! शांति !

*बाबू चंपतराय जैन बैरिष्टरकी " What is Jainizm " नामक टेक्टका हिन्दी अनुवाद।

स्वास्थ्य और स्वरोदय।

स्वास्थ्यके साथ श्वास, प्रश्वासका घनिष्ट सम्बन्ध है इस बातमें किसीको जरा भी सन्देह नही करना चाहिए। स्वरोदय नामक शास्त्रमें श्वास-प्रश्वासके सम्बन्धमें स्पष्टरूपसे आलोचना की गई है।

श्वास लेनेके लिए और शरीरकी श्वासको बाहर निकालनेके लिए नाकके दो नथुने बराबर काम किया करते हैं। परन्तु, दोनों नथुने एक साथ काम नहीं करते हैं। कभी दहने नथुनेसे और कभी बायें नथुनेसे श्वास ग्रहण किया जाता है। जब जिस नथुनेसे श्वास ग्रहण किया जाता है तब उसी नथुने द्वारा श्वास बाहर भी किया जाता है। अर्थात् एक समयमें एक ही नथुना श्वास ग्रहण करने और त्याग करनेका कार्य किया करता है। साधारण रूपसे प्रत्येक नथुना ढाई दड अर्थात ढाई घडी तक चला करता है। श्वासके साधक लोग दिन भर बाया और रातको दाया स्वर चलाते है। दहने स्वरको सूर्य वा गंगा स्वर कहते है। बायें स्वरको चन्द्रमा व यमुना स्वर कहते हैं। दिनमें चन्द्रमा या यमुना स्वर चलनेसे शरीरमें सर्दी रहती है और रातमें सूर्य या गंगा स्वर चलनेसे शरीरमें गर्मी रहती है। ऐसा भी नहीं होता कि दोनों स्वर एक साथ कभी न चलें। साधक लोग जब दिन भर बायें और रात भर दायें स्वरको चलानेके अभ्यासी हो जाते हैं तब कुछ दिनों बाद दोनों स्वर एक साथ चलने लगते हैं। योगी लोग बायें स्वरको इडा दायें स्वरको पिंगला और दोनोंको सुषुम्णा कहते हैं।

साधारण लोग यही जानते है कि दोनों नथुने एक साथ श्वास ग्रहण और त्याग किया करते हैं। परन्तु, यह बात साधनाके बिना प्राप्त नहीं होती है। एक ही नथुना श्वासको ग्रहण एवं विसर्जन किया करता है-ऐसा क्यों होता है? इस बातकी किसी विज्ञानवेत्ताने आज तक खोज नहीं की और डाक्टरी ग्रंथोंमें व अन्यान्य किसी भाषाकी पुस्तकमें भी इस विषय पर कोई आलोचना नहीं की गई है। शारीरिक क्रियामें यह एक अतीव कौतूहलजनक और विशेष आवश्यक विषय है, इसमें संदेह नहीं परन्तु इस विषयपर आधुनिक पंडितोंने कुछ भी विचार नहीं किया है। इस विषयकी प्राचीन योगशास्त्र और स्वरोदय-शास्त्र ही व्याख्या करते हैं।

शरीरमें नाना प्रकारकी विचित्र आकृतिवाली सुविस्तृत नाडिया विद्यमान हैं। ये नाडिया नाभिके नीचे मूलाधार नामक स्थानसे उत्पन्न होती हैं। शरीरमें चक्राकारकी समान प्राय दो तीन हजार नाडिया जालकी तरह सर्वत्र छाई हुई हैं। इस नाडीजालमें तीन नाडिया विशेष प्रकारकी हैं। इन्हीं नाडियोंको इडा, पिंगला और सुषुम्णा कहते हैं। जब बाया स्वर चलता है तब इडा नामक नाडी काम करती है और जब दाया स्वर चलता है तब पिंगला नामक नाडी काम करती है एवं जब दोनों स्वर खुल जाते हैं तब वायुको सुषुम्णा नामक नाडी संचालित करती है। जिस प्रकार इडाको चन्द्र

और पिंगलाको सूर्य कहते हैं, उसी प्रकार सुषुम्णाको अग्नि कहते हैं।

स्वरोदय शास्त्रमें व्याधियोंके साथ स्वरोंका सम्पर्क भलीभांति वर्णन किया गया है। इसके सिवाय उसमें नित्यके कार्य्योंकी सफलता और असफलताको जाननेकी भी विधि लिखी है। किंतु यहां पर केवल स्वास्थ्यके विषयमें कुछ लिखा जाता है।

यह बात पूर्व लिखी जा चुकी है कि साधारण लोगोंके एक नथुनेसे ढाई दंड तक श्वास चलता है, उसके बाद दूसरे नथुनेसे श्वास चलने लगता है और ढाई दण्डके बाद फिर पहले नथुनेसे श्वास चलने लगता है। कभी ऐसा न हो तो जान लेना चाहिए कि रोगकी पहली अवस्था प्राप्त हो रही है। जो *लोग अपने श्वासका ध्यान रखते हैं और* नथुनेके चलनेका समय जानते हैं वे तुरन्त समझ जाते हैं कि समय पर नथुना नहीं बदला है और अब कोई विपत्ति आना चाहती है।

योगशास्त्रमें लिखा है कि–' रोग उत्पन्न होते समय जो नथुना चल रहा हो अथवा जिस नथुनेके चलनेसे रोगका पूर्वाभास प्रकट हुआ हो, उस समय यदि उसको बंद कर दिया जाय और दूसरा नथुना खोल दिया जाय तो रोग तुरन्त दूर हो जावेगा! " बीमार आदमी जब आरोग्यता लाभ करता है तो उस समय भी स्वाभाविक स्वर चलने लगता है और विपरीत स्वर स्वयं बंद हो जाता है। यदि इस विषयमें जानकारी हो तो रोगकी प्रथमावस्थाके आरम्भ होमें विपरीत स्वरको रोक कर रोगसे छुटकारा पाया जा सकता है।

यद्यपि योगशास्त्रमें उन रोगोंकी तालिका प्रकाशित नहीं की गई है जो अनुकूल स्वर चलानेसे दूर हो जाते हैं। परन्तु हमारा विश्वास है कि अधिकांश रोग, *श्वास-विज्ञानकी सहा*यतासे निकट नहीं आ सकते हैं। हम नीचे उन रोगोंका वृत्तान्त लिखते हैं कि जो हमारे और हमारे मित्रोंके अनुभवमें आ चुके हैं। इसके बाद यह बात लिखी जायगी कि श्वास *किस प्रकारसे बदला जाता है और नियमित* समय तक कैसे स्वर चलाया जा सकता है।

हमने कई बार आज़माया है कि प्रबल मस्तक पीड़ा, आधासीसीका दर्द, हरारत, सामान्य ज्वर, अजीर्ण और श्वास सम्बन्धी रोग इससे आश्चर्यके साथ पूर्णरूपसे आराम हो गये हैं। श्वास रोगके लिए तो यह प्रयोग रामबाण साबित हुआ है। *प्रबल श्वास रोगके समय जब रोगी* जलमग्न व्यक्तिकी तरह प्राणोंसे व्याकुल होता है, यदि उस समय नासिकाका स्वर बदल दिया जाय तो वह दस पन्द्रह मिनटमें ही भला चंगा हो जाता है।

हमने रोगोंको दूर करनेमें तीन प्रकारकी क्रियायें व्यवहृत की हैं। नीचे क्रमशः उनका उल्लेख किया जाता है:—

(१) नासिकाके जिस नथुनेसे श्वास चल रहा हो, यदि उसी पार्श्वसे लेटा जावे तो श्वास बदल जावेगा और दूसरा स्वर चलने लगेगा। यदि बायें नथुनेसे श्वास चल रहा हो और उसीके कारण कोई कष्ट उत्पन्न हुआ हो तो बायें करवटसे लेट रहनेसे दायां स्वर खुल जाता है किन्तु किसी २ अवसर पर ऐसा करनेसे

भी स्वर नहीं बदले तो उस अवस्थामें अन्य उपाय करना चाहिए। यथा—

(२) चलते हुए नथुनेको रुईसे बंद कर देना चाहिए। किन्तु मुखसे श्वास कदापि न लेना चाहिए। यदि रुईका व्यवहार न करके हाथकी अंगुलियोंसे नथुनेको बंद कर दिया जाय तब भी काम चल सकता है। ऐसा करनेसे दो तीन मिनट तक कष्ट होनेकी सम्भावना है। परन्तु दूसरा स्वर खुल जावेगा और क्रमशः रोग घटने लगेगा।

(३) प्राणायामकी सहायतासे स्वर बदल जाता है। प्राणायामके संबंधमें लिखनेसे प्रबन्ध बहुत बढ़ जायगा। अत यहां पर केवल प्राणायामकी सिर्फ वह क्रिया बतलाई जाती है कि जिससे स्वर बदला जा सकता है। जिस नथुनेसे स्वर चल रहा हो उसको बंद करके दूसरे नथुनेसे श्वास खींचना और छोड़ना चाहिए। अथवा इस प्रकार समझना चाहिए कि दायां स्वर बंद करना है तो दायेंको हाथसे बंद करके बायें नथुनेके द्वारा वायु खींचना और छोड़ना चाहिए। दायेंसे श्वास खींचकर बायेंके द्वारा निकालनेसे भी काम चल सकता है। फिर बायेंसे श्वास खींचकर दायेंके द्वारा बाहर करना चाहिए। इस प्रकार करनेसे भी अनुकूल स्वर चलने लगता है। यद्यपि श्वासके रोगियोंको नथुना बंद करते हुए बड़ा कष्ट होता है तथापि उनको उपरके प्राणायाम द्वारा दोनों नथुनोंकी सहायता लेते हुए अनुकुल स्वर चालित कराना चाहिए। यदि दायें स्वरके कारण मस्तक पीड़ा आरम्भ हुई हो तो बायें स्वरसे श्वास ग्रहण करना चाहिए और दायें स्वरसे त्याग करना चाहिए।

सूर्यस्वरमें भोजन करनेसे अजीर्ण उत्पन्न नहीं होता है। भोजन करनेके पश्चात् बाईं करवटसे लेटना चाहिए, जिससे सूर्यस्वर चलता रहे। अजीर्णके रोगियोंको सूर्यस्वर चलाकर वायुको तेजीके साथ ग्रहण और त्याग करना चाहिए।

स्वरोदयकी सहायता हीसे योगी लोग रोगोंको अपने निकट नहीं आने देते हैं। स्वरोदयके विषयमें अधिक ज्ञान सम्पादन करनेके लिए शिवस्वरोदय नामक शास्त्र अवलोकन करना चाहिए। स्वर विज्ञानके आविष्कर्ता प्रोफेसर शिवजी हैं। लोगोंके लिए मृत्युका प्रश्न एक जटिल प्रश्न है, परन्तु स्वरोदयसे मृत्युका सारा भेद खुल जाता है। अपनी मृत्युके विषयमें तो तुरन्त ज्ञान हो जाता है। मृत्युके पंजेसे बचनेका भी उसमें उल्लेख है।

प्रातःकाल उठ कर देखना चाहिए कि कौनसा स्वर चल रहा है। यदि दहिना स्वर चलता हो तो शरीरमें गरमीकी अधिकता समझनी चाहिए। उसी समय शर्बत आदि कोई शीतल पदार्थ पान करना चाहिए। प्रातः समय उठते ही बायाँ स्वर चलना चाहिए। यदि बायां स्वर न चलता हो तो उपर्युक्त क्रियासे स्वर बदल देना चाहिए।

यदि पचनेमें भारी पदार्थ दायें स्वरमें और लघुपाकी पदार्थ बायें स्वरमें खाये जावें तो शीघ्र ही पाचन होता है। गुर्दे और मसानेके रोगोंमें बाया स्वर एवं जिगर व आमाशयके रोगोंमें दायां स्वर चलाना चाहिए। ज्वर

की अवस्थामें सदैव चन्द्र (बायां) स्वर चलाना चाहिए। किन्तु आमाशय शुद्ध होना चाहिए। यदि हृदयका कोई रोग न हो तो रातको सूर्य (दांयां) स्वर चलाना चाहिए। सूर्य स्वर चलनेसे फेफड़ोंको शक्ति प्राप्त होती है और बायां अर्थात् चन्द्रस्वर चलनेसे फुफ्फुसको शक्ति पहुंचती है।

यदि दिनभर बायां स्वर और रात भर दायां स्वर चले तो सदैव आरोग्यता रहती है। हमारी रायमें इसी बातका अभ्यास करना उचित है।

योगी लोग गरमीके समय चन्द्रस्वर चलाकर और सर्दीके समय सूर्यस्वर चलाकर, यकायक पड़ने वाली गरमी और सर्दीसे अपने शरीरका बचाव किया करते हैं। "वैद्य"से उद्धृत।

उपयोगी शिक्षाएं।

(१) सदा ही सवेरे उठकर पंच परमेष्ठियोंके गुणोंका चिन्तवन करो।

(२) विना जिनेन्द्र देवके दर्शन कभी न रहा करो।

(३) जिनेन्द्र देवका पूजन स्वर्ग मोक्षका साधक है इसलिये नित्य ही जिनेन्द्र देवका पूजन किया करो।

(४) शास्त्र स्वाध्याय प्रतिदिन किया करो क्योंकि इससे ज्ञानकी वृद्धि और बुद्धि तीव्र होती है।

(५) णमोकार मंत्रका जाप नित्य ही श्रद्धायुक्त करना चाहिये।

(६) अष्टमी चतुर्दशी पर्वमें इकात (एकवार आहार) करना चाहिये वा उपवास (बिलकुल न खाना) करना चाहिये।

(७) हिंसा चोरी झूठ कुशील और परिग्रहकी वाञ्छा ये पांच पाप सर्वथा छोड़ देना चाहिये क्योंकि इनके द्वारा इस लोक और परलोक दोनोंमें दुःखी होना पड़ता है ऐसा शास्त्रका कथन है।

(८) सात व्यसन याने जुवा, मांस, मदिरा वेश्या, शिकार, चोरी और पर स्त्री रमण ये सात व्यसन हैं—और पांच उदम्बर याने वड़ पीपर पाकर कटूमर (अंजीर) और गूलर, ये पांच उदम्बर हैं। तीन मकार याने मद्य मांस मधु इन—आदिका त्याग करना ही उचित है क्यों कि इनके त्याग विना जैनी नहीं कहला सके।

(९) जीव मात्र पर दया रखना, धर्मकी रक्षा करना है।

(१०) सबके प्यारे बनना, किसीकी दृष्टिसे बुरा नहीं होना चाहिये।

(११) बड़ोंका आदर करना चाहिये।

(१२) समयको व्यर्थ नहीं खोना चाहिये।

(१३) सदा पापोंसे डरना चाहिये।

(१४) किसीको भी धोका नहीं देना चाहिये।

(१५) किसीको अपना दुश्मन नहीं बनाना चाहिये।

(१६) धनको व्यर्थ नहीं लुटाना चाहिये

(१७) धर्म कार्यमें धन लगानेके लिये कृपणता धारण नहीं करना चाहिये।

(१८) असत्यता कभी नहीं धारण करना चाहिये।

(१९) तन मन धन लगाकर विद्याका प्रचार करना चाहिये।

(२०) ज्ञानकी वृद्धि करना चाहिये और ज्ञान हीको अपना परम मित्र समझना चाहिये।

विद्यार्थी टीकाराम, करंगी।

सोलहकारण भावना।

(लेखक—प० गोरेलाल जैन, रेपुरा, पन्ना)

दोहा-नमूं पंच परमेष्टि पद, मन वच ध्यान लगाय।
सोलहकारण भावना, रचूं स्वपर हित दाय॥

(चौपाई)

प्रथम 'विशुद्ध' भावना सार। ताको रूप सुनो चित धार।
सप्त तत्व भाषे भगवान। तिनको कर निश्चय श्रद्धान॥
सत्य आप्त गुरु ग्रन्थ पुनीत। इनसे कीजे मन वच प्रीत।
शंकादिक वसु दोष निवार। प्रथम भावना मानो सार॥ १॥
विनय सहित आदर सत्कार। करो सदा निज कपट निवार।
कही विनय जिन पंच प्रकार। ताको कभी न भूलो यार॥
दर्शन ज्ञान चारित्र वखान। तप उपचार विनय सुख दान।
तिनकी विनय करो चितलाय। यही 'विनयसम्पन्नता' आय॥ २॥
अहिंसादि व्रत पांच गहीजे। दोष रहित व्रत शील लहीजे।
क्रोधादिक कषाय दुखदाई। इनको दमन करो मन लाई॥
निज त्रियमें सन्तोष सम्हार। मन वच त्याग करो परनार।
शीलाभूषण पहिरो अङ्ग। पालो शील व्रतेषु अभङ्ग॥ ३॥
जगमें सार वस्तु है ज्ञान। इसके सम नहि और सु आन।
जानन नाम तासको सार। जाननमें निज चितको धार॥
यही परम-उपयोग महांन। तत्व अभ्यास करो धर ध्यान।
यही चतुर्थि भावना सार। ज्ञानोपयोग अभीक्ष्ण' धार॥ ४॥
जगके विषय भोग दुखदाई। तिनको सेवत होय बुराई।
यह तन विनासीक है भाई। जिसको पोषत मीत लगाई॥
जगके कितने हैं सम्बन्ध। तिनमे होय कर्मको वन्ध।
यामें धर्म विषें कर प्रीत। यह 'सम्वेग' भावना मीत॥ ५॥

स्त्री०—लगा षाढ़ वर्षातका आगमन। किलोलैं पंछीगन मिल चमन॥
विदेशी सज्जन भी सिधारैं सदन। रहैं नारि वर साथ अदालिकन।
पु०—करैं वास क्या उच्च अदालिकन। छः खंडी नाहिं चौरासी खन॥
लगै काल व्यारी गिरै तरु चमन। धरम, देव, गुरु, शास्त्र विनको 'शरण'॥पि०॥२॥
स्त्री०—ए सावनकी यामिन सुहानी पवन। हिलोरैं घट, मेघ लागे झरन।
झुलाऊं हिंडोला तुम्हें अब सजन। भरूं राग तो संग यही आवे मन॥
पु०—हिंडोला जगत यह अनादी निधन। लगीं दोय डोरी जे 'आवागमन'।
चलैं झुकवा चहुंगति लगें विध पवन। भरूं राग 'सोहं' स्वयं जा विपन॥पि०॥३॥
स्त्री०—न भादोंमें पंछी भी छांड़े सदन। रहैं नारी नर दोनों हिलमिल मगन।
अंधेरी झुकें घोर कर बरसे घन। हुए एक जल, थल करो किम गमन॥
पु०—अकेला करे चारो गतिमें गमन। सके रोक अंधेरी न जल थल न घन।
"अकेला" सहे दुक्ख जन्मन मरन। चलें संग तन धन न पुरजन सुजन॥पि०॥४॥
स्त्री०—चले सीत पावस ग्रीषम पवन। जनावे सुखासीन तीनों रितन।
जड़ी नारी वहु फूलें अद्भुत पवन। मिलें क्षीर जल सम तियामीत मन॥
पु०—मिलैं क्षीरजल, तेलतिल, रंग पतन। त्यों ही तनमे चेतन सुगंधी सुमन।
सवै द्रव्य "न्यारी" निराले गुनन। धरें परजय न्यारी, लखो जिन श्रुतन॥पि०॥५॥
स्त्री०—खिले चंद कातिक है निर्मल गगन। सुगंधे मलें सब सजावें सदन।
मनावें दिवाली भरें मोद मन। करें मोद मन। करें घृत क्रीड़ा, रमावो रमन॥
पु०—नसावें सुगुनधन, फसावें दुखन। मलिन घृत क्रीड़ा करें ना सुजन।
सुगंधे करें सब, अपावन ये तन। "अशुचि" जान यामें न राचे रमन॥पि०॥६॥
स्त्री०—लगा शीत अगहन, परन मो गहन। खुले प्रेमके द्वार चारो लतन।
घनी मीति धारें सवै वसन। लगावें घनी त्यों धनासे लगन॥
पु०—खुले दर सदाचार ऊपर अपन। मिथ्या त्यागे अवृत कषाया 'श्रवन'।
करें कर्म इन द्वारसे आक्रमन। टूटे डोरी, ममता, छूटे जग भ्रमन॥ पिया० ॥७॥
स्त्री०—परे पूष पाला लगे तन गरन। रहें संग शाला, वसे सेज मन।
महा रैन हेमंतमें भोगी जन। रहें डारि परदा सवें निज दरन॥
पु०—समित गुप्ति वृषाचार परिमा भवन। लगा डाट 'संवर' जे आश्रव दरन॥
रहे रैन हेमंतमें इम जतन। मिटे शीत भोगनको मत्र कडकरन॥ पिया० ॥८॥
स्त्री०—परे माह सर्दी पे दर्दी सजन। रखें दिल न गर्दी ये दर्दी दुःखन।
रंग रंग मर्दी जगावें मदन। फिरें सूर पीछे वसंता गमन॥

पु०—करैं ध्यान वृद्धी बसंती पवन। धरैं भाव शुद्धी न व्यापै मदन।
भगैं सर्व रिद्धी हरैं सब दुखन। जे अविपाक 'निर्जर' है सिद्धी करन॥पि०॥९॥
स्त्री०—मिलैं फागमें शत्रु अरु मीत्रगन। यही लोक रीति उलंघै कवन।
तजो हठ विपन, धारो अनुराग मन। चलो फाग खेलन सजन रंग भवन॥
पु०—उतंग राजू चौदा विज्योवत वलन। स्वयं सिद्ध कर्त्ता न हर्ता कवन।
मेरी 'लोक मूरत' दिख खट रंगन। फिरे जीव हुरिहालो चौदा भुवन॥पि०॥१०॥
स्त्री०—तजो चैत चिंता मेरे मन हरन। मिलैं भोग-भागन विषय सुख करन।
तजै गोदका क्यों उदर लालसन। कहां सुक्ख नर सम सुरग ञदशन।
पु०—ये सच है मनुष भव मिलन अति कठन। सुकुलथल कठन 'बोध दुर्लभ' मिलन।
करें आप तन मन वचन अनुभवन। यही ऊंचपन देवसे नरसुखन॥पिया०॥११॥
स्त्री०—त्रपा रोग बाढैं लगे ताप तन। विकल होउ मम याद आवें वचन।
छ' दर्शनमें भावै सुकीजे ग्रहन। करो उग्र व्रत दान गृहाचरन॥
पु०—जे वैशाख दर्शन छ. भावें नमन। विषय पोषक हिंसक परिग्रह धरन।
दरव तत्व दर्शाय शिवमग करन। अहिंसामई एक 'जिनधर्म' गन॥पि०॥१२॥
स्त्री०—करो जेठमें न्याय मेरा सजन। चले छोड़ किसपर हो करुना धरन।
पराधीन परजाय हम दुख मरन। करें आस किसकी, बतावो जतन॥
पु०—शुभाशुभ सबै व्यापैं अपने रसन। मिलैं सुक्ख इनको करै जब दहन।
धरम आसकर पालो सद् आचरन। यों समझाय मन सुख चले फिर विपन॥१३॥

सोरठा

नारी करत विचार। परवस भव भव दुख भरे।
निज वस कियो न काज। विकलप तज मत आदरे॥

कामताप्रसाद पी० जैन—अलीगंज।

बांदा–से बुंदेलखंड जैन संस्कृत एंग्लो वर्ना० स्कूलके मंत्री राजाराम लिखते हैं कि इस स्कूलमें जैन अजैन विद्यार्थी अंग्रेजी, संस्कृत, धर्म-शिक्षा तथा हिन्दीका ज्ञान सात वर्षोंसे प्राप्त कर रहे हैं परन्तु द्रव्यकी बेहद कमी है इस लिये धनवानोंको मैं अपील करता हूं कि इस स्कूलके लिये यथाशक्ति सहायता भेजें।

नागपुर प्रांतिय–खंडेलवाल सभाके शिक्षा विभागको ३९१७३)की सहायता मिल चुकी है।

सेठ पद्मराजज रानीवाले–कलकत्ता नई कौंसिलके लिये उम्मेदवार थे परंतु असहकारके कारण आपने अपनी उम्मेदवारी वापिस ले ली।

वीर निर्वाण-सचित्र खास अंक।

इस वर्ष हम विशेषांक नहीं प्रकट कर सके थे, परंतु आगामी नवीन वर्षके प्रारंभमें सचित्र खास अंक प्रकट करनेका निश्चय किया है इस लिये सुज्ञ लेखकोंको हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी तथा मराठी भाषाके लेख और कविताएं १५ दिनके भीतर भेजनेके लिये सादर आमंत्रण करते हैं।

मैनेजर।

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

दिगंबर जैन

संपादक—मूलचंद किसनदास कापडिया—सूरत.

वीरसं २४४ आश्विन

वर्ष १३ वाँ अंक १

विषयानुक्रमणिका

पोस्टेज सहित हल आगे दर्या मूल्य रू. ०-१८-०.

ગુજરાત દિ૦ જૈન પ્રાંતિક સભા ની બારમી વાર્ષિક બેઠક જાંબુડી (અમનગર) માં ગડીયા પ્રહેચર કાળીદાસ (બામણવાડ) ના પ્રમુખપણા નીચે કાર્તક વદ ૨ પર થનાર છે. વોલંટિયર થનારે મંત્રી ચુનીલાલ સાંકળચંદને પેથાપુર લખવું.

દિવાળીમાં શું કરશો—એ બાબત ભાઇબંધ 'જૈન' (ભાવનગર) ની સૂચના સ્તુત્ય છે. એ પત્ર લખે છે કે-(૧) ધનતેરસ (ધેનુતેરસ) ને દિને ગાયોનો આદર કરી તેને ઉછેરવા અને પાંજરાપોળોમાં તેની સુધારણા કરવા પ્રતિજ્ઞા લેશો ને બને તો ગાયોના પ્રદર્શન ભરી સારાં ઢોર ઉછેરનારને ઉત્તેજન આપશો. (૨) કાળીચૌદશને દિને કાળને પણ ગળી ગયેલી કાળ રૂપ ન્હા અને હોટલના દરેક ખાણાપાણાના ભ્રષ્ટાચારથી બચી જવા નિશ્ચય કરજો અને હૈયું બાળનાર તથા પૈસાનું પાણી કરનાર બીડી, હુક્કા ચિરૂટ,સિગારેટનો પ્રતિજ્ઞાપૂર્વક ત્યાગ કરજો. (૩) ફટાકડાને છદુંદશમાં રહેલા ભયથી બચવા અને નિરર્થક જતું તે મારેતું દ્રવ્ય બચાવવાને "ફટ" કરનારને છોડી દેજો ને આત્મ પ્રકાશની દીપમાળી પ્રકટાવશો. (૪) બેસતું વર્ષ નિર્વાણ નવું વર્ષ સ્વદેશસેવા અને સ્વદેશીનાં વ્રત આદરી સ્વાશ્રમી થજો.

સાપ દેશની પંચે—ઠરાવ કર્યો છે કે વિવાહ દીઃ ૨૦) કસુનર વગેરે માટે કાઢવા, વિવાહમાં પંચ ન જાય ને નકામો ખર્ચ બંધ કરવો, જાન ચાર દિવસ રહે અને ઘી ૧૫ મણને બદલે ત્રણ મણ વાપરવું વગેરે.

ઇડર—માં પર્યુષણ પર્વમાં બ્ર૦ શાંતિસાગરજીએ એક માસના ઉપવાસ શાંતિપૂર્વક કર્યા હતા.

મુંબાઇ—ની જુના મંદિરની પાઠશાળાના ૧૬ વિદ્યાર્થીઓને શેઠ. લુણકરણજીએ હાથે ઇનામ વેંચવાનો મેળાવડો થયો હતો.

સોજીત્રાની—પાઠશાળા બંધ પડી છે તે ચાલુ થવાની જરૂર છે.

વડોદરા—ની વીસામેવાડા પંચે એવો ઠરાવ કર્યો છે કે ૨૦ વર્ષની ઉમર સુધીના મૃત્યુખરચ કરવો નહિ. તેમજ કેટલાકે ૩૦ તથા કેટલાકે ૪૦ વર્ષ સુધીનાનું મૃત્યુખરચ નહીં જમવા નિયમ લીધા છે. ખરી રીતે જોતાં એ રિવાજ ફરજ્યાત કાઢી જ નાંખવો જોઇએ ને ૫૦ વર્ષ સુધીનાનું તો નજ જમવું જોઇએ. ગુજરાતમાં દરેક પંચે ફરજ્યાત મૃત્યુખરચ બંધ કરવાની તથા ૫૦ વર્ષ સુધીનાના ખરચમાં ન જમવાની પ્રતિજ્ઞા લેવી જોઇએ.

तिथिदर्पण—नवीन तिथिदर्पण ग्राहकोंको कुछ देरसे पहुंचेगा इस लिये दो माहकी तिथिकी खबर यहां प्रगट करते हैं-कार्तिक सुदीमें ७ दो बुधगुरुको, तथा सुदी १४ क्षय होनेसे बुधवारको है! कार्तिक वदी (मारवाड़ी मगसर वदी) में सब तिथि बराबर हैं। मगसर सुदीमें भी सब बराबर हैं परन्तु वदी (मारवाड़ी पौष वदी) में ४ का क्षय है और १६ दो होनेसे १४ शुक्रवारको माननेकी है।

दिगंबर जैन.

THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिर्विविधश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्ततां, दैगम्बर जैन समाज मात्रम् ॥

वर्ष १३ वाँ. || वीर संवत् २४४६. आश्विन. विक्रम सं० १९७६. || अंक ६.

धूत-निन्दा

(दीपमालिकाके उपलक्ष्यमें)

देखो दीपमालिका शुभ दिन, पाठक ! आनेवाला है ।
महावीरका मोक्ष दिवस यह उत्तम तथा निराला है ॥
इस दिन सर्व धर्मके प्रेमी धर्म चिन्तवन करते हैं ।
जिसके अतिशय उत्तम फलसे बिन प्रयास भव तरते हैं ॥१॥

शोक ! शोक !! अति महाशोक ! अब किन्तु सोच यह होता है ॥
खेलें इस दिन जुआ कि जिनके हृदय ज्ञानका कोठा है ॥
धर्म समयमें इस अधर्मसे जो धन सम्पति खोते हैं—
वह पापी जन बिना सम्पतिके होकर दुखित रोते हैं ॥२॥

निन्दनीय यह रोग भारतमें भीषणतासे फैल रहा ।
अति क्षति कीनी इसने उसका हाल न हमसे जात कहा ॥
बड़े बड़े नृप सम्पति खोकर इसके कारण नष्ट हुए—
देखो, जुआ खेलने कारण नलको कैसे कष्ट हुए ? ॥३॥

जुआ खेलने कारण ही श्री पाण्डव भिक्षुक बने फिरे—
इस पर कुछ भी ध्यान न देकर खेद ! अज्ञता में हि गिरे ॥
जिसके कारण जुआ खेल कर हा ! हम मूढ़ कहाते हैं—
निन्दनीय औ समझे जाते अन्त नरकको जाते हैं ॥४॥

क्योंकि—मूल यह सप्त व्यसनका शास्त्र मध्य यह सिद्ध किया
और द्यूत-प्रिय जनको जिसमें सबने पापी बना दिया ॥
इससे सिद्ध हुआ है यह अब द्यूत शास्त्र प्रतिकूल सदा ।
क्योंकि—धर्मका घातक यह है और नाशका मूल सदा ॥५॥

इसी हेतु ही ज्वारी जनका अति आदर घट जाता है।
पितु अरु मातु बन्धु सुत वनिता प्रियसे मिटता नाता है॥
अरु विश्वास न उसका रहता निर्धन दर दर फिरता है।
विविध व्याधियों तथा शोकमें सदा सर्वदा घिरता है॥६॥
इससे पाठक! तुम्हें उचित यह जुआ न खेलो भूल कभी।
"क्योंकि बुरा है जुआ खेलना जानत हैं यह मनुज सभी॥
जुआ दुर्व्यसन यह है ऐसा जैसे मदिरा बुरी सुनो—
पीते पहिले थोड़ी थोड़ी फेर बहुतसी हिये गुनो॥७॥
इन्हीं जुआ खेलते थोड़ा फिर पड़ जाती चाट बड़ी—
इसकी ग्रन्थि फेर अब बँधनी नहीं छूटती होत कड़ी॥
इससे तुम्हें उचित है नित ही इसका बिलकुल त्याग करो
धर्म दिवसमें प्रभु चिन्तन कर अपना उज्वल भाग करो॥८॥

निवेदक—बा० मुन्नालाल जैन शिक्षक, अमरा (झाँसी)





अहिंसाके प्रचारका प्रयत्न।

यह बात छिपी नहीं है कि हिन्दमें लगातार हिंसाके प्रचारसे प्रजाको महान कष्ट हो रहा है और अहिंसा धर्म पर बड़ा आघात पहुंच रहा है क्योंकि मद्य, मांस, चमड़ा, शिकार, बलिदान आदिके व्यापारसे देश इतना धनहीन हो रहा है कि भविष्यमें शायद दूध घी भी खानेको न मिले। यद्यपि रतौनामें कसाईखानेकी कंपनी सरकारकी सहायसे खुल चली थी उसका भी विरोध होनेपर सरकारने यद्यपि कम्पनीका पट्टा रद्द करदिया है तौभी मध्य प्रान्तमें ऐसे भी चमड़ा और मांसके लिये अनेक स्थानोंपर बहुत ही जीव हिंसा होती है। अहिंसा प्रचारके लिये उद्योग हो रहा है परन्तु वह जितना चाहिये उतना नहीं है न ऐसा कोई समाचार पत्र ही प्रगट होता है जिसमें लगातार अहिंसाका उपदेश सारे देशमें फैलता रहे। आजकल हिन्दी भाषा देश व्यापी हो रही है इसलिये यदि हिन्दी भाषामें ऐसा कोई पत्र प्रगट हो तो लाभ हो सके ऐसा विचार होनेपर श्रीमान ब्रह्मचारी ज्ञानानन्दजी (पं० उमरावसिंहजी न्यायतीर्थ) ने कठाले जाकर प्रयत्न किया जिससे तुर्त ही 'अहिंसा प्रचारिणी सभा' स्थापित हो गई है और करीब २०००) की सहायता भी मिली

है तथा सभाके स्थाई सभासद १०१) लेकर और चालू सभासद वर्षिक १) लेकर बनना निश्चित हुआ जिसमें बहुतसे स्थायी और चालू सभासद हुए हैं और अब इस सभाकी ओरसे 'अहिंसा" नामक साप्ताहिक पत्र काशीसे प्रकट करनेका निश्चय होनेपर उसकी कार्रवाई प्रारम्भ हो गई है और नवीन वर्षके प्रारम्भसे यह पत्र प्रकट होनेवाला है। इसके लिये ब्रह्मचारीजीने जो सचित्र विज्ञापन छापे हैं वे अवश्य देखने और मनन करने योग्य हैं। उसका एक छंद इस प्रकार है—

दयाधर्म धारक सज्जन जन, जगसे करदो हिंसा दूर। धर्म बराबर रुधिर धारका, सागर उमड रहा भरपूर॥ रंग रुधिर मांस हाडमय, औषधि जो चरबीसे दूर। जिन चीजोंमें चर्म लगा हो, उन सबपर तुम डारो धूर॥

इस कविताका भाव क्या ही मनोहर है? आशा है अहिंसा पत्र भी बहुत ही आकर्षक होगा। इस पत्रका वार्षिक मूल्य ३॥) है। सभासदोंको विना मूल्य मिलेगा। हम हमारे पाठकोंको आग्रह करते हैं कि वे अवश्य इसको मगावे और विशेष कापियें मगाकर मुफ्त बांटे। धनिकोंको १०१) देकर स्थायी और साधारणको १) देकर चालू सभासद होना चाहिये।

पता–ब्र० ज्ञानानंदजी

स्याद्वाद महाविद्यालय–काशी।

* * *

लग्न किसका होता है?

लग्न तो कन्याका होता है और जैन शास्त्रमें कन्याके लग्नकी विधि है। कहींपर भी विधवाके लग्नकी विधि है ही नहीं तौ भी अभी बम्बईमें दशहराके दिन जो विधवा लग्नकी कार्रवाई हुई है वह अतीव आश्चर्यजनक और वीसवीं शताब्दिका नया ही आविष्कार समझा जायगा। हमारे पाठक विचार करने लगेंगे क्या यह सत्य है? हां अवश्य सत्य है। हमारे एक खण्डेलवाल पंडित उदयलाल कासलीवालने कई महिनोंसे एक बालविधवा ब्राह्मणीको **पत्नी रूपसे रख ली थी!!!** और उसके साथ आसोज सुदी दशमीको जैन विधिसे विवाह किया है! विवाहकी विधि पं० अर्जुनलालजीने की थी और वरके पिताका काम समाज सुधारक!!! वाडीलाल मोतीलाल शाह (स्थानकवासी जैन) ने किया था। हमने सुना है जहां कहीं ऐसा रिवाज है वहां विधवाका धरेजा होता है न कि लग्न, तब पं० अर्जुनलालजी आदिने कहांसे विधवा लग्नकी जैन विधि निकाली? दान तो कन्याका ही होता है न कि विधवाका। सेठीजीसे हमें जो आशा थी उसपर पानी फिर रहा है। और पं० उदयलालजीने पंडित होकर यह अतीव अनुचित और धर्म विरुद्ध कार्य करके जैन पंडितोंके नामपर बट्टा लगाया है।

* * * *

दीवाली और नूतन वर्ष।

हमारे परमपूज्य अंतिम तीर्थंकर श्री महावीर स्वामीका निर्वाण दिन-श्री दिवाली पर्व आ गया है। यह पर्व इतना

देहली अनाथाश्रम–का वार्षिकोत्सव ता० २३–२४ दिसम्बरको होगा।

पद त्याग–सेठ० गोकलचन्दजी दमोहने असहकारके कारण अपना रायसाहबका पद छोड दिया। देहली निवासी रा० सा० लाला प्यारेलालजी तथा पदमराजजी रानीवालेने कौंसिलकी मेम्बरी भी छोड दी।

जबलपुर–में जैन कन्या पाठशाला तो है ही और अभी जैन महिला पाठशाला तथा जैन महिला बोर्डिंग भी स्थापित हो गया। बम्बई श्राविकाश्रमकी दो महिलाएँ वहांकी फिमेल ट्रेनिंगकालेजमें प्रवेश भी कराई गई।

रतनपुरी–अयोध्याजीके पास सुहावल स्टेशन है वहांसे एक मील पर नोराहीगांव है जिसको पहले रतनपुरी कहते थे जहां श्री धर्मनाथ स्वामीका गर्भ-जन्म कल्याणक हुआ था। यह स्थान प्रसिद्धमें नहीं है इस लिये अब मालूम पडने पर यात्रियोंको रतनपुरीकी यात्राका लाभ भी लेना चाहिये।

दुष्कालमें सहायता–पुरी (उडीसा) में बडा भारी दुष्काल है। वहां बाबू लखीचन्दजी दि० जैन सुप० पुलिसने उद्योग करके अनाथालय और अन्नक्षेत्र खोला है जिससे अनाथोंको बहुत लाभ मिल रहा है। वहां सहायताकी आवश्यकता है। द्रव्य भेजनेका पता—बाबू लखीचंदजी जैन–पुरी (उडीसा)

भोपाल–में पं० लक्ष्मीचंदजीके जीवदयाके उपदेशसे मुसल्मानोंने इतना प्रेम दर्शाया कि उन्होंने करीब ८००) खर्च करके हिन्दुओंको पानी इत्रपान दिये जिसमें दस हजार आदमी उपस्थित थे।

प्राचीन स्तम्भ–देहलीमें सुगनचंदजीके मंदिरमें पत्थरकी मीनाकारीका एक सं० १९३का प्राचीन स्तम्भ संगमुसा काले पत्थरका है जिसमें मध्य भागमें दो तरफ तीन २ प्रतिमाएँ खुदी हैं।

मोलवीका दया प्रेम–देहलीमें एक मोलवीने गायकी कुर्बानी विरुद्ध "तर्के कुर्बानी गाओ" नामक १०००० पुस्तक छपवाई है जो अतीव उपयोगी है। इनको मगाकर मुसल्मानोंमें बांटनी चहिये। ला० पारसदास जैन खजांची देहलीके पतेसे मिल सकेगी।

पावापुरीजी–श्री महावीर स्वामीकी निर्वाणभूमिमें है। वहां वार्षिक मेला दीवालीके दिन होगा।

दाहोद–में पर्युषण पर्वमें १० गृहस्थ और ६ विद्यार्थियोंने यज्ञोपवित संस्कार किया था। गृहस्थाचार्य मा० दीपचन्दजी थे।

पद अस्वीकार–भिवानीके शास्त्रार्थमें आर्यसमाजीसे विजय पानेके उपलक्षमें पं० बनारसीदासजी अम्बालाको जो 'मिथ्यात्व तिमिर भास्कर'की उपाधि दी गई थी वह पंडितजीने अस्वीकार की है।

देहली–में जैन संस्कृत व्यापारिक विद्यालय स्थापित हो गया और करीब २६०००) का चंदा भी हो चुका है।

पद्मनजय चौगुले–दौडकी तीन शर्तोंमें प्रथम नंबर आकर यहां आ पहुंचे। आपका बहुत स्वागत हुआ था।

मेहर राज्य–में पशु बलिदान बिलकुल बन्द हो गया।

देहली–में श्र विश्राश्रम भी खुल गया।

कानपुरमें महासभा–की वार्षिक बैठक आगामी ता० १-२-३ अप्रैल चैत्र वदी ९-१० को होना निश्चित हुआ है। इस मौकेपर कानपुरमें रथयात्राका मेला तथा जैन साहित्य प्रदर्शन भी होगा।

अन्तरीक्षजीमें प्रां० सभा–बरार मध्य प्रादेशिक दि० जैन प्रांतिक सभाका वार्षिक अधिवेशन आगामी कार्तिक सुदी १५ और मगसर वदी १ को सेठ हिराचन्दजी नहाटा-थके सभापतित्वमें बड़े समारोहके साथ अंतरीक्ष पारसनाथ सिरपुरमें होगा। बरार मध्य प्रदेशके भाईयोंको निवेदन है कि इस समय पधार कर अपने प्रान्तकी उन्नतिकी चेष्टा करें तथा श्री अंतरीक्षजी पारसनाथके दर्शन कर पुण्यलाभ लेवें। इस तीर्थको अकोला स्टेशनसे जाना आना होता है। सड़क पक्की है। डेढ़ दिनका रास्ता है।

अजमेर–में अगामी ता० १ दिसम्बर को विद्यालय मंडपका खास मह त्व होगा।

म्हैसुर जैन बोर्डिंग–का वार्षिक जलसा गत ता० २३ को सोलापुर निवासी सेठ हीराचन्द नेमचंद दोशीके सभापतित्वमें बड़े समारोहसे हुआ था। शांतिराजय्या शास्त्री, ब्र० नेमिसा-गरजी वर्णी आदिके महत्वपूर्ण व्याख्यान हुए थे। करीब ७०००) का चंदा हुआ था। दबणगिरी मायप्पा, अण्णाप्पा कैंगाड़ें, ब ग्राउ बेदरप्पा, चक्रवर्ति जैनग, आणगिरी दुगाई आदि १००० मनुष्य पधारे थे।

ગુજરાતના નૃસિંહપુરા ભાઈઓને શું કુસંપજ વ્હાલો છે ?

જે ગુજરાત નામદારો અમિ, બાવલી, ખીલણ, સ્વાર્થ અધ કહેવાતી હતી તે ગુજરાતની પ્રજા અત્યારે ભારતવર્ષને સ્વતંત્રતાનો મંત્ર પાઠ ભણાવી તે સંપૂર્ણતઃ કેમ મળે તે માટે અગ્રગણ્ય બની ધર્મ યુદ્ધ કરી રહેલ છે, તે ગુર્જર મૈયા સંતાનો આપણે (નૃસિંહપુરા ભાઈઓ) શું કલહમાં રચી પચી રહેશુ ! અમદાવાદની અંદર એક કુટુંબના વ્યાપારી કલહને લીધે જે હડાય લગાડી ત્યા ગેરામાં તડો પડ્યા છે તે વાત કોઈથી અજાણી નથી. **બુહારીમાં** ફક્ત એક પક્ષમાં એકજ મનુષ્ય આજે કેટલા વર્ષોથી સત્યને ખાતર ગૌર્ય બતાવી જુદા પડ્યા છે તે વાત આપના કાન બહાર ન હોય. **સુરતમાં** હાલ વસ્તી વગરના સ્થાનમાં જંગી દેહેરું બંધાવી છતે પૈસે પૂજા પ્રક્ષાલના ઠેકાણું નથી, કહેણા રેવાઓ ચુકવી ઉછામણી (બોલી) બોલાતી નથી, પર્યુષણપર્વ જેવા પવિત્ર દિવસોમાં અંધેરને લીધે કોઇ ભાગ્યેજ દર્શન કરવા જાતું હતું, છતી પુછીએ આ રડાપો કોણ નથી જાણતું ! આવા પવિત્ર પર્વમાં નૃસિંહપુરામાં જે નિયમથી ઉછામણી બોલાતી હતી તેનું ઉલંઘન કરી ગામના દશ વાગે જલ માત્રનો વરઘોડો અભિ-ષેક ઈત્યાદી કરતા બળતી મસાલોથી નદી પર જે ભગતશાઓ ભોગ થઇ પડયા, અન્ય વર્ગીએ શરમના પોકારો કર્યા તે આપણે જાણીએ છીએ. સુરતના વર અને આમોદની કન્યાના થયેલા એક ગોત્રના લગ્નથી સુરતે તે બાબતે ખુલાસો કરવા પચે તેડાં મોકલ્યાં છતા હાજરજ ન થવાથી ત્યાની પંચે એક મતે નાતિ વ્હેવાર બંધ કર્યો તથા અષાડ વદ ૧ ને દિવસે જમતી પાંચ ગોત્રમાં કોઈ ચટકેલો સાબિત ન થાય ત્યા સુધી તેમાથી બહિષ્કૃત ન કરાય તેવું તે જમાડનારને પંચે લખાણ કરી આપ્યુ છે છતાંએ પાચે તત્નું બંધારણ ઢકાવી ગામ્યાગે લખાણનો ભંગ ! કરતાજ આવ્યા છે,

તે મુજબ એ બાઈ પાય ગોઠમાંથી પણ બહિષ્કૃત થયા ! (પંચને એટલી શક્તિ નથી મળી કે જૈન ધર્મમાંથી પણ કાઢી મુકે) ત્યારે આમોદમા પવિત્રોત્તમ પર્વમાં આખા વર્ષની ગયેલી ક્ષપણ-યુક્ત ક્ષેપણાને મિચ્છામિ દુક્કડથી ક્ષમાવવાની હતી ત્યા એજ કારણથી બે તડો પાડી બેઠા ! ધર્મનું અને ચાલતા આવેલા રીવાજોનું ઉલ્લંઘન કરી જ્ઞાતિમાં એક વખત ન્યાયના છણનારાઓ પણ કંઇ તોડ ન લાવી શકે અને તેવા સાથે સામેલ થય અને થોડા સમુદાયના ટુકડા કરવા એ શું શોભાપ્દ છે? કોઇએ ગુન્હો કર્યો હોય તો તેના ગુણ દોષોનું નીરીક્ષણ કરી તેનાપર મક્કમ રહી, તેની સાથે રહેવાવાળા ભાઇઓએ પણ સાથે રહી બે પક્ષો સામસામા બેસી જ્ઞાતીના હિતના પ્રશ્નોનો નીકાલ શું ન કરી શકે! વળી એક સુરતના (હાલ મુંબાઇમાં રહેતા) શેઠીઆ અમદાવાદમાં એક દેહરૂં બંધાવવા ઉભા થાયછે, પણ ગુજરાતમાં ઉપદેશકો નથી, આપણામાં અને યુવકોમાં જૈન દર્શનનું જ્ઞાન હોય એવો એક પણ ગુજરાતી ખોળ્યો જડે તેમ નથી, તો તેવે વખતે કયા મંદિરોની જરૂર છે? દેવમંદિરો કે વિદ્યા-શાળાઓની. આ લક્ષાધિપતિ શેઠને પોતાની પછાડી સંતતિ નથી, પારકાઓ તેના શોકના ગશે અને પોતાનું નામ રાખનાર દત્તક દિકરાને પણ તિલાંજલી આપી છે તો તે પ્રાતઃ સ્મરણીય શ્રીમાન્ શેઠ માણેકચંદ હીરાચંદને પગલે ચાલી મુંબઇ પ્રાંતિક કોન્ફરન્સે ગુજરાતમાં ખોલવા ધારેલા સંસ્કૃત વિદ્યાલયને ખોલવા, આ ફાની દુન્યાની હવા જ્યાંસુધી ખાવા સર્જિત છે પોતાને માટે ત્યાંસુધીનું ખર્ચ નીભે તેટલું અને પછાડીના ગાળો ન દે તેટલું દ્રવ્ય કાઢી બાકીની પુંજીનું આનું વિદ્યાલય ખોલવા ટ્રસ્ટ કરે તો ન દિકરાનો દિકરો, જગે જગે ગુજરાતનું ગૌરવ વધારનાર એક નહિ પણ સેંકડો દિકરાઓ પાકશે ને ગુજરાતની ધર્મશુન્ય પ્રજાને બોધ આપી જૈન દર્શનનું જ્ઞાન આપશે, તે આપ મોક્ષના અભિલાષી થશે, અને સદ્ગત શેઠની કીર્તિ, એ છત્રને તારાપાર મુકી બારીક અવલોકન કરી ગંભીરતાપૂર્વક વિચાર કરશે તો શ્રીમાન શેઠ માણેકચંદની કીર્તિ કરતા પણ ગુજરાતને ધર્મનું જ્ઞાન દાન આપવા ખરેખર અમર કીર્તિજ કરી જશે. આ વિષયાંતર થયો છે. આ શેઠ નૃસિંહપુરા જ્ઞાતિના છે, એટલે મારા વિચારો મુકવા યોગ્ય ધાર્યા છે.

જે ગુજરાત આજે ઐક્યતાનો મંત્ર ભણાવી રહ્યું છે, ગુજરાતના વીરપુત્ર મહાત્મા ગાંધીજીએ હિંદુ મુસલમાનની ઐક્યતાનો સ્તંભ ઉભો કર્યો છે, જે બેયાનો પૂત્ર ભારતની સરકારને, નગ્ન સત્ય જેવા શબ્દોમાં તેમના ધર્મનું પાલન કરાવવા સાફ સાફ કહી રહ્યો છે, તેજ ગુજરાતના આરણે સંતાનો શું કુસંપમાંજ સડયા કરીશું? ભાઇઓ, હવે તો આપણે શરમાવનારું છે. વડીલો અને યુવકો એકત્ર થઇ સત્યાગ્રહી બની અસતપનું બલીદાન આપી આપણી સમાજમાં સુમંપ કરી પ્રેમ, પ્રેમ અને પ્રેમનું સામ્રાજ્ય સ્થાપો. એજ વિનંતી.

લી० જ્ઞાતિહિતચિંતક

સરૈયા—સુરત.

मित्र-संवाद।

(ले० मास्टर दीपचद पवार, नरसिंहपुर।)

श्रावण सुदी नवमीकी रात्रि है। पानी रिम झिम रिम झिम वरस रहा है। अंधकारका एक क्षत्र राज्य है। बडी २ शहरकी सड़कोंपर तो म्युनिसिपलकी लालटेनें जलनेसे कुछ प्रकाश भी रहता है परंतु गलीकूचों अथवा ग्रामोंकी अवस्था तो कुछ कहनेमें ही नहीं आ सकी, वहां जहां सांझ हुई कि फिर नरनारियोंको १२ घंटेकी तो क्या किन्तु १४ घंटेकी खरी जेल [बंदीगृह] हो जाती है। आना जाना तो दूर ही रहे, शब्द भी नहीं सुनाई देता है। एक तो अंधेरा और दूसरे कीचड कांदा, अब कोई कहीं जावे तो कैसे? परन्तु प्रकृतिकी विलक्षणताको भी न्य है। कार्यनिमग्न पुरुषोंको दृढ प्रतिज्ञोंको अपनी अद्भुत शक्तिसे सहायता करती है। घोर काली रात्रिमें भी पथप्रदर्शककी तरह २ बिजली चमक जाती है जिससे मार्ग चलनेवाले अपना मार्ग निश्चित करके यथास्थल पहुंच जाते हैं। यदि प्रकृति देवी इस प्रकार सहायता न करती तो मनुष्योंके कार्यामें बहुत अपूर्णता रहती। आज ऐसे ही अवसरमें एक महाशय शाम होनेसे पहिले ही अस्पष्ट ब्यालू करके और अपनी सहधर्मिणी तथा बच्चोंको लेकर लारीके भरोसे घामे निकल पडे। साथमें छल्लू नाईको भी लालटेन देकर ले लिया। छल्लूने बहुत कुछ कहा,—भैयाजी, गाड़ी कमना लेवो परन्तु आतुरताके कारण योंही चल दिया। पर नके साम्हने भला वह लालटेन ठहरनेवाली थी? आखिर वार प्रकृतिने ही सहायता दी और यह परिवार अपने इच्छित स्थानपर पहुंच गया। यद्यपि अभी सांझके सात ही बजे थे परन्तु सिवाय टीनपर पानीकी टप टप आवाजके और शब्द तो सुननेमें ही नहीं आता था। सन्नाटा छा गया था। मालूम होता था अर्द्धरात्रि हो चुकी और लोग शयनागारमें पहुंच गये हैं। जिस स्थानपर उक्त परिवार गया है वहां म्युनिसिपलकी लालटेन जल रही थी कारण कि वह स्थान बम्बई रोड [आम रास्ते] पर है इसलिये झटसे उजेलेमें बच्चा बोल उठा। दद्दा दद्दा, जयचंद काकाजीका मकान आ गया। देखो देखो, यह ९४ मील लगा है। हां है नई, कहो हम कैसे जान गये। आज तो अपन यहीं रहेंगे क्यों दद्दा रहेंगे या नहिं?

इतनेमें ही बच्चेकी बोली सुनकर ऊपरसे जयचंदने देखा तो इनके प्रिय और भक्तमित्र टेकचंदजी सपरिवार आये हैं। चटसे उतर कर किवाड खोल दिये। जयचन्दने बच्चेको चटसे गोदमें उठा लिया और परस्पर जुहारु व्यवहार करते हुवे अन्दर गये। वहां पर एक सनका टाट बिछ रहा था जिस पर दरी पडी हुई थी और कोई आडम्बर नहीं था। एक पीतलकी समाईमें एरण्डीके तेलकी दो बत्तियां जल रही थीं। दुबहरसे लोहेका फनूस जिस पर पतला मलमलका लिहाफ लगा था टंग रहा था, चौकी पर श्री नियमसार ग्रन्थ विराजमान था, पास ही में खजूरकी चटाई डाले जयचंदकी स्त्री बैठीथी, छोटा पुत्र अमृतसागर जो अभी दो वर्षका है

स्वाभाविक चंचलतासे खिलौने उठाता रखता पटकता बजाता हुवा खेल रहा है।

जयचंद–आवो भैया पधारो, अरे सुशील यहां तो आवो। बेटी, देखो वे टेकचंद दादा आये हैं, दादाजी और भैया मिट्ठन भी आया है।

सुशील–दद्दाजो आता हूं, यह हिसाब कर लूं फिर आता हूं [ऊपर हीसे]

टेकचंद–आवो तो बेटा, देखो यह हम क्या लाये हैं?

सुशील–दादाजी, क्षमा कीजिये। मैं अभी आया, १ ही हिसाब शेष है। यदि रह जायगा तो कल मेरा नम्बर क्लासमें नीचा हो जावेगा और मार पिटेगी सो अलग। आप जो कुछ लाये हैं वह तो वहां जाता है?

जयचंद–भैया टेकचन्दजी, कुछ मत पूछो। यह लड़का जहां सांझ हुई कि ऊपर जा बैठता है और बराबर १० बजे तक कुछ २ पढ़ता लिखता रहता है फिर सवेरे ५ बजे उठता है फिर भी कुछ पढ़ता रहता है उसे कितना ही कहो परन्तु नहीं मानता।

टेकचन्द–तो क्या इतना बहुतसा पाठ दिया जाता है?

जय०–नहीं, परन्तु उसे किसीने कह दिया है कि डबल प्रमोशन लेना चाहिये सो स्कूलके पाठसे आगे २ घर पढ़ता है। सवेरे पाड़ौसके बच्चे गोपालदासके पास जाता है सीखता है। यह कमजोर बहुत है इससे मैं उसे परिश्रम करनेसे रोकता हूं।

टेक–तब उसे पाठ याद न होता होगा तभी तो इतना परिश्रम करता रहता है।

जय०–भैयाजी, ऐसा नहीं है। वह जब अपना स्कूलका तथा आगेकी कक्षाका पाठ सीखलेता है, तब मेरे पास बैठ कर धर्म पुस्तकें पूजा पाठ आदि पढ़ता है। और इससे फुरसत पाई तो कहीं पद्मपुराण, कहीं "जैनमित्र" अथवा बड़े २ महात्माओंके जीवन चरित्र पढ़ता है और उनमेंसे बड़े २ प्रश्न करता है।

टेकचन्द–तब तो अच्छा है, बालक बुद्धिमान है, देखो मिट्ठन सुशीलकी कैसी बड़ाई होती है? तुम तो दिन भर खेलते ही रहते हो।

मिट्ठन–अच्छा, अब हम भी सुशीलके संग मदरसा जावेंगे।

सुशील–(नीचे आकर और टेकचंद तथा उनकी स्त्रीको प्रणाम करके बैठगया] और पश्चात्–दादाजी बहुत दिनमें आये। मालती बहुत याद करती है, हमारे लिये क्या लाये?

टेकचन्द–यह मौजा लाया हूं।

सुशील–[देखकर मुंह बनाता और चुप रह जाता है।]

टेकचंद– क्यों बेटा, चुप क्यों रह गये? अबकी वार और बढ़ियां फेन्सी ला दूंगा। क्या करूं जल्दी जल्दीमें येही मिल सके।

सुशील–दादाजी, हमको फेन्सी नहीं चाहिये, हमको तो स्वदेशी चाहिये। चाहे वे मोटे भद्दे ही होवें, चाहे देखनेमें भद्दे होवें परन्तु हमको ये नहीं चाहिये। उस दिन महात्मा गांधीजी यहां (नारसिंहपुर)के स्टेशनसे तिलक महाराजके साथ निकले थे सो उनके शरीर पर मोटे खादीके कपड़े थे, तो भी उनका बड़ा सन्मान होता था, सो दादाजी कुछ दिखावट बनावटसे थोड़े ही

आदर होता है ? हमारे ददाने तो प्रतिज्ञा कर ली है कि स्वदेशी कपडे ही पहिरना और स्वदेशी पदार्थ ही खाना।

टेक-बेटा, इसमें क्या रखा है। अपनेको तो खूब जो मिले सो खाना और पहिरना सुखसे रहना, नाहकके झंझटोंमें क्यों पडना ? अभी तुम बचे हो, तुम तो खूब खावो खेलो।

सुशील-दादाजी, बच्चा ही तो बडा होता है सो जैसे बचा बडा होता है वैसे ही उसकी भली बुरी आदतें (प्रकृतियें, अभ्यास) भी बढती हैं ऐसा परसों गुरुजी कहते थे, इसलिये अभीसे ही अच्छी बातोंका अभ्यास डालना चाहिये। आप इन बातोंको झंझट कहते है, परन्तु जब अपन खानेको बैठें और कोई भूखा साम्हने चिल्लावे तो क्या उसे न देकर खाते जाना चाहिये ? महात्मा गांधी कहते थे कि यदि हम लोक स्वदेशी वस्त्र और भोजनका व्यवहार रक्खें तो बहुतसे गरीबोंका पेट पालन हो सक्ता है, शरीर तो मोटे और सादे वस्त्रसे भी ढंक जाता है और शीत उष्णसे भी रक्षा हो सक्ती है फिर क्या व्यर्थ खर्च बढाया जाय ? यदि हम लोग इस प्रकार अपने खर्चसे तकलीफ न उठाते हुवे कुछ बचावें और उसे देश व समाजके किसी कार्यमें लगाते रहें तो बहुत कुछ कार्य सहज २ हो सक्ता है, इसीसे ददाजीने कुर्सी टेबिलें सब उठा दी हैं और यह फर्श टाटका बिछाया है। ददा कहते है कि यह २६ वर्षके पहिले न फटेगा, और कुर्सी तो हमेशा टूट जाती थी, एक बार भगन कुर्सी परसे गिर पड़ा सो उसकी मूड़ फूट गई। दूसरी बात यह भी है कि कुर्सीपर बैठे हों और कोई आ गया तो उठना, फिर कुर्सी मंगाना। अब तो कोई भी आवे उसमे बैठ जाते है इसमें किसीको मानापमान नहीं मालूम होता है (पिताकी ओर देखकर) हां तुम्हीं तो कहते थे, दादाजी इतने ही तो ऐसा कहा था, अब हंसते है।

टेकचन्द-अच्छा बेटा, यह ले जावो सबेरे खा लेना।

सुशील-यह क्या है ?

टेक-सूरतकी बर्फी।

सुशील-क्या बनारसी शक्करकी है !

टेकचद- नही गुजरातमें प्रायः मोरिश ही खाई जाती है।

सुशील-तब मैं तो नहीं मा.ऊंगा।

टेक-मालतीको देदेना।

सुशील-हू ऊं २ जो चीज बुरी समझ कर स्वयम् न खावें वह दूसरोंको भी क्यों देना चाहिये ? एक दिन माताजी आलोचना पढ़ती थी सो उसका अर्थ ददाने ऐसा बताया था, कि 'कृत कारित मोदन करके' अर्थात् आप करे, दूसरेसे करावे और अन्य करनेवालेको भला माने इन तीनोंमें समान पाप पुण्य लगता है। क्यों माताजी ठीक है नहिं !

टेक-यह लड़का तो बडा होशयार है बोलने ही नहीं देता है। अच्छा बेटा खुश रहो, हम तुम्हारे लिये अब स्वदेशी वस्तुएं ही लाया करेंगे।

सुशील-[खुश होकर] प्रणाम करते हुवे, कृपा आपकी, सब आपहीका प्रसाद है ऐसा कह कर चला जाता है।

जयचंद–भैयाजी, अबकी बार तो बहुत दिनमें मिले।

टेक०–हां भाई क्या करें, कुछ ऐसी अड़चनें आड़ी पड गई, मैं तो दिसावरोंमें चला गया था, और जब कभी आता तो आप नहीं मिलते, यहां हमारे परम मित्र मूलचन्द्र किसनदासजी कापड़िया प्रथम तो बीमार हो गये बादमें कुछ घरू झंझटोंमें फंसे रहे। इत्यादि अनेक कारणोंसे मिलना नहीं हो सका।

जय०–ठीक है और कहिये कुछ नवीन समाचार है क्या?

टेक०–नवीन तो क्या? सुना है पं० अर्जुनलाल सेठीने जो खंडेलवाल हैं हुंबड़के साथ अपनी लड़की ब्याह दी, और पं० उदयलाल काशलीवालने किसी विधवा ब्राह्मणीको घरमें रख लिया है।

जय०–फिर क्या हुवा?

टेक०–होगा क्या? यही कि जातिसे बंध कर दिया।

जय०–और मंदिरसे।

टेक०–उदयलालको तो बम्बईमें मंदिर भी बंद है और होना भी चाहिये। ऐसा २ काम करें फिर क्यों नहीं जाति और मंदिर बंद किया जाय?

जय०–क्यों भैया, ऐसे जाति तो मानव समाजका एक भाग है, कदाचित् उसके संगठनके नियमानुसार भले ही च्युत कर दिया जाय, परंतु मंदिर तो धर्मायतन है, वहां जाने पर ही तो मनुष्योंको अपनी अपनी भूलोंका पता लग सक्ता है। वहां ही से वो अपने पापोंका प्रायश्चित्त कर सक्ता है। वीतराग छवि और वीतराग वाणीके निमित्तसे ही तो कषायोंकी मंदता हो. कषायोंकी मंदता हो सक्ती है सो जब यह सुधारका मार्ग ही बंद हो गया तो फिर कैसे सुधरेगा? दण्डका अभिप्राय तो मेरी समझसे यही है कि जिससे पापी पापसे भयभीत होकर पुनः पाप न करे और पूर्व पापपर पश्चात्ताप करके उसका प्रायश्चित्त करे।

टेक०–यदि मंदिर बंद न किया जायगा तो फिर पंचोंका दबाव ही कौन मानेगा?

जय०–जातिके दण्डसे।

टेक०–यदि कोई अकेला ही हो जैसे ब्रह्मचारी, विधुर, विधवा इत्यादि तो?

जय०–तो उसे दण्ड देकर व्यर्थ दबानेसे क्या प्रयोजन है?

टेक०–फिर तो सब स्वच्छंद हो जावेंगे और मनमाना करेंगे।

जय०–सो तो अभी ही करते हैं उन्हें कौन रोकता है? हजारों गर्भपात होते हैं, हजारों वेश्यावोंके दर्वाजों पर पिटते हैं। हजारों तीर्थोंमें जाकर अपने पापोंको छिपाते हैं कहांतक कहें? क्या आप नहीं जानते हैं?

टेक०–हां भाई, यह तो जानता हूं। पं० उदयलालसे भी एक पंडितजी महाराजने कहा था कि ऐसा मत करो, तुम भले ही मोटरोडकी हवा खालिया करो, परंतु उदयलालजीने इसे उचित न समझा, इसमें उन्होंने हानि ही समझी अर्थात द्रव्य तो खर्च होता ही, समय बहुत नष्ट होता, दिनरात आतुरता और अनेकों प्रकारके भय रहते तिसपर भी तकलीफें तो वैसी ही रहतीं किन्तु और भी बढ़ जातीं, चोरीसे गुप्त

पाप करना अच्छा नहीं। इसमें उन्हें विषयसुखकी खाज तो कदाचित कुछ कम हुई ही होगी परंतु रोटीपानी आदिका भी सुभीता हो गया ! मंदिर जानेके सिवाय सुना है कि वे स्वाध्याय आदि अन्य धर्म साधन तो बराबर करते हैं !

जय०—भाई सा०, आजकल हमारी समाज और जातियोंके कर्णधारोंकी गति बहुत विचित्र है, जो इन कलिकालीन महात्माओंकी हांमें हां करे, और इनकी बात मानता जाय वही धर्मध्वजी और जहां कुछ शिर हिलाया कुछ पुछपाछ की कि फिर उसे यदि इनके ही हाथ न्याय होता तो सांतवेंकी तो क्या और भी एकाध नर्क बढ़ा देनेको ये तैयार होते। अच्छा, उदयलालजीने ब्राह्मणी और तिसपर विधवासे सम्बन्ध कर लिया उन्हें तो वेद किया सो ठीक ही है परंतु अर्जुनलालजीने कौनसा अन्याय किया जो एक दिगम्बरी जैनी हूंमड [वैश्य] ही से पुत्रीका सम्बन्ध किया ? —

टेक०—जाति विरुद्ध तो किया !

जय०—जातियोंके नियम स्वेच्छापूर्वक हैं या किसी ग्रन्थाधारपर ?

टेक०—ग्रन्थ २ तो नहीं जानते हैं परंतु ऐसा ही चलन है कि जाति २ में ही बेटी व्यवहार होता।

जय०—और रोटी !

टेक०—यह भी बहुतसी जातियोंमें ऐसा ही नियम है कि वे स्वजातिके ही यहां खाते हैं जैसे पोरवाड़, सैतवाल आदि अन्य जैन जातियोंके यहां नहीं जीमते हैं।

जय०—इसका कोई कारण भी ज्ञात है ?

टेक०—नहीं, परन्तु प्रथा ऐसी ही है।

जय०—भला जब कि धर्म एक है और क्रियायें समान हैं तब जीमनमें कौनसी अड़चन है ?

टेक०—अड़चन तो कुछ नहीं है परन्तु प्रथा बिगड़ती है।

जय०—इससे कोई हानि तो नहीं होती।

टेक०—हानि तो नहीं परन्तु लाभ भी तो नहीं है ?

जय०—लाभ तो है। इससे देश विदेशमें यात्रार्थ वा व्यापारार्थ जानेमें भोजनके निमित्तसे होनेवाला भ्रष्टाचार नहीं होता है, जहां जावो और वहां यदि कोई जैनी है तो उन्हें तो साधर्मी (अतिथि) लाभ और जानेवालेको शुद्ध भोजनका लाभ होता है। यात्रादिमें कुछ कठिनता नहीं मालूम होती है, परस्पर प्रेम बढ़ता है।

टेक०—भला यह तो ठीक है और अब सिवाय दो एक जातियोंके अब यह तो हो गया है कि समस्त जैन जातियां परस्पर भोजन व्यवहार करने लगे हैं परन्तु.......

जय०—भाई सा०, करने क्या लगे यों कहो समझने करा लिया और केवल जैनियोंमें ही परस्पर नहीं किंतु अजैनोंमें भी अर्थात् अब जैन धर्मसे सर्वथा अनभिज्ञ ब्राह्मणोंके हाथोंका बनाया भोजन भी प्रायः सभी जातियोंमें धड़ाधड़ उड़ता है और जैन अजैन कई जातियें साथ बैठ कर खाते हैं।

टेक०—भाई, यह तो कोई अंग्रेजी पढ़े करते होंगे ?

जय०—नहीं साहब, जिन्हें अंग्रेजीकी गन्ध

तक नहीं मिली वे मैंने स्वयम् मालवादि प्रांतोंमें साढ़े बारहके जीमन देखे हैं ?

टेक०—पक्का भोजन करते हैं।

जय०—पक्का कह कर दोष थोड़े ही टलता है। आटेमें नमक पानी पड़ता है, अंगार पर सेका घीमें तल दिया, दाल पतली न बना कर कुछ काढ़ी रक्खी इसमें हुवा ही क्या ? आपने क्या किसी जैन ग्रन्थमें पक्की कच्ची फलाहारी व अनाज आदिका भेद पाया है तो बतावो।

टेक०—ना भाई, परन्तु लोकमें तो योंही चलता है।

जय०—भाई सा० यों तो कोई बातका निर्णय न होगा। या तो आप लोक व्यवहार पर चलो, या समयके परिवर्तन पर चलो, या युक्ति प्रमाणों पर चलो या धर्म ग्रन्थोंके आधार पर चलो तब निर्णय होगा।

टेक०—धर्म अनेक नय है सो जहां जैसा लगे लगा लेना चाहिये।

जय०—आप भूलते हैं। धर्म अनेक नयात्मक नहीं है किन्तु पदार्थोंमें अनेक धर्म होते हैं और उनका ज्ञान छद्मस्थको अनेक नयोंसे होता है, नय पदार्थ नहीं हैं और न पदार्थ नय हैं। इनका स्वरूप समझे विना दुरुपयोग नहीं करना चाहिये, यह कोई जीवादि पदार्थोंका विचार नहीं है किन्तु यह है समाजका लौकिक व्यवहार और उसका सम्बन्ध है श्रावकाचारादि ग्रन्थोंसे इसलिये इस परसे ही विचार करना चाहिये।

सुनिये, यदि आप रूढ़ियों पर चलते हैं तो रूढ़ियें कुछ लोगोंके द्वारा किसी नियमका अर-ंश होनेसे बन जाती हैं। और अपढ़ लोगों द्वारा चलती रहती हैं सो शास्त्रों जिसके यहां जो भली बुरी रूढ़ियां हैं सबको धर्म और सत्य ठहराना पड़ेगा फिर हमारा सोना १०० टांचका न रहेगा सबहीका मानना होगा। यदि समयानुसार मानते हैं तो फिर इस युगमें जो नये परिवर्तन हो रहे हैं, उनके अनुसार जातिकी बात क्या है धर्मका पता लगना कठिन हो जायगा। यदि युक्ति प्रमाण लेते हैं तो धर्मसे बाधा नहीं आवेगी क्योंकि जैनधर्म युक्ति पूर्ण है परन्तु रूढ़ियां हवा हो जांयगीं, परन्तु इसके लिये कुछ विशेष बुद्धिकी आवश्यकता है। अब रहा शास्त्र सो इसे माननेमें ही कल्याण दीखता है और कदाचित् कुछ लोगोंको छोड़कर प्रायः सभी मानेंगे।

देखो आदिनाथपुराण, हरिवंशपुराण, पद्मपुराण, श्रेणिकपुराण, श्रीपालपुराण आदि तथा त्रिवर्णाचार, सागारधर्मामृत आदि, छह ढाला, रत्नकरण्ड आदि। इन ग्रन्थोंमें साफ तौरसे ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्योंके परस्पर रोटी बेटी व्यवहारकी आज्ञा और बड़े पुरुषोंके दृष्टांत दिये हैं। यहां तक कि चक्रवर्ती आदि राजाओंने म्लेच्छ राजाओंकी कन्याओंका सम्बन्ध किया और विजाती पुत्र जो उससे हुवा, वही राज्यका उत्तराधिकारी हुवा इत्यादि कथन है। सो भाई अर्जुनलालने क्या वेजा किया ? उनका कार्य शास्त्रानुकूल है, जो लोग उन्हें इस कार्य परसेही जातिच्युत करते हैं वे धर्म शास्त्रोंके विरोधी हैं। [illegible] उन्हें बाबू सूरजभानु तथा जुगल[illegible] आदिके अनुयायी क्यों न कहें ? क्यों

वे बाबूगण तो केवल कागजी कार्यवाही करते हैं, व कते लिखते हैं, परन्तु ये उनके अनुयायी छुपे रुस्तम मुंहसे बाबू लोगोंकी निंदा करते, पुराणोंका पक्ष लेते और कार्य वे ही करते जो शास्त्र विरुद्ध होवें। यदि ये लोग शास्त्रानुयायी होते और पुराणोंके भक्त होते तो कदापि काल भी शास्त्र विरुद्ध झूठी रूढ़ियों पर आरूढ़ न रहते, उन्हें तोड़ मरोड़ कर शास्त्रानुसार अपना चलन व्यवहार करते।

टेक-भाई सा०, यह बात तो ठीक है। ग्रन्थोंमें तो ऐसाही लिखा है। इसके अनुसार सेठी अर्जुनलालने कोई अनीति वा कुरीति नहीं की है, परंतु उदयलालजीकी बात तो आपको ठीक मानना पड़ेगी।

जय०-जीहां, हालमें उदयलालको चाहेसो कहे क्योंकि वे अभी इस कार्यमें अकेले ही हैं परंतु जब उनकी संख्या बढ़ जावेगी तब यह कहना भी न बनेगा, देखोना प्रथम कुशलगढ़ (बागड़) में एक ढूंढ़ड सदा मुखिया हुआ तब बहुत बुरा कहलाया, खूब चर्चा हुई, बहुत डंगर पाया गया, अब ५-७ वर्षमें वे ५० घरके लगभग हो गये। मागवाड़का एक मन्दिर उनके कब्जे हो गया, दिनों दिन बढ़ रहे हैं। परवारोंके विनैक्योंकी प्रतिदिन कटमितिके व्याजके समान संख्या बढ़ रही है, उनके शिखरचन्द्र मंदिर और रथ प्रतिष्ठाएं धड़ा धड़ होती जाती हैं।

टेक०-हांजी, यह तो सत्य है, तब क्या उदयलालजी जैसे भी बहुत हो जांयगे।

जय०-क्या कुछ सन्देह है?

टेक०-क्यों भाई कुछ उपाय भी है कि भविष्यमें ऐसा न होवे?

जय०-उपाय तो बहुत बहुत हैं परंतु उनका होना कष्टसाध्य ही नहीं किन्तु असाध्य (असंभव) ही है।

टेक०-सो क्यों? मनुष्योंके लिये क्या असाध्य है?

जय०-मनुष्योंकी बात नहीं है यह तो है जैन समाजकी बात।

टेक०-जैन समाजमें क्यों कठिन है?

जय०-इस लिये कि जैनियोंमें न तो विद्या है न कोई सच्चा मार्गदर्शक नेता है, न कोई राजा ही है। इसीसे चन्द्रमाके अभावमें जुगनू (आगिया) ही चन्द्रमा बन बैठो, जातिके मुखिया (आगेवान Leader) वे लोग हैं जो धर्म शास्त्रका शब्द नहीं जानते, न्याय नीति जहां प्रवेश नहीं कर सक्ती है, विचार और तर्कको वहां स्थान नहीं दिया जाता है इस लिये मनमानी करते हैं और जिनमें उनका स्वार्थ साधन होता है वही सत्य है धर्म है नीति है सर्व मान्य है।

टेक०-तब पंडित लोग क्यों नहीं कुछ कहते?

जय०-ये बिचारे कह कर क्या अपनी आजीविका खोवें? इन्हे तो वही कहना है जो उन मुखियोंका कहना है। इनके शास्त्रोंमें और कोषोंमें वही लिखा है या लिख जाता है जो इनके आश्रयदाताओंके मुखोंमें रहता है।

टेक०-क्या सभी पंडित गण ऐसा करते हैं?

जय०-उपायान्तर-न कि सर्व हीं।

टेक०-तब वे क्यों नहीं इसका आन्दोलन करते?

जय०-एक तो है थोडे सो नगाड़खानेमें

तृतीकी आवाज कौन सुने? दूसरे वे बेचारे स्वयम् धनिक नहीं है, इन लोगोंने रुपया संस्थावोंमें देकर पढ़ाया है सो ये लोग उन्हें कृतघ्नी आदि उपाधियोंसे भूषित करते हैं, हठी उजड्ड आदि कहकर बहिष्कार करते हैं और फिर संस्थावोंमें सहायता करना छोड़ बैठते हैं तात्पर्य द्रव्येषु सर्वे वशाः।

टेक०—अच्छा, यह बात जाने दो उपाय तो बतावो।

जय०—लेवो सुनो घबराना नहीं, २० वर्षसे नीचे बालक और १६ वर्षके नीचे बालिकावोंका व्याह न होवे जैसा ग्रन्थोंमें लिखा है। पुरुष ४९ वर्षके ऊपर व्याह न करें, स्त्रियोंके समान पुरुष भी अपना दूसरा व्याह न करें। १ पत्निव्रत रक्खे, समस्त जैन जातियां परस्पर व्याह सम्बन्ध करें, और यदि आवश्यक्ता पड़े तो अन्य त्रिवर्णोंसे जिनका आचार उत्तम होवे सम्बन्ध करें, जातिमें कुंवारोंकी संख्या न बढ़ने पावे, मुखिया लोग अपने २ थोकका ध्यान रक्खें और योग्य वरोंका यथायोग्य सम्बन्ध करा दिया करें, अनुचित सम्बन्धोंको रोक देवें इत्यादि प्रबन्ध यदि हो सके हो विधवा व्याह रुक जावेगा क्या चलेगा ही नहीं, क्योंकि यह कार्य आदर्शको गिरानेवाला है।

टेक०—इन कार्योंमें राज्यकी सहायता नहीं मिल सक्ती है क्या?

जय०—हां, यदि प्रयत्न किया जाय तो बाल्य व्याह, वृद्धव्याह, कन्या विक्रय, इनके या दूसरा व्याह बंद हो सके हैं। इसके लिये यदि समाज राजी होवे और सर्कारसे प्रार्थना करे तो कानून (act) बन सक्ता है परन्तु क्या कोई इस लिये तैयार होगा? तुम्हे भरोसा है क्या?

टेक०—भाई सा० बात तो सत्य है स्वार्थ और पक्षपातके आगे किसकी चलती है। यह तो वही समय है कि जिसके हाथ लाठी उसीकी भैंस है चाहे जहां हांक ले जाय। जाति व समाज कहीं जाय, हमारा तो हाल सितारा चैमक ही रहा है। जिसकी झोपडी जलती है वही बिचारा रोता है और तो मूछों पर ताव दिये फिरते हैं। वास्तवमें उदयलाल आज ८ वर्षों जयपुर जोधपुर मारवाड़ मेवाड़ मालवा दक्षिण सब जगह चक्कर मार आये, दो तीन हजार तक चाहा भी कि सोदा बन जाय पर न बना आखिर तो मनुष्य है। सभी भीष्मपितामह तो नहीं हो सक्ते हैं। जयचन्द्रभाई, किसीका क्या, बिगाड़ तो समाजका है। इसकी जड़ें कट रही हैं। कुछ जाति च्युत होकर घटे, कुछ कुंवारे रह कर मरे, कुछ विधुर (रंडवे) और विधवाएं मरीं, कुछ गरीबीके कारण धर्मच्युत हुवे, कुछ धर्मसे अनभिज्ञ होनेसे विधर्मी बन गये, इत्यादि कारणोंसे दिनों दिन यह जाति घटती जा रही है। धर्म तो धर्मीके आश्रित रहता है सो धर्मी ही नहीं रहेंगे तो धर्म किस आधार रहेगा?

जय०—भाई, अभी तो विनैकया आदिको मंदिरमें आनेसे रोका जाता है परन्तु भविष्यमें क्या होगा जब जैनी न रहेंगे, हाय भगवान्! विनाश काले विपरीत बुद्धिः। प्रभु हमारे मुखियोंको सुबुद्धि देवो (ऐसा कहते २ जयचंद्रके आंसू गिर पडते हैं)

टेक०—[देखकर] भाई जयचंद्र, धैर्य रक्खो, शोकसे क्या होगा ? भवितव्य प्रबल होती है। रात्रिके बाद दिन होता है, गिरने पर ही उठना है, प्रयत्न तो करना चाहिये।

जय०—(समझ कर) हां ठीक है, इसको कौन मना करता है करो परन्तु छू छाकों कौन पूछ—भला है अपने परिणामोंसे अपना तो भला अपने परिणामोसे अपना तो भला है किसीका कुछ होवो या न होवो, प्रयत्न करना ही चाहिये।

टेकचंद्र—अच्छा भाई, अब शयन करो। मैं जाऊंगा। आपसे बहुत कुछ और भी बातें करना था परन्तु समय बहुत होगया है फिर कभी देखेंगे।

जय०—भैया रात्रि अंधेरी है यहीं आराम करो। सवेरे स्वाध्याय करके जाना। बच्चा बच्ची भी सो गये हैं। भाभीजी भी अलसा रही हैं, यह भी तो घर है। यहां पर सुखानंद मुनीमजी हैं ही, चिन्ता क्या है ?

टेकचंद्र—जी तो जानेको नहीं होता परन्तु लाचार हो जाना पड़ता है। फिर जैसी आप कहें। अच्छा छल्लू तू जा, मुनीमजीको कह देना भैयाजी आज यहीं ठहरेंगे, तुम बंदोबस्त करके सोवो। छल्लू जाता है और सब सो जाते हैं, और हम भी अब सोते हैं, श्री पंच परमेष्ठी भगवानकी जय।

धनवानोंसे विनय।

हे धनवानोंसे विनय आज यह मेरी।
धन पाकर देखो दान करो मत देरी ॥टेक॥
तुमने परभवमें पुन्य कमाया होगा।
दुखियोंको लख कर दान दिलाया होगा ॥
भूखेको भोजन दिया दिलाया होगा।
अरु तृषावंतको नीर पिलाया होगा ॥
जिसका फल सारा मिला तुम्हें इस बेरी ॥धन०॥

\+ २ +

यह सत्य बात है झूठ न कोई बतावे।
जब मृत्यु होय तब साथ नहीं धन जावे ॥
सब पड़ा रहे धन धर्म साथ ही जावे।
खावे कुटुम्ब नहि हाथ तुम्हारे आवे ॥
इससे प्यारे यह बात मान लो मेरी ॥ धन०॥

\+ ३ +

ये निर्धन महा गरीब भूखके मारे।
करते हैं याचना तुमसे दीन विचारे ॥
हे दाता अब हम आये सरण तुम्हारे।
तलफत हैं भूखसे देखो प्राण हमारे ॥
उनकी सहायता करो विनय यह मेरी ॥धन०॥

\+ ४ +

जे लूले लँगड़े नेत्र हीन फिरते हैं।
अति दीन नहीं मजदूरी कर सक्ते हैं ॥
अरु वस्त्र हीन जो हिम बाधा सहते हैं।
ये सदा दीनता भार वहन करते हैं ॥
उनकी सहायता करो विनय यह मेरी ॥धन०॥

\+ ५ +

क्या इसी लिये यह धन तुमने पाया है।
नित करो ऐश आराम जो मन भाया है॥
कोमल तकियासे टिक पान खाते हो।
नहि दीन-दुखियोंकी ओर दृष्टि लाते हो॥
क्या यही आपका धर्म कहो इस वेरी ॥धन०॥

\+ ६ +

तुम सदा सरस मय भोजनको करते हो।
दीनोंको रुक्ष रोटी भी नहि देते हो॥
बढ़ मूल्य रेशमी वस्त्र पहिनते तुम हो।
दीनोंको एक चिथड़ा नहि देते तुम हो॥
क्या इसी लिये तुम पाई द्रव्य घनेरी ॥धन०॥

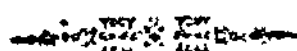
\+ ७ +

अब हो जाओ हुशियार मान लो कहना।
जग बीच तुम्हारा दो दिनका है रहना॥
कर प्रीत धर्म सों भवसागरसे तिरना।
यह सीख सुगुरुकी सदा हृदयमें धरना॥
तुम दया दान नित करो मिटे भव फेरी ॥धन०॥

\+ ८ +

तज स्वारथ प्यारे परमारथमें लगना।
नित पराधीन दुखियोंका सहारा करना॥
निज शक्ति सहित कर दान दीन दुख हरना।
इस विधसे अपने धनको सफिलत करना॥
कहें 'गोरेलाल' स्वीकार विनय करो मेरी ॥धन०॥

पं० गोरेलाल जैन, रैपुरा।



"हमको चाहिये"

१-इस दुर्लभ मनुष्य जन्मको पाकर व्यर्थ न खोना क्योंकि यह आगमका उपदेश है कि मनुष्य जन्मका मिलना बार बार नहीं होता, इस लिये हमको चाहिये कि हम अपने मनुष्य जन्मको सफल करे।

२-अपने आत्माको क्रोधादि कषायोंसे बचाना क्योंकि इनके द्वारा आत्माके ज्ञानादि गुण नष्ट होते हैं, इस लिये हमको चाहिये कि क्रोधादि कषायोंसे बचाकर अपने आत्माकी रक्षा करें।

३-समस्त जीवोंपर करुणा भाव प्रदान करना, किसीको सताना नहीं, मित्रो! जो जीव आपके द्वारा सताये जावेंगे और उनको जो दुःख होगा उस दुःखके भागी आप ही होवेंगे इससे जीवोंकी रक्षा जरूर ही करना चाहिये।

४-संसारके सब जीव सुख चाहते हैं और दुःखसे डरते हैं, अगर आप उनके सुखमें किसी तरहकी बाधा डालेंगे तो याद रक्खो कि आप भी सुख नहीं भोग सकोगे।

५-मूक पशुओंको भूखा मत रक्खो। उनके लिये घासादिका पूरा बन्दोबस्त करो। भूखसे 'उनकी आत्मा' मत दुखावो। मित्रो! भूखकी वेदना किसीसे सहन नहीं होती। इस विषय पर आप स्वयं विचार करे।

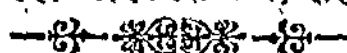
६-संसारमें आकर सबके प्यारे बनो, किसीकी द्रष्टिसे बूरे मत होवो क्योंकि जो मनुष्य सबका प्यारा होता है वही संसारमें सराहनीय और आदरका पात्र है।

७-जिन दुर्गुणोंके द्वारा आप सबके प्रति बुरे हैं उन दुर्गुणोंको निकालनेकी कोशिश करो

और सद्गुणोंके ग्राहक बनो। जब आप दुर्गुणोंको त्याग सद्गुणोंके पक्के ग्राहक बन जावेंगे उसी वक्त मनुष्य आपको प्रेमकी दृष्टिसे देखेंगे।

८—जो आप सबके प्रेमी बनना चाहते हैं तो आप भी सब पर प्रेम करो! क्या बालक, क्या वृद्ध, क्या गरीब, क्या अमीर, क्या ऊंच, क्या नीच, क्या मूर्ख क्या पंडित, और क्या शत्रु, क्या मित्र, सब पर एकसा प्रेम प्रदान करो, फिर देखो आप भी सबके सच्चे प्रेमी बने जाते हो या नहीं।

पूजारी गोरेलाल जैन, सहजपुर।



रायदेशके पंच और समाजसुधार।

(ले० पं० नंदनलाल जैन वैद्य, ईडर)

भिलोडामें रायदेशके समस्त पंच एकत्रित हुए थे। पंचोंकी जाजम आठ दिन रही थी। पंचोंने फिजूल खर्चेका अटकाव करनेके लिये कितने ही ठराव पास किये। यदि इन ठरावोंके अनुकूल समस्त पंच अपना अपना कार्य करें तो कुछ समयमें अवश्य लाभ हो सकेगा। इसमें किसी प्रकारका संदेह नहीं कि ये ठराव बड़े ही महत्वके और उपयोगी हैं, ठरावोंका पास होना सब कुछ सरल है और सब जने ऐसा करते ही हैं, परंतु ठरावोंको अमलमें लाना अच्छा है। मात्र ठरावोंके पास होनेसे विशेष लाभ नहीं।

रायदेशके ये शुभ चिन्ह हैं। रायदेशकी यह प्रथम जाग्रति है। संसारमें रायदेशके समान कोई भी प्रांत सबसे पीछे नहीं है। रायदेशमें धर्म जाग्रति नहीं, ज्ञानका लक्ष नहीं, कर्तव्यके चिन्ह नहीं, आत्मबोध नहीं आदि सब बाबतमें रायदेश सबसे पीछे है। इतना नहीं किन्तु रायदेशको इतना ज्ञान नहीं कि हमारी भलाईके कारण कौनसे हैं। रायदेशकी संतान धर्म विहीन है, रायदेश दश वर्षसे बोर्डिंग खोलना चाहता है परंतु शक्तिहीन है, द्वेष और अभिमानसे पूर्ण है, रायदेशके कितने ही आगेवान बोर्डिंगसे लाभ नहीं समझते, उनको उन्नतिकी बातें आखोंमें खटकती हैं। कुछ भी हो, रायदेश अभी गहरी नींदमें सोना चाहता है। उसे यह ज्ञान नहीं कि उसका सर्वस्व लूट रहा है, संतान हीन दीन दुःखी हो रहे हैं। ज्ञान मिलनेके विचारोंको कुछ साधन नहीं है। क्या रायदेशके पंच यह कभी सोचते हैं कि हमारी संतानको ज्ञान मिले, व्यापारका सुभीता हो, धार्मिक विद्याकी वृद्धि हो। नहीं, नहीं रायदेश अभी जुनी रूढियोंमें दिन व्यतीत कर रहा है।

रायदेशके समीप कांठा है। जब कांठाके पंच उत्तमोत्तम ठराव पास कर जग उठे हैं, उनकी पंचायत एक दो दिनमें अच्छे कार्य कर उठ जाती है तब रायदेशके पंच अब एकत्रित होते हैं और विचार करते हैं, यह भी अच्छी बात है। प्रारंभमें ऐसी ही जाग्रति होती है धीरे २ यह विशाल रूप धारण करती है। रायदेशके भी इस जाग्रतिसे शुभ परिणामकी आशा है।

रायदेश समझ रहा है कि बिना पंक्ति भोजन पंच एकत्रित नहीं हो सक्ते। इसलिये जब २ पंच एकत्रित होते हैं दो एक हजारका पानी

हो जाता है। यदि वे खानी पीनीमें विशेष द्रव्य खर्च न करके कोई उपयोगी संस्था खोल दें तो कितना लाभ ?

पंचायतके नियम ऐसे सुभीतेके होने चाहिये कि किसीको कष्ट न हो, असुविधा न हो, सहलाईसे काम हो सके। गरीब अमीर सब कोई भाग लेसके परन्तु रायदेशके नियम इससे बिलकुल विपरीत हैं। दश दश दिन तक एकत्रित होकर बेकार पडे रहना वर्तमान समयके विरुद्ध है। पंचोंके एकत्रित होने पर जीमनोंकी चाल बहुत बुरी है। कांठाके पंच दाल रोटी खाकर साधारण खर्चमें कितना काम करते हैं, कांठा कितना सुधर गया है, सब पंच नियमित तारीख पर एकत्रित हो जाते हैं तो रायदेशके नहीं ?

भाइयो, यह बात कोई झूंठ मूंठ निंदाके लिये नहीं लिखी है किन्तु आप विचारो कि आप कितने पीछे हो। ये बातें पंचोंके शोभाकी नहीं है। अब इन नियमोंमें फेरफार कर देना चाहिये और खराब रूढ़ियोंको छोड़ देना चाहिये।

कांठाके पंचोंने अपनी संतानको सुधारनेके लिये बोर्डिंग खोल दिया है और एक अच्छी रकम एकत्रित करली है। क्या रायदेश कांठासे बिलकुल गिरा हुआ है। क्या उसको इस बातसे लाज नहीं आती है ? क्या रायदेशमें बिलकुल शक्ति नहीं ! रायदेशके भाई कांठाकी अपेक्षा अधिक धनवान हैं, परन्तु वे अभी विद्याका महत्व नहीं समझे हुए हैं। वे विद्याके कार्योंमें द्रव्य खर्च नहीं करना चाहते हैं उनको अभी तक आत्म भलाई नहीं है। भाइयो, चेतो, विचारो अपने कर्तव्यों पर आरूढ़ हो।

उच्च भावना.

(લે० કેશવલાલ ત્રીભોવનદાસ, વડોદરા)

દરેક મનુષ્ય માત્રે હમેશાં ઉચ્ચ ભાવનાઓ રાખવી જોઈએ. આ સંસારમાં દરેક જીવને સુખની અભિલાષા હોય છે અને કોઈને દુઃખ ભોગવવાની ઇચ્છા હોતી નથી, તો પ્રથમ દરેક મનુષ્યે સાચું સુખ શું છે, અને તે સુખ કેવી રીતે પ્રાપ્ત કરવું તેનું જ્ઞાન સંપાદાન કરવાની ખાસ જરૂર છે. દાખલા તરીકે-આપણી દેહના તથા કુટુંબના પોષણ (ઉપજીવિકા) માટે અનેક ઉદ્યમ કરી ધન પ્રાપ્ત કરવાની ઇચ્છા રાખીએ છીએ ને ધન પ્રાપ્ત કરી ઉપજીવિકાનું નાશવાન ઇંદ્રિય સુખ મેલવીએ છિએ. તેમ સાચું સુખ પ્રાપ્ત કરવાને માટે દરેક મનુષ્યે દિગંબર જૈન આચાર્યોએ કહેલા તત્વોનું શોધન કરવું ને તે તત્વો મુજબ હમેશાં સંસારથી વિરક્ત રહી ગ્રહસ્થોએ-દેવપૂજા, ગુરૂની ઉપાસના, સ્વાધ્યાય સંયમ, તપ, અને દાન, એ કર્મો હમેશાં કરવાની ભાવના રાખવી, છતાં કોઇ ગ્રહસ્થ બંધુઓથી એ ક્રિયાઓ બની શકે. તેવી શક્તિ અને સંજોગો ન હોય તો પણ તે છ કર્મો કરવા ક્યારે વખત મળશે તેવી હમેશાં ઉચ્ચ ભાવના (વિચાર)માં રહેવું જેથી તે સમય પણ આવી મળશે ને છ કર્મો થશે ને અન્તિમ સુખ પણ પ્રાપ્ત થશે, તેનો તાજો દાખલો નીચે મુજબ છે-

સુરત નગરમાં ઇંગ્રેજી રાજ્ય હોવાથી ઇંગ્રેજી ભણવાની ચર્ચા થવા લાગી અને સાથે લોકોમાં પુસ્તક અને સમાચાર વાંચવાનો શોખ વધ્યો. સંવત ૧૯૦૭ સન્ ૧૮૫૦ માં એંડ્રુસ લાયબ્રેરી નામનું પુસ્તકાલય સ્થાપિત થયું. લોકો તે દ્વારા ગુજરાતી અને ઇંગ્રેજી વાંચવાનો લાભ લેવા લાગ્યા. સંવત ૧૯૦૮ સન્ ૧૮૫૧ માં ગણપત ગાપકવાડ જેમને વૈષ્ણવ ધર્મથી ઘણોજ પ્રેમ

હતો, જંબુરી ગ્રામમાં ખરેખાની યાત્રા કરવા નીકળ્યા હતા ત્યારે સુરત થઇને ગયા હતા તે વખતે અત્રે પ્રજાએ એમનું બહુ સન્માન કર્યું હતું. ગાયકવાડે સુરતમાં એટલું ધર્મ અને દાન કર્યું કે એમની પ્રશંસા આખા શહેરમાં ફેલાઇ- જેટલા દિવસ ત્યાં રહ્યા ત્યાં સુધી દાનનું રાજ્ય રહ્યું.

એ વખતે એક રાત્રે શેઠ હીરાચંદજીએ પોતાની પત્ની સાથે ગાયકવાડના દાનની મોટી પ્રશંસા કરી અને ગાયકવાડની જે વાત બજારમાં સાંભળી હતી તે બધી કહી બતાવી. ગાયકવાડે હરએક મંદિર-પાઠશાળા વીગેરેમાં ઘણું દાન કર્યું હતું. વીજલીબાઇનું ચિત્ત ઘણુંજ કોમળ હતું. જ્યારે કોઇના ગુણની વાત સાંભળે ત્યારે દિલ ઉભરાઇ આવતું. તેમના મનમાં એ આવ્યું કે હું ક્યારે યોગ્ય થાઉં અને ખૂબ દાન-ધર્મ કરૂં અને બધાને તૃપ્ત કરૂં. વિચારતાં વિચારતાં શેઠ હિરાચંદને કહ્યું કે જુઓ, આપણા ભાગ્યનો ઉદય ક્યારે આવે કે આપણાથી એવું દાન ધર્મ થાય. શેઠ હિરાચંદે કહ્યું કે આપણે તો એવા ભાગ્યશાળી નથી કેમકે અત્યાર સુધી વ્યાપાર કરતાં ખરચ કરતાં વધારે પ્રાપ્ત કર્યું નથી. જે વર્ષે પાનાચંદનો જન્મ થયો તે વર્ષમાં વ્યાપારમાં સારો લાભ મળ્યો હતો. હાલ તો સાધારણ લાભ થયા કરે છે પરંતુ મને એવી આશા છે કે પાનાચંદ અવશ્ય ભાગ્યશાળી થશે અને દ્રવ્ય કમાશે તે વખતે કદિ તેનું પરિણામ દાન ધર્મમાં હશે તો એ પણ દાનની સુગંધને ફેલાવશે, જેવી રીતે આજ ગાયકવાડનો યશ થઇ રહ્યો છે. એવી રીતે પરસ્પર વાર્તાલાપ કરી પતિ પત્નિ એજ રાત્રિએ અતિ પ્રેમથી શયનગૃહમાં સુઇ ગયાં. એજ રાત્રિએ વિજલીબાઇ ગર્ભવંતી થયાં. વીજલીબાઇનું મન આખી રાત દાનના ઉમંગમાં ફેલાઇ રહ્યું હતું. એ રાત્રિ એજ હતી કે સુપ્રસિદ્ધ -શેઠ માણિકચંદનો જીવ વિજલીબાઇના ગર્ભમાં આવ્યો, જે આત્મા ગર્ભસ્થાનમાં નિવાસ કરતાંજ દાનના પ્રદેશ તેમાં લાગુ પડ્યા. જેમ જેમ ગર્ભ વધતો ગયો તેમ તેમ વિજલીબાઇનું મન દાનને માટે ઉમંગતું હતું. સાધારણ સ્થિતિના લીધે એટલું તો હમેશાં કરતા હતા કે કોઇ બારણા ઉપર માંગવા આવે તેને કરૂણાથી મુઠી આપતા હતા. સારી ભાવનાઓની અસરથી સારૂંજ થયા કરે છે. સંસારી જીવોના ભાવથી પુદ્‌ગલનું પરિણમન થાય છે.

(દાનવીર માણિકચંદ જીવનચરિત્ર પૃષ્ઠ ૧૦૫-૧૦૬)

ઉપરના દાખલાથી સ્પષ્ટ માલમ પડશે કે ઉચ્ચ ભાવના રાખવાથી ઉચ્ચ વિચારની સંતાન પ્રાપ્ત થાય છે. શેઠ માણેકચંદજીના કાર્યથી કોઇ અજાણ્યુ નથી. આખા હિંદુસ્થાનમાં તેમના કામની જાહોજલાલી છવાઇ રહી છે. એ તેમના માત પિતાની ઉચ્ચ ભાવનાનું પરિણામ છે માટે ધર્મ બહુઓ, તમો સાચું સુખ પ્રાપ્ત કરવાનો વિચાર રાખતા હો તો તથા શેઠ માણિકચંદ જેવા દિગંબર જૈન 'સધર્મ નરરત્ન' જોવા ઇરાદો રાખતા હોય તો હમેશાં પ્રાતઃકાલમાં શયન સ્થાન છોડી સામાયિક (તપ) વગેરે ઉચ્ચ ભાવનાઓ ભાવવા ચુકતા નહિ. પુણ્ય અને પાપ એ આત્માનાજ પરિણામ છે માટે હમેશાં પરિણામ ઉંચા રાખવા એવી મારી વિનંતિ છે.

आवश्यक निवेदन.

એટલું તો સર્વે ભાઇઓને જાણીતું છે કે ગુજરાતના પાટનગર અમદાવાદ શહેરમાં મર્હુમ શેઠ માણિકચંદ પાનાચંદના કુટુંબ તરફથી શેઠ પ્રેમચંદ મોતીચંદ દિગંબર જૈન બોર્ડિંગ સ્કુલના અંગે સર્વે દિગંબર ભાઇઓની સગવડતાની ખાતર એક ધર્મશાળા રાખવામાં આવી છે. તેમાં વાસણ, બીછાનાં, ગાદલાં તેમજ મુસાફરોને જરૂરીઆતની ઘણી ચીજોની ખામી હતી, અને તે ખામીની આવશ્યકતા સર્વે દિગંબર ભાઇઓને તેમજ કાર્યવાહકોને તેની જાણ પણ હતી. અમો અત્યન્ત આનંદ પૂર્વક જણાવીએ છીએ કે આ બાબત ધ્યાનમાં લઇ અત્રેની બોર્ડિંગ

સ્કુલના સુપ્રીન્ટેન્ડન્ટ છોટાલાલ નાથુરામ પરવારે ગયા વૈશાખ માસમાં જ્યારે સર્વે મેવાડા ભાઇઓની લગ્નસરા સોજીત્રા મુકામે ભરાએલી હતી, તે તકનો લાભ લઇ કેટલાક ઉત્સાહી મેવાડા ભાઇઓની મદદથી આશરે ૮૦૦) નું એક ઉમદા ફંડ કરી આપ્યું છે. તેથી સર્વે મેવાડા ભાઇઓ ધન્યવાદને પાત્ર છે, પણ હાલની મોંઘવારી ધ્યાનમાં લેતાં આ ફંડ જરૂરીઆત કરતાં ઘણુંજ ઓછું માલમ પડે છે, માટે સર્વે દિગંબર જૈન ભાઇઓને તેમાં ખાસ કરી હુમડ તથા નરસીંહપુરા ભાઇઓને વિનંતી કરીએ છીએ કે તેઓ યથાશક્તિ આ ફંડમાં મદદ કરશે. આ ફંડમાં સહાય કરનાર મેવાડા ભાઇઓના નામ નીચે પ્રમાણે છે—

૧૨૫) કેવળદાસ કિશાભાઇ, બોરસદ
૧૨૫) પ્રેમાનંદ નારણદાસ, બોરસદ
૪૫) ગંગાદાસ માધવજી, ઇસણાવ
૫૧) લલ્લુભાઇ દેવચંદ, ધાયજ
૨૫) શંકરલાલ તાપીદાસ, આમોદ
૨૧) જેસંગભાઇ કિશોરભાઇ, બોરસદ
૧૧) વીરચંદ તળસીભાઇ, દાવોલ
૧૫) ડૉ. ભાઇલાલ કપુરચંદ, નાર
૨૧) કિશાભાઇ પીતાંબરદાસ, સજોદ
૧૭) બાબરભાઇ વ્રજલાલ, પીપળાવ
૨૮) નાથાભાઇ વ્રજલાલ, વેહચ
૨૫) દલપતભાઇ કેવળદાસ, સોજીત્રા
૭) બેચરદાસ નાથાભાઇ, બોરસદ
૨૫) ભાઇજીભાઇ પાનાચંદ, બોરસદ
૨૫) લલ્લુભાઇ હરગોવિંદ, પરીએજ
૨૧) વલ્લભલાલ રણછોડભાઇ, સોજીત્રા
૨૧) જવેરદાસ રણછોડદાસ, સોજીત્રા
૫) કહાનદાસ મથુરચંદ, વડોદરા
૧૧) ગલાલચંદ તાપીદાસ, મલીઆતજ
૭) ગંગાદાસ હરગોવિંદ. મહેળાવ
૧૧) બેચરદાસ પ્રેમચંદ. તારાપુર
૫) ભીખાભાઇ મૈલાભાઇ. વડુ
૭) વીરચંદ તલસીદાસ. મ

૧૧) વનમાળીદાસ નાનચંદ. દાવોલ
૭) હરજીવન લાલચંદ. વડોદરા
૫) ફુલચંદ ગુલાબચંદ. પરીએજ
૫) પુંજાભાઇ દુલ્લભદાસ. માલાવાડા
૨) શીવલાલ મુલજીભાઇ વસો
૫) સીનલાલ ગંગાદાસ. પાદરા
૫) બેચરદાસ અમરચંદ. માલાવાડા
૫) મુલજીભાઇ અમીચંદ. બોજ
૨) શા. પીતાંબરદાસ જવેરદાસ. દાવોલ
૨) તળસીદાસ તારાચંદ. દાવોલ
૫) ફુલચંદ કહાનચંદ. કાણીસા
૨) કેવળદાસ સુબચંદ. આમોદ
૧) નરસીદાસ તારાચંદ દાવોલ
૧) ત્રીકમદાસ ખુશાલદાસ. બાકરોલ
ા મુલજીભા કેવળદાસ. બોચારણ
૫) મોતીલાલ ચીકાભાઇ માંજલપરા
૨) છોટાલાલ દલપતશા. આમોદ
૫) મથુરદાસ પાનાચંદ. બોરસદ
૫) હરગોવિંદદાસ રામદાસ. વડુ
૪) કલાણદાસ રામદાસ. વડુ
૫) મંગળદાસ રામદાસ. વડુ
૫) મગનલાલ પરસોતમ. વડોદરા
૧) દામોદરદાસ હરગોવિંદ. મહેળાવ
૫) મોતીલાલ તળસીદાસ. વડુ
૫) કરસનદાસ ઇશ્વરદાસ. જલાલપુર
૫) પુંજાભાઇ હરજીવનદાસ. વસો
૩) તાપીદાસ હરગોવિંદદાસ. આમોદ
૫) સા. નાથાલાલ મથુરચંદ. વાજ
૧૧) શા. જેશંગ માણેકચંદ. બાકરોલ
૭) પરસોતમદાસ અંબઇદાસ. પડાળા
૩) સા. કાશીદાસ હરજીવનદાસ. આમોદ
૨૧) જીવાભાઇ હરજીવનદાસ. સાયગા
૪) જેસંગભાઇ નાથાભાઇ. કાણીસા
૫) ડૉ. નગીનલાલ નેમચંદ બોરસદ
૨) રાયચંદ તલકચંદ. વડુ
૭) ઇશ્વરદાસ રાયચંદદાસ. સોજીત્રા

५) લલ્લુભાઇ ગુલાબચંદ. પાદરા
૫) અંબઇદાસ ઇશ્વરદાસ. વડુ
૩) બેચરદાસ જુલાભાઇ. કરમસદ
૪) નારણદાસ નાથાભાઇ. કાણીસા
૩) રાયસંગજી વ્રજલાલ. કાણીસા

ઉવટમાં જણાવવાનુ કે મેવાડા ભાઇઓએ પોતાની ઉદારતા બતાવી જે દાખલો બેસાડયો છે, તેને અન્ય દિગંબર ભાઇઓ અનુસરશે. અમો આશા રાખીએ છીએ કે કાર્યવાહકો આ ફંડનો સદ્ ઉપયોગ કરી સર્વે દિગંબર ભાઇઓને ખાતરી કરી આપશે, કે તેમના પૈસાનો જોઇએ તેવી સારી રીતે સદ્ ઉપયોગ થયો છે.

જાતિ સેવકો-
છોટેલાલ નાથુરામ પરવાર
બોરસદવાળા મોહનલાલ મગનલાલ
શાહ બાપલાલ કાલીદાસ

नवीन ग्रन्थ-

चर्चा समाधान

इसमें जैन सिद्धान्तके रहस्योंका १३९ प्रश्नोत्तरोंद्वारा उत्तमतासे समाधान किया गया है। खुले पृष्ठ, बड़े टाइप, बड़ी साईज, शुद्ध छपाई पृष्ठ १६० और मूल्य २॥=) अवश्य मगाइये।

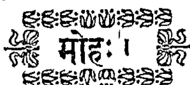
मैनेजर, दि० जैन पुस्तकालय-सूरत।

हमारे उत्तमोत्तम ग्रंथ।

आदि पुराण	१६)
उत्तर पुराण	१०)
दोनों एक साथ	५॥)
पंचाध्यायी टीका	५॥)
धर्म-प्रश्नोत्तर	२)
जिनशतक	॥)

मिलनेका पता—

लालाराम जैन,
मल्हारगंज इंदौर।



(ले० चन्दनमल जैनाध्यापक, झालरापाटन)

—मोहकी शराब पी खराब हो रहा है—

कोई महानुभाव तुझे नमता, कोई अनुराग, कोई प्रेम, कोई राग-द्वेष मिश्रित भाव, कोई स्वपर भेद शून्य कह कर पुकारते हैं किन्तु यदि सच पूछाजाए तो तु एक ही है परंतु तेरे नाम, उपनाम और चिन्ह अनेक हैं। काम, क्रोध, मान, माया, लोभ, मत्सरता, छल, कपट, पाखण्ड, चोरी, डकैती असत्यादि जितने भी दुर्गुण एवं कुवासनाएँ हैं, वे सब किसी न किसी अंशमें व किसी न किसी रूपमें तेरे ही साथी सगे हैं। वे सब तुझे अपना स्वामी एवं राजा मान कर प्रतिदिन, प्रतिक्षण नूतन नवीन बलियोंकी भेटसे तेरी ही सेवा सुश्रुषा किया करते हैं। उनकी प्रत्येक कुचेष्टा और कुचिकित्साकी प्रस्तुतता ही नहीं वरन् उनके प्रयत्न, परिश्रम एवं उद्यमकी कटिबद्धतासे भी प्राणीमात्रको अशुभ कर्मोंकी कालिमासे कलुषित करना ही उनकी महत्वाकांक्षा जान पड़ती है। अतः तेरी पिशाचोंसे तुलना की जाए तो कदाचित् संभव है कि कुछ समानता प्रगट हो किन्तु हाय मोह! तू तो बेचारे अबोध जीवोंको नाम मात्रका बाह्य सुखका स्मरण कराकर अंतरंगके क्षोभमें तुरत फँसा देता है।

फलत तू तो पिशाचोंका पिशाच ही है। तूने तो बेचारे पिशाचोंको भी अपने चुंगुलमें

गो०–सच है जो दूसरोंके काम आते हैं, उन्हींको मान मिलता है। देखो संसार कैसा स्वार्थी....हैं। कैसी घटा उठ आई! अरे! अभी तो कुछ नहीं था। देखते २ यह तो बिजली कड़कने लगी! वाह!

रामू–यह लो पानी भी बरसने लगा–पर हैं यह चिल्लाता कौन चला आता है? अरे! कोई स्त्री है! यह क्या? यह तो उन भाइयोंकी बहन–"अरे भगवानके लिए मुझे इन अत्याचारियोंके हाथसे बचा लो। ये चाण्डाल मेरी जानके पीछे पड़े हुए हैं। हाय राम! वह आए! हाय! मुझे जल्दी छिपाओ। नहीं....।"

गो०–अरे, यह तो बेहोश हो गई। कहीं एकांत स्थानमें ले चलना चाहिए पर ये कौन भागे चले आ रहे हैं!

राम–लो भाई! यदि इनको बचाना हो तो लड़नेको तैयार हो जाओ।

पश्चात् इधर इन आगुन्तक सज्जनोंसे इनकी मुठभेड़ होती रही, उधर कोई सुशीलाको लेकर चलता बना। जब उन्हे होश आया तो देखा सुशीला नहीं है। पर उनने प्रतिज्ञा कर ली कि उसकी रक्षा अवश्य करेंगे।

(३)

"भलाईको न भूलेंगे, सुशिक्षाको न छोड़ेंगे।
हर्षसे प्राण तो देंगे, प्रतिज्ञाको न तोड़ेंगे॥"

गो०–भाई! बड़ी धैर्य अटकी हैं। यदि जरा भी खुले हाथ कार्रवाई करते हैं तो सुशीलाकी जान जोखममें हुई जाती है। और यदि चुप हुए जाते हैं तो प्रतिज्ञा भंग हुई जाती है। बड़ी असमंजसता है।

रा०–जी हां, है तो विकट समस्या! पर मैंने इसे हल करनेको एक रास्ता निकाला है। अर्थात् सबसे अच्छा मार्ग यही है कि हम तुम चुपकेसे उनका पीछा करें और अवसर पाते ही सुशीलाको उनके क्रूरोंसे निकाल लेना है।

गो०–है तो ठीक बात। तो अब Detective बनना पड़ेगा।

रा०–जीहां! चलिए अभी हीसे बन जाइए, वरना पता लगाना कठिन हो जायगा। तत्पश्चात् गोपाल और राम:–अपनी प्रतिज्ञानुसार रवाना हुए। पता लगाते २ उनको उस मकानका पता लग गया जिसमें सुशीला थी। दोनों यह प्रतीक्षा कर रहे थे कि कब अवसर पावें और कब सुशीलाको छुड़ा पावें। रात्रि बड़ी भयानक थी पर उसी रात्रिको ये मित्रोंने सुशीलाको वहांसे निकाल लिया। अपने घरको रवाना हो गए। वहां पर उनका आना और रहना किसीको विदित न किया।

(४).

गोपाल और रामू अब उन सेठजीके पीछे पड़े हैं। उनने आज सेठजीसे मिलनेका कर लिया है। सेठजी भी सुशीलाके होनेमें इनको धमकाते हैं। अन्तमें दोनों जीके यहां जा पहुंचे। सेठजीने खुलासा करके इनसे पूछा:—

"मुझको मालूम हो गया है कि तुम्हींने यहांसे छुपा दिया है। अब भलाई इसीमें है कि उसको मेरे पास कर जाओ।

गो०–सेठजी आपका कहना ठीक पर आप यह भी जानते हैं कि सुशीला

आपसे विवाह करनेको राजी नहीं है, तिसपर आपने उसे उसके भाइयोंको रुपया दे खरीदना चाहा है। इस प्रकार आप भारी गलती पर हैं। बस आपसे मेरा यही कहना है कि आप इस पापवृत्तिका ध्यान हृदयसे निकाल डालिए।

सेठ०—वाह जी वाह! लड़कीको बहका कर ले गए। अब बातें बनाते हैं। ठहरो तुम्हें कैसा मजा चखाता हूं।

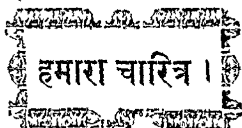
रामू०—सेठजी सावधान! इन धमकियोंसे हम डरनेवाले नहीं हैं। हम खुद अदालतमें आपके ऊपर मामला चलानेवाले हैं। आपको मालूम है सुशीलाके पिताने उसका पाणिग्रहण मेरे साथ करानेका प्रण कर लिया था और देखिए स्वयं सुशीलाने यह क्या लिखा है:—

"मुझे अच्छी तरह याद है कि मेरे पूज्य पिताजीकी इच्छा मेरी लग्न बाबू रामचन्द्रसे करनेकी, थी परन्तु इस इच्छाकी पूर्तिके पहिले ही उनका अचानक देहावसान हो गया। तत्पश्चात मेरे भाई मेरे रक्षक बने पर चारित्रहीन होनेके कारण उन्होंने सब धन बरबाद कर दिया। अब अपनी पाशविकताकी पूर्ति हेतु उन्होंने मेरेको एक बूढ़े सेठके हाथ बेचना स्वीकारा है। पर मैं इसे 'अत्याचार' समझती हूं। और भाईयोंको 'अत्याचारी' मानती हूं।

अतः मैं सेठ गोपालदासजीको और अपने भावी पति बाबू रामचंद्रको इस विषयमें पूर्ण अधिकार देती हूं कि वे मेरी तरफसे पंचायत एवं राज्यसे उचित न्याय करावें और अत्याचारियोंको दण्ड दिलावें। मैं अपने पिताकी इच्छानुसार बाबू रामचंद्रको अपना भावी पति स्वीकार करती हूं आदि।" देख लिया क्या लिखा है? अब क्या मर्जी है?

सेठजी—मर्जी क्या? मेरे तो होश ठिकाने नहीं! जमाना ही बदल गया! अरे भगवान! क्या होनेका!

इति शम्!



हमारा चारित्र।

(ले०—दामोदरलाल जैन)

प्रिय पाठकवृन्द!

यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि इस असार परिवर्तनशील दुःखमय संसारमें एकेन्द्रियसे लेकर सैनी पञ्चेन्द्रिय पर्यन्त यावन्मात्र आत्माएं हैं वे सर्व सुख एवं शान्ति प्राप्त करना चाहती हैं। ऐसी कोई भी आत्मा नहीं है जो दुःखका ही अनुभव करती रहे और सुख न चाहे। अस्तु। अब हमें विचार इस बात पर करना अत्यन्त आवश्यकीय है कि किन २ कार्योंके करनेसे यह जीवात्मा अपनेको सुखी बनाता है, किन २ कारणोंके संयोग करलेनेसे शान्तिलाभ करता है और ऐसे कौन २ कार्य हैं जिनका कर्ता होता हुवा यह दुःख एवं अशान्ति दशामें पतन करता है क्योंकि यावत्काल हमको उक्त कार्योंका बोध नहीं होगा तब तक शान्तिलाभ होना बालुका गृह तुल्य ही होगा। स्वामी उमास्वामिने स्पष्ट रीतिसे अपने ग्रन्थमें कहा है कि *सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रके* संयोग होनेसे परमशान्ति दशा होती है। जिस समय आत्मा उक्त स्वभावोंसे अलंकृत अपने आपको करता

है स्वयं दृष्ट्रन होता है उसी समय अनुपम शान्तिलाभ करता है परन्तु यदि उक्त सम्यग्दर्शनादिमें चारित्रकी न्यून अवस्था हुई तो कदापि सुखकी प्राप्ति नहीं हो सक्ती अतएव अनुपम शान्तिलाभ करनेमें यदि हम चारित्रको ही परम सहायक समझे तो कोई अत्युक्ति नहीं आसक्ती, अस्तु। जब चारित्रका इतना उच्च दरजा है तब उसका ज्ञान प्राप्त करना, उसके धारण करनेकी विधिका जानना और आधुनिक चारित्रसे भी जानकारी करना आवश्यक है। आधुनिक कालमें चारित्रकी अवस्था ठीक वैसी ही है जैसी कि किसी नवीन आभूषणादि वस्तुकी कुछ काल बीत जाने पर हो जाती है। देखिये कहीं पर यह चारित्र शुभ कार्योंकी ओर यत्किञ्चित लक्ष्य रख कर मनमानी शास्त्र विरुद्ध प्रवृत्ति करना ही पूर्णताको प्राप्त हुवा समझा जाता है, कहीं पर अनिच्छा पूर्वक एवं प्राचीन पद्धतिके वशीभूत होकर श्री जिनेन्द्रके दर्शन कर किसी तरह ५ मिनिट पूर्ण कर देना ही इनकी उत्कृष्ट सीमा समझी जाती है, कहीं कहीं घोर पापोंमें रात्रि दिन तल्लीन रहते हुए बाह्यमें सर्व साधारणको दर्शानेके लिए चार छह हरित कायको रख सर्व हरित पदार्थोंका त्याग देना साक्षात् आनंदका दाता समझा जाता है और कहीं पर रागद्वेषकी पुष्टिके लिए जन समुदायमें महत्व दिखानेके लिए शास्त्र विरुद्ध क्रियाओंका करना, ऊंचे२ श्रावकादि पदका ग्रहण करना वास्तविक चारित्रकी परम सीमा है। पाठकवृन्द विचारिये, क्या कभी आपने नकली चीजसे आनंद प्राप्त होते देखा है ? क्या नकली चीज कभी असलीका मुकाबिला कर सकती है और क्या परीक्षकोंकी दृष्टिमें नकली वस्तु कभी उत्तम हो सकती है ? इसका उत्तर नहींमें ही होता है। हमने आधुनिक चारित्रका बहुत ही उत्तम ऊपरी श्रृंगार बना दिया है, उसको अत्यन्त संगीन कर दिया है पर ऐसा चारित्र धारण करनेसे हमारी शांति नहीं हो सकती। क्या हमारा अनिच्छा पूर्वक यद्वा तद्वा ५ मिनिट मंदिरजीमें देवदर्शन करनेमें लगा देना, रात्रि दिन नाना प्रकारके जंजालोंमें फंसे रहना ही कर्तव्य है ! क्या यही चारित्र है ? यदि यही चारित्र है तो माली व्यासादि तो अवश्य हमारे आदरणीय है क्योंकि वह तो रात्रि दिवस देवालयमें ही रहते हैं परन्तु हम उनको तो नीच दृष्टिसे ही देखते हैं लेकिन जिसका मन ही देव दर्शन करनेको नहीं होता, जो सामाजिकवशताके कारण नित्य प्रति ५ मिनिट इसमें व्यतीत करदे तहिं उसे हम आदरणीय समझते हैं, वह भक्तकी उपाधिसे विभूषित किया जाता है। क्या किञ्चिन्मात्र शुभ क्रियाओंका सम्पादन करना और रात्रि दिवस कुत्सित वासनाओंकी तृप्तिके लिए नाना प्रकारकी भोग सामग्रीके प्राप्त करनेमें अपने समयको बर्बाद कर देना उत्तमता है—सदाचारता है ? यदि हि सदाचारता एवं उत्तमता है तो त्रिखण्डाधिपति रावणका मुखशमान अवश्य होना चाहिये था क्योंकि वह तो देव पूजादि महत्पोचित शुभ कर्मोंका सम्पादन करनेवाला अवश्य था पर वह क्यों पतित हुआ ! क्या रागद्वेषको रखते हुवे भी चार छह हरित काय पदार्थको रख कर शेषका

त्याग देना उत्तम चारित्र है? यदि यही उत्तम चारित्र है तो रागद्वेषादिके धारण करनेवाले भी केवल मात्र हरित कायके पदार्थोंको त्याग देनेसे हमारे पूज्य हो सकते हैं पर ऐसा शास्त्रोपदेश क्यों नहीं है।

और क्या रागद्वेषकी पुष्टिके लिए एवं जन साधारणमें महत्व दिखानेके लिए शास्त्रविरुद्ध मनमानी प्रवृत्ति करना, ऊंची २ प्रतिज्ञाका ले लेना उत्तम आचरण कहला सकता है? यदि यहि उत्तमाचरण है तो धर्मविरुद्ध चलनेवाले क्यों द्वेषी हैं तथा जो अपनी मनमानी प्रवृत्तिसे करते हैं और धर्म विरुद्ध चलते हैं उनमें ही हमारी अधिक पूज्य दृष्टि क्यों होती है? इन सबका आशय यही निकलता है कि हममें योग्य अयोग्य, भक्ष्य अभक्ष्य, उत्तम अनुत्तम, अनुकूल प्रतिकूल आदिका रंचमात्र भी ज्ञान नहीं है—अनुभव नहीं है इसी कारण असली स्वभावका—असली आचरणका भूल जाना और नकली वस्तुमें प्रीति करना हमारा स्वभावसा पड़ गया है। हम ऊपरी मान, उपरी ढोंगको ही अच्छा बनाये रखना चाहते हैं परन्तु अंतरंगकी पवित्रता, अंतरंगके भाव और अंतरंगकी शुभ भावना उत्तम बनाये रखनेकी कोई फिकर नहीं रखते जिसके कारण दिनों दिन चारित्रकी हीनता होती ही चली जाती है और कषाय रोगोंकी प्रवृत्ति अधिकाधिक होती जाती है।

पाठको! उपर्युक्त प्रकारका चारित्र कभी भी वास्तविक चारित्र नहीं कहा जा सकता और न उससे चारित्रसे हमारी अभीष्ट सिद्धि हो सकती है, प्रत्युत रागद्वेषात्मक होनेसे यही आचरण हमको निम्न दशामें पहुंचाता है, दुःखोंका केन्द्र बनाता है, विषय कषायोंको विशेष प्रकारसे उत्तेजित करता है और धर्मविरुद्ध लोकविरुद्ध मनमाना कर्म करनेके लिए बाधित करता है।

अब वास्तविक चारित्र क्या है इसे प्राचीन धर्मधुरंधर तीर्थंकर ऋषि विद्वान आदि महापुरुषोंने किस रीति पर बतलाया है—जिन २ कार्योंसे यह आत्मा बाह्य वचन काय एवं अंतरंग भावनाको शुभ एवं शुद्ध क्रियाओंमें संलग्न होता है और अशुभ कार्योंसे अपनी प्रवृत्ति हटा लेता है वे सब कार्य, आचरण ही उत्तम है, आदर्श है, सुखकारी एवं शांतिदाता हैं। वे ही कार्य चारित्रकी उत्तम श्रेणीमें सुशोभित हो सकते हैं, रागद्वेष क्रोध मान माया और लोभादिसे रहित होनेके कारण वे ही आचरण अनुपम—शांति लाभ करा सकते हैं, वे ही आचरण उत्साहता परोपकारता पवित्रता विवेकता सरलता गुणग्राहकता सहिष्णुता निष्कपटता सत्य विवेचनता क्षमता सन्तोषवृत्तिता और परम शांति आदि गुणोंको प्राप्त करनेमें समर्थ होते हैं—ऐसा ही आचरण करना सदा जीवमात्रसे मैत्री भाव रखते हुवे दूसरोंको दुःखमें देख उनके दुखको दूर करनेमें व्यग्र रहना तथा जिस किसी उत्तमाचरणसे उनको सुख अवस्थामें पहुंचा देना और पश्चात् अपने आपको आत्मध्यानमें लवलीन करना ही सार है, उत्तम है। यह ही पवित्र जिन धर्मका उपदेश है, तत्व है।

इसी पवित्र उपदेशको धर्मनायक श्री भगवान आदि ब्रह्माने हमें बतलाया है। भगवान महावीर स्वामीने इसी अमृतके पान करनेकी

आज्ञा हमें दी है। यही उपदेश हमें भी सर्वोपरि प्रतीत होता है और इसी उपदेशके अनुकूल कार्य करनेसे हम उन्नत हो सकते हैं। तात्पर्य कहनेका यही है कि यदि हमको अपनी आत्माको शांति लाभ कराना है, उन्नत पथ पर ले जाना है और आत्मिक अनंत गुणोंका उसमें विकाश कराना है तो हमारा कर्तव्य है कि हम शास्त्रानुकूल चारित्र धारण करें, मन वचन कायकी अशुभ प्रवृत्तियोंको दूर हटा कर शुभ कार्योंमें योग देवें, सदा अपने मन वचन कायको पवित्र रखें, विषयवासनाओंमें सारी शक्तियोंको लगा देवे तब ही हम उन्नत हैं, तब ही हम जीवित हैं, तब ही हम पवित्र धर्मके पूर्ण अनुयायी हो सकते हैं अन्यथा हम अभी जैसे हैं वैसे भी नहीं रह सकेंगे-सदा अवनत होते चले जावेंगे और हमारे नामशेष होनेमें देर नहीं लगेगी।

बालकोंको शिक्षा।

प्यारे बालको! तुम निम्न लिखित शिक्षाओंको ग्रहण करो। वे शिक्षायें आपको बहुत लाभकारी होंगी इसलिये तुम उनपर अपना पूर्ण लक्ष दो!

(१) बाल्यावस्थाको पाकर विद्या पढ़नेमें अपना विशेष ध्यान दो क्योंकि बाल्यावस्थामेंही विद्या प्राप्त होती है।

(२) विद्या दाता गुरु और अपने पूज्य माता पिताओंकी आज्ञाका पालन करो। बड़ोंकी आज्ञाका पालन ही तुम्हारा परम कर्तव्य है।

(३) अपना समय खेल कूदमें व्यर्थ मत बिताओ क्योंकि जो समय आज तुम्हारे हाथसे निकल जायगा उसका मिलना फिर तुम्हारे लिये कठिन हो जायगा इसलिये अपने समयको पठनपाठनमें खर्च करो।

(४) मान कभी नहीं करो, सदा ही नम्रता धारण करो। देखो रावणने मान किया था। आखिरको उसकी क्या दशा हुई! लक्ष्मणके हाथसे रणमें मारा गया और सब राजपाट भी धूलमें मिल गया और अन्तमें नरकोंको जाना पड़ा इससे मानको हानि कारक जानकर छोड़ दो।

(५) सदा ही सत्य बोला करो भूल कर झूठ वचनोंको जिह्वा पर न लाओ।

(६) किसीको गाली आदि खोटे वचन मत कहो। अगर तुम किसीको गाली या खोटे वचन कहोगे तो तुम्हें भी दूसरे गाली और खोटे वचन कहेंगे और मारनेके लिये तयार हो जावेंगे ऐसा जानकर किसीको भी गाली न दो।

(७) सबसे मीठे वचन बोलो। मीठा बोलना ही दूसरोंको प्रिय और वश करनेका मंत्र है। देखो कोयल अपनी मीठी वाणी बोलकर संसारको अपना बना लेती है और कौआ कडुवे वचन बोलता है इसलिये उसके वचनोंकी निंदा होती है और उसे कोई भी नहीं चाहता इसलिये तुम कोयलके समान मीठे वचन बोलो जिससे ही तुम सबको प्रिय और आदरके पात्र बनो।

(८) भूलकर भी अनछना पानी न पियो।

(९) हलवाईके यहांकी मिठाईको जहां तक बने त्याग ही करो।

(१०) बिड़ी चुरट तमाखू आदि खोटी मादक वस्तुओंका त्याग करो।

(११) विद्याका विषय सबसे अच्छा है।

विद्यार्थी हीरालाल, जैन पाठशाला,
फर्रुखनगर।

॥ श्रीवीतरागाय नमः॥

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग तरफथी प्रगट थतुं मासिक

दिगंबर जैन.

THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्ततताम्, दैगम्बरं जैन समाज-मात्रम् ॥

वर्ष १० वाँ.	वीर संवत् २४४३. चैत्र. विक्रम सं० १९७३	अंक ६ ठा.



शोक! शोक!! महाशोक!!!

हाय ! आज लिखते लेखनी कांपती है । हृदय धड़कता है ! आंखोंसे आंसुओंकी धारा बहती है । चारों ओर निराशा, निस्तब्धता, दिखाई पड़ती है । जमीन, आसमान शून्यसे प्रतीत होते हैं । आंखोंके आगे अंधकार छा गया है। ओ दुष्ट भाग्य! क्या तुझे हमारे ऊपर ऐसे ही समय इतनी भारी विपत्ति पटकनी थी ! अरे पापी ! जरा हमारी दशा तो देख ! अरे अधम ! हमने तेरा क्या बिगाड़ा है ? जो तूं हमें इस तरह दुःख दे देकर मार रहा है । हमारी स्थिति तो देख ! कुछ दिन पहले ही तो तूंने हमारी जातिके नेता जैन कुलभूषण दानवीर शेठ माणिकचन्दजीको हमसे छुड़ा लिया है। हम तो उनका शोक ही न भूले थे । उठते बैठते काम करते उनकी याद बिना आये नहीं रहती थी, इतनेहीमें तूंने इस असमयमें ही हमारे एक मात्र आधार, एक मात्र अवलंब, एक मात्र सहायक, और एक मात्र कर्णधार-को हमसे पृथक् क्यों कर दिया ! हमारे हृदयको देख ! हमारी मनकी स्थितिको देख ! जरा तो दया करना था । बता ! अब हम किसके पास जाकर जैन सिद्धान्तका रहस्य समझेंगे ! किसके द्वारा जैनधर्म-की सच्ची प्रभावना करावेंगे ! किसको उत्सवोंमें बुला-कर जैनधर्मपरके झूंठे दोषोंको दूर करेंगे ? कौन जातिको उसकी सच्ची अवस्था बतायगा ? कौन उसके कल्याणका मार्ग दिखायगा ? कौन उसकी डूबती नौकाको हस्तावलंबन देकर पार करेगा ? किससे स्याद्वाद न्यायकी कुंजियां सीखेंगे ? किस विद्वान्-के पास जाकर जैनसमाजकी वास्तविक स्थितिका ज्ञान प्राप्त करेंगे ? किसके द्वारा स्पष्ट और हृदयके उद्गार सुन सकेंगे ? सदाचारकी प्रतिमा कहां देख सकेंगे ? इन सबका उत्तर तो तूंने हमसे छीन ही लिया । हमारा मुकुट छीन लिया । हमारा गौरव छीन लिया । हमारा एक मात्र आभूषण छीन लिया । जातिका सुपुत्र छीन लिया ! बता ! पापी बता ! हमारे आधार, हमारे कर्णधार, हमारे अवलंब, हमारी

आज्ञा हमें दी है। यही उपदेश हमें भी सर्वोपरि प्रतीत होता है और इसी उपदेशके अनुकूल कार्य करनेसे हम उन्नत हो सकते हैं। तात्पर्य कहनेका यही है कि यदि हमको अपनी आत्माको शांति लाभ कराना है, उन्नत पथ पर ले जाना है और आत्मिक अनन्त गुणोंका उसमें विकाश कराना है तो हमारा कर्तव्य है कि हम शास्त्रानुकूल चारित्र धारण करें, मन वचन कायकी अशुभ प्रवृत्तियोंको दूर हटा कर शुभ कार्योंमें योग देवें, सदा अपने मन वचन कायको पवित्र रखें, विषयवासनाओंमें सारी शक्तियोंको लगा देवें तब ही हम उन्नत हैं, तब ही हम जीवित हैं, तब ही हम पवित्र धर्मके पूर्ण अनुयायी हो सकते हैं अन्यथा हम अभी जैसे हैं वैसे भी नहीं रह सकेंगे—सदा अवनत होते चले जावेंगे और हमारे नामशेष होनेमें देर नहीं लगेगी।

बालकोंको शिक्षा।

प्यारे बालको! तुम निम्न लिखित शिक्षाओंको ग्रहण करो। वे शिक्षायें आपको बहुत लाभकारी होंगी इसलिये तुम उनपर अपना पूर्ण लक्ष दो!

(१) बाल्यावस्थाको पाकर विद्या पढनेमें अपना विशेष ध्यान दो क्योंकि बाल्यावस्थामेंही विद्या प्राप्त होती है।

(२) विद्या दाता गुरु और अपने पूज्य माता पिताओंकी आज्ञाका पालन करो। बड़ोंकी आज्ञाका पालन ही तुम्हारा परम कर्तव्य है।

(३) अपना समय खेल कूदमें व्यर्थ मत बिताओ क्योंकि जो समय आज तुम्हारे हाथसे निकल जायगा उसका मिलना फिर तुम्हारे लिये कठिन हो जायगा इसलिये अपने समयको पठनपाठनमें खर्च करो।

(४) मान कभी नहीं करो, सदा ही नम्रता धारण करो। देखो रावणने मान किया था। आखिरको उसकी क्या दशा हुई? लक्ष्मणके हाथसे रणमें मारा गया और सब राजपाट भी धूलमें मिल गया और अन्तमें नरकोंको जाना पड़ा इससे मानको हानि कारक मानकर छोड़ दो।

(५) सदा ही सच बोला करो भूल कर झूठ वचनोंको जिह्वा पर न लाओ।

(६) किसीको गाली आदि खोटे वचन मत कहो। अगर तुम किसीको गाली या खोटे वचन कहोगे तो तुम्हें भी दूसरे गाली और खोटे वचन कहेंगे और मारनेके लिये तयार हो जावेंगे ऐसा जानकर किसीको भी गाली न दो।

(७) सबसे मीठे वचन बोलो। मीठा बोलना ही दूसरोंको प्रिय और वश करनेका मंत्र है। देखो कोयल अपनी मीठी वाणी बोलकर संसारको अपना बना लेती है और कौआ कडुवे वचन बोलता है इसलिये उसके वचनोंकी निंदा होती है और उसे कोई भी नहीं चाहता इसलिये तुम कोयलके समान मीठे वचन बोलो जिससे ही तुम सबको प्रिय और आदरके पात्र बनो।

(८) भूलकर भी अनछना पानी न पियो।

(९) हलवाईके यहांकी मिठाईको जहां तक बने त्याग ही करो।

(१०) बिड़ी चुरट तमाखू आदि खोटी मादक वस्तुओंका त्याग करो।

(११) विद्याका विषय सबसे अच्छा है।

विद्यार्थी टीकाराम, जैन पाठशाला, कारंजी।

विद्यासे, विद्वत्ता से, धार्मिकता से, सदाचार या। स्पष्टता से और सामाजिकता से, परोपकारता से। इतने सब गुण एक साथ होना बहुत ही असंभव होता है। पाठको, कहां तक लिखा जाय! ज्यों ज्यों पंडितजीका स्मरण किया जाता है त्यों त्यों दुःखका वेग बढ़ता और हृदय फटता है, पर अब हमारा इतना ही कर्तव्य नहीं है कि हम रोवें। हमारा इससे भी अधिक कर्तव्य है और वह यह कि पंडितजी के लिये प्रत्येक नगरके जैनी भाई शोक सभा करें, और पंडितजीके शोक संतप्त कुटुम्बके प्रति सहानुभूति प्रगट करें तथा हमारे ऊपर पंडितजीके जो अगणित उपकार हुए हैं उनके स्मरणके लिये, पंडितजी के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रगट करनेके लिये पंडितजीका स्मारक खोलें। हमारा यह सबसे बड़ा कर्तव्य होना चाहिये कि हम पंडितजीका स्मारक खोलकर उनकी स्मृति कायम करें। यदि हम यह न करें तो शायद हमारा सा कृतघ्नी अन्य कोई न होगा। अतएव कृतज्ञताके कारण पंडितजीके स्मारकमें हमें चाहिये कि यथाशक्ति, किं बहुना शक्तिसे भी बाहर सहायता करें। हम एक पंडितजीका स्मारक फंड जैन मित्रमें खोलते हैं और उसमें अपनी ओरसे २५) रु० की नम्र भेंट देते हैं। हमारे प्रत्येक पाठकको इस स्मारकमें यथाशक्ति सहायता देना चाहिये। 'दिगंबर जैन' में व 'जैन मित्र' में जो २ महाशय सहायता देंगे वह प्रगट होती रहेगी। सहायता "प्रकाशक जैनमित्र चन्दावाडी सूरतके" पतेपर आना चाहिये। आशा है कि हमारे पाठक अपने नगरमें सभाकर उसमें स्मारकके लिये चंदा भी करेंगे। और सभाके समाचारोंसे तुर्त सूचित करेंगे व स्मारक फंड हमारे पास भेजेंगे।

દિગબર જૈનોમાં બોર્ડીંગો, તીર્થોદ્ધાર, અનેક સભાઓ, પાઠશાળાઓ દિ૦ જૈન કોમને નાં મહત્ કાર્યો કરી જનાર મહાન ખોટ. સ્વર્ગીય દાનવીર જૈનકુલ-ભૂષણ શેઠ માણેકચંદ-જીના વિયોગને ઝાઝો સમય નથી એટલામાં ગત ચૈત્ર સુદ ૫ ની સવારે દિગંબર જૈનોનો એક બીજો મહાન દીવો હોલવાઇ જવાના અતીવ દુઃખપ્રદ સમાચાર ચોમેર ફરી વળ્યા છે, અમારા વાચકો જાણતા હશેજ કે દાનવીર શેઠ માણેકચંદને ધર્મ કાર્યો તરફ પ્રથમ દોરનાર પંડિત ગોપાળદાસજી બરૈયાજ હતા અને જે અતીવ બુદ્ધિશાળી વિદ્વાન નર-રત્ને જૈનકોમની નિસ્વાર્થપણે ઉત્તમ સેવા બજાવી છે. વળી જેમ શેઠ માણેકચંદજી દાન અને કોમની નિસ્વાર્થ સેવા માટે દાનવીર જૈનકુલભૂષણ અને જે.પી ની પદવી ભોગવતા ભાગ્યશાળી થયા હતા ત્યારે પંડિત ગોપાળદાસજી બરૈયા વિદ્યા અને કોમની નિસ્વાર્થ સેવા માટે સ્યાદ્વાદવારિધિ વાદિગજકેશરી ન્યાય વાચસ્પતિની મહાન પદવીઓ મેળવતા ભાગ્યશાળી થયા હતા, જે બનાવ જૈનોમા પ્રથમજ છે. આ વિદ્વાન નરનો વિયોગ ચૈત્ર સુદ ૫ દિને થવાથી જૈન કોમને જે અપૂર્વ ખોટ ગઇ છે, તેનો ખાડો ક્યારે પુરાશે તે કહી શકાતુ નથી આ વિદ્વાન નરરત્ને કોમની જે અપૂર્વ સેવા બજાવી છે તેના બદલા રૂપે જૈનોની ફરજ છે કે દરેક સ્થળે શોકસભા ભરાવી એમના કુટુંબીઓપર દિલાસાપત્ર મોરેના (ગ્વાલિયર) મોકલવો તથા પંડિતજીનું નામ અહર્નિશ યાદ રહે તે માટે એક સ્મારકફંડ 'જૈનમિત્ર' મારફત ખોલવામા આવ્યુ છે અને જેમા રૂ ૨૫) ની અ ૫ રકમ અમારા તરફથી તથા બીજા ૧૮) તરતજ ભરાયા છે, તો એ મુજબ શ્રીમાન વિદ્વાન અને સાધારણ બાંધવો પણ પોતાપોતાની શક્તિ મુજબ આ સ્મારકફંડમા રકમો અમારા ઉપર મોકલી

આપશે એમ આશા રાખીએ છીએ. આ સ્મારકફંડની **પહોંચ નામ ગામ સાથે દિગંબર જૈન તથા જૈનમિત્રમાં** પ્રકટ કરવામાં આવશે. જો આ ફંડમાટે લાગણીપૂર્વક કાર્ય ઉપાડી લેવામાં આવશે, તોજ એમાં **હજારોનું** ફંડ થવા સંભવ છે જેથી સ્વ. સ્યા.-વા. ન્યા. પં. ગોપાલદાસજી બરૈયાનું પ્રાતઃસ્મરણીય **નામ** ચિરકાળ સુધી ઉત્તમ રીતે જળવાઇ રહે એવી વ્યવસ્થા થઇ શકશે. શોક સભા તથા સ્મારક ફંડના **સમાચાર** અમોને સત્વરૂ મોકલવા કે જેથી તે આવતા અંકમાં પ્રકટ કરી શકાય.

\+ x +

મહાવીર જયંતી આવી છે.

લગભગ ચાર પાંચ વર્ષ થયાં જૈનોમાં મહાવીર જયંતિ ઉજવવાની હિલચાલ થઈ છે અને તે ઉત્તરોત્તર વૃદ્ધિ પામતી જાય છે એ ખુશી થવા જેવું છે. આ વર્ષે પણ એ શુભ દિવસ આવતી (ચૈત્ર) સુદ ૧૩ ગુરૂવાર તા. ૫-૪-૧૭ ને શુભ દિને આવી પહોંચ્યો છે. આ તેજ પરમપવિત્ર દિવસ છે કે આંજથી અઢી હજાર વર્ષ ઉપર જે દિને શ્રી-કુંડલપુરમાં આપણા ચોવીસમા તીર્થંકર **શ્રી મહાવીર પ્રભુએ** માતા ત્રીશલાની કુખે જન્મ લીધો હતો અને સર્વે સ્થળે અપાર આનંદોત્સવો થઇ રહ્યા હતા. આપણે આપણી, આપણા બાપદાદાની, અને પુત્રપુત્રીઓની વર્ષગાંઠ ઉજવવાનું ભુલતા નથી તો શું મહાવીર પ્રભુની જયંતી (જન્મતિથિ) ઉજવવાનું ભૂલી જવું જોઇએ? કદીપણ નહિ. આ જયંતીની ને એટલા ઠાઠમાઠથી ઉજવવી જોઇએ કે આખા હિંદમાં ગામેગામ ને શહેરેશહેર સમગ્ર રૈયતને એમ માલૂમ પડે કે આજે (ચૈત્ર શુદ ૧૩) જૈનોનો કંઇ મહાન તહેવાર છે. અન્ય કોમોમાં રામજયંતિ, કૃષ્ણજયંતિ, હનુમાનજયંતી, નરસિંહજયંતિ ગણપતિજયંતિ, જમશેદનરોઝ જયંતિ, ઇશુખ્રીસ્તની જયંતિ વગેરે જાહેર રીતે ઉજવાય છે તે એટલે સુધી કે કૃષ્ણજયંતી **રામનવમી, જમશેદનરોઝ** વગેરે તો નામદાર સરકાર તરફથી ખાસ જાહેર તહેવાર તરીકે વર્ષોથી પળાય છે જ્યારે **જૈન**ની **મહાવીરજયંતીને** શું જાહેર તહેવારોમાં સ્થાન ન મળી શકે ! બેશક, જો પ્રયાસ કરવામાં આવે તો એ કંઇ મુશ્કેલ નથી, આપણીજ બેદરકારીનાં આ પરિણામ છે, અમને જણાવતાં આનંદ થાયછે કે લાહોરના જૈનોએ પ્રયાસ કરવાથી ત્યાંના ડેપ્યુટી કલેકટર એચ. પી. ટાલીટને ચૈત્ર સુદ ૧૩ (મહાવીર જયંતી) ને દિને જાહેર તહેવાર પાળવાની આજ્ઞા પ્રકટ કરી છે. આ પ્રમાણે દરેક જીલ્લામાં પ્રયત્ન કરવામાં આવે તો આપણે મહાવીરજયંતીને સમગ્ર હિંદમાં જાહેર તહેવાર તરીકે પળાવી શકીએ.

હવે આ જયંતી દરેક સ્થળે કેવીરીતે ઉજવવી તે સંબંધી થોડીક સુચનાઓ કરવી અસ્થાને ગણાશે નહિ—

૧ જૈનોના ત્રણે ફિરકાના ભાઇઓ એકજ મહાવીરપ્રભુને માને છે જેથી આ જયંતી એકત્ર મળીને ઉજવવી.

૨ મંદિરો, ઘરો, દુકાનો, બોર્ડિંગો, પાઠશાળાઓ આશ્રમો, પુસ્તકાલયો વગેરે એવી રીતે શણગારવા કે જેથી જાહેરને એમ જણાય કે આજે જૈનોનો કંઇ પવિત્ર દિવસ છે.

૩ દરેક મંદિરમાં મહાવીર પ્રભુનું પૂજન અભિષેકપૂર્વક ભક્તિભાવથી અને રાગતાનથી કરી મહાવીરચરિત્ર વ્યાખ્યાન રૂપે વંચાવવું જોઇએ.

૪ સમગ્ર જૈનોની એક જાહેર સભા ઠાઠમાઠથી બોલાવી મહાવીર પ્રભુનો જન્મકાળ અને તે પરથી લેવાના બોધ સંબંધી વ્યાખ્યાનો થવા ઉપરાંત મહાવીર જયંતી જાહેર તહેવાર તરીકે પાળવાને સરકારને અરજ કરનારો ઠરાવ કરવો તથા જો કોઇ સ્થળે માંહોમાંહે કજીયો હોય તો તેનો સજ્જ મનથી ક્ષમાભાવે નીકાલ કરી નાંખવો જોઇએ તથા પુસ્તકો વગેરેની પ્રભાવના કરવી જોઇએ.

૫ આ પર્વ નિમિત્તે કંઇને કંઇ રકમ વિદ્યાદાન માટે કાઢવી જોઇએ અને જ્યાં પાઠશાળા ન હોય ત્યાં તે સ્થાપવા પ્રબંધ થવો જોઇએ.

૬ માસિક પાક્ષિક કે અઠવાડિક સભા ન હોય તો સ્થાપવી જોઇએ.

૭ દર વર્ષે નિયમિત રીતે આ જયંતી ઉજવાય તે માટે પાકું બંધારણ થવું જોઇએ યાને અમુક સભ્યોએ જયંતીનો ખર્ચ ઉપાડી લેવાની પ્રતિજ્ઞા કરવી જોઇએ.

૮ આ જયંતી દરેક સ્થળે ઉજવાયાના વિગતવાર સમાચાર અમોને સત્વર મોકલી આપવા કે જેથી તે આવતા અંકમાં પ્રગટ કરી શકાય.

महावीर जयंतीका कर्तव्य।

पाठकोंको ज्ञात होगा कि चैत्र शुक्ला त्रयोदशीके दिन भगवान् महावीरका जन्म हुआ था। वे एक महात्मा थे। उनमें अनेक गुण थे। सुख शान्ति के दाता थे। हम भी सुख शान्तिके मार्गपर आना चाहते हैं। इसके लिए यही उपाय है कि हम उनके गुणोंका स्मरण करें। यद्यपि उनके गुणोंका स्मरण चाहे जिस तिथिको और चाहे जिस समय हो सकता है। लेकिन यह सर्व साधारण आदमियोंसे नहीं हो सकता। यह वे ही कर सकते हैं जो महावीरके गुणोंमें अत्यन्त अनुरक्त हो गये हैं, जिनको यही धुन सवार हो गई है। सर्व साधारण–मामूली व्यक्तिको किसी भी काम करनेके लिए निमित्त कारण आवश्यकीय होते हैं। उनकी चित्तवृत्ति निमित्ताधीन होती है। भगवान् महावीरके गुणोंका स्मरण करानेके लिए सर्व साधारणको कोई न कोई निमित्त होने चाहिए। इसी आवश्यकताको ध्यानमें रखकर भगवान् महावीरके निर्वाणके दिन निर्वाणोत्सव मनाया जाता है। वह बहुत दिनोंसे प्रचलित है।

इसी प्रकार भगवान् महावीरके जन्मतिथिके दिन भी उनकी जयन्तीका उत्सव मनाया जाता है। पाठकोंको यह ज्ञात होगा कि इस उत्सवके मनानेकी प्रथा अभी चार छह वर्षसे ही चली है। इतनेपर भी समाजको यह उत्सव इतना मान्य है कि यह आधुनिक होते हुए भी इस समय सर्वत्र बड़े उत्साहके साथ मनाया जाता है। लेकिन लोग इस उत्सवको ऐसे रूपमें मनाते हैं कि जो दिवालीको मनाये जानेवाले निर्वाणोत्सवका रूप है। निर्वाणोत्सवके दिन व्याख्यानोंमें भगवान् महावीरके जिन गुणोंका स्मरण किया जाता है वे ही गुण जयन्तीके उत्सवके दिन भी कहे जाते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि यह जयन्ती-उत्सव है और वह निर्वाण उत्सव।

असलमें होना तो यह चाहिए कि निर्वाण उत्सवके दिन भगवान् महावीरके निर्वाण सबन्धी गुणोंका सूक्तियोंका वर्णन हो और **जयन्ती उत्सवके दिन भगवानके जन्मसंबन्धी गुणोंका वर्णन हो।** ऐसा न होनेसे ये उत्सव ऐसे ही अनिष्टसे प्रतीत होते हैं जैसे कि किसी पुत्रके जन्मोत्सवमें तो मरणके गीत गाये जायें और मरण समयमें जन्मोत्सवके।

इसके लिए यह आवश्यकीय है कि महाशय दोनों उत्सवोंकी न्यारी २ सूक्तियोंकी अच्छी जानकारी प्राप्त करें। खास जयन्ती उत्सवके गुणोंकी भरपूर जानकारी न होनेके कारण ही वक्ता महाशय भगवानके अन्य उत्सव सम्बन्धी गुणोंका वर्णन कर जाते हैं। क्योंकि कुछ न कुछ तो कहना ही चाहिए। जयन्ती उत्सव कोई साधारण उत्सव नहीं। उससे बालककी शिक्षाका घनिष्ट सम्बन्ध प्रतीत होता है। बालककी होनहारताका पता चलता है। जिस समय घरमें किसी पुण्यहीन निकृष्ट बालकका जन्म होता है तो उस समय उस घरमें नई २ कलहें उत्पन्न

मंदिर है। ७० और ६० एकड़ जमीन है। वेलाडूमें आदिनाथस्वामीका मंदिर है। ४० एकड़ जमीन है। पोंडुरियामें पार्श्वनाथका मंदिर है जिसकी ८० एकड़ जमीन है और जिनेन्द्र-मंगल ग्राममें पार्श्वनाथका मंदिर है जिसकी २०० एकड़ जमीन है परंतु सभा और मंदिर जीर्ण हालतमें हैं। कहीं तो २ पूजन प्रक्षालन तक नहीं होता और सब मिलकर २५४८ एकड़ जमीन मंदिरों के कब्जेकी है परंतु यह सबकी सब जमीन अब सरकारके कब्जेमें हो गई है। यदि कोई धर्मात्मा श्रीमान् कोशिश करे तो यह सब जमीन सरकारसे वापिस मिल सकती है। वहाँ जैनियोंकी वस्ती न होनेसे ही इस जायदादका यह हाल हुआ है।

उपदेशककी आवश्यकता—दानवीर सेठ माणिकचंदजीके ट्रस्ट फंडकी तरफसे भ्रमण करानेके लिए न्यायके जानकार एक विद्वान् उपदेशककी आवश्यकता है। पत्रव्यवहारका पता—ब्र० शीतलप्रसादजी, ही०गु० जैन बोर्डिंग तारदेव बम्बई।

कुमार सभाका उत्सव—जैन कुमार सभा झालरापाटन केम्पका तीसरा वार्षिकोत्सव ता० ५से ९ अप्रेल तक होगा। जिसमें विद्वानोंके व्याख्यान भी होंगे।

स्या० महाविद्यालयका वार्षिकोत्सव—श्रीस्याद्वादमहाविद्यालय काशीका वार्षिकोत्सव बड़े समारोहके साथ ता० ७-८ अप्रेल—चैत्र सुदी १५ और वै० कृ० १ को होगा। कार्यक्रम इस प्रकार है—प्रथम दिन दुपहरको रिपोर्ट और पारितोषक वितरण, शामको धार्मिक व्याख्यान। दूसरे दिन टाउन हालमें दुपहर १ से ४ बजे तक सामाजिक और ५ से ८ बजे तक धार्मिक व्याख्यान होंगे। सब भाइयोंको अवश्य पधारना चाहिए।

विधवाविवाह।

(लेखक-मानमल कासलीवाल, बम्बई)

आज कल जैन समाजमें चारों तरफ विधवाविवाहका शोर मच रहा है। जिस अखबारको हम देखते हैं उसमें कुछ न कुछ इस विषयकी चर्चा पाई जाती है। कोई कोई अखबार तो यहाँ तक पहुँचे है कि वे इस प्रथाको जारी करनेका उपदेश देते हैं तथा बहुतसे अखबार इसका खंडन कर रहे हैं। हमें नहीं मालुम होता कि इस अवाजके उत्पन्न होनेका मुख्य कारण क्या है। विधवाविवाहके प्रचारक इसको जाति संख्याकी वृद्धिका हेतु मानकर इसको समाजमें प्रचलित करना चाहते हैं लेकिन हमको देखना चाहिये कि केवल जाति संख्या वृद्धि करनेसे लाभ है या जातिको अपने आत्म कल्याणकी ओर झुकानेसे लाभ है।

थोड़ी देरके लिए मान भी लिया जाय कि यदि एक जातिकी संख्या बहुत बढ़ रही है, लेकिन उसमें अपने "मोरल प्रिंसिपल्स" (moarl principles) पर कुछ ध्यान नहीं दिया जाता तो क्या हम उस जातिको प्रशंसारूप वाक्योंसे संबोधन करेंगे? दृष्टान्त लीजिए कि कोई जाति अपने यहाँकी भावी संतानोंका रंग व मुख वगैरहकी आकृति अच्छी बनानेके लिए, व्यभिचार व अधर्मका कुछ खयाल नहीं करके अपने यहाँकी स्त्रियोंको संतानोत्पत्तिके लिए कोई सुन्दर पुरुषोंके पास भेजती है तो क्या हम उस जातिको एक अच्छी और उन्नति करनेवाली जातियोंमेंसे कहेंगे? नहीं नहीं, कभी नहीं। इस पृथ्वीपर जब कि हमने मनुष्य जन्म धारण किया है तो इसका उद्देश सिर्फ यहींके सुखव भोगोंपर लक्ष्य देनेका नहीं होना चाहिए, किन्तु हमको अपने आत्मकल्याणकी तरफ भी ध्यान देना चाहिए। खास करके उस जातिको जो कि जैन धर्मकी अनुयायिनी है तथा उक्त धर्म कथित परलोकादिकमें श्रद्धा रखती है।

अब हमको इस आवाजके उत्पत्ति होनेके मुख्य कारणकी ओर लक्ष्य देना चाहिए। यह सृष्टिका नियम है कि हमपर १०० पुरुष खूब भरे पेट भोजन करनेवाले इतना असर नहीं करते जितना कि पाँच पुरुष जो कि कारणवश भूखे रह जाते हैं व दुःखसे अपना जीवन व्यतीत करते हैं। इसी प्रकार हमारी जातिके १०० विवाहित पुरुष और १०० विधवा धर्मपूर्वक चलनेवाली स्त्रियाँ इतना असर नहीं करतीं, जितना कि पांच अविवाहित पुरुष या पाँच ऐसी विधवाएँ जो कि अपने दुःख सहनेमें असमर्थ है, लेकिन जिस वक्त हम इन पाँच पुरुषोंके तरफ ध्यान दें तो हमारा लक्ष्य साथहीमें जो ज्यादा पक्ष है उस तरफ भी जरूर जाना चाहिए तथा जो नियम हम बनाना चाहते हैं वे सर्वके हितु हों इस तरहके बनाना चाहए। यदि विधवाविवाहसे सम्पूर्ण जातिको फायदा पहुँचे और जातिकी उन्नति होय तथा वह शास्त्रसम्मत हो तो चाहे पुरुष कुछ भी कहें, हमें उसको

१ सदाचरणीय अभिप्रायत्व।

जरूर प्रचलित करना चाहिए। इसके विपरीत-में, यदि उससे व्यक्ति विशेषोंका कभी किसी अंशमें, फायदा होय और जातिमात्रका नुकसान हो तो हमें उसका नाम भी न लेना चाहिए तथा आन्दोलन करके उसके प्रचारकोंका मुँह बंद करना चाहिए।

विधवाविवाहका प्रचार होनेसे तीन चार बड़े अनर्थ होंगे और इसलिए विधवा-विवाह किसी हालतमें श्रेयस्कर नहीं कहा जा सकता।

पहिले ही तो विधवाविवाहका प्रचार होनेसे जो स्त्रियां कि कर्मवश विधवा होगई हैं उन को अपना जीवन सफल करनेका मौका चला जायगा। जिस समय कोई स्त्रीका पति मर जाता है तो वह यदि समझदार है तो विचा-रती है कि " देखो मेरे कितने पापका उदय है " और फिर वह स्त्री गृहस्थ झगड़ोंमें ज्यादा नहीं पड़कर अपने उन महत्पापोंके धोनेका यत्न करती है। अब उन इस तरह जीवन व्यतीत करनेवाली स्त्रियोंको फिरसे सांसारिक भ्रमजालमें डाल देना पाप नहीं है तो क्या है?

जरूरी बात है कि उपर कहे हुएपर बहुतसे महाशय दो आपत्तियां खड़ी करेंगे-पहली यह कि यदि ऐसा है तो मनुष्यको भी फिर पुनर्विवाह नहीं करना चाहिए। इस बातका जवाब तब दिया जा सकता है जब कि हम इसका कारण मूलसे उठावें। ऐसा अब तक क्यों होता आया है कि पुरुष तो बहुतसे विवाह कर सकता है किन्तु स्त्रियाँ एक पुरुषके सिवाय दूसरा पति नहीं कर सकतीं। यदि विधवाविवाहकी इजाजत दी जाय तो यह भी लाज़मी बात है कि स्त्रियोंको एकके-सिवाय दो तीन या इनसे भी ज्यादा पति बनानेकी इजाजत दी जाय किन्तु यह बात हम देखते हैं कि शास्त्र सम्मत और लोक सम्मत दोनों नहीं है।

दूसरे प्रत्यक्षमें देखा जाता है कि एक मनुष्य बहुतसी थालियोंमें परोसे हुए भोजनमें जिस जिस रकाबीके भोजनके खानेकी इच्छा वह करे वह खुशीसे खा सकता है (सिवा इसके कि किसीमें अभक्ष्य भक्षण रखा हुआ हो) लेकिन एक थाली जिसमेंसे उसने उठाकर खाया है वह फिर सिवा किसी क्षुद्र जातिके पुरुषके और किसीके काम नहीं आसक्ती और यदि उस थालीमेंसे कोई उच्च पुरुष फिर कुछ खानेकी इच्छा करे तो लोग उसको मूर्ख तथा अधर्मीके नामसे ही संबोधन करेंगे। उसी तरहसे जो स्त्री एक वक्त किसी पुरुषसे उच्छिष्ट कर दी गई हो ऐसी स्त्रीको कोई दूसरा पुरुष भोग करे तो वह अधर्मी और पापी ही कहलायगा तथा इसके प्रचारकोंको कोई इनसे भी बड़े नामसे संबोधन करना पड़ेगा।

दूसरा आक्षेप यह होगा कि क्या विधवा स्त्रियें उक्त प्रकार ही अपना समय व्यतीत करती हैं। इसका उत्तर देना कुछ मुश्किल है यह बहुत करके उनके चारों तरफकी हालत (surroundings) पर निर्भर है। बहुतसी स्त्रियोंके लिये कहा भी जा सकता है कि वे

धर्मसे चलती हैं तथा दूसरी थोड़ी बहुत स्त्रियाँ यदि अपने पथसे डिग भी गई होय तो उनको सुमार्गमें लानेकी आवश्यकता है न कि उन थोड़ीसी स्त्रियोंके लिए सब स्त्रियोंके धर्मका ह्रास कर देना।

दूसरा अवगुण विधवाविवाहके प्रचार होनेसे यह होगा कि स्त्रीपुरुषोंकी आन्तरिक प्रीतिमें बहुत कुछ फर्क पड़ जायगा फिर आपको पतिके *लिए प्राण न्योछावर कर* देनेवाली स्त्रियोंके उदाहरण बहुत कम मिलेंगे। प्रत्यक्षमें ही देखिए कि ऐसे दृष्टान्त भारतवर्षमें (जहाँ कि विधवाविवाहका प्रचार नहीं है) कितने मिलेंगे तथा यूरोपादि खंडोंमें (जहां कि इसका प्रचार है) कितने मिलेंगे। मेरा कहनेका यह मतलब नहीं कि वहाँ प्रेमका अभाव ही है। प्रेमका जो स्वाभाविक सद्भाव है वह सब देशोंमें यहाँ तक कि आफ्रिकाके *नीग्रोज़में भी पाया जायगा* किन्तु वह गाढ़ प्रेम जिसके कि कारण एक स्त्री अपने पतिकी *मृत्युके अनन्तर भी उसकी यादको नहीं भूलती* है उसका अभाव हो जायगा तथा इस प्रथाके प्रचलित होने बाद स्त्रियाँ व पुरुष एक सांसारिक वाञ्छाके निवृत्ति करनेके उपाय मात्र रह जायँगे।

तीसरा बड़ा अनर्थ विधवाविवाहके होनेसे यह होगा के *आपके यहां भी मुसलमान या यू-*रोपियन्सकी सदृश भाई बहिनमें शादियां होने लगेंगी। विचार कीजिए कि एक विधवा स्त्रीके अपने पूर्व पतिसे एक लड़की है। अब उसने दूसरे पतिसे विवाह *किया उसके अपनी* पूर्व स्त्रीसे एक लड़का है। अब इन दोनों पुत्र और कन्याका विवाह आपसमें हो जायगा क्योंकि विधवा विवाह जबसे शुरु होगा तबसे साखे वगैरह तो खूंटीपर टांग दी जायगी और यदि साखे टाली भी जायँगी तो कोई विघ्न जैसी बात नहीं उपस्थित होगी। अब आप विचारिए कि वह स्त्री (कन्या) अपनी माको "मा"के नाम*से पुकारेगी या सासु कहेगी,* पुत्र अपने पिताको पितृश्रीके नामसे पुकारेगा या श्वसुर कहेगा और वह कन्या अपने पतिको पति कहेगी या भाई कहकर पुकारेगी। इसी प्रकारके बहुतसे अनर्थ होंगे।

इन सब बातोंके विचारनेसे हमें मालूम होता है कि विधवाविवाह कितनी ही आपत्तियोंका स्थान है। *संख्या वृद्धिका कारण* यदि मान भी लिया जाय (जो हिन्दुस्तानकी मनुष्य संख्या दूसरे देशों जहाँके पुनर्विवाह प्रचलित है, उनसे किसी अंशमें कम नहीं है) तो भी जातिका लक्ष्य च्युत होकर संख्याका बढ़ाना किसी अंशमें कल्याणकारी नहीं कहा जा सकता।

इसीलिए विवाहके प्रचारकोंसे (यदि कोई होंय?) *मेरी सविनय प्रार्थना* है कि वे जातिपर धर्मपर तथा अपने देशपर कृपाकर इस विषयके लेख न लिखें तथा गिरती हुई जातिको और गिरानेकी कोशिश न करें। यदि वे *समाजके सच्चे हितैषी होय तो इस आवाज़के* उठनेके मूल कारण बालविवाह, वृद्धविवाह कन्याविक्रयादि कुरीतियोंके निवारण करनेका यत्न करें।

उपदेशक पीतांबरदासजीना
भ्रमणनो रिपोर्ट.

(તા. ૧૭–૧–૧૭ થી તા. ૧–૩–૧૭ સુધી)

મુંબાઈમાં બાળસભામાં વ્યાખ્યાન કર્યું. વ્યાખ્યાન શૈલી શીખવામાટે આજ પ્રમાણે દરેક સ્થળે બાળસભા સ્થપાવી જોઇએ.

આમોદ–સભા કરી ઉન્નતિ પર વ્યાખ્યાન આપ્યું, જેથી અત્રેના ભાઇઓએ બાળબોધ જૈન પાઠશાલા સ્થાપવા વચન આપ્યું. ભણવા-લાયક ૧૫–૨૦ બાળક છે. એએ સ્વાધ્યાયનો નિયમ સ્વીકાર્યો.

કેરવાડા–માત્ર ૧૨ ઘર છે. ભાઇ નાગરદાસ-ના ઉદ્યોગથી ધર્મચર્ચા સારી થઇ. ત્રણ જણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો તથા શેઠ હરજીવન હરખચંદે ५) ઉપદેશકફંડમાં ભર્યા.

પાદરા–પાઠશાળાની પરીક્ષા લીધી તથા એક સભા કરી અભક્ષ્ય ત્યાગ અને સ્વાધ્યાય પર વિવેચન કરવાથી ૫ જણે રાત્રે અન્નના પદાર્થો ન ખાવાનો નિયમ કર્યો અને ૧૫ જણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ સ્વીકાર્યો. ઉપદેશક-ફંડમાં રૂ. ૨) શા ગરબડદાસ બહેચરદાસે આપ્યા.

પાવાગઢ–મેળા તથા મેનેજીંગ કમીટીમાં સામેલ થયો. રાત્રે શાસ્ત્રસભા કરી. કમીટીના જીવદયા ખાતામાં જે રકમ છે તેમાંથી અહિંસા ધર્મનો પ્રચાર કરનારા લેખ ટ્રેકરૂપે ગુજરાતી-માં કાળીકા દેવીના મેળા સમયે એવા લોકોને વેંચવા જોઇએ કે જેઓ બળીદાનના સંકલ્પથી કાળીકા સમક્ષ પશુપક્ષી ચઢાવે છે.

દાહોદ–કોન્ફરંસ માટે તૈયાર થયેલા મંડપમાં સભા કરી દાનધર્મ પર વિવેચન કર્યું સંખ્યા ૫૦૦ હાજર હતી.

રખીઆળ–મહામહેનતે રાત્રે સભા કરી. ૧૦ ભાઇઓ હાજર થયા. કોન્ફરંસમાં ડેલીગટ થવા કહ્યું તો જુવાબ આપ્યો કે મુખ નાકી થયા વગર કેમે કેમ ભરામ!

લાકરોડા–એ સભા કરી જેથી ૨૧ જણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. પાઠશાળા તથા શેઠ માણેકચંદ હીરાચંદ પુસ્તકાલય સારાં ચાલે છે.

ઓરાણ–એક સભા કરી સ્વાધ્યાય અને સદાચાર પર વ્યાખ્યાન આપ્યું. ૪૫ ભાઇ સ્વાધ્યાય કરે છે. અત્રેની પાઠશાળા અધ્યા-પક ભાઇ લલ્લુભાઇ રાયચંદના ધાર્મિક ઉત્સાહ-થી સારી ચાલે છે. ५) ઉપદેશકફંડમાં આવ્યા.

સોનાસણ–એક શાસ્ત્ર સભા કરી કુરિવાજો બંધ કરવા વિવેચન કર્યું. પાઠશાળા ૭ મહી-નાથી પાછી બંધ છે તે એના વ્યવસ્થાપક શેઠ જીવરાજે યોગ્ય અધ્યાપક બોલાવી ચાલુ કરવી જોઇએ.

ફતેપુર–એક સભા કરી. પાઠશાળા માટે માસિક ફંડ થયું છે. અધ્યાપકની જરૂર છે.

ઇડર–સભા કરી કુરીવાજો ત્યાગ કરવા તથા કેળવણીના પ્રચાર સંબંધી વિવેચન કર્યું. બે ભાઇએ સ્વાધ્યાય અને કેટલાક વિદ્યાર્થીઓ-એ રાત્રિભોજનનો ત્યાગ કર્યો. પાઠશાળાની પરિક્ષા લીધી. છોકરીઓનું શિક્ષણ વખાણવા યોગ્ય છે. ગયે વર્ષે મોટી ઉમરની બ્હેનો ભણવા આવતી હતી પણ હાલ માત્ર એકજ આવે છે. પાઠશાળા સાથે શ્રાવિકાશ્રમ તો ચાલુજ રહેવું જોઇએ. ત્રણ ભાઇઓ દાહોદ સભા માટે પ્રતિનિધિ નિમાયા.

અમદાવાદ–શેઠ પ્રે૦ મો૦ દિગંબર જૈન બોર્ડીંગના વિદ્યાર્થીઓને ધર્મશિક્ષણની પરીક્ષા લેવા માટે બોલાવ્યા, પરંતુ ભાઇ દેશ-વલાલ ડાલાભાઇ બી૦ એ૦ એ કેટલીકવાર બોલાવ્યાબાદ માત્ર ચારજ વિદ્યાર્થી હાજર થયા !!! વિદ્યાર્થીઓએ ખુલ્લી રીતે કહ્યું કે અધ્યાપક ન હોવાથી અમે સઘળું ધર્મ-શિક્ષણ ભુલી ગયા છીયે. આપ અમને શા માટે ઠપકો આપો છો !

દિલગીરી થાય છે કે ૧૨ વર્ષની ધાર્મિક કેળવણીના સંસ્કાર મેટ્રીકયુલેશન પાસ કરવા-વાળા વિદ્યાર્થીઓ પર કંઇપણ રતા નથી.

બોર્ડિંગના વ્યવસ્થાપકોની ફરજ છે કે તેઓ ઘણીજ તાકીદે યોગ્ય અધ્યાપક રાખવાનો પ્રબંધ કરે. સુપ્રીન્ટેન્ડંટની તબીયત ઠીક નહોતી એમ સાંભળવામાં આવ્યું છે.

દાહોદ—મુંબાઇ અને માળવા પ્રાંતિક સભાના વાર્ષિકોત્સવમાં સામેલ થયા.

વિશેષમાં ઉપરોક્ત ભ્રમણમાં ખાસ કરી દાહોદ સભામાં લાભ લેવા તથા કોમમાં પ્રચલિત નકામા, હાનિકારક તથા ખર્ચાળ રિવાજો બંધ કરાવવા પ્રયાસ કર્યો હતો. ખાસ વિચિત્રતા એ છે કે કેટલીક પાઠશાળાઓમાં દશ દશ બાર બાર વર્ષની **છોકરીઓના દાંત** સોનેથી મઢેલા જોઇ તેમને પૂછવાથી જણાયું કે માબાપ અને પતિના પ્રેમને માટે એ ફરજીયાત જડાવવા પડે છે. વાહરે પ્રેમ! અને વાહ સુંદરતા! કે જે મઢતી વખતે લોહી લુહાણ થાય તથા દાંત સાફ ન થઇ શકવાથી મોંમાંથી દુર્ગંધ આવે તથા જન્મપર્યંત કુદરતી દાંત ગમે તેટલા કમજોર થઇ જાય તોપણ આ બેડંગી અને અદ્ભુત સુંદરતાની આગળ આટલાં દુઃખોની કંઇ હિંમતજ નહી થાય! અમો તે સાસુઓ અને માતાઓનું ખાસ ધ્યાન ખેંચીએ છીએ કે તેઓ એ નીતિના માર્ગને ગ્રહણ કરે કે—"જેથી પેટ ફાટી જાય એવી સોનાની કટારીનું શું પ્રયોજન છે?"

સમાજ સેવક—ઠાકોરદાસ ભગવાનદાસ ઝવેરી
મંત્રી, ઉપદેશક વિભાગ—મુંબાઇ

मुंबाई समाचार
અને
विधवाविवाहनी चर्चा.

મુંબાઇ સમાચાર તા. ૨૮-૨-૧૭ ના અંકમાં દાહોદમાં મળેલી મુંબઇ-માળવા દિગંબર **જૈન પ્રાંતિક કોન્ફરંસના પ્રમુખ શેઠ નવલચંદ હીરાચંદ** ઝવેરીના ભાષણની સમાલોચના રૂપે એક સંપાદકીય લેખ લખાયો છે, જેમાં ઘણીબાબતોમાં એ વ્યાખ્યાનની પ્રશંસા કરવા પછી શેઠ નવલચંદે વિધવાવિવાહને ધર્મ વિરૂદ્ધ બતાવ્યો છે તે ઉપર પોતાના વિચારો દર્શાવતાં એવું બતાવવાનો પ્રયત્ન કર્યો છે કે **જૈન**શાસ્ત્રોમાં વિધવા વિવાહની મનાઈ નથી, પણ એની આજ્ઞા છે (!?) એ બાબત ત્રણ દાખલાઓ આપેલા છે, જેનું ખંડન નીચે મુજબ છે—

૧. "ચોવીસ તીર્થંકરોમાંથી એકને ગૃહસ્થાશ્રમમાં જે બે પત્નીઓ હતી તેમાં એક વિધવા હતી." આ વાત કોઇપણ દિગંબરજૈનશાસ્ત્રમાં નથી અને શ્વેતાંબર **જૈન**શાસ્ત્રોમાં પણ નહીંજ હશે. જો કદાચ હોય તો તેને માનવાવાળા દાહોદ કોન્ફરંસના પ્રમુખ કે ત્યા મળેલા દિગંબર જૈનો નથી.

૨. "રાવણની સ્ત્રી મંદોદરીએ અને વાલીની પત્ની તારાએ વિધવા થવાથી અનુક્રમે વિભીષણ અને સુગ્રીવની સાથે વિવાહ કર્યો." આ બાબતને પણ જૈન લોકો માનતાજ નથી. દિગંબર જૈનાચાર્ય રચિત બારસે સાડાત્રણ વીર સંવતનું સંસ્કૃત પદ્મપુરાણ ખુલ્લી રીતે બતાવે છે કે મંદોદરી વિધવા થવા પછી સાધ્વી—આર્યિકા થઇ ગઇ હતી. રાવણના મૃત્યુ પછી મંદોદરીએ આ વાક્યો કહ્યાં—"હું પિતા, પુત્ર અને પતિ એ સર્વેથી રહિત થઇ. સ્ત્રીના એજ રક્ષક છે. હવે હું કોને શરણે જાઉં?" આ વાક્યોથીજ જણાય છે કે એ પ્રાચીન કાળમાં, વિધવાવિવાહનો રિવાજ નહોતો. જો એ રિવાજ હોત, તો

પેતા, પુત્ર અને પતિ એ ત્રણુજ સ્ત્રીના રક્ષક છે એવું વાક્ય કહેવામાં નહી આવતે. શેકથી રહિત થઇને મંદોદરી આર્યિકા થઇ ગઇ અને તપસ્યા કરવા લાગી. એજ સમયે રાવણની બ્હેન ચંદ્રનખા જે પોતાના પતિ ખરદૂષણના મરવા પછી ઘણાં વર્ષ થયાં વિધવા અવસ્થામાં આવિકાનાં વ્રતો પાળી રહી હતી, તે પણ હવે આર્યિકા થઇ ગઇ. ઉપરની બાબત લેખકે હિંદુઓના રામાયણની લખી હશે કે જેને જૈનો પ્રમાણિક માનતા નથી.

૩. "દ્રૌપદીને પાંચ પતિ હતા." આ વાત પણ દિગંબર જૈન શાસ્ત્રોમાં નથી. શ્રીજિનસેનાચાર્યકૃત જાણીતા હરીવંશપુરાણુ ગ્રંથમાં તથા પાંડવપુરાણમાં ચોખ્ખું દર્શાવેલું છે કે દ્રોપદી માત્ર અર્જુનનીજ પત્ની હતી. દિગંબર જૈન શાસ્ત્રોમાં કોઇ પણ સ્થળે એવું કોઇ પણ દ્રષ્ટાંત મળતું નથી કે કોઇ ધર્માત્મા ગ્રહસ્થ સ્ત્રીએ વિધવા થવાથી ફરી લગ્ન (વિધવાવિવાહ) કર્યો હોય. વિધવાવિવાહ શબ્દજ અસંબદ્ધ છે. એ વાક્યજ અશુદ્ધ છે કેમકે પ્રાચીન કાળમાં વિવાહનો અર્થ યોગ્ય વર સાથે કન્યાના દાનનો હતો. સ્ત્રીઓને બીજા પતિ માટે એટલે સુધી અટકાવ હતો કે જ્યારે રાજુલમતીના વિવાહ માટે આવેલા નેમીનાથ તીર્થંકર વૈરાગ્યવાન થઇને પાછા ચાલ્યા ગયા ત્યારે રાજુલે કહ્યું કે-જો કે નેમીનાથનું પાણિગ્રહણ પ્રકટરૂપે મને થયું નથી, તોપણ હું મારા મનથી એમનેજ વરી ચુકી છું. હું અન્ય પુરૂષની ઇચ્છા કરી શકતી નથી. જે વાતની દિગંબર જૈન શાસ્ત્ર આજ્ઞા આપતું નથી તેનેજ દિગંબર જૈનો ધર્મ વિરૂદ્ધ માનશે.

પ્રમુખ શેઠ નવલચંદે પોતાના ભાષણમાં વિધવાવિવાહને અજરૂરીપણુ બતાવ્યો છે કેમકે જે કોમોમાં વિધવાવિવાહનો રિવાજ છે તેમાં પણ ૨૫ વર્ષસુધીની ઉમરની ૧૦૦૦ માં ૧૫ વિધવાઓ દીવામાં આવે છે. મુંબઇ પ્રાંતના મુસલમાન અને ખ્રીસ્તીઓમાં અનુક્રમે ૧૦૦૦માં ૨૦ અને ૧૩ વિધવા મળી આવે છે. જૈનોમાં વિધવાઓની જે સંખ્યા વધારે છે તે બાળલગ્ન, વૃદ્ધવિવાહ, વેશ્યાનૃત્ય વગેરે કુરિવાજો બંધ કરવાથી ઓછી થઇ શકશે અને કોઇપણ બાળવિધવા જણાઇ શકશે નહિ. પ્રમુખના ભાષણથી અધિપતિને માલૂમ પડયું હશે કે જે નીચ કોમમાં વિધવાવિવાહ થાય છે ત્યાં બાળલગ્ન વધુ થાય છે કેમકે વિવાહ કરવા યોગ્ય વિધવા અને કન્યા બંને તૈયાર હોવાથી કન્યાના બાપો સારો વર મળવાની લાલચે લાચાર થઇને નાની ઉમ્મરમાં પરણાવી દે છે અને મુંબાઇ સેસન્સ કમીશનના લખવા પ્રમાણે એમજ છે.

પ્રમુખના ભાષણના ૬ ઠ્ઠા પાનેથી અધિપતિને માલૂમ પડશે કે મુંબાઇ પ્રાંતમાં જૈનોમાં બાળકોથી કન્યાઓ વધુ ઉત્પન્ન થાય છે અર્થાત્ ૧૦૦૦ માં ૧૧૫૮ છોકરા અને ૧૩૦૪ છોકરીઓ છે. જો માતાઓ કન્યાઓની યોગ્ય રીતે બરદાસ્ત કરે તો કન્યાઓના વિવાહ માટેજ પુરૂષો મળવા મુશ્કેલ થઇ પડે, તો પછી વિધવાઓ માટે કયાંથીજ મળે અને જો વિધવાવિવાહ ચાલુ થાય તો મુંબાઇના સેન્સસ આફિસરે લખ્યું છે તેવુંજ ફળ થાય કે કન્યાઓના બાળલગ્ન આથી વધુ થાય અથવા મોટી ઉમરસુધી કુમારા રહેવું પડે ઇત્યાદી કારણોથી પ્રમુખે જે લખ્યું છે તે બરાબર છે. મુંબાઇ સમાચારના ૧૪મી માર્ચના અંકમાં એક જૈને દિગંબર જૈન કોમની ઘટતી જતી સંખ્યાને મટાડવાના ઉપાયો માટે જે લેખ લખેલ છે, તેમાં બતાવેલા ઉપાયો તાકીદે અમલમાં લાવવાની જરૂર છે. વિધવાઓ માટે આશ્રમો હોવાની જે જરૂરાત બતાવેલી છે તે યોગ્ય છે. એક બાજુ વિધવાઓની સંખ્યા ઓછી કરવાનાં કારણો અમલમાં આવે અને બીજી બાજુએ જે વિધવાઓ હોય તેને યોગ્ય કેળવણી દ્વારા ઉપયોગી બનાવવામાં આવે, એજ યોગ્ય છે. સંપાદક.

सोजीत्रा संभाना भटेपरा (वीसा-मेवाडा)ना एकडाना संभावाळाने एक विनंति.



ભાઇઓ, હવે આપણું પંચ આણંદ મુકામે ભરાઇ તેની અંદર સુધારાઓ થયા તે સર્વે આપને યાદ હશે. આપણે આજ સુધી મધના ટીપાની માફક જે આશાઓ રાખતા હતા તેમાંનું કાંઇપણ થયું નથી, એમ હવે સારી પેઠે સમજ્યા હશો.

આપણા એકડાના પંચ સિવાયના બીજાઓ જ્યારે આપણને હલકા ગણે છે તો તે વિષે તમારાં રૂવાં જ્યારે ઊંચાં થતાં નથી તે શું?

મહાત્મા મોહનલાલ કરમચંદ ગાંધીનો દાખલો લઇ તેમની માફક પોતેજ જ્યારે પરિશ્રમ ઉઠાવશો અને બીજાઓની દરકાર નહીં કરો તોજ ફળીભૂત થશો અને સારી કીર્તિને પામશો.

જેઓ આપણી પાસેથી કન્યાઓ લઇ જઇ ને આપણનેજ ધીક્કારે છે, તો તે તમો કેમ સહન કરો છો? આ બાબતનો વિચાર કરી આપણે તે વિષે કંઇ પણ યોગ્ય ઠરાવ કરીશું નહીં, તોપછી આપણી પાયમાલી થઇ જશે, માટે હવે ઘોર ઊંઘમાંથી જાગો તો સારૂં.

આપણા સંભાવાળાઓએ ભેગા થઇ નીચે મુજબ ઠરાવ કરી તેને અમલમાં તાકીદે મુકવાની જરૂર છે કે જેથી કરી આપણને જેઓ હલકા જાણતા હશે તેઓજ આપણી પ્રશંસા કરશે.

૧ આપણા સંભાની અંદર કોઇને નીચ ઊંચ ન ગણતાં સઘળાને સમાન ગણવા.

૨. આપણા સંભાની બહાર કોઇએ કન્યા આપવી નહીં અને આપે તો તેની સાથે કોઇપણ જાતનો સંબંધ રાખવો નહીં અને તે સંબંધમાં તેનો કોઇએ પક્ષ પણ પકડવો નહીં

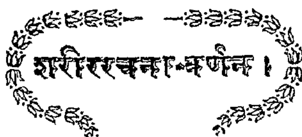
૩. આપણી સંભામાંનો કોઇ માણસ કન્યાવિક્રય કરી પોતાનું કાળું મોં કરે તેને આપણા સંભાના વ્યવહારથી જીંદગીપર્યંત બહાર મુકવો.

૪. આપણા સંભાની અંદર બની શકે તો અંકલેશ્વરના મેવાડાભાઇઓ તથા પાંચસભાના રાયકવાળ ભાઇઓને તથા બીજા દિગંબરી ભાઇઓને મેળવી આપણા સંભાની અંદર ઘરોની સંખ્યા વધારવી.

૫. આપણા સંભાની અંદર કોઇ સાટું તેખડું કરે નહીં, પણ પોતાની નજરમાં આવે ત્યાં પણ આપણા સભાની અંદરજ કન્યા આપવા લેવાનો સંબંધ કરે તે વિષે યોગ્ય બંદોબસ્ત મજબુતાઇથી કરવો કે જેથી કરી આપણને બીજા હલકા માને નહી.

જેઓ આપણને ધિક્કારતા હોય તેવાઓને કન્યા આપવી એ આપણી કેટલી હલકાઇ કહેવાય. બીજાના આગળ પચની બાબતમાં, જાણીબુજીને આપણી હલકાઇ દેખાડવી અગર ભાઇસાહેબ કહેવા અને કહેવું કે તમે સુધારો કરો એ આપણે કેટલું શરમાવા જેવું છે! તે માણસ છે અને આપણે શું નથી! ઊંચી કે નીચી પદવી મેળવવી એ આપણા હાથમાં છે, માટે જેમ બને તેમ આપણામાં સુધારો કરવા આપણે જાતેજ તૈયાર થવું જોઇએ. કહેવત છે કે 'આપ મુવા વિના સ્વર્ગે ન જવાય' માટે હે મહાશયો! હવે આપણા ભવિષ્યનો વિચાર કરી 'કાલે કરીશું' એમ ન રાખતાં જે કરવું યોગ્ય લાગે તે જલ્દી કરવા તત્પર થશો.

જ્ઞાતિસેવક—જીવણલાલ હુલાસચંદ—મુબાઇ.



(ले० हाथीचंद माणेकचंद-सोनासण)
(४ था अंकथी चालु)

शरीरना मुख्य भागो.

आपणा शरीरनी अंदर कया कया अवयवो अथवा भागो क्यां क्यां आवेला छे, ए संबंधी साधारण ज्ञान दरेक माणसने होवुं जोईए, पण आपणा देशी लोको ए संबंधी कशुं पण ज्ञान धरावता नथी अने तेथी तेओ पोताना दरदोना संबंधमां वारंवार भूलो करे छे अने पोताना डॉक्टरो के वैद्योने पण भूलावामां नांखी दे छे. आवी अज्ञानताने लीधे दर्दीनी हकिकतपर बहुज थोडुं वजन राखी शकाय छे अने जो डॉक्टर दर्दीना बोलवापरज विश्वास राखी जाते शरीर तपास्या विना दवा आपे छे, तो जरूर भूल थाय छे. दर्द कलेजामां होय अने वांक बरलनो काढवामां आवे छे अथवा दर्द आंतरडामां होय अने वात कलेजानी करवामां आवे छे. पोताना शरीर विषे माणसोए आटलुं बधुं अजाणपणुं राखवुं जोईए नहि. शरीरनी अंदरना मुख्य मुख्य भागोनुं अने तेनां कार्योनुं ज्ञान तो दरेक माणसे मेळववुं जोईए.

शरीरमां माथुं अने धड ए बे मुख्य अंगो छे. ए बन्ने भागो डोकवडे संधायला छे. जो डोकथी ए बन्ने भागोने जुदा करवामां आवे, तो शरीरनो सघळो व्यवहार बंध पडी मृत्यु नीपजे छे.

माथुं.

माथुं शरीरनुं उत्तम अंग गणाय छे; केमके आपणा शरीरपर अधिकार चलावनारा अधिकारीनो मुख्य मेहेल माथामां आवेलो छे, जे मगज अथवा भेजुं एवा नामथी ओळखाय छे. माथामां बहार दृष्टिए पडता अवयवोमां खोपरी अथवा मगजनी तुंबडी, जोवा माटे बे आंखो, सांभळवा माटे बे कान, सुंघवा माटे बे नस्कोरां अने बोलवा माटे मोंढुं छे, जे सर्वे अवयवो पेला अधिकारीना उपयोगने माटे तेना मेहेलनी लगोलग गोठववामां आवेला छे. माथामां बे गोखला अथवा पोलो छे एक खोपरीनी पोल अने बीजी मोंनी पोल. आ शरीरना अधिकारीनुं घर खोपरीनी पोलमां छे. आ घरमां ज्ञानतंतुओ अने गतितंतुओनो संग्रह थयेलो छे अने ए संग्रहने मगज एवुं नाम आपवामां आव्युं छे. मोंनी पोळमां मों, जीभ, दांत वगेरे आवेला छे. मोंना गोखलामांथी एक नळ डोक वाटे छातिमां थईने पेटमां उतरे छे, जे अन्न-नळ कहेवाय छे, अने खोपरीनी पोलमांथी एक नळ पाछला भागमां बरडानी करोडमां उतरे छे जे करोडरज्जु नळ कहेवाय छे, अने वास्तविक रीते जोतां ए बे नळ वाटे आ आपणा शरीरनो सर्वे व्यवहार चाले छे, तेथीज मोंढाना पहेलो, हाथनो बीजो, पेटनो त्रीजो अने पगनो छेल्लो दरज्जो गणेलो छे.

धड.

धडमां पण माथानी माफक बे महोटी पोलो छे-एक छातिनी पोल अने बीजी

पेटनी पोल. छातिनी पोल अथवा पांजरुं एक कोटडीना जेवुं छे. छातिनी पोलमां बे फेफसां अने हृदय ए बे मुख्य जीवनस्थान छे. ए सिवाय मोंनी पोलमांथी डोक वाटे उतारेलां अन्न—नळ छातिमां थईने नीचे उतरे छे. छातिमां आ अवयवो सिवाय स्त्रीओने बे स्तन होय छे. छाति तथा पेटनी पोलनी वचमां मांसनो छुंवटना आकारनो एक गोळ पडदो दीवालना आकारे आवेलो छे. अन्ननळ ए दिवालने भेदीने पेटमां उतरे छे.

पेटनी पोलना उपला भागमां यकृत एटले कलेजुं, प्लीह एटले बरोल, आमास्य एटले होजरी अने पक्वाशय एटले आंतरडां आवेलां छे. होजरीना उपला छेडामां अन्न-नळ मळे छे अने नीचेना छेडामांथी नानां आंतरडानी शरूआत थाय छे. पेटनी पोलना नीचला भागमां मूत्राशय एटले फुको आवेल छे, जेमांथी मूत्र मूत्रमार्गनी नळी वाटे बहार आवे छे. मूत्रनळी नीचे वृषणनी कोथळी आवेली छे. धडना पाछला हाडकांने बरडानी करोड कहे छे, जेना आधारथी आखुं शरीर टटार रहेलुं छे. करोडमां हाडकांनी एक पोली नळी उतरेली छे. आ नळी उपर छेक मगज साथे संबंध राखे छे अने नीचे केंड सुधी पहोंचेली छे. धडनी अंदर छाति अने पेट ए बे म्होटी पोलो सिवाय बे बाजुमां बे हाथ अने नीचे बे पग आवेला छे, जे मगजमां रहेला अधिकारीनी आज्ञाथी पदार्थोने पकडे छे अने शरीरने एकथी बीजी जगाए लई जाय छे.

खोपरीनी पोल (माथानी तुंबी Skull)

पाछळ जणाव्या प्रमाणे शरीरमां मुख्य त्रण अगत्यनी पोलो छे—खोपरीनी पोल, छातिनी पोल, अने पेटनी पोल. शरीरना सर्वे चैतन्यवाळा भागो अथवा जीवस्थानो ए त्रण पोलोमां आवेला छे. शरीरमां जुदा जुदा अवयवोनी पृथक पृथक क्रिया थवी, तेनुं नाम जीव छे, अने ए क्रियाओ बंध पडवी तेनुं नाम मृत्यु छे. एवी चैतन्यवाळी क्रिया अथवा जीवननां मुख्य स्थानोमां मगज सर्वोपरी स्थान छे अने तेज कारणथी तेनुं रक्षण पण बहुज मजबुत किल्लानी अंदर थयेलुं छे. ए किल्लो ते माथानी खोपरी छे. माथानी आ तुंबडीनी अंदर मगजना चार भागो सिवाय आंख, कान, नाक, जीभ अने मोंढानां घर आवेलां छे.

मगज (भेजुं Brain)

मगज खोपरीनी पोलमां बराबर बेस्तुं करवामां आवेलुं छे, खोपरीनी जमीन मगजनी सपाटीने अनुसरती छे एटले तेमां खाडा खडबा छे, जेमां मगज बराबर बेस्तुं आवे छे. खोपरीमां मगजने माटे त्रण आच्छादन एटले पड छे. सौथी उपरनुं बाह्यपड जाडुं तथा मजबूत छे अने खोपरीनी अंदर चारे तरफ आवेलुं छे; तेनो एक फांटो मगजना बे भागनी वचमां उतरे छे. मगजमांथी जे लोही फरीने पाछुं जाय छे, तेने माटे आ बाह्यपडमां नळी जेवा मार्ग होय छे. बीजुं पड भेजाना मध्यमां छे. जेने मध्यावरण कहेवामां आवे छे ते पड चेवडुं छे अने तेनी पोलमां प्रवाही छे. त्रीजुं पड मगजनी लगोलग आवेलुं छे, तेने अंतरपड एवा नामथी ओळखवुं. मगजना पोषण माटे तेमां रक्त नळीओनी जाळ पथरायली छे. मग-

જના ચાર ભાગ કરવામાં આવેલા છે, જેમાં બે મુખ્ય છે-આગલું અથવા મોટું ભેજું અને પાછલું અથવા નાનું ભેજું. મોટું ભેજું માથાના આગલા અને ઉપલા ભાગમાં મુકાયલું છે. ભમરોની જરા ઉપરથી બેઉ કાનના છિદ્રો આગળ થઈને માથાની આસપાસ એક લીટી દોરવાથી મોટા ભેજાની હદનો અડસટો મનમાં આવી શકે છે. તે ઉપરથી ગોળ કરચલીવાળું અને સડરવડું દેખાય છે. તેના મધ્યમાં એક ફાટ હોવાથી મધ્યમાંથી તેના બે અર્ધગોળાકાર ભાગ થયેલા છે. આ મોટા મગજના ઊંડાણમાં ત્રણ નાની પોલાણ જગાઓ છે, અને તેના તળીઆમાંથી કેટલીક તંતુઓ નીકળી નાક, કાન, જીભ વગેરેમાં ફેલાયલી છે.

નાનું ભેજું માથાના પાછલા હાડકાંના ખાડામાં મૂકાયલું છે. તે મોટા ભેજાના જેવું કરચલીવાળું નથી, પણ ચોપડીનાં પાનાંઓની પેઠે તેમાં પડ હોય છે, તેના પણ બે અર્ધગોળ ભાગ થયેલા છે. તેનું કદ નારંગી જેવડું હોય છે. નાનું ભેજું કાપતાં અંદરના ઝાડના જેવો દેખાવ નજરે પડે છે. મગજ સાથે જે બીજા બે નાના ભાગો આવેલા છે, તેમાંનો એક ભાગ સૌથી નીચે આવેલો છે અને તે બરડાની કરોડરજ્જુ સાથે સંબંધ ધરાવે છે. એ ભાગની મદદથી શ્વાસ લેવાનું કામ ચાલે છે. કોઈ પ્રાણીનું આગલું ભેજું કાપી નાંખ્યું હોય તોપણ તેનો આ ભાગ આખો રહ્યો હોય ત્યાં સુધી શ્વાસની ક્રિયા ચાલુ રહેશે.

આ ભાગને તથા ઉપરનાં મોટાં તેમજ નાનાં ભેજાંને જોડનાર એક ચોથો ભાગ મગજનો છે, તે આડો પડેલો છે અને તે સૌથી ન્હાનો ભાગ છે.

આખા મગજનું એકંદર સરાસરી વજન આશરે ત્રણ રતલ ગણાય છે. સ્ત્રીનું મગજ પુરુષના મગજ કરતાં કાંઇક ન્હાનું હોય છે મગજના નાના મોટા કદના પ્રમાણમાં માણસની ઓછી વધતી અક્કલ હોય છે. મોટા મગજવાળા માણસમાં વધારે બુદ્ધિ હોય છે અને ન્હાના મગજનાં માણસમાં ઓછી બુદ્ધિ હોય છે. ઉમરની સાથે મગજ પણ કેટલાંક વર્ષ સુધી વજનમાં વધે છે અને ૩૦ થી ૪૦ વરસની વય સુધીમાં સંપૂર્ણ હાલતમાં આવે છે. એ ઉમર પછી મગજનું વજન ઘટવા માંડે છે. કોઈ કોઈ બહુ બુદ્ધિશાળી માણસનું ભેજું વજનમાં ૪ રતલ જેટલું હોય છે અને છેક મૂર્ખ માણસનું ભેજું ૧॥ રતલ જેટલું પણ થતું નથી. હાથી અને મગરમચ્છ સિવાય બીજાં સઘળાં પ્રાણી કરતા માણસ જાતનું મગજ વધારે ભાર હોય છે. હાથીમાં તેનું વજન ૮ થી ૧૦ રતલનું અને મગરમચ્છમાં ૯ રતલ જેટલું હોય, એમ કહેવાય છે.

માથાની તુંબીના બીજા અગત્યના અવયવો.

આંખ (Eye). માથાની તુંબીમાં જોવાની ઇંદ્રિ ગોઠવી છે, તેને આંખ કહેવામાં આવે છે. આંખો બે છે. ભમરો, પાંપણો, પોપચાં વગેરે તેની બહાર દેખાવના ભાગો સર્વેને જાણીતા છે, આંખના ડોળા નાકની બન્ને બાજુના ખાડાઓમાં મુકાયલા છે.

ડોળા ઉપર ત્રણ પડ છે, સર્વેથી બ્હારનું પડ ધોળા રંગનું છે, તે અપારદર્શક હોવાથી

तेमांथी प्रकाश अंदर जई शकतो नथी. ए पड सख्त होवाथी आंखना डोळानी गोळाकृति कायम रही शके छे, पण तेनो आगलो वचलो भाग काच जेवो स्वच्छ होवाथी तेमांथी अजवाळुं जई शके छे. आंखना सफेद पड नीचे बीजुं काळुं पड छे, ते झीणी नसोनुं तथा तंतुओनुं बनेलुं छे. एना रंग प्रमाणे उपरनो डोळो काळो के मांजरो देखाय छे. आंखनी अंदर गोळ चक्कर जेवुं देखाय छे, ते कीकीनो पडदो छे. तेना मध्यमां एक नाकुं छे, जेने आपणे कीकी अथवा पुतळी कहीए छीए. कीकीना नाका उपर पहेला पडनो नाजुक आगलो भाग आवेलो छे. कीकीना पडदाना संकोचावा प्रमाणे कीकी १/८ थी १ ईंच सुधी न्हानी मोटी थई शके छे, अने ते उपरथी केटलाक रोगनी परीक्षा करी शकाय छे. आंखनुं त्रीजुं पड छेक अंदर छे, अने आंखना दृष्टि तंतुओ डोळामां पथराई गयाथी ते बनेलुं छे. ते तंतुवाळुं पड कहेवाय छे. आंखना बहारना पड साथे मांसना छ नाना लोचाओ वळगेला छे, जे वडे आपणे डोळाने चारे तरफ फेरवी शकीए छिए. आंखनी अंदर त्रण ओरडाओ अथवा कोथळी जेवी जग्याओ छे, जेमां पाणी तथा रतन जेवी आंखनी अगत्यनी चीजो रही शके छे. आगलो ओरडो आंखना स्वच्छ सफेद पडनी अने रतननी कोथळीनी वचमां छे. ते ओरडो सौथी न्हानो छे. तेमां आंखनुं पाणी रहे छे, जेनुं वजन पांच रुई भार जेटलुं होय छे. आंखनो वचलो ओरडो मधन पडनो बनेलो छे अने तेमां आंखनुं रतन लटकेलुं छे. आ रतन आगळ पाछळ गोळ हीरा जेवुं पारदर्शक छे. आंखनो त्रीजो अने पाछलो ओरडो सर्वेथी मोटो छे, जेमां बीलोर जेवो निर्मळ पदार्थ आवेलो छे.

कान (Ear)

सांभळवानी इंद्रियने कान कहेवामां आवे छे. माथानी तुंबडीमां ए सांभळवानी इंद्रिने बाजुमां गोठववामां आवी छे. काननो बहारनो जे भाग देखाय छे ते कुमळां हाडकांनो बनेलो छे. दरेक कानमां एक एक छिद्र छे. ए छिद्र आगळथी एक न्हानी नळी शरु थाय छे, जे आशरे दोढ ईंच लांबी छे ए नळी उपर चामडीनुं पड छे. काननी नळीनो आगलो भाग नरम हाडकांनो बनेलो छे अने पाछलो भाग हाडकांनो बनेलो छे. काननी अंदरनी त्वचा घणीज पातळी होय छे. कानमां मेल भराय छे, ते मेल बहारथी आवतो नथी पण आ बारीक चामडीमांथी उत्पन्न थया करे छे.

काननो वचलो भाग न्हाना खाडानो बनेलो छे. तेनी तथा बहारनी कर्ण-नळीनी वच्चे एक बारीक पडदो आवेलो छे, जेने आपणे काननो पडदो अथवा पडघम कहिये छीए. आ भागमांथी एक बारीक नळी नीकळीने, अंदरना भागमां उतरेली छे अने तेथी कानना आ वचला भाग साथे मोंढाने संबंध रहेलो छे.

काननो छेक अंदरनो भाग घणो गुंचवण भरेलो छे अने सामान्य वर्णनथी नहि समजी शकाय एवो छे. मगजमांथी आवेली श्रवण तंतुओ ए भागमां दाखल थाय छे. ते तंतुओने प्रवेश थवा माटे तेमां बारीक छिद्रो होय छे.

नाक (Nose)

सुंघवानी इंद्रिने नाक कहेवामां आवे छे. तेने माथानी तुंबीमां चहेराना मध्यमां गोठववामां आवेलुं छे. नाकनो आगलो भाग पांच कुमळां हाडकां (कुर्चाओ) नो बनेलो छे. बहार बे छिद्रो देखाय छे तेने नस्कोरां कहेवामां आवे छे. नाकना बे भाग छे--एक बहार देखातो भाग अने बीजो अंदरनो भाग. बहार देखाता नाकनुं मूळ कपाळ साथे छे. जेम बहार छिद्रो छे, तेम नाकना अंदरना भागमां पण बे छिद्रो छे, जे मोढाना पाछला भाग साथे संबंध राखे छे. बे नस्कोरांनी वचमां एक पडदो छे. नस्कोरानां मों आगळ वाळ उगे छे, जे नाकनी अंदर जती धूळ वगेरेनो अटकाव करवानुं काम बजावे छे. नाक वाटे श्वासोश्वास लेवाय छे अने वास परखाय छे.

जीभ (Tongue)

मगजनां जुदां जुदां काम करनारी ज्ञानेन्द्रियोमां स्वादनुं ज्ञान जाणनारी इंद्रि जीभ छे. स्वादनी इंद्रि जीभमां वसेली छे. जीभ सिवाय जीभनी आसपासना भागो जेवाके ताळवुं, पडजीभी, चोरीआ, तेमां पण स्वाद पारखवानी शक्ति होय एम जोवामां आवे छे, जीभना अग्रभाग उपर दाणा दाणा होय छे, ते दाणा सुधी मगजनी स्वादेन्द्रियना तंतुओ पसरेला होय छे, अने तेथी जीभना टेरवे कोई वस्तुनो स्पर्श थतांज स्वादनी परीक्षा थई शके छे. बहारनो कोई पण पदार्थ, तीखो के खाटो होय छे, तेनी परीक्षा जीभ करी शके छे. पदार्थ जेम वधारे प्रवाही एटले जीभना तंतुओ जल्दी प्रवेश करे एवो होय, तेम स्वाद वधारे जल्दी अने सारी रीते परखाय छे. कठण पदार्थोना परमाणुओ जीभमां उत्पन्न थता रसमां प्रवेश करे छे, त्यारेज तेना स्वादनुं ज्ञान थई शके छे. जीभनी अंदरना तंतुओने जेवा स्वादनुं ज्ञान थाय छे, ते ज्ञान मगजने पहोंचाडे छे त्यारेज आपणने अमुक स्वादनुं भान अने ज्ञान थाय छे.

जीभ मांसमय लोचानी बनेली छे. चारे तरफना स्नायु जीभने वळगेला होवाथी जीभ बधी तरफ वळी शके छे. खोराक चाववाना काममां जीभ घणीज मदद करे छे. ते खोराकने वारंवार दांत नीचे लावे छे, अने जीभनी अणीओ खोराकने नरम करे छे. आ सिवाय बोलवाना काममां जीभनो मुख्य उपयोग छे, टूंकी जीभवाळुं माणस बराबर बोली शकतुं नथी.

छातिनी पोल. (Chest)

छातिनी पोलमां रक्ताशय, मोटी रक्त वाहिनी अने बे फेफसां आवेलां छे. आ सिवाय अन्ननळ छातिमां थई पेटमां उतरे छे अने श्वासनळीनो थोडो भाग पण छातिनी पोलमां आवेलो छे.

छातिमां बे बाजुपर बे फेफसां छे अने वचमां रक्ताशय (हार्ट) छे. छातिमां दरेक बाजुए बार बार पांसळीओ छे. छातिना पाछला पीठना भागमां मध्यमां करोड छे अने छातिना आगला भागमां मध्यमां उरोस्थि एटले छातिनुं सीनानुं हाडकुं छे जेनी साथे पांसळीओ वळगेली छे. आ सीनानुं हाडकुं आशरे पांच ईंच लांबु

छे. आ अस्थिमां मूळ तो त्रण कटका होय छे, पण पाछळथी ते कडकाओ संधाई जाय छे. सीनानुं हाडकुं गळा तरफ पहोळुं होय छे अने नीचे जतां सांकडुं थते थते पीपडी आगळ अणीदार थाय छे. पछवाडे आ बारे पांसळी तरडानी करोडना मणका साथे संधायली छे अने आगळ प्रथमनी सात पांसळीओ छातिना सीनाना हाडका साथे जोडायली छे अने नीचेनी त्रण पांसळीओना छेडा छूटा छे. पांसळीओ स्थितिस्थापक छे, एटले नरम अने वळी शके एवी होवाथी श्वासोश्वासनी क्रियामां मददकर्ता थई पडे छे.

फेफसां (Lungs)

फेफसां बे छे, अने ते छातिमां बे बाजु पर आवेलां छे. फेफसांनो आकार घडा जेवो, उपरथी सांकडो अने नीचेथी पहोळो होय छे अने गुण वादळी जेवो छे. दरेक फेफसांनुं वजन लगभग दोढ रतलनुं होय छे. डाबा फेफसां करतां जमणुं फेफसुं जरा वधारे मोटुं छे, पण जमणा फेफसा करतां डाबुं फेफसुं वधारे लांबुं होय छे.

फेफसां वादळी जेवां स्थितिस्थापक होवाथी दबाय छे अने पाछां फूले छे. फेफसांनी अंदर न्हानां न्हानां असंख्य छिद्रो अथवा पोला दाणा होय छे, जे हवाथी भरेला होय छे. एवी गणत्री करवामां आवेली छे के, दरेक फेफसामां एवां त्रीस करोड छिद्रो छे. जो फेफसुं फक्त कोथळी जेवुं होत, तो तेमां हवाने घणी थोडी जग्या मळी शकत, पण उपर जणाव्या प्रमाणे तेमां असंख्य छिद्रो होवाने लीधे हवाने पुष्कळ जग्या मळी शके छे. दरेक फेफसांमांहेनां हवाथी भरेलां छिद्रो एकंदर १४०० चोरस फीट जेटली जग्या रोके.

पीठना त्रीजा मणका सामेथी श्वास नळीनी बे शाखाओ थाय छे. जमणी शाखा जमणा फेफसामां जाय छे अने डाबी शाखा डाबा फेफसामां जाय छे. फेफसामां पहोंचतां पहोंचतां ते श्वासनळीनी शाखाना उत्तरोत्तर भागो अने विभागो थई छेवटनी बारीक शाखापर सूक्ष्म परपोटीओ थई रहे छे. श्वासनळीओना आ असंख्य छेडाओ ज्यां आगळ फेफसांने मळे छे, त्यां हवा अने लोही परस्पर संबंधमां आवतां लोही शुद्ध थाय छे.

रक्ताशय-(Heart)

रक्ताशय ए छातिनी बखोलमां बे फेफसांनी वच्चे, कांईक डाबी तरफ वांकी पडेली एक मांसमय थेली छे. टाबी तरफनी उपली त्रीजी पांसळीथी, नीचे छट्ठी पांसळी सुधी, तेनी लंबाई पांच ईंचनी छे. आ थेली अथवा रक्ताशय ए लोहीनो होज छे, जेमांथी लोही आखा शरीरने पहोंचतुं थाय छे. छातिना टाबा पासापर पांचमी अने छट्ठी पांसळी उपर हाथ मूकी राखवाथी जे धबकारा मालम पडे छे, ते रक्ताशयनो छे. रक्ताशयनुं कद लगभग मुठी जेवडुं छे अने वजन आशरे पोणा रतलनुं छे. स्त्रीओना रक्ताशयनुं वजन अर्धा रतलनुं होय छे. ते अंदरथी पोलुं छे अने वचमां एक पडदो आववाथी तेना बे भाग थया छे, जेमांना एकने जमणो खंड अने बीजाने डाबो खंड एवा नामथी ओळखवामां आवे छे. दरेक

खंडना पाछा बन्ने विभाग थाय छे. जमणा खंडमां कालुं लोही अने डाबा खंडमां रातुं लोही वहे छे. बन्ने खंडनी वचमां छिद्र होय छे, ते छिद्रने पडदा होय छे, जे नीचला खंड तरफ उघडे छे अने बंध थाय छे. खुल्लो होय छे त्यारे एक खंडनुं लोही बीजा ओरडामां जई शके छे, पण बंध थाय छे त्यारे तेना पडदा एवा तो सज्जड बंध थाय छे के ते ओरडामांथी आगळ गयेलुं लोही पाछुं तेमां आववा पामतुं नथी. दरेक ओरडामां आशरे पांच तोला लोही समाय छे.

रक्ताशयनी आसपास एक मजबुत जाडो सफेद पडदो फरी वळेलो छे. ए पडदो एक बंध करेली कोथळी जेवो छे अने रक्ताशयनी साथे वळगेलो नथी. तेमां पाणी जेवो रस पेदा थाय छे, जेथी रक्ताशयने कशो घसारो लागी शकतो नथी.

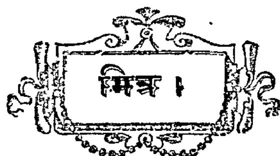
छाति तथा पेट वचेनो पडदो—
(Diaphram)

डायाफ्रम छाति तथा पेटनी वचमां एक पडदो छे, ते मांसना लोचानो बनेलो छे; ते गोळ घुमटना आकारमां बनेलो छे. ए पडदो पाछळथी बरडानी करोडनां हाडकांनी अंदरनी बाजु साथे अने आगळथी पांसळीनी अंदरनी कोर साथे फरतो वळगेलो छे. ए पडदानी उपली बाजु साथे डाबी जमणी तरफ फेफसां अने वचमां रक्ताशय जोडायलुं छे, अने नीचली बाजु साथे जमणी तरफ कलेजुं, डाबी तरफ बरोळ अने वचमां होजरी जोडायली छे.

आ पडदामां त्रण मोटां छिद्रो छे, जेमांना एकमांथी मोटी धोरी नस अने बीजामांथी अन्ननळ छातिमांथी पेटमां उतरे छे. त्रीजा छिद्रमांथी मोटी काळी नस पेटमांथी छातिमां जाय छे. आ त्रण मोटां छिद्रो सिवाय तेमां बीजां केटलांक बारीक छिद्रो छे जे वाटे ज्ञानतंतुओने रस्तो मळे छे.

पेटनी बखोल Abdomen

शरीरमां सौथी मोटी पोल पेटनी छे. पेटनी पोलना पाछला भागमां बरडानी करोड आवेली छे अने उपला भागमां बाजुपर पांसळीओ आवेली छे. आ पोलनुं आगलुं अने पडखांनुंढांकण स्नायु तथा चामडीनुं बनेलुं छे. उपरना भागमां छाति अने पेटनी वच्चे आवेलो घुमटना आकारनो पडदो छे, अने नीचला भागमां प्हेडु अथवा बस्ति छे. पेटमां टचावी जोवाथी दुबळा माणसना पेटनुं ढांकण छेक करोडने अडके छे; अने करोडना मणका हाथने लगता जणाय छे. पेटनुं एज ढांकण स्त्रीनी गर्भवाळी अवस्थामां अने बहु चरबी तथा जळोदर वगेरे दरदमां घणुंज वधी जाय छे. पेटनी दिवालनी मध्य रेखामां डुंटीनो खाडो छे तेनी नीचे प्हेडु छे अने पेटना छेक उपला पांसळीओनी बच्चेना भागने पीपडी कहे छे; अने बाजुओना भागने पडखां कहे छे. पेटमां होजरी, कलेजुं, बरोल, आंतरडां, मूत्राशयनां गुरदा वगेरे घणा अगत्यना अवयवो आवेला छे. ते सघळांनी चोकस हद जाणवा तथा ध्यानमां राखवा माटे पेटनी आरपार बे आडी अने बे उभी लीटीओ दोरली कल्पवाथी तेना नव भाग थाय छे, अने ते नव भागमां केटला अवयवो आवेला छे ते हवे पछीना अंकमां लखवामां आवशे. (अपूर्ण)



मित्र।

(ले० मास्टर दीपचन्द परवार, नरसिंहपुर)

अहा! यह दो अक्षरका शब्द कानोंको कैसा प्रिय मालूम पड़ता है। अहा! इस शब्दके स्मरण होते ही हर्ष रोमाञ्च हो आते हैं। मन प्रफुल्लित होकर क्षणेक तो समस्त चिंताओंको विस्मरण कर जाता है। भय, शोक, ग्लानि, और हतोत्साहता पलायन कर जाती है। एक अपूर्व ही भावोंका संचार हो जाता है। साहस और बल बढ जाता है। कठिनसे कठिन काम भी सरल मालूम पड़ने लगते हैं। नस नसमें उत्साहका रक्त बहने लगता है। इत्यादि कहाँ तक कहा जाय? यह शब्द (मित्र) जादू कैसा प्रभाव रखता है। यथार्थमें संसारमें मित्रके समान कोई भी हितू नहीं है। जिस समय माता पिता भ्राता स्त्री पुत्र सम्बन्धी सब किनारा कर जाते हैं उस समय मित्र ही सहायक होता है। जिसने मित्रकी कदर नहीं की, वह मित्र ही कैसा? जो संपत्तिमें मिले और विपत्तिमें भूल जाय वह मित्र नहीं, किन्तु पूरा शत्रु है। सुख व शांतिके समय मित्रकी परीक्षा ही क्या हो सक्ती है? परीक्षा होती है विपत्तिमें। कहा है—

"संपतिमें तो करोड मिलें, पर मित्र वही जो विपत्ति पर्खो" श्रीकृष्ण और सुदामाजीकी मित्रता लोकप्रसिद्ध है, क्योंकि सुदामाजीपर जब विपत्ति आई, तब वे कुछ सोच समझ कर द्वारिका पहुँचे। श्रीकृष्ण महाराजकी ड्योढ़ीपर पुकार की, कि राजासे कहो तुम्हारा मित्र सुदामा आया है। परन्तु बन्धु गणो! लोकमें **"चमत्कारको नमस्कार"** होती है। इसलिए ड्योढ़ीदारोंने इनकी दरिद्रावस्था देखकर कुछ ध्यान न दिया किन्तु उल्टा धमकाने लगे, कि देखो, यह नीच निर्लज्ज कैसा ढीठ हुआ है जो श्रीमहाराजको मित्र बताता है। क्या प्रभुके ऐसा दरिद्र भी मित्र हो सकता है इत्यादि! परन्तु यह वार्ता किसी प्रकार श्रीकृष्णजीके कानतक पहुँच गई। फिर क्या था? वे बालचेष्टाएँ जो जो सुदामाजीके साथ की थीं, एक एक करके साम्हने दिखने लगीं। उनसे फिर एक क्षण भी न रहा गया कि उन्हें नौकरसे बुलवाते। वे तुरंत ही नंगे पांव सिंहासनसे उतर कर दौडे आये। तो देखने क्या हैं? एक भिखारीकी अवस्थामें तनक्षीण मनमलीन सुदामाजी दीन हुए खडे हैं। भला ऐसी अवस्था मित्रकी मित्र देखकर कैसे शांति रख सकता है? बस, श्रीकृष्णभी अपनी राज्यावस्थाको एकदम भूलकर सुदामाजीके गलेसे लिपट गये। दोनोंने परस्पर मिलकर अपने बहुत दिनोंके विरहजनक दुःखको आंसुओंद्वारा निकाल कर साफ किया। श्रीकृष्णजीने अपने कर कमलोंसे ही अपने मित्रकी सेवा टहल की। सब लोग देखते ही देखते रह गये। सत्य है मित्रता इसका नाम है। कहा है—

"जल-पय-प्रीति सराहिये, एक रूप है जाय।

वह या कारण तन दहे; वह दे अग्नि बुझाय। "

देखो, पानी जब दूधके निकट आता है, तो वह उसे मिलाकर अपने स्वरूप कर लेता है, कि पानी और दूध अलग अलग नहीं दिखते हैं। जब लोग उन्हें अलगानेके लिए आगपर चढ़ाते हैं, तो पानी आप ही जलता है, परन्तु अपने मित्र दूधको नहीं जलने देता है, तब दूध भी मित्रको जलता हुआ देखकर तुरंत उफन करके आगको बुझा देता है, और खुद आगमें पड़कर मित्रको बचाता है। सत्य है, यदि मित्र हो तो ऐसा ही हो, अन्यथा आडंबरमात्र है। कहा है, " पानी पीजे छान, अरु मित्र कीजिये जान। "

क्योंकि संसारमें विषय और कषायोंमें फँसानेवाले ऐसे तो अनेक मिलते हैं, परन्तु इनसे छुड़ाकर सच्चे मार्गमें लगानेवाले कदाचित् ही कोई होंगे। आजकल घर फोड़नेवाले, माल उड़ानेवाले, व्यसनोंमें फँसानेवाले, विपत्तियोंमें डालकर दूर हो जानेवाले, और दुर्गति देखकर हँसनेवाले ही मित्रोंका ढेर है। हे प्रभो! इनसे बचाओ।

यद्यपि संसारमें मित्रके बिना जीवन व्यर्थ है। बिना मित्रके खेल-कूदमें, नाच-रंगमें, स्वदेश विदेशमें, विवाहादि शुभ कर्ममें, सभादि शुभ व धर्मोत्सवादिमें, स्वाध्यायमें, व्यापार व्यवहारमें, खान-पानमें, शत्रुके सामने रणमें, वनमें, इत्यादि किसी भी ठिकाने आनन्द नहीं, जय नहीं, लाभ नहीं है। यथार्थमें संसारमें जिसके मित्र नहीं है, उसका जीवन निरंतर संक्लेशरूप ही रहता है। मनुष्यपर चाहे जैसी विपत्ति क्यों न आवे, परंतु मित्रके सामने प्रगट करदेनेमात्रमें ही आधी रह जाती है। उसका बड़ा भारी बोझ कम हो जाता है। यदि आनन्दमें हो और मित्र मिल जाय तो वह आनन्द कई गुना बढ़ जाता है। जैसे पक्षीको पंखका बल होता है, वैसे ही मनुष्यको मित्रका बल रहता है। इसलिए मनुष्यमात्रको अपना कोई मित्र अवश्य ही बनाना चाहिए। क्योंकि जो बात माता, पिता, गुरु आदिके समझानेसे नहीं समझमें आती है, वह बात मित्र बातकी बातमें कानमें लगते ही समझा सकता है। भूलेको राह लगा सकता है। कई गुप्त बार्ताएँ जो किसीसे प्रगट करने योग्य नहीं होतीं, वे मित्रको ही सुनाई जा सकती हैं, वह उनमें उचित सलाह दे सकता है, और उपाय भी कर सकता है। इसलिए मित्र तो चाहिए, परन्तु हो वैसा ही, दूध पानी जैसा, सुदामा श्रीकृष्ण जैसा, सूर्य और कमल जैसा, चन्द्र और कमोदनी जैसा।

इकतर्फी प्रीति प्राणघातक होती है। देखो, पतंग दीपकसे प्रेम करके अपने शरीर तकको भूलकर निकट आती है, परन्तु दीपक उसकी कुछ परवाह न करके उलटा जला देता है। प्रीति, कुछ निकट रहनेसे ही नहीं रहती है। देखो, जल और कमल निरंतर पास रहते हुए भिन्न भिन्न रहते हैं। और सूर्य कमलसे ८०० योजन ऊँचे रहते हुए भी अपनी प्रभासे कमलको प्रफुल्लित कर देता है।

चन्द्रमा उससे भी ऊपर रहते हुए कुमुदनीको विकसा देता है। इसी प्रकार सच्चा प्रेम **दूरसे ही प्रभाव डाल सकता है।**

लोगोंका विचार है कि प्रेम निकट रहनेसे बढता है। यह भूल है, वह दूरसे ही बढता है, और निकट रहनेसे उतना नहीं रहता है। आजकल प्रायः पैसेकी मित्रता दृष्टिगोचर होती है। और यदि बिगडती है, तो भी इसीके पीछे। परन्तु जहाँ पैसाका ध्यान है, वहाँ मित्रता कहाँ? मित्रोंको परस्पर एकमन, निष्कपट, और निर्लोभ होना चाहिए। जैसे एक अंगकी पीडा दूसरे अंगको होती है। वैसे ही मित्रकी पीड़ा मित्रको होना चाहिए। कहा है—

" जे न मित्र दुःख होंहि दुखारी।
तिनहिं विलोकत पातक भारी ॥ "

प्रायः देखा जाता है और मैंने जहाँतक अनुभव किया है कि जबतक कोई विपत्ति नहीं आई, जबतक पैसा पास रहा, जबतक शरीर शिथिल नहीं हुआ, वहाँतक ही मित्र मित्रता दिखाते हैं और ज्यों ही कोई ऐसा अवसर आया कि मित्र ऐसे बन जाते हैं, मानो कभी मित्रता ही नहीं हुई। जान पहिचान तक नहीं है।

किसी नगरमें **गंभीरचंद** एक वृद्ध वणिक् रहते थे। उनके **प्यारचन्द** एक ही लड़का था। प्यारचन्द अंग्रेजी स्कूलमें पढने जाता था। मैट्रिक्युलेशन तक पढकर ही उसने पढ़ना छोड़ दिया। घरमें परचूरण आटा दाल आदिकी दुकान थी। इसलिए प्यारचन्दको अंग्रेजी पढकर तराजू तौलना असह्य था। वह निरंतर अपने दोस्तोंमें घूमता-फिरता और गपशप उड़ाया करता था। गंभीरचन्द बहुत समझाता, पर उसके समझमें न आता। एक दिन गंभीरचंदने सोचा कि जबतक इसकी यह संगति नहीं छूटेगी तबतक यह कभी धंधेमें न लगेगा। और यदि धंधेमें न लगा, तो मेरे मरनेके बाद ये झूठे मित्र सब रुपया बरबाद कराकर इससे भिक्षा मँगवायँगे। इससे यह दु:खी होगा और मेरे कुलका नाम डुबावेगा। कहा है—

"होत सुसंगति सहज सुख; दुख कुसंगके थान।
गंधी और लुहारकी; बैठो देख दुकान ॥"

इत्यादि सोचकर उसने युक्तिद्वारा दृष्टान्तसे समझाना ठीक समझा और लड़केको बुलाकर कहा—" बेटा! मैं वृद्ध हुआ हूँ, अब मृत्युके दिन निकट हैं, लक्ष्मीका कुछ भरोसा नहीं है, इसलिए यदि कुछ धंधा सीखोगे तो काम आवेगा, ये तुम्हारे मिस्टर (दोस्त) काम नहीं देंगे। जैसे फलविहीन वृक्षको पक्षी छोड़ देते हैं, वैसे सम्पतिहीन होनेपर तुम्हें ये लोग छोड़ देंगे।

बेटा—माई डियर फादर! तुमारा कहना ठीक नहीं है। हमारे फ्रेन्ड कभी ऐसा नहीं करेगा। यह लोग बड़ा सच्चा है, जिदर हमारा पसीना गिरगा, वह लोहू गिरानेको तैयार है। इससे धंदा गंदा नहीं होता है।

बाप—अच्छा बेटा! परीक्षा करके देखना चाहिए।

बेटा—बहुत अच्छा, आज ही सही। बोलो किस तरह करना होगा?

बाप—आज १० बजे रातको एक ठठरी (मुरदेको ले जानेकी सीढ़ी) बनाकर उसमें कृत्रिम मुरदा रखो और लाखका रंग उसपर व अपने कपड़ोंमें छिड़ककर अपन दोनों लेकर तुम्हारे बहुत प्यारे मित्रोंके घर चलकर कहें—"भाई बचाओ, मुझसे आज एक खून हो गया है।" बस, इसीमें परीक्षा हो जायगी।

बेटा—ठीक है ऐसा ही होगा। बस, रात्रिको केलेका कृत्रिम मुर्दा बनाकर ठठरी कसकर लाल लाल लाखके रंगसे सब कपड़े तर करके बाप बेटा हाँफते हाँफते बड़े शोकातुर बनकर चले। पहिले गोकुलचन्द, जो बड़ा स्नेही था, के घर गये। पुकारा। भाई गोकुल! गोकुल! अन्दरसे—कौन है? प्यार है। इस वक्त क्यों आये? यार! गौवें बिखर गई सम्हालो। हैं, दिल्लगी मत करो, नींद आती है। अरे यार! किवाड़ तो खोलो जरूरी काम है। बोलना कुछ है ही नहीं, क्या है? यार! एक खून हो गया है। खून है तो हम क्या करें? जाओ यहाँसे, क्या हम्हें भी फँसाने आये हो? (रोकर) यार! जरा बात तो सुन। कुछ उपाय तो बता? चल चल उपाय कुपाय हम नहीं जानते, उसी कमबख्त बबुआसे पूछ जिसे माल खिलाया है। जाता है? नहीं तो पुलिसमें खबर करता हूँ, 'जान न पहिचान, बड़ी बुआ! सलाम,' यहाँ हमको फँसाने आया है, जा जो तेरे दोस्त हों....इत्यादि। इसी प्रकार और भी दो चार जगह उत्तर मिले। एक जगह तो पुलिसके हवाले ही कर दिये गये। परन्तु था क्या? तलाशी करनेपर मामला तय हो गया। और पानीका दूधा ऊपर आ गया।

प्यारचन्दने जाना कि यथार्थमें Friends are planty, if the purse is full. अर्थात ये सब स्वार्थी हैं। कदाचित् आज कुछ सच्ची विपत्ति आई होती तो फिर बचना कठिन था। पिताजी! आप धन्य हो क्षमा करो, अब यह दास ऐसा न करेगा।

इसलिए हे मेरे प्यारे बन्धुओ! ऐसे कपटी मित्रोंसे बचो। जब तक पूर्ण परीक्षा किसीकी न कर लो वहाँ तक अपने मनकी बात किसीसे मत कहो। अपना मित्र मत बनाओ। और मित्र बनाओ तो पक्का बनाओ फिर बनाकर उसे बिगाड़ो मत। कहा है—

"कठिन मित्रता जोड़िये, जोड़ तोड़िये नांह।
तोड़ेसे दोऊनके, प्रगट दोष हो जाह॥"

यदि तुम्हे योग्य मित्र नहीं मिलता है, तो धर्म, ज्ञान, नीति, दया, क्षमा, शील, सरलता, उदारता, स्वाध्याय, परोपकारता, सचाई, अचौर्यतादि गुणोंहीको अपना मित्र बनाओ। बस, संसार तुम्हारा मित्र अपने आप ही बन जायगा। एकान्तमें बैठकर अपने किये हुए कुल कार्मोंको स्मरण करो और उनपर विचार करो कि उनमें कौन योग्य व अयोग्य हुआ है और आगे क्या करना है। उसमें किसीकी हानि तो नहीं है। इत्यादि विचार कर अपनी भूलोंपर पश्चात्ताप करो। और फिर आगामी न होने पावे, इस प्रकार प्रवर्तन करो। बस, यही सच्चा मित्र है। शास्त्र पुरान आदि ही हमारे सच्चे मित्र हो सकते हैं। जिनको कहीं विराम

प्रस्ताव नं० ३–जीवन सार्थक करनेका उपाय। जैन जातिमें जबतक बालकोंकी माताएँ अर्थात् कन्याएँ सुशिक्षित न होगी तबतक कभी उन्नति नहीं हो सकेगी, इसलिए स्त्रीशिक्षा-प्रचारके लिए अध्यापिकाओंकी आवश्यकता है। अतएव यह परिषद् प्रेरणा करती है कि विधवा बहनें श्राविकाश्रममें चार वर्ष रहकर अध्यापिकाकी योग्यता प्राप्त कर कन्याओंको ज्ञान दें, और अपना कल्याण कर अपना अमूल्य मनुष्य जन्म ब्रह्मचर्य और संयमसे विताकर सफल करना चाहिए।

प्रस्ताव नं० ४–सुरीति प्रचार। यह परिषद् अपनी स्त्रीसमाजको प्रेरणा करती है कि वह जैन जातिके भीतरसे निम्न लिखित कुरीतियोंके बंद करनेकी पूरी २ चेष्टा करे:–

(१) ब्याह शादी आदिमें वेश्यानृत्य।

(२) ब्याह शादी आदिमें असभ्य गाली गाना।

(३) जैनपद्धति छोड़कर अपने श्रद्धानके विरुद्ध मिथ्या रीतिसे सन्तानका विवाहादि संस्कार कराना।

प्रस्ताव नं० ५-विपत्तिमें सहानुभूति। फिजी आदि टापुओंमें भारतकी स्त्रियोंको बहकाकर ले जाया जाता है और उनसे मजदूरी करानेके सिवाय बलात्पूर्वक उनके पतिव्रत धर्मको तोड़ा जाता है, इस बातको जानकर इस परिषदको बड़ा दुःख है। अतएव यह परिषद् बड़े लाट महोदयसे प्रार्थना करती है कि वह उस कानूनको जिससे वहाँके एजेन्ट ले जाते हैं फौरन रोक देवें तथा प्रस्ताव करती है कि इस ठहरावकी नकल तारद्वारा श्रीमानके पास भेजी जावे।

प्रस्ताव नं० ६–द्रव्य बचाकर दानकी प्रेरणा। यह परिषद् प्रेरणा करती है कि हमारी बहिनें अपने देशकी बनी हुई सस्ती और टिकाऊ तथा मांस, चर्म, हड्डीके संसर्ग रहित वस्तुएँ काममें लावें और अपने द्रव्यको अनावश्यक महंगी चीजोंके लेनेसे बचाकर उसे विद्यादानमें लगावें तथा प्रस्ताव करती है कि स्त्रीशिक्षा फंडमें पहले मदद करें। जो फंड एकत्र होगा उसका आधा बागड़ प्रान्तके स्त्रीशिक्षाप्रचारमें खर्च होगा, शेषसे श्राविकाश्रम बंबई, मुरादाबाद और जैनमित्र खातेमें परिषदकी प्रमुखाकी सम्मतिके अनुसार विभाग किया जायगा।

एक होओ।

मज्हबके वास्ते प्यारो!, हजारों जाँ गँवाते हैं।
व तन मनसे निजी धनको, मज्हबमें ही लगाते हैं॥
यहाँपर तो बहुतसोंने, अविद्या नींदमें सोकर।
मज्हबको तज दिया है या,–मगर 'जैनी' कहाते हैं॥
अभी कुछ रोजसे कुछ जन, त्याग निद्रा अविद्याको।
मसलने आँख उठ बैठे, दूसरोंको उठाते हैं॥
जो उठ बैठे हैं उनको भी, कभी कुछ झोंक आ जाती।
तो वे पत्रोंमें विधवाव्याह,–का होना बताते हैं॥
धनिक हैं वे भी स्वाकर झोंक;–को पुत्रोंकी शादीमें।
हजारों रुपये देकरके; वे वेश्याको नचाते हैं॥
धनिक औ बाबुओंसे अ,–र्ज है वे झोंकको तजकर।
उठावें उनको जो निद्रा,–में सोने सरसराते हैं॥
बचाकर शक्ति लड़नेमें, लगाओ धर्म उन्नतिमें।
यही 'सावल व चन्द' कर, मिला अर्जी सुनाते हैं॥

सावलराम चन्दूलाल, मुजालपुर।



स्वर्गीय श्रीमती फूलीबाई–इन्दौर

(रायबहादुर दानवीर सेठ कल्याणमलजीकी मा साहब)

आपने मृत्यु समय रु१०००) के दानकी व्यवस्था की है।

जन्म–आषाढ़ वदि ७ सं. १९११ मृत्यु–वैशाख वदि ५ सं. १९७८.

"जैनविजय" प्रेस–सूरत.

॥ श्रीवीतरागाय नमः॥

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग तरफथी प्रगट थतुं मासिक

दिगंबर जैन.

THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्तताम्, दैगम्बरं जैन-समाज मोदम् ॥

वर्ष १० वाँ.	वीर संवत् २४४३. वैशाख. विक्रम सं० १९७३	अंक ७ वाँ



श्रुत पंचमी पर्व।

विना नैमित्तक कारण कोई भी कार्य उचित रीतिसे नही हो सकता परतु कारणके होनेपर कार्यकी सिद्धि हो सकती है। ऐसा ही नैमित्तिक कारण **श्री श्रुत पंचमी पर्व** आगामी ज्येष्ठ शुद ५ के दिन आ पहुंचा है। जैन ग्रन्थ प्रथम लिपिबद्ध होनेका यही शुभ दिन है और कई वर्षोंसे यह पर्व माननेका अवसर पूज्यवर पं० पन्नालाल बाकलीवालके प्रयाससे प्राप्त हुआ है जिसको दिनोंदिन विशेष रूपसे माननेका प्रयत्न करना चाहिये। ज्यादे न हो सके तो इतना तो अवश्य होना चाहिये कि (१) अपने २ मंदिरोंके शास्त्रोंको एक चौकी पर विराजमान करके **श्रुतस्कंध पूजन** करना चाहिये (२) **शास्त्रोंकी सूची** न हो तो बनानी चाहिये। (३) जिन२ शास्त्रोंके **बंधन** न हो उनके नये बनाने चाहिये। (४) जो २ **ग्रन्थ** अपने शास्त्रभंडारमें न हो उनको लिखित या मुद्रित जैसे मिलने हो **मंगानेका आर्डर** भेजना चाहिये (५) एक सभा करके श्रुत पंचमी पर्वका माहात्म्य सर्व भाइओंको प्रगट करके कुछ न कुछ द्रव्य शास्त्रदानके लिये निकालना चाहिये, आदि। ईडर, सोजीत्रा, सूरत, महुआ, व्यारा आदि कई स्थानोंपर बडे२ शास्त्रभंडार है पर सारसंभाल या उपयोग न होनेसे न तो सब ग्रन्थोंकी विगतवार सूची बनी है और न ग्रन्थोंका कुछ उपयोग होता है। जो अप्रकट जैनग्रन्थ हमको भेजें जायँगे उनको प्रकट करनेके लिये हम यथाशक्ति प्रयत्न करनेके लिये तैयार हैं।

+ + +

दानवीर रायबहादुर सेठ हुकम- महावीर जयंती उत्सव सेठ हुकमचदजीका हमारा अभिप्राय।

गत चैत्र शुक्ल १३ को इन्दौरमें श्री महावीर जयंती उत्सव बहुत धूमधामसे हमारे

चन्दजीके सभापतित्वमें हुआ था जिसमें बम्बईसे **श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह** और बा० कृष्णलालजी वर्मा भी पधारे थे। श्री वाडीलालजीने अपने भाषणमें श्री शिखरजी केसका निबटेरा दिगम्बरी श्वेतांबरियोंकी एक पंच नियत करके उसके द्वारा करनेका विवेचन करने पर सभापतिजीने अपने भाषणमें जो शब्द कहे हैं वह मननीय और उपयोगमें लाने योग्य हैं आपने कहा कि—

"मैं नहीं चाहता कि जैनधर्म धारियोंमें परस्पर द्वेष हो। प्रेमसे अच्छी कोई वस्तु नहीं है। मैं सदा परस्पर प्रेम रखना चाहता हूं। दिगम्बर श्वेतांबरोंका पारस्परिक युद्ध मुझे बहुत खटकता है। पर किया क्या जाय? यदि कोई मारता आवे तो हम टेबिलके नीचे घुसकर अपनी रक्षा भी न करें तो कैसे बन सकता है। मैं इस द्वेषको मेटनेके लिये मनवचन कायसे तैयार हूं। समय पड़नेपर पंचोंकी जूतियों तक उठानेमें मुझे कुछ उजर न होगा। जहाँ तक मुझे स्मरण है कि दिगम्बर समाजने कोई आक्रमण नहीं किया है। यद्यपि मैं पूर्णतया नहीं तो भी बहुत अंशमें कह सकता हूँ कि दिगम्बर समाजको मैं सुलहके लिये तैयार कर सकता हूँ बशर्ते कि स्वच्छ हृदयसे सुलह की जाय। घरमें दो भाइयोंमेंसे यदि एक दाल और दूसरा चावल खाना पसंद करता हो तो इसके लिये परस्पर लड़ना जिस तरह अनुचित है उसी प्रकार दिगंबर श्वेतांबरोंका झगड़ा भी अनुचित है। मैं आशा करता हूं कि हमारे भाई इस विषय पर प्रेमपूर्वक विचार करेंगे और आपसमें सुलह करेंगे क्योंकि अभी जो कोर्टसे न्याय मिला है उसमें दोनों बाजू समान रहीं हैं। अभी तो सुलह करनेमें किसीकी नाक ऊंची नीची नहीं होती पर यदि कल कोई पलडा नीचा हो गया तो फिर सुलह होना कठिन हो जायगा। मेरी समझमें इसके लिये शीघ्र ही एक मीटिंग बम्बई या तो इन्दौरमें की जाय जिसमें दिगंबरी श्वेतांबरी दोनों तरफके नेता एकत्र हों और आपसमें ही निपट लेवें, अदालती कार्रवाई नहीं की जाय आदि"

हमारे सेठ हुकमचंदजी हमारी भारत० दि०जैन **तीर्थक्षेत्र कमेटीके सभापति** हैं और आप ऐसी मीटिंगके लिये दिगंबरी नेताओंको एकत्रित करनेके लिये तैयार हैं तो हमारे श्वेतांबरी भाइयोंको भी उचित है कि अब समय न बिताकर शीघ्र ही ऐसी मीटिंग होनेका प्रयत्न करें। एक दिगंबरी और एक श्वेतांबरी अग्रेसरकी सहीसे ऐसी मीटिंग बम्बईमें सुभीतेसे हो सकती है परंतु इसके पहिले अभी दोनों तरफके जो २ अगुए इस केसमें कार्रवाई कर रहे हैं उनको समझा लेना चाहिये तभी ही पूर्ण सफलता प्राप्त होगी।

❧ ❧ ❧ ❧

स्वर्गीय स्याद्वादवारिधि वादिगजकेशरी न्यायवाचस्पति पं०

गोपालदास स्मारक। **गोपालदासजी बरैयाके** अनन्य उपकारको जनसमाज कभी भी न भूले इसलिये, और पंडितजीका नाम स्मरणमें रखनेके लिये पंडितजीके नामका एक स्मारक फंड ऐसा

होना चाहिये कि जिससे पंडितजीका नाम भी अमर रहे और उनके उद्देश्य भी सफलीभूत होते जावे। ऐसा जो कुछ कार्य है तो वह यही है कि पंडितजी द्वारा स्थापित **मोरेना जैन सिद्धान्त विद्यालय**के लिये कमसे कम **एक लाख रुपयेका स्थायी फंड** एकत्रित करके इस विद्यालयके साथ पंडितजीका नाम जोड दिया जाय। ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीने भी 'जैनमित्र' मे यही राय दी है। परंतु यह कार्य केवल बातें करनेसे कभी भी नहीं हो सकेगा इसके लिये तो जैसे हिन्दू विश्वविद्यालय बनारसके लिये डेप्युटेशन निकला था उसी मुताबिक कमसे कम तीन चार प्रतिष्ठित गृहस्थोंका डेप्युटेशन निकलना चाहिये जो शहर शहर घूमकर इस फंडमें रुपये भरावे। इस कार्यके लिये दानवीर सेठ हुकमचंदजी, पं. धन्नालालजी काशलीवाल, सेठ हीराचंद नेमचंदजी दोशी, ब्र. शीतलप्रसादजी आदिका शीघ्र ही डेप्युटेशन निकलना चाहिये अन्यथा बात पुरानी हो जानेसे सफलताकी कम संभावना होगी। यदि कोशिश की जाय तो जैन समाजमेंसे एक लक्ष रुपया इकट्ठा करना कुछ बडी बात नहीं है।

हमने '**जैनमित्र**' द्वारा एक स्मारकफंड खोला था उसमें भी कमसे कम दो चार हजार रुपये तो अवश्य इकट्ठे हो जाते परंतु प्रां० सभाके महामंत्री बाबू माणिकचंदजी बैनाडाने कहा कि इससे बड़े फंडको धक्का लग जायगा, इस लिये आप इसको बंद करें! जिससे हमने तो इस फंडको बंद कर दिया है और जो रुपये हमारे पास इकट्ठे हुए हैं वह मोरेना विद्यालयमें ही भेज देवेंगे परंतु हमारे ख्यालसे इस फंडकी स्वीकारता 'जैनमित्र' और 'दिगंबर जैन' द्वारा क्रमशः प्रकट होनेसे फंडकी बात सबके स्मरणमें रह जाती और बडा फंड जो कुछ होता उसकी स्वीकारता भी उसमें प्रकट हो जाती।

स्थानकवासी श्वे. जैनबंधु श्रीयुत वाडीलाल मोतीलाल शाहने निजी संयुक्त जैन बोर्डिंगका खर्चसे बम्बई और स्तुत्य प्रयास। अहमदाबादमें संयुक्त जैन बोर्डिंग आगामी जून माससे खोलनेका जो स्तुत्य विचार किया है वह अभिवंदनीय है। इस बोर्डिंगमें दिगंबरी श्वेतांबरी और स्थानकवासी तीनों संप्रदायों के विद्यार्थी प्रवेश किये जायगे और सबको अपने २ संप्रदायानुसार धर्म शिक्षण दिया जायगा ऐसा प्रकट किया गया है सो उचित ही है। इस बोर्डिंगके बारेमें इसी अंकमें '**जैन विद्यार्थियोंने खबर**' नामक विज्ञापन प्रकट हुआ है जिसकी तरफ हम जैन विद्यार्थियोंका ध्यान आकर्षित करते हैं।

हमारी न्यायप्रिय ब्रिटिश सरकारने अभी जो हिन्दी वार सारे हिंदमें एक ही। लोन निकाला है जिसमें सारे हिंदुस्तानके आज तक १९ करोडसे भी ज्यादे रुपये भरे गये हैं और आगे भरे जा रहे हैं परंतु इन सबमें ज्यादेसे ज्यादे वार लोन लेनेवाले यदि कोई वीर नर है तो वह हमारे "**दानवीर रायबहादुर सेठ हुकमचंदजी** इन्दौर

हैं कि जिन्होंने एकदम **एक करोड रुपयेका वार लोन** खरीदा है जितना कि सारे हिंदके एक राजा महाराजाने अभी तक नहीं खरीदा है। यह जैनियोंके लिये बड़े भारी गौरवकी बात है। इस महान कार्यके लिये हम सेठ साहबको वधाई देते हैं। आपने आज तक **साढ़े तेरह लाख रुपयेका दान** किया है जिसकी सूची हम आगामी अंकमें आपके नवीन फोटो सहित प्रकट करेंगे जिसे पड़नेसे हमारे पाठकोंको विदित होगा कि आपने जैन समाजका कितना बड़ा भारी उपकार किया है।

उपदेशक पितांवरदासजीना भ्रमणनो रिपोर्ट.

(ता. २ मार्च थी ३१ मार्च सुधी)

पाटनाकुवा–बे सभा करी स्वाध्याय अने सदाचारपर विवेचन करवाथी त्रण जणे स्वाध्यायनो नियम लीधो. रेवचंद बहेचरदासे ५) शिखरजी फंडमां आप्या. गये वर्षे पाठशाळा शरू करावी हती ते चाले छे.

धनियोळ–बे सभा करी, जेथी बेए रात्रिभोजन त्याग अने चार भाइओए स्वाध्यायनो नियम लीधो तेमज एक पाटीदारे मांस अने मद्यनो त्याग कर्यो. ३) उपदेशक फंडमां मळ्या.

धारीसणा–स्वाध्याय अने अभक्षत्याग पर विवेचन करवाथी पांचे रात्रिभोजन त्याग अने आठ जणे स्वाध्यायनो नियम लीधो. पंच तरफथी रोज अष्ट द्रव्यथी पूजन करवानो प्रबंध कराव्यो. पांच भाइओए ५) उपदेशक फंडमां भर्या.

जसुंदरा–मंदिर के चैत्यालय कंइ पण नथी. दि. जैनोना मात्र पांच घर छे. रात्रे एक सभा करी अजैनोने पण बोलाव्या जेथी केटलाके झेरीला तथा जू वगेरे जीवोनो हिंसानो मांस त्याग कर्यो तथा बे जणे जन्मपर्यंत दारु अने मद्यनो त्याग कर्यो ५ श्रावक अने ७ श्राविकाओए रात्रिभोजन त्याग अने स्वाध्याय करवा तथा सांभळवानी प्रतिज्ञा लीधी. उपदेशक फंडमां रु. ७॥ भरायां.

वासणा–बे सभा करवाथी ५ भाइओए स्वाध्यायनो अने एके रात्रिभोजन त्यागनो नियम लीधो. त्रण भाइओए ४) उपदेशक फंडमां भर्या.

छाला–स्वाध्याय अने सदाचार उपर विवेचन करवाथी रोज शास्त्र सभा करवानो प्रबंध थयो तथा पंच तरफथी अष्ट द्रव्यथी पूजन थवानी पण गोठवण थइ. ६ भाइओए स्वाध्याय अने रात्रिभोजन त्यागनो नियम लीधो. २) उपदेशक फंडमां भराया. अत्रे जैन पाठशाळानी घणी जरूर छे जे बाबत पंचे ध्यान आपवुं जोइए.

पेथापुर–लग्नप्रसंग होवाथी बहारना पण १५० जैन भाइओ मळेला हता. लग्न जैन विधिथी थया नहोता. भाइ चुनीलालना प्रयासथी एक सभा थइ, जेमां कुरीति त्यागपर विवेचन करवाथी केटलीक स्त्रीओए फटाणां गीतो गावानो त्याग तथा एक जणे स्वाध्यायनो नियम कर्यो. त्यांनी पाठशाळा माटे आशरे रु. ९००) भराया.

दहेगाम–चार सभा करीने कुरीतिओ बंध करवा माटे विवेचन करवाथी रोज शास्त्र सभा करवानो पंच तरफथी प्रबंध थयो. १२ भाइओने स्वाध्यायनो नियम छे. ४) उपदेशक फंडमां भराया.

उजेडिया–एक शास्त्रसभा करी सदाचार अने स्वाध्याय पर विवेचन कर्युं, पण एकाएक कोइ भाइना मृत्युना समाचार मळवाथी सर्वे शोकमां पडी गया, जेथी बीजी सभा

થઇ શકી નહિ. ગયે વર્ષે અત્રે પાઠશાળા સ્થપાવી હતી, પણ પંચની શિથિલતાથી કે બીજા કારણથી હાલ બંધ છે ભાઇ મફતલાલને ઉત્સાહિત કરી પાઠશાળા ફરી ચાલુ કરવી જોઇએ.

સોનાસણ–શા નેમચંદ મગનલાલની સાથે પુસ્તકાલયનું નિરિક્ષણ કર્યું. ગાંધી જીવરાજ ઉગરચંદ પોતાની પત્નીના સ્મરણાર્થે ૧૦૦) જૈનસિદ્ધાંત પ્રકાશિની સંસ્થામાં ભરી મેમ્બર થયા

જાંબુડી–શેઠ કચરાભાઇના પ્રયાસથી બે સભા કરી સ્વાધ્યાય, કુરીતિ ત્યાગ અને જિનપૂજન પર વિવેચન કરવાથી ૭ ભાઇઓએ સ્વાધ્યાય તથા કેટલાક સ્ત્રી પુરૂષોએ અષ્ટ દ્રવ્યથી રોજ વારાફરતી પૂજન કરવાનો નિયમ લીધો. પાંચ ભાઇઓ તરફથી ૬) ઉપદેશક ફંડમાં મળ્યા.

વિશેષ–ગુજરાત પ્રાંતમાં ઘણા ભાઇઓ હવે સ્વાધ્યાય વગેરેનો તો નિયમ લેવા લાગ્યા છે, પણ તેનો ઉપયોગ બરાબર થતો નથી એટલે કે એઓ કોઇ પણ શાસ્ત્ર નિયમથી વાંચતા નથી અને પૂર્ણ કરતા નથી. તેઓ સ્વાધ્યાયના મળ તત્ત્વને સમજી ન શકવાથી એક બીજામાં ફેલાયલી અજ્ઞાનતા અને કુરીતિ દૂર કરી શકતા નથી, માટે જરૂર છે કે જે શાસ્ત્રનો સ્વાધ્યાય કરે તે પ્રસંગોપાત વિવેચનપૂર્વક પૂર્ણ કરે અને એક બીજા ભાઇ પરસ્પર પ્રશ્નોત્તર કરીને વસ્તુ સ્વરૂપ સમજીને સદાચારથી રહેવાની કોશીશ કરે.

સમાજ સેવક–ઠાકોરદાસ ભગવાનદાસ
મંત્રી, ઉપદેશક વિભાગ, મુંબઇ.

नवीन ग्रन्थ
तीस चौबीसी पूजा।

मूल्य २॥।= पक्की जिल्द २)=

मैनेजर, दि० जैन पुस्तकालय–सूरत

सेठ कल्याणमलजीकी माता और बृहत् दान।

हमारे पाठक इन्दौर निवासी रा० बा० दानवीर सेठ तिलोकचंद कल्याणमलजीसे अच्छी तरहसे परिचित होंगे क्योंकि जबसे आपने दो लाख रु० का दान करके इन्दौरमें जैन हाईस्कूल खोला है तबसे सारे हिन्दुस्तानमें आपका नाम मशहूर हो गया है। गत वैशाख कृ० ६को आपकी पूज्य **मातेश्वरी श्रीमती फुलीबाई**, जिनकी आयु ६३ वर्षकी थी, स्वर्गवासके समय श्रीमतीजी निम्न लिखित ६१०००) का दान कर गई हैं–

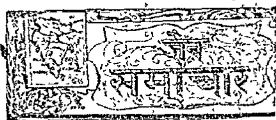
१००००) तुकोगंज मंदिरके ध्रुव फंडमें, १०२९) इन्दौर, उज्जैन, विमलपुर आदिके मंदिरोंमें, १०१) सि० विद्यालय मोरेना, १०१) स्या० महाविद्यालय बनारस, १०१) महाविद्यालय मथुरा, ५१) रु. ब्रह्मचर्याश्रम हस्तनापुर, १०१) कंचनबाई श्राविकाश्रम (दो वर्षमें कपड़ा आदि देना), ६२१) शिखरजी, गिरनारजी, बड़वानी आदि तीर्थोंमें, १०१) बम्बईके मंदिरमें उपकरण, २००) मालवा प्रांतके मंदिरोंको, ५००) **शास्त्रदान व कोई ग्रन्थ बांटनेके लिये**, १०१) दि० जैन समाचार पत्रोंको सहायता, ३९१३) संबंधियोंको और ४४०८४) स्त्रियोंके उपयोगी अथवा और किसी उपयोगी संस्था इन्दौरमें खोलनेके लिये इस प्रकार मृत्युके समय आपने ६१०००) का बृहत दान किया है और पहले भी आपके हाथसे कन्याशाला आदिके लिये बृहत दान

हो चुका है। रा० ब० सेठ कल्याणमलजीका यह भी विचार है कि यदि अच्छी जगह और सब सुभीते मिल जाय तो करीब एक लाख रुपये लगाकर माताजीके नामसे एक धर्मशाला बनवा दें। यह बात सेठ साहबने मा साहबसे कही थी और मा साहबने भी स्वीकारता दे दी थी परंतु यह काम योग्य जगह आदि सब सुभीतोंके मिलजाने पर किया जानेवाला है।

आपके जीवनमें सबसे बड़ी बात यह है कि जबसे उनके पति सेठ तिलोकचंदजीका स्वर्गवास हुआ तभीसे आपकी यह इच्छा थी कि पूज्य पतिके स्मारकमें कोई अच्छी चीज बनाईजाय जिसके लिये आप बारंवार प्रेरणा करती थी। अंतमें उनकी राय व खास प्रेरणासे ही सेठ कल्याणमलजीने अपने पूज्य पिता सेठ तिलोकचन्दजीके स्मारकमें दो लाख रुपये लगाकर तिलोकचन्द जैन हाईस्कूल इन्दौरमें खोल दिया है जो इस सालसे इलाहाबाद यूनिवर्सिटीसे रिकगनाइज़ होकर हाईस्कूल हो गया है।

ऐसी दानी और आदरणीय माताका फोटू हमने खास कोशीश करके मंगाया था और इसी अंकमें प्रकट कर दिया है।

हम आशा करते हैं कि रा० ब० दानवीर सेठ कल्याणमलजी साहब अपनी मातेश्वरीका नाम अमर रखनेके लिये शीघ्र ही कोई स्त्रियोपयोगी बड़ी भारी संस्था, धर्मशाला, ग्रंथमाला आदिका प्रबन्ध करेंगे।



गोपालदास ग्रन्थमाला—अजनाससे मंत्री गोविन्दरामजी लिखते हैं कि गत ता. ७-४-१७ को यहां स्वर्गीय स्या० वा० न्या० **पं० गोपालदासजी बरैया**का नाम सदा स्मरण रखनेके लिये एक सभा होकर प्रस्ताव पास हुआ कि '**गोपालदास दिगंबर जैन ग्रंथमाला**' स्थापन होनी चाहिये। फिर इसके लिये कुछ चंदा भी हो गया। पुनः इस ग्रंथमालाके एक मेम्बरने '**पंचाध्यायी**' की टीका किसी सुयोग्य विद्वान द्वारा कराई है उसके छपानेका प्रस्ताव किया वह स्वीकृत हुआ।

विना मूल्य—'श्री समवसरणदर्पण' पुस्तककी २०० कापी एक महाशयने विना मूल्य बांटनेके लिये खरीदी है इसलिये पोस्टेजके लिये आधे आनेका स्टेम्प भेजकर निम्न लिखित पतेसे यह तीन आनेवाली पुस्तक मंगा लीजिए। **पं० मुन्नीलाल जैन, सिकंदराबाद, यु० पी०।**

हाथरसकी जैन धर्मवर्द्धनी सभा 'जैन मार्तंड' नामक मासिक पत्र निकाल रही है और अभी उपदेशक विभाग भी खोल दिया है और श्री बालमुकुन्द शर्मा जैनको उपदेशार्थ नियत किया है।

मुंबाई श्राविकाश्रम—श्रीमती

मगनव्हेन जणावे छे के ता० ३१-४-१७ थी ता०१५-६-१७ सुधी आश्रममां गरमीनी रजा पडी छे. हालमां आश्रम तरफथी श्रीदेवीबाई तथा श्रीमतीबाई गुजरातमां भ्रमण करी रहेला छे, जेओ अमदावाद, ओराण, प्रांतिज सोनासण, इडर वगेरे स्थळे उपदेशार्थे जशे माटे गुजराती व्हेनो तथा भाईओए एमने उतरवानी तथा गामेगाम पहोंचाडवानी सगवड करी आपवा उपरांत तेमनो उपदेश सांभळवो.

सर्पने जातिस्मरण अने विषापहार स्तोत्रनो प्रभाव—प्रांतिज (अमदावाद) थी शा नेमचंद उगरचंद गांधी जणावे छे के अमनगर (इडर) मा ता० १५-२-१७ ने दिने कोटडिया रावजी अमेचंदना पुत्र मोतीचंदने सर्प करड्यो हतो त्यारे तेमना भाई सनाबाई रावजीए **विषापहार स्तोत्र** भणीने पाणी छांटवा मांड्युं एटले ते (जेने सर्पनुं झेर चडेलुं हतुं ते) बोल्यो के मारे पाछला भवमां ते वखतमां बाप हतो अने तेणे मने जीवतो बांधी कुवामां नांखी मारेल मरण निपजावेलुं माटे तेनो बदलो लेवाने हुं करडीने एनो प्राण लईश वगेरे. ज्यारे घणुं थयुं त्यारे झेर उतरी गयुं अने हेजी एम कहेछे के हवे पछी पण करडीने प्राण लीधा विना हुं छोडनार नथी, माटे कोई विद्वान आनो उपाय बतावे अने ए सर्पने वश करे तो तेने अभयदाननुं पुण्य मळशे.

मुनीमनी जरूर—पालीताणा दि० कारखाना•माटे लायक अनुभवी मुनीमनी जरूर छे. गुजराती भाईने प्रथम चान्स मळशे. लखो—भगवान छगन, हुमडनी शेरी—भावनगर।

सूरतमां महावीर जयंती—अत्रे आ उत्सव चैत्र सुद १३ने दिने नगरशेठ बाबूभाई गुलाबभाईना प्रमुखपणा नीचे मोटे ठाठथी उजवाई महावीरना गुणानुवाद थया पछी महावीर जयंतीनो त्हेवार सुरत जिल्लामां जाहेर तहेवार तरीके पाळवाने सरकारने अरज करनारो तथा म्युनीसिपल स्कूलमां पर्युषणनी रजा पाळवा माटे स्कूलबोर्ड कमीटीने सूचना करनारो एम बे ठरावो थया हता.

वृद्ध महेताजीनी कदर-सूरतमां स्वर्गीय शेठ माणेकचंदजी तरफथी 'फूलकोर कन्याशाळा' चाले छे तेना वयोवृद्ध महेताजी परमानंदास इच्छाराम रिटायर थता होवाथी तेमने छेवटनुं मान आपवा अत्रे गई ता० २जीए एक मेळावडो शेठ काळीदासना प्रमुखपणा नीचे थयो हतो, जेमां मूलचंद कसनदास कापडिया, डॉ. ईश्वरलाल, श्रीमती मगनव्हेन वगेरेए महेताजीना गुणानुवादनुं वर्णन करवा पछी श्री० मगनव्हेन तरफथी महेताजीने पोशाक अने अमुक रकमनी पर्स भेट आपी हारतोरा आपवामां आव्या हता.

ग्रन्थराज छप रहा है—जैन सिद्धांतका अपूर्व ग्रन्थराज **श्रीपंचाध्यायीजी**-की हिन्दी टीका पं० मक्खनलालजी न्यायालंकारने तैयार की है और यह ग्रन्थ सूरतमें छप रहा है।

सभापति हुए-हिन्दी साहित्य सम्मेलनका अष्टम वार्षिक अधिवेशन इन्दौरमें होगा जिसकी स्वागतकारिणी कमेटीके सभा-

पति हमारे श्रीमान दानवीर रायबहादुर सेठ हुकमचंदजी नियत हुए है।

महावीर केवलज्ञान जयंती—यह जयंती गत वै० शुक्ल १० को सोलापुरमें मनाई गई थी जिसमें पं० बंशीधरजी, बाबू कृष्णलालजी वर्मा आदिके व्याख्यान हुए थे।

गोपालदास लायब्रेरी—अलीगंज (एटा) में स्व० पं० गोपालदासजी बरैयाके स्मारकमें एक लायब्रेरी स्थापित हुई है।

आर्यसमाजी जैनी हुए—गत मास जैनोंमें आर्यसमाजियोंसे जैनोंकी तरफसे पं० बनारसीदासजीने शास्त्रार्थ किया था जिसका असर यहाँ तक आई कि आर्यसमाजियोंने यह धर्म छोड़ कर जैन धर्म स्वीकार किया।

जैन कामरशियल क्लास—लखनऊमें लाला कन्हैयालाल गोधाने विना किसीकी द्रव्य सहायतासे तीन माहसे लाला प्रभुदयालजीकी पाठशालामें जैन कामरशियल क्लास खोला है जिसमें १६ विद्यार्थियोंको संस्कृत अंग्रेजी और धार्मिक शिक्षा मुफ्त दिये जानेके अतिरिक्त शार्टहेंड और टाइप राइटिंगका काम सिखाया जाता है।

मकानका शिलारोपण—बड़वानीमें बोर्डिंगके मकानका शिलारोपण उत्सव बड़वानी नरेश श्री रणजीतसिंहजीके करकमलों द्वारा गत ता० १४ अप्रेलको हुआ था।

प्रयत्नका फल—श्री० ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीके प्रयासमे सांगलीमें श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रमके लिये २१॥ दिनका आहारदान स्वीकृत हुआ है। आहारदानमें एक दिनका २५) देना पड़ता है।

सम्मेदशिखर अपील—पट्टेके विषयका जो मुकद्मा नं० २७५ राजा पालगंजसे चल रहा है उसकी तारीख २० अप्रेलको थी वह मुलतवी होकर ता० १४ मई नियत हुई है। तथा पूजा टोंकके मुकदमा नं० २८८की अपील दिगंबरियोंने ४ मार्चको और श्वेतांबरियोंने १९ मार्चको की है।

दक्षिण महाराष्ट्र जैन कान्फरंस—श्री दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाका वार्षिकोत्सव गत ता० २२ को कवलापुर (सांगली) में **ब्र० शीतलप्रसादजी**के प्रमुखत्वमें हुआ था जिसमें कई महत्वके प्रस्ताव होकर आगामी बैठक स्तवनिधिक्षेत्रके मेलेपर करना निश्चित हुआ था। इस सभाने स्व० दानवीर सेठ माणिकचन्दजीके स्मरणार्थ ८०००) एकत्र कर उससे बेलगाममें एक माणिकबाग नामक बंगला लिया है जिसकी आमद ५००) प्रति वर्ष है। यह रकम किसी उपयोगी कार्यमें खर्च की जायगी। इस मौकेपर प्राथमिक शिक्षणोत्तेजक संस्थाका प्रथम वार्षिकोत्सव श्रीयुत वालचन्द रामचन्द कोठारी बी० ए० के सभापतित्वमें हुआ था। इस संस्थाके सेक्रेटरी अण्णाराव अप्पाजी मूले बी० ए० है, जो, विद्यार्थी वसतीगृह, वाचनालय, चर्चामंडल, रात्रिशाला, कन्याशाला, व्यायामशाला, उद्योगशाला, औषधालय, दुर्व्यसन निवारक मंडल ऐसे ९ कार्यालय स्थापित करके चला रहे है। कुल २१ छात्र पढ़ते हैं. जिनमें ८ जैन और एक मुसलमान भी है।

सुधारकोनी प्रवृत्तिओ केवी होवी जोइए ?

—

હાલનો ચાલુ જમાનો " સુધારાનો જમાનો " એમ કહેવાય છે તે વિષે કેટલાકનો અભિપ્રાય હાલ ઘણો ભૂલ ભરેલો હોય છે અને તેમ હોવાનું કારણ એક નથી પણ અનેક છે તેમજ એક પક્ષનાં નથી પરન્તુ બન્ને પક્ષકારોને લગતા છે.

દુનિયાની ઘણી પ્રજાઓ થોડીકવાર ઝબકી અને તારાની માફક આકાશની સપાટી ઉપરથી અદ્રશ્ય થઇ ગઇ છે. રોમ, ગ્રીસ તેમજ હિંદુસ્તાનની પ્રજાઓ એ સપાટી ઉપર વધારે વાર સ્થિર રહી છે અને સોથી વધારે હિંદુસ્તાન રહ્યું છે અને હાલ પણ ઝાંખી જ્યોતથી ચમકે છે.

દરેક પ્રજાની ચડતીની પછવાડે ધર્મ જેવી એક વસ્તુ રહેલી હોય છે. યુરોપના સોળમાં સૈકાનો ઇતિહાસ ધર્મના ઝગડાઓથી ભરપૂર છે અને યુરોપ તે વખતે તે ધર્મના ઝગડા તોડવાને શક્તિમાન ન થયું હોત, તો હાલ તે સુધારાના શિખરે અથવા માનસિક ક્ષેત્રમાં આટલી આગળ પડતું થવા ન પામ્યું હોત. ત્યાર પહેલાં એ ધર્મ કે જે ગ્રીસ તેમજ રોમમાંથી વારસામાં મળેલો છે તેનેજ લીધે રોમ અને ગ્રીસની ચડતી અને આબાદી થઇ છે, એટલે ધર્મ એ દરેક પ્રજાની ચડતી પડતીના કારણ રૂપે મોટું કારણ થઇ પડે છે. મોટી મોટી લડાઇઓ તેમજ દરેક પ્રકારનાં પ્રવૃત્તિનાં ક્ષેત્રો જેવાં કે વેપાર, સાહિત્ય ઇત્યાદિમાં દરેક ધર્મને મુખ્ય પદ આપેલું છે. રોમનું અને ગ્રીસનું સાહિત્ય ક્ષેત્ર તપાસશો, તો જણાશે કે તેમાં હજારો બાબતોમાં ધર્મની વાર્તાઓમાં (Illusions) જણાશે એટલુંજ નહિ પરન્તુ કળાનો નમુનો તપાસીશું, તો જણાશે કે તેમાં ધર્મનું ચિન્હ રહેલું હોય છે અને હોવુંજ જોઇએ કારણકે મનુષ્ય અને ધર્મ એ જુદી વસ્તુઓ નથી અને જ્યાં મનુષ્ય હોય ત્યાં ધર્મ હોવોજ જોઇએ પછી ભલે કાળને અનુસરીને પ્રમાણમાં અને બીજામાં ફેરફાર હોય. ઉપલી દરેક પ્રજાઓ કરતાં હિંદુસ્તાનની પ્રજામાં ધર્મનાં કિરણ ઘણામોટા પ્રમાણમાં દરેક કાર્યપ્રવાહમાં ફેલાયલાં છે. સાહિત્ય, કળા, લડાઇ ઇત્યાદિ દરેકમાં ધર્મનાં કિરણો પ્રેરાયલાં છે.

એટલે ટૂંકમાં મનુષ્ય અને ધર્મ એક બીજા સાથે જોડાયલાં રહે છે અને જ્યાં બેમાંથી એક બગડે છે કે બીજું પણ બગડે છે અથવા બેમાંથી એકનો ખોટો અર્થ કરીશું તો બીજું પણ ખોટા રૂપમાં સમજાશે. તો પ્રથમ સુધારકોની પ્રવૃત્તિઓ આ તરફ દોરાય તો તે ઘણીજ યોગ્ય અને લાભકર થઇ પડે.

હિંદુસ્તાન દેશ કેળવણીમાં ઘણો પછાત છે એ વાત તો હવે ઘણી રીતે સાબિત કરી ચુકાઇ છે અને સર્વે લોકો એમ માનેછે પણ ખરા એટલે હિંદુસ્તાનમાં (general mass) અથવા બીન કેળવાયલો પ્રજા સમૂહ ઘણોછે, હવે તે સમૂહનું બંધારણ મુખ્યત્વે કરીને ધર્મને બહાને ટકી રહ્યું છે. જો ધર્મના ખરેખરા અર્થ ઉપર ઉભું હોય તો તે કેળવાયલો નથી એમ છેજ નહીં. ધર્મના નામે કહેવાનું કારણ એટલુંજ કે તેઓ અંધ શ્રદ્ધાથી ઘણા લાંબા વખત ઉપર લખાયલાં શાસ્ત્રો અને તેમાં થયલા સામાન્ય ટુંકી બુદ્ધિવાળાઓ તરફથી ખોટા ફેરફારો ઉપર પોતાનામાં રહેલી સમજશક્તિનો ઉપયોગ કર્યા વિના અંધ શ્રદ્ધા રાખતા હોયછે. આથી હું એમ નથી કહેતો માંગતો કે શ્રદ્ધા ન હોવી જોઇએ પરન્તુ બુદ્ધિ યુક્ત શ્રદ્ધા હોય, તોજ તે માણસનામાં શ્રદ્ધા છે. વળી શાસ્ત્રો લખાયાને ઘણો કાળ થઇ જવાથી તેમાં કાળ ક્ષેત્ર ઇત્યાદિને લીધે ઘણા ફેરફારો થયા અને વળી આગરામાં પૂરું જેમ જેમ જ્ઞાનમાં ઘટાડો થતો ગયો, તેમ તેમ તેની સમજવાની શક્તિ ઓછી થઇ એટલુંજ નહિ

પરંતુ તેનો ખોટો અર્થ પણ ગ્રહી લેવા માંડ્યો. જેમાં ખાસ કરીને જૈનો વેપારી વર્ગ થઇ ગયા અને તેથી તે જ્ઞાન તરફ લાલચ અને લોભથી વધારેને વધારે બેદરકાર થવા લાગ્યા. ધર્મની દરેક બાબતનો બોજો પોતાના ધર્મગુરૂઓ ઉપર અથવા બ્રાહ્મણ ઇત્યાદિના ધર્મગુરૂઓ ઉપર નાંખતા ગયા અને આથી તે ધર્મગુરૂઓ પણ કેટલાક પોતે સ્વતંત્રતાથી શાસ્ત્રોનો ગમે તેવો ઉપયોગ કરવા લાગ્યા. બોદ્ધ જેવી મોટી પ્રજા થઈ પરન્તુ તેની સામે ઘણા ધર્મ વિરોધીઓ ઉભા થવાથી ઝટ નાશ પામી. જૈનોની સંખ્યા નાની હોવા છતાં પણ આટલો વખત ટકી રહી તેનું કારણ એ કે વ્યાપારી વર્ગ થવાથી ધર્મ વિષે માન ઇત્યાદિને બાજુ ઉપર મૂકી દીધાં, અને બ્રાહ્મણો ઇત્યાદિના હાથમાં તેનો વિષય સોંપી દીધો, આથી તે લોકો પોતાનો સ્વાર્થ સાધવા સારૂ ગમે તેવો ઉપયોગ કરવા લાગ્યા અને હાલ પણ કરે છે. બ્રાહ્મણો સાથેનો આપણો સંબંધનો એક દાખલો આપણાં ઘણાં ખરાં લગ્ન બ્રાહ્મણ ગોરના મારફતે કરવામાં આવે છે એટલુંજ નહી પરન્તુ એ સિવાય બીજા ઘણા આચારો બ્રાહ્મણ આચારો આપણામાં દાખલ થયલા છે અને તે કેટલે દરજ્જે સારા અથવા ખોટા છે તે હાલ અહીં તપાસવાનું નથી, પરન્તુ આગળ અન્ય ધર્મીઓ આપણી સામે થયા નહિં અને તેથી આપણી પ્રજા આટલાં લાંબા વખત સુધી ટકી રહેવાનું એ પણ એક કારણ છે. જે પ્રજાએ માથાને અને શરીરને જુદું ગણી વર્તન ચલાવવા માંડ્યું તેની પડતી થયા વિના કેમ રહે ? ધર્મ અને મનુષ્ય એ બેનો સંબંધ એવો છે તો પછી જ્યારે આપણે એ પ્રમાણેનો સંબંધ તોડ્યો ત્યારથી આપણી પડતી થવા માંડી.

હવે જો એજ ધર્મનો આપણી સાથેનો સંબંધ જોડતા માંડીશું તો આપણે જરૂર એક આબાદ પ્રજા થઇશું. ધર્મમાં સુધારો કરવો એટલે આપણે આપણું જુનું આભરણ નાંખી દઇશું નહિ પરન્તુ તેને નવો આકાર આપી અને યોગ્ય ઘાટ આપીશું. માણસ શરીર, બુદ્ધિ અને આત્માનો બનેલો છે અને તેથી તેને દરેક બાબતમાં જો જોઇએ તેટલી સ્વતંત્રતા આપવામાં આવે તો આપણે આપણો ધર્મ સાધ્યો એ નિશ્ચયછે કારણ કે ધર્મ પણ શરીર, બુદ્ધિ અને આત્માથી છુટો પાડી શકાશે નહિ. તો પ્રથમ સુધારકોએ આપણા શાસ્ત્રો લઇ તપાસી તેનું રહસ્ય, ઇરાદો ઇત્યાદિનું બારીક અવલોકન કરી તેને તેજ સોનાનાં નવા આભરણો બનાવવાં જોઇએ અને જો આમ થશે તો અજ્ઞાન સમૂહ તેના ઉપર અંધ શ્રદ્ધા રાખે છે તેમની પણ આંખો ઉઘડશે અને તે પણ ધર્મ સમજવા માંડશે એટલે શરીર મન અને આત્માને ઓળખતા અને વાપરતાં શિખશે. બીજું અજ્ઞાન સમૂહની સંખ્યા વધારેછે એટલે જ્યાં તેમાં સુધારો થયો એટલે આખી પ્રજામાં સુધારો થવો આવશ્યક છે. આમ થતાં બીજા નાના નાના સુધારાઓ કે જેના સામે જુના જમાના ઉપર અંધ શ્રદ્ધા રાખનારાવાળા માણસો તરફથી વાંધો ઉઠાડવામાં આવે છે, તે પણ બંધ થશે અને બધા સુધારા સ્વયં દાખલ થશે અને સુધારો એટલે એજ કે મન, શરીર અને આત્માને દરેક બાબતમાં સ્વતંત્રતા આપવી. શ્રદ્ધામાં, વિચારમાં, આચારમાં, ભાષામાં તેમજ દરેક કાર્યમાં મનને તેમજ બીજાજ અવયવોને સંપૂર્ણ સ્વતંત્રતા ન્યાયસર આપવી તેનેજ સુધારો કહે છે, પરન્તુ આપણી વિચારશક્તિ ઉપર અંધ શ્રદ્ધાનું અને અજ્ઞાનનું આવરણ છવાઇ ગયું છે, તેથી આ દશા થઇ છે માટે તે દૂર કરવાને પ્રથમ ઉપરો ઉપાય લેવો જોઇએ.



हरिवंशपुराणकी सत्यवादीकी समालोचनाका प्रतिवाद।



पाठक! कई समाचार पत्रोंमें आप हरिवंशपुराणकी समालोचना पढ़ चुके है, उसे साक्षात् देख भी चुके हैं कि संस्थाने एक बड़ी भारी पूंजी लगाकर उसे किस रूपमें प्रकाशित किया है और उसके सपादकने उसके संपादनमें कितना परिश्रम उठाया है? साथमें आप यह भी समझ गये है कि स्वर्गीय पं० दोलतरामजीके अनुवादमें और इस नवीन अनुवादमें क्या खूबी है? और पं० दोलतरामजीने जिन प्रकरणोंको छोड दिया है उन्हें इस नवीन अनुवादमें किस खूबी, किस सरलता और कितने परिश्रमसे लिखा है? मैं आपके सामने इस बातको निर्भीक हो कह सकता हूँ कि इस ग्रंथके संपादनमें मुझे अधिक कष्ट भोगना पड़ा है और विशेषकर उन प्रकरणोंके संपादनमें जिन्हें कि पं० दोलतरामजीने छूआ तक नहीं और जो वर्तमानमें गुप्त सरीखे जान पड़ते है, परंतु संपादक 'सत्यवादीके' हृदयमें इस ग्रंथके संपादनका जरा भी महत्त्व नहीं जमा और हरिवंशका बहु भाग उन्हें विपरीत सूझ गया। यद्यपि समालोचकको अधिकार है कि वह अपने विचार प्रदर्शित कर सकता है और समालोच्य ग्रंथोंके गुण दोषोंका उल्लेख करना उसका परम धर्म है परंतु ऐसी समालोचना अनुचित है जो निर्मूल हो और व्यर्थका पांडित्य बतलानेके लिये खींचातानीसे की गई हो।

खैर, संपादकजीने जो व्यर्थकी "प्राचीन अनुवाद ही छपाना था" आदि बातें लिखी है और भी कई बातोंमें अपना पांडित्य दिखाया है उनकी हम यहॉं प्रत्यालोचना करना अनुचित समझते हैं क्योंकि उक्त संपादकजीको अपने विचार प्रदर्शित करनेका पूर्ण अधिकार है और जो बातें उन्होंने लिखी है पाठकोंने भी वे पढी होंगी कि वे कैसी वे शिर पैरकी है! परंतु उन्होंनें जो अशुद्धिया निकाली हैं उन्हींका हम प्रतिवाद करते है। आपने—

शंभवे वा विमुक्तो वा भवः यनैव शंभवे
भेजु भंत्या नमस्तस्मै तृतीयाय च शंभवे।

इस श्लोकके अनुवादको मिथ्या और सिद्धांत विरुद्ध ठहराया है। प्रथम तो यहां यह निवेदन है कि आप अपने सर्वथा विश्वासपात्र पं० दोलतरामजीके इस श्लोकका भाव देखें उन्होंने क्या लिखा है? यदि पं० दोलतरामजीका भाव मिथ्या और सिद्धांत विरुद्ध है तो मेरा अनुवाद भी मिथ्या और सिद्धांत विरुद्ध बतला सकते हैं क्योंकि मेरा और प० दोलतरामजीका भाव एक है। यदि पं० दोलतरामजीका भाव युक्त और सिद्धांत विरुद्ध है तो मेरे भावको अयुक्त और सिद्धान विरुद्ध ठहराना प्रलापमात्र है दूसरे अनुवाद करते समय मुझे जहां तक विश्वास है 'भेजु.' की जगह 'मनु.'!! क्रियापद नजर पड़ा था और मनु धातुका अर्थ 'विचार'

यथार्थ है इसलिये उक्त श्लोकके अर्थमें यदि पं० दोलतरामजी अपराधी है तो मैं भी हूं अन्यथा नहीं । आपने जो यह लिखा है कि–यहांपर विचारको संशय कोटिमें रखनेसे यह मालूम होने लगता है कि " भव्योंको भगवानके स्थिति कालमें भी यह निश्चय न हो सका कि सुख मोक्षमें है या संसारमें? संपादकजी ! यहां तो आपने कमाल किया। यदि आप जरा गहरी दृष्टिसे विचारते तो आपको पता लग जाता कि मेरे वा पं० दोलतरामजीके भावमें क्या चमत्कारी है । मुझे खेद है मेरे अर्थमें आपको संशय कोटिका भान कैसे हो गया ? हिंदी साहित्यमें " असली जौंहरीकी मौजूदगीमें ही रत्नके खरीददारोंको इस बातका ज्ञान हुआ कि बहुमूल्यता रत्नमें है या कांचमें ? इत्यादि वाक्योंका प्रयोग होता है परंतु सिवाय आपके कोई भी हिंदी साहित्यका वेत्ता वहां " जौंहरीके स्थितिकालमें ग्राहकोंको यह निश्चय ही नहीं हो सका कि बहु मूल्यता रत्नमें है या कांचमें ? इत्यादि संशयकारक अर्थ नहीं करता । यहां तो आपने अपनी हिंदी साहित्य विज्ञताका भी परिचय देदिया । महाशय ! उस श्लोकका मेरा भाव यह है कि–भगवान शंभवनाथके पहिले भव्य भक्तोंको इस बातका ज्ञान ही न था कि निराकुलतामय सुख संसारमें है या मोक्षमें ! किन्तु उनके स्थितिकालमें ही उन्हें इस बातका भान हुआ कि वास्तविक सुख संसारमें है या मोक्षमें ! इसलिये उन्होंने संसारसे मुख मोड़ मोक्ष सुखके लिये उद्योग किया। अब बतलाइये, यहाँ क्या तो असत्यता और विरुद्धता आगई ? मेरी रायसे तो इस अर्थसे भी ग्रंथकारकी उक्तिमें अपूर्व चमत्कारी प्रतीत होती है और ऐसे अर्थमें कविगणको प्रखर पांडित्य और भक्ति संभार प्रतीत होता है । खैर, इस श्लोकके अर्थमें मैं कलंकित ही सही परंतु आप भी तो अपने अर्थपर विचार करैं। आप ही कहां कलंकसे मुक्त हैं । प्रथम तो आपने– 'शंभवे' इस शब्दका जिस कल्याणकारी भगवानके निमित्तसे अर्थ किया है वही विवाद ग्रस्त है क्यों कि आपने जो 'निमित्तसे' यह अर्थ किया है वह किस शब्दकी सामर्थ्यसे ? क्या आपका यह भी सिद्धांत है कि निमित्त अर्थको द्योतन करने वाली सप्तमी विभक्ति भी है ? व्याकरण शास्त्रमें मेरे दृष्टि गोचर तो यह बात नहिं हुई है। हाँ, यदि आप 'विवक्षातः कारकाणि भवंति' इस असमर्थ वैयाकरण सिद्धांतपर आरूढ़ हो कर यह बात कहैं कि सप्तमी विभक्तिका भी निमित्त अर्थ हो सकता है तो सिवाय आपकी व्याकरण विषयक दुर्बोधताके दूसरा कोई उपाय नहीं । अब आपही बतावें मैं तो ' भज् ' धातुके अर्थमें धोका खा गया और अपने यह क्या कर पाड़ा ? यहांपर आपको शंभवे पद सप्तम्यंत तो अवश्य मानना पड़ेगा । क्योंकि 'शंभव' शब्द अकारांत भी है । दूसरे उसे सप्तम्यंत पद बतलानेवाला ग्रंथकार द्वारा दिया गया ' यत्र ' विशे-

पण वहांपर मोजूद है। महाशयजी! यहाँ पर सति सप्तमि है और उसका जिस संभवनाथके स्थितिकालमें यही अर्थ युक्ति युक्त है न कि जिस भगवानके निमित्तसे यह। खैर, भाषामें ऐसा अर्थ हो भी जाता है तथापि आप 'यत्रैव' पदको घसीट कर कहां लगा गये हैं और उसका क्या अर्थ कर गये हैं तनिक तो विचारो। आपने जो 'यत्रैव' पदका अर्थ "जहां-पर वे रहें वहांपर" यह किया है सो क्या संगत है? यहां तो 'जिस' यह अर्थ ही युक्त है अस्तु।

दूसरे आपने 'जिस कल्याणकारी' यहांपर जो 'जिस' अर्थ किया है यह किस पदका अर्थ है? यदि आप कहें कि यह भी 'यत्रैव' पदका अर्थ है तब एक 'यत्रैव' पदकी व्यर्थ दो जगह घसीट करना उसकी मिट्टी पलीत करना है। हां, हम इस बातको स्वीकार करते हैं कि एक शब्द अनेक जगह काममें आता है परंतु कहां, जहां वैसा किये बिना अर्थमें किसी प्रकारकी गड़बड हो परंतु यहां तो कोई गड़बड नहिं मालूम होती इसलिये यहां ऐसा कैसा असमंजस सरीखा प्रतीत होता है। यदि आप यह कहें कि जहांपर वे रहें वहांपर' यह अर्थ यत्रैव पदका नहीं किंतु भव' और 'मुक्तौ' पदोंकी सामर्थ्यसे है तो भी अयुक्त है क्योंकि अर्थात् जब तक भवमें रहे तब तक संसारिक सुखको भोगा और जब मुक्तिमें रहे तब मुक्ति सुखको भोगा। आपके इस भावसे यत्रैव शब्दका ही उपर्युक्त अर्थ स्पष्ट जान पडता है।

आपने दूसरे पादके 'शंभवे' शब्दका अर्थ शंभवनाथ भगवान न कर कल्याणकारी किया है यह भी जरा दृष्टिमें चुभता सरीखा है क्योंकि या तो आप भाषाके सौंदर्यके लिये 'जिस भगवानके स्थिति कालमें' यह अर्थ करें या "जिस कल्याणकारी शंभवनाथ भगवानके" यह अर्थ करना उचित है। शायद आपको इस बातका तो संशय न होगा कि शंभव शब्द अकारांत भी है। तीसरे भगवानके वाचक 'शंभव' और 'शंभु' दोनों शब्द हैं उनमें 'शंभव' शब्दका अनेक जगह प्रचार है और 'शंभु' शब्दकी स्थितिमें यह ग्रन्थ भी प्रमाण है। यद्यपि शंभव शब्दका कल्याणकारी भी अर्थ है परंतु यहांपर वह अयुक्त है क्योंकि कल्याण-कारी अर्थ करनेसे शंभव शब्द विशेषण पड़ता है और उसके लिये विशेष्य भगवान पदकी विवक्षा करनी पड़ती है, दूसरे यदि संभव शब्दको विशेषण माना जायगा तो "विशेष-णका विशेषण नहिं होता" इस नियमानुसार 'यत्रैव' विशेषण निराधार मानना पड़ेगा। तीसरे हमें "तृतीयाय स्वयंभुवे" यह भी पाठ मिला था इसलिये इस पाठसे भी यह दृढता होता है कि दूसरे पादका शंभव शब्द विशेष्य है और वह तीसरे तीर्थंकरका वाचक है। अब बतलाइये महाशय संपादकजी! जिस श्लोकको आपने पूर्ण विचारकर नवीन अनु-वादमें इतना मिथ्या और सिद्धांत विरुद्ध उह-

रानेके लिये पूर्ण दोड़ की उसीमें आप तीन जगह फिसल गये तब यदि आप इसका पूर्ण अनुवाद करेंगे तो क्या होगा? यह तो आप भी अवश्य जानते हैं कि जब किसी व्यक्तिको कलंकित करनेकी मनमें ठान ली जाती है उस समय पूर्ण विचार करना पडता हैं किंतु जँहांपर कर्तव्य कर्म किया जाता है वहां अधिक विचार नहीं। मैं प्रतिदिन १००-१२९ श्लोकोंका अनुवाद करता था इसलिये मुझे अधिक विचार करनेका अवसर नहि मिलता था और आपने मुझे कलंकित करनेके लिये घोर विचार किया है। जब ऐसी दशामें एक सुलभ श्लोकके लगानेमें तीन भूल होगई तो हिसाब लगानेसे इस ग्रन्थके पूर्ण अनुवादमें आपकी छत्तीस हजार भूलें हो सकती हैं क्योंकि इस ग्रंथका परिमाण बारह हजार है। यदि आप मेरे समान शीघ्रतासे अनुवाद करते तो कितनी भूलें रहतीं? वे अवक्तव्य हैं तब मेरी सौ पचास अशुद्धियां भी हो जाय तो आपको इतना घोर एतराज क्यों? अस्तु।

प्र० अ० नं० ३१के श्लोकमें जो देवसंरकी वाणी नियमसे वंदनीक है यहा पर देवसंरकी जगह देवनंद्य होना चाहिये यह लिखा है वहापर इतना ही वक्तव्य है कि हमें सब प्रतियोंमें देवसंर ही पाठ मिला था यद्यपि वहां हमें संदेह अवश्य था परंतु सबप्रतियोंमें देवसंर ही पाठ मिलनेसे हमने देवनंद्य पाठ न गढा क्योंकि नवीन पाठका गढना हमारी शक्तिके बाह्य था। दूसरे-देवनंद्यका किसी अवस्थामें देवसंर भी नाम हो सकता है इस लिये ऐसे स्थानपर प्रतियोंको देखकर और उसका पाठ ग्रहण करने पर भी किसी शब्दके बदलनेके लिये समालोचनासे जोर देना सर्वथा अयुक्त है।

आपने लिखा है कि "प्र० अ० नं० २४के श्लोकमें काव्यमयी मूर्तिका "कृतपद्मोदया" जो विशेषण दिया है उसका "रविषेणकी काव्यमयी मूर्ति भी पद्मपुराणकी विकाश करनेवाली है" यह वर्तमान अनुवादका अर्थ सर्वथा अनुचित है किंतु काव्यमयी मूर्तिके पक्षमें यह अर्थ होना चाहिये कि जिसमें "पद्म-बलभद्र-रामचंद्रके उदय अभ्युदयका वर्णन किया गया है" क्योंकि पद्मपुराणका अर्थ तो काव्यमयी मूर्तिसे निकल आता है विशेषण देनेका अभिप्राय उसमें बलभद्रके अभ्युदयका वर्णन किया गया है यह होना चाहिये"। महाशय! किसी ग्रन्थमें कभी आपने काव्यका लक्षण भी बांचा है? जो आपने काव्यमयी मूर्तिसे पद्मपुराणका अर्थ निकाला है? जरा ध्यान दीजिये-काव्यका लक्षण "अदोषौ सगुणौ सालंकारौ शब्दार्थौ काव्यं" यह है और यहां पर किसी ग्रंथकारके ग्रंथको काव्यके लक्षणमें प्रविष्ट नहीं किया है फिर काव्यमयी मूर्ति पदसे पद्मपुराणका बोध कैसे हो सकता है? खैर, हम आपके सिद्धांतानुसार 'शब्दार्थौ' पदकी सामर्थ्यसे पद्मपुराणका भी काव्यके लक्षणमें अंतर्भाव कर लेते तब? जब कि रविषेणकी केवल पद्मपुराण ही कृति होती सो तो है नहीं और भी उनके कई ग्रंथ हैं और उस दशामें पद्मपुराणका ही ग्रहण क्यों? औरोंका

भी होना चाहिये। संपादकजी! 'कृतपद्मोदया' इस पदका पद्मपुराणको विनाश करनेवाली है यह अर्थ निर्दोष है आपकी समझका फेर है। आप जरा तो यह तो सोचिये कि पद्मपुराणके अर्थसे क्या " रामचंद्रके अभ्युदयका वर्णन " यह भाव नहीं निकलता ? शायद आपको इस बातका तो विस्मरण न होगा कि " नामके एक देशसे भी सर्व देशका ग्रहण हो जाता है" यहा पद्म शब्दसे भी पद्मपुराण अर्थ लिया जा सकता है। क्योंकि आप सिद्धात कौमुदीमे इसी बातके पोषक सत्या, भामा सत्यभामा आदि उदाहरण पढ चुके हैं अस्तु।

प्र० अ० नं० ३८के श्लोकमें हमे संदेह वह गया था और हमने वहा प्रश्नवाचक चिन्ह भी पटक दिया था परंतु संपादकजी! अपनी लेखनीसे आपने वहा भी नहिं थमाया। क्या सपादकजी! जो बात समझमे न आवे उस पर प्रश्नवाचक चिन्हका पटक देना पाप है ? हम कोई प्रभाचन्द्र नामका ग्रथ है ? इस बातका पता नहि लगा था इसलिये वहा प्रश्नवाचक चिन्ह पटक दिया था। पं० दौलतरामजीका सर्वांगमे विश्वास नहीं क्योंकि आप और स्थलोंको जाने द इसी ग्रथके अंतमे न० ९३—९४ वे श्लोकोंका अर्थ में उन्होंने क्या लिखा हे और हमने क्या लिखा है ? क्या आप सिवाय दौलतरामके कोई और भी प्रमाण द सकते हे कि कोई ग्रथ चन्द्र नामका ग्रथ है ?

आपने लिखा है कि उपरके कथनसे यह मालूम हो सकता है कि ऐसा विपर्यास भी क्रममें होगा इत्यादि। सपादकजी! यहा तो आपने विलक्षण वाक्य रचनाका परिचय दिया। यदि आप यह साफ लिख देते कि समस्त ग्रंथ अशुद्ध है तो क्या कोई आपका मुह पकड लेता अस्तु।

आपने जो रूप सत्यका अर्थ अयथार्थ ठहराया है वहा पर इतना ही वक्तव्य है कि आप रूप सत्यका भाव पं० दौलतरामजीके अनुवादसे देखें, उन्होंने क्या लिखा है क्योंकि मैने उन्हीके अनुवादके आधारसे लिखा है। यदि आप प० दौलतरामजीके वचनको भी असत्य ठहरावें तो यह आपका कथन कि—'प० दौलतरामजीका ही अनुवाद छपाना था' अरण्यरोदन सरीखा होगा।

दूसरे यहा रूप सत्यका अर्थ बतलाया ही नहीं गया है वहा तो रूप सत्य और स्थापना सत्यमे भेद बतलाया है और वह यथार्थ है। संपादकजी! हमें जान पडता है समालोचनाके समय आपने शुद्ध अंतःकरणसे किसी बातको नहीं विचारा नहिं तो आपको ये व्यर्थकी त्रुटिया न सूझती अस्तु।

विशेष—हरिवंशपुराणमे जो श्लोक छूट गये हैं व्यर्थ जान प्रस्तावनामें उनका उल्लेख नहि किया है यदि आपको देखनेकी अभिलाषा हो तो संपादक जैन मित्रके पास एक सूची बनाकर भेज दी गई है, आप वहासे देखलें अन्यथा यदि आप लिखेंगे तो मैं घर पहुचते ही सूची भेज दूंगा क्योंकि वर्तमानमें मैं निज जन्मभूमिमें पडा हू, बीमार हू और एक भी प्रति हरिवंशकी मेरे पास मौजूद नहि है।

गजाधरलाल जैन
(अनुवादक, हरिवंशपुराण)

દશા હુમડ જ્ઞાતિમાં-
કન્યાવિક્રય અને વૃદ્ધવિવાહ.

અહા ! ! શું કઠણુ કળીનું, ઝામીયું જોર આજે;
સાચા શત્રુ સ્વજન સઘળા, દેખીને દીલ દાઝે.
ન્હાઠો ગાઠો ધર્મ ઘરથી, ન્યાય તો નાશ પામ્યો;
ન્હાઠી બુદ્ધિ અશુદ્ધ રૂઢિનો, શોક સર્વત્ર જામ્યો.

હાલ દરેક પેપરમાં, દરેક જ્ઞાતિમાં અને દરેક સભાઓમાં કન્યાવિક્રય અને વૃદ્ધ વિવાહ બંધ કરવાના ઉપાયો કરવામાં આવે છે ત્યારે હમારા ભાઇઓ તે વાતને ઊશ્કેરી કન્યાવિક્રય અને વૃદ્ધવિવાહ બંધ કરવાને બદલે ઉલ્ટા આગળ-પડી ચાલુ કરે છે અને તે આ સાલે આપણી જ્ઞાતિમાં કેટલાંક લગ્નો થયાં છે, તે આપ સર્વેને વિદિત છે એટલે નામ આપવાની જરૂર નથી.

હાલ આપણી દશા હુમડ જ્ઞાતિમાં કેટલાક કન્યા વિક્રયના અને વૃદ્ધ વિવાહનાં લગ્ન થયાં છે તે જોઇ કોના દિલમાં ત્રાસ નહિ વર્તાશે. અને આવા દુઃખજનક બનાવો જોઇ, આહા ! આવી બાળાઓને બળતી ઉગારવા અને હાલ થયેલા કન્યા વિક્રય અને વૃદ્ધ વિવાહ જેવાં લગ્નો ફરીથી નહિ બનવા માટે આપણા ગુજ-રાતના દશા હુમડ પંચની કમીટીના મેંબર સાહેબો યોગ્ય કાયદા ઘડી પુરતો બંદોબસ્ત શું નહિ કરે ?

પણ આહા ! આપણે જે આશા રાખીએ છિએ તે નકામી છે, કારણકે એક કહેવત છે કે "અંધેર નગરી, અંધેર-રાજા; ટકે શેર ભાજી, ટકે શેર ખાંજા" તેમ ઇનસાફ કે જ્યાં રાજા પોતે અન્યાય કરે તો પ્રજાને કેમ રોકાય ? પણ રૈયતનો કાયદો રાજાને લાગુ પડે છે. જેની રીતે હાલ આપણા મહાન દયાળુ નામદાર બ્રીટીશ સરકારની ન્યાયની કોર્ટમાં શ્રીમંત અને ગરીબ બન્નેને સરખો ન્યાય મળે છે, તેવીજ રીતે આપણા પંચના મેંબર સાહેબો નિષ્પક્ષ-પાતે આવા કૃત્યો કરનારને શું યોગ્ય શિક્ષા નહીં કરશે ?

આહા ! જ્યાંથી વહાર આવવાની આશા હોય ત્યાંથી ધાડ આવે, તો પછી કહેવું કોને? તેમ જ્યાં આપણી જ્ઞાતિના આગેવાનો કે જેઓ પંચમાં તેમ સભાઓમાં જે મોટાં મોટાં ભા-પણો કરે છે તેઓજ આવાં કામો કરવા પહેલે નંબરે તૈયાર થાય છે, તો તેઓ આવાં લગ્નો બંધ કેમ કરી શકશે ?

પણ મ્હારા વિદ્વાન ભાઇઓ તો સમ-જ્યા હશે કે "વિનાશ કાળે વિપરીત બુદ્ધિ" જેવું થયું કે આગેવાનો આવાં કામો કરવાને ડરતા નથી, તો પછી આપણી જ્ઞાતિની ઉન-તિ થવાની સ્વપ્ને પણ આશા રખાય કે ?

આપણે આપણી સાત કે દશ વર્ષની પુત્રીનો વિવાહ કરવો હોય અને જો બાર કે પંદર વર્ષનો વર હોય તો તે મોટી ઉમરનો ગણીશું. ત્યારે બીજાની બિચારી અગીઆર **બાર વર્ષની પુત્રીને** પોતાના સ્વાર્થ સારૂ સામાને ગમે તેમ સમજાવી વચ્ચે ભાંજગડીઆ નાંખી **પચાસ કે પંચાવન વર્ષની** ઉમરે પરણવાવાળાને શું યોગ્ય ગણીશું ?

અરે ! આપણે ટુંકમાં વિચાર કરીશું, તો સહેલાઇથી જણાશે કે આપણે એક ચાર છ પૈસાની જુજ કિંમતની ચીજ ખરીદવા જઇશું, તો કેટલીક જગ્યાએ ભાવની તપાસ કરી ખરીદ કરીશું કારણકે વખતે ઉતરાઇ જવાય. અરે ! આપણે આવી નજીવી રકમ બદલ આટલી તપાસ કરીશું, ત્યારે આપણે આપણી વહાલી છોડીના લગ્ન કરવા બદલ કે જેની સાથે આખો જન્મ ગાળવાનો છે, તો તેનો પુરેપુરો વિચાર. કર્યા સિવાય **પચાસ પંચાવન વર્ષના વર સાથે લગ્ન કરવા તે હાથે કરી કુવામાં પડવા જેવું** છે.

વળી કેટલાક ભાઇઓ પોતાની પુત્રીના વિવાહ કરતા પહેલાજ એની વાત કરે છે કે

ચાલો, કાલે હા ના હશે (મરી જશે) તો છોડી ગૅઠા બેઠા ખાશે! કેટલી ઓશિયાળી તો નહિ થશે!! વાહ! કેવી ભાવના!! શું આપણે પ્રથમથીજ એવું વિચારીએ છીએ તો આગળ સારૂં કયાંથી થશે?

મારા વ્હાલા વાંચકો! આ લેખ વાંચી જે આવા બનાવો બન્યા છે તે બદલ આપણી કમીટી ભેગી થાય તેમાં ચર્ચા ચલાવી એક સંબંધી યોગ્ય પ્રબંધ કરવા કરાવવા ખરા અંતઃકરણથી મહેનત કરશો, તોજ આપણી જ્ઞાતિમાંથી વૃદ્ધ વિવાહ અને કન્યા વિક્રયનું નામ જશે અને આપણી જ્ઞાતિની ઉન્નતિ થશે.

એક દશાહુમડ જ્ઞાતિ બંધુ.
(એરાણુ પ્રાંતિજ વિભાગ)

सर्व साधारण और उन्नतिका रुख।

(उन्नतिकी रेल भागी चली जा रही है, किसान वेचारे उस ओर देख रहे हैं और खेतमें ही खड़े २ यहीं रहे जाते हैं।)

हम लोगोंको विश्वास है कि 'भारतमें पहिले दीर्घायुष्क, धनी, दानी, विद्वान् और बलवान् आदमी होते थे, पर अब नहीं। अब हम अल्पायुके धारक और निर्बल हो गये हैं' लेकिन यह बात सर्वथा सत्य नहीं, दादाभाई नौरोजीके अलावा 'सरस्वती'में और भी कई व्यक्तियोंके चित्र और चरित्र ऐसे प्रकाशित हुए हैं जिनसे ज्ञात हो सकता है कि अब भी कई व्यक्ति ऐसे हैं जिनकी आयु सौ वर्षसे भी ऊपरकी है। धनियोंका अस्तित्व जे० जे० जमसेदभाईसे हम पा सकते हैं कि जिन्होंने 'एक करोड़ रुपयेका दान एक मुश्त सर्व साधारणके हितार्थ किया है। विद्वानोंमें शिवकुमार शास्त्रीका नाम मशहूर है अथवा बा० तिलककी गणना उपयुक्त होगी, जिन्होंने गीतापर ऐसी बड़ी टीका लिखी है कि जिसकी तुलनामें प्राचीन टीकाएं कई अंशोंमें कुछ कम ही महत्व रखती हैं। और बलेरवाके लिए तो सिर्फ राममूर्तिका नाम ले देना काफी है। ऐसी २ महत्त्वशाली व्यक्तियोंके रहते हुए यह कैसे कहा जा सकता है कि इस समय पहिलेकी अपेक्षा अवनति है? इसलिये इसका मतलब यह है कि एक एक व्यक्तिके आधारपर किसी देशकी दशाका अनुमान नहीं किया जा सकता है। एकाध व्यक्तिके बुरे-नीच होनेसे कोई देश बुरा-अवनत न समझा जा सकता और न किसी दो एक व्यक्तिके भले उच्च होनेसे कोई देश उच्च समझा जा सकता है। किन्तु देशकी उन्नति और अवनति सर्व साधारण पर अपना आश्रय रखती है। सर्व साधारण अगर संप, शक्तिशाली और उच्च विचारके हुए तो देश उन्नत कहलायेगा और सर्व साधारण यदि असंप, निर्बल और नीच विचारके हुए तो देश अवनत कहलायेगा।

जब कि सिद्धान्त यही है कि देशके सर्व साधारण लोग जैसे कुछ होते हैं वैसा ही देश बनता है यानी 'भारतका नाम समुज्वल करनेके निमित्त सर्व साधारण लोग ही हैं तो अब देखना यह है कि उनके उठानेके लिए क्या प्रयत्न हो रहा है।

सर्व साधारणसे मेरा मतलब उन लोगोंसे है कि जो अधिकतर ग्रामवासी हैं, शहरोंमें वे लोग जो दिनों रात मेहनत मजदूरी करके...

लगे रहते हैं जो न कभी अखबारोंका, पुस्तकोंका अथवा व्याख्यानोंका नाम भी नहीं जानते। जो अपना नाम तक लिखना नहीं जानते या जो कुछ २ टेढ़ी मेढ़ी लकीर खींच जानते हैं। ऐसे ही मनुष्योंकी संख्या आज दिन भारतमें सबसे अधिक है।

ऐसे मनुष्योंके दो भाग हो सकते हैं। एक तो वे जो निरक्षर भट्ट है। दूसरे वे जो कि पुस्तक या अखबार बांच सकते हैं।

पहिले प्रकारके लोगोंको उठानेके लिए उन्हें अपने कर्तव्योंका बोध करानेके लिए सिर्फ व्याख्यानोंका ही अवलम्ब नज़र आता है। व्याख्यान भी वे नहीं, किन्तु वे जिनका अधिकांश भाग उनके परिचित हो। जैसे पुराण पुरुषोंकी कथाएँ। रामचंद्र-सीता, अर्जुन-भीम, आल्हा-ऊदल। ऐसे महात्माके घटनात्मक चारित्रसे तो ये लोग परिचित होते हैं, सिर्फ ओजस्विनी भाषामें उनके भावोंका प्रचार मात्र करता है।

दूसरे प्रकारके सर्व साधारण लोगोंके साहित्यकी भी आवश्यकता हैं या यों कहिए कि उनको अपने कर्तव्योंका बोध करानेके लिए साहित्य भी अवलंबन हो सकता है।

आजकल भारतकी व्यापक भाषा हिन्दी तथा अन्य प्रान्तीय भाषाओंमें जितने समाचार पत्र, सामयिक पत्रिकाएँ और पुस्तकें निकलती हैं उन सबकी न केवल भाषा तथा विषय भी इतने ऊँचे दरजेके-उनके लिए कठिन होते हैं जिसे सिर्फ शिक्षित ही समझ सकते हैं। क्योंकि हरएक पत्र सम्पादक या लेखक अपने सामने शिक्षित जनताको ही देखता है, वह लेख लिखते समय उन्हीं मनुष्योंके चित्तको आकर्षण करनेवाली शब्दशैली और विषयकी बारीकी रखता है। जो लोग कि उस विषयसे कुछ परिचय रखते हैं उसकी रुचि उसी ओरको बढ़ती है जिसे शिक्षित लोग अपनाते हैं। यहाँ तक कि वह उसीमें अपनी उच्च योग्यता समझता है जिस ओर शिक्षितोंकी रुचि बढ़ती जाती है। फल यह होता है कि साहित्य इतनी बारीक विषयकी चर्चा करनेवाला होता जा रहा है जिससे सर्व साधारणको उस साहित्यसे साक्षात् लाभ बिलकुल नहीं पहुँचता।

विषयकी बारीकीको और आलंकारिक भाषाको में बुरा नहीं बतलाता। पर सर्वसाधरणको इससे लाभ कुछ नहीं होता।

सर्व साधारणके लिए तो ऐसे छोटे २ और मामूली विषय होने चाहिए जैसे १४-१५ वर्षके बच्चोंके लिए होते हैं। भाषा भी छोटे २ वाक्योंवाली और निहायत सादा हो। यह और अच्छा हो कि उसमें ऐसी छोटी-मोटी दिल्लगी भी होना चाहिए जिससे उनका उस विषयमें दिल लगा रहे, ऊबे नहीं।

इन उपायोंसे सर्व साधारण भी अपनी उन्नति कर सकेंगे और वे अपने साथ होलेंगे। ऐसा न होना चाहिए कि हम लोग उन्नति ट्रेनमें बैठे हुए आगे भागे चले जाँय और ग्रामवासी या सर्व साधारण लोग हमारी ओर खड़े २ ताकते २ वहीं रह जाँय।

एक आगरा निवासी।

अन्योक्ति पंचक।

(लेखक-छोटेलाल जैन मास्टर, खुरई।)

कमल।

वक्र और वाचाल अनाड़ी इन बगुलोंसे,
अपमानित हो, कञ्ज ! चित्तमें चिन्तित कैसे ?
चिन्ताको तू छोड़ ईशसे यही विनय कर,
चिरजीवें, ये मधुप मार्मिक और सुहृदवर।

मोर।

वर्षाकी घनघोर घटामें हो मदमाती,
निबल जीवको सता सता कर अती इतराती।
मूर्ख मोर ! अभिमान क्षणिक सुख है यह तेरा,
रोवेगी निज चरण देख कहना सुन मेरा।

मेघ।

हे घन ! कर दे मूक पिकोंको हाय, भले ही,
और बनाले दुष्ट मेण्डकोंको स्वस्नेही।
इसकी चिन्ता नहीं किन्तु अक्षम यह तेरा,
करता जो शशि टाँक क्षुद्र खद्योत उजेला।

काक।

खग समूहमें भीरु पातकी वञ्चक चञ्चल,
धिक धिक काक ! पुरीष निन्द्य भक्षक रे खल।
यद्यपि काला रंग बना कोकिल सम तेरा,
किन्तु कौन औ कुटु शब्दमें भेद घनेरा।

प्याज।

धोकर बार अनेक अगम खगितारे जलमें,
दे केशर पुट शुष्क किया छाया शीतलमें।
किन्तु न छोड़ी गन्ध अन्ध अविवेकी कैसा ?
हाय ! अन्तमें रहा प्याज जैसे का तैसा।

शोक ! शोक !! शोक !!!

हा ! आज हम रोते सभी,
उस तेज पुंज निधानको।
आवे हजारों आपदा,
देगा सहारा आनको॥
हा ! जैन जाति सुपुत्र तेरा,
रत्न प्यारा खो गया।
जो सुखद था, आदर्श था,
हा ! न्यायवारिधि उठि गया॥ १॥

न्याय अरु कानूनमें तो,
आप पूरे दक्ष थे।
इसके बतानेके लिये ही,
न्यायवारिधि पदक थे॥
हा ! दुःख अब उन युक्तियोंसे,
कौन धीर बँधायगा।
वह धैर्यदाता इस धरासे,
न्यायवारिधि उठि गया॥ २॥

मोह रूपी मत्त पी गज,
घूमते संसार वन।
सब हो सुखी, उनको भगाते,
आप ही तो सिंह बन।
आकर पड़ा यह वज्र दुःख,
अब कौन उन्हें भगायगा।
था, वादिगजको केशरी,
हा ! न्यायवारिधि उठि गया॥३॥

सुगल पसी इस जातिका,
उद्धार कर्ता कौन था ?
क्या ? हो गया उत्तर यही,
वह एक वाचस्पति सु था।
गंभीर मीठे अब सु प्यारे,
वचन कौन सुनायगा।
धर्मोपदेशक, सत्य वक्ता,
न्यायवारिधि उठि गया॥ ४॥

जैसा ही उनका नाम था,
वैसा ही उनका काम था।
आबाल अरु गोपालका,
निस्वार्थसे रखवारा था।
दास बन इस जातिका,
सब कौन ओर बहायगा।
बेडा लगाया नावका हा!
न्याय वारिधि उठि गया॥ ५॥

अध्यात्म आज दिनकर,
अस्त हो, कित भगि गया।
अपने सुदिव्य प्रकाशसे,
भारी उजाला करि गया।
इस व्यथित हृदय सरोजको,
दे किरण कौन खिलायगा।
जो, प्राण! था सर्वस्व था, हा!
न्याय वारिधि उठि गया॥ ६॥

उस जगत गुरुका क्या? मनोहर,
शुद्ध ये उपदेश था।
निर्मोह, सबे, वीर, निर्भय
बनो ये आदेश था।
अब धौव्य उस स्वाधीनताका
कौन पाठ पढ़ायगा।
अपनी सुशिक्षा देनहारा
न्याय वारिधि उठि गया॥ ७॥

इस मेरु राज्य मर्यादस्य,
पद कौरव आप थे।
धर्मार्थ और नेमार्थ,
निस्वार्थ मेम्बर आप थे।
गुरुतर महत्तर पात्र थे,
सन्मान कौन दिखायगा।
हा, धर्मरत, स्वदेश सेवी,
न्याय वारिधि उठि गया॥
वे, ना गये इस लोकसे,
निज अन्तर्ध्यान हुये गये।

जो प्राण! थे इस जातिके,
देकर दगा कित रमि गये।
मुर्दा हुई इस जातिको अब,
कौन सुधा पिलायगा।
अमृत स्वरूपी वचन दाता,
न्याय वारिधि उठि गया॥ ९॥

दुर्भाग्य! जैन समाज! क्या?
अब रुदन करना ठीक है।
उपकारिताका प्रगट करना,
ये पुरानी लीक है।
उस पूज्य यह, गुरुवर्य्यका,
अब कौन नाम चलायगा।
ऐसा करेगा तू, न तो,
सच न्याय वारिधि उठि गया॥ १०॥

यह छात्र मंडल! आज रोता,
पितृशोक वियोगसे।
जब याद आती फटती छाती,
नीर बहता दृगनसे।
आंखें फटी रहि जाति हैं हा!
कौन उन्हें दिखायगा।
यह पकड़ हाय समाज नहीं,
सच न्यायवारिधि उठि गया॥ ११॥

कुंजविहारीलाल,
जैनसिद्धान्तविद्यालय-मोरेना।

सद्वाक्य-पंचक।

(१) अधिकांश लेखक इस बातको नहीं जानते कि उनके लेख सर्व साधारण नहीं समझ सकते, वे सिर्फ उन्हीं मनुष्योंको सामने रखकर, जो कि शिक्षित-अपनेको नेता माननेवाले हैं, लेख लिखते हैं।

(२) दिनभर सुस्त बैठे रहनेवालोंके लिए यह अवश्य कहना उचित है कि 'विना काम किये कोई सुखी नहीं रह सकता।'

लेकिन इसका मतलब यहाँ तक नहीं है कि, दिनों रात सांसारिक कामोंमें इतना फँस जाना कि जिससे अपने आपकी-अपने कर्तव्योंकी-अपने अनुभव और सदाचारकी वृद्धिकी भी याद न रहे। ऐसे मनुष्योंको यह बात ध्यानमें रखना चाहिये कि "**कामके लिए जीवन नहीं बल्कि जीवनके लिए काम है।**"

(३) जिस तरह तुम अपने नौकर पर हुकूमत करनेमें हिचकिचाते हो कि कहीं यह हुक्म-अदूलीन कर बैठे, विश्वास रक्खो, वैसे ही वह भी हुक्म-अदूली करनेमें तुमारी नाराजीसे भीतर ही भीतर ठिचक रहा है।

(४) याद रक्खो, नौकरकी वृद्धि नौकरकी ही वृद्धि नहीं है किन्तु तुम्हारी भी वृद्धि है।

(५) जब तक कि तुम किसी विषयमें इतने लिप्त न होगे कि अपने आपकी भी तुम्हें खबर न रहे तब तक तुम उसके अच्छे विद्वान् न हो सकोगे।

विवाहका व्याह।

(महमन)

रात्रिका समय है। मन्द मन्द सुगन्धित पवन चल रही है। श्यामाकर (चन्द्रमा) का प्रतिबिम्ब मेघोंमें घुसकर यत्रतत्र अपनी प्रभा (ज्योत्स्ना) फैला रहा है। इसी समय एक गृहस्थ रमणी अपने कमरेमें बैठी हुई, न मालूम किस शोकसागरमें डूब रही है। इतनेमें अन्दरसे आवाज आई–"अरी किवाड़ तो खोल!"

रमणीने चुपचाप दरवाजा खोलदिया। यह आवाज देनेवाला रमणीका पति था। इसका नाम नन्नूमल और रमणीका नाम बतासोबाई है। नन्नूमलकी दो कन्याएँ हैं।

नन्नूमल–(रमणीसे) प्रिये! मैं सब ठीक कर आया हूं, केवल तुम्हारी आज्ञाकी ही कमी है।

बतासो०–मैं आज्ञा क्या दूंगी? जो तुम्हें रुचे सो करो।

नन्नूमल–मैं रत्नकटोरी (बड़ी लड़की) की सगाई पक्की कर आया हूं। दसहजार रुपये नगद, और पांच हजारका गहना ठेंके के लिये तैयार है। कहो, तुम्हारी क्या राय है?

बतासो०–मैं रत्नकटोरीका व्याह चेतसिंह ही के साथ करूंगी, क्योंकि वह रत्नके लिये बहुत ही योग्य वर है, उसकी अवस्था भी ठीक (१८ वर्षकी) है। अहा! ऐसे सुन्दर जमाई (दामाद) का मिलना भी कठिन है।

नन्नूमठ–(स्वागत) अब भी चेतसिंह यहाँ आता है, मालूम पडता है कि, उसीने रत्नको बहका रक्खा है। (गुस्सा होकर,) वह क्या पढ़ा लिखा नही है? बेरिस्टरी पास की है और हाईकोर्टका जज है। पासमें मोटर महाभारी आता है। और क्या चाहिये? लड़कीके सुखमें कुछ कमी है?

इतनी कह नन्नूमठ जानकीप्रसादके मकानपर गया और आवाज दी–" जानकीप्रसादजी, ओ जानकीप्रसाद !" "जानकीप्रसादजी हैं क्या?"

जानकीप्रसाद–कौन है?

नन्नूमठ–अजी मैं हूँ नन्नूमठ।

जानकीप्रसाद–आईये बाबूसाहब। कहिये कुशल। यहां सब ठीक है, केवल ज्योतिषीजीको बुलाकर दिन ठीक करना है।

नन्नूमठ–अच्छा आप ज्योतिषीके घर जाईये। उनको बुलाकर मेरे घरपर आईयेगा।

जानकीप्रसाद–" ठीक ।," कहकर

जानकीप्रसाद ज्योतिषीके घर पहुँचे और आवाज दी–" ज्योतिषी ! ओ ज्योतिषीजी !"

ज्योतिषी–कौन है भाई?

जानकी–अजी मैं हूं जानकीप्रसाद।

ज्योतिषी–ओहो! किस लिये तकलीफ उठाई? आईये–

जानकीप्रसाद–बाबू नन्नूमठकी लड़की के विवाहकी बातचीत होरही है उन्होंने आपको याद किया है।

ज्योतिषी "अच्छा मैं आता हूं, बाबूजीसे मेरा जुहार कहियेगा"। इतना कह ज्योतिषीजी अन्दर चले गये।

पाठक! अभी तक आप जानकीप्रसादसे अपरिचित हैं। यह कन्याविक्रयका दलाल एक मतलबी यार है।

× × ×

(२)

(एक पलंगपर रत्नकुमारी और चेतसिंह बैठे हुए बातचीत कर रहे हैं।)

चेतसिंह–मैंने सुना है तुम्हारा ब्याह एक वृद्ध बेरिस्टरके साथ होनेकी तयारी की जा रही है!

रत्न०–किसने कहा?

चेतसिंह–तुम्हारी छोटी बहन कलमाला कहती थी।

रत्न०–(गले लगकर) चेतसिंहजी, आप ही इस संसारमें मेरे सब कुछ हैं। मुझे इस विपत्तिसे बचाइये, नहीं तो मैं प्राण खो दूँगी।

चेतसिंह–(रूमालसे आँसू पोंछकर) रत्न, कोई चिन्ता नहीं, मैं तुम्हारे पिताको समझाऊंगा, इतना कह चेतसिंह वहाँसे चलदिये। कमरेसे बाहर पैर रक्खा ही था कि, नन्नूमठने हाथमें एक पिस्तोल लेकर गुस्सेसे कहा

"चेतू! यहां कैसे आये?"

चेतसिंह–रोजकी तरह आज भी आया हूँ। आज आपका यह प्रश्न कैसा?

नन्नूमठ–उस दिन तुमसे कह दिया था कि यहां भूल कर भी न आना।

चेतसिंह–भूलकर नहीं, जानकर ही

आया हूं, घबड़ाइये नहीं। क्या बात है ?

नन्नूमल–"क्या कहा ? देख ! यह पिस्तौल तेरा खून किये न रहेगी, कहकर चेतसिंहको एक गोली मार दी। चेतसिंह जमीन पर गिर पड़ा; और "हाय, मर गया" कहकर चुप हो रहा।

पिस्तौलकी आवाज सुनते ही रामस्वरूप कमरेमें आ गया। रामस्वरूपने चेतसिंहको जमीन परपड़ा देखकर उसकी नाड़ी टटोल कर कहा–"चेतसिंह तो मर गया !"

यह सुन नन्नूमलकी पतलून बिगड़ गई। बोलना बंद होगया और आखोंकी पुतलीयाँ ऊपर चढ़ गई। अब क्या था, इतनेमें बतासो और रत्नकटोरी भी भीतरसे आ पहुंची, सबके सब चिल्लाहटके साथ रोने लगे।

नन्नूमल–(घबड़ाकर) अरे चुप रहो, नहीं तो अभी अपन सबके सब पकड़े जावेंगे!'

रामस्वरूप–(चिल्लाकर) "हा ! चेतू" "चेतू" "ओ चेतू"

नन्नुमल–अरे भाई ! शोर मत करो, कोई उपाय बतलाओ, नहीं तो मैं मारा जाऊँगा।

राम०–इन लोगोंको यहाँसे हटादो, इनके चिल्लाहटसे पुलिसको खबर पहुँच जायगी-

नन्नूमल–(हाथ जोड़कर) तुम लोग यहाँसे जाओ; घरमें जाकर रोओ; नहीं तो मैं मारा जाऊंगा।

राम०–मुझे इनाम दिया जाय तो काम ठीक कर सकता हूं।

नन्नूमल–अरे रामस्वरूप ! इनामकी क्या कहता है ? तू इस आपत्तिसे मेरे प्राण बचाओ तुमारी कसम, इनाम अच्छा दूंगा।

रामस्व०–अच्छा, आप यहांसे जल्दी चले जाइये।

नन्नू०–तुम क्या करोगे ?

राम०–मैं चेतसिंहको चुपकेसे तालाबके किनारे गाड़े आता हूं।

नन्नूमल–(कांपता हुआ) अच्छा, मैं जाता हूं, होशयारीसे, काम करना भैया। देख मैं खूब इनाम दूँगा।

रामस्वरूप चेतसिंहको तालावपर ले गया।

पाठक ! आप चेतसिंहसे अपरिचित हैं! यह नन्नूमलका चलता पुर्जा नौकर है। चेतसिंह शहरके एक बनाज़का पुत्र है। जो सदाचारी और होशयार था।

\+ \+ \+

(३)

रत्नकटोरी अपने कमरे सो रही थी। कनकमाला आगई और कहा–"जी जी" ओ "जी जी," माँ बुलाती है, जल्दी उठ!"

रत्न०–(करवट लेकर) क्या है ?

कनक०–छोटी थाने तठ, माँ बुलाती है।

रत्नकटोरी–मुझे भूँख नहीं है।

कनक०–जीजी उथतो, सुन, तुमाली सगाई एक साहबके साथ होगी। तू मेंम बनेगी, जीजी ! तु मेंम बनेगी।

रत्न०–क्या बकती है पगली। किसने कहा मैं मेंम बनूँगी ?

कनक०–हमछे माँने कहाथा कि जीजी बनेंदी ! तू छोती थाने चल, माँने बुलाया है।

रत्न०–कनक बैरी होगई है। तू माँसे

कह दे मुझे भूख नहीं है, मैं रोटी नहीं खाऊंगी।

कनक०—अच्छा; मैं माँ तो मैं मनती हूँ।

[स्थान—तालावका किनारा]

रामस्वरूपने गड्ढा खोदकर चेतसिंहको उठाया ही था कि, चेतसिंहने गंभीर स्वरसे कहा—रामस्वरूप! क्या जिंदा ही गाड दोगे? इनाम क्या ठहरा लिया है? रामस्वरूप! क्या करते हो?

रामस्वरूप—(भयसे काँपता हुआ) मा—मा—ई—चेतू—मॉफ—क—क—रो।

चेतसिंह—डरनेकी कोई बात नहीं; मैं तुमको एक पत्र लिखकर देता हूं, उसे रत्न० को ही देना, अन्य किसीको नहीं।

रामस्वरूप—अ .अ ...च्छा—मैं दे—दे—दे दूंगा।

चेतसिंहने पत्र लिखकर रामस्वरूपको दिया और कहा—जाव रत्न०को देना।

ठीक, कहकर रामस्वरूप सीधा घरको चला आया और कनकमालाके हाथमें पत्र देकर कह दिया कि, इसको अपनी जीजीके हाथमें देना और किसीको नहीं। कनकमालाने रत्न०के कमरेके निकट पहुँचकर आवाज दी—"जीजी! किवाड़ तो खोल!"

रत्नकशोरीने किवाड खोल दिये। कनकके हाथसे पत्र पाकर रत्नकशोरीने विस्मयमें पत्रको खोलकर पढा, उसमें इस प्रकार लिखा था—

रत्न,

चिन्ता न करना! मैं अभी जीवित हूं। तुम धैर्य धरो, धैर्यसे सब कार्योंमें सफलता प्राप्त होती है। इत्यलम्॥ चेतसिंह।

(४)

नन्नूमल रवीवारकी छुट्टीमें अपने मित्र कैलाशचन्द्रके घर पर चौपड खेलने जाया करते हैं इसलिये चेतसिंहने यही अवसर रत्नसे मिलनेका ठीक समझा।

एक दिनकी बात है कि नन्नूमल उसी तालावके किनारेके रास्तेसे कैलाशचन्द्रके घर जा रहे थे कि इतनेमें उनके सामने रौद्रवेश धारण किये हुए एक पिशाच आ गया। इसे देखकर नन्नूमलको होश न रहा, गला सूख गया, चीत्कार करनेकी चेष्टा की; परन्तु वह प्रयत्न व्यर्थ हुआ। उसने पहिलेहीसे मुँह बन्द कर लिया और कहने लगा—मार डालता हूँ। नहीं तो मैं जो कहूँ उसे कर।

नन्नूमल—(भयसे काँपता हुआ) य ह—बताओं तु तु—तुम को कौन हो?

पिशाच—मैं चेतसिंह हूं। मर कर भूत हुआ हूं।

नन्नूमल—अच्छा, जो जो—जो—तुम क—क कहोगे—व व वही—क—क करूं गा।

पिशाच—करेगा क्या, करना ही पडेगा।

नन्नू—अ—अ—च्छा—ज—ज—जल्दी कहो मैं—मैं—ज—ज—जरूर—क हूँ—रूँ—गा।

पिशाच—अच्छाँ कँरोगे तों कँरो।

नन्नूमल—"अच्छा, क—क ....रूँ—"

पिशाच—(बात काटकर) कँ—कँ ...क्यॉं कँरते हों? स्टॉम्प लिखनाँ पँडेगाँ।

नन्नूमल—(स्वगत) खैर जान बची। भूत स्टाम्प लिखाकर ही क्या करेगा! कुछ कर तो सकता नहीं, खैर लिखे देता हूँ। (प्रकट) अच्छा, क्या लि—खूं?

पिशाच—यँह लिखो कि " मैं चैतँसिँह के साथ अपनी बड़ी लड़कीका व्याह करूँगाँ, औरँ किसीके साँथ नहीं। " उसके नीचे अँपने हस्ताक्षर करो !

नन्नूमलको ऐसा ही करना पड़ा।

प्रिय पाठको, चेतसिंहका रत्नकटोरीके साथ विवाह कर दिया गया तब उन दोनों (चेतसिंह और रत्नकटोरी) की आनन्दकी सीमा नहीं रही। दोनों सांसारिक सुखोंको बाधा रहित अनुभव करने लगे। इस संबंधसे नन्नूमलजी नाखुश थे, परन्तु अब वे अस्वस्थ रहने लगे। वे दिन परदिन सूखते गये और अंतमें कुछ समय बाद शरीरान्त कर गये।

प्रिय पाटको! इस "प्रहसन" से आपके हृदयमें अवश्य कुछ असर पड़ा होगा! इसका असर तभी सफल होगा, जब कि आप अपनी शक्तिके अनुसार, अपनी जातिमें प्रविष्ट कुरीतियोंको बन्द करनेका प्रयत्न करेंगे।

आशा है हमारे सुज्ञ पाठक इतना नियम तो अवश्यही करेंगे कि—" हम बेटी नहीं बेचेंगे और जो कोई बेटी बेचेगा, जो कोई बेटीवालेको रुपये देगा, तथा जो कोई इस कार्यमें सहायता देगा, उसके यहां व्याहमे जीमने नहीं जायेंगे।"

यदि आप मुझ अज्ञानीके कहने पर इतनी कृपा करेंगे तभी मैं अपने इस लेखमें अपनेको सफलिभूत मानूँगा; और तब मैं अपनेको हदसे ज्यादा कृतार्थ समझूंगा, जब कि मुझे अथवा "दिगम्बर जैन" के सम्पादकको एक कार्ड द्वारा सूचित करेंगे कि, हमने ऐसा प्रण किया।

धन्यकुमार जैन विद्यार्थी
स्या० महाविद्यालय—काशी

अमारी यात्रा.

—ःः—

फागणु मासमां दाहोदमां मळेली संयुक्त दि० जैन कोन्फरन्समां सभापति तरीके अमोने नीमवामां आव्याथी अमो कुटुंब सहित तथा अमारा भाणेज चुनीलाल झवेरचंदना विधवा जडावबाइ ए प्रसंगे दाहोद गया हता अने त्यांथी पछी अनेक यात्राओ करवानो सुप्रसंग अमोने प्राप्त थयो हतो, जेमांनी केटलीक जाणवा योग्य हकीकत अत्रे प्रकट करीए छीए.

दाहोदमां ६ दिवस (ता. २२ थी २७) दरम्यान पंचकल्याणक उत्सव अने कोन्फरन्समां भाग लइ २५०) कोन्फरन्स, १००) पांच संस्थाओ, तथा ५१) रामटेक जीर्णोद्धार फंडमां आप्या तथा सरकारी कन्याशाळानी मुलाकात लइ त्यांनी १५० बाळकीओने कपडां वगेरेनुं इनाम आप्युं. अत्रे जुनुं देहेरुं वीसपंथानुं छे अने नवुं देहेरुं तेरापथी आम्नायनुं छे दशा हुमडनी वस्ती आशरे ३०० नी छे.

ता. २७ मी ए दाहोदथी नीकळी वडोदरा, वीरगाम, सोनगढ थइ ता. २९ मी ए पालीताणा जइ शहेरनी धर्मशाळामां मुकाम कर्यो. अत्रे आठ दिवस रही शेत्रुंजय तीर्थनी ५ यात्रा करी तथा तीर्थनी व्यवस्था तपासी, तो जणायुं के दरेक कार्य मुनिम धरमचंदजीनी देखरेखथी उत्तम रीते थाय छे. कोइपण यात्रीने कंइपण तकलीफ पडती नथी. गामना देहेरासरमां मुनीमजीए एवी तो सुंदर रचना करी छे के देहेरामांथी खसवुं गमतुं नथी. दररोज रात्रे धामधूमथी आरती उतरे छे. हालमां जे चोकीदार बनावेला छे तेमांना एक माटे रु. १००) जडावबाइए आप्या.

पालीताणाथी ता. ८ मीए रात्रे भावनगर गया अने त्यां १० मीए रही ११ मीए घोघा गया. अत्रे दांडीया, गुजराती अने गोपडानुं एम त्रण देरां प्राचीन छे, ता.

૧૨ મીએ વિઘાનંદસ્વામીના દર્શન કર્યાં અને ત્યાંનો ચોતરો તથા દહેરાનો જીર્ણોદ્ધાર કરી આરસ બેસાડવા માટે રૂ. ૧૫૧) આપવા સ્વી કાર્યું. એજ રાત્રે ભાવનગરની પાઠશાળામાં સભા થઇ પરીક્ષા વગેરે લેવાઇ, જેથી સંતોષ પામી ૨૫) પાઠશાળામાં ભેટ આપ્યા. તા. ૧૩ મીએ ભાવનગરથી નીકળી ઘોળા જંકશન થઇ તા. ૧૪ મીએ જુનાગઢ પહોંચ્યા અને તા. ૧૫ મીએ પહાડપર ચઢી ગીરનારની પાંચે ટૂંકના તથા સહસાવન પણ દર્શન પૂજન કર્યાં. અને એ મુજબ ૧૭ તથા ૧૯ મીએ પણ પહાડની યાત્રા કરી. તલેટીના મંદિરમાં સાંજના દીવાબત્તીની સગવડ નથી તે થવાની જરૂર છે. ધર્મશાળાની ઓસરી તથા ચોક આગળ પથ્થર બેસાડવાની જરૂર છે કેમકે એ જગ્યાએએ માટી અને રેતી વિશેષ હોવાથી યાત્રીઓને રસોઇ વખતે ઘણીજ હરકત પડે છે. વળી સ્ત્રી તથા પુરૂષોને ન્હાવા માટે જુદી જુદી એકેક ઓરડીની જરૂર છે. વળી કુવાની ચારે બાજુએ પથ્થર જડાવવાની પણ જરૂર છે કેમકે એ વિના ઘણીજ કાદવ થાય છે અને જીવજંતુ ઉત્પન્ન થાય છે. તા. ૨૧ તથા ૨૨મીએ જુનાગઢના મંદિરમાં દર્શન પૂજન કર્યાં. કિલ્લો, વાવ, નવગન કુવો, તળાવ, સક્કર બાગ વગેરે જોયાં. દહેરાસરની વ્યવસ્થા સારી છે. કારખાનામાં હિસાબનામું વગેરે તપાસતાં તે બરાબર જણાયું. આગળ જેવો અંધેર કારોબાર નથી. હાલ સર્વે પ્રકારે સુવ્યવસ્થા છે. મુનીમ રૂપચંદજી લાયક, પ્રમાણિક તથા ધર્માત્મા છે. દરેક કામ ધર્મ પ્રમાણે કરકસરથી કરે છે. નવી ધર્મશાળામાં ૧૨ ઓરડાઓ તૈયાર થયા છે અને બે બંગલા પણ તૈયાર થયા છે. જેની બાજુમાં એક બંગલો , જડાવબાઇએ પોતાની પુત્રી બ્હેન ડીકીના સ્મણાર્થે બાંધવા રૂ. ૨૦૫) આપવા ઇચ્છા દર્શાવી તથા તલેટીના મંદિરની વચ્ચે ચોકમાં આરસ જડાવવા અમોએ પરવાનગી આપી. મુનીમના હાથ નુચે ૨૩) પગાર ઓછો છે, જે વધારી આપવાની જરૂર છે. વળી તલેટીપર દેખરેખ સારૂ જવા આવવા માટે એક બ્યુક ટાંગાની જરૂર છે. તળેટીની ધર્મશાળાની વ્યવસ્થા પણ સારી છે.

તા. ૨૪ મી એ જુનાગઢથી નીકળી મહેસાણા થઇ તારંગા આવ્યા અને પગે ચાલી પહાડપર ગયા અને સર્વેએ આનંદથી યાત્રા કરી તથા ૨૭ મી એ સિદ્ધશીલા તથા કોડશીલાની યાત્રા કરી. અત્રે ચૈત્રી પુનેમની યાત્રા સારી ભરાઇ હતી. આશરે ૩૦૦ યાત્રાળુઓ હતા. જલયાત્રાનો વરઘોડો નીકળી અભિષેક થયો તથા સર્વે મળી સંઘ જમાડયો હતો. અત્રે મુનીમ નાનચંદ પદમશી લાયક છે અને દેખરેખ હિસાબ પણ સારો રાખે છે. મુનીમના હાથ નીચેના માણસ રામચંદ રોજ નિત્ય નિયમ પૂજા કરે છે અને શાસ્ત્ર વાંચે છે. આરતી પણ રોજ ધામધુમથી ઉતરે છે. બંને દહેરે તથા બે દહેરીઓ ઉપર પ્રક્ષાલ પૂજન બરાબર થાયછે. સિદ્ધશીલા તથા કોડશીલાના દહેરીના જીર્ણોદ્ધાર માટે તો સોલાપુરવાળા શેઠ હીરાચંદ અમીચંદ વગેરે તરફથી મંજુરી મળી છે, જેમાં ખેરાળુના ભેંયરમાંથી નીકળેલી બે કાયોત્સર્ગ પ્રતિમા કે જે સં. ૧૧૯૨ ની છે તે બિરાજમાન કરવામાં આવનાર છે. વળી આપણા મોટા દહેરાની બાજુમાં બીજાં બે દહેરાં છે જેમાં પદ્મપ્રભુનું સં.૧૬૪૩ નું અને વાસુપૂજ્યનું ૧૬૬૯ નું છે જેનો જીર્ણોધ્ધાર કરવા માટે જડાવબાઇએ કબુલ્યું તથા સંભવનાથના દહેરાના સભામંડપમાં આરસની લાદી બેસાડવા અમોએ પરવાનગી આપી હાલનું તારંગાનું સ્ટેશન હવે થોડા દિવસમાં બદલાઇ ટીંબા નામનું નવું સ્ટેશન થનાર છે, જ્યાં ધર્મશાળા બાંધવા માટે જમીન લેવાઇ છે અને ઓરડીઓ તૈયાર થાય છે. જો કોઇ ભાઇને પોતાના નામની ઓરડી બંધાવવી હોય તો મુનીમને લખવું. તારંગાજી પર ધર્મશાળાની ૩૨ ઓરડી અને નવા બંગલા પૈકી ૧૫ ઓરડી

જીર્ણ હાલતમાંછે તે સુધારવાની તથા નવી ધર્મશાળા બાંધવાની જરૂર છે. આ તીર્થનો વહીવટ સારો ચાલે છે, જે માટે એની મેનેજીંગ કમીટીને ધન્યવાદ ઘટે છે

તારંગાજીથી, તા. ૧૦મી એ નીકળી મેસાણા અને અમદાવાદ થઈ તા ૧૧ મી એ બપોરે સુખશાંતથી અમો મુંબાઈ આવી પહોંચ્યા.

નવલચંદ હીરાચંદ ઝવેરી, મુંબઈ.

નોટ–પોતાના વડીલ ભાઈ માણેકચંદજીની માફક હવે શેઠ નવલચંદજી પણ આપણાં જાહેર કાર્યોમાં ભાગ લેતા થયા છે, જે જાણી અમારા વાંચકોને આત્યાનંદ થશે અને એજ મુજબ શેઠ નવલચંદજી પોતાની ભવિષ્યની જીંદગી પોતાના વડીલ બંધુની માફક હવે સમાજસેવાના કાર્યમાં ઉત્તરોત્તર વૃદ્ધિ રૂપે ગુજારશેજ એવી આશા રહે છે. આ શેઠના ભાણેજ સ્વર્ગવાસી શેઠ ચુનીલાલ ઝવેરચંદના વિધવા જડાવબાઈ પણ ધર્મશ્રદ્ધાળુ હોવાથી વારંવાર ધર્મકાર્યોમા ભાગ લઈ રહ્યા છે અને દાન પુણ્ય પણ યથાશક્તિ કર્યાજ કરેછે જે જણાવતા અમને આનંદ થાય છે. સંપાદક.

महावीरजीके मेलेका दृश्य।

गत चैत्र शुक्ला ११ से वैशाख कृष्णा १ तक सदाकी भांति इस वर्ष भी जयपुर राज्यान्तरगत चांदणगांवमें आतिशय क्षेत्र श्री महावीरजीका मेला हुआ। अनुमानसे एक लक्षसे अधिक जन संख्या थी! जो प्रति वर्ष दिन दूनी और रात चौगनी बढ़ रही है। यों तो चारों ओरके भाई इस मेलेमें आते हैं किंतु जयपुर, देहली और आगराके बहुत यात्री आते हैं। इस क्षेत्रका हाल 'जैनमित्र' वर्ष १६ के अंक ३ में 'तीर्थयात्रा–श्री महावीरजी' शीर्षक लेख द्वारा समाजको मालूम होगया है।

महावीरस्वामीकी प्रतिमा कैसी मनोग्य और सौम्य है इसका ज्ञान दर्शकको ही हो सकता है। किंतु खेद इस बातका है कि इस मेलेमें यात्रियोंको पूजन तो क्या दर्शन भी कठिनतासे मिलते हैं। जो पूजनके अधिक प्रेमी होते है वे शास्त्रके विरुद्ध रातके २ या ३ बजेसे प्रक्षाल आदि प्रारम्भ करते हैं। शेप दिनमें बहुधा यात्री (पुरुष व स्त्री) या तो गंजफा आदिमें समय बिताते हैं या मेनाओंके भद्दे गीत सुनते हैं और उनका नाच देखते हैं तथा इधर उधर घूमते हैं। इसके कहनेमें कोई अत्युक्ति न होगी कि यहां यात्री लोक आते तो पुण्योपार्जन करनेके लिए हैं किंतु उनमें अधिकतर पापोपार्जन ही करते हैं।

भाग्योदयसे इस वर्ष में भी इस पुण्य

भूमि पर मेलेके समय पहुंचा । इस मेलेका कुछेक चित्र मैं आपके सम्मुख रखता हूं जिससे आप अपनी समाजकी अज्ञानता और क्षेत्रके प्रबंधका कुछ २ हाल जानेंगे। मुझे खेद है कि गत वर्ष भी 'दिगंबर जैन' में इसी मेलेके प्रबंधके विषय पर बाबू मदनलाल जैन आगरान समाजको चेताया था किंतु देखनेसे मालूम हुआ कि उस लेखमें समाजने कुछ भी लाभ न लिया और प्रबंध वैसा का वैसा ही रहा ।

मैं त्रयोदशीके दिन इस पवित्र क्षेत्र पर पहुंचा । मंदिरके चारों ओरकी बड़ी भारी धर्मशाला यात्रियोंसे घिरी हुई पाई । कुछ डेरे भी लगे देख मैं भी प्रबंधक (भट्टारक)) के पास एक डेरेके लिए गया । मेरे सामने एक और भाईने भट्टारकसे डेरा मांगा, उन्होंने बुरी तरहसे यह जवाब दिया, " क्या तुमने मेरे पास डेरा भेज दिया था ' जो मेरे पास थे सो दे दिए ! . . " मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य होता है कि भट्टारकजीके कहनेके बाद कई डेरे लगे, न मालूम वे कहांसे आए । पीछे आनेवाले हमारे यात्रियोंको पासके वृक्षोंके नीचे ही आश्रय हुए । इस गाज धूप, मेह और आंधीसे जो जो दुःख लोगोंको उठाना पड़ा वह कहते नहीं बन पड़ता ।

दुकानें—खान पान आदिकी वस्तुएं मिलनेके लिए धर्मशालाके हातेके बाहर चौकमें रेतमें दुकानें लगी थीं । अत्यंत आसमानसे धूल उड़नेके कारण सब चीजें खराब हो जाती थीं और वही धूलमिश्रित सामिग्री यात्रियोंको खानी पड़ती थी । इतना ही नहीं यहाँ हरकोई हर तरहकी दुकान लगा सकता है, किसीको कुछ रोक टोक नहीं है । मैंने देखा कि कई यवन (मुसलमान) तमोलियोंकी दुकानोंपर हमारे भाई मजेसे पान खा रहे थे । यहां तक सुना है कि मद्य जैसी अपवित्र वस्तुकी भी दुकान यहाँ लगी थी । जिसका कुछ लोगोंने बहुत विरोध किया था । प्यारे भाइयो ! प्रबंधकके प्रबंधका ज्ञान इससे करिए ।

प्याऊ—इतने बड़े मेलेमें धर्मशालाके हातेके भीतर एक भी प्याऊ नहीं थी । पानीकी यह दशा देखकर ला० उम्मेदीलालजी आदिने ७५) का चंदा करके स्वयं ही प्याऊ बैठाई थी ।

वात्सल्य—प्रेम या वात्सल्य तो जैन समाजमें छू तक भी नहीं गया है। प्रतिदिन ठहरनेके ऊपर भारी झगड़े होते थे । सुना है कि एक दिन पुलिसमेनने किसी यात्रीको एक लात मारी वह भट्टारकजीके पास गया किंतु उन्होंने ' मेलेमें क्यों आते हो तुम्हें किसने बुलाया आदि ' शब्दोंसे ही उस दुःखी यात्रीका सत्कार किया !

मैना, गूजर—इन नामकी दो जातियां हैं। ये महावीरस्वामीको अपना इष्ट देव मानते हैं और इनके मनमें स्वामीकी बड़ी श्रद्धा है । मैना नामकी जातिके स्त्री पुरुष बालक सब इस मेलेमें चतुर्दशीसे आते हैं और पड़िवा तक इनकी खूब धूम रहती

है। ये असभ्य जन मंदिरजीमें गंड गीत गाते हुए और ' महावीरके लिंगकी जय' बोलते हुए जैसेके तैसे घुस जाते हैं। प्रत्येकके हाथमें कोई न कोई हथियार या लठ और कुछ नहीं तो पेड़ोंकी डालियां रहती हैं। ये लोग इतने अंधे होकर दौड़ते हैं कि सामनेवालेको भागना पडता है। जैसी अशिक्षित जाति यह है और जैसी स्वामीकी श्रद्धा इनमें हैं वैसी और किसीमें न होगी। यदि प्रयत्न किया जाय तो शिक्षा द्वारा इस जातिके लक्षों जन सच्चे जैन हो सक्ते हैं।

अविनय-इस मेलेमें अविनयका तो कुछ कहना ही नहीं है। उक्त असभ्य जातियाँ तो मंदिरजीमें जुते पहिने घुसती ही हैं किंतु मांसाहारी यवनादिक भी बेरोकटोक जुते पहिने प्रतिमाकी ओर पैर करके मंदिरजीमें खूब मौज उडाते हैं। अपने भाई स्त्री पुरुष भी विनयको त्याग कर निर्लज्ज व्यवहार करते हैं। हमें शोक है कि छापेके विरोधी महा विनयी जैनी भी ऐसी वातें स्वयं देखकर कुछ नहीं चेतते।

उपदेश—हमारे विद्वान उपदेशकोंने (पंडित, बाबू और त्यागी) जाने क्या समझ रखा है कि उनमेंसे एक भी मेलेमें नहीं आते। जिनका यह सिद्धांत है कि संसारमें असंभव तो कुछ है ही नहीं और इस शब्दको कोषसे निकाल देना चाहिए वे सज्जन भी इस ओर लक्ष्य नहीं करते। खेद है कि मेलेमे शास्त्रसभा तक नहीं होती। इस वर्ष कुछ उत्साही युवकोंका इस मेलेमे समागम हुआ था, जिनमें मुख्यकर यह थे—महासभाके ऑ०उपदेशक मुंशी लट्टूरमलजी, 'जैन मार्चेंड' के संपादक लाला मिश्रीलालजी सोगानी, आगरेके बा० मंगीलालजी, कोसीकी सभाके मंत्री ला० रतनलालजी, गुनाके श्रीमान् पं० मूलचंद्रजी, जिनधर्मसंरक्षिणी सभा आगराके मंत्री ला० हज़ारीलालजी, प्रेमी हज़ारीलालजी, ला० उम्मेदीलालजी आदि। आदिके ४, ५ महाशयोंने मेलेमें सभा करनेके बड़े प्रयत्न किए और कईवार भट्टारकजीसे भी मिले किंतु उनका उत्तर यही मिला, "मैं सभाके लिए बिस्तर आदि किसी तरहका प्रबंध नहीं कर सक्ता हूं और न मेरी सभा करनेकी सम्मति ही है!" बड़ी मुश्किलसे ता: ४ व ६ को रात्रिमें ला० उम्मेदीलालजीने भजन कहे। ता० ७ को जो प्रयत्न इन युवकोंने किया वह सराहनीय था। रातको इन्होंने मंदिरकी छोटी छतपर विना बिस्तरके सभा की जिसमें अनुमानसे कुल २५० मनुष्य एकत्र हुए होंगे। प्रथम ही ब्रह्मचारी सुखानंदजीका व्याख्यान हुआ। उसके बाद पं० मूलचंद्रजी और मुंशी लट्टूरमलजीका '(विद्या)पर' भाषण हुआ। ला० रतनलालजीने स्वरचित प्रभावशाली एक कविता नशोंपर पढ़ी। बा० मंगीलालजीने अभक्ष और जुआपर कहा और ला० मिश्रीलालजीने पूर्व व्याख्यानोंका समर्थन किया।

सभापर उपदेशोंका अच्छा प्रभाव पड़ा और कुछ लोगोंने त्याग भी किया। प्यारे भाईयो। इन क्षेत्रोंपर उपदेशकोंकी बड़ीभारी आवश्यकता है। विद्वान जातिहितैषी सज्जनोंको तो आना ही चाहिए किंतु महासभा और प्रांतिक सभाओंको तो अपने२ उपदेशक अवश्य ही इस मेलेके वक्त भेजने चाहिये।

रथयात्रा और झगडे—वैशाख वदी १ ताः ९ अप्रैलको रथयात्रा हुई। आज भीड़की शुमार नहीं थी। ऐसे वैसे आदमीकी हिम्मत तो इस भग्गड़में निकलनेकी भी नहीं होती। रथपर नाज़िम साहब बैठकर चलाते हैं। रथ चलनेके पहिले भट्टारकजी आज्ञासे महावीरस्वामीके गलेमें फूल माला पहनाई गई और बालोंके चंवर स्वामीके आगे कई भाई झेलने लगे। दिगम्बर आम्नायके सर्वथा विरुद्ध यह बात थी अतएव झगड़ा शुरु हुआ और लोग बहुत बिगड़े। नाज़िम साहिबके आनेपर फैसला हुआ और दोनों वस्तुएं उतरवा दी गई। फिर लोगोंने कहा कि रथके आगे भट्टारककी पालकी नहीं जासक्ती। हम नहीं जानते कि भट्टारकने क्या सोचकर रथके साथ आना अच्छा न समझा और नाराज हो कर मंदिरजीमें चले गए। जब रथ नदी पर पहुंच गया तो भट्टारककी पूछ हुई। बड़ी कठिनतासे खुशामदके साथ आप आए। आपके आते ही फिर माला पहना दी गई। हम नाज़िम साहिबको धन्यवाद देते हैं कि जिन्होंने फिर माला उतरवा दी नहीं तो लड़ाई अवश्य होती। देहलीके भाईयोंने इस स्वत्वकी रक्षाके लिए सबसे अधिक प्रयत्न किया जिसके लिए वे अधिक धन्यवादके पात्र हैं। इतने पर ही इन सांप्रदायिक झगड़ोंका अंत नहीं हुआ किंतु ताः १० को मैंने स्वयं देखा कि दिगंबरियोंको उभाड़नेके लिए कुछ भाई भट्टारककी आज्ञासे महावीरस्वामीका चांदीके वरक आदिसे शृंगार कर रहे थे। सुना है कि कुछ लोगोंसे भट्टारकने कहा है कि मेरे पास कई श्वे० धनाढ्योंके पत्र आए हैं जिनमें उन्होंने मुझे आदेश किया है कि तुम दिगंबरियोंसे मुकदम्मा लड़ो हम पूरा२ खर्च देंगे। हम नहीं जानते कि भट्टारकजी जो एक त्यागी होते हैं उन्हें इन बातोंसे क्या मतलब और क्यों वह दो भाईयोंको परस्परमें लड़ाना चाहते हैं।

प्रार्थना—भट्टारकजी! आपका कर्तव्य है कि यदि कोई लड़ता भी हो तो उसे शांत करें और जिस पवित्र आम्नायके अनुसार आपके पूर्व पवित्र भट्टारक अब तक कार्य करते रहे उसी तरह आप भी उनके अनुगामी बनें। फिर हम अपने भाईयोंसे प्रार्थना करते हैं कि वे अब जाग्रत होकर उन्नतिके उपाय करें न कि इन आपसी झगड़ोंको बढ़ाकर समाजके लक्ष्यों रुपयोंपर पानी फेरें।

पश्चात् तीर्थक्षेत्र कमेटीको अपना मुंह इस ओर फेरना चाहिए और हजारों रुपए जो इस क्षेत्रके भंडारमें आते हैं उनका क्या होता है इसका पता लगाना चाहिए। और हर तरहका ठीक२ प्रबंध करना चाहिए।

अपे समाज ! तू ध्यान रख कि यदि इस क्षेत्रका प्रबंध ठीक न हुआ तो आगामी इस वर्षसे भी अधिक झगड़े होनेकी संभावना हैं। अपने अधिकारोंकी रक्षा करना तेरा कर्त्तव्य है अतएव तेरा धर्म है कि तू इस क्षेत्रका ठीक २ प्रबंध करे। भाईयो, चेतो और समाजके द्रव्यका दुरुपयोग मत होने दो।

अंतमें हम पाठकोंसे निवेदन करते है कि वे इस लेखको पढकर रख ही न दें इस मेलेकी जो २ त्रुटियां ऊपर

अविनय-इन्हें दूर करनेका प्रयत्न करें। कुछ कहना ही नहीं गई वे सत्य हृदयरो जातियाँ तो मंदिरजीमें भी यदि कोई शब्द ही हैं किंतु मांसाहारी यवन मुझे क्षमा करें। रोकटोक जुते पहिने प्रतिमाकी स्त्री- करके मंदिरजीमें खूब मौज उडाते अपने भाई स्त्री पुरुष भी विनयको त्याग कर निर्लज्ज व्यवहार करते हैं। हमें शोक है कि छापेके विरोधी महा विनयी जैनी भी ऐसी बातें स्वयं देखकर कुछ नहीं चेतते।

उपदेश-हमारे विद्वान उपदेशकोंने (पंडित, बाबू और त्यागी) जाने क्या समझ रखा है कि उनमेंसे एक भी मेलेमें नहीं आते। जिनका यह सिद्धांत है कि संसारमें असंभव तो कुछ है ही नहीं और इस शब्दको कोषसे निकाल देना चाहिए वे गजन

निना कुल २५ ही महत्वा उनके वा गलजीक न्लालज नहीं पर और जु लीने पूर्व

कुरीति निवारण।

बुरी चालसे ऊंचे कुल भी
महा नीच हो जाते है।
बुद्धमान अकुलीन जगतमें
मान बराबर पाते है॥
बचपन ही से जो बच्चोंको
विद्या नहीं पढाते है।
तो वह बालक मूरख होकर
कुलका नाश कराते है॥
बालकपनमें शादी करना
बच्चोंको दुखदाई है।
फिर क्यों जान बुझकर तुमने
अपनी बुद्धि गमाई है॥
बचपनमें है ब्याहका करना
बीज नाशका बोते हैं।
पढ़ना लिखना सभी छुड़ाकर
गहरी धार डुबोते हैं॥
दुर्लभ हो संतान इसीसे
प्रेमप्रीति सब खोते है।
फिर पीछे पछताकर अपनी
बुरी दशा पर रोते है॥
काजमें अंधे होकर
मूरखता दिखलाते है।
व अवगुणकी मूल द्वारपर
वेश्याको नचवाते है॥
उनके प्यारे मित्र हमारे
बुरी कुरीतें दूर करो।
सेवक रामशरण कहते है
निश्चय पर उपकार करो॥

रामशरण जैन, फिरोजाबाद।

दिगंबर-जैनके इसी अंकका क्रोड पत्र।

जैनसमाजमें बिल्कुल नई बात।

जैनसंसार सचित्र मासिकपत्र।

जैनसमाजमें आजतक एक भी ऐसा पत्र नहीं था जो मनोविनोदके साथ ऐसी ऐसी बातें बताता जिनसे लोगोंके हृदयोंमें खलबली पैदा हो जाती और वे एकदम अपनी बुराइयोंको निकालनेके लिए तत्पर हो जाते। दुनियाका काम न सिर्फ गंभीर विचारोंसे चलता है, न सिर्फ शृंगार रसकी बातोंसे चलता है, न सिर्फ आध्यात्मिक बातोंसे चलता है और न सिर्फ शारीरिक व व्यापारिक बातोंके करते रहनेसे ही चलता है, बल्के सबही की बराबर मात्राओंसे चलता है। 'जैनसंसार' में ये सब बातें रहती हैं। जैनसंसारमें रसीली कहानियाँ पढ़िए, चमकीले भड़कीले विनोदी चित्र देखिए, दिल्लगीके प्रहसन पढ़िए, ऐतिहासिक बातें पढ़कर देशी और विदेशी वीर, कवि और महात्मा पुरुषोंका हाल जानिए और शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक लेखोंको देखकर शरीर, मन और आत्मासे वाकफियत हासिल कीजिए।

इसमें सामाजिक आलोचनाएँ इतनी मजेदार होती हैं, कि उनको बार बार पढ़ते ही रहना अच्छा लगता है। किसी जाति या समाज विशेषका इसमें पक्ष नहीं होता, जैनसमाजके चारों फिरकोंके लिए यह पत्र समान उपयोगी है।

इसकी उत्तमताके विषयमें तमाम पत्र एक स्वरसे प्रशंसा करते हैं। उदाहरणके लिए इतना बता देवें कि प्रसिद्ध पत्र जैनहितेच्छुने भी इसमेंसे एक प्रहसन उद्धृत किया है

इतना होने पर भी वर्षभरमें इसकी कीमत डाक महसूल सहित १॥≈ एक रुपया दश आना मात्र जो जैनसंसारके चित्रोंके लिए भी काफी नहीं है।

इस पर भी तुर्रा यह है, कि वर्षभरमें तीन चार अच्छी २ किताबें इनाममें दी जावेंगी।

जैनसमाजमें विद्या पढ़नेका शोक बढ़ानेके शुभ आशयसे संयुक्त जैन श्वेतांबर बराड प्रान्तिक सभाने इसका सब घाटा जो वर्षभरमें लगभग डेढ हजारके होगा अपने सिर लिया है, और ऐसे उत्तम पत्रको पाठकोंके सुभ्यमें घरघर पहुँचानेका निश्चय किया है।

प्रत्येकको इसके ग्राहक बनकर लाभ उठाना चाहिए और सभाके संचालकोंको उत्साहित करना चाहिए।

गरीबोंको, स्त्रियोंको और विद्यार्थियोंको यह पत्र आधे मूल्यमें दिया जाता है। सेठ साहूकारोंसे उनके सम्मानार्थ ५) रुपये लिए जाते हैं जो उदार सज्जन संसारकी सहायताके लिए ५०) रुपये देते हैं, संसारमें उनका फोटो और चरित्र भी प्रकाशित किया जाता है। नये अंकमें चार चित्र दिये गये हैं। तीन आनेका टिकिट भेजकर नमूना मँगाइए। और दिलजमई-मनस्तुष्टि-कीजिए।

मनिआर्डर भेजने और अन्य सब तरहके पत्रव्यवहारका पता—

मैनेजर-जैनसंसार, जुबिलीबाग, तारदेव-बम्बई।

ताजाखबरें।

१—जर्मनीने अबतक ४५ अरब रुपये युद्धमें खर्च किये हैं। २—इन्दोर निवासी सेठ हुकमचन्दजीने नब्बेहजार रुपयेकी वार लोन खरीदी है। ३—सेनफ्रांसिसको (अमेरिका) की एक कोर्टने बालककी आँखोंकी कीमत ७५०००) रुपये निश्चय की है।

|| श्रीवीतरागाय नमः ||

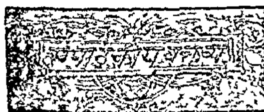
शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग तरफथी प्रगट थतुं मासिक

दिगंबर जैन.

THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिर्विविधैश्च तत्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभि. ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्ततां, दैगम्बर जैन समाज-मानम् ॥

वर्ष १० वाँ.	वीर संवत् २४४३. ज्येष्ठ. विक्रम सं० १९७३.	अंक ८ वाँ.



इन्दौरमें अपूर्व प्रसंग।

हमारे पाठकोंको विदित है कि कई दिनोंसे चारों ओरसे सूचना हो रही है कि स्वर्गीय स्याद्वादवारिधि वादिगजकेशरी न्यायवाचस्पति पंडित गोपालदासजीका नाम स्मरण रखनेके लिये और पंडितजी द्वारा संस्थापित श्री जैन सिद्धांत विद्यालय मुरैनाको चीर स्थायी बनानेके लिये शीघ्र ही प्रबंध होना चाहिये। परंतु अभीतक इसके बारेमें कुछ खास कोशिश नहीं की गई थी परंतु हर्ष है कि "जैन मित्र" "दिगम्बर जैन" आदि पत्रोंके आन्दोलनसे मुरैना विद्यालयकी प्रबंधकारिणी कमेटी तथा पंडितजीके अनन्य मित्र पं. धनालालजी जाग्रत हुए हैं और आगामी **आषाढ़ सुदी ५-६** ता. २४-२५ जूनको इन्दौरमें विद्यालयकी कमेटीका खास **अधिवेशन** होनेवाला है जिसमें पधारनेके लिये सर्व श्रीमान् और विद्वान् आमन्त्रित किये गये हैं। विद्यालयकी कमेटीका अधिवेशन इन्दौर जैसे सुप्रसिद्ध नगरमें श्रीमान् दानवीर रायबहादुर **सेठ हुकमचन्दजी**, दानवीर रा० बा० सेठ **कल्याणमलजी**, रा० ब० शेठ **कस्तूरचंदजी** आदि महानुभावोंके समीप बहुत ही आशाजनक होगा और विद्यालय तथा पंडितजीका नाम चिरस्थायी करनेके लिये सर्व उपस्थित मंडली खास प्रबंध करेगी ऐसी हमें पूर्ण आशा है। पंडितजीका नाम स्मरण रखनेके लिये जो चंदा होवे उसको बढ़ानेके लिये एक डेप्युटेशन निकालनेका भी इसी मीटिंगमें निश्चय होनेकी आवश्यकता है तब ही पूर्ण सफलता प्राप्त हो सकेगी। जैसे स्वर्गीय दानवीर जैनकुलभूषण सेठ **माणिकचंदजी** धनी होनेसे अपने हाथसे ही अपना नाम चिरस्थायी कर गये हैं उसी प्रकार **स्वर्गीय पं० गोपालदासजी बरैया** विद्यादानसे खूब ही दान कर गये हैं परन्तु अपना नाम चिरस्थायी

रखनेके लिये कुछ द्रव्य नहीं निकाल गये हैं। परन्तु जो कुछ रख गये हैं वह उनका विद्यालय ही है अतः उसके लिये बड़ाभारी फंड एकत्र करके इस विद्यालयके साथ पंडितजीका नाम जोड़कर इसको स्थायी करनेसे पंडितजीका नाम चिरस्थायी हो सकेगा और विद्यालयकी नीव भी दृढ हो जायगी । आशा है कि इस कार्यके लिये पं. धन्नालालजी जी जानसे कोशिश करेंगे।

સંયુક્ત જૈન બોર્ડિંગ. ગતાંકમાં જણાવવા મુજબ મુંબાઈમાં તથા અમદાવાદમાં એમ બે જુદા જુદા સ્થળે જૈન બોર્ડિંગ શ્રીયુત વાડીલાલ મોતીલાલ શાહ તરફથી સ્થાપવામાં આવનાર છે, જે માટે માંગણી કરતા વધુ અરજી આવવાથી મુંબઈની ૩૭ અને અદાવાદની ૪૨ અરજીઓ પાસ થઇ છે. અમદાવાદમાં મકાન પાછળ આશરે ૨૨૦૦૦) ખર્ચાયા છે તેમ મુંબાઇમાં વિશાળ મકાન પીન્સેસસ્ટ્રીટ પર ભાડે રખાયું છે. આ બોર્ડિંગમાં ત્રણે ફિરકાના વિદ્યાર્થીઓને તેમની માન્યતા મુજબ જુદું જુદું ધર્મ શિક્ષણ અપાશે, જેમાં દિગંબરી તરફથી શ્રીયુત બાબૂ જુગલકિશોર મુખત્યારને ઓનરરી તરીકે નીમવામાં આવ્યા છે. ગરીબ વિદ્યાર્થીઓને લોનની પદ્ધતિ ઉપર સ્કોલરશીપ આપવામાં આવનાર છે, તેમાંની લગભગ ૨૫ સ્કોલરશીપ તો મી. વાડીલાલ પોતે આપનાર છે અને વધુ સ્કોલરશીપ માટે આખી જૈન કોમને અપીલ કરવામાં આવી છે. આ સ્કોલરશીપ ૮ વર્ષ માટે ૪૦) થી ૫) સુધીની આપી શકાય છે અને એ પછી એવી યોજના સ્થાઈ છે કે જેથી ભવિષ્યમાં મદદની જરૂર પડશે નહિ અને દાતારોનાં નામ અમર રહશે આ બોર્ડિંગોનું મુહૂર્ત તા. ૨૦મી જુને થનાર છે જે થયેથી વિશેષ હકીકત અજવાળામાં આવશે, પણ આ સંયુક્ત જૈન બોર્ડિંગ સંબંધી વધુ બાતમી મેળવનારે શ્રીયુત વાડીલાલ મોતીલાલ શાહ નાગદેવી સ્ટ્રીટ-મુંબાઇને લખવાથી ઉદ્દેશ અને નિયમો મફત પુરા પાડવામાં આવે છે.

અમારા વાંચકો સારી રીતે જાણે છે કે

ગુજરાતમાં ભટ્ટારક દીના અને સુરતની ગાદીના તરફ કંટાળો. ગુજરાતમાં ઇડરની ગાદીના ભટ્ટારક જાણીતા છે, જેમાં ઇડરની ગાદીના સ્વર્ગીય ભટ્ટારક શ્રી કનકકીર્તિજી પછી ઘણાં વર્ષો સુધી એ ગાદી ખાલી રહેવા પછી લગભગ ત્રણચાર વર્ષ થયાં બ્રહ્મચારી મોતીલાલજીને ઇડર તથા ડુંગરપુરના ભાઇઓએ એ ગાદીને માનનારી સર્વે પંચોની સંમતિ વિના બેસાડી દીધેલા છે અને તેમનું નામ વિજયકીર્તિ અપાયલું છે તે પણ જાણીતુંજ છે. આ વિજયકીર્તિ ભટ્ટારકે બેસતાં પહેલાં ઇડરની પંચને એક પ્રતિજ્ઞાપત્ર લખી આપ્યું હતું તે પ્રમાણે તેઓ ચાલશે કે કેમ તે પ્રથમથીજ સર્વેને શંકા હતી તે ખરી પડેલી જણાય છે અને એમને બેસાડનારા ખુદ ઇડરના ભાઇઓજ હવે તેમની વિરૂદ્ધ થયા છે પણ કોઈ આગળ પડતું નથી એ અજબ જેવું છે! આ ભટ્ટારકજી હાલ રાયદેશમાં બાલેખમાં નિવાસ કરી રહેલા છે. સાથે ૩-૪ ઘોડા તથા ૧૫-૨૦ નોકરો રહે છે! ગ્રહસ્થ કરતાં પણ સારો રાજ્યવૈભવ ભોગવાય છે! રાયદેશના ભોળા શ્રાવકો પાસે રગીને ભાવનાઓ તથા તે સાથે ભાવનાની દક્ષિણાઓ લેવાય છે જેથી રાયદેશવાળા પણ કંટાળી ગયા છે, છતાં પણ મુંગે મોંઢે સહન કરી રહ્યાછે એ અજબ જેવું છે! ઇડરની પંચની શું ફરજ નથી કે જો તેઓ પ્રતિજ્ઞાપત્ર પ્રમાણે ન ચાલે તો તેમાં દર્શાવેલી કલમનો ઉપયોગ કરવો જોઇએ. આ બાબત વિશેષ ખુલાશો પ્રકટ કરવાને અમો ઇડરની પંચને નમ્ર સૂચના કરીએ છીએ.

સુરતની ગાદીના ભટ્ટારક સુરેંદ્રકીર્તિજી વિરૂદ્ધ કંઇ વિશેષ કહેવાનું નથી કેમકે જો કે તેઓ સર્વસમ્મતિથી બેઠેલા નથી તોપણ તેમનો વૈભવ કંઇ વિજયકીર્તિ જેટલો નથી. હાલનો સમય અંધશ્રદ્ધાનો નથી પણ હવે તો સર્વ પરીક્ષાપ્રધાની થવા લાગ્યા છે, માટે આ ભટ્ટારકજી જેમ બને તેમ પરિગ્રહ ઓછો કરી પોતાનો સમય ઉપદેશ આપવામાં અને ધર્મસેવામાં વ્યતીત કરશે તો લોકપ્રિય થવા સંભવ છે. ભટ્ટારક શબ્દની વ્યાખ્યા શું અને ભટ્ટારક કોણ કહેવાય તેટલોજ વિચાર ભટ્ટારકજી કરશે અને તે પ્રમાણે ચાલશે તોજ બસ છે.

હવે એક ત્રીજા ભટ્ટારકથી અમારા બધા વાચકો જાણીતા નહી હશે કેમકે એમનું નામ તો બહાર મેં પડેલા જેવું હતું, પણ એમના સંબંધમાં બે મોટા અર્થાતો અમને મળવાથીજ અમે તે બાબત થોડું લિખીન કરવાની ફરજ પડે છે. કરમસદની ગાદી પર બેઠેલા રત્નકીર્તિ નામે ભટ્ટારક (અસલ નામ છગનલાલ અને અજૈન) કેવા સંજોગો વચ્ચે કેવી રીતે બેઠેલા તેની અમને ખબર નથી, પણ એટલું તો જણાય છે કે તેઓ ઘણા વર્ષોથી મુંબઇના કામીતીપુરામાં ઘરબાર કરી રહેલા છે ! અને કરમસદ તરફ જતાજ નહોતા તથા ગાદીથીનો વૈભવ ભોગવતા હતા. જેઓ હાલમાં કરમસદ જવા માગતા હતા પણ ત્યાના ભાઇઓના કહેવાથી કાણીસા (ખંભાત) પહોંચેલા છે ને ચાતુર્માસ કરનાર છે એમ જણાવવામાં આવ્યું છે, જેથી બે મેવાડા ભાઇઓ સૌ મેવાડા બંધુઓને તથા ખાસ કરી કાણીસાની પંચને જાગૃત થવા સૂચના કરે છે કે જો કંઇ કામ કરો તો સંભાળીને કરશો. પેટુ ભોગવાતું મેવાડા યુવક મંડળ આ પ્રસંગે કંઇ પહેલું ખાના કે ?

माधुर्यलता (नवीन उपन्यास)

मूल्य चार आना।

मेनेजर, दि० जैन पुस्तकालय–सूरत।



इन्दौरमें ता. २४–२५ आपाढ शुक्ल ५–६को मुरैना जैनसिद्धान्त विद्यालयकी कमेटीका अधिवेशन होगा जिसमें स्वर्गीय प. गोपालदासजीका नाम स्थायी रखनेके लिये खास कार्रवाई की जायगी।

श्री महावीरजी तीर्थके मेलेमें अव्यवस्था दर्शक लेख गतांकमें प्रकट हुआ है जिसके बारेमें भट्टारक श्री १०८ महेन्द्रकीर्तिजी एक खास सूचना छपाकर प्रकट करते हैं कि वास्तवमें इसमें मेरा कुछ भी दोष नहीं है। यह तो मेरे अलग किये हुये एक चेलेकी सब चालबाजी है। उसीने सब अनर्थ करवाया था आदि। भट्टारकजीको उचित है कि आगामी मेले पर तीर्थका सब हिसाब प्रकट करें और जैनियोंकी सहायता प्रयत्नसे लेकर मेलेका सब ठीक २ प्रबंध करें जिससे कि किसीको टीका टिप्पणी करनेका मौका ही न मिले।

अजमेरसे भागचन्द सहजन्या लिखते हैं कि यहां सर्व जातियोंके महाविद्यालय मौजूद हैं परंतु खेद है कि इस नगरमें जैनियोंके कई धनवान् भाग्यवान् मौजूद हैं तो भी एक भी बोर्डिंग या महाविद्यालय नहीं है। क्या हमारे अजमेरके धनाढ्य भाई इस विद्यादानकी तरफ ध्यान नहीं देंगे?

वडनगरके शुद्ध औषधालयसे सुचना मिली है कि मांगें अधिक आनेसे क्रमवार औषधियें भेजी जाती हैं और प्लेग तथा हैजाकी-औषधियाँ चिट्ठी व तार आते ही भेजी जायँगी।

केशलोंच-मुनि श्री चंद्रसागरजीने आषाढ वदी १२को तलवाडा (वांसवाडा)में और ऐलक पन्नालालजी महाराजने आषाढ वदी २ को जयपुरमें केशलोंच किया था।

न्यायतीर्थ हुए—पं० वंशीधर (मुरैना), पं० जीवंधर तथा पं० उमरावसिंह (काशी) अबकी बार **न्यायतीर्थकी** परीक्षामें उत्तीर्ण हुए हैं।

धरणगांवमें अभी पंच कल्याणक प्रतिष्ठा उत्सव शेठ चुन्नीलाल अंबुशा गांधीकी तरफसे हुआ था जिसमें दो स्त्रीसभा होकर श्रीमती मगनबाई, ललिताबाई, प्रभावतीबाई आदिके कई व्याख्यान हुए और २००) श्राविकाश्रम बम्बईको सहायता मिली तथा तीन श्राविकाएँ आश्रममें भरती हुईं।

मोहोल-(सोलापुर) में शा० मोतीचंद मवानचंदकी ५००१) की सहायतासे औषधालय खुल गया है।

सेठ नाथारंगजीके पौत्र सूरचंदभाईने अपनी पत्नीके पुण्यार्थ १९०) अनेक संस्थाओंको दानमें भेजे हैं।

नई देहलीमें—कन्या विद्यालय पहाड़ी धीरज देहलीके मकानका महूर्तोत्सव जैनधर्मभूषण ब्र० शीतलप्रसादजीके प्रमुखत्वमें गत ता० २ को हुआ था। इस मौके पर ब्रह्मचारीजीका स्त्रीशिक्षापर बहुत ही प्रभावशाली व्याख्यान हुआ और करीब ४०००) की सहायता मिली। श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रमके लिये आपके प्रयाससे देहलीमेंसे २६ दिनके आहारदानके रु. ६५०) प्राप्त हुए। (एक दिनका आहारदान २९) रु. में होता है।)

राय साहब हुए—देहलीके लाला प्यारेलालजी वकील अबकी वार राय साहब हुए हैं।

महाधवल-ग्रन्थको पुरानी कनड़ीसे बालबोधमें देवराज सेठी मूलबिद्रिमें नकल कर रहे हैं।

शोक—देहलीके रा० सा० लाला ईश्वरीप्रसादजीप्रसादजी और लाहौरके लाला मुंशीलालजी एम० ए० के वियोगसे दि० जैन समाजमें एक श्रीमान् और एक विद्वान् की कमी हो गई है।

सिहोरारोड (जबलपुर)में लाला किशोरीलालजीका देहान्त हुआ है। आप अंतसमय अपने हाथसे २००००) गमरथ करानेके लिये लिख गये है। क्या ही अच्छा हो यदि इस २००००)की व्यवस्था करनेवाले इसका उपयोग वहां ही विद्यादानमें करें!

सिवहारा—(बिजनौर)में ता० २१ जूनको जैनकुमार सभाका वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधामसे होगा।

પ્રથમ પ્રેજ્યુએટ-આજ ગેત્રું છે કે ગુજરાતના વીસાહુમડ ભાઇઓમાં એક પણ ગ્રેજ્યુએટ નહોતો, પણ હાલ મુંબાઇનિવાસી ભાઇ રતનચંદ ચુનીલાલ જરીવાલા (ભગાભ ભાઇનો)

બી. એ. ની પરીક્ષામાં પાસ થયા છે જે માટે એ પ્રથમ ગ્રેજ્યુએટને અભિનંદન આપી આથી પણ વધુ અભ્યાસ લખાવવા આગ્રહ કરીએ છીએ.

સુરતનો એક ચર્ચાપત્રી લખે છે કે અત્રે ચાસંદ્રપરાના દહેરાનો વહીવટ હાલ મુંબઈવાલા શેઠ હાલાભાઈ પ્રેમચંદ કરે છે જેમાં પૈસા ખર્ચવા જતાં પૂજન પ્રક્ષાલ બરાબર થતાંજ નથી. વળી કુસંપ હોવાથી સુરતવાળા તો કંઈ દેખરેખ જોતાજ નથી। તો શેઠ હાલાભાઈની ફરજ છે કે સુરત આવી તકરાર હોય તેનો નિવેડો લાવવો જોઈએ વગેરે.

બાવલાવાડા (જવાસ) માં સુરતવાળા શેઠ તલકચંદ જેસાભાઈ તાસવાળા તરફથી એક વર્ષ થયાં પાઠશાળા ચાલે છે જેનો ૪૩ છો કરાં છોકરીઓ લાભ લે છે. અત્રે કંઈ પણ શિક્ષણ લેવાની સમજ નહોતી, જે આથી પુરી પડી છે. હાલમાં એની પરીક્ષા લેવાઈ હતી. પરિણામ સંતોષપ્રદ છે. વળી હાલમા છોકરીઓને ઓરણીઓ તથા છોકરાઓને પુસ્તકો ઇનામ તરીકે વેંચાયા હતા.

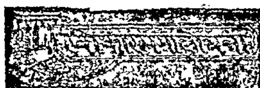
મેવાડા યુવક મંડળની પ્રથમ બેઠક સોજીત્રામાં તા. ૧૨-૫-૧૭ ને દિને ભટ્ટારક સુરેન્દ્રકીર્તિજીના પ્રમુખપદે મળી હતી જેમા ચોકસી મનસુખલાલ બહેચરદાસ બી. એ. એલ એલ. બી. તથા ડૉ. બાદલાલે મંડળની ઉપયોગિતા પર વિવેચન કરવા પછી પ્રમુખે સંભાણથી જણાવ્યું હતું કે ઉગરતા બાળકોના સુધારવા ઉપરજ ભવિષ્યનો આધાર છે, માટે બાળકોને કેળવવા આવા મંડળને ઉત્તેજન આપો. આ બાળકો કેળવાઇ જશે તો અમારો આર ઘણા નહી રહેશે એવો સાંકડો વિચાર ન રાખો વગેરે બીજા દિવસની બેઠકમાં કેટલાક નવા મેમ્બરો થયા હતા તથા નિયમો ઘડાયા હતા. બીજી બેઠક આવતે વર્ષે ધજાગાળા પ્રસંગે મળશે.

ઉજેડિયામાં ફરી પાઠશાળા ચાલુ થઇ છે. આશરે ૪૦ વિદ્યાર્થી લાભ લે છે. પં० કનૈયાલાલ ધર્મશિક્ષણ આપે છે, જેઓ ચાતુર્માસ અત્રેજ રહેનાર છે.

ભદ્રેસરથી છબરાજ ગુલાબચંદ લખે છે અત્રે પં० પિતાંબરદાસજી ઉપદેશકના આવવાથી ઉપદેશનો યથોચિત લાભ થયો છે તથા અનેક પ્રતિજ્ઞાઓ લેવાઇ છે. આજ પ્રમાણે ગુજરાત, ઓરાણ પ્રાંતિજ વિભાગ, અને રાયદેશમાં આ ઉપદેશકજીને વારંવાર ફેરવવા જોઇએ વગેરે

માન આપ્યું-સુરતમાં દશાહુમડજ્ઞાતિમાં ગાંધી અમરતલાલ ફકીરચંદ બી. એ. ની પરીક્ષામા પસાર થવા માટે દિ.જૈન પાઠશાળાના વિદ્યાર્થીઓએ એક મેળાવડો કરી તેમને માન આપ્યુ હતું. જેમાં મી. સરૈયા તથા શા નવલચંદનું કેળવણી પર વિવેચન થઇ ચાહ પાણી કરવામા આવ્યા હતા.

મુંબઇ શ્રાવિકાશ્રમને શ્રીમતીબાઇ તથા શ્રીદેવીબાઇ મારફતે ભ્રમણ દરમ્યાન પાટનાકૂવા, ધનિયોલ, ધારીસણા અને સાણોદાથી ૧૪૧) ની મદદ મળી છે.



जैन बालबोधक द्वितीय भाग—आकार रोयल १६ पेजी, पृष्ठ संख्या १०८ मूल्य ॥)। मिलनेका पता, जैनमित्र मंडली, नं० ९ विश्वकोषलेन, बागबाजार, कलकत्ता। इस पुस्तकको पं० पन्नालालजी बाकलीवालने सर्व जैन बालकोंके हितार्थ बनाया है। कुल ६० पाठ हैं। इनमें कुछ भाग अन्य पुस्तकोंसे भी लिया गया है। भाषामें कहीं २ अशुद्धियां रह गई हैं, परन्तु वे अशुद्धियां इन पुस्तककी

उपयोगिता देखते हुये नहीं सी हैं। इस पुस्तकसे बालकोंको लौकिक ज्ञानके साथ २ धार्मिक ज्ञान भी अच्छी तरहसे आसकता है। जैन स्कूलोंके प्रबन्धकर्ताओंको चाहिये कि अपने पठनक्रममें इस पुस्तकको भी रखकर विद्यार्थियोंको सदाचारी और धर्मप्रेमी बनावें।

अहिंसा परमोधर्मः—प्रकाशक बाबू दयाचन्द्रजी गोयलीय बी. ए. लखनऊ। मूल्य -) और ५) सैकड़ा। इस पुस्तकमें महात्मा गांधीके दो प्रभावशाली अंग्रेजी लेख अहिंसा विषयपर हैं इसमें यह भली प्रकार बतलाया गया है कि अहिंसा वास्तवमें क्या है और हम सबने उसको कैसा मान रक्खा है। अहिंसा कायरताका उपदेश कभी नहीं देती है किन्तु अहिंसाके पालनेसे मनुष्यताका उपदेश मिलता है। प्रत्येक अंग्रेजी जानकारको यह पुस्तक एक बार अवश्य पढ़नी चाहिये। मुखपत्रपर महात्मा गांधीका त्यागशिक्षक चित्र भी है। छपाई कागज आदि भी उत्तम है।

अहिंसा परमोधर्मः—प्रकाशक वही उपरोक्त बाबू दयाचंदजी। यह एक ४ पेजका ट्रेक्टसा है। इसमें **महात्मा गांधी** और मिस्टर पोलकके गत जैन कान्फ्रेंस लखनऊमें दिये गये व्याख्यानोंका सार हिन्दी भाषामें है। मूल्य १) सैकड़ा।

जैन गजल गुलचमन बहार—इसमें मुनि चोथमलजी महाराज विरचित भिन्न२ विषयोंपर उपदेशी गायन हैं। प्रकाशक, भैरूलाल नौरतन बोहरा; लाखन कोटडी—अजमेर से विना मूल्य प्राप्त होती है।

जैन धर्मके विषयमें सम्मतियां—प्रथम भाग। पृष्ठ संख्या १६। यह श्री जैन-धर्म संरक्षिणी सभा अथरोहा (मुरादाबाद)का पहिला ट्रेक्ट है। इसमें श्रीयुत मास्टर बिहारीलालजी बी. ए. ने अजैन विद्वानोंकी जैनधर्मके विषयमें क्या सम्मति है? संग्रह किया है। इसमें लोकमान्य तिलक, डाक्टर सतीशचन्द्र, स्वामीराममिश्र शास्त्री इत्यादि विद्वानोंकी सम्मतियां हैं। अजैन विद्वानोंको बिना मूल्य और जैनियोंको)॥ तथा ३) सैकड़ामें मिलती है।

मांस और मद्य निषेध—इस पुस्तकका विषय नाम ही से प्रगट है। बांटनेके लिये बहुत उपयोगी है। प्रकाशक—मुनीम नंदराम मनीराम भावसार, अंजड (बड़वानी)से विना मूल्य प्राप्य।

जीव रक्षा दर्पण—आकार बड़ा, पृष्ठ संख्या ७६ मूल्य ।) इस पुस्तकको स्वर्गीय रायसाहब ईशरीप्रसाद खंजाची देहलीके सुपुत्र ला. पारसदास खजांचीने बड़े श्रमसे संग्रह किया है। इसमें हिन्दू और जैनधर्मके शास्त्र जीवदयापर क्या कहते हैं? इसका संग्रह है। हिन्दुओंके माननीय शास्त्र, वेद, गीता, महाभारत, भागवत्, मार्कण्डेयपुराण इत्यादि और जैनियोंके ज्ञानार्णव, पुरुषार्थसिद्धचुपाय इत्यादि ग्रन्थोंसे श्लोक, ऋचाएं मंत्र इत्यादि उद्धृत करके हिन्दी भाषामें यह भली प्रकार दिखाया है कि प्राणीमात्रपर दया करो तथा हम पापको सर्व शास्त्र मुक्तकण्ठसे स्वीकार करते हैं इत्यादि। प्रत्येक हिन्दूको यह पुस्तक

देना चाहिये। संग्रह कर्ता महोदयने इसका लाभ दि० जैन अनाथाश्रम दिहलीको प्रदान करदिया है।

रिपोर्ट—भारतवर्षीय जैन अनाथाश्रम तथा जैन एंग्लो वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल, देहलीकी यह सन् १९१४, १५ और १६की रिपोर्ट हैं। इसमें उक्त दोनों संस्थाओंका संक्षिप्त विवरण, हिसाब और चार महाशयोंकी अंग्रेजीमें सम्मतियाँ हैं। इसमें ६२ अनाथोंका पालन होकर उनको शिक्षा दी जाती है।

वार्षिक रिपोर्ट शुद्ध औषधालय—श्री दिगम्बर जैन मालवा प्रां. सभा बड़नगर। वीर सं. २४४१–४२ की इस रिपोर्टसे विदित होता है कि इस औषधालयकी दिनोंदिन उन्नति हो रही है। इसमें कुल १२५ प्रकारकी औषधियाँ **विना मूल्य** बांटी जाती हैं। ३२० स्थानोंमें तो इसकी शाखाएं खुल चुकी है वहांसे भी विनामूल्य औषधियां मिलती हैं। औषधालयकी सहायता करनेके लिये चार आनेसे १००) तककी खुबसूरत टिकट तैयार की गई हैं जिनको हरकोई खरीद सकता है। इसके मुखपृष्ठपर औषधिदानका फलरूपी वृक्षका चित्र भी है। हरएक व्यक्तिका फर्ज है कि इस परमोपकारक संस्थाकी हर प्रकारसे सहायता करे और आवश्यकता पड़ने पर इससे शुद्ध देशी औषधियां मंगाकर ही उपयोगमें लेवे। यह ९८ पृष्ठकी रिपोर्ट पत्र लिखनेसे मुफ्त मिलती है। पता—दि० जैन मालवा प्रांतिक सभा कार्यालय, बड़नगर।

प्रतिष्ठासारोद्धार—प्रकाशक और अनुवादक पं० मनोहरलाल शास्त्री, जैन ग्रन्थ उद्धारक कार्यालय, हौदावाड़ी–गिरगांव, बम्बई। पं० आशाधरजी विरचित इस ग्रन्थमें प्रतिष्ठाका विधान संक्षिप्त भाषानुवाद सहित भले प्रकार दिखाया गया है। इस ग्रन्थके प्रकाशित हो जानेसे अब प्रतिष्ठादिका कार्य भले प्रकार सम्पन्न हो सकेगा। इसके अभावमें प्रतिष्ठाकारक इच्छानुसार विधानादि करते थे। इस ग्रन्थके प्रगट होजानेसे जैनसंसारकी यह कमी मिट गई। अब प्रतिष्ठादिक कार्य इसी ग्रन्थानुसार होना आवश्यक है। डबल पृ० सं० १४२ मनोहर पक्की जिल्द और मूल्य २) प्रकाशकसे प्राप्य।

मेरठ जैन बोर्डिंगका रिपोर्ट—प्रकाशक बाबू रूपमदास बी ए० वकील, मंत्री। सं० २४४१–४२ के इस रिपोर्टसे विदित होता है कि बोर्डिंग और स्कूलका काम अच्छा चल रहा है। बोर्डिंगके लिये स्वतंत्र बड़े मकानकी खास आवश्यकता है।

जैन कुमार सभा आगरा प्रथम द्वि० रिपोर्ट—इस सभाने दो वर्षके अर्सेमें अच्छा कार्य्य किया है। कुल १२ सभाएं हुई थी। इसकी तरफसे पुस्तकालय और पाठशाला भी चलती है। मंत्री बाबू नौरंगीलालजी उत्साही और परिश्रमी होनेसे यह सभा भविष्यमें इससे भी बहुत कुछ उन्नत दशा पर पहुंचनेकी आशा है। आगरा प्रांतके जैनी भाइयोंका फर्ज है कि इस सभाकी हर प्रकारसे सहायता करें।

जैन मार्तंड—वर्ष १ अं. ६–७ प्रकाशक जैनबालसभा—हाथरस। वार्षिक

मूल्य १॥) इसमें स्वाध्याय, हमारी उन्नति, वर्ण व्यवस्था, आदि लेख और कविताएं पढ़ने योग्य हैं। छपाई सफाईपर विशेष ध्यान देनेकी आवश्यकता है। हर एक जैनको ग्राहक होना चाहिए।

जैन समाज—वर्ष १ अं. २ पृ. ४८ वार्षिक मूल्य उपहार सहित सिर्फ १) सम्पादक और प्रकाशक श्रीयुत टेकचन्द्र सिंघी बी. ए.। यद्यपि प्रकाशक/प्रकाशक श्वे. स्था. जैन हैं तो भी इस नवीन हिन्दी मासिकपत्रमें सर्व जैनोपयोगी लेख हैं। स्त्रियोंकी आधुनिक दुर्दशा-दर्शक लेख बहुत ही उपयोगी है। जहां तक हो हरएक लेख पूर्ण ही छपना चाहिये। सभी जैनोंको ग्राहक होने योग्य है। नमूना मुफ्त मिलता है। पता—सम्पादक, जैन समाज बम्बई नं. २।

वैष्णव धर्म पताका—गिरगांव, बम्बईसे प्रकट होता हुआ इस मासिक पत्रने थोडेही अर्सेमें खूब ही कार्य कर दिखाया है इसके सम्पादक पं० माधव शर्मा बहुत ही उत्साही हैं। हिन्दी और गुजराती दोनों भाषामें अलग २ प्रकट होता है। यह छठा अंक तो बड़े समधमसे विशेषांक रूपमें प्रकट किया गया है जिसमें गो० **देवकीनंदनजी महाराजके** अ-लग२ अवस्थाके ६ चित्रके अतिरिक्त और भी कई चित्र हैं। छपाई सफाई उत्तम और पृ. सं. ७२। वैष्णव संप्रदायवालोंके लिये यह पताका बहुत ही उपयोगी है परंतु इसकी कार्य प्रणाली तो हरएकको देखने योग्य है।

સ્રીસુખ દર્પણ (શ્રાવિકા)—ગુજરાતી ભાષાનું સ્રીયોપયોગી નવીન સચિત્ર માસિકપત્ર પુ. ૧ અંક ૧–૩ વાર્ષિક ફી ૩) પ્રકાશક-દેવચંદ દામજી શાહ **ભાવનગર.** આ સચિત્ર માસિક તદન નવી સ્ટાઇલ ઉપર પ્રકટ કરવામાં આવ્યું છે એટલેકે લગભગ દરેક લેખ સચિત્ર જ પ્રકટ થાય છે તેમ કેટલાક લેખો સ્રીઓને હાથેજ લખાય છે. એમાંના ચિત્રો સામાન્ય નહિ પણ લેખનો ભાવ દર્શાવનારા ખાસ તૈયાર કરેલાં હોયછે જે વાંચવાથી વાંચકને રસ પડવા ઉપરાંત તે લેખની સચોટ અસર થાય છે. જૈન કે અજૈન દરેક સ્રીએ આ સચિત્ર માસિકના ગ્રાહક થવું જોઇએ. પૃષ્ઠ સંખ્યાના પ્રમાણમાં લવાજમ વધુ જણાય છે પણ ખર્ચાળ ચિત્રોની ઉપયોગિતા તરફ જોતાં તે કંઇ વધારે ન કહેવાય. આ નવીન સાહસની અમો દરેક રીતે ફતેહ ઇચ્છીએ છીએ.

કચ્છી જૈનમિત્ર (સચિત્ર) વર્ષ ૧ અં-૧ વાર્ષિક ફી ૨) આ નવીન ગુજરાતી માસિક-પત્ર સર્વે કચ્છી જૈન ભાઇઓના ઉપયોગાર્થે પ્રકટ કરવામાં આવ્યું છે. છપાઇ સફાઇ ઉત્તમ તેમ લેખો પણ સમયાનુચિત ઘણાજ ઉપયોગી છે. દરેક લેખની સાથે લેખકનો ફોટો છે તથા બીજાં કેટલાંક ચિત્રો છે. તેમ મુખપૃષ્ઠ પણ આકર્ષણીય છે. દરેકે આ અંક જોવા લાયક છે.

મુમુક્ષવાર્થે કાવ્યમાલા—શ્રીયુત પુનશી અર્જુન શાહ ધુલીયા (ખાનદેશ) કૃત કાવ્યોનો સંગ્રહ. અડધાઆનાની ટીકીટ બીડવાથી એમનીજ પાસેથી મફત મળે છે.

મહાવીર જૈન પુસ્તક ભંડાર, પાંડશાળા તથા બોર્ડિંગ ધોરાજી (કાઠીયાવાડ) ના ધારા ધારણો તથા હિસાબ મળ્યો છે. શ્રીયુત વનેચંદ પોપટ દફતરીનો આ પ્રયાસ અત્યુત્તમ છે. પુસ્તક ભંડારમાં સારો સંગ્રહ થઇ રહ્યો છે.

શ્રી વૃદ્ધિચંદજી જૈન સભા (ભાવનગર) ના નિયમો તથા Holy Maxims of Lord Mahavaira નામે ટ્રેક્ટ મળી છે જે આભાર સ્વીકારીએ છીએ.

शेष शान्ति। *

मुझे उस दिनकी यह एक बात स्मरण हुई कि मुझे बड़े वेगसे ज्वर चढ़ा है, मस्तिष्कमें असह्य पीड़ा है और मेजपर जो दीपक रखा है उसकी ज्योति बहुत मन्द है, ठीक उसी समय कहींसे मुझे चूड़ियोंकी झनझन आवाज सुनाई दी, मैंने समझा कि मेरा भाई ननि शायद बाजारसे चूड़ी आदि लाया होगा, किन्तु जब जरा ध्यानसे देखा तब मालूम हुआ वह नहीं है, वह तो कोई और ही है; उस समय तक मेरा मस्तिष्क ठीक नहीं हुआ था। मैंने कहा कौन है?'

किन्तु उत्तर नहीं मिला, सिरके पास कोई धीरेसे आकर बैठ गया, मैंने फिर पूछा 'कौन है?' इस बार वह मेरे सिरके समीप आकर बोली 'मैं-वह'।

अब मुझे मालूम हुआ कि मेरी स्त्री हेमलता है, मैंने धीरेसे उसके दोनों हाथोंको खींच कर अपने माथे पर रख लिये मैं, अत्यन्त विश्वासके साथ, अनाथ बालकके समान, उसकी कोमल अङ्गुलियोंको, अपने बालोंके मध्यमें तापत्रयहारिणी औषधिके सदृश अनुभव करने लगा और जैसे अन्धकारमें चन्द्रमाकी किरणें प्रवेश करती हैं वैसे ही उसके मन की सब कथायें इन अंगुलिओंके द्वारा मेरे मनोमन्दिरमें प्रवेश करने लगीं।

कुछ समयके बाद जब मैंने अपनी आंखें बन्द कर लीं तब मुझे मालूम होने लगा कि प्रभातीय दीप्तिमय शुक्र ताराके सदृश, वही मेरे माथेके ऊपर गंभीर सकरुण, सनीर और काजलसे पूरित नेत्र, ज्योतिमय तारावलीके सदृश प्रेमकी लाल २ और स्निग्ध किरणोंको छिटकानेवाली; वही सोहागिन स्त्रीका चिह्नस्वरूप सेन्दुरकी लम्बी रेखा, उसकी लाल पाड़ साड़ीकी लम्बी और रक्त धारियां, उसके कोमल कपोल पर स्थित काला तिल और उसके मुखसे निकलनेवाली सुगन्ध वायु इत्यादि उसकी समस्त वस्तुयें मेरे निकट हैं। उस दिन मुझे उसके पैरका अंगूठा तक भी मनोहर मालूम होता था किन्तु उसकी समस्त वस्तुओंकी अपेक्षा मुझे उसकी सेन्दुरकी स्वच्छ और लाल रेखा अत्यन्त मनोहर मालूम होती थी क्योंकि वह केवल मेरे ही कारण बनाई गई थी, वह केवल मेरे ही अन्तरङ्गका रङ्ग था, और वह केवल मेरी ही गुप्त सम्पत्ति थी।

मैं उसकी सेन्दुरकी रेखाको कभी न भूलूंगा और न मैं अपने हृदयके रंगसे रंगे हुये उसके कोमल चरणों ही को भूलूंगा क्योंकि उसके इधर उधर हिलने डुलने और मेरा हाथ उसके पैरों पर लग जानेके कारण जिन दोनों पैरोंको, वह आज अत्यन्त संकोच के साथ छिपाये थी, वे (पैर) ज्यों ही मुझे मालूम पड़े, त्यों ही वह शीघ्रतासे उठकर मेरे पैरों पर प्रणामार्थ अपने मस्तकको झुकाया और जिस प्रकार सूर्यास्तके समय सूर्यकी अन्तिम लाल किरणें, पर्वतोंके

* प्रवासीसे अनुवादित एवं परिवर्तित।
अनुवादक।

शिखरोंको चूमती है उसी प्रकार उसके लाल २ ओष्ठोंने मेरे पैरोंको चूमा। उस समय मेरे पैरोंको उसके मुखकमलने भली प्रकार छिपा लिया था।

कुछ देरके बाद उसको मैंने अपनी क्रीड़ाकी सामिग्री समझकर, उसके हाथोंको अपने माथेसे उठा लिया और अपनी छाती पर रखकर उसकी कोमल एवं पतली २ अंगुलियोंको गिनने लगा, कुछ समयके बाद मै उसकी चूड़ियोंको बजाने लगा और फिर उसके रक्त नखस्थानों पर अंगुलियां फेरने लगा। उस दिन वह ऐसी हो गई थी, मानों उसने अपनेको मुझे सौंप ही दिया हो, इसी लिये आज वह कुछ नहीं बोली। वह मेरे नेत्रोंके सन्मुख अत्यन्त विश्वास और निर्भरता........।

उसने अपने हाथोंको मेरी छाती परसे कब उठा लिया, यह मुझे बिलकुल नहीं मालूम। अतएव आज मैं अन्य दिनकी अपेक्षा प्रात काल शीघ्र उठा, आज मेरा शरीर भी कुछ अच्छा था, किन्तु वह मेरे सिरहाने नहीं है। है क्या ? एक तार, मैंने शीघ्रतासे उसे उठाया और पढ़ा कि:—

'हेमलता परसों रात्रिको मर गई।

अनुवादक—
जुगमन्दरलाल।

सुधारकोंका नया आन्दोलन।

आज मुझे विधवा विवाहके पोषकोंसे यह पूछना है कि क्या वह यह बतानेकी कृपा करेंगे कि जिन कारणोंके रोकनेके लिये विधवा—विवाहका आन्दोलन किया जाता है (अर्थात व्यभिचार, भ्रूणहत्यादि पाप। वे उन देशोंमे भारतवर्षसे ज्यादा क्यों पाये जाते हैं जहाँ कि इस प्रथाका प्रचार बड़ी अनर्गलतासे प्रचलित है ? क्या ये प्रमाण इस कथनकी पुष्टिके लिये अकाट्य नहीं है कि विधवा—विवाह इन पापोंको रोक नहीं सकता परन्तु इससे दूने बढ़नेकी सभावना है। महाशयो ! युक्ति, प्रमाण, शास्त्रीयवाक्य, ऐतिहासिक प्रमाण सन्मुख लाइये कि जिसका उत्तर दिया जाय, अपने मत पोषणार्थ झूठी २ आख्यायिकायें बना बनाकर तथा झूठी झूठी काल्पनिक घटनाओंको लिख लिखकर भोले लोगोंको भड़कानेसे कार्य सिद्धि नहीं होती। यह तो कायरोंकी बात है। ऐसे मिथ्या काल्पनिक चित्र खींचकर किसी कुप्रथाके प्रचारके लिये प्रयत्न करना घोरातिघोर पाप है। दूसरा यह कथन कि विधवा अवस्थामे स्त्रियोंको घोर दुःख होता है यह तो ठीक ही है, जब उनका आगा पीछा देखना ही नहीं रहता तो दुःखकी कौन बात ? परन्तु यह दुःख, असह्य नहीं कहा जा सकता, जिन्होंने उच्चकुलमें जन्म लिया है उन्हें इन आत्मोत्सर्गका पाठ बाल्यावस्थासे ही पढ़ाया जाता है और परीक्षाका समय आनेपर वे कभी कायर नहीं होतीं, पर हम

जरूर कहेंगे कि उन शिक्षाओंका अभाव समाजसे हो रहा है। अस्तु हमारा कर्तव्य है कि हम उन पूर्व शिक्षाओंका पुनरुद्धार करदें कि पुनः हिन्दुओंके गृह एकवार स्वर्गगृह हो उठें न कि हम उनको नर्कगृह बनानेका प्रयत्न करें। दूसरी बात यह कि विधवा होनेके जो मुख्य कारण हैं अर्थात् बाल्यविवाह अनमेल विवाहादि, उन्हें रोकनेका प्रयत्न करें न कि एक ऐसी प्रथाका प्रचार करें कि समाज और हिन्दुओंकी पवित्रता ही जाती रहे। तीसरी बात यह है कि यदि जो स्त्रियां ब्रह्मचर्य धर्म पालन नहीं कर सक्ती और उनको दूसरा विवाह करलेना ही अभीष्ट है तो प्रत्येक समाजमें उनके लिये स्थान मौजूद ही है और इसका विधान भी है ही, नवीन प्रथामकी क्या आवश्यकता है फिर किसीका यह कहना कि उन्हें नीची दृष्टिसे न देखना चाहिये तो कहना होगा यह नहीं हो सक्ता क्या आप कहना चाहते हैं कि उनको और विधवा ब्रह्मचारिणियोंको एक दृष्टिसे देखो? यह कैसे सम्भव हो सकता है और क्या यह न्याय है? कदापि नहीं तथा इस विधवाविवाहके विधानकी क्या आवश्यकता है? आवश्यक्ता उस विषयके विधानकी हुआ करती है जो विषय उत्सर्गमार्ग (राजमार्ग) हो, सो राजमार्ग तो यह विधवाविवाह हो नहीं सक्ता क्योंकि राजमार्ग तो उच्चमार्ग ही हो सक्ता है नीचमार्ग राजमार्ग नहीं होते जैसे कि पहिले तो विधान ब्रह्मचर्यपालनका ही होगा उसके अतीचारोंका नहीं। नीचमार्ग ही अपवाद मार्ग होते हैं इसके बहुतसे प्रमाण दिये जा सक्ते हैं। अस्तु विधान तो विधवाओंके लिये ब्रह्मचर्यका ही होगा जिनसे न रहा जाय वे पतित हो कर अन्य विवाह भी कर सक्ती है इसके लिये समाजमें आकाश पाताल एक करनेकी क्या जरूरत है यह नियम तो आदिकालसेही चला आता है फिर यदि इस पर भी यह कहा जाय कि स्त्रियां अपनेको नीच मानना कबूल न करेंगी तो फिर इसका उत्तर यही होगा कि यदि कोई सधवा स्त्री यह कहे कि मैं नीच तो होना नहीं चाहती और विवाहित पतिसे मेरी तृप्ति नहीं होती तो क्या समाज या विधवा विवाह पोषक महाशय उसे भी ९–१० पति करनेके लिये कोई तजवीज निकाल देंगे?

अब रही यह बात कि विधवाओंके साथ बहुत कठोर व्यवहार किया जाता है। यह कल्पना बिल्कुल निर्मूल है। यदि किसी एक खास घरमें कोई बात होती हो तो समाज उसका लक्ष्य नहीं बन सकता। लेखकका स्वयम् अनुभव है कि हमारे यहाँकी हिन्दू-विधवायें बड़ी ऊंची दृष्टिसे देखी जाती हैं, हां, यह अवश्य है कि गृहस्थके किसी ऐसे कार्यमें कि जिसमें भोग विलासका महत्व ज्यादे हो, हिन्दू विधवायें भाग नहीं लेतीं, जैसे कि विवाहादि कार्य, उनका अधिकार धार्मिक कार्योंमें ज्यादे रहता है। और यह उनके पक्षमें सर्वथा अनुकूल ही है, क्योंकि

वह लोग गृहवासिनी ब्रह्मचारिणी हैं, अब रही यह बात कि इतना होते भी जो कुलटा कुकर्म पर ही कमर बांध ले तो उसके लिये तो कोई उपाय ही नहीं हो सकता।

विधवा-विवाहके पोषक लेखको! समस्त समाज तुम्हें स्वार्थान्ध समझ रही है, समाज समझती है कि तुम घोर स्वार्थपरतावश समाजको घोर कुम्भीपाकमें डालना चाहते हो। यदि यह बात असत्य है और तुमारा हृदय सच्ची समाज हितैषितासे द्रवित हुआ है तो सत्यताके लिये समाजके सामने तुम्हें शपथ पूर्वक कहना होगा कि हम निर्दोष हैं, नहीं तो यह अदम्य कलंक तुम्हारे सिरसे कभी न हटेगा।

जैन समाजका एक सच्चा हितैषी।

આપણી સ્થિતિ સુધારવાને બ્રહ્મચર્યની જરૂર.

(લેખક-હાથીચંદ માણેકચંદ, સોનાસણ)

આપણે આર્યલોકો પૂર્વે અપાર શરીરબળવાળા હતા, એવું જૈનગ્રંથો તેમજ મહાભારત, પુરાણ વગેરે ઇતિહાસના ગ્રંથોથી આપણે જાણીએ છીએ. ૧૨ ચક્રવતી, ૯ નારાયણ, ૯ બલભદ્ર, ચંદ્રગુપ્ત, મહાવીર વગેરેનાં બળનાં વર્ણન વાંચી આપણે ચકિત થઇએ છિએ. આવું અપાર શરીરબળ હોવું એ શરીરની મોટામાં મોટી ચઢતી છે. આવું અપાર શરીરબળ એકે કાળે આપણે મેળવી શકીએ તેમ નથી. આર્યપ્રજાનું એ અપાર શરીરબળ અનેક દુરાચરણોથી ઓછું થતાં થતાં, આજના જેવું જનાનખાની બળ થવામાં જેમ હજારો વર્ષ વહી ગયાં છે, તેમ આપણી રહેણી કહેણી સુધારતાં વધતાં વધતાં તેવું પૂર્ણ બળ થવામાં તેટલાંજ વર્ષ જવાની જરૂર છે. આપણે આપણાં શરીર સુધારીએ તો આપણી હવે પછીની પ્રજા આપણા કરતાં વધારે બળવાળી થાય, તે પ્રજા પાછી પોતાનાં શરીર સુધારે તો તેની પ્રજા તેથી અધિક બળવાન થાય, એમ વધતાં વધતાં શિખરે ચઢાય, તેથી પૂર્ણ બળ મેળવવામાં અત્યંત ધીરજ અને પ્રયત્નની જરૂર છે.

જે ઉપાયો વડે આપણા પ્રાચીન આર્યોએ શરીરનું પૂર્ણ બળ મેળવ્યું હતું, તે ઉપાયોનું જો આપણે પણ સેવન કરીએ, તો આપણું શરીરબળ વધવાનો સંભવ આવે, માટે તે ઉપાયો ક્યા ક્યા હતા તે વિષે હવે આપણે વિચાર કરીશું.

આપણું શરીર સાત ધાતુઓનું બનેલું છે જેવી કે-૧ રસ, ૨ રુધિર, ૩ માંસ, ૪ મજ્જા, ૫ મેદ, ૬ અસ્થિ, અને વીર્ય. આ સાત ધાતુઓમાં આપણી ૨૯ વર્ષની ઉમર સુધીમાં વધારો થતો જાય છે, અને તે વયે શરીર પૂરેપૂરું બંધાઇ રહે છે. ત્યાર પછી ૬૦

વર્ષની ઉમર સુધી શરીર રક્ષણના બધા નિયમો પાળ્યા હોય તો તે બંધાયલું શરીર તેવું ને તેવુંજ કાયમ રહે છે અને પછી તેમાં ક્ષીણતા થવા માંડે છે. જે ધીરે ધીરે વધતાં સો વર્ષે આ શરીરનો નાશ થાય છે. ૨૫ વર્ષની ઉમર સુધી શરીરમાં બે જાતની ક્રિયાઓ ચાલતી રહે છે—એક શરીરમાં ચાલતા ઘસારાની ખોટ પૂરી પાડવાની, અને બીજી દરેક અવયવને પૂરેપૂરો ખીલવવાને માટે તેને વધારનારું પોષણ આપતા જવાની. આ કારણથીજ બાળકોમાં અને જુવાનોમાં પુષ્કળ ચાલાકી હોય છે. ૩૦ વર્ષની ઉમર પછી શરીરમાં પડતા ઘસારા જેટલુંજ નવું પોષણ શરીરમાં ઉત્પન્ન થતું રહે છે. અવયવો પૂરેપૂરા બંધાઇ ગએલા હોવાથી નવું વધારાનું પોષણ શરીરમાં ઉત્પન્ન થતું નથી, અને પોષણને ઉત્પન્ન કરનાર જઠર વગેરે યંત્રોની શક્તિ નિત્ય કામ કરવાથી ઓછી થાય છે અને ૫૦ વર્ષ પછી ઘસારાની ખોટ પુરી પાડવા જેટલું પોષણ શરીરમાં ઉત્પન્ન નહીં થતું હોવાથી શરીર ધીરે ધીરે ક્ષીણ થતું જાય છે.

૨૫ વર્ષની ઉમર સુધી શરીરનું બંધારણ થવાની ક્રિયા શરીરમાં ધમધોકાર ચાલતી હોય છે, એ શરીરશાસ્ત્રના નિયમના જ્ઞાનથીજ આપણા પ્રાચીન આર્યોએ પોતાના શરીરને અત્યંત બળવાન કર્યું હતું. એ જ્ઞાન વડેજ તેઓ ૨૫ વર્ષ સુધી શરીરને વધારવાના કુદરતના આ પ્રયત્નને મદદ કરી શરીરબળની ઉંચામાં ઉંચી સ્થિતિ મેળવતા હતા અને કુદરતની સામે થઇ શરીરને બળવાન કરવા ઇચ્છનાર ઘણી મહેનતે પણ શરીરને બળવાન કરી શકતો નથી. જેમકે સામા પ્રવાહે નાવ ખેડનાર ઘણું બળ વાપરતા છતાં પણ ઓછો માર્ગ કાપે છે. કુદરતના નિયમથી શરીરનું બંધારણ બંધાતું હોય, તે વખતેજ તેનો નાશ થાય એવો ઉપાય કરવામાં આવે તો તે કુદરતની સામે થવાનો પ્રયત્ન કર્યો ગણાય છે અને તેવો પ્રયત્ન કરનારનું શરીર કોઇ દિવસ પણ જોઇએ તેવું બંધાતું નથી. આ નિયમને જાણનાર આપણા પૂર્વ આચાર્યો તેમજ મુનિઓએ શરીરનું બંધારણ બંધાવવાના સમયમાં તે પૂરેપૂરું બંધાઇ રહે માટે બ્રહ્મચર્ય આશ્રમો ઠેકાણે ઠેકાણે ઉઘાડયાં હતાં, પરંતુ આજે આપણે આ આશ્રમોને છેકજ વિસારી દીધાં છે. આપણાં બાળકોનો ઘણે સ્થળે બાર કે પંદર વર્ષની ઉમરથી બ્રહ્મચર્યનો ભંગ થાય એવા ઉપાય આપણે આપણા હાથે યોજી દીધા છે. આપણાં બાળકોના કુમળા શરીર રૂપી ઝાડ ઉપર કુહાડાના ઘા મારવા આપણે શરૂ કરી દીધા છે. શરીરમાં હજી તો વીર્યનું બંધારણ બંધાવવાનું શરૂ થયું હોતું નથી એટલામાં તો આપણે તેના ક્ષયનો રસ્તો મોકળો કરી આપીએ છીએ. તળાવમાં પહેલા વરસાદનું પાણી હજી આવ્યું નથી, એટલામાં તો પાણીને ગેબ થઇ જવાના પાતાળી ભુગાઓ આપણે રચી મુકીએ છીએ. કીડી કુંથુવા સરખાને પણ ઇજા ન કરવાનો ફાંકો રાખનાર અને અહિંસા પાળવાનું મિથ્યા અભિમાન ધરનાર આપણે, આપણાજ બાળકોના કોમળ ગળાં ઉપર છરી મુકીએ છીએ. ગોહત્યા કરનાર ઘાતકી મનુષ્યોને જોઇ આપણને કંપારી છુટે છે, પણ આપણા ગાયથી પણ અધિક નિર્દોષ બાળકોની આપણા હાથેજ હત્યા કરતાં આપણે કંપારી છુટતી નથી કે લજ્જા આવતી નથી. ઉલટી તેની હત્યા કરવામાં આનંદ માની આપણે મ્હોટા વરઘોડા કાઢીએ છીએ અને ન્યાતો જમાડીએ છીએ. બીજાઓના જીવ લેનારી રાક્ષસી સ્વભાવની જંગલી પ્રજાઓ જગતમાં હશે, પરંતુ પોતાનાજ બાળકોને રીબાઇ રીબાઇને મારે એવાં સાધનો રચી આપનારી, નિર્દયતામાં રાક્ષસોને પણ ટક્કર મારે એવી છેક હલકી દશામાં આવી ગએલી આપણી હાલની આર્ય પ્રજા જેવી પ્રજા જનાવરોની સૃષ્ટિમાં પણ જડવા સંભવ નથી.

કુદરતના કાયદાને તોડનાર કોણ સુખી થાય છે ? દેવતામાં હાથ નાખનારાંજ હાથ ઉપર

ફાંસા ઉઠવાની ચેતવણીને ન ગાંઠતાં દેવતામાં ઝંપલાવનાર કોણ રાખ થયા વિના રહે છે ? ૨૯ વર્ષની ઉમરે પાકું શરીર બંધાયા વિના ગૃહસ્થાશ્રમનો આરંભ કરવાથી અનેક જાતના રોગો થવા છતાં હાડ પાંસળા દેખાય એવાં હાડ પિંજરોના સંગ્રહસ્થાન જેવી આપણી પ્રજા થવા છતાં અને આખી દુનિયાની પ્રજાઓમાં નપુંસક વર્ગમાં ગણાવા છતાં પણ હજી આપણી આંખ ઉઘડતી નથી. આપણા બાળકોના કલ્યાણનો આપણે વિચાર કરતા નથી, તો પછી આગળ ઉપર આપણી આર્ય પ્રજાનું નામ નિશાન પણ ન રહે, એવો વખત આવે એમાં શું નવાઇ ?

રાજકીય જાગૃતિ આણવાનો યત્ન કરવાનું જ્યાં ત્યાં વિદ્વાનો તરફથી કહેવામાં આવે છે. દરવર્ષે રાષ્ટ્રીય સભાઓ ભરાઇ લાખો રૂપીઆ ખર્ચવામાં આવે છે. જૈનેતર કોન્ફરન્સો ભરવામાં લાખો રૂપીઆ ખર્ચાય છે. સેંકડો વર્તમાનપત્રો દરરોજ યા અઠવાડીએ દેશની સુરતી ઉઘાડવાને પોતાનાં પાનાં ભરે છે. કસાયલા વિદ્વાનોના હાથે વર્ષે દહાડે હજારો નવીન યાતો ભાષાના તરજુમા રૂપે પુસ્તકો બહાર પડે છે. લાખો રૂપીઆ પાઠશાળાઓ, જ્ઞાનશાળાઓ, વ્યાયામશાળાઓ અને એવાં અનેક ખાતાઓમાં ખર્ચાય છે. નાટક મંડળીના માલેકો ઐતિહાસિક બનાવને જાહેરમાં મૂકી ઉપરનાં કારણો યોગ્યતા પૂર્વક સુનન્દા એકટરો પાસે ભજવી બતાવે છે. મોટા મોટા વક્તાઓ મોટાં મોટાં ભાષણો કરી આપણામાં દેશાભિમાન ઉપજાવવા પોતાના અપાર બુદ્ધિ બળનો ઉપયોગ કરે છે, પરંતુ સાત દહાડાની અખંડ હેલીમાં પલળેલા લાકડાના મોટા ઢગલાને એક ચણગારી દેવતાથી સળગાવવાનો પ્રયત્ન જેમ નિષ્ફળ જાય છે, તેમ વીર્યના ક્ષયથી સત્વવિનાની થઇ ગયેલી આપણી મુડદાલ પ્રજા ઉપર કશી અસર થતી નથી. વીર્ય વિનાના શરીરમાં મન પણ વીર્યવિનાનું રોગવાળુંજ થઇ જતું હોવાથી આપણી રોગી મનવાળી પ્રજાને જે જે યોગ્ય નિશ્ચયો સમજાવવા આપણા દેશહિતેચ્છુઓ પ્રયત્ન કરે છે, તે તે સર્વે નકામા જાય છે.

દેશના હિત માટે તનનો ભોગ આપવા, હૃદયને વીંધી નાંખે એવી વાણીમાં બોધ આપવામાં આવે છે, આર્ય પ્રજા તે સાંભળે છે, પોતાની દુઃખી અવસ્થા જોઇ દુઃખી થાય છે, પણ તે ટાળવાના ઉપાયો કરવા તેનામાં ઉત્સાહ પ્રકટતો નથી. શી રીતે ઉત્સાહ પ્રકટે ! ખાર મહિનાથી ખાટલે પડેલા, પક્ષઘાતથી રેહી ગયેલા રોગીને તમે પક્ષઘાત ટાળવા, શરીરમાં લોહી વેગથી ફરતું કરવા માટે કસરતનો ઉપદેશ આપો અને તે તેને ખરો લાગતો હોય પણ ખાટલામાંથી ઉભાજ થવાતું ન હોય અને ખાટલામાં પડયા પડયા પણ હાથ પગ હલાવી શકાતા ન હોય તો તે બિચારો રોગી કસરત શું એના કરમની કરે ! રોગ ટાળો, તેના સાંધા હાલી ચાલી શકે એવું કરો અને પછી તમારા ઉપદેશની અસર તેના ઉપર થયા વિના, નહિજ રહે. ઉત્સાહ વિના કોઇપણ કામ સારૂં થતું નથી, અને ઉત્સાહ શરીરના બળ વિના આવતોજ નથી. આપણી પ્રજાનું શરીર બળ વધે એવા ઉપાય કરો. શરીરબળ વધવાથી મન બળવાન થશે, મન બળવાન થવાથી ઉદ્યમ, ઉત્સાહ, વાત્સલ્ય, અને સ્વદેશ પ્રીતિ વગેરે વગેરે અસંખ્ય ગુણો એની મેળેજ ઉત્પન્ન થશે; અને જેમ સુકાં લાકડાંમાં એક ચીણગારી પડતાંજ ભડકો થાય છે, તેમ બળવાન થ[illegible] આર્ય પ્રજાનાં અંતઃકરણરૂપી સુકાં લાકડાંમાં સહજ બોધરૂપી ચીણગારી પડતાંજ [illegible] પ્રગટ થઇ સઘળા દુર્ગુણોનો નાશ [illegible] અને આ દેશની પડતી રૂપ દારૂણ [illegible] ટળી જશે.

* આકાશે બ્રહ્મચર્યનો ભંગ. [illegible] વર્ષની ઉમર થતાં પહેલાં [illegible] ક્રમાં ગણાતાં છતાં આગ[illegible] વિના થવાથી

અત્યંત અઘટીત ઉધમ આરંભવો, એ આપણા શરીરના વિનાશનું પ્રથમ કારણ છે. બાર પંદર વર્ષની ઉમરમાં બાળકને ગૃહસ્થો બનાવી હાલમાં ભજવાતાં નાટકોમાં વેષ લઇને આવતા દશબાર વર્ષનાં બાળકોને ત્રીસ ચાલીશ વર્ષના હરિશ્ચંદ્ર ને તારામતિ કે, જગદેવ ને વીરમતી બનાવીને, શરીરમાં વીર્ય બંધાવાનું ચિન્હ જે ગણવું ફુટવું, તેની રૂવાંટી સરખી પણ દેખાયા પહેલાં, આપણે આપણાં બાળકોને રોગની શાળામાં બેસાડીએ છીએ. માણસની, ઓળમાંથી કાઢીને પંઢની ઓળમાં દાખલ થવાનો સગપણનો સંસ્કાર કરીએ છીએ અને શરીર મન તથા હૃદયરૂપી બળવાન કિલ્લાને તોડીને ચુરેચુરા કરી શકાય એવી સુરંગ ભરવાની કળામાં શીખવીએ છીએ અને આ પ્રમાણે કરી આપણે આપણી ફરજ બજાવી જાણે રાજી થઇ આપણા મનથી આપણને મોટા ભાગ્યશાળી માનીએ છીએ !

પાડાને રોગ અને પખાલીને ડામ દેવા જેવા, દેશની ચડતીના આશાવાળા ઉપાયો શા માટે કરવામાં આવે છે તે સમજાતું નથી. બીજા સર્વે ઉપાયો કામના છે, પણ તે પછી કરવાના છે; કૂવો ખોદવા પહેલાં, પાણી કાઢવાનું દોરડું અને ઘડો મહેનત કરીને આપવાં, પણ કૂવા ખોદાયા વિના તેનો શો ઉપયોગ ? ચપોચપ અનાજ ખવાતું હોય એવા નબળા જઠરને બળવાન કર્યા વિના ખાવા માટે જાત જાતના નાજના કોઠાર ભરવા કમ્મર કસીને મચવું તેના જેવી આ અણસમજણ થીજી કઇ છે ?

આજથી પણ વહાલાં ગણાતાં છતાં પણ મારાં નિર્દોષ બાળકોનું નિત્ય લોહી ચુસે એવા ના અયોગ્ય સગપના ગૃહસ્થાશ્રમ રૂપ પિશાચના હાથમાં જો તમે તમારાં બાળકને સોંપ્યું હોય તો તે બાળકનું રક્ષણ કરવાની, એક પણ યોજના નહિ. આના વિષય ઉપર તમારા પુત્ર સાથે વાત ન કરવાની તમારી ખોટી સભ્યતાને બાજુએ મુકો, તમારા પોતાના ખોટાં દષ્ટાંતથી આજુબાજુના રીવાજથી, તેના મનમાં બંધાઇ ગુંચેલા ભૂલભરેલા વિચારથી, બ્રહ્મચર્યના ભંગની જે ટેવ પડી ગઇ છે, અને જે ટેવ તેનો પ્રાણ હરનારી છતાં સુખ આપનારી માને છે, તે ટેવથી નીપજતાં દારૂણ દુઃખો તેને બરાબર સમજાવો. તેને સ્પષ્ટ કહો કે ભાઇ, ૨૫ વર્ષની વયેજ આપણું શરીર પૂરેપૂરૂં બંધાઇ રહે છે. તે પહેલાં બ્રહ્મચર્યનો ભંગ કરવાથી શરીરનો નાશ વહેલો થાય છે, અને જેમ અફીણ કે સોમલ ખાઇને બે કલાકમાં મરી જનાર, માણસ આત્મઘાતી ગણાય છે, તેમ બ્રહ્મચર્ય પાળીને સો વર્ષે મરવાને બદલે બ્રહ્મચર્યનો ભંગ કરી શરીરમાં નબળાઇ આણી, જાતજાતના રોગનો ભોગ થઇ પડી ચાલીશ કે પચાસ વર્ષની ઉમરે મરી જવું એ આત્મઘાતજ છે; અને અફીણ ખાઇને કે ગોળી ખાઇને કરેલો આપઘાત મહા પાપ ગણાય છે, તેમ બ્રહ્મચર્યના ભંગથી શરીરનો આણેલો વહેલો અંત, એ પણ આત્મઘાત હોવાથી મહા પાપજ છે. વળી હે ભાઇ ! આ બ્રહ્મચર્યના ભંગથી આપણે આપણી એકલાનીજ આત્મહત્યા કરીએ છીએ એમ નથી, પણ જેમ પાકો ગોટલો બંધાયા વિના રોપેલા આંબાનું ઉત્તમ ઝાડ કદી થતું નથી, તેમ કાચા વીર્યથી ઉત્પન્ન થયેલાં બાળક પણ કદી ઉત્તમ બળવાળાં થતાં નથી, તેથી તે ઓછા બળવાળા બાળકનું આયુષ્ય ઓછું થવાથી આપણે જેમ આપણી પોતાની હત્યા કરીએ છીએ તેમ આપણા બાળકની પણ પુરૂં આયુષ્ય ઓછું થવાથી, આપણે જેમ આપણી પોતાની હત્યા કરીએ છીએ તેમ આપણા બાળકને પણ પુરૂં આયુષ્ય ભોગવ્યા વિના નાની ઉમરમાં મરણ પામવાને લાયક કરીએ છીએ, તેથી આડકતરી રીતે તેની પણ હત્યા કરીએ છીએ અને તે બાળકમાં પણ "બાપ તેવા બેટા" એ પ્રમાણે આપણા જેવાજ ગુણો ઉતરી આવવાથી તે પણ અકાળે બ્રહ્મચર્યનો ભંગ કરવાની ટેવવાળો થાય છે, જેથી તેનાં છોકરાં તો તેનાથી વધારે

દુર્બળ થાય છે અને તે છોકરાનાં છોકરાં વળી તેથી પણ વધારે દુર્બળ થાય છે અને આ બધું દુબળાનું ધાડું મૂળથીજ પહાડી કાઢાનું ન હોવાથી ત્રીશ કે ચાલીશ વર્ષની ઉમર થતાં તો મરીજ જવાનું; જેથી મૂળ બ્રહ્મચર્યનો ભંગ કરનાર આપણે આ પ્રમાણે વધતાં વધતાં બધાં બાળકોની હત્યા કરનાર થઇએ છીએ, તેની ગણત્રી કરવી પણ કઠણ પડે એમ છે; તેથી અણસમજમાં જો કે અમે તમારૂં લગ્ન કર્યું છે તોપણ હવે તમે આજથી તમારા વીર્યનું રક્ષણ કરતાં શીખો અને શરીરમાં વીર્યની પૂરેપૂરી જમાવટ થયા વિના તેનો ઉપયોગ કરશો તો તેવા કાચા વીર્યથી ઉત્પન્ન થયેલાં બાળકો તમને અને આ દુનિયાને નકામી વેઠરૂપજ થઇ પડશે. વટાણા જેવડી આંબે થયેલી કેરીઓને તોડી લાવી તેને ઘેર પકવી રસરોટલી જમવાની આશા રાખવી એ જેમ અક્કલનું બારદાનપણું બતાવે છે, તેમ નબળા વીર્યથી ઉત્પન્ન થયેલાં બાળકો ઘરના, કુળના અને દેશના શણગાર થશે એવી આશા રાખવી, એ પણ મૂર્ખાઇ બતાવે છે. માટે આ બ્રહ્મચર્યના ભંગની ધિક્કારવા લાયક ટેવ જેને તમે અણસમજણથી નિત્ય સેવો છો, તેને, એકદમ બંધ કરો, તમારી પડેલી ટેવ તમને તુરત નહીં છૂટે માટે હાલ તો માત્ર મહિને મહિનેજ આ દુષ્ટ ટેવને તમે વશ થતા હો, અને પછી છ છ મહીને કે વર્ષે વર્ષેજ આ આયુષનો નાશ કરનારી ટેવને વશ થજો. અને છેવટે ત્રણ ત્રણ વર્ષને અંતરે સેવાતી ટેવને નિર્દોષ ગણી તે પ્રમાણે તમારૂં વર્તન કરજો, કરાવજો. તે રીત ઉત્તમ ફળ આપનાર નીવડે છે. એ વિષે ઉત્તમ શરીર શાસ્ત્રીઓનાં પુસ્તકો સમજજો અને સમજાવજો. આટલું સમજાવીનેજ બેસી રહેશો નહીં, પણ માબાપ રૂપે ગણાતા તમે પોતે પણ તમારૂં પશુપણું દૂર કરી, બ્રહ્મચર્યના આ ઉત્તમ નિયમને પાળી, તમારા શુદ્ધ દૃષ્ટાંતના નિર્મળ વાતાવરણવાળું તમારૂં ઘર કરજો.

તમારે પુત્રી હોય તો તેની માતા પાસે એ પ્રકારનો બોધ અપાવજો કે–હે બ્હેન ! આ સંસારમાં પતિ એજ તારૂં દૈવત છે. તેના શરીરની સુખાકારી ઉપરજ તારા બધા સુખનો આધાર રહેલો છે. તે રોગી હોય અથવા તેનું શરીર ન હોય તો આ સંસારમાં તારૂં જીવતર નકામું છે માટે તારા પતિનું શરીર રોગ વિનાનું રહે તથા લાંબા આયુષ્યવાળું થાય, એને માટે તું હંમેશાં કાળજીવાળી રહેજે. બ્હેન ! અયોગ્ય સમયે બ્રહ્મચર્યના ભંગથી તારા પતિને અને તને જેટલું નુકશાન થાય છે એટલું બીજા કશાથી થતું નથી. કોગળીઆનો રોગ થવાથી કે ગાંઠીઆ તાવથી લાસ થઇ ગએલું શરીર ઉપાયો કરવાથી પાછું સુધરી શકે છે, અને તે માણસ લાંબો કાળ જીવે છે, પણ અકાળે બ્રહ્મચર્ય ભંગ કરવાથી તુટી ગએલું શરીર લાખો ઉપાયથી પણ સુધરી શકતું નથી અને તેનું ટૂંકું થયેલું આયુષ્ય વધતું નથી, માટે એવા ખોટા સુખની લાલચ તું કદી કરીશ નહી. સ્ત્રીઓને આઠ ગણો કામ હોય છે, એવું આપણી જાત ઉપર ચોંટેલું આળ, હે બ્હેન ! તું તારા સદાચરણથી ટાળજે. વીર્યનું રક્ષણ ન કરીને ભુંડણની પેઠે કોડીબંધ નમાલાં હાડમાંસનાં પુતળાંઓને જન્મ આપવાને બદલે તારા લોહી અને તારા પતિના વીર્યનું રક્ષણ કરીને યોગ્ય ઉમેરેજ, હે બ્હેન ! તું સિંહણની પેઠે તારા કુખને, તારી જ્ઞાતિને અને તારા દેશને દીપાવનાર વીર પુત્રની જનેતા થજે, આવી રીત બોધ આપી તેના અંતઃકરણમાં બ્રહ્મચર્ય ફાયદા સારી રીતે ઠસાવજો.

કરશો નહિ. પણ એ તમારા પુત્રને તમે, અને પુત્રીને તેની માતા, આ બ્રહ્મચર્ય પાળવાના લાભને, અને તોડવાના અપાર દુઃખને સમજાવવા અને તેટલો યત્ન કરજો; અને તેઓ પોતાનું કદાચ પૂર્ણ રીતે રક્ષણ નહિ કરી શકે, તોપણ પોતાની પ્રજાનું અવશ્ય રક્ષણ કરશે. આપણા પૂર્વજોએ આપણું કલ્યાણ વિચારીને બ્રહ્મચર્ય આશ્રમ કાઢી શરીર બળ વધારવાનો પ્રયત્ન કરવો જોઇએ તેની સાથે બીજા કેટલાક નિયમો પાળવાની પણ જરૂર છે.

આપણા શરીરની સાતે ધાતુઓ ઉત્તમ પ્રકારની થવામાં અન્ન, જલ, વાયુ, સ્વચ્છતા શુદ્ધ હવા અને જોઇએ એટલા પ્રમાણમાં અજવાળું, આપણા શરીરની, તથા વસ્ત્રોની આપણા રહેવાનાં ઘરની અને આપણા શહેરોની ઘણી સ્વચ્છતા, અનુભવી પુરુષોએ વિચાર વડે નક્કી કરેલી યોગ્ય કસરત, તથા ઉંચી જાતના લાભ આપે એવી શરીરની, મનની અને વાણીની ક્રિયાઓથી શરીર ઉત્તમ થાય છે. અને એ બધાં દોષવાળાં હોય છે તો શરીર દોષવાળું થઇ દુર્બળ થાય છે; તેથી કેવી જાતનું અન્ન, કેવી જાતની હવા, કેવા પ્રકારની કસરત વગેરે શરીરને બળવાન કરનાર સાધનો સેવવાની જરૂર છે, તે સારી રીતે ગ્રંથોથી જાણી લેવું.

આ લેખનું મુખ્ય તાત્પર્ય એ છે કે આપણાં બાળકોનું મનોબળ વધારવાને જેમ આપણે રાત દિવસ મહેનત કરીએ છીએ, તેનીજ સાથે અને તે અગાઉ પણ તેમનું શરીર બળ વધારવાના ઉપાય પણ તન દઇને કરવા જોઇએ. બાળકોને ચોપડીઓ આપી દહાડો ઉંધું ઘાલીને બેસાડી મુકવાને બદલે તેમનું શરીર ખીલે એવા ઉપાયો પણ કામે લગાડવા જોઇએ.

શરીરબળ વિના આપણી કે દેશની ચડતી કરનાર મનોબળ તથા હૃદયબળ જોઇએ તેવાં કદી થઇ શકતાં નથી, માટે શરીરબળ વધારવા બ્રહ્મચર્યનું પાલન કરવા શીખવવું જોઇએ, તેની સાથે શરીર શાસ્ત્ર, અને આરોગ્યશાસ્ત્રોનું રાત્રિ દિવસ વાચન ચાલુ રખાવવું, જેનાથી વીર્યહીનપણાથી તમારા મનની થયેલી દુર્બળતાનો નાશ થશે. આવાં કડક લખાણ આપણા કલ્યાણ માટેજ લખવાની જરૂર પડી છે તેનાથી ન દુભાતાં પ્રતાપી નીપજવાની યોગ્યતાવાળા આર્ય બંધુઓ! જાગ્રત થાઓ, પરમાત્મા તમને સદ્બુદ્ધિ અને સન્માર્ગ દર્શાવો. તથાસ્તુ.

श्री ऋषभ निर्वाण संवत् पर-शंकाएं और उनका उत्तर।

(ले० श्रीमान पं० बिहारीलालजी जैन, सी० टी०
(बुलन्दशहरी, अमरोहा)

विदित हो कि यह लेख गत मास नवंबरीके "जैन प्रचारक" में, तथा गत १० जनवरीके "जैन प्रदीप" में और गत माघ मासके "दिगम्बर जैन" में प्रकाशित हुआ था जिसे पढ़कर बहुतसे इतिहास प्रेमी हमारे भाइयोंने अपना हार्दिक हर्ष प्रकट किया और तीन चार महाशयोंने इस सम्वत्के विषयमें कुछ शंकाएं भी की हैं जिससे ज्ञात होता है कि इस लेखको बहुतसे भाइयोंने ध्यानपूर्वक बड़ी रुचिसे पढ़ा है और अपनी २ योग्य सम्मति देनेका कष्ट उठाकर मेरे उत्साहको बढ़ाया है और मुझे आभारी बनाया है जिसका धन्यवाद देनेके लिये मेरे पास यथोचित शब्द नहीं हैं।

कई भाइयोंने जो कुछ शंकाएँ प्रकट की हैं उनका सारांश निम्न लिखित दो भागोंमें विभक्त हो सकता है:—

(१) इतने बड़े ७६ अंकके महान सम्वत्को किस प्रकार पढ़ा जावे जब कि इकाई दहाई आदि दश शंख तक कुल १९ ही अंक प्रमाण नियत है।

(२) किस जैन ग्रन्थके आधारपर और किस प्रकार यह संवत् निकाला गया है?

उपरोक्त शंकाओंमेंसे पहली शंका करते हुए हमारे कुछ आर्य समाजी भ्राताओंने तथा कई अन्य अजैन विद्वानोंने तो पूर्ण गणितज्ञ होनेका यहाँ तक परिचय है कि दश शंखसे आगे गिन्तीका होना ही असंभव बतला बैठे, जिनपर सचमुच निम्न लिखित दृष्टान्त पूर्णतया: चरितार्थ होता है:—

एक समय एक महासमुद्रके किनारे बसनेवाला राजहंस एक छोटेसे जलकूपकी मेंड़ पर आ बैठा उस जलकूपमें रहनेवाले मेंढकने राजहंसको देखकर पूछा:—

मेंढक—क्यों भाई आप कौन हैं?
राजहंस—मैं राजहंस हूँ।
मेंढक—आपका निवासस्थान कहाँ है?
राजहंस—भाई मैं समुद्रके तट रहता हूँ।
मेंढक—समुद्र क्या वस्तु है?
राजहंस—समुद्र एक बहुत बड़े शयका नाम है।

मेंढ़क—वह जलाशय कितना बड़ा है?

राजहंस—बहुत बड़ा।

मेंढक—(अपनी एक टांग फैलाकर) क्या इतना बड़ा है जहां तक मेरी टांग पहुँची?

राजहंस—नहीं भाई! वह बहुत बड़ा है।

मेंढ़क—(दूसरी टांग और फैलाकर) क्या इतना बड़ा है।

राजहंस—नहीं २, वह तो बहुत बड़ा है।

मेंढ़क—(अपनी चारों टांगे फैलाकर) तो क्या इतना बड़ा होगा?

राजहंस—(बड़ी गम्भीरतासे) भाई! वह बहुत ही बड़ा है। तुम उसके फैलाव और महत्वको नहीं समझ सक्ते।

मेंढ़क—(कुछ झुंझलाकर और अपने कूपके कुछ भागमें चक्कर लगाकर) अच्छा तो बहुतसे बहुत वह समुद्र इतना बड़ा होगा?

राजहंस—(बड़े कोमल शब्दोंमें) नहीं भाई जान! वह बहुत ही बडा है।

मेंढ़क—(अधिक झुंझलाहटमें भरकर और अपने जलकूपके चारों ओर पूरा चक्कर लगाकर) तो क्या वह तुम्हारा समुद्र इतना अधिक बड़ा है। या इससे भी अधिक?

राजहंस—हां भ्रात! वह इससे भी कहीं अधिक बड़ा है।

मेंढ़क—(अति झुंझलाकर और राजहंस को महा तिरस्कारकी दृष्टिसे देखकर) झूठ! झूठ!! महा झूठ!!! इससे बड़ा कोई जलाशय हो ही नहीं सकता। हा! तुमको ऐसे निर्मूल और असंभव वचन बोलते लज्जा भी नहीं आती।

राजहंसने मेंढ़कको महा मूर्ख समझकर फिर कुछ उत्तर न दिया और बड़े शान्त मनसे अपनी राह ली।

ऐसे पूर्ण विद्वान सर्व विद्यानिधान सर्वज्ञ तुल्य महाशयोंसे नम्रता पूर्वक निवेदन है कि वे गंभीर दृष्टिसे अपने हृदयमें विचारें कि क्या गणनाकी भी कोई हद हो सक्तीहै? इस प्रकार विचार दृष्टिसे काम लेने पर भले प्रकार ज्ञात होगा कि गणनाकी कोई हद या सीमा नहीं हो सक्ती तो भी हम संसारी मनुष्योंको अपनी २ आवश्यक्तानुकूल कुछ अंकों तक गणना नियत कर लेनी पड़ती है। अपनी२ आवश्यक्ताओंको ध्यानमें रखकर हरदेशके विद्वानोंने अपनी २ बुद्धि वा विचारानुसार अनेक प्रकारसे गणनाके कुछ न कुछ स्थानादि मानकर उनकी कल्पित संज्ञा नियत करली हैं, और अपने २ आवश्यकीय सर्व कार्य उसीसे निकाल लेते हैं, उदाहरणके लिये कुछ विद्वानों-की कल्पित इकाई दहाई आदि नीचे लिखी जाती हैं:—

(१) **अर्बी फारसी**की इकाई दहाई—इकाई, दहाई, सैकड़ा, हजार, दशहजार, सौहजार। केवल ६ अंक प्रमाण।

(२) **लीलावती**की इकाई दहाई—एक, दश, शत, सहस्र, अयुत, लक्ष, प्रयुत, कोटि, अर्बुद, अब्ज, खर्व, निखर्व, महापद्म, शङ्कु, जलधि, अन्त्य, मध्य, परार्ध। १८ अंक प्रमाण।

(३) **उर्दू हिन्दी** भाषाकी इकाई दहाई—इकाई, दहाई, सैकड़ा, सहस्र, दश सहस्र,

लक्ष, दश लक्ष, कोटि, दश कोटि, अर्व, दश अर्व, खर्व, दश खर्व, नील, दश नील, पद्म, दश पद्म, संख, दश संख ॥ १९ अंक प्रमाण ॥

(४) श्री महावीराचार्य कृत **गणित-सार संग्रह*** की इकाई दहाई—एक, दश, शत, सहस्र, दश सहस्र, लक्ष, दश लक्ष, कोटि, दश कोटि, शत कोटि, अर्बुद, न्यर्बुद, खर्व, महा खर्व, पद्म, महा पद्म, क्षोणी, महा क्षोणी, शंख, महा शंख, क्षित्य, महा क्षित्य, क्षोभ, महा क्षोभ ॥ **२४ अंक** प्रमाण ॥

(५) **अंग्रेजी भाषा**की इकाई दहाई—इकाई, दहाई, सैकड़ा, हज़ार, दशहज़ार, सौहज़ार, मिलियन, दशमिलियन, सौमिलियन, हज़ारमिलियन, दश हजारमिलियन, सौ हज़ार मिलियन, बिलियन, दश बिलियन, सौ बिलियन, हज़ार बिलियन, दश हज़ार बिलियन, सौ हजार बिलियन, ट्रिलियन, दश ट्रिलियन, सौ ट्रिलियन, हज़ार ट्रिलियन, दश हज़ार ट्रिलियन, सौ हज़ार ट्रिलियन। **२४ अंक** प्रमाण। यह इकाई दहाई ऐसे ढंगसे नियत की गई है कि क्वाड्रिलियन आदि शब्दों द्वारा छह २ अंक उपरोक्त रीतिसे बढ़ाकर **२४ अंक प्रमाणसे आगे भी** अधिक अंक प्रमाण बड़ी सुगमतासे की जा सकती है।

उपरोक्त उदाहरणोंके अतिरिक्त और भी अनेक प्रकारकी इकाई दहाई हैं जो अनेक विद्वानोंने अनेक प्रकारसे कल्पना की हैं और जो माननेवाले जन समूहकी नित्यप्रतिके सर्व व्यवहारिक कार्योंमें पड़नेवाली आवश्यक्ताओंको पूर्ण करनेके लिये केवल पर्याप्त (उपयुक्त) ही नहीं किन्तु पर्याप्तसे भी अधिक हैं।

जैनसिद्धान्तमें चूंकि **तनिलोक**का स्वरूप तथा उसमें रहनेवाले **षट्द्रव्य**का वर्णन इतना अधिक विस्तार पूर्वक है कि जिसका शत सहस्रांस भी इस पृथ्वी तलपर अन्यत्र कहीं नहीं पाया जाता इसीलिये इसी सिद्धान्तका **गणित भाग** भी और भागोंकी समान बहुत ही उच्च कोटिका है।

गणित विद्याके जो अंक गणित, बीजगणित, क्षेत्रगणित आदि अनेक भेद हैं उनमेंसे एक अंकगणितके जैन गणितमें **दो** मुख्य विभाग हैं **पहला लौकिक** और **दूसरा अलौकिक** या लोकोत्तर। इन दोमेंसे पहलेके मान, उन्मान, अवमान, गणितमान, प्रतिमान, तत्प्रतिमानादि भेद हैं और दूसरे लोकोत्तरके द्रव्यमान, क्षेत्रमान, कालमान, और भावमान इस प्रकार ४ भेद हैं। इन चारों भेदोंमेंसे पहिले द्रव्य लोकोत्तरमानके अन्तरगत संख्याके **लोकोत्तरमान**

* यह जैन आचार्य कृत गणित-ग्रन्थ भास्कराचार्य कृत "लीलावती" से ३०० वर्ष पूर्वका है जो अंग्रेज़ी अनुवाद सहित "मद्रास प्रांत" सर्कारकी आज्ञानुसार वहांके गवर्नमेंटी (सर्कारी) यंत्रालयमें प्रकाशित हो चुका है। "लीलावती"में सम्भवतः अधिकतर इसीका अनुकरण है॥ आज कलकी हिन्दी उर्दूमें प्रचलित इकाई दहाई भी और किसीसे न मिलकर अधिकांशमें इसीकी इकाई दहाईसे मिलती जुलती है।

और **उपमालोकोत्तरमान** यह दो उपभेद हैं।

इन दोनोंमेंसे संख्या लोकोत्तर मानके मूल तीन स्थान अर्थात् **संख्यात, असंख्यात,** और **अनंत** हैं और विशेष २१ **स्थान** हैं। तथा इसी संख्या लोकोत्तरमान की सर्वधारा, समधारा, विषमधारा, कृतिधारा, अकृतिधारा, घनधारा, अघनधारा, कृति मात्रिक धारा, अकृति मात्रिक धारा, घन मात्रिक धारा, अघन मात्रिक धारा, द्विरूप वर्गधारा, द्विरूप घन धारा, और द्विरूप घनाघन धारा, **यह १४ धारा** हैं। दूसरे **उपमा** लोकोत्तर मानके **पल्य, सागर,** सुच्यांगुल आदि ८ स्थान हैं।

इसी प्रकार क्षेत्र काल और भाव लोकोत्तर मानके अनेक भेद उप-भेदादि हैं।

इन सबका सविस्तर वर्णन उदाहरण आदि सहित जानना हो तो "**बृहत् धारा परिकर्म**" और "**महावीर गणित सार संग्रह**" आदि जैनगणित ग्रन्थोंसे तथा **श्री त्रिलोकसार** और **श्री गोम्मटसारदि** जैन ग्रन्थोंके गणित भागसे देखें। यहां केवल इतना बताना ही अभीष्ट है कि इतना बड़ा ७६ **अंक** प्रमाण संख्यावाला सम्बन् किस प्रकार पढा जा सकता है? इसके पढ़नेके लिये कौनसी इकाई दहाई है?

ऊपर बताया जा चुका है कि "लौकिक गणित भाग" के ६ भेदोंमें एक चौथा भेद "**गणित मान**" है। इसके अन्तरगत जो इकाई दहाई है वह उपरोक्त प्रकार २४ **अंक** प्रमाण है।

लौकिक कार्योंमें इससे अधिक तो क्या इतने अंकोंतककी भी आवश्यक्ता किसीको नहीं पडती। परन्तु **लोकोत्तर गणित** भागमें अवश्य अधिककी आवश्यक्ता पड़ती है। जिसके लिये **जैनाचार्योंने** उपरोक्त प्रकार संख्या लोकोत्तर मानमें जघन्य संख्यात आदि उत्कृष्ट अनन्तानन्त पर्यन्त **२१ भेदों** और सर्वधारा आदि **१४ धाराओं**में तथा उपमालोकोत्तरमानमें **पल्य, सागरादि** द्वारा बड़े विस्तारके साथ आवश्यक्तानुसार सब ही कुछ समझा दिया है। इनमेंसे **संख्यालोकोत्तरमान**के अन्तरगत निम्नलिखित **इकाई दहाई** है जिसकी सहायतासे यदि आवश्यक्ता पड़े तो हम **७६ अंक** तो क्या सैकड़ों सहस्रों अंक तककी संख्याको बड़ी सुगमतासे पढ़ सकते हैं। वह यह है—

एक, दश, शत, सहस्र, दश सहस्र, लक्ष, दश लक्ष, कोटि, दश कोटि, अर्बुद, दश अर्बुद, खर्व, दश खर्व, नील, दश नील, पद्म, दश पद्म, शंख, दश शंख, महाशंख, यहां **२० अंक** प्रमाण गिन्ती है। इससे आगे ×**एकट्ठी**, दश एकट्ठी, शत एकट्ठी, सहस्र एकट्ठी, दश सहस्र एकट्ठी, आदि महा

× २ को ६४ जगह रखकर परस्पर गुणा करनेसे जो १८४४६७४४०७३७०९५ ५१६१६ संख्या २० अंक प्रमाण आती है उसे भी एकट्ठी कहते हैं। यह संख्या २० अंक प्रमाण संख्याके जघन्य भेदसे अधिक है इसीलिये इकाई दहाईके हिसाबमें २१ अंक प्रमाण संख्याका नाम भी "एकट्ठी" माना गया है।

शंख एकट्ठी तक, २० अंक प्रमाण **४० अंक तक** एकट्ठीके स्थान हैं। इसी प्रकार एकट्ठीके स्थानोंकी तरह **पल्य, सागर** और **कल्पके** बीस २ स्थान हैं जिससे महाशंख कल्प तक एक २ अंक अनुक्रमसे बढ़कर **१०० अंक** प्रमाण संख्या हो जाती है। कल्पसे आगे दुकट्ठी, त्रिकट्ठी, चकट्ठी, पकट्ठी, पकट्ठी, सकट्ठी, अकट्ठी, नकट्ठी, और दकट्ठीमेंसे प्रत्येकके **सौ २ स्थान** इस प्रकार हैं कि प्रथमके १०० स्थान वाचक शब्दोंके आगे एकट्ठी आदिके सदृश दुकट्ठी आदि शब्द लगा दिये जाते हैं। इस प्रकार एक २ स्थान बढ़ती हुई संख्या **हजार (१०००) स्थान** तक पहुँच जाती है।

नोट—यहां इतना ध्यानमें रखना आवश्यक है कि संख्या लोकोत्तरमानके जो उपरोक्त मूल तीन और विशेष २१ भेद हैं, उनमें संख्यातकी गणना **१५० अंक*** प्रमाण संख्या तक है इससे आगे असंख्यातकी गिन्ती है।

इसलिये १५० अंक अर्थात् इकाई दहाईके १५० स्थानसे आगे इकाई दहाईसे गणना करनेकी कुछ आवश्यकता ही नहीं पड़ती और जो कुछ पड़ती है वह असंख्यात आदिके जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट आदि अन्य १८ भेदोंसे पूरी कर ली जाती है। और यदि किसीको विशेष जानकारीके लिये अनावश्यक होनेपर भी आवश्यक्ता जान पड़े तो उपरोक्त सहस्र (१०००) अंक तक इकाई दहाईके स्थान लिख दिये गए हैं।

इससे आगे भी उत्तरयांग, पुप्ल्यांग, त्रिपल्यांग आदि अनेक स्थान इकाई दहाईके हैं जो निःकारण लेख बढ़ जानेके भयसे अनावश्यक समझकर नहीं लिखे गये।

उपरोक्त इकाई दहाईसे ७६ **अंक** प्रमाण जो **श्री ऋषभ निर्वाण सम्वत** ४१३४५२६३०३०८२०३१,७७७४९५ १२१९१९९,९९,९९,९९,९९९९९९९ ९९९९९९९९९९९९९,९९९९९९९९९ ९९९९९९९६०४४३ है वह इस प्रकार पढ़ा जा सकता है:—४ पद्म, १३ नील, ४५ खर्व, २६ अर्व, ३० कोटि, ३० लाख, ८२ हजार और ०३१ सागर; ७७७ शंख, ४८ पद्म, ९१ नील, २१ खर्व, ९१ अर्व, ९९ कोटि, ९९ लाख, ९९ हजार, ९९९ पल्य, ९९९ शंख, ९९ पद्म, ९९ नील, ९९ खर्व, ९९ अर्व, ९९ कोड़, ९९ लाख ९९ हजार और ९९९ एकट्ठी; ९९९ शंख, ९९ पद्म, ९९ नील, ९९ खर्व, ९९ अर्व, ९९ कोड़, ९९ लाख, ६० हजार, ४४३। (असमाप्त।)

---

*पं० द्यानतरायजीकृत चर्चा शतकका पद्य नं० २३ और उसकी व्याख्या देखें। (इस विषयमें मुझे स्वयं बड़ी संशय है, अर्थात् मेरी निज सम्मतिमें केवल १५० अंक प्रमाण तक ही संख्यात की गिन्ती नहीं है क्योंकि जघन्य परीता संख्यातसे एक कमतक संख्यातकी गणना है और जघन्य परीता संख्यात बहुत ही बड़ी गणनाका नाम है। इसलिये विद्वान महाशय पं० द्यानतरायजीके उपरोक्त पद्यके इस भागका यथार्थ अर्थ शास्त्र प्रमाण सहित प्रकट करनेकी कृपा करें।

(लेखक)

उपदेशक पितांबरदासजीना भ्रमणनो रिपोर्ट.

(तां १ अप्रील थी १५ मे सुधी)

સામરી-બે શાસ્ત્રસભા અને એક વ્યાખ્યાન સભા કરી. સાત જણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. વસ્તીની બહાર એક મોટું દહેરું છે જેમાં દિ૦ તેમજ શ્વે૦ પ્રતિમાઓ છે. પુજારી બ્રાહ્મણ હોવાથી વ્યવસ્થા સારી નથી જે બાબત પંચે ધ્યાન આપવું જોઇએ. ૬) ઉપદેશક ફંડમાં મળ્યા.

કડિયાદરા-ત્રણ સભા કરી સ્વાધ્યાય, જિનપૂજન અને કુરીતિ ત્યાગપર વિવેચન કરવાથી આઠ જણે સ્વાધ્યાય, અને બે રાત્રિભોજન ત્યાગનો નિયમ લીધો. અત્રે એક ધર્મપ્રેમી બ્હેન બ્હાલીબાઇ જે મરણ પથારીએ હતી તેણે કહ્યું કે આપ એવો પ્રબંધ કરી આપો કે મારા મૃત્યુ પછી કોઇપણ સ્ત્રી જાતિ કુટીને રડે નહિ. આથી ચોરીવાડમાં ચાર ગામની પંચ એકઠી કરી આ રિવાજ બંધ કરવાનો ઠરાવ થયો. ૩) ઉપદેશકફંડમાં મળ્યા.

ચોટાસણ-બે સભા કરી કેટલાકે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. ત્યાં એક ઉત્સાહી બ્હેને હલકી જાતિની ઘણી સ્ત્રીઓને એકઠી કરી જેથી તેમના આગળ નારકી જીવોનું વર્ણન કરવાથી તેમનું મન પીગળ્યું અને તેઓએ સંકલ્પી હિંસાનો ત્યાગ કર્યો. ૧) ઉપદેશક ફંડમાં મળ્યો.

ચોરીવાડ-ત્રણ સભા કરી અભક્ષ-ત્યાગ તથા સ્વાધ્યાય પર વિવેચન કર્યું. કેટલાકે સ્વાધ્યાય અને રાત્રિ ભોજન ત્યાગનો નિયમ લીધો. કડિયાદરામાં નક્કી થયા મુજબ ગોરલ, ચોટાસણ, ચોરીવાડ અને કડિયાદરાની પંચ એકત્ર થઇ, જેમની સન્મુખ છાતિ કુટીને રડવાના કુરિવાજ સબંધી વિવેચન કરવાથી ત્રણ ગામવાળાઓએ તો બંધ કરવા કબુલ્યું પણ ગોરીવાડની પંચના શેઠ કાદરમલજીએ ના કહી અને કહ્યું કે બાપદાદાની રૂઢીને છોડવી તે અધર્મ છે.!!! ઉપદેશક ફંડમાં ૫॥) મળ્યા.

ગોરલ-શેઠ મુંછરામના પ્રયાસથી પાંચ સભા કરી. ગામના બીજા લોકો પણ સભા હાજર થતા હતા. આઠ જણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો.

મુરેટી-ત્રણ સભા કરી, પણ લોકોમાં બીલકુલ ઉત્સાહ ન હોવાથી વારંવાર બોલાવવા છતાં પણ મણાજ થોડા ભાઇઓ હાજર થતા હતા. ત્રણ જણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. ઇડર કન્યાશાળાવાળા શ્રીમતી મેનાબાઇએ ઓનરરી તરીકે બાળક બાલિકાઓને ધર્મશિક્ષણ આપવા કબુલ્યું તથા શેઠ વીરચંદ પાનાચંદે એક વર્ષ માટે પુસ્તકો આપવા કબુલ્યું. ૩) ઉપદેશક ફંડમાં મળ્યા.

બોલોડા-અત્રે એક મોટું દહેરું છે જેને ફરતા ૫૨ ચૈત્યાલય છે. પ્રતિમાની સંખ્યા ઘણી છે. પુજારી બ્રાહ્મણ છે. અત્રે અગાઉ જૈનોની ૩૦૦ ઘરની વસ્તી હતી જ્યારે હાલ ૧૫ જ ઘર રહ્યા છે. રોજ વારાફરતી અષ્ટ-દ્રવ્યથી પૂજન કરવાનું પંચે કબુલ કર્યું. આઠ જણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. ૨) ઉપદેશક ફંડમાં મળ્યા.

ટાકાટુકા-ત્રણ સભા કરી દેવ ધર્મ ગુરુનું સ્વરૂપ બતાવ્યું, તેટલામાં શા કાદરમલજી ગુસ્સે થઇને બોલ્યા કે તમે અમારા ગુરુજી (ભટારક) ની નિન્દા કરો છો! અમે કંઇ સભાને જાણતા નથી, જૈનમિત્ર, દિગંબરજૈન તથા છાપેલાં પુસ્તકોને અમે જોવા પણ માગતા નથી. સજ્જનો! જોયું કેવી બુદ્ધિમાની છે!!!

મઉ-બે સભા કરી, જેથી ૯ જણે સ્વાધ્યાયનો તથા કેટલાકે રાત્રિભોજન ત્યાગનો નિયમ લીધો. દુધ દહીં વગેરે મર્યાદાપૂર્વક રાખવાનું કબુલાવ્યું.

મુનાઇ- પાંચ દિવસ રહી પાંચ સભા કરી. કેટલાક નિયમો લેવાયા. અત્રે ગુજરાતી શિક્ષણ લેવાની પણ સ્કુલ નથી, જે બાબત પ્રકરણે ધ્યાન આપવું જોઇએ. અત્રેથી ૬

लोग दर्शन करनेके लिये उत्सुक हुये, जिसका पूरा हाल टाईम्स आफ इन्डिया और इंगलिशमैनने तारीख १२ व १३ मार्चमें प्रकाशित किया है, इसीसे इन श्रीमान् सेठ हुकमचंदजी 'दानवीर' 'रायबहादुर'का फोटु आपके समक्ष दिया गया है कि जो लोग केवल धन कमाना जानते हैं, साथ ही में दान भोग और परोपकारमें खर्च नहीं करते वे सेठ साहिबके इस चरित्रसे उपदेश ग्रहण करें। आपके सुयशसे आम हिन्दुस्थान हीमें क्या विलायत तक इन्दौर नगरीकी प्रशंसा लोगोंके मुंह पर है। धन्य हैं ऐसे वीर पुरुष ! इति—

१३५००००) के दानकी सूची।

जिसका हाल ऊपर दिखाया गया है। यह सेठ साहिबने निज हाथसे परोपकारसे खर्च किये हैं।

५०००) कछाल्या ग्राममें जैनी माइयोंकी स्थिति मंदिर बनवानेकी नहीं होनेसे मंदिर बनवाया, सम्वत १९५३ में।

६०००) इन्दौरके बड़े मंदिरमें कलश चढ़ाया गया जिसमें तीनों भाईयोंने १८०००) दिया जिसमें आपने दिये, सम्वत् १९५७ में।

४०००) छावनीके मंदिरके जीर्णोद्धार कराया व कलाश चढाये, सं० १९५७ में।

२०००००) इन्दौर स्टेशनके पास एक पक्का जैन मंदिर, २ कुवें, एक बंगला व धर्मशाला बिना किसी फीस भाड़ाके मुसाफिरोंको ठहरनेके लिये बनवाई जिसमें सर्व जैन अजैन हिन्दू आरामसे ठहरते हैं, सम्वत् १९५१ में बनवाई और प्रतिष्ठा कराई।

१०,०००) इन्दौरमें एक औषधालय स्थापित किया सं० १९५३–६० जिससे अनेक रोगियोंको लाभ पहुंचा।

१०००) इन्दौरमें प्लेगके समय गरीब लोगोंको रहनेके लिये Huts झोपड़े बनानेमें मदद दी, संवत् १९६० में।

२०००) तीनों भाईयोंने एक जैन सहायक भोजनशाला खोली जिससे असमर्थ जैनी व विधवाओंको भोजन रेल खर्च सहायता दी जाती है जिसमें आपका लगा सं० १९६२ में।

३२०००) इन्दौर नाशियांमें हुकमचंद दिगम्बर जैन बोर्डिंग खोला, जिसके खरचके लिये १२८) माहवार ३२०००) का सूद देते हैं इससे संस्कृतकी पाठशालाको खर्च जिसमें अंगरेजीके विद्यार्थियोंको जो स्कूल कालेजोंमें पढ़ते हैं एक घंटा धर्म शिक्षा दी जाती है, और विद्यार्थियोंको ७) से १०) तक स्कालर्शिप दी जाती है। संवत् १९६२ में।

२५०००) नशियांजीके मंदिर व धर्मशालाका खर्च चलानेके लिये स्थाई फंडमें दिये, संवत् १९६५ में।

७०००) इन्दौरके तुकोजीराव हास्पिटलमें तीनों भाईयोंकी तरफसे महाजन वार्ड बनाई गई जिसमें आपने दिये, सं १९६६ में।

१०००) लेडी मिंटो हास्पिटलमें दिये संवत् १९६६ में।

१००००) श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाके प्रबंध खातेमें दिये, संवत १९६७ में।

१०००) श्री स्याद्वाद महाविद्यालय काशीके स्थाई फंडमें दिये, संवत १९६७ में।

[illegible]०००) श्रीसम्मेदशिखरजी पर्वतरक्षा फंडमें आपने जगह २ घूमकर चंदा कराया।

इन्दौरसे २१०००) भेजे उसमें आपने दिये, संवत १९६७ में।

५०००) इन्दौर नरेश तुकोजीराव बहादुरके कारोनेशनके समय विद्या खातेमें दिये, संवत् १९६८ में।

१६०००) और धर्मशाला सुधारणार्थ उसी समय दिये संवत् १९६८ में।

२००००) श्रीमान् तुकोजीराव महाराज बहादुरके हाथसे कोई पब्लिक फायदेकी संस्था खोलनेके लिये, सं० १९६९ में।

२५००) मालवा प्रांतिक सभाके उपदेशक भंडारमें दिये संवत १९७० में।

११००) मालवा प्रांतिक सभाके प्रबंधखातेमें दिये, संवत् १९७० में।

१०००७) बम्बईमें मंदिरजी बनानेके लिये चन्दा कराया जिसमें आपने दिये, सं० ११७० में।

१०२००) श्री ऋषभब्रह्मचर्याश्रमके डेप्युटेशनको इन्दौरमें बुलाकर १६५००) का चन्दा करा दिया जिसमें आपने दिये संवत् १९७० में।

५००००) इन्दौर दीतवारामें तीनों भाई मिलकर एक मंदिर बनवा रहे हैं जिसमें आपके लगे, संवत १९७० में।

२५०००) स्टेशनके पासवाली धर्मशालाको पक्की करानेके लिये ११०००) के सिवाय और दिये संवत् १९७० में।

२५००) महाविद्यालय मथुराके खातेमें दिये, संवत् १९७० में।

२१००) बावनगजाजी बड़वानीके जीर्णोद्धारके चन्देमें दिये संवत १९६? में।

३६६५००) जवरीबागमें महाविद्यालय बोर्डिंग बनानेके लिये दिये। १६६५००) इमारत जवरीबागमें ८० विद्यार्थियोंके लायक बोर्डिंग महाविद्यालयादिकी इमारत बनी। २०००००) स्थाई फंड खर्च चलानेको १०००००) कंचनबाई श्राविकाश्रमके लिये दिये, संवत् १९७२ में।

८०००) सन् १९१४ में इम्पीरियल वार रिलीफ फंडमें दिये ७०००) छावनीसे और १०००) इन्दौर मार्फत।

५००००) सन् १९१५ में—४००००) किंग एडवर्ड हास्पीटल छावनी।

१००००) लेडी ओडवायरगर्ल्स स्कूल छावनी।

९२०००) सन् १९१५ में एक विशाल धर्मशाला दिनवारा बाजारमें बनाई।

२०००) सन् १९१५ में मध्यभारत साहित्य समितिके मकान बनानेमें।

१००००) उदासीन आश्रम इन्दौरमें लगाने म-ये ३००००) के।

३००००) सन् १९१५ में आपकी वर्षगांठका उत्सव महाविद्यालयमें मनाया गया उस समय सहायता दी।

२५०००) सन् १९१५ में मेडीकल स्कूल छावनीके लिये बिल्डिंग खरीदकर दिया।

१००००) इन्दौरमें आयुर्वेदीय औषधालय खोला जिसमें दस हजारका सूद खर्च करते हैं।

१५००००) छोटी रकमें संस्थाओंको दी गई दस वर्षमें जो कि १००) से १ ००) तककी हैं।

कुल दान रु. १३६५००००)

कर्त्तव्यपालन।

अब हो गये हम पतित कैसे?
सो हमींसे जान लो।
प्रमाण क्या? कर रहे जो,
उसीसे हमें पहिचान लो॥
त्याग कर कर्त्तव्य अपना,
बनादी भूमि भारत मुर्दनी।
पूर्वजोंका धन मान खोकर,
हो गये सब निर्धनी॥ १॥

छोड़कर उच्चादर्श अपना,
हम विलासी बनने लगे।
कहां वह ब्रह्मचर्य पालन?
जब ढोर सम बनने लगे॥
बल वीर्य पौरुप तौ है नहीं,
कहो क्या बाकी रहा?
हो चुकी अब सब नष्ट माया,
शरीर ही बाकी रहा!!॥ २॥

क्या शरीरको भी नष्ट करके,
उठा चाहो तुम अभी?।
यह विचार तो कुविचार है,
जलसे दही होता कभी?॥
कार्य क्षेत्रमें चलो उठकर,
यही प्रथम कर्त्तव्य हो।
करते नहीं यदि कर्त्तव्यपालन,
तो नहीं क्षन्तव्य हो॥ ३॥

अपना करो यदि कर्त्तव्य पालन,
फल नहीं क्या पावगे।
इस वीर जननी भूमिके फिर,
वीर नर कहलावगे॥
महावीर, बुद्धसम धर्मरक्षक,
अरु जो हुवे योधा यहां।
कहो किस भूमिके इतिहासमें,
अरु वे हैं भी कहां?॥ ४॥

क्या उन्हींका मान सन्मान है,
यह जिसे तुम कर रहे?
नहीं, यह तुम्हारा मान है,
व्यर्थ क्यों हो सड़ रहे?
यदि है कुछ अंश अवशिष्ट उनका,
तो पड़े क्या तक रहे?
उन्नति फिर दिखा दो देशकी,
अधिक क्यों हो बक रहे॥ ५॥

धन्यार्ह हो तुम सभी सेवा,
देशकी करने लगो।
ले गया पापी काल जिसको,
उसे फिर लाने लगो॥
सोनेकि चिड़िया इस उक्तिको,
कर सको यदि फिर सही।
झट बन जावगे गुरु तुम सभी,
अरु प्रसन्न होंगी मही॥ ६॥

मुसलमान हिन्दू अरु जैन सब हैं,
वीर पुत्र इस भूमिके।
उच्च कर दिखा दो इस देशको,
मातृपदको चूमि के॥
माता, सेवा विना स्वपुत्रकी,
सुखी है होती नहीं।
करो अब शीघ्र प्रसन्न उसको,
दुखित वो होवे नहीं॥ ७॥

"विनाशकाले विपरीत बुद्धि,"
जगतमें सुविख्यात है।
स्वकार्य देखो शीघ्र अपने,
यह तो नहीं चरितार्थ है॥
करो तुम सब कर्तव्य पालन,
कहना यही अब सार है।
बीता समय फिर आता नहीं,
असार यह संसार है॥ ८॥

वीरदत्तोदय।

१ (इतिहास)

॥ श्रीवीतरागाय नमः॥
शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग तरफथी प्रगट थतुं मासिक

दिगंबर जैन.

THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्तताम्, दैगम्बर जैन समाज मात्रम् ॥

वर्ष १० वाँ.	वीर संवत् २४४३. आषाढ-श्रावण. विक्रम सं० १९७३	अंक ९-१० वाँ.



रक्षाबंधन पर्व।

जैनियोंके कितनेकी त्योहार ऐसे हैं जो सार्वजनिक त्योहार रूपसे वर्षोंसे माने जा रहे हैं। उनमेंसे एक त्योहार रक्षाबन्धन पर्व भी है जो अभी ही श्रावण सुद १५ के दिन आनेवाला है। यह वही दिन है कि जिस दिन अकंपनाचार्यादि ७०० मुनियोंको बलिराजा द्वारा किया हुआ उपसर्ग विष्णुकुमार महामुनि द्वारा विक्रिया ऋद्धिके बलसे दूर हुआ था जिसके स्मरणार्थ हस्तिनापुरके रहीसोंने अपने हाथोंमें रक्षाका डोरा अपनी भगनियोंसे बंधवाया था और प्रति वर्ष इसी मुवाफिक होता रहा सो अबतक सार्वजनिक त्योहार रूपमें प्रचलित है। इस पवित्र त्योहारमें हमारा कर्तव्य है कि मन्दिरोंमें श्री सलूना पूजन यानि विष्णुकुमार महामुनिका पूजन करके रक्षाबंधनकी कथा सबको सुनाँ और अपनी भगनियोंसे रक्षाबंधनका डोरा बंधवाकर उनको कुछ न कुछ द्रव्य देते हैं उसी तरह इस शुभ दिनके स्मरणमें हमारी समाजसेविका भगनियोंको कुछ न कुछ दान भेजना चाहिये। यह सेविकाएँ कौन है और कहाँ है? ऐसा प्रश्न सहज उठेगा तो हम प्रथम ही सूचित कर देते हैं कि यह समाजसेविकाएं उत्पन्न करनेका स्थान बम्बईका **"श्राविकाश्रम"** है जिसको जैनमहिलाभूषण श्रीमती मगनबाई, श्रीमती कंकुबाई, श्रीमती ललिताबाई आदि भगनियों सुचारु रूपसे चला रही हैं परन्तु आश्रममें स्थायी फंड न होनेसे वार्षिक, मासिक या तो फुटकर सहायतासे कार्य निभाया जाता है इसलिये वर्षमें एकवार और सो भी यह रक्षाबन्धन पर्व जैसे पवित्र त्योहार पर तो इस आश्रमको अवश्य याद करना चाहिये और जो कुछ सहायता बन सके तुर्त ही मनीओर्डरसे भेजना चाहिये। श्राविकाश्रमका पता—जुबिली बाग, तारदेव, बम्बई है।

डेपुटेशन पार्टीका कर्तव्य।

श्रीमान स्वर्गीय विद्वद्वर्य स्याद्वादवारिधि वादिगजकेशरी न्यायवाचस्पति पं० गोपालदासजी बरैयाका नाम स्मरण रखनेके लिये उनका स्थापित "जैन सिद्धांत विद्यालय–मुरेना" के लिये एक लक्ष रुपयेका स्थायी फंड करके इस विद्यालयके साथ पंडितजीका नाम जोड देनेका प्रस्ताव इन्दौरकी मिटिंगमें हो चुका है और फंडमें करीब ५००००) भरे गये हैं और शेषके लिये पं० धन्नालालजी आदिका डेपुटेशन निकालनेका प्रस्ताव हुआ है जिसको एक महिना बीत चुका तो भी इस डेप्टेशनने इसके लिये क्या प्रयास किया यह कुछ भी जाननेमें नहीं आया। यह काम घर बैठे रहनेसे या लेख लिखनेसे नहीं हो सकेगा परन्तु शहरोंशहर जाकर पब्लिक सभा बुलाकर उसमें विद्यालयकेलाभ प्रकट करके जब उसी वक्त चंदा करावेंगे तब ही हो सकेगा। जिस कार्यप्रणालीसे माननीय पं० मदनमोहन मालवीयजी आदिने हिंदु युनिवर्सिटिके लिये घूम २ कर चंदा एकत्र किया था इस तरह यहकार्य भी होना चाहिये और सो भी बहुत ही शीघ्रताके साथ होनेकी आवश्यका है अन्यथा इस बातका विस्मरण हो जानेसे चंदा एकत्र करनेमें सफलता मिलना मुश्किल है।

शेठ कल्याणमलजीका शास्त्रदान।

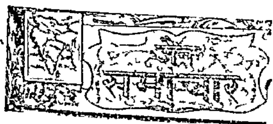
हमारे पाठक इन्दौर निवासी रावबहादुर दानवीर शेठ कल्याणमलजीसे तो अच्छी तरहसे परिचित हैं। आपने अपनी पूज्य मातुश्री फुलूबाईके स्मरणार्थ ६१०००) का दान प्रकट किया है जिसमें ५००) शास्त्रदानके लिये कहा गया है जिसके लिये सेठजीसे पत्रव्यवहार होनेपर इस शास्त्रदानका लाभ हमारे पाठकोंको देनेकी स्वीकारता मिली है और इस शास्त्रदानमें श्री अशगकविकृत महावीरचरित्र ग्रन्थ, कि जिसका हिन्दी अनुवाद हमने पं० खूबचंदजी शास्त्रीसे तैयार करवाया है, दिया जायगा। इसकी २००० कापीमें ऐसी मंहगीके समयमें खर्च अधिक पड़ेगा इसलिये १००) अधिक देनेकी शेठजीने कृपादृष्टि दिखलाई है और इससे और भी घाटा पड़ेगा तो ऑफिससे लगाकर यह "**महावीरचरित्र**" नामक नवीन उपयोगी ग्रन्थ हमारे पाठकोंको उपहार स्वरूप दिया जायगा। इसके छपनेका कार्य प्रारंभ होगया है और जहांतक हो शीघ्र ही प्रकट होकर ग्राहकोंकी सेवामें उपस्थित होगा। हमारे सभी उपहारोंमें इसवारका यह उपहारग्रन्थ बड़े ही महत्वका प्रकट होगा।

सोलहकारण और दशलक्षण पर्व।

हमारे सोलहकारण और दशलक्षणपर्वके दिन निकट आ रहे हैं और इसमें हमारे कइ भाई यह दोनों व्रत करेंगे और खास करके हरएक मंदिरजीमें दोनों व्रतोंकी पूजा तो अवश्य पढ़ी जायगी परंतु जहांतक हम जानते हैं पूजाके साथ २ इस पर्वका क्या माहात्म्य है और दर्शनविशुद्धि, विनयसंपन्नता शील-

मनेष्वनतीचारादि सोहल मावनाओंको समजाया नहीं जाता, जिससे इस पर्वमें हमारा क्या २ कर्तव्य होना चाहिये यह सर्व साधारणको मालूम नहीं होता इसलिये यह खास आवश्यक है कि इन दिनोंमें यह दोनों धर्मोकी २६ भावनाओंका वर्णन सबको सुनाया जावे और व्याख्यानादि द्वारा भी इस पर्वका महात्म्य प्रकट किया जावे। और जो कोई यह दोनों व्रत करते हैं उनको तो सोलहकारणधर्म और दशलक्षणधर्मकी कई पुस्तकें मंगाकर अपने २ नगरमे वितरण करनी चाहिए।



श्री सम्मेदशिखरजीके पट्टेका केस—इस पहाडका पट्टा हमको देनेके लिये सर एन्ड्रु फ्रेझर हुक्म कर गये थे और ९००००) अपनी तरफसे दिये भी गये थे परंतु वॉ० लार्ड मिन्टोने जाते समय यह हुक्म रद किया था जिससे हमारी तरफसे राजा पाल्गंजके उपर हजारीबागकी कोर्टमे ता० ९-९-१३ को दावा किया गया था कि पट्टा कर दिया जाय या तो हमारे रुपये, उसका सूद और आज तकका नुकशान हमको दिलाया जाय आदि। प्रथम बा० धन्नूलालजी और बा० परमेष्ठीदासजीके नामसे दावा किया था परंतु यह दोनों महाशयका अकस्मात् स्वर्गवास हो जानेसे रा० ब० दा० सेठ हुकमचंदजी, ला० जंबूप्रसादजी, सेठ हरसुखदासजी, ला० प्रभुदयालजी आदि ९ महाशयोंके नामसे दावा चलानेकी स्वीकारता ता० १-२-१५ को मिलने पर ता० १३-५-१५ को इस्युस (Issues) निकल कर विलायतको सर एन्ड्रु फ्रेझर और एफ० डबल्यू डयूकके इजहार लेनेके लिये कमीशन ता० १७ २-१६को गया था वह मार्च १९१७ को वापिस आया परंतु फ्रेझर साहेब बीमार होनेसे इजहार नहीं दे सके। बाद मुकद्दमा ता० २८-६-१७ को शुरू होकर अपनी ओरसे बा० मौजीलालजी, बा० सुन्दरलालजी बैनाडा, बा० दुर्गाप्रसादजी, बा० विहारीलालजी, एफ० डबल्यू० डयूक (कमीशनसे) की गवाही ली गई और मुद्दालयोंकी ओरसे बा० शीतलप्रसाद, बा० विपिनविहारी, लक्ष्मीचद (श्वे०) की गवाही हुई थी। बाद इसका चुकादा हजारीबाग कोर्टसे ता० २९-७-१७ को यह मिला कि मुकद्दमा मय खर्चेके खारिज (डिस्मीस) किया जाता है। इसका विशेष खुलासा पत्रद्वारा आनेपर मालूम होगा और आगे क्या कार्रवाई करनी चाहिये उसका भी विचार किया जायगा।

ढालगण विना मूल्य—कविवर टेकचन्द कृत **ढालगण** नामक छोटीसी पुस्तक, कि जिसमें ३२ उपदेशात्मक पदोंका संग्रह है इसके प्रकाशक-बालमुकुंद मूलचन्द जैन,

सिहोर छावनीसे आधे आनेका पोस्टेज स्टैंप भेजनेसे विना मूल्य मिलती है।

त्यागी ब्रह्मचारियोंका चातुर्मास-निम्नलिखित त्यागी ब्रह्मचारियोंके चातुर्मास निम्न लिखित स्थानोंपर होनेकी खबर हमें मिली हैं।

मुनि अनंतकीर्तिजी—कोल्हापुर।
" चंद्रसागरजी—बागीदोरा (बांसवाडा)
ऐलक पन्नालालजी—पहाडी धीरज, देहली।
ब्र० शीतलप्रसादजी—तुक्कुगंज, इन्दौर।
वर्णी भगीरथजी—खतौली (मुजफरनगर)
ब्र० शांतिदासजी—शाहपुर (निमाड)
ब्र० महावीरप्रसादजी—नासिक
भ० सुरेन्द्रकीर्तिजी—सोजित्रा (पेटलाद)
भ० विजयकीर्तिजी—ओराण (प्रांतिज)
भ० मुनींद्रकीर्तिजी—डुंगरपुर (रजपुताना)
ब्र० हेमसागरजी—करमसद (आणंद)

और भी त्यागी ब्रह्मचारियोंके चातुर्मासकी खबरें हमें मिलेगी तो प्रकट की जायगी।

झालरापाटन शहरमें—गत ता० १९ को सेठ लालचंदजी सेठीके सभापतित्वमें सभा हुई जिसमें देशभक्त श्री० दादाभाई नौरोजी और पं० गोपालदासजी बरैयाकी मृत्यु पर शोक मनाया गया जिसमें पं० गिरधर शर्माने यह दोनों महापुरुषोंके देशसेवा और समाजसेवाके कार्योंका बड़ी खूबीके साथ बयान किया। अंतमें सभापतिमहोदयने कहा कि अब भी इस देशमें कई दादाभाई और कई पंडित गोपालदासजी बन सकते हैं। चाहिये सच्ची देशसेवा, और समाजसेवाका दृढ़ संकल्प आदि।

प्रतिमा मिली—नयाबांस (हाथरस) से सुखवासीलाल जैन लिखते हैं कि यहांसे एक फर्लांगपर एक कुमारको बर्तनके लिये मिट्टी खोदते खोदते ११ हाथ जमीनके नीचेसे एक प्रतिमा प्राप्त हुई जो उन्होंने ले जाकर अपने मकानपर रख ली। बाद जाट कौमका एक मनुष्यने इसके मकानपर यह प्रतिमा देखकर कहा कि तु इस प्रतिमाको अपने मकानपर न रख आदि। फिर सबको कह देनेपर सब जैनी भाई यह प्रतिमा देखनेको आये और गत ता० १९ को श्री चन्द्रप्रभुजीके प्राचीन मंदिरमें यह प्रतिमा लाकर विराजमान की गई है। पंडित लोग परीक्षा करने आ रहे हैं। कोई पूजनीक कहता है और नहीं कहता है किप्रतिमा खंडित हो गई है, नाकपरकी नोंक नीची मालूम होती है आदि। इस बातका शीघ्र ही निर्णय होना चाहिये और प्रतिमाजीपर कुछ लेख मालूम होता हो तो प्रकट करना चाहिये।

ज्वरांकुश मुफ्त—माउलाल कन्हैयालाल पाटणी मु० कांबी (अहमदनगर) ने हमको "**ज्वरांकुश**" का नमूना भेजा है जिसके बारेमें आप लिखते हैं कि इससे सब प्रकारके ज्वर आराम होते हैं आदि और जैनियोंको डाकखर्च भेजनेपर हम मुफ्त भेजते हैं आदि। इसलिये जिन भाइयोंको ज्वरांकुश चाहिये पत्र और पोस्टेज खर्च भेजकर मंगा लेवें।

राजगृहीमें दो मुकद्दमें चल रहे थे। जिनका फैसला हो गया है और अपनी धर्मशालाके सामनेकी जमीन (एक खेत जिसका प्लाट नं० ४८४५ है) की अपीलमें पटना हाईकोर्टने ८००) हम लोगोंसे श्वे० भाइयोंको दिलवाये और जमीनका सब हक हमको दिला दिया गया है। इसमें नवीन मन्दिर बनवानेका शीलारोपण ता. २२-६-१७ को हस्ते ला० म्यादरमलजी देहलीके हुआ था। दूसरा मुकद्दमा पहाडके उपरके १९ मंदिर दि० आम्नायके हैं उनके कब्जे बाबतका विहार कोर्टमें चलता था जिसमें मजि० सा०ने नं० १४५ फौजदारीका नोटिश बहाल रखनेपर हाईकोर्टमें अपील की गई थी जिसका चुकादा माननीय जजोंने ता० ३-७-१७को किया कि खारिज किया जाता है आदि। हाईकोर्टमें यह दोनों फैसले हमारे ही लाभमें हुए हैं।

इन्दौरमें गत ता. २४-६-१७को मुरेना *विद्यालयको स्थायी करने और* उसके साथ स्व० पं० गोपालदासजीका नाम जोडनेके लिये रा० ब० दा० सेठ हुकमचन्दजीके सभापविरत्नमें सभा की हुई थी जिसमें १००००) सेठ हुकमचन्दजी, १०००) सेठ रोडमल मेघराज सुसारी, ५०१) फतेहचन्द इन्दौर और २५१) भीलाजी चांदुलालने दिये तथा ३८०००) तो सेठ हरीभाई देवकरण सोलापुरवालोंकी तरफसे पहलेसे मिलनेकी स्वीकारता हुई थी इससे एक लक्ष रु.के स्थायी फन्डके लिये और २००००) की जरूरत है।

खतौलीमें दस्सा अग्रवाल भाईओंको प्रक्षाल पूजनादिके लिये ता. २२-६-१७को दि० जैन चैत्यालयकी स्थापना ब्र० शीतलप्रसादजी द्वारा हो गई है। इस प्रकार दाहोदवाले अधिवेशनका प्रस्ताव अमलमें लाया गया और दस्से अग्रवाल भाईयोंको धर्मसाधनमें सुभीता हो गया है। प्रयासका फल!

टीका लगानेसे हानि—लाभशंकर लक्ष्मीदासने गजटमें एक पत्र प्रगट कराके दिखलाया है कि चेचक (शीतला) का टीका जो बच्चोंको लगाया जाता है उससे बहुत हानि होती है। इसके विरुद्ध लंडनमें एक सभा है जो इसके रोकनेका प्रयत्न करती है। पता है "National anti-vivi section league, Denison House, Vaixhall Bridge Road, London S. W." इसके उद्योगसे इंग्रेज सर्कारने विलायतमें जबर्दस्ती टीका करानेका कायदा उठा दिया है, अब लाखों इंग्रेज अपने बच्चोंको टीका नहीं लगवाते। वहां अब ५० लाख विना टीका लगे बच्चे हैं (बम्बई क्रानिकल मार्च १९, १९१७)। हम देशवासियोंको भी समझकर टीका लगानेसे बचाना चाहिये व सर्कारको भी यदि यह हानिकारक है तो इस बातको बन्द करा देना चाहिये।

"जैनमित्र"

पशु-वध बंद—छतरपुर (बुंदेलखंड) नरेशने अपने राज्यमें आज्ञा निकाली है कि (१) राज्यभरमें जितने तालाब हैं उनमें जाल या वंशी न डाली जाय अर्थात् मछलियां न मारी जाय। (२) राज्यभरमें मेरी आज्ञाके

सिवाय कोई शिकार न खेलें। (३) राज्यभरमें देवी देवताको जीवकी बली न दे। (४) राज्यभरमें बकरा बकरी लेनेवाले हिंसक और बेचनेवाले दोनोंसे चौथाई २ रुपये लिये जाय। दूसरे महाराजाओंको इन दयालु महाराजाका अनुकरण करना चाहिये।

बम्बई और अहमदाबादमें श्रीयुत वाडीलाल मोतीलाल द्वारा संयुक्त जैनबोर्डिंगकी स्थापना होगई है और झालरापाटनके महाराजा भवानीसिंह बहादुरने २० वर्ष तक इस संस्थाको ५००) वार्षिक सहायता (दस हजार रु०) देनेकी स्वीकारता दी है।

इन्दौरमें कंचनबाई श्राविकाश्रमका वार्षिकोत्सव और उद्योगशाला खोलनेका समारंभ श्री सो० कमलाबाई कीवेके सभापतित्वमें ता० १७-६-१७ को हुआ था। इसी मौकेपर प्रमुखा और संचालिका कंचनबाईजीका व्याख्यान बहुत ही प्रभावशाली हुआ था।

कन्याका दाम बढ गया—जयपुरमें भी कन्याविक्रयकी भरमार है। अभी एक *कन्या जिसका मूल्य ९००) पक्का कर लिया* था उसको २०००) देकर दूसरेने खरीद ली! अतीव खेद है कि जयपुरकी जैन पंचायती इसका कुछ प्रबंध नहीं करती।

इन्दौरमें सेठ हुकमचंदजी आदि तीनों भाइओंने मिलकर जो नवीन मंदिर करीब दो लाख रुपये लगाकर बनवाया है उसमें प्रतिमाजी विराजमान करनेका उत्सव आषाढ़ वदी १० को हुआ था जिस वख्त सेठजीने रु. ५०००) भरम्मन आदिके लिये और अपनी पत्नी सौ. श्री कंचनबाईकी तबीयत डेढ वर्षमें अच्छी हो जायगी तो १०००००) भर चांदीसे श्रीजीकी तीन प्रतिमा बनवाकर उपरकी वेदीमें विराजमान करनेकी प्रतिज्ञा ली है।

झघडाका अंत—छाबडा (टोंक)में करीब ९० वर्ष हुए दिगंबर और श्वेतांबरमें मंदिरके लिये झगडा चल रहा था वह अदालतसे तय होकर दिगंबर जीते और श्वेतांबरियोंको १६००) देने पडे। उस मंदिरजीमें आषाढ़ सुद १०मी को प्रतिमाजी भी पधराई गई और उत्सव भी किया गया था।

देहली निवासी बाबू प्यारेलालजी वकील **रायसाहिब**के पदसे विभुषित हुए हैं।

कचनेरमें विवाहोत्सवके समय पाठशालामें बड़ी सभा की गई और खंडेलवाल पंच महासभाका भी नैमित्तिक अधिवेशन होकर तीन प्रस्ताव पास हुए कि—सभाका अधिवेशन आगामी कार्तक सुदी १९ को कचनेरजीमें किया जाय, नादगांव वाली बाईके मृत्युपर *मुकद्दमा चलाया जाय और* नायडोंगरी वाले रुपचंदजीसे कुछ अनीति हो जानेके कारण दंड लिया जाय कि वे १०००) कचनेर पाटशालाको देवें और वहां जाकर कर्मदहन पूजाविधान करावें और सम्मेदशिखरकी यात्रा करें। यह अनीति क्या हो गई थी सो भी प्रकट होनेकी आवश्यकता है, जिससे समाजको मालूम हो जावे कि यह कैसा अपराध था और उसको उचित दंड दिया गया है या नहीं।

जबलपुरमें सिंघई गरीबदासजीके पौत्र-का ब्याह हो गया जिसमें विद्यादानमें तो कुछ भी नहीं दिया गया परंतु रंडीका नाच तो खूब कराया गया !!! खेद!

अलाहबाद बोर्डिंगसे इस वर्षकी कोलेजकी परीक्षामें बैठ हुए १६ विद्यार्थियोंमेंसे १४ पास हुए हैं।

દાનવીરની સ્મૃતિ સભા-શ્રીમાન સ્વર્ગીય દાનવીર જૈનકુલભુષણ શેઠ માણેકચંદજી જે. પી ના સ્વર્ગવાસની સ્મૃતિ સભાઓ અષાડ વદ ૯ ને દિને મુંબઇ શ્રાવિકાશ્રમ, અમદાવાદ બોર્ડિંગ, કોલ્હાપુર બોર્ડિંગ, અને રતલામ બોર્ડિંગમાં થઇ આ શેઠજીના અલૌકિક ગુણોનું વર્ણન થઈ તેનું અનુકરણ કરવાનો બોધ અપાયો હતો. દરેક સ્થળે દર વર્ષે આવી સભા થવાની જરૂર છે.

સોલાપુરમાં તા. ૧૭-૯-૧૭ ને દિને શ્રી સેડો શ્રીમતી તારાબાઇનું 'સ્ત્રીઓને કસરત કરવાની જરૂર' ઉપર જાહેર ભાષણ અપાયુ હતું તથા જૈન પાઠશાળામા સ્ત્રિયોપયોગી કસરતો બતાવી વ્યાખ્યાન અપાયું હતું. વળી ત્યાની ગૌતમ નેમચંદ વ્યાયામશાળાના મહીની પેચો જોઈ મિસ તારાબાઇ પ્રસન્ન થયા હતાં અને પોતાના એક પ્રેસની અડધી ઉપજ વ્યાયામશાળાને અર્પણ કરી હતી.

અમદાવાદમાં એક દિગંબરીનું ગુમ થવું-જાણુકી (અમનગર, ઈડર) થી શા માણેકલાલ ભાઇચંદ એક પત્ર દ્વારા જણાવે છે કે" મારા ભાઇ છગનલાલ ભાઇચંદ (કે જેની ઉમર ૨૪ વર્ષની અને રંગે સ્વાભિક ગોરાશ છે) અષાડ સુદ ૭ ને દિને ઘીના ડબ્બા લઇ અમદાવાદ વ્યાપાર માટે ગયા હતા અને ત્યા ઉતરી ઘીના ડબ્બા દલાલને ત્યાં મુકી વીસીમાં જમવા ગયેલા તે દરમ્યાન કાલુપુર બહારની વીસીમાં મંગલભાઈના ડેલાના માળ ઉપર અગર નીચે બેકર નુસ (?) ના માણસોએ તેને એકલો જોઇ ગભરાવી નાંખી માળ ઉપર ચઢાવી કબજે કરી અષાડ સુદ ૮ ને દિને પૂના લઇ ગયેલાનું જણાયાથી અમે તથા અમારા બનેવી મગનલાલ લખમીચંદે ત્યાં જઇ તપાસ કરી, પણ બે દિવસ રાખી ત્યાંથી કયે ઠેકાણે લઇ ગયા તેનો પત્તો નથી, પણ સ્વાભાવિક રીતે અમારા જાણવામાં આવે છે કે પંજાબ તાબે રૂડકી લઇ ગયેલાનું સંભળાય છે, જેથી રૂડકી તરફના દિગંબર જૈનો આ બાબતની તપાસ કરી અમારા ભાઇને છોડાવે તો મહાન પુણ્યબંધ કરી શકશે. અમારે શું કરવું તેની કંઇ સમજ પડતી નથી અને નીરાશ થઇને બેઠા છીએ. વળી આપણા દિગંબરી ભાઇઓએ અમદાવાદ વગેરે શહેરોમાં જતાં બહુ હોંશિયારી રાખવી જેથી ફરીથી આવા લોકો ફસાવી જીંદગીને હાનિ કરે નહી, તેમ જૈન લોકોએ અમદાવાદની વીસીમાં જમના જવું નહીં કારણકે એ લોકો ગમે તેવા માણસને લાલચ આપી પાછળ રહીને ફસાવે છે. વળી એ વીસીઓમાં જમવાથી વટલાઇ મરવા જેવું થાય છે તથા જીંદગીને પણ નુકશાન થાય છે, માટે એથી સાવધ રહેવું..."

જો આ બાબત ખરી હોય, તો **નામદાર સરકારે** આ બાબત ઉપર તરતજ તપાસ કરી ભાઇ છગનલાલ ભાઇચંદનો પત્તો મેળવી આપવાને બનતું કરવાની આવશ્યકતા છે.

આ વર્ષે ભાદરવા માસ બે હોવાથી તથા પર્યુષણ પર્વમા એક તિથિ ઘટતી હોવાથી સોલહકારણ પર્વ પ્ર. ભાદરવા સુદ ૧૫થીજ શરૂ કરવાના છે તેમજ દશલક્ષણપર્વ બીજા ભાદરવા સુદ ૪ થીજ શરૂ કરવાના છે અને પંચમેરૂ સ્થાપના તથા પંચમીનું વ્રત તો પાંચમેજ કરવાનું છે જે અમો અમારા પંચાગમાં પ્રકટ કરી ગયાજ છીએ, પણ પ્રાચીન રિવાજ મુજબ કેટલાક ભટ્ટારકો પર્યુષણના દિવસોનાં ટીપણા ! ગામેગામ બીડે છે તેમ ડુંગરપુરથી ભ. સુનીંદ્ર-

કીર્તિએ વ્રતનો વ્યોરો ગામેગામ બીડયો છે તેમાં પ્ર. ભાદરવા વદ ૧ થી સોલહકારણ અને પંચમેરૂ તથા પંચમીનું વ્રત બીજા ભાદરવા સુદ ચોથે કરવાનું લખ્યું છે તે તદ્દન ખોટું છે, માટે એથી ભ્રમણામાં પડવું નહિ. મોટાઇ મેળવવાના લોભથી આવા પ્રયાસ કરનારા અપઢ ભટ્ટારકોથી સર્વેએ વારંવાર સાવધ રહેવાની જરૂર છે.

મૃત્યુ સમયે દાન—આમોદના હરજીવન (કાળીદાસ) હરગોવનદાસના પુત્રના સ્મરણાર્થે ૮૦) નું દાન નીચે પ્રમાણે કરવામાં આવ્યું છે—

૧૦) અમદાવાદ શ્રે. મો. દિ. જૈન બોર્ડિંગ, ૭) શ્રાવિકાશ્રમ, મુંબઇ, ૬૩) તીર્થો, ગામોના મંદિરો તથા સદાવ્રત વગેરેમાં.

ભ. વિજયકીર્તિએ ઓરાણમાં ચાતુર્માસ કરી દીધો છે, તેમના સંબંધમાં એક લખનાર જણાવે છે કે એમની સાથે પાલખી ઉંચકનારા ભોઇઓ સિવાય બીજા ૧૦ માણસો તથા ૪ ઘોડા છે (હજુ આ રાજ્યવૈભવ તો બહુ થોડો કહેવાય !). ઓરાણ પ્રાંતિજ વિભાગોમાં ભાવનાઓ આપવાની મરજી ન હોવા છતાં પણ એક ગામવાળાએ આપી, બીજા ગામ વાળાએ આપી એમ કરતાં બધા ગામવાળાઓને આપવી પડે છે ! ન આપવાવાળાને પણ આપવી પડે છે તેનું કારણ એ છે કે ન્યાતિમાં આપણી હલકાઇ પડશે ને નિંદા થશે અને એ વાત ખરી છે કે જે માણસ ભટ્ટારકજી મહારાજના મત (ધારા !) પ્રમાણે ન ચાલે તેની દરેક વાતમાં ને રીતમાં બદબોઇ કરે છે ને મહારાજના મતને પુષ્ટિ આપે છે વગેરે." મહારાજની એક દિવસની ભાવનામાં કુલ્લે કેટલો ખર્ચ થાય છે અને એક ભાવના દીઠ વધુમાં વધુ કેટલા રૂપ્યા પડાવાય છે તે પણ આ ભાઇ લખી મોકલશે તો અમે પ્રકટ કરવા ઇચ્છીએ છીએ. ઓરાણ પ્રાંતિજના ભોળા ભાઇઓ શું હજી નહીં ચેતશે ? એવા બક્ષા (!) ભટ્ટારકો ગુજરાતના ભોળા ભક્તોને ભમાવવામાં હોંશિયાર છે એમાં કંઇ શક નથી.

મેવાડા યુવક મંડળને સૂચના—સોજીત્રામાં આ મંડળની થયેલી બેઠક સંબંધમાં કાણીસાતી મિત્રમંડળી એક પત્ર દ્વારા જણાવે છે કે એ બેઠકમાં ગામડાઓમાં બરાબર આમંત્રણ ન થવાથી જોઇએ તેવી સંખ્યા એકઠી થઇ નહોતી માટે મંડળનું કાર્ય મજબુત કરવાને નીચલા પ્રયાસો થવાની જરૂર છે—(૧) હેતુઓ છપાવી પ્રકટ કરવા (૨) દર છમાસે બેઠક કરવી, ૩) સાધારણ અમુક ફી લેવી વગેરે.' આ બાબત એના કાર્યકર્તાઓએ લક્ષ આપવાની જરૂર છે.

પેથાપુરની પાઠશાળામાં અખાડસુદ ૧૧ને દિને શીવગંજના શા. પ્રેમચંદ કસ્તુરચંદના પ્રમુખપણા નીચે થયેલી સભામાં શા. ચુનીલાલ સાંકળચંદે માનસિક શક્તિ વિષે ભાષણ આપ્યું હતું. અત્રે ૨૦ની સંખ્યા લાભ લે છે. પ્રમુખે રૂ. ૧૦) નું ઘડીયાળ, ૨) મદદ અને પ્રભાવના વેંચી હતી.

નવાગામ (ઉદેપુર) માં એક વર્ષ થયાં દોભાડા કસ્તુરચંદ અમથારામ દિ. જૈન પાઠશાળાની સ્થાપના થઇ છે તેની મુલાકાત કેશરીયાજીની યાત્રાએ જતાં શેઠ લલ્લુભાઇ લખમીચંદ ચોકશી, વીરચંદભાઇ (મુંડેટી) અને મુનીમ નાનચંદે લીધી હતી, જેથી જણાયું છે કે કુલ સંખ્યા ૫૦છે, જેને વ્યવારિક અને ધાર્મિક શિક્ષણ અપાય છે. શિક્ષણ તપાસતાં તે સંતોષ કારક જણાયું હતું અને વિદ્યાર્થીઓને ઉત્તમ બોધ આપી ઇનામ વેંચવામાં આવ્યું હતું.

જાહેર સભા અને દારૂ નિષેધ—વડાસણ (મહીકાંઠે)માં શા. હાથીચંદ માણેકચંદ સોનાસણવાળાએ જઇ એક રાત્રે જાહેરસભા કરી ગામના ૪૦૦ માણસોને એકત્ર કરી દારૂ નિષેધપર અસરકારક વિવેચન કરવાથી ગામના રજપુત વગેરે તમામ લોકોએ દારૂ નહીં પીવાની પ્રતિજ્ઞા લીધી હતી અને સહીઓ કરી આપી હતી તેમજ એ ઠરાવ તોડે તેની પાસે રૂ. પા દંડ લેવાનો અને તે દંડનો ઉપયોગ યોગ્ય ખાતામાં યોજનાપૂર્વક કરવાને એક કમીટી પણ નીમાઇ હતી. પ્રયાસનું ફળ !

लग्नने नामे बाळाओ उपर थतो जुलम.

સંધ્યાકાળનો વખત થયો છે. સૂર્ય પશ્ચિમ દિશામાં પોતાની ગતિથી જઈ રહ્યો છે. દિવસનું અજવાળું મંદ પડવા લાગ્યું છે. પશ્ચિમ દિશામાં રંગબેરંગી કલર દેખાય છે. રાત્રિ પોતાનો અંધકાર ધીરેધીરે આકાશમાં પ્રસરવા લાગી છે. જિનમંદિરમાં આરતી થતી હોવાથી ઘંટમંજરી આદિનો અવાજ થઇ રહ્યો છે ભવ્યજનો જિનમંદિરમાં આરતી થાય છે એમ જાણી ઘરકામ બંધ કરી મંદિરમાં જાય છે આરતી થઇ રહ્યા પછી શાસ્ત્રસભા થઇ ત્યાર પછી પાઠશાળા ઉઘડી સઘળા વિદ્યાર્થીઓ પાઠશાળામાં ભેગા થયા છે તેવામાં મોહનલાલને તેમના મિત્ર છોટાલાલનો સમાગમ થયો. એ બન્ને મિત્રો વચ્ચે થોડીવાર જાતિ ઉન્નતિ વિષે ચર્ચા થઇ, ત્યારપછી મોહનલાલે છોટાલાલને કહ્યું કે આ વર્ષે તો આપણી જાતિમાં એવા બનાવ બન્યા છે કે જે સાંભળવાથી આપણને ખેદ થાય છે.

છોટાલાલ—શું, શું, ભઈ?

મોહનલાલ—તમે જાણતા નથી કે ઘણી સુવતીઓ શોક રૂપી અગ્નીએ વીંધાઇ ઘણું દુઃખ ભોગવે છે અને ઘણીની જીંદગી વૃદ્ધ અને બાળ પતિને પાલવે પડવાથી રદ થઇ ગઇ છે.

છોટાલાલ—આવા દુષ્ટ કર્મોનું ફળ તમામના જોવામાં આવે છે તોપણ સમજતા નથી કે કેટલીક તરૂણ બાળાઓને આખી જીંદગીસર અસહ્ય દુઃખ ઉઠાવવું પડે છે.

મોહનલાલ—પણ મિત્ર, આપણી જાતિમાં બાળલગ્ન મોટા પ્રમાણમાં થાય છે. છતાં જાતિ અગ્રેસરોની આંખ ઉઘડતી નથી તે આપણું અને જાતિનું દુર્ભાગ્ય સૂચવવા પુરતું છે. "જેના આગેવાનો આંધળા, તેનું કટક પણ કુવામાં પડે" એ કહેવત પણ હવે ખાત્રી કરી ચુકી છે.

છોટાલાલ—પણ હાલમાં તો જે બનવાનું તે બન્યું. પૈસા આપણા એક જાતિ ભાઈએ પોતાની બાળપુત્રીના લગ્ન વૃદ્ધ સાથે કરી તેનો જન્મ વ્યર્થ કર્યો છે.

મોહનલાલ—આવાં કૃત્યો કરવાને તેના લેનાર દેનાર તથા તેમાં સંમતિ આપનારાઓજ અંધ થાય, તેમાં તરૂણ બાળાઓનો શો અપરાધ? અર્થાત્ કંઇ નહિ.

છોટાલાલ—ભાઈ, આવા ઉઘાડી આંખે પોતાની વહાલી બાળાઓને કુવામાં નાંખવા કોણ અલ્પ બુદ્ધિના તૈયાર થયા હશે.

મોહનલાલ—મારા વાંચવામાં આવ્યું છે કે-

સ્વાર્થી ભણ્યા શાસ્ત્ર લખનાર,
નહિ કોઇ નાર પક્ષ કરનાર;

તેમ જ્યાં સુધી આપણી જાતિમાં બાળલગ્ન અને વૃદ્ધ વિવાહ સંબંધી કંઇ પણ પ્રબંધ થયો નથી ત્યાં સુધી હું તો એમજ કહીશ કે આવાં કૃત્યો કરનાર તથા તેને સંમતિ આપનારાઓજ અધમગામી છે.

છોટાલાલ—અરે! અજ્ઞાની માણસો અજ્ઞાને વશ થઇ પોતાની બાળાનું કંઇ હિત ચાહતા નથી. બસ, પૈસા અને કુળજ ફક્ત જુવે છે. સુવતીઓ કેવો છે તેની કંઇ ખોળ ખોજ કરતા નથી અને પોતાની મિથ્યા મોટાઇ અને પૈસાના સ્વાર્થેથી બાંકડાની કોટે ગાળા બાંધ્યા જેવું કરે છે.

મોહનલાલ—બંધુ! આપણે એકે જુજ કિંમતનું કપડું લેવાને કેટલો બધો વિચાર કરીએ છીએ, તેમ રસ્તામાં સારા સંગાતને માટે કેટલી કાળજી રાખીએ છીએ તેટલી કાળજી જે જન્મ પર્યંતનો સાથી કરવાનો છે, જેના પર સુખદુઃખનો આધાર રાખવાનો છે તેને માટે અંધકારરૂપી અજ્ઞાનને વશ થયેલા કેટલાક માણસો કંઇપણ વિચાર કરતા નથી. અમારૂં બુદ્ધિ પવિત્ર! કહેવામાં (જ્યાં રુચિને

આધીન થઇ અઘટિત જોડાં મેળવે છે તે કેટલું શોચનીય અને વિચારવા જેવું છે? એથી કેવાં માઠાં પરીણામો આવે છે તે તેઓ અનુભવે છે, દુનિયામાં જુએ છે, છતાં છતી આંખે પોતાના પગમાં કુહાડો મારી દુઃખ વહોરી લેછે અને નીચેની કહેવત મુજબ બને છે.

"બે આત્માના પ્રણય ઉર આદેશ જાણ્યા વિનાનાં,
લગ્નો કીધાં લગ્ન નહિ એ સાખ શ્રુતિ પુરે? હા;-
ડાહી સ્ત્રીને અબુધ પતિ એ ધા ઉંડા અંતરે છે,
જોડી વિના જીવન ઝરણું ના વહાવ્યું વહે છે.

છોટાલાલ—ભાઇ, તમારૂં કહેવું સત્ય છે. બાળાઓ ખરેખર ધ્રુસકે રૂવે છે, તોપણ આપણી જ્ઞાતિના કેટલાક અજ્ઞાની ભાઇઓ પોતાનો તુચ્છ ટેક છોડતા નથી, માત્ર ખોટી મોટાઇને વળગીને પતંગીઆની માફક ચાહોમ કરીને વિચાર કર્યા વિના એકદમ સાહસભર્યું કામ કરે છે અને અંતે તેમને પાછળથી ઘણું સોસવું પડે છે.

મારા સુજ્ઞ ભાઇઓ અને જ્ઞાતિ અગ્રેસરો, મારી નમ્રતા પૂર્વક દરેક પ્રત્યે વિનંતી છે કે આપણે તેનું મૂળ કારણ ટૂંકમાં જોઇશું તો જણાશે કે આપણે કેળવણીમાં કેટલા પછાત છીએ! લગભગ આપણા દેશનો ⅞ ભાગ કેળવણીમાં પછાત છે. આપણા દરેક ભાઇઓની ફરજ છે કે પોતાના છોકરા તથા છોકરીઓને સારી કેળવણી આપે. કેળવણી માટે વડોદરા રાજ્યના નામદાર ગાયકવાડ મહારાજા ખાસ ધ્યાન આપે છે અને ફરજયાત કેળવણી અપાય છે. તેઓ શ્રીમતે બાળલગ્ન માટે ફરજીઆત કાયદો ઘડ્યો છે અને આપણું ઘણું હિત ઇચ્છયુ છે તેથી આપણે તેઓ શ્રીમંતનો જેટલો આભાર માનીએ તેટલો ઓછો છે. આવા આપણા માયાળુ સરકાર તરફથી લાગણી લેવાયા છતાં આપણા કેટલાક ભાઇઓ દંડને પાત્ર થાય છે, તોપણ આ વિષયપર કંઇ પણ ધ્યાન આપતા નથી, તે ઘણું ભૂલ ભરેલું છે. જ્યારે આપણે આપણા સંતાનને કેળવણી આપીશું અને જ્ઞાતિમાંથી કુરિવાજો દૂર કરીશું, બાળલગ્ન, કન્યા વિક્રય, વૃદ્ધવિવાહ વીગેરે કુરિવાજોનો યોગ્ય પ્રબંધ કરી તે અટકાવવા અને તે બદલ એકપતાથી ધ્યાન ખેંચીશું, તો આપણી ચઢતી થશે અને આપણે ઉચ્ચ સ્થિતિ પર આવીશું.

એક દશાહુમડ જ્ઞાતિ સેવક.

मानो कही हमारी।

(गज़ल)

उन्नति जो चाहो करनी, मानो कही हमारी।
परमाद त्याग दो अब, मानो कही हमारी ॥१॥
हैं लाखों जैनी ऐसे, नहिं मूल मंत्र जानें।
परचार करदो घर घर, मानो कही हमारी ॥२॥
अज्ञानसे हो अंधे, पूजै कुदेव बहुते।
दो सत्यदेव बतला, मानो कही हमारी ॥३॥
बहु ठगियों जालियोंको, गुरुदेव जान पूजें।
बतलादो सत्य गुरुको, मानो कही हमारी ॥४॥
षट् कर्म मुख्य श्रावक, पाले न बहुत भाई।
बतलादो मुख्य कर्तव्य, मानो कही हमारी ॥५॥
विद्यासे हीन होकर, नहीं शास्त्र देख जानें।
विद्या प्रचार करदो, मानो कही हमारी ॥६॥
शास्त्रोंके ज्ञान के बिन, होजांय शट विधर्मी।
उन गिरतों को उठालो, मानो कही हमारी ॥७॥
इस 'रत्न' धर्मका अब, करदो प्रचार घर घर।
जैनी कहाने वालो, मानो कही हमारी ॥८॥

रतनलाल झाझरी कोसीकलां (मथुरा)

शेठ प्रे. मो. दि. जैन बोर्डिंग स्कूल—अमदावाद.

મહેરબાન મહાશયો,

ઉપરના નામવાળા ખાતાના સર્વ હિત ચિંતકોને માલુમ છે કે ગયા વરસ સન્ ૧૯૧૬ની સાલમાં દિવાળી પહેલાં રિવાજ મુજબ એક મેળાવડો થયો હતો, જે વખતે વિઝીટર્સ કમીટીની એક બેઠક થઇ હતી, જેમાં અન્ય કામો સાથે કલબ સીસ્ટમ અને કીચન સીસ્ટમ ઉપર કેટલીક ચર્ચા થઇ હતી ખાતાંના કાર્યવાહકો તરફથી એવી દલીલ રજુ કરવામાં આવી હતી કે હાલની મોંઘવારી તથા વિદ્યાર્થીઓની ખોરાક સંબંધી ચાલુ ફરીઆદો વગેરે અગવડો દૂર કરવા તથા ખાવાની લાયકતા સચવાઈ રહેવા માટે તેનું ખરચ તેની આવકની હદમાંજ રહે, એવા હેતુથી કલબ સીસ્ટમની તરફેણમાં કાર્યવાહકો હતા, જ્યારે કમીટીના કેટલાક ગૃહસ્થોનું માનવું હતું કે કલબ સીસ્ટમથી હાલની કાયમ આવકમાંથી ગરીબ વર્ગના વિદ્યાર્થીઓ જેઓ હાલ નોન પેઇંગ કે હાફ પેઇંગ તરીકે દાખલ થાય છે, તેમને મળતો લાભ અટકી દરેક વિદ્યાર્થીને માથે ખરચનો બોજો વધી જશે, તેથી એ નવી સીસ્ટમ હાલ બે વરસ દાખલ કરવી અટકાવીને આવકમાં કંઇક વધારો થાય એવાં પગલાં લેવાં. છેવટે કમીટી એવા નિશ્ચય ઉપર આવી હતી કે સન્ ૧૯૧૭–૧૮ ને સન્ ૧૯૧૮–૧૯ (માર્ચ સન ૧૯૧૯) સુધી જુની રૂઢી પ્રમાણે કીચન સીસ્ટમ ચાલુ રાખવી અને તે દરમ્યાન સન્ ૧૯૧૭ (ચાલુ) સાલના વાર્ષિક મેળાવડા વખતે કમીટીએ આવક વધારવાનો કંઇક રસ્તો શોધી કાઢવો, જેથી ગરીબ વિદ્યાર્થીઓને ભવિષ્યમાં લાભ મળશે ચાલુ રહે.

આ ઉપરથી વિઝીટર્સ કમીટીના મેંમ્બરો તથા મેમ્બર સાહેબોને મારી વિનતિ છે કે સન્ ૧૯૧૭ ની સાલના મેળાવડા માટે વખત નજીક આવ્યો છે તો તે સંબંધી આજથી વિચાર કરી કંઇક સંગીન મદદ મળે એવી ગોઠવણ થવી જોઇએ. આજકાલ હાલના સુધરેલા જમાનામાં ચારે દિશાઓમાં બધી કોમમાં કેળવણીનાં વાજાં વાગી રહ્યા છે. જુદા જુદા પ્રકારે દરેક શ્રીમંત પોતાના ધનનો ઉપયોગ કેળવણી વધારવામાં કરી રહેલ છે તેના જાગૃતિપ્રિય સતેજ વખતમાં આપણા શ્રીમંતો અને કેળવાયલાઓ જો ઉંઘે તો દુનિયાની કેળવણીની સરતમાં તેઓ પાછા પડી જશે. શ્રીમંત મર્હુમ દાનેશ્વરી શેઠ માણેકચંદ હીરાચંદ અને સખાવતે બહાદુર તેમના કુટુંબે આવા ખાતા માટે આપણા ગુજરાતમાં પહેલ કરી આપણને જાગૃત કર્યા છે—પાણી સીંચી આપ્યું છે ત્યારે ૧૪ વરસ પછી પણ આપણે તેને પુર જોશમાં લાવવું એ હાલના કેળવાયલા યુવાનો અને શ્રીમંત સખી મરદોનું કામ છે. ગુજરાતના સદ્‌ગૃહસ્થો, હજી તો આ કેળવણીનું પહેલુંજ ખાતું છે તેને મક્કમ કરવા માટે જાગૃત થાઓ, જોશ રાખો અને પ્રમાણિક નિષ્ઠાથી કામ કરી પોતાની ફરજ બજાવો. આપણા વડીલોની પ્રતિષ્ઠા સાચવી રાખો, વધારો. કેળવણી વિના આપણી વ્યાપારી કોમ અંધકાર અવસ્થામાં પડી રહી છે તેને અજવાળામાં લાવવા મારા બહાદુર કેળવાયલા રત્નો બહાર પડો. તન, મનથી પુરતી મદદ આપો અને તેથી કરી શ્રીમંત સખી ગૃહસ્થોના ઉદાર હાથને ધનથી લંબાવ. પ્રયત્ન કરો. એક હાથે તાળી પડતી નથી. શેઠ હીરાચંદ ગુમાનજીના કુટુંબે પહેલ કરી દુનિયાની દૃષ્ટિમાં આપણને આગળ મુકયા છે તો તે મોભો સાચવી રાખવા તન મન ધનથી પુરો પ્રયાસ કરશો તો વીર ભગવાન તમારા કાર્યને યશ આપશે. તથાસ્તુ '

श्री वृषभ निर्वाण संवत् पर-शंकाएं और उनका उत्तर।

(ले० पं० बिहारीलालजी जैन, अमरोहा)

[गतांकसे आगे]

अब रही दूसरी शंका कि **किस जैन ग्रन्थके** आधार पर और **किस प्रकार** यह सम्वत् निकाला गया है। इस शंकाके विषयमें हमारे किसी २ **जैन भ्राताने** बड़े आश्चर्यजनक शब्दोंमें लिखा है कि क्या सागरोंके भी वर्ष हो सकते हैं ? जैसे सागरके जलकी थाह नहीं ऐसे ही सागरके वर्षोंकी गिनती नहीं। सागरके वर्षोंकी गिन्ती करना मानो समुद्रको चुल्लूमें माप लेना और अज्ञानोंको भ्रममें डाल देना है। यदि सागरके वर्षोंकी गिन्ती हो सकती तो **बड़े २ जैनाचार्योंने क्यों** शास्त्रोंमें नहीं लिखा तथा एक योजन (दोसहस्र कोश) व्यासका और एक योजन ही गहरा गड़ा भोगभूमिके सात दिन तकके मेंढ़ेके बालाग्रोंसे खूब भरकर और सौ २ वर्षके अन्तरसे एक २ टुकड़ा निकालना बताकर जो एक पल्यके वर्षोंकी गणना आचार्योंने बताई है वह इतने चक्करमें डालकर किसलिये कथनको इतना बढ़ाया और अपने समयादिको खोया ? बस अंकोंमें पल्यके वर्षोंकी गिन्ती लिख देते इत्यादि......। इसके उत्तरमें शास्त्रप्रमाणों द्वारा शंका दूर करनेसे पहिले यह निवेदन है कि उपरोक्त बातोंको दृष्टिगोचर करते हुए हमारे भ्रातृगण जो कुछ शंका करें वह ठीक ही है। वास्तवमें कालके बहुत बड़े भागको **"सागर"** का नाम इसी लिये दिया गया है कि वह सागर अर्थात् समुद्रके समान **महान** है। सागरके महान कालको जिस सागर (समुद्र) से उपमा जैन ग्रन्थोंमें दी गई है वह सागर (समुद्र) भी कोई सामान्य सागर "हिन्द महासागर" या "पासिफिक महासागर" आदि जैसा छोटा सा नहीं किन्तु उसकी उपमा उस **"लवण समुद्र"** नामक महासागरसे दी गई है जो एक लक्ष *महायोजनके व्यासवाले "जम्बूद्वीप" के गिर्दागिर्द दो लक्ष महायोजन चौड़ा और एक सहस्र महायोजन गहरा वलयाकार है या इसके महत्वको भले प्रकार समझनेके लिये यों जान लीजिये कि अंग्रेजी विज्ञानानुसार आजकलकी मानी हुई सारी पृथ्वी जिसमें "एशिया, युरुप, अफरीका, अमेरिका" आदि सर्व देश देशान्तर और "हिन्द महा सागर

---

* एक महायोजन दो सहस्र कोस या लगभग ४ सहस्र मीलका होता है।

पाम्फिक महासागर, अटलांटिक महासागर" आदि सर्व छोटे बड़े समुद्र गर्भित है ऐसी बड़ी २ लाखों करोड़ों पृथिवियां जिस एक ही "लवण समुद्र" में समा सकती है। ऐसे बड़े सागर (समुद्र) से सागरके कालको उपमा दी गई है। ऐसी अवस्थामें हमारे भ्रातृगणकी यह शंका कि "सागरके कालको वर्षोंमें गिन लेना और वह भी एक सागरको नहीं किन्तु कोडाकोडि सागर महान कालको केवल ७६ ही अंकोंमें गिन लेना मानो सागरको चुल्लूमें माप लेनेकी समान सर्वथा असम्भव है आदि" वास्तवमें यथार्थ है। परन्तु जिस समय ऐसी शंका करनेवाले भ्रातृगणको यह ज्ञात होगा कि इतने अधिक बड़े "लवण समुद्र" के सम्पूर्ण जलके यदि बहुतसे छोटे २ बिन्दु सरसोंके दानेके बराबर कर लिये जावें तो उन सर्व बिन्दुओंकी सख्या ७६ अंक तो दूर रहे ४७ अंकसे भी अधिक न बढ़ेगी, तबतो उनकी शंका मासे सी बाहर निकलकर न जाने कहांसे कहां तक पहुँच जायगी। और फिर जिस समय उन्हें यह ज्ञात होगा कि गणितज्ञके लिये गणितज्ञ भी कोई पूर्ण गणितज्ञ नहीं किन्तु सामान्य होके लिये लवण समुद्र तो क्या, उससे लाखों करोड़ों गुणे बड़ महासमुद्रके सरसोंसे भी शताश सहस्राश छोटे छोटे बिन्दुओंकी गिन्ती बता देना एक वैसी ही साधारण सी बात है जैसे कि किसी दीवारकी ईंटोंकी गिन्ती बता देना है, तबतो नहीं कहा जा सकता कि उनके चित्तकी उधेड़बुन उनके विचारोंकी ट्रेनको कहांसे कहां पहुंचा दे।

अब रही यह बात कि यदि सागरके कालकी गिन्ती वर्षोंमें निकाल लेना सम्भव होता तो बड़े २ आचार्योंने भी निकालकर शास्त्रोंमें क्यों न बतादी अथवा पल्यकी संख्याको बतानेके लिये महान गढ़ा खोदने और बालाग्र भरने आदिका आडंबर क्यों रचा? इसके उत्तरमें निम्नलिखित निवेदन है—

(१) आचार्योंने तो सब कुछ निकाल कर शास्त्रोंमें रख दिया (जैसा कि आगे चलकर इसी लेखसे आपको ज्ञात होगा) पर जब हम ऐसे ग्रन्थोंको देखें पढ़े और ध्यान पूर्वक समझनेका प्रयत्न करें तब ही तो जानेंगे। हमारे पवित्र और सम्पूर्ण विद्याओंके भंडार-रूप जैन ग्रन्थोंमें कोई बात कल्पित व मन गढ़न्त नहीं किन्तु जो कुछ है वह सर्व वास्तविक और यथार्थ है और हर विषयको ऐसी उत्तम से उत्तम रीतिसे समझा दिया गया है कि योग्य रीतिसे ध्यानपूर्वक समझनेवालेको कुछ भी कठिनाई नहीं पड़ती। पल्य और सागरादिका हिसाब लगा देना तो एक बहुत ही साधारण और छोटीसी बात है पर जैन ग्रन्थों मे तो गणित विद्याके (अन्य विद्याओं या विषयोंके समान) बड़े ही उत्तम २ साधनादि बताकर विषमसे विषम और कठिनसे कठिन प्रश्नों और सूक्ष्मसे सूक्ष्म बातोंको इस उत्तम और सुगम रीतिसे साध कर सिद्ध कर दिखाया है कि देखकर आज कलके स्कूलोंके पढ़े पढ़े २ गणितज्ञ तथा विद्वान महाशय बातों तले उंगली दबाकर अचम्भेके समुद्रमें,

(२) एक महायोजन अर्थात दो हज़ार कोस या लगभग चार हज़ार मील व्यासका और इतना ही गहरा गोल गर्त्त खोदकर जो पल्यका हिसाब समझाया गया है। उसका एक कारण तो यह है कि पल्य शब्दका अर्थ ही खत्ती खलियान, गढ़ा या गार है। दूसरा मुख्य कारण यह है कि पल्यके बड़े भारी कालका महत्व भले प्रकार चित्तपर अंकित हो सके। यदि उसके वर्षोंकी महान् संख्या-को केवल अंकोंमें लिख दिया जाता (जो ४७ अंक प्रमाण ही है) तो उसके वर्षोंकी संख्या को केवल अंकोंमें लिख दिया जाता (जो ४७ अंक प्रमाण ही है) तो उसके वर्षोंकी महान संख्याका पूर्ण और वास्तविक महत्व कदापि चित्तपर अंकित न होता। जैसा कि श्री ऋषभ निर्वाण सम्वत्का वास्तविक और पूर्ण महत्व शंका करनेवालोंके चित्तपर अंकित नहीं हुआ जो पल्यके वर्षोंकी संख्यासे केवल संखों गुणा बड़ा नहीं किन्तु संखों गुणोंसे भी करोड़ों गुणा बड़ा **७६ अंकोंमें** है।

उदाहरणके लिये श्री **जिनवाणी** के अपुनरुक्त अक्षरोंकी संख्या हीको ले लीजिये जो एक कम एकट्ठी अर्थात् १८४४६७४४-०७३७०९५५१६१५ केवल २० अंक प्रमाण है। इन अंकोंमें बता देनेसे इसका पूर्ण महत्व हृदयपर अंकित नहीं होता। परन्तु इन अक्षरोंकी संख्याके विषयमें यदि इस प्रकार कहा जाय कि वह इतनी अधिक बड़ी है कि अगर उन सम्पूर्ण अपुनरुक्त अक्षरोंको कागज़ पर लिखा जावे तो उनके लिखनेमें करोड़ों हाथियोंकी तोलके बराबर स्याही खर्च हो जायगी और अर्बों, खर्बों, हाथियोंके वज़न बराबर कागज़ खर्च होगा और उसकी केवल एक प्रति लिखनेमें जल्दीसे जल्दी लिखनेवाले सैकड़ों मनुष्योंको भी करोड़ों वर्ष लगेंगे। (यह भी ध्यान रहे कि अक्षर भी कोई विचित्र प्रकारके या अनोखे नहीं किन्तु वैसे ही जैसे एक श्लोककी गिन्तीमें ३२ मानकर हमारे सुप्रसिद्ध ग्रन्थ पद्मपुराणमें साढ़े छह लाख (६५००००) के करीब हैं।) तब तो श्री जिनवाणीके अक्षरोंकी संख्या कितने बड़े आश्चर्यजनक रूपको धारण करके हमारी आंखोंके सामने आ उपस्थित होती है। यहां तक कि हमारे बहुतसे भ्रातागण कहेंगे कि श्री जिनवाणीके अक्षर संख्यासे बाहर हैं। उनको गिनकर अंकोंमें बताना मनुष्योंकी शक्तिसे बाहर है। इस उदाहरणसे इस लेखके पाठक महोदय भले प्रकार समझ गए होंगे कि किसी वस्तुकी महान गणनाको अंकों द्वारा बतानेसे उसका पूरा असली महत्व चित्तपर अंकित नहीं होता इसी लिये पल्यके वर्षोंकी महान संख्याको इस रूपमें हमारी दृष्टिके साम्हने रखा गया है।

इस प्रकार उप-शंकाओंका थोड़ासा उत्तर दे चुकने पर अब मूल शंकाका उत्तर नीचे लिखा जाता है। जिससे ज्ञात होगा कि **श्री ऋषभ निर्वाण सम्वत्** किस जैन ग्रन्थके आधार पर और किस प्रकार निकाला गया है और कैसे यह पूर्णतया **शुद्ध और ठीक है:-**

(१) एक व्यवहार पल्यके रोमोंकी संख्या ४१३४५,२६३०३०८२०३१७७७ ४९५१२१,९२०००००००००००००० ००००० अर्थात् २७ अंक और १८ शून्य कुल ४५ अंक प्रमाण है।

शास्त्रप्रमाण—१. श्री गोमट्टसारजीकी श्रीमान् पं० टोडरमलजी कृत टीका जीवकांड, अधिकार ३के प्रारम्भमें अलौकिक गणित। (२) श्रीगोमट्टसार, कर्मकांडकी श्रीमान् पं० मनोहरलालजी कृत छोटी टीकाकी भूमिका। (३) श्रीतत्वार्थ सूत्रजीकी अर्थप्रकाशिका टीका अध्याय ३, सूत्र ३८ की व्याख्या। (४) श्रीतत्वार्थ सूत्रजीकी सर्वार्थसिद्धि भाषा टीका, अध्याय ३, सूत्र २७ की व्याख्या। (५) श्रीमान् पं० द्यानतरायजीकृत चर्चा शतकका पद्य ३२ और उसकी व्याख्या। (६) श्री हरिवंश पुराण भाषा टीकाका सर्ग ७। (७) श्री त्रिलोकसारजीकी भाषा टीका श्रीमान् पं० टोडरमलजी कृतका गणित भाग इत्यादि देखें।

(२) व्यवहार पल्यके रोमोंकी संख्याको १००में गुणा करनेसे जो संख्या प्राप्त होगी वह एक **पल्योपम** कालके वर्षोंकी संख्या है जिसमें उपरोक्त २७ अंक और २० शून्य सर्व ४७ अंक हैं।

शास्त्रप्रमाण—उपरोक्त ग्रन्थ।

नोट-जिसे पल्य अर्थात खत्ती या गढ़ेसे उपमा दी जाय उसे "**पल्योपम**" कहते हैं। इसलिये जिसे हिन्दी भाषा ग्रन्थोंमें बहुधा पल्यकाल बोला जाता है वह वास्तवमें **पल्योपम**-काल है। पल्य तो केवल गढ़े हीका नाम है जिसे कालादिकी गणना करनेके लिये तीन भेदों अर्थात् व्यवहार पल्य उद्धार पल्य और अद्धा पल्यमें विभाजित किया गया है और जिनसे यथायोग्य स्थलोंपर कालादिकी बड़ी गणनाओंमें काम लिया जाता है।

(३) दश कोड़ाकोड़ी (१० ग करोड़ गुणा अर्थात् एक पद्मपल्योपम **सागरोपम** (जिसे लवण सागरसे उ गई है) होता है। पल्योपमके उपरोक्त संख्याको दश कोड़ाकोड़ीमें गुणा करने रोक्त २७ अंक और ३९ शून्यसर्व ६२ हो जाते हैं जो एक सागरोपमकालके संख्या है।

शास्त्रप्रमाण—उपरोक्त ग्रन्थ।

नोट—जहां २ बड़ी २ आयुवाले या देव देवी आदिकी केवल एक जन्म आयुकी स्थिति बताई गई है वह स **पल्योपम** और **सागरोपम**से है किसी प्रकारके पल्य या सागरसे न वास्तवमें कालादिके परिमाण सूचक न किन्तु कालादिकी महान गणना जाननेके उपमा मात्र सहायक हैं। शास्त्र प्रमाण तत्वार्थसूत्र, अध्याय ३, मूलसूत्र ६, २९, अध्याय ४ मूलसूत्र २८, २९, ३३, ४२, अध्याय ८ मूलसूत्र १४, १७ इत्य

इन सूत्रोंके टीकाकारोंने और पल्योपम तथा सागर और सागरो वास्तविक अन्तर पर विशेष ध्यान न

पल्योपमके स्थानमें पल्य् और सागरोपमके स्थानमें सागर लिखा है जो एक प्रकारकी अशुद्धि है।

(४) एक कल्पकाल २० कोड़ा कोड़ी सागरोपमका होता है जिसके एक भाग अव-सर्पणीका चतुर्थकाल (जिसमें वर्तमान चौवीसी हुई) ४२ सहस्र वर्ष कम एक कोड़ाकोड़ी सागरोपमका है। इसी लिये एक सागरो-पमके वर्षोंकी उपरोक्त संख्याको एक कोड़ा-कोड़ीमें गुणा करनेसे उपरोक्त २७ अंक और ४९ शून्य कुल **७६ अंक** प्रमाण संख्या एक कोड़ा कोड़ी सागरोपमके वर्षोंकी प्राप्ति हो जाती है। इस संख्यामेंसे ४२ सहस्र वर्ष घटा देनेसे जो संख्या प्राप्त होगी वह **पूर्ण चतुर्थ** कालके वर्षोंकी संख्या है जो **७६ अंक** प्रमाण ही है।

(५) श्रीऋषभदेवजी महाराजका निर्वाण चतुर्थ कालके आरम्भसे ३ वर्ष साढ़े आठ मास पूर्व हुआ और श्री महावीरजीका नि-र्वाण पंचम कालके आरम्भसे इतने ही काल अर्थात् ३ वर्ष ८॥ माह पूर्व हुआ। इसलिये प्रथम तीर्थंकरके निर्वाण कालसे अन्तिम तीर्थ-करके निर्वाण काल तकका अन्तर ठीक उतना ही है जितना **पूर्ण चौथा काल।**

शास्त्र प्रमाण—श्री पद्म पुराण पर्व २०, जहां चौथे कालका वर्णन करते हुए २४ तीर्थ-करोंके अन्तराल कालका कथन पूर्ण किया है। तथा हरिवंशपुराण सर्ग ६० श्लोक ४८६, ४८७ जहां २४ तीर्थंकरोंके अन्तराल काला-दिके कथनको पूर्ण करके श्री महावीर स्वामी-के ११ गणधरोंकी आयुका कथन है उससे आगे।

(६) अब यदि प्रथम तीर्थंकरके निर्वा-णसे अन्तिमके निर्वाण तकके अन्तराल काल अर्थात् पूर्ण **चतुर्थ कालके वर्षोंकी संख्यामें श्री वीर नि० सम्वत्** जोड़ दें तो हमारा अभीष्ट **श्री ऋषभ निर्वाण सम्वत्** प्राप्त हो जायगा जिसके वर्षोंकी संख्या वही है जो कई जैनसमाचार पत्रोंमें प्रकाशित हो चुकी है।

नोट—जिन महाशयोंको यह भी जानना अभीष्ट हो कि इतने अधिक बड़े पल्यमें भरे गए भोग भूमिके ७ दिन तककी वयवाले मेंढ़के बालकके बहुत ही छोटे २ रोमों या बालाग्रोंकी उपरोक्त संख्या ४५ अंक प्रमाण किस प्रकार निकाली गई है वह पूर्वोक्त ग्रन्थोंके इसी विषय सम्बंधी कथनको ध्यान पूर्वक पढ़ें। श्री अर्थप्रकाशिका तथा श्री गोमट्टसारादिमें सब कुछ मौजूद है। यदि तब भी समझमें न आवे तो मुझसे पत्र व्यव-हार करें। तथा किसी प्रकारकी शंका उप-रोक्त लेखमें हो तो वह भी प्रगट करें। किसी जैन समाचार पत्रद्वारा भले प्रकार समझा देनेका प्रयत्न किया जायगा। किमधि-किम्।

नोट—इस लेखमें यह बताया गया है कि महावीराचार्यकृत गणितसार संग्रहमें २४ अंक प्रमाणकी गिन्ती है और इससे अधिककी गिन्ती नहीं देखनेमें आती। परंतु हमने 'दिगंबर जैन' वर्ष ८, अंक १ वीर सं. २४४१ में "अंकगणी" नामक लेखमें ५७ अंक प्रमाणकी

गिन्ती और नाम बताये हैं जो इस प्रकार है- यक, दय, सय, सहस्र, दहसहस्र, लख, दहलख, कोड, दहकोड, अडब, दहअडब, खडब, दहखडब, निखरब, दहनिखरब, सोराज, दहसोराज, पदम, दहपदम, पारब, दहपारब, सख, दहसख, रतन, दहरतन, नखड, दहनखड, सुघट, दहसुघट, राम, दहराम, प्रघट, दहप्रघट, हार, दहहार, मन, दहमन, वजरु, दहवजरु, सक, दहसक, सेक, दहसेक, अमरा, दहअमरा, नील, दहनील, पार, दहपार, कगा, दहकगा, खीरं, दहखीरं, परव, दहपरव, बल, दहबल।

यह गिन्तीके नाम हमने एक हस्तलिखित प्राचीन पुस्तकसे प्रकट किये थे। इस प्रकार इससे ज्यादेकी गिन्तीके नाम भी शायद किसी और प्राचीन ग्रन्थमें मिल जाना संभव है जिससे की यह ऋषभनिर्वाण संवत्के ७६ अंक सुगमतासे गिने जा सकें। सम्पादक।

जैन समाज और जैन त्यागी।

(ले० जुगमन्दरदास जैनरिया।)

यह सब जैनियोंको ज्ञात हो गया है कि भारतवर्षमें हमारी उच्च जाति भी अवनत जातियोंमेंसे है। यह जाति शारीरिक, मानिसक, आत्मिक प्रभृति सब शक्तियोंसे हीन और दीन है। जिस प्रकार किसी रोगी मनुष्यका रोग औषधि न करनेसे अधिक बढ़कर उस मनुष्यको मृत्युके मुखमें प्रवेश कर देता है उसी प्रकार यदि इस अधःपतित जाति अत एव जातिकी इस दशासे मुक्तनार्थ कोई औषधि या उपाय न होगा तो अवश्य इसकी दशा किसी दिन भयंकर हो जायगी और यह कराल कालके गालमें सदैवके लिये शयन कर जायगी।

इस प्रकारकी सोचनीय स्थितिमें जैन समाजके प्रत्येक स्त्री पुरुष, तथा बालक बालिकाओंका कर्तव्य है कि अपनी योग्यतानुसार जातिको कालके मुखसे बचानेका उपाय करें। अत इस लेखके लिखनेका यही मुख्य अभिप्राय है कि ऐसी भयंकर स्थिति होनेपर हमारी समाजके गृहत्यागियोंका क्या कर्तव्य है? समाजके सन्मुख इस समय जीवन मरणका प्रश्न उपस्थित हो रहा है अत त्यागियोंको भी चाहिये कि अपना कर्तव्य पालनके लिये अब अपने तन मनसे जाति दशाके सुधारमें लग कर स्वधर्मानुयायिनी जातिको मृत्युके मुखसे बचावें।

प्राचीन समयमें भी जब ऐसे अवसर आते थे तब जैन मुनि अपना मुख्य कर्तव्य समझ कर मरणोन्मुख, धर्म, जाति, सब अथवा मनुष्योंको अभय दान देते थे। उदाहरणके लिये **विष्णुकुमार** मुनि ही को ले लीजिये। उन्होंने अपनी विक्रिया ऋद्धिसे वामनका रूप रख कर सातसौ मुनियोंके प्राण बचाये थे। तथा **निकलंक स्वामीने** अपने धर्मके स्यम्भकी रक्षामें अपने प्राणोंको भी बलि चढ़ा दी थी इत्यादि। क्या उस समय जैन गृहस्थों और जैन राजाओंका सर्वथा अभाव हो गया था? नहीं, यह कार्य उनकी शक्तिसे बाहर थे। इसी प्रकार वर्तमान समयमें भी लाखों गृहस्थियों

की शक्तिसे धर्म रक्षा करना नितान्त बाहर है। यह कार्य मुनियों ही की शक्तिका है।

यह सप्रमाणिक है कि प्रत्येक गृह त्यागी और मुनिका कर्तव्य है कि अपने प्राणोंको भी देकर धर्म रक्षा करें। तब क्या पूज्यवर मुनियो एवं त्यागियो! आपका यह कर्तव्य नहीं है कि अब अपनी आत्माका उपयोग अन्य साधनोंमें न लगाकर निकलंक और विष्णुकुमार मुनिके सदृश धर्मरक्षामें—अपनी जैन जातिको कालके जालसे बचानेमें लगावें। जिस धर्मके आप अनुयायी हैं उसी धर्मकी यह अधःपतित और मरणोन्मुख जाति भी अनुयायिनी है तथा यह ध्रुव है कि धर्म धर्मात्माओंमें रहता है। जैसा कि **समन्तभद्र** स्वामीने रत्नकरण्ड श्रावकाचारमें कहा है:—

स्मयेन योऽन्यानत्येति धर्मस्थान् गर्विताशयः
सोऽत्येति धर्ममात्मीयं, न धर्मो धार्मिकैर्विना।

अर्थात्—जो अभिमानी पुरुष अन्य धर्मात्माओंकी अवहेलना करता है सो वास्तवमें अपने धर्मकी ही अवहेलना करता है क्योंकि **धर्मात्माओंके विना धर्म अन्यत्र कहीं नहीं पाया जा सकता।**

मुनिवरो! क्या आप लोगोंके हृदयमें इन महात्माओंके वचनोंका कुछ भी अभिमान है? यदि है तो आप लोगोंका यह प्रथम कर्तव्य है कि अब एकान्तवासको छोड़कर अपने सहधर्मियोंको अपने धर्ममें दृढ़ रखें—उनको पृथ्वी तलपर स्थिति रखें अन्यथा वे बिचारे तो पतित और नाश हो ही रहे हैं—मुसलमान, ईसाई और आर्यसमाजी हो ही रहे हैं, आप भी अपने धर्मकी रक्षा न करनेके कारण वास्तवमें धर्मात्मा कहलानेकी योग्यताका विनाश कर रहे हैं।

यदि आप इस पवित्र कार्यमें हाथ डालेंगे तो केवल जातिको जीवनदान देना ही न होगा किन्तु अपने धर्मकी रक्षा करना भी होगा। इसलिये यदि आप इस कार्यमें कुछ भी प्रमाद करेंगे तो समझिये आप अपने प्राणप्रिय धर्मकी अवहेलना कर रहे हैं जो कि आप लोगोंके लिये हास्यास्पद है।

धर्मरक्षको! आप लोगोंसे मेरा नम्र निवेदन है कि भारतवर्षके जिन मार्गोंमें जैनकुलोत्पन्न मनुष्य निवास करते हैं वहाँ २ धर्मोपदेशकी आवश्यक्ता है। आप लोग भी एक दो नहीं हैं किन्तु सैकड़ोंकी संख्यामें हैं। इसलिये आप इस आवश्यक्ताकी देश-देश, ग्राम २ भ्रमण करके पूर्ति कर सक्ते हैं। जितना सुधार जैन समाजमें आप लोगोंके उपदेशसे होगा उतना सुधार अल्पज्ञानी वेतन भोगियोंसे नहीं सम्पन्न हो सकता है। जिस ग्रामके जैनियोंकी आत्मा महावीर प्रभुके उपदेशामृत न मिलनेसे धर्म शून्य हैं—पतित हैं—अपने उच्चादर्शको त्याग कर आचार विचारसे भ्रष्ट होकर—महावीर स्वामीके शासनसे विच्छिन्न होकर खोटे मार्गमें ले जानेवाले धर्मोंमें मिलती जा रही हैं; उनकी आत्माओंमें आप लोगोंके वचनामृतसे एक नवीन ही जीवनका संचार होगा—डूबते हुये प्राणियोंको हाथका सहारा होगा, मीठ भांडादि बककी आत्मा-

ओंको परमात्मा बनाने वाले वीरप्रभुके शासनका पालन होगा। आपको इस कार्यसे केवल उन्हींकी आत्माओंका कल्याण न होगा किन्तु आपकी भी **आत्माका कल्याण** होगा—सम्यक्तके स्थितिकरण अंगका पालन होगा।

ऐ जैन समाजके त्यागियो! धर्मरूपी नौकाके खेवटियाओ! उठो और इस धर्मकार्यके लिये तनमनसे लग जावो। यह बात ध्यानमें रखने योग्य है कि जैन समाजकी—आपके प्राणप्रियधर्मकी रक्षा आपहीके भुजबलसे होगी जैन समाजकी संख्या विधवा विवाहादि निंद्य कार्योंसे नहीं बढ़ेगी किन्तु आपके इस पवित्र कार्यसे बढ़ेगी। केवल आपकी आतमें जैन समाजकी अवनति—धर्मका नाश देखकर उसकी उन्नति—उसकी रक्षाके कार्यरूप भाव होनेकी देर है—जैन समाजकी संख्या करोडोंमें होनेके लिये आपके घोर **परिश्रमकी देर है।**

अब इस कार्यमें विलम्ब करनेका समय नहीं रहा है क्योंकि आपके धर्मको नष्ट करनेवाले कीड़े बहुत दिनसे उसकी जडमें लग गये हैं किन्तु अब तो इस धर्मको नष्टनेवालोंकी अधिकता एवं बलवान होनेके कारण इस धर्मका विनाश बडे वेगसे हो रहा है—अधर्मके समुद्रके वेगसे बहनेवाले प्रवाहमें केवल बह ही नहीं रहा है किन्तु अब डुबानेवाले गोते भी खा रहा है। यदि आप लोगोंने अब भी इसके बचानेका उपाय नहीं किया तो स्मरण रखिये कि जिस प्रकार डूबनेवाली नौका अपने आसपासकी वस्तुओंको लेकर सबके लिये जलतलमें डूब जाती है उसी प्रकार यह वीर प्रभुका धर्म भी आप लोगोंको समेट कर सदाके लिये डूब जायगा और तब न आपको आहार देनेवाले गृहस्थ ही मिलेंगे और न गृहस्थोंको आहार लेनेवाले आप जैसे स्वार्थ त्यागी—गृह त्यागी मुनि ही।

ओंशांति ओंशांतिः ओंशांति

शरीररचना-दर्पण।

(ले० हाथीचंद माणेकचद-लोनावण)

(६ ठा अकथी चालु।)

१—जमणी पांसळी पासेना भागमां—कलेजानो जमणो भाग, पितो, न्हानां आंतरडानो पहेलो भाग, मोटां आतरडानो जमणो वींटो अने जमणा गुरदानो उपलो भाग.

२—पीपडीवाळा मध्य भागमां—होजरीनो वचलो भाग, अने जमणो छेडो तथा कलेजानो डाबो भाग.

३—डाबी पासळी पासेना भागमां होजरीनो डाबो छेडो, बरोल अथवा तली, मोटा आतरडांनो वींटो अने डाबा गुरदानो उपलो भाग

४—जमणा कमर तरफना भागमां—उपर चढतुं मोटुं आंतरडुं, जमणा गुरदानी नीचेनो भाग, अने न्हाना आतरडानो थोडो भाग.

५—डुंटीवाला पेटना मध्य भागमां मोटा आंतरडानो आडो भाग, अने नांनां आंतरडाना थोडां गुंचळां.

६—डाबा कमर तरफना भागमां मोटा आंतरडानो हेठे उतरतो भाग, डाबा गुरदानो हेठलो भाग, अने नानां आंतरडानां थोडां गुंचळां.

७—जमणी जांग तरफना भागमां नानां आंतरडानो छेडो, मोटा आंतरडानो शरूआतनो भाग अने पेसाब लई जनारी जमणी नळी.

८—व्हेडुवाला नीचला भागमां न्हानां आंतरडानां गुंचळां, पेसाबनो भरेलो फुक्को, अने गर्भथी मोटुं थनार गर्भस्थान.

९—डाबी जांग तरफना भागमां मोटां आंतरडानो नीचेनो अने सफरानो उपलो भाग, तथा पेसाब लई जनारी डाबी नळी.

उपला कोठा उपरथी सामान्य रीते एटलुं तो समजाशे के, पेटनी जमणी बाजुमां-पासळां, नीचे कलेजुं (यकृत), कलेजा नीचे थोडो न्हानां तेमज म्होटां आंतरडानो भाग मूत्राशय अने सौथी नीचे जांग पासे मूत्र लई जनारी जमणी नळी, एटला भागो आवेला छे. पेटनी मध्यमां--उपर होजरी अने कलेजानो थोडो भाग, तेनी नीचे डूंटीवाळा भागमां मोटुं आडुं पडेलुं आतरडुं अने नानां आंतरडां तथा सौनी नीचे पेडुमां न्हानां आंतरडां अने स्त्रीओनुं गर्भस्थान, एटला भागो आवेला छे. पेटनी डाबी बाजुमां पांसळां नीचे होजरीनो डाबो छेडो, बरोळ अने मोटुं आतरडुं, तेनी नीचे पण मोटुं आंतरडुं तथा मूत्राशय अने सौनी नीचे जांग पासे मूत्र लई जनारी जमणी नळी, एटला भागो आवेला छे.

अन्ननळ-(Alimentary Canal)

उदरनी पोलना होजरी वगेरे भागोनुं वर्णन करतां पहेलां, होजरीमां अन्न क्यां थईने शी रीते आवे छे तेपण जाणवानी जरूर छे. आपणे अनाज मोढामां चावीने गळे उतारीए छीए अने ते छातिना पाछला भागमांथी नीचे उतरतो होय एवुं आपणने लागे छे. खाधेलुं अनाज गळामांथी जे रस्ते थईने होजरी वगेरेना अवयवोमां उतरे छे, ते रस्ताने **अन्ननळ** कहेवामां आवे छे. जेम घरमां पाणी वगेरेना नळ उतारवामां आवे छे, एवीज रीते आ नळ उतारवामां आवेलो छे. आ अन्ननळ मांसमय स्नायुनो बनेलो छे, अने तेना संकोचावाथी खाधेलो खोराक धकेलाईने होजरीमां आवे छे,

आ अन्ननळ—**गळानी बारी** गळाना नीचला छेडाथी शरु थाय छे, ते नळ श्वास नळीनी पाछळ अने जरा डाबी तरफ करोडने आधारे नीचे उतरे छे, अने उपर जणावेला छाति तथा पेट वच्चे आवेला पडदामां थईने होजरीमां आवे छे. खरुं जोईए तो आ अन्ननळनो छेडो गुदाद्वारमां आवे छे केमके जे खोराक खावामां आवे छे ते अन्ननळ वाटे होजरीमां त्यांथी होजरीनी साथेज जोडायेलां नळनां आंतरडांमां अने त्यांथी तेनी साथेज जोडायेलां मोटां आंतरडांमां थईने सफरामां आवे छे. गळानी बारीथी ते गुदाद्वार सुधी पहोंचतां आ अन्ननळनी लंबाई सुमारे ३० फुटनी छे. अन्ननळ श्वासनळीनी पाछळ मुकायेलो छे तेथी ज्यारे खोराक गळीए छीए, त्यारे ए अन्ननो कांई पण भाग श्वास नळीमां न जनारी गाप

ते माटे ए श्वासनळीनुं मों बंध करवाने एक न्हानुं ढांकणूं मीम साथे वळगे छे, जे खोराक गळेथी उतरती वेळा श्वासनळीनुं मों ढांकी दे छे, अने तेना उपर थईने खोराक अन्न नळीमां प्रवेश करे छे.

होजरी-अन्याशय-आमाशय
Stomach

गळाथी ते गुदा सुधी खोराकना मार्गनो एकज नळ छे, जेमां होजरीनो पण समावेश थाय छे. होजरी ए खोराक मार्गनो सौथी पहोळो भाग छे. होजरी पेटना पीपडीवाळा मध्य भागमां तेमज डाबी पांसळी तरफना भागमां आवेल छे. होजरीनी उपर उरोदर पटल अने कलेजानो डाबो भाग छे. होजरीनी डाबी तरफ बरोल छे, जमणी तरफ कलेजुं छे, नीचे आंतरडां छे, अने पछवाडे करोड छे. होजरीना उपला छेडामां अन्ननळनो संयोग थाय छे अने नीचला छेडाथी आंतरडानो आरंभ थाय छे. होजरीनो आकार पाणीनी मसक अथवा न्हानी पखाल जेवो छे, तेमां खोराक जाय छे त्यारे ते पहोळी थाय छे, अने त्यारे तेनी डाबी जमणी बाजुनी लंबाई १० थी १२ इंचनी अने पहोळाई ४ इंचनी होय छे. होजरी खाली होय छे त्यारे ते संकोचाईने न्हानी थई जाय छे. तेनुं वजन सुमारे ११ तोलानुं छे, अने तेमां ४ थी ५ रतल पाणी समाई शके छे.

होजरी मांसनी साकळो अथवा दोरीओनी बनेली छे. तेनुं अंदरनुं पड करनळीवाळुं अने मधमाखीना मधपुडा जेवुं खाडावाळुं होय छे, जे पडमांथी एक जातनो तेजाब जेवो प्रवाही झरे छे, जे **जठररस** कहेवाय छे. आ जठर रसथी खाधेलो खोराक पचे छे अने एवी रीते होजरीमां पचेलो केटलोक रस होजरीनी झीणी नसो वाटे लोहीमां जाय छे, पण सघळो खोराक होजरीमां पची शकतो नथी, चीकासवाळी अने आटाना सत्ववाळी वस्तुओने होजरीनो जठर रस पचावी शकतो नथी, तेथी तेवो खोराक होजरीमां केटलुंक रुपान्तर थया पछी आंतरडामां जाय छे अने त्यां तेनी **पाचन क्रिया** थाय छे.

आंतरडां-पक्वाशय-Bowels.

खोराक मार्गमां होजरीना नीचेना छेडाथी जे नळी संधाय छे, तेने **आंतरडां** कहेवामां आवे छे. आंतरडां होजरीथी गुदापर्यंत ३० फीट लांबा छे, पण तेनां गुंचळां वळीने पेटनी पोलमां पडेलां होवाथी एवडां बधां मोटां छे एम लागतुं नथी. आंतरडांना बे भाग छे. न्हानां आंतरडां अने मोटां आतरडां.

न्हानां आंतरडां-मोटां आंतरडां करतां न्हानां आंतरडां कदमां पातळां छे ते होजरीना नीचला अथवा जमणा छेडाथी शरु थाय छे-अने रुनी आंटीनी माफक गुंचळां वळीने पेटना डुंटीवाळा तथा पेडुवाळा वचला भागमां पडेलां छे. तेनो छेडो जमणी जांग तरफना भागमां उतरे छे, ज्यां ते मोटा आतरडां साथे संधाय छे अथवा ज्यांथी कद मोटुं थतां तेने मोटुं आंतरडुं कहेवामां आवे छे.

न्हानां आंतरडां २० फीट लांबां अने १ थी १॥ इंच जाडां छे तेनो शरु थतो भाग

घोडानी नाळना जेवो वांक लेछे अने तेमां पित्त लावनारी नळीनुं म्हों होय छे, जेमां थईने पित्त आंतरडांमां आवे छे.

न्हानां आंतरडां अंदरथी नळी जेवां पोलां छे. ए नळी जुदी जुदी चार जातना पडनी थयेली छे. तेमांनुं एक पड मांसनुं छे अने तेनां साकां उभा तथा गोळ फरी वळेला छे. आखा न्हानां आंतरडांनां मांसना साका सघळा एकज वखते तंग अने ढीला थता नथी पण थोडा थोडा भागना साका वाराफरती संकोचाय छे; तेथी आंतरडांनो एक भाग संकोचाय छे त्यारे बीजो भाग ढीलो थाय छे, अने ए रीते जेम सर्प चालतां चालतां बळखाय छे तेम आखां **आंतरडांमां एक प्रकारनी गति** पेदा थाय छे अने तेथी खोराकनो बाकी रहेलो भाग आगळ आगळ धकेलाय छे. आंतरडांनुं छेक अंदरनुं पड खडबचडुं अने करचलीवाळुं होय छे, तथा तेना ऊपर मखमलनी पेठे रुवाटां जणाय छे. ए पडनी दरेक करचली १ थी २ इंच लांबी अने ०॥ इंच उंडी होय छे, अने तेमां खोराकने चुसवानी सुक्ष्म रगो आवेली छे. आ रगो खोराकना पोषणकारक तत्वने चुसी ले छे. आ सघळी रगोनो संयोग थई एक नळ थाय छे, ते नळ उदरमांथी छातिमां जई जमणी तरफनी मोटी शिराने मळे छे. पाचन थयेलो रस ए नळवाटे लोहीने मळे छे.

मोटां आंतरडां—जमणी जांग तरफना भागथी मोटां आंतरडां शरू थाय छे. मोटा आंतरडांना त्रण भाग करीए तो, जमणी जांग पासेथी शरू थवानी जगाथी जमणी पांसळी सुधी ते उपर चढे छे तेटला भागने "चढतुं मोटुं आंतरडुं" कहेवामां आवे छे. पछी त्यांथी काळजांनी हेठळथी ते डावी तरफ वळण ले छे अने त्यांथी पीपडीवाळा भागमां थईने डावी पांसळी सुधी ते पेटमां आडुं पडे छे, अने तेथी एटला भागने " आडुं मोटुं आंतरडुं " कहेवामां आवे छे. त्रीजो भाग बरोलनी नीचेथी शरू थई पेटनी डाबी बाजुए डाबी जांग सुधी सीधो उतरे छे, अने ए भागने " हेठे उतरतुं मोटुं आंतरडुं " कहेवामां आवे छे. मोटां आंतरडांनी लंबाई पांच फूटनी छे, उपर चढतो भाग २॥ इंच जाडो छे, पण आगळ जतां मोटां आंतरडां पतलां थतां जाय छे, अने तेना हेठे उतरता भागनी जाडाई १॥ इंचथी वधारे होती नथी.

सफरानो नळ—मोटां आंतरडांनो जे छेडो डाबी जांग तरफ उतरे छे, त्यांथी एक वांकवाळो नळ शरु थाय छे, जे सफराना म्हों सुधी जाय छे ते नळने **सफरो** अथवा रेकटम कहेवामां आवे छे. ते डाबी तरफथी शरीरना मध्य भाग तरफ वळे छे अने मध्यमांथी सीधो हेठे उतरे छे. सफरानी आगली बाजू ऊपर मूत्राशय एटले पेशाबनो फुक्को अने गर्भस्थान आवेल छे अने पाछळथी ते बेउ बेसणीनां हाडकां साथे वळगेलो छे. सफरो ६ थी ८ इंच लांबो छे.

कलेजुं—काळजुं—यकृत—Liver

शरीरनी अंदरना अवयवोमां कलेजुं सौथी मोटो अवयव छे, तेनुं वजन आशरे ४ रतल थायछे.

ते जमणी तरफनी पांसळीओ हेठळ पेटना जमणा पडखामां आवेलुं छे, पण ते मोटुं होवाथी पीपडीवाळा मध्य भागमां तेमज जरा डाबी पांसळीना भाग सुधी पहोंचेलुं छे. जमणी बाजुथी डाबी बाजू सुधी कलेजानी लंबाई आशरे एक फुटनी छे; अने पहोळाई आठ इंचनी छे. कलेजानी उपर **उरोदर पटल** आवेलुं छे अने नीचे अन्नाशय, आंतरडां, तथा मुत्रपिंड आवेला छे. कलेजानो मोटो भाग जमणी तरफथी पांसळीओथी ढंकाएलो होवाथी पेटमां दाबवाथी ते मालम पडतुं नथी. ज्यारे तेमां कांई दरद थईने कलेजुं वधी बहार आवे छे, त्यारेज ते दाबी जोवाथी मालम पडे छे अने कलेजापर ठोकवाथी बोदो अवाज थाय छे.

कलेजुं न्हानी टांकणीनां माथां करतां पण बारीक हजारो दाणानुं बनेलुं छे. ए दरेक दाणामा लोहीनी बारीक रगोनी जाळ पथरायली छे. **कलेजानुं मुख्य काम** लोही शुद्ध करवानुं अने पित्त नामना रसने पेदा करवानुं छे. होजरी अने आंतरडानी शिराओ मळीने एक शिरा थाय छे, ते **मध्य शिरा** (पोर्टल वेइन) कहेवाय छे. आ मध्य शिरा कलेजामां दाखल थई तेनी शाखाओ बनीने तेमनुं लोही शुद्ध थाय छे. कलेजानुं बीजुं मुख्य काम पित्त पेदा करवानुं छे. कलेजामा पित्त नामनो एक रस पेदा थाय छे. ए पित्तने लई जनारी एक नळी कलेजामांथी बहार नीकळे छे, तेने पित्ताशय कहेवामां आवे छे. आ पित्त आंतरडांने मळी ते माहेना खोराकने पचावे छे. खोराकमां चीकाशवाळो अने चरबीवाळो भाग होय छे, तेने पित्त जल्दी पीगळावे छे. पित्तथी आंतरडांने जलदी गति मळे छे अने झाडो खुलासेथी आवे छे. पित्तनो थोडो भाग झाडा वाटे बहार आवे छे, अने तेथीज झाडानो रंग पीळाशपर होय छे. चोवीस कलाकमां त्रण रतल पित्त पेदा थइ आंतरडांमां जाय छे.

पित्ताशय–(Gall Bladder)

कलेजामां पित्तनुं जे स्थान छे तेने **पित्ताशय** अथवा पित्तो कहेवामामां आवे छे. आ पित्तो कलेजानी नीचली बाजू तरफ वळगेलो छे. आ एक गाजर जेवडी थेली छे. पित्तनी नळी होजरीना नीचला छेडाथी शरु थई न्हानां आंतरडांमां मळे छे. आ पित्तनी नळी साथे एक बीजी **पांक्रियाझ** नळीनो संयोग थाय छे; अने ते बन्नेनी एक नळी थई आंतरडांमां प्रवेश करे छे. आ बीजी नळी वाटे थूंक जेवो रस आंतरडाने मळी पाचनक्रियाना काममां मदद करे छे. पित्त कलेजामां पेदा थाय छे; अने पित्ताशयमां एकठुं थई पित्तनी नळी वाटे आंतरडामां जाय छे.

बरोल–तिल्ली–प्लीहा–Spleen

पेटना डाबा पडखामां नवमी, दशमी, अने अगीयारमी ए त्रण पांसळीओथी बरोल ढंकायेली छे, तेथी कलेजानी पेठे ते पण दाबी जोवाथी मालम पडती नथी. उरोदर पटल तथा होजरी साथे ते रस पडथी संधायली छे. तेनो रंग वादळी रंगनी स्लेट जेवो छे. ते पांच इंच लांबी, त्रण इंच पहोळी अने १० थी १५ तोला वजननी होय छे. तेनुं काम लोहीने शुद्ध करवानुं छे. तावनी बीमारीमां ते वधे

छे अने वखते एटली बधी म्होटी थाय छे के, एक सखत पथ्थर जेवी गांठ पेटनां घणा खरा भागमां जणाय छे. एवी वधेली बरोल २० थी ४० रतल सुधी वजननी होय छे. वखते तवाईने एटली बधी न्हानी थई जाय छे के, तेनुं वजन एक एक तोला करतां वधारे होतुं नथी.

मूत्रपिंड-गुरदो-(Kidney)

मूत्रपिंड बे छे. दरेक मूत्रपिंड करोडनी बाजू तरफना पाछला भागमां आवेल छे. दरेक **गुरदो** ४ इंच लांबो, २ इंच पहोळो अने १ इंच जाडो होय छे. तेनुं वजन आशरे १०-१२ तोलानुं छे. बहारथी ते साफ अने लीसो छे अने तेनो आकार अडदना दाणा जेवो छे. जमणो गुरदो कलेजा साथे लागेलो छे अने डाबा गुरदानो भाग बरोलथी ढंकायेलो छे. गुरदा बारीक नळीओना बनेला छे. ए नळीओनी आसपास लोहीनी नशोनी जाळ बंधाय छे, अने तेमांथी केटलाक खराब नकामा भागो जुदा पडे छे, अथवा बीजा शब्दोमां बोलीए तो मूत्र अथवा पेशाब पेदा थाय छे. आ आखा दहाडामां २, थी ३, रतल पेशाब बंने गुरदामां पेदा थाय छे.

दरेक गुरदानी मांहेली तरफ एक न्हानो खाडो होय छे, तेमांथी एकेक बारीक नळी शरू थाय छे, जे व्हेहूनो भाग ओळंगीने मूत्राशय (ब्लॅडर)मां जाय छे. आ नळीने मूत्र नळी कहेवामां आवे छे.

मूत्राशय—फुको—Bladder

बन्ने तरफना मूत्रपिंडोमां मूत्र उत्पन्न थाय छे अने मूत्रनळीवाटे ते मुत्र बस्तिना आगला भागमां ज्यां एकठुं थाय छे ते भागने **मूत्राशय** कहेवामां आवे छे. मुत्राशयनो आकार इंडाने मळतो छे. आ मूत्राशय एक मांसनी कोथळी छे, तेनी अंदर त्रण नाकां छे, जेमांनां बे नाकां वाटे मूत्रपिंडमांथी पेशाब मूत्रासयमां आवे छे अने बीजा नाका वाटे बहार नीकळे छे, बे गुरदामां मूत्र टीपे टीपे एकठुं थाय छे, अने मूत्राशय मूत्रथी भराय छे, त्यारे मूत्राशयना मांसना साकाओ संकोचाई मूत्रने गति आपीने शिश्न नळीवाटे बाहर काढे छे.

उत्पत्ति-अवयवो-(Generative Organes.)

जे अवयवो वडे संततिनी उत्पत्ति थाय छे, तेने **उत्पत्ति-अवयव** अथवा जननेन्द्रिय कहेवामां आवे छे. पुरुष तेमज स्त्री ए बन्ने जातिना उत्पत्ति अवयवोनी रचना खास जुदी जुदी होय छे. वृषण, वीर्याशय अने मेढ्र ए पुरुषना उत्पत्ति अवयवो छे, अने गर्भाशय, तेनी अंदरना अवयवो अने योनि ए स्त्रीना उत्पत्ति अवयवो छे.

वृषण-(Testicles.)

वृषणोनी मांसमय थेली छे. आ थेलीनी अंदर वृषणनी बे गोळीओ ते थेलीनी रगो तथा नसो साथे लटकेली छे. गोळीओ इंडाना आकारनी लंबगोळ छे; जमणी गोळी करतां डाबी गोळी जरा नीची अने मोटी छे. दरेक गोळीनी सरासरी लंबाई १ थी १॥ इंच, पहोळाई १।इंच अने जाडाई १। इंच होय छे.

तंदुरस्त शरीरमां दरेक गोळीनुं वजन २ थी २॥ तोला सुधी होय छे. वृषणनी थेलीना मध्य भागमां रेशा होय छे, जेथी थेलीना बे भाग पडेला छे अने दरेक भागमां एकएक गोळी आवेली छे. एवुं कहेवाय छे के गर्भस्थानमां बाळकनी गोळी पेटमां मूत्रपिंडनी पासे होय छे. बाळक आशरे आठ मासनुं थाय छे त्यारे ते गोळी पेटनी दिवालमांथी रस्तो करी वृषणनी कोथळीमा उतरे छे.

जन्मती वखत कोई बाळकने वखते ते गोळी प्हेडुमां होय छे अने कोईने वखते एकज गोळी उतरे छे, अने बीजी उतरती नथी. गोळीना उपर एक जाडुं मजबुत पड होय छे अने तेने तळीए बीजुं झीणुं करोळीआना पड जेवुं पड होय छे. आ गोळीओ आशरे ८०० सुक्ष्म नळीओनी बनेली छे. आ दरेक नळी १/२०० ईंच एटले १ इंचना २०० मा भाग जेटली पातळी होय छे. अने लंबाईमां ते नळीओ ओछामां ओछी १३ इंचनी अने वधारेमा वधारे ३३ इंचनी होय छे. आ बधी आटसो नळीओना छेडा सांधीने लांबी करीए तो ०॥। माईल सुधी लांबी दोरी थाय. आवा बगाज बारीक तांतणाओनी गोळीओ बनेली छे. आ गोळीओमा आवी बने त्रण त्रण नळीओनां गुंचळां होय छे. नळीनी व्हार धोरी नसनी बारीक नाळ पथरायेली छे, जेमांना लोहीमांथी धातु पेदा थाय छे. जे रंगो अथवा दोरडीओथी थेलीमां गोळीओ वळगी रहेली छे, ते दोरडीमां वीर्यनळ, धमनी अने शिरा होय छे. शिरानी अंदर ज्यारे लोही भराई रहे छे त्यारे ते कोई वार सुजी आवे छे. आ वीर्यनळ, धमनी तथा शिरा पेडुना छिद्रवाटे पेटमां दाखल थाय छे, अने शिरा मोटी शिरा साथे मळे छे, धमनी मोटी धमनीमांथी नीकळेली शाखा छे अने वीर्यनळ मूत्राशय उपर थईने वीर्याशयने मळे छे, अर्थात् वृषणनी कोथळीमांथी नीकळेली नळीओ आगळ जतां जोडाईने एक थाय छे; अने ते गोळीनी नस आगळथी उपर चढीने, पेडुनी बखोलमां मूत्राशयना फुक्का पाछळ जाय छे अने पेशाबना फुक्का तथा सफरा वचे बे न्हानी कोथळीओ छे, तेनी नळी साथे जोडाय छे. आ कोथळीओमां धातु एकठी थाय छे, जेने वीर्याशय कहेवामां आवे छे. वीर्याशयनी दरेक कोथळीमांथी एक एक नळी नीकळे छे अने ते नळी वृषणनी गोळीमांथी नीकळनारी वीर्य नळी साथे मळी जईने पेशाब करवाना रस्तामां उघडे छे अने पेशाबनी नळीवाटे बहार पडे छे.

वीर्याशय—उपर जणाव्या प्रमाणे वृषणमांथी वीर्यनी नळीओ प्हेडुमां दाखल थाय छे अने मूत्राशयपर थईने तेने तळीए उतरे छे. मूत्राशयने तळीए दरेक नळी पहोळी अने गूंचळावाळी थाय छे; तेमां वीर्य भराई रहे छे, अने तेथी तेने वीर्यस्थान कहे छे.

वीर्याशयनी नळीओ मूत्र मार्गमां उघडे छे अने त्यांथी वीर्य बहार पडे छे. आ उपरथी समजी शकाशे के वीर्य प्रथम वृषणमां पेदा थाय छे अने त्यांथी उपर चढीने प्हेडुं मांहे आवेला वीर्याशयमां एकठुं थाय छे अने त्यांथी मूत्रनळी वाटे बहार पडे छे.

मूत्र नळी अथवा शिश्नने मेढ्र कहे-

वामां आवे छे. आ नळी त्रण नळीनी बनेली छे. आमांना बे नळ उपर होय छे अने त्रीजो नळ तेमनी मध्यमां नीचला भागमां होय छे. ते दरेक भाग मजबुत अने सफेद तंतुमय नळीना जेवो होय छे. तेमनी रचनामां घणा पडदा होय छे अने दरेक नळमां न्हाना न्हाना खानां होय छे, जेमां लोही भराय छे अने ठलवाय छे. लोही भराय छे त्यारे मेढ्रमां जोर आवे छे अने ठलवाय छे त्यारे शिथिल थई जाय छे.

गर्भाशय-(गर्भस्थान-कमळ)

आ अवयव स्त्री जातिमांज होय छे, अने ते प्हेडुनी बखोलमां सफरा तथा मूत्राशय (ब्लेडर) नी वच्चे आवेलुं छे. गर्भाशयनो आकार जामफळ जेवो उपरथी पहोळो अने नीचेथी सांकडो छे. ते ३ इंच लांबुं अने २ इंच पहोळुं छे. कुमारी स्त्रीमां गर्भस्थाननुं वजन आशरे २-थी-४ तोलानुं अने बच्चांवाळी स्त्रीमां ४ थी ५ तोला सुधीनुं होय छे. गर्भस्थान मांसना जाडा स्नायुओनुं बनेलुं छे अने अंदरथी पोलुं छे. तेना नीचेना सांकडा भागमां एक गोळ खाडो छे अने छेडा पर एक चीरो छे, ते कमळनुं मों कहेवाय छे. आ कमळमुख संबंध मार्गनी साथे संबंध राखे छे. गर्भस्थानमां आर्तव एटले रक्तस्राव अने बाळक शी रीते पेदा थाय छे तेनुं वर्णन बीजा भागमां हवे पछी आपीशुं. गर्भस्थान मोटुं थवा मांडे छे अने तेथी तेनुं वजन वधीने १ थी ३ रतल जेटलुं थाय छे. गर्भ रह्या पछी ते प्हेडुना उपला भागमां चडे छे अने टूंटी सुधी पहोंचे छे. गर्भस्थानने उपले बे खूणे ३ थी ४ इंच लंबाईनी एकेक नळी वळगेली होय छे, जेनुं एक म्हों गर्भस्थाननी कोथळीमां उघडे छे अने बीजो छेडो छुटो रहे छे. गर्भस्थानी बहारनी बे बाजु साथे बंधनथी वळगेली इंडा आकारनी बे न्हानी गांठो छे जेने अंग्रेजीमां **ओवरी** कहेवामां आवे छे. ए दरेक गांठ १॥ इंच लांबी, ०॥ इंच पहोळी अने जाडाईमां ०। इंचथी जरा ओछी छे, ते दरेक गांठनुं वजन ०। थी ०॥। तोला वजननुं होय छे. ए गांठमां टांकणीनी अणीथी ते वटाणाना दाणा जेवडा कदना १० थी ५० दाणा होय छे. अने तेमां इंडांनी सफेदीने मळतो प्रवाही होय छे एमांनो दाणो ज्यारे मोटो थाय छे. अने ज्यारे ते पुख्त थाय छे, त्यारे गांठनी छेक उपर उपसी आवे छे; अने तेनी उपर गर्भस्थाननी आगळ कहेली बाजुनी नळीनो छेडो वळगी जाय छे. अने ते नळीमां ते दाणो फूटीने, पोतानी अंदरनो प्रवाही ते नळीमां रेडे छे अने जेमांथी पछी ते रस ते नळीना गर्भस्थाननी कोथळीमां उतरेला म्हों वाटे, गर्भस्थानमां पडे छे.

स्तन (Breast)

गर्भाशय सिवाय स्तन पण स्त्री जातिनोज खास अवयव छे, अने ते अवयव पण उत्पत्ति अवयवनी साथे केटलोक संबंध राखे छे, ते ए के स्त्रीने गर्भ रहे छे त्यारे तेना आकारमां तथा रूपमां फेरफार थाय छे, एटलुंज नहि पण पेदा थनार बाळक माटे तेमां पोषणकारक दूधनो कृपालु कुदरत अगाउथीज संग्रह करी राखे छे. स्तन देखीता एकज मांसना लोचाना बनेला लागे छे पण खरी रीते जोतां ते मांसना स्नायुवाळा १५-२० जुमलाओना बनेला छे, ज्यां दूध पेदा थाय छे. (अपूर्ण)

स्टेशनकी रात्रि*

(लेखक—धन्यकुमार जैन-स्या० म० काशी)

(१)

शीत ऋतु है। रात्रिका समय (८॥ बजे) है। इतनेमें एक गाड़ी संग्रामपुर स्टेशन पर आ पहुंची। मुसाफिरोंके चढ़ते उतरते ही गाड़ीके छूटनेका घंटा बजा। ठीक इसी समय एक बाबूने दौड़ते हुए प्लेटफार्म पर प्रवेश किया। "पों" से सीटी बजाकर इञ्जन महाशयने मानो बाबूको तिरस्कार रूपसे "धत धत्" शब्द करते हुए दौड़ना प्रारम्भ किया। बाबू हताश होकर स्टेशन मास्टरसे पूंछने लगे-

बाबूजी, अब ट्रेन (रेलगाड़ी) कब आवेगी?

स्टे० मा०—"कहांकी ट्रेन?"

बाबू—"कलकत्ता जानेके लिए।"

स्टे० मा०—"अब तो एक बजे आवेगी।"

उसी समय स्टे० मा० यहांसे अदृश्य हो [illegible]ए। एक खलासीने निःश्रेणी (नसैनी) द्वारा [illegible]म लालटेनें बुझा दीं। बाबू धीरे २ प्लेटफा-[illegible]के बाहर जाकर टहलने लगे। इतनेमें एक [illegible]लवाईकी दुकान दिखाई पड़ी।

स्टेशनसे ग्राम दो मीलकी दूरी पर था [illegible]र मार्गके दोनों किनारों पर केवल जंगल झाड़ी [illegible]ड था। उस जंगलमें सिर्फ शृगालोंके "हुआ, हुआ" शब्द मात्र सुनाई पड़ते थे। वहीं खड़े २ बाबूने कुछ आहार करनेका निश्चय किया। धीरे २ वे हलवाईकी दुकानपर पहुंचे। वृद्ध हलवाई चश्मा लगाकर रामायण पढ़ रहा था उसने कहा—आइये! साहब, बैठ जाइये।

बाबू—(बेंचपर बैठकर) तुम्हारी दुकानपर क्या २ चीजें तैयार हैं?

हलवाई—महाशयजी, आपको क्या चाहिये? ताजे पेड़े, बरफी, कचौड़ी और सिंघाड़े हैं-ये सब आज ही सबेरे बनाये गये हैं।

इच्छानुसार मिष्टान्नादि लेकर बाबू आहार करनेके लिए बैठ गये।

इसी अवसरमें इनका परिचय देना परम-आवश्यक है। हर्षका विषय है कि इसके लिए हमको विशेष परिश्रम नहीं करना पड़ेगा, नाम ही प्रकाश करनेसे पाठक समझ जायंगे। इनका नाम "श्री गोवर्द्धनदत्त" है; और इनका निवास कलकत्तेमें है। इस स्टेशनसे कोई दो कोसकी दूरी पर एक ग्राम है, उस ग्रामके एक सज्जनकी कन्याके साथ इनके भतीजेका सम्बंध निश्चय हो रहा है। आज दिनके तीन बजेकी गाड़ीसे ये आये हैं; और ८॥ बजेकी गाड़ीसे जाना चाहते थे, किन्तु भाग्य[illegible] छूट गई।

आहार कर चुकने पर गोवर्द्धन[illegible] यारीसे पूंछा—"तुम्हारी दुकान[illegible] रहनी है?"

हलवाई—"जो भ[illegible]
गोवर्द्धन बाबू—"[illegible]

हलवाई—"[illegible]

(overprinted fragments: "गने गरे ... ते पड़े हैं।" "नहीं पड़ा।" "ये हुए बहुतसे" "...तक कोई यात्री" "खलासीने लाकर दी थी।" "था, मैंने उसका कुछ भी" "...ता। यदि आप कष्ट सकें तो" "शयन करता हूं।")

* "मालती ओ गर्भचर्या" के एक बंगला [illegible]का भावानुवाद।

(२)

संग्रामपुर छोटा सा स्टेशन है। उसका आफिस, तारघर आदि सब एक ही कमरेमें हैं। मुसाफिरखाना भी नहीं है। गोवर्द्धन बाबू प्लेटफार्म पर पहुंचे, वहां जाकर देखा कि आफिसका ताला बंद है। बाहर एक खलासी कम्बल ओढ़े सो रहा है। सिर्फ एक बत्ती जल रही है, उसका भी प्रकाश बहुत कम है।

गो० बा०—(खलासीसे) "बाबू कहां गये हैं?"

खलासी—"भोजन करने गये हैं।"

गो० बा०—"कब आवेंगे?"

खलासी—"आते ही होंगे!"

वहां पर एक बेञ्च पड़ी थी, उसी पर बैठ गये। बेगको खोलकर पानका डिब्बा निकाला और जूता खोलकर सोनेका विचार किया; परंतु इस शीत ऋतुमें उनके लिए सोना मुश्किल हो गया। इतनेमें सामनेसे जूतेकी आहट सुनाई पड़ी। बत्ती हाथमें लिए हुए स्टेशन-
—रने आफिसमें प्रवेश किया और दरवाजा
संबंध म—किया। थोड़े समय तक गोवर्द्धन
आतंव एटले—ा कर धैर्य लो बैठे। उठकर स्टे०
थाय छे तेनं अभी तो गाड़ीको बहुत विलम्ब
आपीछु. गर्भस्थ—डा स्थान देनेकी कृपा करें।
तेथी तेनुं यत्न र—से कार्यकी सिद्धि हो गई।
थाय छे. गर्भ रंगा बैठ जाइये।"
मागमां चेंटे छे अने हूंटी छु—में प्रवेश किया
स्थानने डाले वे खुणे र— गये।
नी एकेक नळी वळगेली होय, —है; यहां एक लम्बी मेज़ पड़ी है, उस पर बहुतसे खाते (रेल्वे बुक) बिखरे पड़े हैं। स्टेशनमास्टर भी अपने कार्यसे निपट कर एक पुस्तक पढ़ने लगे। गोवर्द्धन बाबूने मस्तक उठाकर देखा कि यह पुस्तक (भीषण रक्तारक्ति) उन्ही (गोवर्द्धन बाबू) की बनाई हुई है। गोवर्द्धन बाबू नवीन लेखक नहीं हैं। वे इस छोटेसे गांवमें अपने उपन्यासका प्रचार देखकर फूले न समाये उनका जाड़ा कहां चला गया इसका कुछ भी पता नहीं। स्टेशनमास्टरने भी उपन्यासको आधा पढ़ डाला। गोवर्द्धन बाबू मन ही मन कहने लगे कि मैंने जो विज्ञापनमें लिखा है कि इस उपन्यासके पढ़नेसे निद्रा नहीं आती, सचमुच ही वह सत्य है।

गोवर्द्धन बाबू पाठकको अपना परिचय देनेके लिए मछलीके समान तड़फने लगे और सोचने लगे। पुरानी चादर ओढ़कर, फटा जूता पहरकर, मैं यहां इस अवस्थामें बैठा हूं। क्या इस बातको सुनकर ये (स्टेशन-मास्टर) चकित न होंगे? अहा! यह तो बड़े ही सज्जन हैं। मैं इनका नाम पहिले पूछूंगा, तो ये मेरा नाम अवश्य ही पूछेंगे। गर्दन उठाकर गोवर्द्धन बाबूने देखा, कि वे तेईसवाँ परिच्छेद पढ़ रहे हैं; और यही परिच्छेद विशेष चमत्कार है, अतः रसभंग करनेकी इच्छा न हुई। परिच्छेद सम्पूर्ण होनेपर गोवर्द्धन बाबूने स्टेशनमास्टरसे पूछा—"महाशय, आपका नाम क्या है?"

स्टे० मा०—(पुस्तक पढ़ते हुए) "धीरेन्द्रनाथ घोष।"

इतना कहकर चौबीसवां परिच्छेद प्रारम्भ कर दिया। गोवर्द्धन बाबू सहजमें छोड़ देनेवाले मनुष्य नहीं हैं।

गो० बा०—(स्टेशनमास्टरसे) "आपका निवास स्थान कहां है ?"

स्टे० मा०—(पुस्तक पढ़ते हुए) "हुगलीके निकट।"

गो० बा०—"ग्रामका नाम क्या है?"

स्टे० मा०—"शंकरपुर"

यह कहकर पच्चीसवां परिच्छेद पढ़ने लगे और गोवर्द्धनबाबूकी दाल न गल सकी।

(३)

स्टेशनमास्टरने जब उपन्यास पढ़कर समाप्त किया, तब कोई साढ़े बारह बजे थे।

स्टे० मा०—(गोवर्द्धन बाबूसे) तबसे आप बैठ ही हैं ?"

गो० बा०—"जी, हां ? और क्या करता"

स्टे० मा०—"आपको बड़ी तकलीफ हुई होगी, पान खाइयेगा ?" कहकर गो० बा० के सामने पानका डिब्बा रख दिया।

गो० बा०—(पान खाकर, अपने मनमें कहने लगे) "हाय ! यह व्यक्ति जानता नहीं कि मैं जिसको पान दे रहा हूं वह कौन है ?"

स्टे० मा०—"आप कहांसे आ रहे हैं; और आपका क्या नाम है ?"

गो० बा०—मैं अपने भतीजेके लिए कन्या देखने गया था, मेरा नाम गोवर्द्धनदत्त है।"

नाम सुनते ही (स्टेशन मास्टर) ने पूर्व पठित पुस्तकका टाइटल पेज खोलकर पढ़ा, और गोवर्द्धन बाबूकी ओर देखने लगे। उनकी अवस्था देखकर, गोवर्द्धन बाबू हंसकर बोले—"क्या विचार रहे हैं ?"

स्टे० मा०—(संकोचके साथ) "क्या आप ही इस पुस्तक (भीषण रक्तारक्ति) के लेखक हैं ?"

गो० बा०—(भोले बनकर) "कौनसी पुस्तक ?"

स्टे० मा०—"भीषण रक्तारक्ति।"

गो० बा०—"जी हां,-मैंने ही लिखी है।"

स्टे० मा०—"ऐं-आप !-आप ही का नाम गोवर्द्धनदत्त है ? महाशय, आपके साथ मैंने यह बड़ा अन्याय किया है। क्षमा कीजिये।

गो० बा०—"नहीं नहीं, आपने कुछ भी अन्याय नहीं किया।"

स्टे० मा०—"यह अन्याय नहीं है कि आप यहां तीन घन्टेसे बैठे हैं, मैंने आपसे पूछा भी नहीं कि आप कौन हैं ? यह अन्याय नहीं तो; और क्या हो सक्ता है ?"

गो० बा०—कुछ भी अन्याय नहीं; बल्कि आप मेरी पुस्तक पढ़कर उन्मत्त हो रहे थे, यह मेरे लिए सौभाग्यका विषय है। आपने मेरे बनाये हुए और कौन २ उपन्यास पढ़े हैं ?"

स्टे० मा०—"और कोई भी नहीं पढ़ा। हां; सुनीपत्रमें आपके बनाये हुए बहुतसे उपन्यास देखे हैं। यह पुस्तक कोई यात्री छोड़ गया था, मुझे खलासीने लाकर दी थी। इसमें एक पत्र भी था, मैंने उसका कुछ भी तात्पर्य नहीं समझा। यदि आप समझ सकें तो लीजिये।

गोवर्द्धन बाबूने चश्मा लगाकर पत्र पढ़ना प्रारम्भ किया—

भाई कुञ्ज !

मंगलवारकी रात्रि और शत्रु दुर्ग आक्रमण, याद है? तुम दल सहित हो, अतः उसी दिन शामको यहां उपस्थित होना अन्यथा कार्य बिगड़ जायगा। सबको यहां शामिल होकर शामको चलना होगा। रात्रिके दो बजे कार्य (युद्ध) शुरू होगा। कार्य समाप्त होनेपर प्रातःकाल ही चले जा सकोगे। अलमतिविस्तरेण ॥

तुम्हारा हितैषी—

निताई चन्द्र।

पत्र पढ़कर गोवर्द्धन बाबू समझ गये; यह स्वदेशी डकैती है।

गो० बा०—"वे सब कितने आदमी थे?"

स्टे० मा०—बीसके करीब होंगे।"

गो० बा०—उनकी अवस्था कितनी और चेहरा कैसा था?"

स्टे० मा०—"अवस्था सोलहसे लेकर बीस तक और चेहरा सांवला था।

गो० बा०—"टिकट किस क्लासकी थी?"

स्टे० मा०—"इन्टर क्लासकी।"

गो० बा०—"सिङ्गल या रिटर्न?"

स्टे० मा०—"रिटर्न।"

गो० बा०—"टिकटें निकालिए तो सही।"

स्टेशनमास्टरने डेस्क खोला, और उसमेंसे सब टिकटें निकाल लीं और उनमेंसे छाट २ टिकटें छांटकर गोवर्द्धन बाबूको दीं। गोवर्द्धन बाबूने उन्नीस टिकटें छाँटीं। उन सबके नम्बर नोटबुकमें लिखना प्रारम्भ किया। सब टिकटोंके नम्बर क्रमवार ही थे।

गो० बा०—(गम्भीर भावसे) "स्वदेशी डकैती!"

स्टे० मा०—(विस्मित हो कर) "स्वदेशी डकैती! ऐं स्वदेशी डकैती! आप यह क्या कह रहे हैं?"

गो० बा०—"स्पष्ट स्वदेशी डकैती! आपके पास म्याग्नि फाईग्लास (जिस कांचसे स्पष्ट दीखता है) है?"

स्टे० मा०—"नहीं, किस लिए चाहिये?"

गो० बा०—"लिफाफेकी मोहर साफ नहीं दीखती है। यदि वह ग्लास होता तो स्पष्ट पढ़ कर इन डकैतोंका पता लगाता।"

गोवर्द्धन बाबूने चशमा लगाकर ही पढ़ना चाहा लेकिन वह प्रयत्न वृथा हुआ। निदान बहुत प्रयत्न करने पर कुछ २ पढ़ सके।

गो० बा०—(गम्भीर भावसे) "आज ही नौ बजेकी डिलिवरीमें बहूबजारके पोष्ट-आफिससे यह लिफाफा बांटा गया है"—यह कह कर लिफाफा स्टेशन मास्टरको दे दिया।

स्टे० मा०—(गोवर्द्धन बाबूसे हाथमें पत्र लेते हुए) "आपकी बुद्धिको धन्य है!"

गो० बा०—"(स्वगत) इन डकैतोंमेंसे कोई कुञ्ज नामक डकैत बहूबाजारमें अवश्य रहता होगा। आज किसी धनिकके घर इन लोगोंने डकैती की है" (प्रकट) "आज प्रातःकाल ही इन लोगोंको पकड़ना होगा।"

(४)

गोवर्द्धन बाबू—(स्वगत) "यदि मैं इन

डकैतोंको पकड सका, तभी रायबहादुरकी पदवी पा सकूंगा, अन्यथा नहीं ।"

बहुत दिनोंसे गोवर्द्धन बाबू इस (रायबहादुरकी पदवी)के लिए आशा रखते थे। आज गोवर्द्धन बाबूका मनोरथ सफल होगा।

ट्रेन चली गई। स्टेशनमास्टर टिकट चेक करके ऑफिसको लौट आये। जेबसे पानका डिब्बा निकालकर खाया, और गोवर्द्धन बाबूको दिया। निकटस्थ कुर्सीपर बैठकर बोले—" न मालूम आज किसका सर्वनाश होगा ?

गो० बा०—"देखिये आज इन डकैतोंको पकड़कर मनोरथ सफल करना होगा।"

स्टे० मा०—"कौन पकडेगा ?"

गो० बा०—"आप और मैं।"

स्टे० मा०—"क्या कहा, मैं ?—"सर्वनाश" उन लोगोंके पास तमंचे हैं, हम दोनोंकी खोपडी अलग ही दीखाई देगी।"

गो० बा०—(हँसकर) "नहीं, अब उन लोगोंके पास तमंचे नहीं हैं। वे (डकैत) उन शस्त्रोंको अपने साथ नहीं लावेंगे। कहीं गाड कर आवेंगे।"

स्टे० मा०—"तो भी उन लोगोंको पकडना सहज नहीं है। वे उन्नीस बीस आदमी और हम दो—"

गो० बा०—"कौशलसे पकड़ना होगा।"

स्टे० मा०—"उसके बाद।"

गो० बा०—"उसके बाद गारद—"

स्टे० मा०—"उसके बाद——"

गो० बा०—"श्री घर, अर्थात् जेल होगी।"

स्टे० मा०—"उसके बाद।"

गो० बा०—"रायबहादुरकी पदवी—"

आइये, आप हमारे इस कार्यमें यथाशक्ति सहायता कीजिए।

स्टेशनमास्टर गालपर हाथ रखकर विचारने लगे।

गो० बा०—(ठहरकर) "क्या आप कुछ भी सहायता न करेंगे ?"

स्टे० मा०—(हाथ जोडकर) "गोवर्द्धन बाबू मुझे माफ कीजिये ? मैं गरीब हूं, मैं इस कार्यके लिये असमर्थ हूं। मुझे इस फंदमें मत डालिये।"

गो० बा० -मैं क्या माफ करूं ? आप यदि मेरी सहायता न करेंगे, तो मैं ही उनको पकडनेके लिये यथासाध्य प्रयत्न करूंगा। मैं अकेला उन डकैतोंको पकड सकूंगा ?

स्टे० मा०—(हाथ जोडकर) मुझ पर कृपादृष्टि रखिये। आप महात्मा पुरुष हैं। इस गरीबके ऊपर दया कीजिये। मुझे इस फंदेसे बचाइये।

गो० बा०—(हाथ पकड़कर) 'उठिये, उठिये' यदि आप इस कार्यसे डरते हैं, तो आप सहायता मत कीजिये। मैं जो कहता हूं उसे ध्यानसे सुनिये—"यहां कोई एक ऐसा मकान है जिसमें कि उनको बंद किया जाय ?"

स्टे० मा०—"है, है बहुत अच्छी जगह पर है।"

गो० बा०—"कहां पर है ?"

स्टे० मा०—(बाहर चलकर) वह देखिये।

जो बड़ी कोठी दीख रही है! उसमें उन उन्नीस डकैतोंको बंद कर सकेंगे।

गो० बा०—"वह मकान खाली है?"

स्टे० मा०—"जी हां, खाली है। और उसमेंसे निकलना भी कठिन है। जब तक पुलिस न आवेगी, तब तक 'डकैत' इसीमें बंद रहेंगे। फिर तो 'श्रीघर' (कैदखाना) तैयार ही है।"

गो० बा०—'कृपाकर आप लालटेन लेकर आइये, मैं घर देखना चाहता हूं।

गोवर्द्धन बाबू घर देखकर फिर आफिसको लौट आये। आफिसमें जाकर करीब एक घन्टेतक बाबूसे परामर्श किया। इसके बाद इधर उधरकी बातें करने लगे। इतनेमें पौने दो बजेकी गाड़ी भी आ पहुंची। (क्रमशः)



वार्षिक विवरण—जैनशिक्षा प्रचारक सोसाइटी पहाड़ी धीरज, देहली। इसमें प्रथम सोसाइटीके कार्यकर्ताओंकी नामावली है फिर निरीक्षक महाशयोंकी शुभ सम्मतियां, पठनक्रम, नियमादि तथा ३१ मार्च १९१७ तकका खुलासा हिसाब है। रिपोर्टमें अंग्रेजी सम्मतियोंका भाषानुवाद भी होना आवश्यक था।

દંપતી વાર્તા વિહાર—પ્રકાશક ભીખાભાઈ છોટાલાલ ચૌધારી જમાલપુર, અમદાવાદ. પૃ૦ ૨૦૦ છુટક કિંમત છ આના. એમાં કુલ્લે છ વાર્તાઓ છે જેમાં એક તો ચતુરબાઈ નામે અમે બહાર પડેલા હિંદી પુસ્તકનો અનુવાદ છે. પ્રકાશક તરફથી દંપતી ધર્મ પુસ્તકમાળા પ્રકટ થાય છે જેમાં ૪૦૦ પૃ. નું વાંચન દશ આનામાં અપાય છે તેનો આ પૈકી ૧૦મો સંયુક્ત ગ્રન્થ છે. બીજાં પણ–પવિત્ર પ્રભુ પ્રેમનો પ્રભાવ, નવીન ગૃહિણી અને નરેન્દ્ર અથવા બે વિદ્યાર્થી એ પુસ્તકો એમનીજ તરફથી મળ્યાં છે જે આભાર સહિત સ્વીકારીએ છીએ. આ સસ્તા વાંચનનો દરેક ગુજરાતી બંધુએ લાભ લેવો જોઈએ. દંપતી હિતેચ્છુ નામે માસિકપત્ર પણ આજ ગૃહસ્થ તદન મફત બહાર પડે છે કે જેનું પોસ્ટેજ માત્ર છ આનાજ ભરવું પડે છે.

વાર્તા વારિધિ—૫ વર્ષ ૮ અં–૫–૬ પ્રકાશક પં૦ ઉદયચંદ લાલચંદ–અમદાવાદ. વાર્ષિક ફી રૂ. ૨। એમાં જુદી જુદી બોધપ્રદ વાર્તાનો સંગ્રહ પ્રકટ થાય છે.

પાટીદારસુબોધ કાવ્યમાલા ભાગ ૧ લો–પ્રકાશક–ભીખાભાઈ કાળીદાસ, મહીધરપુરા–સુરત કિ. ०।≈ એમાં પાટીદારોને ઉપયોગી જુદાં જુદાં કાવ્યોનો સંગ્રહ છે. સામગ્રના પ્રમાણમાં કિંમત વધુ વધારે છે.

સોલાપુર જૈન પાઠશાળાનો રિપોર્ટ–ઐલક પન્નાલાલજી દિ. જૈન પાઠશાળાનો આ ૧૯૭૧-૭૨નો સંયુક્ત રિપોર્ટ જોતાં જણાય છે કે આ પાઠશાળા સૌથી જુની એટલે ૩૨ વર્ષ થયાં ચાલે છે જે એના સંસ્થાપક શેઠ હીરાચંદ નેમચંદ દોશીનેજ આભારી છે. કુલે ૭૧ વિદ્યાર્થી પૈકી ૪૯ જૈન છે, જેમાંના બહારના ૧૬ વિદ્યાર્થીઓ નાથારંગજી જૈન બોર્ડિંગમાં રહે છે. આશરે ૪૦૦૦૦) નું ફંડ છે, જે સોલાપુરના શેઠોને ત્યાંજ જમે છે અને તેઓજ એનું વ્યાજ આપે છે. એનું પાકું ટ્રસ્ટડીડ થવાની જરૂર છે. ૭૧ વિદ્યાર્થી પૈકી ૧૯ તો સંસ્કૃત અને અંગ્રેજી ભણે છે. દેખરેખ ઘણી સારી છે. આ રિપોર્ટમાં વિદ્યાર્થીઓનો ગ્રુપ (ફોટો) પણ છે.

જૈનોનું મરણ પ્રમાણ–"મુંબઇ ઇલાકાની જૈન વસ્તીમાં પ્રાન્તવાર આવતું મરણ અને જૈન કોમના નેતાઓની ફરજ" નામે આ પુસ્તકમાંના જૈનોના મરણ પ્રમાણના આંકડા એના પ્રકાશક શ્રી નરોત્તમ બી. શાહ, ૧૫૫, મેમનવાડા, મુંબાઇએ સંશોધન કરી પ્રકટ કર્યા છે, જે જોતાં જણાય છે કે દિનોદિન મરણની સંખ્યા વધતી જાય છે અને તે ઘટે તેવા ઉપાયો યોજવા એ જૈનોની મુખ્ય ફરજ છે. બે પૈસાની ટીકીટ બીડી આ પુસ્તક મંગાવી વાંચીને વિચારવા લાયક છે.

બાલહત્યા પ્રતિબંધક ગૃહ અને અનાથ બાલાશ્રમ પંઢરપુરનો ૧૯૧૪-૧૫-૧૬નો રિપોર્ટ મળ્યો છે, જે જોતાં જણાય છે કે એમાં અનેક બાળકો અને નિરાધાર સ્ત્રીઓ પળાય છે.

હિંદુ અનાથાશ્રમ નડિયાદનો ૧૯૧૫-૧૬ નો ૨૫૦ પૃ. નો રિપોર્ટ મળ્યો છે. આ સંસ્થા દિનપરદિન મોટા પાયાપર આવતી જાય છે અને મદદ પણ ઘણીજ સારી મળે છે જે ઉત્તરોત્તર પ્રયાસનુંજ ફળ છે. અમારે કહેવું જોઇએ કે આ રિપોર્ટની ૪૦૦૦ પ્રતપર લખ-લૂટે ખર્ચ કરવામાં આવ્યો છે. એટલીજ પ્રતો આથી અડધા ખર્ચમાં છપાવી શકાત. સાર્વજનિક મદદ મેળવીને તેનો ઉપયોગ હાથ રાખીનેજ કરવો જોઇએ.

पंचामृत प्रक्षाल–प्रकाशक, बुद्धूलाल श्रावक–दमोह (सी. पी.) मूल्य डेढ़ आना। इसमें लघु अभिषेकपाठ शब्दार्थ और भावार्थ सहित सरल भाषामें दिया गया है। हमारे कई भाई संस्कृत पंचामृत अभिषेकपाठ पढ़ते हैं परंतु उसका अर्थ तो जानते ही नहीं और विना अर्थ जाने उसका फल मिलना असंभव है इस लिये जो कुछ भी पाठ पढ़ा जाय उसका अर्थ तो जानना ही चाहिये।' हरएक पाठशालामें भी यह पुस्तक प्रवेश करने योग्य है। प्रकाशकसे प्राप्य।

श्वे० तेरापंथी सभाकी रिपोर्ट–श्री जैन श्वे० तेरापंथी सभा कलकत्तेकी यह तृतीय वार्षिक रिपोर्ट देखनेसे विदित होता है कि यह सभाका कार्य उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। ५५०००) का तो स्थायी फंड है जो ११ महाशयोंके पांच २ हजार देनेपर हुआ है, जिसमेंसे पाठशाला, व्याख्यान सभा, पुस्तकालय;लायब्रेरी आदिका कार्य उत्तमतासे होता है। इस वर्षमें कुल ४८०४।-) खर्च हुआ था। इसके मंत्री केशरीचंदजी कोठारी (क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता) बहुत ही उत्साही मालूम पड़ते हैं। हरएक स्थान पर ऐसी सभा होनेकी आवश्यक्ता है।

सावित्रीका इतिहास–लेखक-राजराना भवानीसिंह बहादुर, झालावाड़ और प्रकाशक-राजपूताना हिन्दी साहित्य सभा–झालरापाटन सिटी-पृ० ८० और मूल्य पांच आने। झालावाड

नरेशने युद्ध व्याख्यानमें पढा हुआ यह व्याख्यान उनके फोटो सहित है जिसके पढ़नेसे एकता, स्वाधीनप्रियता, शूरवीरता आदि अनेक प्रकारकी शिक्षाएं मिल सकती हैं। इस सभाकी वार्षिक फी १) है, जिसमें सभाकी ओरसे प्रकाशित पुस्तकें विनामूल्य मिलती हैं, और कोई भी महाशय आठ आना प्रवेश फी देनेपर स्थायी ग्राहक हो सकता है और उन्हे सर्व ग्रन्थ लागतके मूल्यसे मिलते हैं। इसका फुटकर मूल्य भी कम रखना उचित था जिससे कि विशेष प्रचार हो।

भारतीय जै०सि०प्र० संस्थाकी रिपोर्ट—जैन साहित्यकी सेवामें रात्रिदिन त्वलीन, निःस्वार्थी समाजसेवक और बालब्रह्मचारी पं० पन्नालालजी बाकलीवालने कलकत्तेमें भारतीय जैनसिद्धांतप्रकाशिनीसंस्था नामक संस्था तीन वर्ष हुए स्थापित की है जिसका यह २४४१–४२ का हिसाब है। इतने थोड़ेसे समयमें इस संस्थाने संस्कृतके और भाषाके कई ग्रन्थ जैसे कि तत्त्वार्थराजवार्तिकजी, शब्दार्णवचंद्रिका, आप्तमीमांसा, शब्दानुशासन, जैनेंद्र प्रक्रिया, संस्कृत प्रवेशिनी आदि संस्कृत भाषा टीका सहित, तथा हरिवंश पुराण, अर्थप्रकाशिका, तत्वज्ञानतरंगिणी, न्यायदीपिका (बंगला अनुवाद) सहित आदि हिन्दी भाषाटीका सहित बहुत उत्तमताके साथ प्रकट किये हैं। संस्थाकी बहुतसी रकम पुस्तक प्रकाशनमें लग गई है और अब रोकड़ सिलक न होनेसे आगे कार्य रुका हुआ है इस लिये हरएक जैनीका फर्ज है कि इस परोपकारी संस्था द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ खरीद करें और जहां तक हो इस संस्थाके स्थायी सभासद भी बनें। यह हिसाब और संस्थाकी नियमावली निम्न लिखित पतेपर पत्र लिखनेसे मुफ्त मिलती है—मंत्री, भारतीय जैनसिद्धांतप्रकाशिनी संस्था, नं ९, विश्वकोश लेन, बाग बाजार, कलकत्ता।

पारमार्थिक संस्थाकी रिपोर्ट—जैन समाजके सुपरिचित श्रीमान दानवीर रायबहादुर सेठ हुकमचंदजी साहब (इन्दौर)ने करीब तीन लाख रुपये लगाकर इन्दौरमें दि० जैन पारमार्थिकसंस्थायें स्थापित की हैं जिनकी वीर सं. २४४२की यह रिपोर्ट मंत्री लाला हजारीलालजीने प्रकाशित की है। इसमें जैन मंदिरजी, सार्वजनिक विशाल धर्मशाला, महाविद्यालय, बोर्डिंगहाउस, कंचनबाई श्राविकाश्रम, औषधालय आदि संस्थाएं उत्तरोत्तर वृद्धि पूर्वक चल रही हैं। महाविद्यालय और बोर्डिंगमें तो छात्रोंकी इतनी संख्या हो गई है कि अब ज्यादेको भर्ती करनेका स्थान नहीं है। सेठ साहबको उचित है कि इस विद्यालयको विशेष सहायता देकर महाविद्यालयका नाम बराबर सार्थक करें। इस वर्ष धर्मशालासे १०२२७ यात्रियोंने सुगमतासे लाभ लिया था। बोर्डिंगमें ५६ विद्यार्थी रहते हैं। कंचनबाई श्राविकाश्रममें सिर्फ २० श्राविकाएं पढ़ती हैं इसलिये इनकी संख्या बढानेका प्रयास होना चाहिये। इस रिपोर्टमें पांचों संस्थाओंकी अलग अलग रिपोर्ट और आंकडा भी शामिल

किया गया है और प्रारंभमें इस संस्थाके दार्शनिक दरवाजेका भव्य चित्र भी प्रकट किया है।

જૈન પુસ્તક ભંડારનો રિપોર્ટ—ધોરાજી (કાઠિયાવાડ) માં ૧૫ વર્ષ થયાં જૈન પુસ્તક ભંડારની સ્થાપના થયેલી છે, જેનો ૧૯૬૮થી ૭૨ સુધીનો પાંચ વર્ષનો આ રિપોર્ટ જોતાં જણાયછે કે આ સંસ્થાનું કામ નિયમિત રીતે થાય છે. બોર્ડિંગ, સં. પાઠશાળા અને લાયબ્રેરી ચલાવવા ઉપરાંત પુસ્તકાલયમાં ઘણે ફિરકાના જૈન ગ્રંથોનો વધારો થયોજ જાય છે. માસિક આઠ આના ભરનાથી આ સંસ્થાના સ્થાયી મેમ્બર થવાય છે મંત્રી, કામદાર ચોપટ વનમાળી, ધોરાજી (કાઠિયાવાડ) ને લખવાથી રિપોર્ટ તથા સર્વે માહીતિ મળે છે.

ચન્દ્રચૂડ—પ્રકાશક-પુરુષોત્તમ-ગીગાભાઇ શાહ, અધિપતિ, જૈન શાસન-ભાવનગર-ભાવનગરથી જૈન શાસન નામે અઠવાડિક (હિંદી-ગુજરાતી) પત્ર પ્રકટ થાય છે તેના સાતમા વર્ષના ગ્રાહકોને આ ૨૫૦ પૃષ્ઠનું પુસ્તક ભેટ આપવામાં આવ્યું છે, જ્યારે છુટક કિંમત ૧) છે. આ એક મરાઠી પુસ્તકનો અનુવાદ છે, જે વાંચવાથી જ્ઞાતિ બંધારણોની હાલની કફોડી સ્થીતિથી કેટલી અવનતિ થતી જાયછે તેનું દિગ્દર્શન દૃષ્ટાંત રૂપે થાય છે.



अधिक मास-निर्णय।

भादवा मास ही अधिक है।

(१) जैनाचार्य्यकृत ज्योतिष ग्रन्थोंमें अधिक मासका 'निमित्तधारा', 'जैनसंहिता', 'त्रिज्ञानी-कल्प' 'भावप्रबोध' आदि अनेक ग्रन्थोंमें वर्णन है, परन्तु 'निमित्तधारा' छोटासा ग्रन्थ है उसमें इसका अच्छा वर्णन किया है।

(२) यदि मूल पाठ लेकर उसकी व्याख्या की जाय तो लेख बढ़ जानेका भय है, इसलिये खुलासा भाषामें लिखता हूं जिसको लघु दीर्घ सब समझ सकें।

(३) अधिक मास उसको कहते हैं जिसमें संक्रांति न हो, जैसे कभी वैशाख कृ० ३०को संक्राति हुई और दूसरी ज्येष्ठ शुक्ल १को जो हुई तो वैशाख मास अधिक होगा। यथार्थ यह नियम असली जानो, और भेदाभेद स्थूल मन हैं यथार्थ नहीं।

(४) अधिक मासका विचार शाका शालिवाहनसे है परंतु जो प्राणी विक्रम सम्बतसे करते हैं, उसमें अंतर पड़ जाता है।

(५) चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, अश्विन यह सात मास ही अधिक मास होते हैं। कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुण यह पांच कभी भी अधिक नहीं होते। और प्रत्येक मास १९ वर्षमें आता है, केवल ज्येष्ठ मास १९ वर्षमें दो बार आता है, ८में और ११ में।

(६) यह नियम शाका शालिवाहन १७०१ से लगाकर १८०० तक रहा, फिर इसमें परिवर्तन हो गया। भावार्थ-विक्रम सम्वत् १४४० के पश्चात इसमें भेद पड़ गया। जो आगे दिखलाया जाता है और पूरे १०९ वर्ष पश्चात् परिवर्तन अवश्य हुआ करता है।

(७) आजकलके ज्योतिषियोंने एक हिसाब

बना रक्खा है, वह इस प्रकार है कि जितने विक्रम सम्वत् हों उनमें ४ अंक और जोड़कर उन्नीसका भाग देवें जो अंक शेष बचे उनमें २-३-५-८ ११-१३-१६-०० इतनों पर ही अधिक मास होता है, और पर नहीं, और २ पर चैत्र, ३ पर आश्विन, ५ पर श्रावण, ८-०० पर ज्येष्ठ, ११ पर वैशाख, १३ पर भाद्रपद, १६ पर आषाढ़। इसी हिसाबको यथार्थ मान आजकल अनेक ज्योतिषी आश्विनको १९७४में अधिक होना बतलाते हैं परन्तु यह विचार उनका ठीक नहीं है।

(८) शाका १८०० तक यह हिसाब ठीक रहा। उसके पश्चात् मासभेद हो गया, जैसा कि १९४९ में वैशाखके स्थानपर चैत्र, १९६४में वैशाखके स्थानपर चैत्र १९६६में भाद्रपदके स्थानमें श्रावण, १९७२में ज्येष्ठके स्थानमें वैशाख अधिक मास हुए हैं।

(९) ज्योतिष शास्त्रका यथार्थ आधार सूर्यकी गतिपर है, और देशभेदसे सूर्यका उदयास्त भी पृथक् है। बस, जहां संक्रांति अमावस्यके दिन हो और दूसरी शुक्ल प्रतिपदाको हो वहां वही मास अधिक होता है।

(१०) जहां कहीं अमावस्यकी घटिका दिनमानसे थोड़ी हों और जब शुक्ल प्रतिपदा उस दिन ही आ जाय और प्रतिपदाकी घटिकाओंमें संक्रांति प्रवेश करे तो वह मास अधिक नहीं हो सकता। कुछ ग्रन्थकारोंका ऐसा भी मत है, परन्तु अप्रमाण है।

(११) १९७४ में हमारे पंचांगमें भाद्रपद कृष्णा १४ बृहस्पतिवारको ३२-२० पर सिंहार्क है और कन्यार्क अगली अमावस्यको रविवार ३३-०८ पर है और उस दिन अमावस्य २१ घटि है, इस लिये इस वर्ष भाद्रपद ही अधिक मास निश्चय है।

(१२) यदि किसीको पूर्वोक्त लेखपर कुछ शंका हो तो लिख भेजें, फिर सप्रमाण उत्तर दिया जावेगा, और सम्पूर्ण जैन सम्पादक समाजको चाहिये कि इस लेखको अपने अपने पत्रमें स्थान देकर जैनियोंका उपकार करें, क्योंकि भाद्रपद मास जैनियोंका उत्तम मास है। अलम्।

जैन मात्रका दास—

आ० मा० ज्यो० र० पं० जियालाल चौधरी—फर्रुखनगर (गुड़गांव-पंजाब)

वार्षिक भ्रमण श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम-हस्तिनापुर और जैनबिद्री मूलबिद्रीकी महान् यात्रा।

अबकी बारका आश्रमका भ्रमण अपूर्व ही होगा। इस भ्रमणमें सबसे बड़ा लाभ श्री जैनबिद्री मूलबिद्रीकी बन्दनासे विशेष पुण्यबन्ध और विशुद्ध परिणामोंकी प्राप्तिका होगा। दूसरा लाभ सत्संगतिका होगा। अबकी बार ब्रह्मचारियोंके साथ बाबा भागीरथजी वर्णी, ला० गेंदनलालजी—अधिष्ठाता आश्रम, पं० मक्खनलालजी शास्त्री—न्यायालंकार—मुख्याध्यापक आश्रम तथा बाबू ज्योतिप्रसादजी—सम्पादक, जैनप्रदीप आदि विद्वान् साथ

रहेंगे, इससे मार्गमें तत्वचर्चा, शास्त्रसभा, व्याख्यान सभाओंका अच्छा आनन्द रहेगा। विशेष हर्ष यह है कि अबकी बार श्रीमान् **ला० जग्गीमलजी**—सभापति आश्रम रईस, देहली तथा साहू **जुगमन्दरदासजी**—ऑनेरेरी मजिस्ट्रेट, नजीबाबाद—मंत्री आश्रम भी कुछ समयके लिये भ्रमणमें साथ रहेंगे ऐसी आशा की जाती है। इसमें सन्देह नहीं कि अबकी बारका भ्रमण महत्त्वका होगा। जो महानुभाव इस समागमके साथ इस महान् यात्राका लाभ लेना चाहें वे कृपाकर हमें सुचित करें।

विशेष—अबकी बार १५–२० ब्रह्मचारी भ्रमण करेंगे, शेष कुल ब्रह्मचारी सिद्धक्षेत्र श्री सोनागिरजीमें रहेंगे।

प्रोग्राम इस प्रकार है:—

१	देहली	१– २ अगस्त
२	ग्वालियर	३– ४
३	खंडवा	५– ७
४	नांदगांव	८– ९
५	बारामती	१०–१२
६	बार्सी-टाउन	१३–१५
७	कुंथलगिरि	१६–१८
८	शोलापुर	१९–२१
९	हुबली	२२–२४
१०	श्रवणबेलगुल (जैनबिद्री)	२५–२८
११	मूलबिद्रि	२९– १ सितम्बर
१२	मेंगलोर	२– ४
१३	मैसूर	५– ८
१४	दावनगिरि	९–१२
१५	बेलगांव	१३–१५
१६	कोल्हापुर	१६–१७
१७	सांगली	१८–२०
१८	पूना	२१–२३
१९	बम्बई	२४–२७
२०	गजपंथाजी	२८–३०
२१	हस्तिनापुर	१ अक्टूबर

नोट—कारणवश नियमित तारीखोंमें एक दो दिनका परिवर्तन होनेसे आगेके स्थानोंमें तार द्वारा सूचना दी जावगी।

समाजसेवी—
गेंदनलाल, अधिष्ठाता—आश्रम
हस्तिनापुर (मेरठ)



(१)

रात्रिका समय है, सम्पूर्ण पशुपक्षी वगैरह निद्रादेवीकी गोदमें पड़े हुए है, चन्द्रदेव मानो अपना कलङ्क प्रगट होनेके डरसे आधा मुख छिपाते हुए आकाशमें गमन कर रहे हैं। सब जगह शान्ति देवीका राज्य स्थापित है; ऐसे समयमें मैं अपने पाठकोंको बनारसके धर्म नामक उद्यानमें लिये चलता हूं। पाठको! चलो, हम लोग आज ऐसे समयमें बागकी बहार लें। एक मनुष्य जिसने युवा अवस्थामें अभी ही प्रवेश किया है एक मेडको रस्सीसे बांधकर लिये

जा रहा है, हाय! हाय! अरे पापी! तु ये क्या करने लगा? क्या तुझे पापका डर नहीं? तू समर्थ है तो क्या दुसरे निर्बल जन्तुओंको मारनेके लिये....हाय! पर वहां ऐसा कहनेवाला ही कौन है? आखिर उस पापीने वहां पर उस मेढ़ेको मार ही डाला और उसका मांस भक्षणकर नौ दो ग्यारह हो गया।

(२)

"महाराज अब मैं क्या करूं! मेरा नीच पेशा है। मुझे प्रतिदिन फांसी देनेका कार्य करना पड़ता है। अब मैं आपके उपदेशका पात्र कैसे बनूं?"

सर्वौषधि मुनिके निकट एक मनुष्य हाथ जोड़े हुए बैठा है और उक्त प्रकारके वचन कह रहा है इसी समय सज्जन दुर्जन और नीच ऊंचमें रागद्वेष रहित सर्व हितकारी मुनि महाराज बोले–

मुनिराज—यमपाल, यद्यपि तेरा पेशा बहुत खराब है किन्तु "तू मेरे उपदेशका पात्र नहीं है" यह कहना भी ठीक नहीं। यदि तुम अपना रोजगार नहीं छोड़ सकते तो चतुर्दशीके दिन इस कामसे दूर रहा करो। तेरा इसमें भी बड़ा कल्याण होगा परन्तु याद रखना कि इस प्रतिज्ञाको जन्मभरमें कभी धक्का न लगे।

यमपालको मुनिराजके अमृतमय वचन सुनकर बहुत आनन्द हुआ–

(३)

क्योंरी, आज तेरा पति कहां गया?

स्त्री—महाराज, आज वे प्रातःकालसे ही दूसरे ग्रामको चले गए हैं।

आगन्तुक—(अपने आप जरा जोरसे) अरे अभागे! आज तू ग्रामको चला गया! आज सेठके लड़केकी फांसी लगाना थी। तेरा तो उसके गहनोंसे ही जन्मदारिद्र्य चला जाता।

हाय लोभ! तू सचमुच पापका बाप है। बड़े२ वीरोंके भी तेरे साम्हने छक्के छूट जाते हैं। फिर चोरी चण्डालिनीकी क्या ताकत है जो तेरे साम्हने चूं भी कर सके। आखिर तुम्हारे बाणने चण्डालिनीके ऊपर असर कर ही दिया। अब यह बिचारी शोक सागरमें निमग्न हो गई। अब वह क्या करे? यदि कहती है तो पतिका भय है। यदि नहीं कहती है तो धन हानि होती है परन्तु आज लोभ महाराज अकेले ही नहीं आए थे किन्तु अपनी प्राण प्यारी मायारानीको भी साथमें लाये थे। आखिर उस बेचारीने मायारानीकी शरण ली और कोटपालसे तो यही कहने लगी कि वे ग्रामको गये हैं और अंगुलीसे अपने पतिकी तरफ इशारा करने लगी। आखिर बेचारे चाण्डालको बाहर आना ही पड़ा।

(४)

आज तुमको श्रेष्ठि पुत्रकी फांसी लगाना होगी।

महाराज! आज तो चतुर्दशीका दिन है इसलिये मैं फांसी नहीं लगा सकता।

(जोरसे) अच्छा, तू हमारी आज्ञाका उल्लंघन करता है। आज मैं तुझे इसका मजा चखाऊंगा, देखें, फिर तेरी प्रतिज्ञा कहां रहती है।

नरनाथ! आप समर्थ हैं जो चाहें कर सकते

हैं किन्तु मैं अपने व्रतका भंग नहीं करूंगा। चाहे मुझे ही फांसीका हुकम भले ही हो जावे किन्तु मैं अपने इस नश्वर शरीरको ऐसे कामोंमें लगा देख बहुत प्रसन्न हूंगा।

(क्रोधसे) कोटपाल! इस दुष्ट चाण्डालको और श्रेष्ठिपुत्रको ले जाकर मगरमच्छादि सहित सरोवरमें बांधकर गिरा दो।

लेखक—अहाहा! यमपाल तुम्हें धन्य है! एकवार नहीं सहस्र वार तुम्हें धन्य है! धन्य है! तुम ऐसी कठोर आज्ञाको सुनकर भी नहीं हिले, धन्य है तुम्हारे साहसको! तुम कभी नहीं घबड़ाना, इस राजाने अभी तुम्हारे व्रतके प्रभावको नहीं जाना है पीछे तो ये आप ही पछतायगा। अब मैं तुमसे क्या कहूं? कोटपालने तो तुम्हारी मुसकें ही बांध दी और अब तुम सरोवरमें गिरा दिये जावोगे।

(९)

बनारस वासियोंके झुंडके झुंड एक छोटेसे सरोवरकी ओर जा रहे हैं! न मालूम आज वहां क्या उत्सव है?

पाठको! चलो इन्हींके साथ हम भी चलें। अहाहा! यह तालावके बीचमें क्या चमक रहा है? ओ हो! यह तो रत्न सिंहासन है और उसके ऊपर एक आदमी बैठा हुआ है। ऐसा कहते२ और देखते २ मनुष्योंके झुंड तालाबके पास पहुँचे। वहां देखते क्या है कि उस सिंहासनपर बैठे हुए मनुष्यका देव अभिषेक कर रहे हैं। अरे! उसके ऊपर तो हमारा पूर्वपरिचित यमपाल ही बैठा हुआ है।

लेखक—यमपाल, धन्य है तेरे प्रतिज्ञा पालनको! अन्यथा तेरा अभिषेक देव क्यों करते? हाय! काल! तू वास्तवमें काल है। तूने मेरे वे दिन कहां खो दिये! हाय! अब वे दिन कहांसे पावें जब कि चांडालकी भी देव सेवा करते थे। हाय! हम लोग जरासी भी प्रतिज्ञा दो चार दिनके लिये भी पूर्ण नहीं कर सकते। जैन जातिके वीरो! क्या तुम भी इस प्रकारका प्रतिज्ञा पालन कर जैन धर्मकी प्रभावना करोगे! पाठको! कह बैठना कि ये कहांका रोना गाना मचाया है इससे मैं स्वतः पहिलेसे ही शांत हुआ जाता हूं। आपको मैं ज्यादह तकलीफ नहीं दिया चाहता लेकिन एक वार वीर प्रभुकी जय बोलकर प्रतिज्ञा पालनमें तत्पर हो जाओ।

दरबारीलाल जैन—दमोह सी. पी.



मनुष्यजन्मका कर्तव्य और सुख प्राप्तिका उपाय।



(ले० मोहनलाल बड़जात्या—कुचामन)

प्रिय पाठक वृन्द!

"मनुष्य जन्म अति दुर्लभ है" ऐसा ज्ञानी पुरुष, वैरागी महात्मा, तपस्वी जन, कह गये हैं और यह यथार्थ है क्योंकि निगोदरूपी स्वयम्भू समुद्र, एकेन्द्रियरूपी लवण समुद्र, विकलेन्द्रियरूपी कालोदधि समुद्र और पशु आदि पर्याय रूपी महा सागर पार करके इस मनुष्यरूपी कुडमें भाग्योदयसे शुभ कर्म प्रभावात् ही आ पड़े हैं अर्थात् भयंकर दुःख

और सागरोपम आयुष्यरूपी अपार जलको तैर कर थोडी आयुष्य और तुच्छ सुखरूपी थोड़े जलमें यानि मात्र पांव डुबे इतने जलमें आ गये हैं। और अब हमको विशेष-दूर भी नहीं जाना है क्योंकि परम सुखरूपी जो मोक्षमहल है उसका द्वार यह नर देह है, इस द्वारको खोलकर बन्धुगण आगे बढ़नेका प्रयत्न करिये, कार्यसिद्धि आपको अवश्य मिल जायगी।

मनुष्य भवमें स्वपर कल्याण करनेके लिये अन्य भवोंकी अपेक्षा इतनी अधिक सामग्री मिली है कि उसका वर्णन करना कठिन है और यह बात आप जानते ही हैं कि अनन्त पुण्यराशीके बलसे यह भव मिलता है और इस भवमें पांचों इन्द्रिय, मन, वचन, काय और ज्ञानके प्रयोग द्वारा इच्छित वस्तुकी प्राप्ति कर सक्ते हैं। इन्द्रियोंके प्रयोगसे यह तात्पर्य नहीं है कि इन्द्रियोंसे सांसारिक काम लो-विषय-सेवनादि करो, लेकिन मतलब यह है कि शरीरसे तप आदि करो, हाथसे दान देओ, रसनासे यह ही नहीं कि अच्छे २ पदार्थ खाये, पराइ निंदा करी, असत्य भाषण किया आदि, लेकिन उपदेश दो, सत्य बोलो, कभी किसीकी निंदा न करो, जिव्हाइन्द्रियके वशीभूत होकर आप जानते ही हैं मच्छीकी क्या गति होती है। घ्राणेन्द्रिय इत्र तेल वगैरः सुगंधित पदार्थोंसे दूर रहो ये पदार्थ राग उदय करते हैं। भ्रमर इसी इन्द्रियके वश कमलके भीतर ही रह जाता है। चक्षुइन्द्रियकेप्रयोगसे यह अर्थ नहीं है कि आप सांसारिक पदार्थोंको देखकर आनंदित होवो, दुनयकी सुन्दरताको देखकर नयन तृप्त करो, यह रमणी अच्छी है यह स्त्री सुन्दर आदिसे पाप बन्ध करो, लेकिन इन दो नेत्रोंसे जिन दर्शन करो, तीर्थादि पर जाकर वहां जिनराजके दर्शन करो, इनके द्वारा शास्त्र पढ़ो आदि। श्रोत्रसे यह तात्पर्य नहीं है कि इनसे आप रागादिकके गीत सुनो, वेश्यादिके भण्डगान श्रवण करो, अपनी कुल कामिनियों द्वारा महान निन्दनीक सीठनादि सुनो, लेकिन श्री जिनवाणीका श्रवण करो, उपदेशादि होते हो वहां जाकर सुनो!

इस असार मनुष्य देहको ही विद्वानोंने संसारसमुद्रसे तिरनेका एक मात्र कारण कहा हैः—

संसारवार्धेस्तरणैकहेतुम्, असारमप्येम
मुशन्ति यस्मात्।
तस्मात् निरीहैः अपि रक्षणीयः कायः
परं मुक्तिलता प्रसूत्यै॥

अतः मुक्तिकी बेल इस नर कायाका-उत्तम साधनों युक्त इस नर देहका दुरुपयोग न करके सदुपयोग ही करना **आवश्यक है।**

स्व-पर (अपना तथा दूसरेका) हित करना मनुष्य जन्मका कर्तव्य है इसलिये जो मनुष्य तन मन धनसे पर-हित करता है और परोपकारी कार्य करके कीर्ति सम्पादन करता है उसी मनुष्यका नरजन्म सार्थक है। कहा है कि—

यस्मिञ्जीवति जीवन्ति बहवः स तु जीवति।
का कोऽपि किं न कुरुते चञ्च्वा स्वोदरपूरणं॥

जिसके जीनेसे बहुत मनुष्य जीते हैं वही जीता है बाकी तो कौवा भी अपनी उदर पालना चोंच द्वारा करता है इस लिये

जो प्राणी स्वोदर निर्वाह उपरांत अन्य अनेक प्राणियोंको जीवित रख सकता है—पाल सकता है, उनके निर्वाहादि साधनोंमें सहायभूत हो सकता है उसीका जीवन यथार्थ जीवन है। लेकिन जो जन्म धारण करके मात्र अपने हितमें अनुरक्त रहता है—अपनी पेट पालना ही में लीन रहता है और पर-हितके लिये एक क्षण भी उद्योग नहीं करता उसका जीवन कागके जीवनके समान जगतको निरुपयोगी है।

यह न समझलें कि भोजन मात्र ही जीवन साधन है यानि भोजन दान ही प्राणियोंको जीवित रख सकता है। नहीं नहीं, विद्यादानसे भी जीवित रह सक्ता है यानि विद्या पढ लेगा तो अपनी जीविका उत्पन्न कर लेगा। शास्त्रोंमें दान चार प्रकार कहा है और इस विद्यादानमें अन्य दान आ जाते हैं लेकिन अभी यह विषय नहीं है अतः यही कहना काफी है कि दान करते रहना चाहिये।

अब स्वपर कल्याण क्या है? कैसे करना? किस किसने किया है इत्यादि बातें जाननेके लिये शास्त्र अध्ययन एवं श्रवणकी आवश्यकता है। कितने मनुष्य शास्त्र श्रवण करके सृष्टिमें विपरीत वर्तना देखकर कालको दोष देते हैं, कइ धर्मको दोष देते हैं, कइ भावी भावपर आधार रखते हैं तो कइ भवस्थितिकी बाट जोते हैं। कइ ऐसे कहते हैं कि जैसा केवली भगवानके ज्ञानमें झलका है वैसा होगा तो कइ क्षेत्रपर दोष मढते हैं इस प्रकार कइ निकम्मे कारणोंकी शोधना करके समय बरबाद करते हैं लेकिन हमसे क्या बनेगा यह विचारते भी नहीं हैं। ऐसा नहीं चाहिये, धर्म कृत्यमें गुरुपतासे उद्यम करना योग्य है अतः प्रत्येक छोटे बड़े, धनवान, दरिद्र मनुष्य देहधारीका कर्त्तव्य है कि जो अन्य मानव बन्धुगण किसी आधि व्याधिकर पीडित हो, ज्ञानसे विमुख हों, धर्म ज्ञान रहित हो उनका दुःख दूरकर सन्मार्ग बताना, कुमार्ग छुडाना, यह मनुष्य जन्मका बडेसे बडा और ऊंचा कर्तव्य है।

स्वयं तरना—परको तारना—उद्धारना।

अब पाठक वृन्द! धर्म तथा मनुष्यजन्मकी उत्तमताके संबंधमें महान तपस्वी, अनुभवी, महर्षी, महात्माओं द्वारा कथित चार अति उत्तम श्लोक लिखता हूं उनको आप सदैव ध्यानमें रक्खेंः—

त्रिवर्गसंसाधनमतरेण, पशोरिवायुर्विफलं नरस्य।
तत्रापि धर्मं प्रवरं वदन्ति, न तं विनायद्भवतोर्थकामौ॥

अर्थः—त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ, और काम) के साधे विना मनुष्यकी आयु पशुके समान व्यर्थ है और इनमेंसे धर्मको श्रेष्ठ कहा है क्योंकि इसके बिना अर्थ और काम नहीं साधे जा सकते हैं।

यः प्राप्य दुष्प्राप्यमिदं नरत्वं, धर्मं न यत्नेन करोति मूढः।
क्लेशप्रबन्धेन सलब्धमब्धौ, चिन्तामणिं पातयति प्रमादात्॥

अर्थ—जो मूढ पुरुष इस दुष्प्राप्य नर देहको पाकर यत्न सहित धर्म साधन नहीं करता है वह अति कष्टसे मिले हुवे चिन्तामणि रत्नको प्रमाद पूर्वक समुद्रमें फेंकता है।

स्वर्ण स्थाले क्षिपति सरजः पादशौचं विधत्ते।
पीयूषेण, प्रवर करिणं वाहयत्यैधभारं।

चिन्तारत्नं विकरति कराद्वायसोड्डायनार्थम् ।
यो दुःप्राप्यं गमयति मुधामर्त्य जन्मप्रमत्तः ॥

अर्थ—जो पुरुष अति दुःखसे प्राप्त हुवे मनुष्य जन्मको व्यर्थ खोता है वह सोनेके थालमें धूल फेंकता है, अमृतसे पांव धोता है, उत्तम हाथी द्वारा काष्ट भारा ढुहाता है, और कागके उडानेके लिये चिन्तामणि रत्नको हाथसे फेंकता है ऐसा समझना चाहिये।

ते धत्तूरतरुं वपन्ति भवने प्रोन्मूल्य कल्पद्रुमं।
चिन्तारत्नमपास्य काचशकलं स्वीकुर्वते ते जडाः।
विक्रीयद्विरदगिरीन्द्रसदृशं क्रीणन्ति ते रासभं ।
ये लब्धं परिहृत्य धर्ममधया धावन्ति भोगाशयाः ॥

अर्थ—जो अधम पुरुष प्राप्त हुवे धर्मको छोडकर विषय भोगादि वाञ्छनाके लिये दौड़ते हैं वे मूर्ख अपने गृहांगणमें उगे हुवे कल्पवृक्षको उखाड़कर उसके स्थानमें धतुरेको बोते हैं। चिन्तामणिको त्यागकर काचके टुकडेको स्वीकार करते हैं तथा पर्वतके समान ऊंची कायके हाथीको बेच कर गधा मोल लेते हैं।

अतः पाठकगण, इस संसारमें चौरासी लाख योनीमें भटकते भटकते अत्यंत पुण्य राशीसे मिले हुवे इस दुर्लभ मनुष्य जन्मको व्यर्थ न खोओ और मोक्ष साधनके उपाय करते रहो। उन उपायोंमेंसे मुख्य धर्मसाधन, इन्द्रिय दमन, परोपकार आदि हैं।

अब सुख प्राप्तिके उपाय सुनिये—सुख प्राप्तिके उपाय ये ही हैं जो कि मनुष्य जन्मके कर्तव्य हैं—लेकिन सुख क्या वस्तु है यह विचारणीय है। सुखके लिये प्रत्येक प्राणी प्रयत्न करता है लेकिन सुख क्या है, वह किस रीतिसे प्राप्त हो सकता है, इस बातका ज्ञान कईयोंको नहीं है। कई पैसेमें-धन द्रव्य में सुख मानते हैं तो कई अधिकारमें—ओहदा पद आदिमें मानते हैं, और कई स्त्री पुत्रादिकमें सुख मानते है और कुछ वैराग्यानंद तथा ज्ञानानंदमें सुख मानते हैं, लेकिन उन सर्व भिन्न भिन्न दिशामें प्रयत्न करनेवालोंने मताग्रही होनेके कारण जो सुख मान लिया वही सुख है अन्य कोई सुख नहीं है—ऐसा निधड़क कहते हैं लेकिन पाठकगण, सच्चा सुख तो वही है कि जिसका परिणाम दुःखरूप न हो।

दौलत—लक्ष्मी में ही सुख माननेवाले यह विचारते नहीं कि—

जनयत्यर्जने दुःखं तापयन्ति विपत्तिषु ।
मोहयन्ति च सम्पत्तौ कथमर्थाः सुखावहाः ॥

अर्थ—जो धन उपार्जनके समय दुःख देता है विपत्तिमें परिताप करता है और सम्पत्तिमें मोह करता है ऐसा धन सुखकारी कैसे होसक्ता है। अतः धन सुखकारी नहीं ऐसा सिद्ध होता है।

फिर स्त्री पुत्रादिक भी क्षणिक सुख ही देनेवाले हैं क्योंकि ये शाश्वत और चिरस्थायी नहीं है इसलिये इनमें सुख माननेवाले भी गलती करते हैं। जिसमें हम सुख मानते हैं वही वस्तु परिणाममें यदि दुख उपजावनेवाली हो जाय तो हमको समझना चाहिये कि हमारा माना हुवा सुख, सच्चा सुख नहीं है। सुख तो उसे ही कहना योग्य है कि त्रिकालमें कोई भी कारणवशात

उसका परिणाम दुःखरूप न हो। इसलिये क्या स्त्री पुत्रादिककी प्राप्तिमें सुख मानने वालोंका विचार ठीक है! देखिये, स्त्री आदि यदि सद्गुणी, धर्मशील और व्यवहारदक्ष हों तो व्यवहारमें सुखदाई हैं लेकिन ऐसा होते हुवे भी स्त्री पुत्रादि अजर अमर नहीं है लेकिन नाशवत हैं इसलिये जब वे नाश होते है—दैव योगसे उनका और आपका वियोग होता है तो वह वियोग अमरुय दुःखदाई होजाता है, उनके संयोग समागमसे जो सुख मिलता उससे विशेष अधिक दुःख उनके वियोग होनेसे भोगना पडता है। फिर कहा भी है कि—

चल वित्त चल मित्र चल भार्या च मंडली।
चलाचले च संसारे धर्म एको हि निश्चल ॥

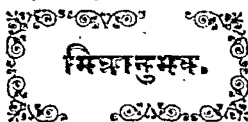
अर्थ—धन, मित्र, स्त्री, मंडली आदि सर्व चल हैं। ऐसे चल और अचल रूप संसारमें सिर्फ एक धर्म ही निश्चल स्थिर है। इस प्रमाणसे स्त्री, पुत्र, धन, मित्र, आदिकी प्राप्ति सच्चे सुख और आनंदको देनेवाली नहीं है लेकिन ये क्षणिक अस्तित्वशील होनेके कारण आरम्भमें सुख देकर मोह उत्पन्न करते हे पर अंतमें सब ही अति दुःखदेनेवाले हो जाते हैं।

फिर धन और अधिकारकी प्राप्ति भी यथार्थ सुख है या नहीं सो विचार करिये तो इस सुखकी भी दशा ऊपर वर्णित सुखके समान ही हे कारण कि धन भी अचल नहीं चल है। अधिकारका भी प्रारब्ध नियमानुसार परिमित समय तक अस्तित्व रहता हे और जब धन तथा अधिकार पुण्य क्षय होते ही हाथमेंसे चले जाते हैं तो अपनी अंतरात्मा सृष्टि नियमको न समझकर दग्ध होता है, अपना मन विह्वल और व्यग्र हो जाता है, अपने चेहरे पर शोक छा जाता है और फिर सोना, बैठना, खाना पीना कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। इस प्रकार धन और अधिकारका नाश अनेक प्रकारसे दुःखदायी हो जाता है, इस प्रकार प्रमाणित है कि धन और अधिकारकी प्राप्तिसे मिला हुवा सुख शाश्वत् और यथार्थ सुख नहीं है पर क्षणिक—अचल होनेके कारण मिथ्या है। अब एक ही प्रकारके सुख पर विचार करना रहा है और वह ज्ञानानंद अथवा वैराग्यानंदसे उत्पन्न हुवा सुख है। जिस ज्ञानसे वस्तुका यथार्थ और ज्ञान हो वही सच्चा ज्ञान है। वैराग्य धारण करनेवालोंका ज्ञान प्राप्त करनेकी इच्छा वालोंको इन्द्रियजीत होना चाहिये। मोह, माया, और ममताका त्याग करना चाहिये। संसार असार है इस विषयका यद्यपि ज्ञान होना चाहिये, और पहिले जो श्लोक लिखा गया है उनके प्रमाण पुत्र मित्र स्त्री धन आदि चल है, और सिर्फ एक धर्म ही निश्चल है, ऐसा विश्वास होना चाहिये, इस प्रकार सर्व प्रकारकी पात्रता प्राप्त करनेसे ही सच्चे सुखकी प्राप्ति करके उसका आनन्द ले सकते हैं।

नासमझ अज्ञानी मनुष्यको यदि कभी मंगल प्रभावान सच्चे सुखको प्राप्त करनेका मार्ग मिल जाय तो भी वह उसको ग्रहण नहीं कर सकता है और सच्चा सुख क्या है उसे पहिचान भी नहीं सकता अब पाठकगण

यदि आपकी सच्चा सुख प्राप्त करनेकी इच्छा हो तो सद्विद्या संपादन करो, शास्त्रका श्रवण, मनन, और अध्ययनका अभ्यास रक्खो, सत्संग करो, धर्माचरण करो, जगत तथा स्त्री पुत्रादि और धन दौलतके मिथ्या मोहका त्याग करो, पुण्य और परमार्थके कार्मोकी साधना करो और यथार्थ तत्त्वका--सत्य स्वरूपका ज्ञान प्राप्त करो इत्यादिकी जितनी आप साधना कर सकेंगे तो सच्चा सुख उतना ही आपके समीप २ आता जायगा। आप यह भी निश्चय रखिये कि नाशवंत पदार्थोंमें मिथ्या मोहसे माना हुवा सुख सच्चा सुख नहीं है लेकिन सच्चा ज्ञान और वैराग्यके फल स्वरूप मिला हुवा सुख ही शाश्वत, चिरस्थायी और तीनों कालमें आनंद देनेवाला है।

सद्गृहस्थो, आशा है कि सच्चे सुखको इस प्रकार पहिचान कर उसकी प्राप्तिका उपाय आप करेंगे और सांसारिक मिथ्या सुखमें न फंसकर अध्यात्मज्ञानकी प्राप्तिद्वारा सच्चे सुखको प्राप्त करेंगे तथा अन्य बन्धुवोंको भी सन्मार्ग बतावेंगे। आपका प्रयत्न फलदायी हो ऐसी इच्छा करता हुवा मैं लेखिनीको विश्राम देता हूं। इति शुभम्।



मित्रानुभव.

દરેક મનુષ્યને સુખ તથા શાન્તિ આપનાર જગતમાં ત્રણ વસ્તુ છે. એક મિત્ર બીજું સંગીત અને ત્રીજું વનસ્પતિ છે. ગાયન કાનને અતિ પ્રિય છે અને તેથી ઘણો આનંદ થાય છે. વનસ્પતિ આંખને તાઢી કરનાર છે અને હૃદયમાં શાન્તિ આપે છે, પણ આ બન્ને કરતાં મિત્ર વધારેમાં વધારે સુખ, આનંદ અને શાન્તિ આપનાર છે. મિત્ર વગર કોઇપણ માણસ જોઇએ તેવો સુખી થઇ શકતો નથી. અને ખરો શાન્તિ તથા અત્યંત આનંદનો ભોગી પણ નજ થાય.

મિત્ર કેવો જોઇએ? આપણે સોનું લઇએ તે કસોટી પર ઘસીને લઇએ છીએ. પતિ પત્નિનો સંબંધ થાય છે, તે પણ ગુણ દોષની ઓળખાણ કરીનેજ થાય છે. ગમે તે વસ્તુનો સંગ્રહ કરતાં પહેલાં તે કેવી છે તે તપાસવું પડે છે અને તપાસીનેજ ગ્રહણ કરીએ છીએ. ત્યારે મિત્ર કરવો તે પણ તપાસીને અને તેના ગુણ દોષ જાણીનેજ કરવો કારણકે પાછળથી કેટલાકને પસ્તાવું પડે છે.

મિત્ર સદ્ગુણી, નિર્લોભી, અઢળ પ્રેમી, નિસ્વાર્થી અને સારે રસ્તે દોરનાર હોવો જોઇએ. જેનામાં આવા ગુણ છે તેજ સારો મિત્ર છે. નહિ તો પોતાનો સ્વાર્થ સાધનાર, આપત્તિ કાળે દૂર ખસનાર કપટી કે લોભી હોય તે મિત્ર નહિ પણ શત્રુજ છે. મનુષ્યના ગુણ દોષની પરીક્ષા સહવાસથી થાય છે, માટે મિત્રતા કરતા પહેલાં તેના ગુણ-દોષની પરીક્ષા કરી લેવી.

મિત્ર શા માટે જોઇએ? દરેક મનુષ્ય જાતિને ઘણી વખતે ઘણાં સંકટો આવે છે, તે સંકટોને દૂર કરવા, હૃદયને શાન્તિ મળવા, મનને આનંદથી ભરપુર ભરવા, અને સારે માર્ગે જવા સારૂ સલાહ પૂછવા માટે મિત્ર જોઇએ. કંઇ કારણસર અકળાયલા મગજને શાન્તિ આપનાર પણ તેજ છે. અરે! તેના વગર તે વખતે બીજું કોઇ શાન્તિ આપવા સમર્થ નથી.

કારણકે જે વિચાર માતાને ન કહી શકાય, પિતાને ન કહી શકાય કે બીજા કોઇ

પણ ઘર કુટુંબીને ન કહેવાય તે એક મિત્રનેજ કહેવાય છે કારણકે બન્નેના વિચાર મળતા આવે છે અને હૃદય પણ એક સલાહથી કામ કરે છે આમ જ્યારે થાય ત્યારે મનનો ભાર તદ્દન હલકો થઇ જાય છે મિત્રને પોતાની ગુપ્ત વાત કહેવામા ભય હોતો નથી કે લજ્જા આવતી નથી અને કોઇ વાતનો સંકોચ પણ થતો નથી અને પોતાના હૃદયનો ખુલાસો ખુલ્લા દીલથી વાત કરીને કે પત્ર લખીને કરે છે

મિત્ર બે રીતે થઇ શકે છે.

એક સ્વાર્થ સાધનારો અને બીજો નિ સ્વાર્થ રીતે એક બીજાને પ્રાણ અર્પણ કરનાર હોય છે, તે હમેશા પોતાનો સ્વાર્થ કેમ સધાય, તેમાજ પોતાના વિચાર જમાવી બેઠેલો હોય છે. તે પહેલા તો એગલો બધો પ્રેમ દેખાડે છે કે જાણે આપણે બન્ને એકજ છીએ પણ સ્વાર્થ સધાય એટલે ધીમે ધીમે દૂર ખસવા માડે છે. કહ્યું છે તે પ્રમાણે પોતાનો સ્વાભાવ તે પ્રગટ કરે છે—

दुर्जन प्रियवादी च नैतद् विश्वासकारणम् ।
मधु तिष्ठति जिह्वाग्रे हृदये तु हलाहलम् ।

અર્થ—જે દુર્જન માણસ હોય છે તેના પ્રિય વચનો પર કોઇ પણ કાળે વિશ્વાસ રાખવો નહિ કારણકે તેના જીભ પર મધુ હોય છે (એટલે સારા પ્રિય વચન બોલી બીજાને ઠગે છે) પણ તેના હૃદયમા તો તત્કાળ મૃત્યુને પ્રાપ્ત કરનારૂ વિષ હોય છે (એટલે તેના મનમા એટલુ તો કપટ હોય છે કે આમાનુ બુરૂ કરવા જરીએ ચૂકતો નથી અને વરત ખરાબ સ્થિતિમા આણી મૂકે છે), તેથીજ સાધુ પુરૂષોને પણ આવા દુર્જનનોજ ભય હોય છે તેઓને બીજા કોઇનો ભય હોતો નથી આવી થોડા દિવસો માટેની સ્વાર્થી અને કપટી મિત્રતાને ધિક્કાર છે ગુણ દોષની પરીક્ષા ન કરી હોય તો આવુ થાય છે. નહીતો ખરૂ પ્રેમમા હમેશા ગમે તે મિત્ર ગુણવાનજ રહે છે.

મિત્ર માત્ર બે અક્ષરનુંજ નામ છે, પણ તેમાં શું રસવતા અને શું એકતા ભરામણી છે તે સમજાતુ નથી

शोकारातिभयत्राणं प्रीतिविश्रम्भभाजनम् ।"
केन रत्नमिदं सृष्टं मित्रमित्यक्षरद्वयम् ॥

જો કદાચ કોઇનો કુમિત્રથી પ્રસંગ પડયો હોય અને તેની સાથે અત્યતાની જોડાયો હોય તો તે મૂર્ખ અને દુરાચરણી બનાવી દે છે. કારણકે જેના તરફ વધારે બળ હોય, તેના તરફ તેનુ વલણ આપોઆપજ થાય છે. જો સારો સદ્ગુણી મિત્ર હોય અને તેની સાથે સાધારણ ગુણવાળો જોડાયો હોય, તો તે પણ સારો કે ઉત્તમ થઇ જાય છે લોઢુ જો પારસમણીનો સ્પર્શ કરે તો તે સુવર્ણરૂપ ધારણ કરે છે. આ ઉપરથી સહજ વિચાર આવશે કે "સોબતે અસર થાય છે"

સારા મિત્રથી ફાયદા અને ઘણોજ આનદ થાય છે. જો કોઇ કુરસ્તે દોરાતો હોય તો તેને સુધારી સારે રસ્તે દોરે છે, અજ્ઞાન હોય તેને સુવિચાર સુઝાડી જ્ઞાન આપી સજ્ઞાન કરે છે; કંઇ નાના નાના અવગુણો હોય તો તેને પણ હમેશા ટોકતા રહી સુધારવા તરફ તેનુ મન સતત પ્રયત્ન કરે જાય છે

ખરો મિત્ર જે હોય છે તે એક વખત બાંધેલી મૈત્રી તોડવા કોઇ કાળે ઇચ્છતો નથી કહ્યુ છે કે " પીડાની ભરેલી પ્રિત તોએ કરે પડિત, દુ:ખ પામે તોએ સ્હાયના ઘટી" તેમ તે છોડતો પણ નથી જો તે ગરીબ હોય કે ધનવાન હોય, સુખી હોય કે દુ:ખી હોય અથવા બીજી કંઇ પણ આપત્તિ આવે તોપણ તે તેને છોડતો નથી

उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे शत्रुविग्रहे ।
राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धव ॥

કોઇએ તો આવોજ બધુ જોઇએ મિત્રની કસોટી માટે ખરેખર ઘણાજ વિઘ્ન આવે છે. પણ તે બધાને ધીરજ ધરી સહન કરવાથી આગળ સુખ મળશે એમ લાગે છે

મિત્રનો વિચાર કરવાથી અતિશય આનંદ થાય છે. તેનો સહવાસ અત્યન્ત પ્રિય થઇ પડે છે અને એનાથી જરીએ દૂર ખસવાનું મન થતું નથી. અહા ! મિત્રના સંયોગથી શું આનંદ થાય છે, તે વખતના હૃદયની લાગણીને જણાવતા અરે ! હું તો અસમર્થજ છું. સતત તે અટળ પ્રેમપણામાં મચ્યાં રહે છે અને તાદાત્મરૂપ ધારણ કરવા ઇચ્છે છે.

તેજ પ્રમાણે તેનો વિરહ પણ હૃદયના આંતરિક ભાગને અત્યંત બાળે છે. આકાશ પાતાળ ભેગાં કરી દે છે, અને આખું જગત શૂન્યતામાં સમાઇ જાય છે. તેના સંયોગમાં ઘણુંજ સુખ છે અને તેના વિયોગમાં અત્યંત દુઃખ છે. દુઃખ થવાનું કારણ એ છે કે એક બીજાનું હૃદય ખાલી થએલું હોતું નથી. જેમ સાગરમાં મોજા આવે છે અને તેમાંને તેમાં સમાઇ જાય છે, તેમ તેઓના હૃદયમાં દરિયાની ક્રિયા થયા કરે છે, વિચારોનો ગુંચળો વળતો જાય છે, અને મન મુંઝાયા કરે છે પણ મન વશ રાખવાની વિદ્યા જેને આવડે છે, તેને વિશેષ કંઇ થતું નથી.

પ્રેમ બે પ્રકારનો છે, એક સંસારિક ઘર કુટુંબનો પ્રેમ અને બીજો પ્રભુ પ્રેમ. સંસારિક પ્રેમમાં અચળતા હોતી નથી થોડીવાર પ્રેમથી સુખ થાય છે, અને થોડીવાર દુઃખ થાય છે; કેટલીક વખત હર્ષ થાય છે, અને કેટલીક વખત શોક થાય છે, પણ પ્રભુપ્રેમમાં આ કશીએ ક્રિયાઓ થતી નથી. ફક્ત સુખ, શાન્તિ, નિરાકુલતા અને આનંદ ખરેખર અનંદજ સર્વ અંગમાં વ્યાપી રહે છે. પ્રભુપ્રેમ-દર્શન થવાથી આખા શરીરના હર્ષાંકુર સ્ફુરાયમાન થાય છે, આત્મલીનતામાંજ ખરેખરી શાન્તિ પસરેલી છે. અહા! અવિચળ આત્મરસ પીવાથી શું ઓછો આનંદ થાય છે? અત્યન્ત શાન્તિમગ્ન થવાય છે. અહાહા! અતિશય ચિદાનંદમય બની જવાય છે. પણ જેણે પ્રભુપ્રેમ ઓળખ્યો હોય તેનેજ આ બધું છે નહીંનો ફંદાં નથી. જે સુખ આત્મજ્ઞાનીને મળે છે, તેજ સુખ સંસારિક પ્રેમથી મળે છે, એમ જે માની બેસે તે તદ્દન ખોટું છે. સંસારિક સ્નેહમાંજ મિત્ર પ્રેમ આવી જાય છે.

દુધ તથા પાણીની મિત્રતામાં સંયોગ તથા વિયોગનું સુખ દુઃખ કેવું થાય છે તે દષ્ટાંત તો જગ જાહેરજ છે. અહા ! કેવી મિત્રતા ! મિત્રપણું જોઇએ તો આવુંજ જોઇએ. એકતા વિના મિત્રતા કંઇજ કામની નથી.

એક પક્ષી હતું. તે એક જંગલમાં એકલુંજ ઘણું સુખ ભોગવતું હતું. તે એટલું તો ખુબસુરત હતું કે તે સુંદરપક્ષી નામથી ઓળખાતું હતું તેનું આયુષ્ય પણ ઘણું મોટું અને જે જોઇએ તે ખાવાનું જંગલમાં મળતું હતું. એવા આ સુંદર પક્ષીને પોતાની અવસ્થા બદલવાની આવે, ત્યારે તે પોતાના ખોળીયાને ચંદનના લાકડા વીણી લાવી અગ્નિ સંસ્કાર કરતો એટલે તેને તે પક્ષી બીજું સુંદરરૂપ ધારણ કરી અવનિમાં મોઝ માનતું હતું, તેવામાં એક વખત બીજું નવું પક્ષી આવીને તેને મળ્યું. તેણે પુછ્યું અલ્યા, તું અહીંઆ એકલો કેમ જણાય છે, ત્યારે સુંદરપક્ષીએ પોતાની એકલવિહારી સ્થિતિ કહી બતાવી. એટલે પેલા નવા પક્ષીએ કહ્યું કે તને એકલું રહેવું તે કેમ ગમે છે? આજે હું ભૂલો પડી અહીં આવ્યો તો મને ગમતું નથી તો તું હમેશા શી રીતે રહે છે. !

ગમે તે સુખ હોય પણ એકલવિહારીમાં સુખ કે શાન્તિ નથી. કોઇપણ માણસ હોય, પણ તેને હૃદય ખોલવાની જગ્યા અવશ્ય જોઇએ. તે જગ્યા યોગ્ય જોઇને પસંદ કરવી. મિત્રતા એવા જોડે બાંધવી કે જેના વિચાર આપણી સાથે મળતા હોય, જેની સાથે હમેશા રહેવાય, બન્નેના ઇષ્ટ એક હોય, અને કાર્યની સિદ્ધિ મેળવવાના એક વિચારપર બન્નેનું મન હોય, એવા ગુણવાળા જોડે મિત્રતા બાંધવી. આવા ગુણો જેનામાં ન હોય તેની પ્રીતિ ઘણો વખત ટકતી નથી અને જેનામાં આવા ગુણો

હોય તેની મૈત્રી અથવા તેનો પ્રેમ ઘણીજ વખત કે મરણ સુધી ટકી રહે છે. અને તેજ મિત્ર બીજા ભવનો પણ સંગાતી થાય છે અથવા થવો શક્ય છે. આ ભવમાં પણ જે કોઈની સાથે પ્રેમ બંધાયો હોય છે તે પણ પૂર્વભવના સંસ્કારથીજ બંધાય છે. માણસ કંઈ કરી શકતું નથી. માત્ર પહેલાનાજ સંસ્કાર એક બીજાના હૃદયનું વશ્ય કરી એક બીજાને ગાઢ સંબંધ રૂપે જોડે છે.

છેવટે એજ કહેવાનું કે દરેક માણસને કોઈપણ એક સદ્‌ગુણી માણસ સાથે સંબંધ જોડવો જોઈએ. કારણકે તે આપણને અનેક વિપત્તિ કાળે ધીરજ, શાન્તિ અને ગમે તે વાતે અથવા પૈસા ટકે મદદ કરે છે એકલાથી કંઈ કામ થઈ શકતું નથી માટે હરેકને મિત્રની જરૂર છે.

ખરું જોતાં અને નિશ્ચય પર દ્રષ્ટિ દેતા તો કોઈનું કોઈ છેજ નહીં પણ વ્યવહાર દ્રષ્ટિથી કોઈ પણ માણસ સલાહ પૂછવા જોઈએ છે. હૃદયના ભાવ ગમે તેને કહેવાથી ઘણી વખતે નુકશાન પહોંચે છે. માટે જો એકજ સ્થાન હોય તો તેથી આપણને હાનિ પહોંચતી નથી.

આ લેખનો સારાંશ એજ છે કે-ગુણ-દોષની પરીક્ષા કરી યોગ્ય મિત્ર કરવો આવશ્યક છે.

શ્રાવિકાશ્રમની સેવિકા—પ્રભાવતી !

श्री वीर निर्वाण सम्वत्में अशुद्धि।

लेखक-पं. बिहारीलालजी जैन, सी. टी., अमरोहा।

इस सम्वत्‌को जाननेके लिये दिगम्बर आम्नायमें श्री नेमचन्द्राचार्यकृत त्रैलोक्यसार ग्रन्थकी निम्नलिखित गाथा है —

पण छस्सय वस्स पण।
मास जुदे गमिय वीर णिव्वु यदो॥
सग राजादो कक्की।
चदु णवतिय महिय सगमासं॥

अर्थ—६०५ वर्ष ५ मास पहिले शक राजासे श्री वीर भगवानका निर्वाण हुआ और ३९४ वर्ष ७ मास पीछे कल्की हुआ।

गत चैत्र सुदी १ से शक सम्वत् १८३९ का आरम्भ है, अर्थात् चैत्र कृष्णा ३० तक शक राजाके राज्याभिषेकको १८३८ वर्ष हो चुके। (देखो इस वर्षके तीथि पत्र)

अब यदि उपरोक्त गाथाके अनुसर श्री महावीर निर्वाणका समय शक राज्यके **राज्याभिषेक**से ६०५ वर्ष ५ मास पूर्वक लगाया जाय तो श्री वीर निर्वाणको गत चैत्र कृष्णा ३० तक १८३८ वर्ष और ६०५ वर्ष ५ मास अर्थात् २४४३ वर्ष ५ मास बीत चुके, इसलिये गत कार्तिक कृष्णा ३० तक पूरे २४४३ वर्ष बीत गये। इस हिसाबसे गत कार्तिक शुक्ला १ से श्री वीर निर्वाणका २४४४ वां वर्ष प्रारंभ होता है, अर्थात गत दिवालीके पीछेसे श्री वीर निर्वाण सम्वत २४४४ प्रारंभ होता है, न कि २४-४३। विद्वान महाशय इसपर भले प्रकार विचार करें। और यदि उपरोक्त गाथा ही के आधारपर श्री वीर निर्वाणका समय शक राजाके **जन्मकाल**से ६०५ वर्ष ५ मास पूर्वका माने तो शक राजा (शालिवाहन) के जन्मकालसे राज्याभिषेक काल तकके १८ वर्ष जोड देनेसे गत दिवाली पीछेसे २४४४×१८ अर्थात् २४६२ वीर सम्वतका आरम्भ मानना चाहिये। मेरी रायमें यही अर्थात् २४६२

वीर निर्वाण सम्वत् गत कार्तिक शुक्ला १ से माानना निम्न लिखित कारणोंसे किसी प्रकार अनुचित नहीं, किन्तु सर्व प्रकार शुद्ध है:—

(१) श्री त्रैलोक्यसारकी उपरोक्त गाथाके पूर्णतया अनुकूल है।

(२) कई अन्य जैन व अजैन विद्वानों तथा इतिहासज्ञ महानुभावोंकी भी ऐसी ही सम्मति है।

(३) बौद्ध ग्रन्थोंमें लिखा है कि जब बुद्ध भगवान शाक्य भूमिको जा रहे थे तब उन्होंने देखा कि पावामें "नात्तपुत्त महावीर" का निर्वाण हो गया है। जिससे जाना जाता है श्री वीरका जिनका निर्वाण बुद्धदेवके निर्वाणसे कुछ समय पूर्व हुआ, और बुद्ध निर्वाण सम्वत् आजकल २४६० माना जारहा है, इसलिये श्री वीर निर्वाण सम्वत इस २४६० सम्वत्से अवश्य अधिक होना चाहिये।

नोट १—इस उपरोक्त लेखसे प्रकट है कि आजकलका माना हुआ वीर निर्वाण सं० २४४३ तो किसी प्रकार भी शुद्ध नहीं है। या तो २४४४ होना चाहिये या २४६२। दिगम्बर व श्वेताम्बर सर्व ही जैन विद्वान् महाशय इसपर विचार करें और जैन समाचारपत्रोंद्वारा अपनी २ योग्य सम्मति प्रकट करनेकी कृपा करें, जिससे यदि वास्तवमें इस सम्वत्में अशुद्धि हो तो वह शीघ्र दूर होकर शुद्ध सम्वत्का प्रचार हो।

नोट २—जब तक यह विषय निर्णीत न हो जावे तब तक इस सम्वतमें कोई परिवर्तन न किया जावे।



लेखक-भूषणचंद जैन-अमरोहा।

प्रार्थना।

स्थिर रहे सुख शान्तिमें, नृप जार्जका शासन यहां।
कपटी कुचाली क्रूरका, सुस्थिर न हो आसन यहां॥
खर्चें सदा सत कार्यमें, धनवान् धनदिय खोलकर।
हों कार्यकर्ता कार्य तत्पर, सम्मिलित जिय खोलकर॥

मान्यवर पाठकगणों! आज मैं श्री परब्रह्म परमात्माको नमस्कार करके हमारी **जीभ** कैसी है इस बातका विचार करता हूँ।

मैं सोचता हूँ कि आजकल रोगियोंकी संख्या क्यों अधिकतर बढ़ती हुई नजर आती है जिसमें ज्यादातर पेटकी बिमारियाँ अधिक दिखाई देती हैं तो मालूम होता है कि हम परहेज नहीं करते और जिह्वाके लोलुपी होकर जो चाहे अनाप सनाप भक्षण करते हैं उसका नतीजा यह होता है कि हम बीमारियोंद्वारा घेरे जाते हैं और हकीमोंको तलाश करते फिरते हैं। यदि बहुत खोज करनेसे कोई जानकार हकीम मिल भी गया और हमारे पूर्व कर्मके निमित्तसे उस समय कुछ आराम हो भी गया तो किया हुआ किंतु फिर शरीरमें बुढ़ापा शीघ्र समाजाता है और कालके मुखमें भी शीघ्र ही प्रवेश होता है।

दूसरी यह बात कि जो पदार्थ शरीरको हानिकारक होते वही बुद्धिको भी। अगर हम मांस, शराब, शहद, द्विदल, आदिका

भक्षण करते हैं या भूकसे अधिक स्वादके कारण भक्षण करते हैं। यह तो सोचते नहीं कि जिव्हाके स्वाद चाहनेके कारण क्या २ हानियाँ होती हैं। हम स्वाद ही स्वाद करते२ जिह्वाके इतने लोलुपी हो जाते हैं कि अगर एक समय भी बड़े २ खुशनुमा खट्टे मीठे चटपटे तरह २ के स्वाद पहुंचानेवाले भोजन न मिले तबतक भोजन न करें। एक दिन वह आता है कि हमारी सारी पूंजी खर्च हो जाती है और हम कंगाल हो जाते हैं और ऐसे भोजन करनेसे काम वासना भी बढ़ती हैं जिसके कारण आज जैन समाज विधवाओंका धर्म भ्रष्ट करना चाहती है। सोचिए! अगर आप मांस ही खाते हैं उससे भी महान हानियां होती हैं। प्रथम तो यह बात कि हमारा हृदय कठोर होता है, अगर साफ भोजन किया जाता तो हमारा हृदय भी साफ स्वच्छ और निर्मल हो जाता और हमारे हृदयमेंसे दयाकी भरी हुई और जीवोंके कल्याण करनेवाली ऐसी वाणी निकलती, क्योंकि 'जैसा खावे अन्न वैसा होवे मन, जैसा पीवे पानी, वैसी होवे वानी' यह कहावत बिलकुल ठीक है। क्योंकि हम मनुष्यों-को देखते हैं कि अगर उनकी आखोंके सामने किसीकी गर्दनपर छुरी भी चल रही हो तब भी उसके बचानेका प्रबन्ध नहीं करते। क्योंकि देखिये, हमारे देशोंमें नित्य प्रति सैकड़ों गाय भैंसादि निरपराधी जानवर वध किये जाते हैं और हमको जरा भी ख्याल नहीं होता इसका यही कारण है कि हमने भ्रष्ट पदार्थोंको भक्षण करके अपने दिलो दिमागको भी भ्रष्ट कर रखा है और दयाको हृदयसे निकाल दिया। जब हृदयमेंसे दया ही निकल गई तब हम धर्मके मार्गको कैसे ग्रहण कर सकते हैं? जब हमने मनुष्य योनि प्राप्त की अगर तब भी धर्मको न संभाला और सदा पाप कार्योंमें लीन रहे तब बतलाईये हमको अगली गतियोंमें कितने कितने दुःखोंका सामना करना पडेगा? उन दुःखोंको मैं क्या कोई भी वर्णन नहीं कर सकता इसलिए मनु-ष्योंको उचित है कि इस मनुष्ययोनिको प्राप्त करके अपना धर्म तो अवश्य ही संभाल लेना चाहिए, धर्म तब ही सुधर सकता है जब हम रसना इन्द्रियको वशमें कर लेंगे, क्योंकि बिना वशमें किए हम उपवास वगैरे नहीं कर सकते। बिना उपवासके किये न तो धर्मकी ओर रुचि हो न शास्त्र पढ़ने या सुननेमें मन लगे और आलस्य चढ़ा रहेगा।

इसलिए हमको उचित है कि हमको जैसा भी रूखा सूखा भोजन मिल जाय उसीको बहुत खुशीके साथ ग्रहण करले किंतु इतना जरूर ख्याल रहे कि शुद्ध हो, साफ हो, बुद्धि और बलको बढ़ानेवाला हो और भूखसे अधिक खा लेने पर भी नुकसान न देता हो।

मेरी अन्तिम प्रार्थना समाजसे यही है कि इस रसना इन्द्रियको तमाम हानियोंकी जड समझ-कर इसके फन्देसे सबको छूट जाना चाहिए और अष्ट मूल गुणोंको हमेशके लिए ग्रहण करना चाहिये क्योंकि यही श्रावक बनानेके लिए जडके समान हैं और इनके विना हमको जैनी नाम धराना शोभा नहीं देता।

इति शुभम्।



प्रिय भ्राताओ और बहिनो ! श्रावण शुक्ल १५ के दिन जैनियोंमें ही नहीं, किन्तु सब हिन्दुओंमें रक्षा-बंधनका त्योहार (उत्सव) बड़े आनंदके साथ मनाया जावेगा और रक्षा-के निमित्त शुभ मंगल सूचक धागा हाथमें बांधा जावेगा। भिक्षु आशीसात्मक यह धागा कबसे और क्यों बांधा जाता है और इससे हमको क्या शिक्षा मिलती है। इस बातके जाननेकी इच्छा मनमें उत्पन्न होना सहज बात है। इसलिये शास्त्रोंमें जो कुछ इस विषयमें कहा गया है मैं संक्षिप्त रूपसे आपके सन्मुख निवेदन करती हूं।

उज्जैनी नगरीमें श्री वर्मा नामका राजा बड़ा धर्मात्मा था। उसके चार मंत्री बलि, नमुचि, बृहस्पति और प्रल्हाद नामके थे। ये चारों विद्याके मद करि उन्मत्त और धर्म विरोधी थे। अचानक उस नगरके बनमें अकं-पनाचार्य मुनि सातसौ मुनियोंके संघ सहित पधारे। बनमें आनेके साथ ही श्रुतिसागर मुनि आहारके निमित्त नगरमें चले गये। पीछे अवधिज्ञानके बलसे आचार्यने जाना कि आज मुनि-संघ पर कुछ उपसर्ग आनेवाला है इस लिये आचार्यने सब मुनियोंसे कह दिया कि कोई लोग आकर तुमसे कुछ कहे तो तुम लोग कुछ न कहना, मौन धारण करना। नहीं तो कोई न कोई उपसर्ग आवेगा। मुनिकी ऐसी आज्ञा सब संघने हृदयमें धारण की और अपने २ धर्मकार्य ध्यानादिमें प्रवर्त हो गये। नगरके लोग मुनि संघका आगमन सुन-कर दर्शनोंको आने लगे। तब नगरके लोगोंके समूहके समूहको नगरसे बाहिर जाते देख राजाने इसका कारण पूछा तो ज्ञात हुआ कि बनमें मुनियोंका संघ पधारा है इसलिये ये लोग दर्शनको जाते हैं। ऐसा जानकर राजा भी मंत्रियों सहित दर्शनको गया। राजाने वहां जाकर मुनियोंको नमस्कार किया तो मुनि मौनसे रहे किसीने आशीर्वाद तक न कहा, तब वे चारों मंत्री बोले-ये सब मुनि मूर्ख मालूम होते है इनको "क्रूर जोगी मौन साध" की कहावतके अनुसार कुछ भी ज्ञान नहीं, ऐसे कई दुर्वचन कहे। राजा सबकी वंदना करके मंत्रियों सहित लौटा। तो रास्तेमे आहार करके लौटते हुए श्रुति सागर मुनि मिले, तो उन चारों मंत्रियोंने उनसे वाद--विवाद किया और अन्तमें हारकर लज्जित हुए, मनमें बहुत क्रोधित हुए परन्तु राजाके साम्हने क्या कर सक्ते थे। अपने २ घर आये। मुनिराजने संघमें पहूंचकर रास्तेमें हुआ सब वाद--विवादका हाल आचार्यसे निवेदन किया तब आचार्य बोले--तुमने ये काम अच्छा नहीं किया, वे लोग सर्व संघको दुःख देंगे, इससे उचित है कि तुम रात्रिको कायो-त्सर्ग धारण कर वाद--विवादके स्थानमें तिष्ठो। गुरुकी आज्ञा पाकर श्रुतिसागरजी वहीं कायोत्सर्ग धरि जा तिष्ठे। यहां चारों

मंत्रियोंने क्रोधके वश मुनियोंके मारनेका विचार किया और तलवार लेकर रात्रिके समय चारों मारनेको चले। रास्तेमें जाते हुए देखा कि वे ही परास्त करनेवाले मुनि उसी वाद स्थानपर स्थिर खड़े ध्यान लगाये हैं। बस चारोंने इकदम तलवार मारनेके लिये ऊंचा हाथ उठाया। उस स्थान पर नगरका रक्षक यक्ष देव था वो इस महा अनर्थ और अधर्मको देखकर दुखी हुआ और तत्काल चारोंको ज्योंका त्यों कील दिया। ज्योंके त्यों वे चारों पत्थरके पुतलेके समान रह गये। प्रातःकाल नगरके लोगोंने यह हाल देखा, कोलाहल मचा, राजा तक खबर पहूँची। तब इनके कुटुम्बियोंने आकर मुनिसे क्षमा प्रार्थना की, तब मुनिने यक्षसे इनको छोड़ देनेके लिये कहा। यक्षने छोड दिया। राजाने इन चारोंको काला मुंह कर गधे पर चढ़ाय अपने राज्यसे निकाल दिया। मुनिराज अपने संघमें गये।

ये चारों मंत्री उज्जैनसे निकलकर हस्तिनापुर गये। वहांका राजा महापद्म, रानी लक्ष्मी मती, पुत्र पद्मरथ और विष्णुकुमार थे। यह राजा महापद्म अपने पुत्र विष्णुकुमार सहित मुनि हो गये और राजा पद्मरथ राज्य करता था। ये चारों वहां पहुंच कर राजासे मिले। बुद्धिमान और राजकाजके ज्ञाता तो थे ही। इनसे राजा खुश हुआ और चारोंको अपने यहां रख लिये। एक दिन राजाको अति चिंतावान देख इन मंत्रियोंने चिंताका कारण पूछा, तब राजाने कहा कि कुंभनगरका राजा हरिबल मुझसे विरोधी हो गया, आज्ञा नहीं मानता इसी बातकी चिन्ता है। यह सुन वे मंत्री बोले— महाराज, ये क्याब ात? अभी हम लोग जाकर उसे वश करते और पकड़ लाते हैं। राजाकी आज्ञा पाकर सेना ले उस राजा पर गये और छलबल कर पकड उसे राजा पद्मरथके आधीन किया। इस बातसे राजाने खुश होकर कहा कि जो तुम वरदान मांगो सो लो। तब चारोंने सम्मति कर कहा कि हमारा वरदान भंडारमें जमा रहे। जब जरूरत होगी मांग लेंगे।

कर्मयोगसे वे अकंपनाचार्यजी चौमासा लगते ही संघ सहित हस्तिनापुर पहुंचे और वनमें चार मास रहनेका निश्चय करि ठहरे। यह बात इन चारों मंत्रियोंने सुनी तब इनने सोचा कि हमने जो दुष्टता इनके साथ की थी, यदि वो बात यहां प्रगट हो गई तो बड़ी खराबी होगी। इस वास्ते ऐसा करना चाहिये, जिससे ये सभी मुनि कष्ट पा २ कर यहीं मरें। ऐसा विचारकर भण्डारमें अमानत रखखा हुआ वरदान राजासे मांगा और वरदानमें ७ दिनका राज्य मांगा। राजा पद्मरथने प्रतिज्ञानुसार वरदान दिया, राजकाज इनके सुपुर्द कर आप राजमहलोंमें जा पधारे। बस, राज पाकर, इनने मुनियोंके रहनेके बनमें नरमेध यज्ञ रचा। मुनियोंके चारों ओर बाडा बांध कूडा करकट हाड मांसादि जमाकर अग्नि लगाई। यज्ञका बडा भारी धुआ कराया। इस प्रकार ऐसे २ कार्य किये जिससे मुनिराजोंको महान् कष्ट (उपसर्ग) हुआ। आचार्यकी

॥ श्रीवीतरागाय नमः॥

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग तरफथी प्रगट थतुं मासिक

दिगंबर जैन.

THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्ततताम्, दैगम्बर जैन समाज मात्रम् ॥

वर्ष १० वाँ.	वीर संवत् २४४३. भाद्रपद. विक्रम स० १९७३	अंक ११ वाँ.



उत्तमक्षमाका उपयोग ।

यह अंक हमारे पाठकोंके पास पहूँचेगा तब तक तो दशलाक्षणी पर्व पूर्ण होगा और उत्तम क्षमावणीका दिन ही निकट होगा। इसलिये दशलाक्षणी पर्वके संबंधमें अब न लिखकर सिर्फ दो बातें उत्तमक्षमावणीके बारेमें लिखना आवश्यक समझते हैं। दशलाक्षणी पर्व पूर्ण करके हमारे भाइयों आपस आपसमें उत्तमक्षमा मांगते हैं और मित्रों कुटुम्बियों आदिको **क्षमावणीके पत्र** लिखते हैं यह तो एक रूढी ही पड गई है परंतु **सच्ची उत्तमक्षमा** जिसके पास मांगनी चाहिये यह तो होता ही नहीं। सच्ची उत्तमक्षमा तो मित्रोंसे नहीं परंतु **शत्रुओंसे** ही—अपने विरोधियोंसे ही मांगनी चाहिये। हमारे पाठक चारों ओर दृष्टि प्रसारेंगे तो मालूम होगा कि अनेक शहरोंमें भाई २ में शत्रुता पाई जाती है और अनेक ज्ञातियोंमें कई वर्षोंसे दो २ तीन २ पक्ष पड गये हैं और धर्मकार्योंमें अनेक विघ्न बाधाएं उपस्थित होती हैं। **उत्तम** क्षमा मांगनेका वर्ष भरमें यह एक ही दिन आता है और उसी दिन यदि परिणाम कोमल करके **शत्रुओंकी ही उत्तम क्षमा मांगी जाय तो हमारी जैन कौममेंसे फूटका नाश हो जाय** वरना दीखाऊ क्षमावणीके पत्रों लिखनेसे विशेष लाभ नहीं दीखता। क्षमावणीके पत्रों तो खास करके उन भाईओं पर लिखने चाहिये जिसके साथ अपनको अनबन हो। हमारे पाठक इस कथनपर ध्यान पूर्वक मनन करके मित्रों, स्नेहियों, संबंधियोंके साथ २ अपने कोई शत्रु याने विरोधी हो तो उनपर **सच्चे दिलसे** क्षमावणीके पत्र लिखेंगे तो विशेष लाभप्रद होगा। इन्दौर, सोलापुर आदि अनेक शहरोंमें जहां फूट महारानीका राज्य जोरशोरसे प्रवर्त रहा है वहाँके अग्रगण्य महानुभावों यदि चाहें तो इस उत्तम क्षमावणीके दिन **उत्तम क्षमा**

दे लेकर अपना सब झगड़ा सुभीतेसे मिटा सकते हैं। सुज्ञेषु किमधिकम् ?

अर्जुनलाल सेठीको याद नहीं करेंगे ?

भारतवर्षकी स्थितिमें कई महिनोंसे परिवर्तन हो रहा है और सारी भारतकी प्रजा अपना२ कर्तव्य समझ रही है और हमारे न्यायी ब्रिटिश सर्कारसे उचित हक मांग रही है और हमारी सरकार भी देनेकी तैयारी कर रही है। विना मँागे कौन देता है ? इसलिये मांगना हमारा कर्तव्य ही है और वह भी न्यायपूर्वक आंदोलन करके ही मांगना चाहिये। हिंदके हितैषी **मि० बिसंट**, वाड़िया और एरंडेलको नजरबंदीसे छुडानेके लिये सारा हिंदने **न्यायपूर्वक आन्दोलन** किया जिसका फल यह हुआ कि यह तीनों व्यक्तियोंका नजरबंदीसे **छुटकारा** करीब तीन माहमें ही हो चुका है। परंतु खेद है कि हमारी जैन समाजके निःस्वार्थी परोपकारी नेता **पं० अर्जुनलालजी सेठी** जो कि ब्रिटिश राज्यके अन्तर्गत **जयपुर राज्य**में तीन वर्ष हुऐ नजरबंद पड़े हैं उनको छुडानेके लिये हमारी जैनसमाजने पहले कुछ आन्दोलन किया था परंतु उसका कुछ भी फल न पाकर अब कई महिनोंसे निराश होकर बैठ रही है। क्या यही पुरुषत्व है ? क्या यही जीवदया है ? क्या यही समाजसेवियोंकी कदर है ? नहीं, नहीं; ऐसा तो कभी भी नहीं होना चाहिये। अब भी कुछ गया नहीं हैं। आप फिर न्यायपूर्वक घोर आन्दोलन कीजिए और भारतमंत्री मि० मोंटेगु जो दो तीन माहमें हिंदमें पधारनेवाले हैं उनके कानोंतक इस आवाज़को पहुँचाइये कि **हमें सिर्फ न्याय दिलवाइये**। यदि पं० अर्जुनलालजी दोषी होतो उसका दोष सिद्ध करके दिखलाईये और उनको कड़ी शिक्षा कराइये परन्तु न्यायकी कसौटीपर विना चढ़ाये इस तरह जयपुर राज्यकी नजरबंदीसे शीघ्र--अतीव शीघ्र छुटकारा करवाइये। देर मात्र हमारे वाइसराय महोदयके ओर्डरकी ही है। हमारे भारतजैनमहामंडलने आजतक इसके बारेमें अच्छा आन्दोलन किया है और इससे भी ज्यादे आन्दोलन करनेके लिये हम उसके कार्यकर्ताओं **बाबू अजितप्रसादजी एम० ए०** लखनऊ, मान्यवर जे० एल० जैनी, जज साहब, इन्दौर, बाबू दयाचंद्रजी बी० ए०, चेतनदासजी बी० ए०, बाबू माणिकचन्दजी बी० ए० आदिको आग्रहपूर्वक निवेदन करते हैं और हरएक स्थानपर फिर सभाएं होकर इसका आंदोलन होना चाहिये।

देहलीमें अपूर्व धर्म प्रभावना।

थोड़े ही दिन हुए देहलीमें आर्यसमाजियों और जैनियोंमें आर्यसमाजके हॉलमें और आर्यसमाजी सभापतिके सभापतित्वमें **जैन पं० मक्खनलालजी** शास्त्री न्यायालंकार (प्रधान अध्यापक ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम) और आर्यसमाजी पंडित **नृसिंहदेवजी शास्त्री** दर्शनाचार्य प्रो० डी० ए० वी० कालेज लाहोरके

मध्य ईश्वर कर्तृत्व और तीर्थंकर सर्वज्ञत्व खंडन मंडन विषयक **शास्त्रार्थ** हुआ था जिसमें जैनियोंकी अपूर्व विजय हुई है जिससे देहलीकी सारी जनसमाजपर जैनधर्मका अच्छा प्रभाव पडा है और पं० मक्खनलालजी न्यायालंकारकी विद्वत्ताकी कदर करनेके लिये देहलीकी जैनसमाजने आपको **वादीभकेशरी**का पद प्रदान किया है। आर्य समाजी पंडितोंके सामने और सो भी उन्हींके स्थान और सभापतित्वमें शास्त्रार्थके लिये खडे होकर विजय प्राप्त करना साधारण विद्वताका काम नहीं है। पं. मक्खनलालजी जैसे पचीस पचास विद्वान जब नजर आवेंगे तब ही जैन धर्मका प्रभाव सारे भारतवर्षमें पड़ सकेगा परंतु ऐसे विद्वान तैयार करनेके लिये स्थायी प्रबंध करना हमारा प्रथम कर्तव्य है। यह पं.-मक्खनलालजी दूसरे किसीके शिष्य नहीं परंतु आप **स्वर्गीय** स्याद्वादवारिधि वादिगजकेशरी न्यायवाचस्पति **पं. गोपालदासजी बरैयाके ही शिष्य** है और आपने पंडितजी द्वारा स्थापित **मुरैना जैन सिद्धांत विद्यालयमें** ही रहकर यह योग्यता प्राप्त की है तो ऐसे विद्वान तैयार करनेके लिये इस विद्यालयका ध्रुव फंड होना और पंडितजीकी स्मृति कायम रखनेके लिये इस विद्यालयके साथ **पंडितजीका नाम** जोडदेना अतीव आवश्यक है परंतु विना **एक लाख रुपयेका** फंड हुए यह नहीं हो सकेगा। इसलिये विद्यालयकी ओरसे एक **डेप्युटेशन** अभी देहली पहुंचा है जिसमें अधिष्ठाता पं० पन्नालालजी, मंत्री पं० खूबचंदजी शास्त्री, पं० लालारामजी, पं० बंशीधरजी, ब्र० शीतलप्रसादजी आदि शामिल है और देहलीमें इस फंडके लिये उद्योग कर रहे हैं, आशा है कि इस प्रयासका फल उत्तम ही निकलेगा क्योंकि श्रीमान त्यागी **ऐलक पन्नालालजी** महाराजका चातुर्मास भी देहलीमें है जिससे आपके उपदेशसे भी इस कार्यमें विशेष सहायता मिल सकेगी। इस डेप्युटेशनका कर्तव्य है कि इसी तरह दूसरे बडे २ शहरोंमें जा जाहिर सभाएं बुलाकर विद्यालयके लाभ बताये जावेंगे तो शेष ४१०००) भरा जाना कुछ मुशकिल नहीं है। जिस तरह हो शीघ्रता करके एक लाख रुपयेकी रकम पूर्ण करके विद्यालयके साथ स्वर्गीय पंडितजीका नाम जोड देना चाहिये।

शेठ नेमिचंदजीका वियोग।

अजमेरनिवासी रायबहादुर शेठ मूलचंदजी सोनीके सुपुत्र **रायबहादुर शेठ नेमीचंदजी** साहेब ऑ० मेजिस्ट्रेटको कौन नहीं जानता? आपकी दानशीलता, धार्मिक प्रेम और उदार स्वभावसे आपका नाम सारी जैनसमाज और अजमेर भरमें विख्यात है। परन्तु आज अतीव खेदके साथ लिखना पडता है कि सेठ नेमीचंदजी अब इस संसारमें नहीं हैं। आपका स्वर्गवास द्वि० भादवा वद ९ को होनेका समाचार मिलनेसे हार्दिक दुःख होता है। हमारी समाजमेंसे

तीन चार वर्ष हुए कई नररत्नोंका वियोग हो रहा है उसमें सेठ नेमिचंदजीके वियोगसे विशेषता हुई है। क्या किया जाय ? होनहार बलवान है। सेठ नेमीचंदजीके स्वर्गवासके समय **दानकी** कुछ बडीभारीर कम अवश्य निकाली गई होगी जिसका समाचार मिलनेसे प्रकट करेंगे परंतु हमें पूर्ण आशा है कि आपके सुपुत्र **शेठ टीकमचंदजी** साहब अपने पिताका नाम अमर करनेके लिये अजमेरमें या कोई अन्य उचित स्थलमें एक बड़ी भारी संस्था खोल देवेंगे। अजमेरमें स्वर्गपुरी समान मंदिरनिर्माणमें तो आपके लक्खो रुपये लग चुके हैं और आपका नाम विलायत तक विख्यात हुआ है इसलिये अब तो सेठजीके नामका एक **विद्यापीठ** (जैन बोर्डिंग, जैन कालेज या जैन हाईस्कूल) खोलकर सेठजीका नाम अमर करना चाहिये। आशा है कि सेठ टीकमचंदजी साहब हमारे इस निवेदन पर अवश्य लक्ष देनेकी कृपा करेंगे।



देहलीका जैन समाज ! ध्यान दे।

आजसे १० वर्ष पहले गोम्मटसार त्रिलोकसार आदि सिद्धान्त ग्रन्थोंका रहस्य सर्वथा छिपा हुआ था, परन्तु आज उन्हीं सिद्धान्त ग्रन्थोंकी चर्चा करनेवाले अनेक विद्वान् दृष्टिगत हो रहे हैं। कुछ दिन पहले पाठशालाओंमें सिवा अन्य मतियोंके ग्रन्थोंके जैन ग्रन्थोंका नाम भी नहीं था, थोड़ा कहीं था भी तो केवल साहित्य और व्याकरण ग्रन्थोंका था, न्याय और सिद्धान्तको तो कोई छूता भी नहीं था, और न उनके पढ़ानेवाले विद्वान् ही दीखते थे, प्रायः सब पाठशालाओंमें ब्राह्मण ही अध्यापक पाये जातेथे इसलिये छात्रगण यथार्थ तत्वज्ञानसे शून्य रहतेथे, इतना नहीं किन्तु विपरीत संस्कार युक्त बन जाते थे, परन्तु अब वह बात नहीं है। अब हरएक पाठशालामें जैन ग्रन्थोंका ही पाठ मुख्यतासे होनेलगा है, साथ ही उच्च कोटिके ग्रन्थोंके पढ़ानेवाले विद्वान् भी जैन मिलते हैं।

कुछ समय पहलेके व्याख्याता केवल मनुष्य दुर्लभताका व्याख्यान देकर उच्च व्याख्याताओंकी श्रेणीमें समझे जाते थे परन्तु आज जगह२ स्याद्वाद सिद्धान्त, कर्ममीमांसा, जैन सिद्धान्त आदि तात्विक व्याख्यानोंकी धूम मची हुई है। जो गुणस्थान चर्चा प्रायः सर्वथा लुप्त हो चुकी थी आज उसकी विस्तृत लता सर्वत्र स्वरससे सबोंको मुग्ध बना रही है, जैन सिद्धान्तके न पढ़नेसे कुछ दिन पहले परवादियोंके समक्ष आनेमें जैनछात्र संकोच करते थे परन्तु आज जैन सिद्धान्तके अकाट्य हेतुवाद और नयवादको समझनेवाले छात्र परवादियोंका सामना करनेके लिये सदा प्रस्तुत ही रहते हैं। पाठको ! इन सब बातोंपर दृष्टि डालो, और विचार करो कि उपर्युक्त सब कार्य जैनधर्मकी उन्नतिके लिये कितने महत्वके हैं, इनके अभावमें जैनधर्म आज १० वर्ष पहलेकी अवस्थासे भी न्यून हो जाता इतना ही नहीं किन्तु बहते हुए समयके वेगमें धर्मज्ञान शून्य छात्र स्वयं बहने लगते और दूसरोंके लिये सहारा बनते। सज्जनों ! ये

सब महान् उपकार किसके ? **स्वा० वा० न्या० श्री० पं० गोपालदासजीके।** उक्त पण्डितजीने ही अपने रहस्य पूर्ण असाधारण तात्विक व्याख्यानोंसे जैन और जैनेतर लोगोंको जैनधर्मके महत्वसे प्रभावित बना दिया। पण्डितजीने ही वर्तमान प्रगति और यथार्थ धर्म परिस्थितिका स्वरूप समझा कर समयस्रोतमे जानेवालोंसे सचेत कर दिया। अब भी पण्डितजी इतनी विद्वत्सम्पत्ति छोड गये हैं जो कि आर्षवाक्योंका अनुसरण कर यथार्थ मार्गपर पहुंचानेमें समर्थ होगी।

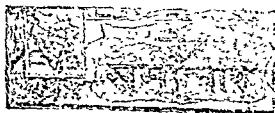
हम नहीं कह सक्ते कि ऐसे परमोकारीको जैन जनता कैसे विस्मृत बनाती है ? अन्यथा पंडितजीको स्वर्ग गत हुए आज ७ मास वीत गये, परन्तु उनके कीर्तिस्तंभ सिद्धान्त विद्यालयको अभी तक ध्रुव न बना सकी, यह क्या कम खेदकी बात है! क्या यही धार्मिक प्रेम है ? धर्मकी गहरी चोटसे जिसका क्षीणशरीर हो गया, जिस निष्कामसेवीने धर्मकी उन्नतिके लिये अपनी समग्र शक्तियोंको प्राणपणसे लगा दिया, मरते २ समय तक जिसको जैन सिद्धान्त प्रचारकी धुन लगी रही ऐसे महात्माके लिये समाज थोडीसी कृतज्ञता भी नहीं प्रकट कर सका ? ध्यान रहे कि पण्डितजीने तो निजके लिये कभी स्वप्नमें भी किसीसे सहायता नहीं चाही, और न समाज उनके उपकारोंका बदला कभी चुका ही सका है, परन्तु खेद है कि समाज अभी तक अपनी आवश्यकताओंको नहीं समझ सका। समाजको स्मरण रखना चाहिये कि इस समयमें यदि सिद्धान्तके जानकार छात्र न तयार होंगे तो जैन धर्मकी उन्नति अवश्य ही आर्य समाजियोंकी परिस्थितिमें मिल जायगी, इसमें थोडा भी संदेह नहीं है। इसलिये आवश्यक है कि शीघ्र ही मुरेना विद्यालयको दृढ बनाकर सिद्धान्त ग्रन्थोंके जानकार छात्र तयार किये जाय। साथ ही कृतज्ञता प्रकाशनार्थ उक्त विद्यालयके साथ पूज्य पण्डितजीका नाम जोड दिया जाय। दूसरे लोगोंने तिलक आदि परोपकारी महानुभावोंके लिये उनके निजके लिये लाखों रुपयोंकी भेट देकर कृतज्ञता प्रकट की है तो क्या जैनसमाज अपने ही हितके लिये ५००००)की सहायता मुरेना विद्यालयको देकर कीर्तिस्तंभको दृढ भी नहीं बना सका ? लोगोंने गोखले आदिके अनेक स्मारक बना दिये परन्तु जैन समाज एक सच्चे धर्मोद्धारक विद्वान्के बनाये हुए विद्यालयको भी अभी तक स्थिर नहीं कर सका। सज्जनो! विद्यालय तो अब टूट नहीं सक्ता है, क्योंकि पण्डितजीके ही समान उसको सहारा देनेवाले मिल गये हैं, पण्डितजीके परम सखा माननीय विद्वान पं० धन्नालालजीने उसे सम्हाल लिया है इसलिये विद्यालयको कौन चलावेगा, यह बडाभारी प्रश्न तो दूर हो गया। अब केवल यही प्रश्न शेष है कि 'विद्यालय कैसे चलेगा, इसको दूर करना समाजके ऊपर है।

इस समय मुरेना विद्यालयका डेप्युटेशन दिल्ली गया हुआ है जिसमें समाजके हितैषी अगुआ जैसे श्रीमान् विद्वद्वर प० धन्नालालजी, जैनधर्मभूषण ब्र० शीतलप्रसादजी, माननीय

पं० लालारामजी शास्त्री, श्रीमान् पं० खूबचंदजी शास्त्री आदि गण्य मान्य पुरुष निकले हुए हैं। इन महाशयोंकी प्रार्थना पर देहलीका जैन समाज अवश्य ही पूर्ण ध्यान देगा। देहली इस समय गौरवान्वित है। ऐसा न हो कि अजमेरकी तरह यह भी अपनी शक्तिको छिपा ले। हम धार्मिक, शिक्षा प्रेमी लाला जग्गीमलजी तथा ला० सोहनलालजी, ला० तिलोकचंदजी आदिसे प्रार्थना करते हैं कि वे इस अवसरको कभी न चूकेंगे और अपने पूर्ण उद्योगसे कमसेकम १५०००) की सहायता अवश्य ही करावेंगे। यह रकम बड़ी नहीं हैं, श्रीमान् बा० मुलतानसिहजी अकेले ही इसे भर सकते हैं। उपर्युक्त विद्वान ४५०००) की सहायताके लिये हरएक नगरमें घूमेंगे तभी काम चलेगा!

कोल्हापुर ता० २५-९-९७

प्रार्थी—**मक्खनलालजी जैन।**



२९०००)का दान।

इन्दौरके दानवीर रायबहादुर **सेट हुकमचन्दजी** साहबकी धर्मपत्नी श्रीमती **कंचनबाईने** कांजी बारसके व्रतका **उद्यापन** किया जिसका उत्सव भादवा द्वि० सुदी १२ को हुआ। बड़े भारी लवाजमा सहित जलूस निकला। २९०००) का दान सेठजी साहबने इस अवसर पर किया जिसमें १७०००) सेठजीके महाविद्यालय धर्मशाला चालू फंडमें दिये और १००००) दस हजार दीतवारीके निज मंदिरजीको दिये और २०००)के उपकरण ईन्दौरके सम्पूर्ण दि० जैन मंदिरोंमें दिये। कुल बिरादरीमें वस्त्र व श्रीफलकी प्रभावना भी वितीर्ण की। धन्य है ऐसे परोपकारी सज्जन जो व्यवहारिक कार्योंके साथ साथ धार्मिक कार्योंमें पूर्णतया सहायता देते रहते हैं।

उपहारमें तीर्थ दर्पण—इस अंकके साथ हमारे पाठकोंको दिव्यतरू (भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थदर्पण) भेट किया जाता है आशा है कि पाठकगण इसको ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे और चौकटेमें जड़वाकर श्री मंदिरजी या पुस्तकालयमें टांकनेकी कृपा करेंगे। इसके प्रकाशक (भगत) निर्भयराम जैन (कटरा असरफी, देहली) सूचित करते हैं कि इस तीर्थदर्पणमें यदि कुछ त्रुटियां रह गई हो तो उसकी सूचना मुझे करें ताकि आगामीको इसका खयाल रक्खा जाय। जिनको इस नकशेकी और आवश्यकता हो उनकी कार्ड द्वारा सूचना आनेपर भेज दिया जावेगा। कर्मकी १४८ प्रकृतियोंका नकशा आपहीकी कोशिश और सहायतासे हमारे पाठकोंको उपहार स्वरूप मिलचुका है और यह अतीव उपयोगी 'तीर्थदर्पण' नामक नकशा भी बड़े परिश्रमसे तैयार करके उपहारमें देनेके लिये आप अनेकशः धन्यवादके पात्र हैं। तीर्थयात्राके लिये यह नकशा एक उत्तम मार्गी होगा।

पुलगांवमें खंडेलवाल सभा— आगामी आश्विन वदी ७-८ ता० ७-८को पुलगांवमें नागपुर प्रा० खंडेलवाल चालसभाका वार्षिक अधिवेशन सेठ पद्मचंदजी बैनाडा आगरानिवासीके सभापतित्वमें होनेवाला है जिसके लिये वहीं २ तैयारियां हो रही हैं। सभी खंडेलवाल भाइयोंको इस मौकेपर अवश्य पधारना चाहिये। स्वागत कमेटिके मंत्री सेठ मोहनलाल मानमल आमरी हैं।

वर्धामें वृहत् संमेलन—वर्धा (म. प्रा.) में आगामी आश्विन वदी ५-६ को दि० जैन बोर्डिंगका पंचम अधिवेशन सेठ नत्थूसाहजी इलिचपुरवालोंकी अध्यक्षतामें होगा जिस मौकेपर वहांह मध्यप्रांतिक कान्फरंस, रथोत्सव और महिला परिषदका ने० अधिवेशन भी होगा। वर्धाका यह मेला सबसे बढ़कर होगा ऐसे अनेक सुचिन्ह दृष्टिगोचर हो रहे हैं। मध्य प्रांतके सभी भाइयोंको अवश्य पधारना चाहिये।

'मुनि'का खास अंक—'मुनि' नामका मासिक पत्र बोदवड (खानदेश) से प्रकट होता है जिसका १५० पृष्ठका सचित्र खास अंक शीघ्र ही प्रगट होनेवाला है। इसका अलग् मूल्य ॥=) और वार्षिक मूल्य २=)है।

शिकार बंद—देहलीमें जैनियोंके प्रयाससे मंदिर शिवालय आदि धर्मस्थानोंपर सदैवके लिये परिन्दोंके शिकार करने व गोलीसे मारनेकी गवर्नमेंटने बन्दी कर दी है।

विद्वानोंको इनामकी सूचना—जो सज्जन "जैन सन्ध्या (प्रतिक्रमण) का रहस्य" इस विषयपर हिन्दी भाषामें लेख लिखकर भेजेंगे उनमेंसे जिसका लेख उत्तम होगा उसको यह सोसायटी १०) ईनाम देगी। लेख फुलस्केप कागजके २० पृष्ठसे कम न हो और ३१ नवंबर तक सभापति, श्री **आत्मानन्द** जैन ट्रैक्ट सोसायटी—**अंबाला** शहरको भेजना चाहिये। सर्वोत्तम लेखको छपवाने और स्वाधीन रखनेका सर्व हक सोसायटीको होगा।

मालवा सभाका औषधालय—बडनगरके उक्त औषधालयका काम दिनोंदिन बढ रहा है। इसके मैनेजर सुचित करते हैं कि सारे हिन्दुस्थानके कई पत्र हमारे पास कई भाषाओंके ऐसे आते हैं कि जिसको हम पढ नहीं सकते इसलिये इस औषधालयसे औषधियाँ मगानेवालोंको **शुद्ध हिन्दी** लीपिमें ही अपना पता साफ २ लिखना चाहिये। इस औषधालयकी ओरसे इस अंकके साथ दो कोडपत्र बांटे गये हैं जिस पर हम पाठकोंका ध्यान आकर्षित करते हैं।

पशुवध बंध—देहलीमें कालिका देवीपर होता हुआ पशुवध जीवरक्षिणी सभाके परिश्रमसे बिल्कुल बंद हो गया है।

म्हैसूरमें ब्रह्मचर्याश्रम—श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम गत ता० १८को म्हैसुर पहूंचा था, वहा अच्छा सत्कार हुआ और न्या० प० मक्खनलालजी, ब्र० गेंदनलाल तथा नेमीसागरजी वर्णीके विद्या, ब्रह्मचर्य आदि विषयोंपर व्याख्यान हुए थे। एम० नेमिराजय्या।

झालरापाटनमें शोक—यहां शेठ लक्ष्मणलालजी पाटणीका स्वर्गवास द्वि० भादवा

कृ० १ को हो गया। आपके सुपुत्र कस्तुरचंदजी पांडया सूचित करते हैं कि पिताजीके स्मरणार्थ जो रकम निकाली गई है उसमेंसे शास्त्रदानके लिये एक नवीन ग्रन्थ भी प्रकाशित किया जायगा।

कारंजाधिश भट्टारक श्री देवेंद्रकीर्तिजीका स्वर्गवास श्रा० सु० १२ को हो गया। आप बडे विद्वान, अच्छे वक्ता और योगाभ्यासी थे। क्या बह्राड प्रान्त निवासी आपकी स्मृतिमें कुछ नहीं करेंगे?

५१ उपवास–देहलीमें स्था० जैन छोटेलालजीने ५१ उपवास प्र० भा० सु० ५ को निर्विघ्न पूर्ण किये थे। आपका स्वास्थ्य अच्छा है।

जैनप्रभात संपादकके इस्तीफा दे देनेसे अभी बंद पडा है परन्तु मालवा सभाके महामंत्री नये संपादककी खोजमें है। इसके पाठक धैर्य रक्खें।

महासभाका अधिवेशन वडवानीमें आगामी मेलेपर करनेके लिये आमंत्रण मिला है ऐसे समाचार प्रथम जैनगजटमें और उस परसे जैनमित्रमें छपा हैं परन्तु उसमें कुछ भी तथ्य नहीं है। अभीतक निमंत्रण नहीं किया गया है ऐसा हमें बडवानीके पंचोंसे मालूम हुआ है।

फिर शास्त्रार्थ–आगामी ३० सितम्बरसे अंबालेमें आर्यसमाजके मंदिरोंमें जैन और आर्य समाजियोंसे क्या ईश्वर कर्मफल दाता है इस विषयपर शास्त्रार्थ होगा। समाजीकी ओरसे धुरंधर पं० आनेवाले हैं और जैनोंकी तरफसे पं० बनारसीदासजी रहेंगे।

स्वीकार–समालोचना–स्थानाभावसे आगामी अंकमें प्रकट होगी।

उपहार–इस वर्षके उपहारके बारेमें सब खुलासा आगामी अंकमें प्रकट होगा। आगामी अंकके साथ एक उपहार अवश्य बांटा जायगा।

यज्ञोपवित संस्कार–काणीसा (खंभात) मां ६ जणे श्रावण सुद १५ ने दिने जैनविधि पूर्वक यज्ञोपवित धारण कर्युं हतुं.

दारु मांस त्याग–नवा (अमनगर) मां कोटडीया रावजी अभेचंदना उपदेशथी ६ ठाकोर अने १ रजपुत मळी ७ जणे जन्म पर्यंत दारु मांसनो त्याग कर्यो छे.

चौद गामनुं पंच–छाणीमां खडकदेशना चौद गामनुं पंच प्र. भादरवामां मळ्युं हतुं, जेमां एक सभा थतां वांकानेर (भीलोडा) निवासी गडीया धानाचंद गुलाबचंदना कुरीति निषेधक, संप, विद्या वगेरेपर भाषणो आपवाथी रजस्वला धर्म, सुवावड वगेरे पाळवा संबंधी तथा रडवा कुटवा वगेरेनो रिवाज ओछो करवा संबंधी ८ ठरावो थया हता. तेमज नवागामनी पाठशाळाना विद्यार्थीओनी परीक्षा लेवाइ केटलुंक इनाम पण वेंचायुं हतुं.

सोलापुरमां–चतुरबाई श्राविकाश्रमनो वार्षिक मेळावडो द्वि. भादरवा सुद ३ ने दिने जैनमहिलारत्न श्रीमती मगनब्हेनना प्रमुखपदे थयो हतो. ते प्रसंगे त्रिवेणीबाई, राजुबाई अने श्रीमती मगन ब्हेने विद्या अने सेवा धर्म उपर विवेचनो कर्या हतां, संवादो थयां हतां तथा सौ. जमनाबाइए श्राविकाश्रमनी स्थितिथी सर्वने वाकेफ कर्या हतां.

सुदासणामां रुषभनाथजीना प्राचीन मंदिरना जीर्णोद्धार माटे टीप करवा पंच तरफथी केटलाक माणसो गुजरातमां नीकळेला छे तो तेमां गुजरातना भाइओए मदद आपवी जरुरनी छे.

वडु (पादरा)मां अषाड मासथी पाठशाळा खुली छे अने २० विद्यार्थी लाभ ले छे.

मित्र संवाद।

भादोंका महिना है। पावस ऋतु अपनी यौवनकी तरंगों सहित क्रीडास्थलमें वर्तमान रहती है। कभी गंर्जना करती है, तो आंखें बनाकर (विजली चमकाकर) डरवाती है, कभी आंसु बहाती (रिमझिम रिमझिम बरसती) है, कभी धाड़ें मारमार (जोरसे) रोती है, कभी नीम ही बना देती है (धूप हो जाती है), कभी उष्ण और कमी शीतल श्वांसें भरती है। इस समयकी इसकी चंचल गतिका ठिकाना ही नहीं है। इसकी मतवाली चाल निराली ही है। कोई चाहे इसकी इस चालसे दुखी होवे व सुखी, परन्तु इसको क्या है! जो करना है वही करेगी। ठीक है जवानी दीवानी ही होती है। परन्तु स्मरण रहे कि यह जवानी अधिक समय नहीं रहनेकी। जितना काल बाल और वृद्धावस्थाका होता है, उसका एक अणुमात्र काल भी इस जवानीका नहीं होता है। यह तो जल कल्लोलवत क्षणस्थायी है। ए पावस! देख आज तू मदमस्त हुई जैसा औरोंको तिरस्कार कर रही है, ऐसा ही एक दिन होगा कि जब तू भी अन्य ऋतुओंकी अपेक्षा तिरस्कृत होगी। जैसे तू किसी भी प्राणीके सुख दुखपर दृष्टि न देकर मनमानी करती है, अर्थात् जैसी तुझे किसीसे सहानुभूति नहीं है वैसी ही याद रख। तेरे साथ भी कोई सहानुभूति दिखानेवाला न रहेगा। कहा है—

दिन दश, आदर पायकर, करले आप बखान।
जब लग काक श्राद्ध पख, तब लग तुझ सन्मान॥

जबकि पावस ऋतु तरुणावस्थाको प्राप्त थी, तब ही प्लेग महाशय वरका रूप धारण कर इससे व्याह करनेकी इच्छासे आये। अब क्या था, लगे दोनों अपना अपना बल दिखाने। पावस ऋतुने गरज कर, बरस कर, तडाका देकर खेतीको सडाया, मकानोंको गिराया, ग्रामोंको बहाया, रेल और पुलोंको बिगाड़ा, तो प्लेगने अवसर ताक कर विचारे असहाय जीवोंको (जो कि किसी प्रकार महिनत मजूरी करके अपना और बाल बच्चोंका पेट पाल लेवे) बस्तीसे निकाला। 'जबरदस्तका ठेंगा शिर पर'। बस्तीमें रहें तो प्लेगसे मरें, कोई खबर भी न लेवे, मृतक क्रिया भी न होवे। बाहर जावें तो हवा पानी ओलोंसे मरें, तात्पर्य "सांड सांड लड़ें बाडी झुकन उड़े" इत्यादि अनेकों प्रकारकी विचार तरंगें उठने लगी, कभी दीनोंकी पुकार, कभी धनिकोंकी धुतकार, कभी कालका चमत्कार, कमी मोहकी हुंकार इत्यादि एकके बाद एक बात लगातार पीछे पीछे दौडने लगी, बहुत चाहा कि चित्तको स्थिर करें, परंतु सब व्यर्थकी चेष्टा थी।

इतने ही में घोडेकी टाप सुनाई दी, तब जयचन्द्र झटसे उठा और खिडकीमेंसे झांक कर देखता है तो तांगा आकर दरवाजेपर खडा हो गया। मित्र टेकचन्दजी उसमेंसे उतर पडे, परस्पर जुहारु व्यवहार हुवा, फिर यथास्थान बैठकखानेमें जा बैठे।

टेकचन्द—भाई साहेबको तो कभी अव-

स्थान ही नहीं मिलता है। आजकल माताजी तथा आपकी भावज बहुत याद किया करती हैं। दश दिन बाद पर्यूषणपर्व प्रारंभ होगा, इसलिए विचार करना है कि अपना प्रोग्राम किस प्रकार रक्खा जाय, जिससे कि कुछ सफलता होवे।

जैचंद—भैया, प्रोग्रामकी क्या बात है, वह तो मनमाना स्थिर हो सक्ता है। तुम पहिले यह देखो कि तुम्हारा मन, तुम्हारे आधीन है या नहीं। यदि तुम्हें धामधूम पसंद हो, जेवरकी झनकार, वस्त्रोंकी फटकार, मुखियोंकी ललकार, पुजारियोंकी व पंडितोंकी वक्कार, परस्परकी तकरार, और गानेकी बहार इत्यादिका आनन्द भोगना हो तो, मामूली बने हुए नियमानुसार जाइये और जयजयकार उड़ाइये। और यदि इसके विपरीत आप जिनेन्द्र भाषित धर्मका पालन करना चाहते हैं, तो विगत वर्षके आश्विन मासका क्षमावनीवाला दिगम्बरजैनका अंक निकालकर पढ़ जाइये कि मैंने किस प्रकार इस पर्वके दिनोंमें समयका व्यवहार किया था, उसीके अनुसार यदि पसन्द हो तो कीजियेगा। अर्थात्–

नित्य प्रातःकाल ४ बजे उठकर हाथ मुंह धोकर प्रातःकालीन संध्या (सामायिक) करना, नित्य प्रति क्रमसे उत्तम क्षमादि दश धर्मोंकी जाप देवें, उनकी भावना भावें, इनके विपरीत, क्रोध मान माया लोभादि कषायोंको यथा-संभव दमन करें, सामायिकके बाद छह बजे शौचादि क्रियासे निवृत्त होकर स्नान करें और फिर एक अध्याय तत्वार्थ सूत्रका सार्थ पढ़ें, भक्तामर, सहस्रनाम आदिका पाठ करें, आठ या साढ़े आठ बजे अष्टद्रव्य संजोकर श्रीजिनेन्द्रकी पूजन करें, जितनी पूजनपाठ करें उनका भाव भले प्रकार समझें, तभी पूजाका फल होता है। बहुत लोग रूढ़ीके अनुसार संस्कृत तथा प्राकृत और भाषादिकी बहुतसी पूजाएं करते हैं, समवशरणादि बड़े बड़े पाठ दो दिनमें व एक एक दिनमें पूरे कर डालते हैं, अथवा केवल गानेकी लयमें लय हो जाते हैं। इस तरह चार घंटे बिता देते हैं, परंतु अर्थ कुछ भी नहीं समझते हैं। इससे उनका चित्त स्थिर नहीं होता है, केवल पूरा पाठ करनेकी पड़ती है। कभी कभी चढ़ानेवाले मिलते हैं तो बांचनेवाले नहीं मिलते, और बांचनेवाले मिलते हैं तो चढ़ानेवाले नहीं खड़े होते, और रूढ़ि ऐसी है कि इतनी पूजन होना ही चाहिये। जो हो हम समालोचना नहीं करना चाहते। हमारा अभिप्राय तो समझकर पूजा करनेसे है कि, पूजा परम भक्ति श्रद्धापूर्वक तन मन वचनकी एकाग्रतासे करना चाहिये।

पूजाके पश्चात् दश लक्षणोंमें एक एक धर्मका व्याख्यान पढ़ें व सुनें। फिर यदि उपवास न हो, तो दो पहरका सामायिक करके प्रासुक, शुद्ध, नीरस या रस त्यागकर एकासनसे ऊनोदर भोजन करे या दो वार नियमपूर्वक भोजन कर लेवे। भोजनान्तर पुनः पूजन विधान करे अथवा स्वाध्याय करे, तत्वोंकी चर्चा करे, आत्माका विचार करे। सांझ होते समय पुनः सामायिक करे, वंदना स्तुति करे, शास्त्रसभा

करे व सुने । इस प्रकार सवेरेसे १० बजे रात्रि तक यथायोग्य समयका व्यवहार करे । रात्रिको जहां तक निद्रा न आवे, कुछ आत्म चिंतवन करता रहे और उन्हीं विचारोंमें निमग्न हुवा निद्राकी गोदमें जा पड़े, इत्यादि यही प्रोग्राम है । तात्पर्य यह कि इन पर्वके दिनों जितना हो सके अपनी कषाय और विषयोंको मंद करे, गृहारंभ घटा देवे, समयको अमूल्य समझकर एक मिनट भी व्यर्थ न खोवे । चौथके दिनसे पूनोंके दिन तक, अर्थात धारणाके दिनसे पारणा तक सब प्रकारके व्यापार धंधोंको बंद करके यथासंभव धर्मध्यानमें काल वितावे । रूढ़ीमें धर्म नहीं है । धर्म तो आत्माको विषय कषायोंसे छुड़ाकर अपने शुद्ध स्वभावको प्राप्त करना है । और ये पर्वके दिन उसीकी प्राप्तिके साधनभूत अभ्यास करनेके लिये नियत किये गये हैं ।

टेकचन्द—भाई साहब इस साल मैंने भी यही विचार कर लिया है कि न तो नवीन कपड़े बनवाना, न गहना ही उजरवाना, कुछ कपड़ोंके व्यवहारका नियम रख लूंगा, जो स्वच्छ और साधे होवें, उन्हींको काममें लूंगा । तुम्हारी भावजके विचारोंमें भी अब बहुत अन्तर पड़ गया है । अब तो भयभंजन (दण्ड) को कभी स्वस्थान च्युत नहीं होना पड़ता है । वह योग्य सम्मति देती है । आपने न जाने क्या जादूसा कर दिया है कि अब वह बहुत शांत हो गई है ।

जैचंद—भैया, यह आश्चर्यकी बात नहीं है, जीवोंके कर्मका उदय तो है, जब जैसा रस देने लगे । बाह्य निमित्त मिलनेसे भी वह कार्यकारी हो जाता है । स्त्री हो या बच्चे, उनपर अपने ही लोगोंकी प्रतिमा पड़ती है । भावजके स्वभावमें अन्तर पड़नेका कारण यह है कि आपके भी स्वभावमें तो अन्तर पड़ गया है । अपन शांत स्वभावके होवेंगे तो अपने आश्रित जन भी ऐसे ही हो जाते हैं । कहा भी तो है **"आप भला तो जग भला"** आपने जो विचार किया है वह सराहनीय है । तो अपन सब डेवढ़ियोंके मंदिर (नरसिंहपुर)में ही पूजन करेंगे, क्योंकि वहां एकान्त रहता है ।

टेकचंद—ठीक है, यह बात तो हुई, परन्तु एक बातकी शंका कई दिनसे हो रही है उसीके लिये आज मैं विशेष करके आया हूं । जैनमित्रादि पत्रोंमें छपा था कि जैनजातिभूषण दानवीर सेठ हुकमचंदजीने एक लाख तोला चांदीकी प्रतिमा (तीन) अपने नवीन मंदिरमें इस शर्तपर विराजमान करनेका विचार किया है कि यदि उनकी सहधर्मिणी आरोग्य हो जावेंगी । तो, सो क्या यह बात सत्य है ? अच्छा, कदाचित (ऐसा न होवे) कि उनको डेढ़ वर्षमें स्वास्थ्य लाभ न हुवा, तो फिर क्या होगा ? और क्या इस प्रकारकी कबूलतसे वह स्वास्थ्यलाभ कर सकती हैं या कोई उन्हें स्वास्थ्यलाभ करा देगा ? क्या बात है ? कुछ समझमें नहीं आती । भाई, मैं तो मूढ़मती हूं, कृपया संशय दूर कीजियेगा ।

जैचंद—भैया, ऐसी बातोंमें मौन रहना ही ठीक है, कारण समयकी विलक्षणता ही

समझिये। आजकल यदि यथार्थ बात कही जाती है तो लोग उसे म्लेच्छ, अश्रद्धानी, नास्तिक, धर्मघातक आदि शब्दोंमें स्वागत करते हैं, और अनेक प्रकारसे उसके व्यवहार-को अटका देनेका प्रयत्न करते हैं।

टेकचंद—यह तो ठीक, परंतु वस्तुका स्वरूप तो जानना ही चाहिये।

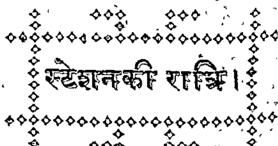
जैचंद—हां यह ठीक है, तो समझ लेवो के इस प्रकारकी कबूलत करना जैनधर्मानुकूल नहीं है। सिवाय इसके एक और भी बड़ी हानि इस सोने चांदी हीरा पन्ना आदि बहु मूल्य पदार्थोंकी प्रतिमा बनानेमें यह है कि फिर इन प्रतिमाओंके दर्शन भी दुर्लभ हो जाते हैं, निरंतर तालोंमें बंद रहती हैं, चारों ओर विद्रोहियोंके द्वारा नष्ट होनेका निरंतर भय रहता है, जैसा कि महमूद गजनवी आदि अन्यायी मुगल सम्राटोंके समयमें हुवा था—काश्मीरके प्रसिद्ध सोमनाथके (शिव लिंग) मंदिरमेंसे मूर्त्तिको तोड़कर स्वर्ण रत्नादिक ले गया, कुछ भाग नगरके प्रदर्शिनी ग्रहमें रख गया और कुछ गजनीकी मसजिदके द्वारपर आने जानेके स्थानपर लगाया, इत्यादि। सो भाई, मेरी समझमें तो मनुष्याकार पाषाणकी मूर्तियां ही हम लोगोंके लिये कल्याणकारी हैं। अब रही यह बात कि मैं गरीब हूं-निर्धन हूँ, सो कदाचित ऐसे भाव आते हों। परन्तु मैं तो जहां तक सोचता हूं मूर्ति और जपमालादि तो बहु मूल्य सुवर्ण रूपा, मणि, मोती, रत्नादि की नहीं होनी चाहिये; इसमें रक्षाकी चिंता और लालचियोंकी जिव्हासे लार टपकना लगा ही रहता है। फिर यह जिन धर्म वीतरागी धर्म है। इसमें कबूलत व आकांक्षा न करके ही धर्म कार्योंमें दानादि की प्रवृत्ति करना चाहिये।

टेकचंद—बस भाई, समझ गया अच्छा, अब जाता हूँ। जुहारु।

जैचंद—अच्छा भैया जुहारु। फिर शीघ्र मिलना। जुहारु।

टेकचंद तांगेपर बैठकर लम्बे हुए और पानी भी टिमटिमाने लगा। जैचंद अपने विचारोंमें निमग्न हो गये और हम भी अब शास्त्रसभामें चले। जुहारु।

दीपचन्द परवार, नरसिंहपुर।



(लेखक—धन्यकुमार जैन स्या० म० काशी।)

(गतांकसे आगे)

(५)

अपने मित्र, निताईचन्द्रकी बारातमें जो बहुतसे कलकत्तानिवासी आये थे, वे उन्हीं (निताईचन्द्र) के मित्र थे। निताईचन्द्रके हृदयमें बचपन ही से युद्ध सम्बंधी भाव उत्पन्न हो गये थे। उसने पत्रमें जो विवाहको "युद्धारम्भ" और ससुरालको "शत्रुदुर्ग" वर्णन किया था, उसके (उक्त दोनों शब्दोंके) द्वारा उसका यह स्वप्नमें भी विचार न था कि, मेरे बन्धुगण आपत्तिमें पड़ेंगे।

जिस ग्राममें विवाह हुआ वह स्टेशनसे दो कोसकी दूरीपर था। विवाह और खान-पानके बाद, निताईचन्द्रसे बिदा लेकर वे सब स्टेशनको चल दिये। सीधी रास्ता है, भूलनेकी कोई आशङ्का नहीं है। ज्योतिस्नाके उजेलेमें गीत गाते २ अति आनन्दसे गमन करने लगे।

जब रातके दो बजे तब स्टेशनका उजेला दृष्टिगोचर हुआ। थोड़े ही समयमें वे स्टेशन पर आ पहुंचे। वहां देखा कि एक बाबू सिरपर साफा बाँधे हुए प्लेट-फार्मपर घूम रहे हैं। उन्हींमेंसे एक युवकने बाबूसे पूछा "बाबू साहब! ट्रेन आनेमें अभी कितनी देरी है?"

बाबू—क्या आप ही लोग आज शामके पांच बजेकी ट्रेनसे आये थे?

युवकगण—जी हाँ!

बाबू—आप लोगोंमेंसे, कुछ आदमी हावड़ेके स्टेशनपर रह गये थे?

कुछ—यह तो नहीं मालूम, पर और तीन आदमी आने वाले थे, वे नहीं आये; शायद वे ही पीछेसे आये हों! क्यों? कोई आया है क्या?

बाबू—तो ठीक है, आपहीके साथी हैं। दो आदमी आज रातके ९ बजेकी ट्रेनसे आये हैं, उनमेंसे एकको बहुत जोरसे ज्वर चढ़ आया है।

कुछ—वे कहां ठहरे हैं?

बाबू—वह देखिये, जो लम्बीसी कोठी दिखती है उसीमें वे ठहरे हैं। मैं अभी देखनेके लिए गया था, उसको १०५ डिगरी बुखार है।

युवकगण आपसमें कहने लगे—शायद मोहनलाल और रामस्वरूप होंगे। रामस्वरूपको ही ज्वर आया होगा। हाय! उस बेचारेको हमेशा रोग ही बना रहता है।

बाबू—हां हां, रामसरूपको ही बुखार है। मैं नाम भूल गया था। चलते हैं? चलिये कह कर, बाबू मकानकी ओर चल दिये। पाठक! समझ गये होंगे कि, ये वे ही गोवर्द्धन बाबू हैं, जिनकी इञ्जन महाशयने दिल्लगी उड़ाई थी।

युवकगण भी उनके पीछे २ चल दिये। मकानपर पहुंचते ही बाबूने कहा "देखिये यह सो रहे हैं" क्योंकि रात भरके जगे हुए हैं। आप लोग धीरे धीरे जाइये, जिससे उनको शब्द न सुनाई दे, नहीं तो उनकी निद्रा भंग हो जायगी, फिर निद्रा आना मुश्किल है।

युवकोंने देखा कि, उस लंबे मकानके पिछलेसे भागमें एक पलंग बिछा हुआ है। पलंगके पास ही एक मेज़ पड़ी है। उसके ऊपर तीन चार औषधियोंकी शीशियां रक्खी हैं, दीवालपर एक लालटेन टंगी है, उसका प्रकाश भी बहुत थोड़ा है।

युवकगण निःशब्द प्रवेश करने लगे। प्रायः सब एक ही साथ शय्याके पास पहुंचे। दो तीन आदमियोंने रजाई उठाकर देखा तो, वहां केवल बिछौने ही बिछौने दिखाई दिये।

अब तो वे घबड़ाये, और बाहर निकलनेके लिए दरवाजेमें धक्का मारा; परन्तु दरवाजा बाहरसे बंद है, यह जानकर तो उनके छक्के छूट गये, और बाबू बाबू कहकर चिल्लाने लगे। परन्तु सब प्रयत्न व्यर्थ हुए। किसी२ ने पलंग ही तोड़ना प्रारम्भ कर दिया। इतनेमें तुलसीने कहा "भाई कुञ्ज, इस काल कोटरीमें कब तक रहेंगे? मुझे लालटेन दो, इन किवाड़ोंपर तेल डालकर दियासलाई लगा दूं।

कुञ्ज—धूंआँ भर जानेपर....

केशव—यम घर....

राजेन्द्र—क्यों ?....

केशव—यों की त्यों....

कुञ्ज—अब इन बातोंको जाने दो। मैं जो कहता हूं उसे ध्यान देकर सुनो, इस पलंगको तोड़के इसकी निवार खोलो, और पलंगके पाटिया व मेज़के पाये, इस निवारसे बांधकर एक नसैनी बना लो। उस नसैनीसे ऊपरके झरोखेमें पहुंच जायगें। फिर निवारको खोलकर, उसको दोवर करेंगे, और उसमें एक हाथके फासले पर गांठ देंगे। फिर उसको तुम लोग पकड़े रहना; और मैं उस तरफ उतर जाऊंगा। यदि ताला लगा हुआ देखा, तो सीधे थानेमें जाकर दरोगासे सब हाल कहूंगा जिससे वे सिपाहीको भेजकर हम लोगोंका इस विपत्तिसे उद्धार करेंगे। यह कहकर सबने मिलकर नसैनी बना ली। नसैनी और निवारके रस्सेके सहारे कुंज बाहर चला आया।

६

स्टेशन मास्टर इस विपत्तिसे भयभीत होकर, पहिले ही से ताला तथा साँकल खोल आये थे। उन्होंने विचारा था कि, ये थोड़े ही समयमें निकल भागेंगे। अतएव मेरी भी जान बच जायगी, परन्तु उन बिचारोंका दुर्भाग्य!

स्टेशन मास्टरने आफिसमें जाकर देखा कि, गौवर्द्धन बाबू चादरा ओढ़े मेज़पर सो रहे हैं। उस तालीको जहांकी तहां रखकर, स्टेशन मास्टर अपने कार्यमें तत्पर हो गये।

थोड़ी देरके बाद गोवर्द्धन बाबूकी आँख खुल गई। उन्होंने सूर्यका प्रकाश देखकर कहा (स्टेशन मास्टरसे) "थानेको आदमी भेजा है?"

स्टे० मा०——नहीं। एक भी खलासी का पता नहीं, कहिये क्या करूं?

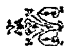
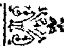
गो० बा०—अच्छा मैं ही जाता हूं। थाना यहाँसे कितनी दूर है?

स्टे० मा०—एक मीलके करीब होगा!

गो० बा०—इससे अच्छा तो यह है कि मैं कलकत्तेको तार दे दूं। जिससे हथियारबन्द पुलिस आकर, इनको पकड़ लेगी। फिर तो किला जीत ही लिया है!

स्टे० मा०—मेरी समझमें भी यही आता है, क्योंकी यहाँकी पुलिसका कुछ विश्वास नहीं। आप तार लिखिये, मैं अभी आता हूं कहकर स्टेशन मास्टर वहाँसे चम्पत हुए।

गोवर्द्धन बाबू तार लिखने बैठे ही थे कि, इतनेमें बाहरसे कोलाहल व जूतोंके शब्द सुनाई पड़े। गोवर्द्धन बाबूने बाहर आकर जो देखा, उससे उनके हृदय कमलमें बड़ामार्

धक्का पहुंचा। इतनेमें उनमेंसे एक युवकने कहा यह वही तो है, जिसने हम लोगोंको बन्द किया था।

इसके सुनते ही, 'मारो मालेरो' कहकर सबके सब गोवर्द्धन बाबूके ऊपर टूट पडे।

गोवर्द्धन बाबूने उनको अपनी ओर आते देख, जंगलकी ओर भागना शुरू कर दिया। जंगलमें दौडते दौडते उनके जूते गिर पडे। अतएव काँटोंके मारे उनकी नाकमें दम हो गई। क्रमशः गति मन्द होने लगी। निदान वे एक वृक्षके तले गिर पडे। होश आने-पर गोवर्द्धन बाबू धीरे धीरे स्टेशनकी ओर चलने लगे। तीन चार घन्टेके बाद स्टेशन पर पहुंचे।

स्टेशन मास्टरने उनकी यह अवस्था देखकर, उनको अपने कपडे पहरनेके लिए दिये। कपडे पहरकर गोवर्द्धन बाबूने कहा, ट्रेन कब आवेगी?

स्टे० मा०—क्या? आपको जाना है?

गो० बा०—जी हाँ—

स्टे० मा०—आती ही होगी। पांच मिनटकी देरी है।

गोवर्द्धन बाबू—अच्छा, मैं चला कह कर वहांसे चल दिये।

दूसरे दिन ही वीरेन्द्र बाबूके नाम, एक बडी सी बुक पैकेट आई। उसको खोलकर वीरेन्द्र बाबूने पुस्तकोंको डैस्कमें रख दीं, और गोवर्द्धन बाबूके लिए धन्यवादपत्र लिखने बैठ गये।

धन और उसकी प्राप्ति।

(ले०—मोहनलाल बन्जात्या, कुचामन।)

धन, दौलत, द्रव्य, लक्ष्मी (Wealth) आदि शब्द एक ही अर्थके वाचक हैं। धन बडी प्यारी वस्तु है। धन विना इस संसारमें कोई भी कार्य नहीं हो सकता। इसीसे अच्छे अच्छे कपडे पहिननेको मिलते हैं। इसीसे गाडी घोडे, बग्गी आदि रख सकते हैं। धन होनेसे ही महल हवेली, बाग बगीचे, धर्मशाला, मंदिर, सरस्वती भवन आदि बना सकते हैं। इसीसे बेटे बेटियोंका विवाह बडी धूमधामसे कर सकते हैं। इसीसे लाखों रुपया धर्म कार्य चन्दे आदिमें देकर संस्थाएं खोलकर, तीर्थयात्रा कर, नामवरी एवं धर्मोपार्जन कर सकते हैं।

जबसे बच्चा समझने लगता है तभीसे पैसेको प्यार करने लगता है। और मनुष्य बुढापे—अत्यंत जीर्णशीर्ण अवस्था तक एवं मरे जब तक इसके उत्पन्न करनेमें—उपार्जनमें लगा रहता है। यानी धन बच्चेसे लेकर बूढे तकको प्यारी चीज है। इसकी प्राप्तिके हेतु मनुष्य अहर्निश परिश्रम करता है, इतना ही नहीं पर धनहीके लिये जन्म लिया है ऐसी तरहसे धनके पिछाडी तनमनसे जीजानसे लग रहा है। जिसके पास धन होता है वह मूर्ख, गुणहीन तथा अन्यायी होनेपर भी चतुर, गुणी और न्यायी कहलाता है। निर्धनी सर्वगुणसम्पन्न होनेपर भी अपने स्थानपर भी प्रतिष्ठा नहीं पाता, और धनी सर्व प्रकारसे अयोग्य होने

पर भी सब स्थानोंपर प्रतिष्ठा पाता है। आजकल हमारी सभा सोसाइटियोंके सभापति आदि पदपर भी सेठ लोग ही स्थापित किये जाते हैं। यद्यपि विद्याके समान संसारमें और उत्तम वस्तु नहीं है। इस आत्माका कल्याण साधन भी इस विद्या (ज्ञान) के द्वारा ही होता है। संसारकी उन्नतिका होना विद्या ही पर निर्भर है, एवं धन भी विद्याके द्वारा उत्पन्न किया जा सकता है; तथापि मनुष्य जब तक धनसम्पन्न न हो तब तक उसकी प्रतिष्ठा नहीं होती।

दृष्टान्त है कि–एक दरिद्री पुरुष अत्यंत दुखी होकर धन कमानेकी इच्छासे बाहिर निकला। राहमें एक गांव पड़ता था, वहां उसकी बहिन रहती थी। बहिन एक धनवानको व्याही गई थी। वह बहिनके पास मिलनेकी इच्छासे गया। बहिनने सुना कि भाई दरिद्रावस्थामें आया है, इसलिये उसे कहलवा दिया कि मेरे घर न आवे, और नगरके बाहिर ही एक टूटे फूटे मकानमें ठहरा दिया और वहीं पर उसके लिये खानेको भेज दिया। उस दरिद्रको बड़ा शोक हुआ और उसने विचारा कि वह मुझ निर्धनसे क्यों मिलने लगी। हाय! दरिद्रता बड़ी दुखदायी है-ऐसा विचार करता हुवा वह वहांसे चला और देशांतरमें जा पहुंचा। वहां पर उसने उद्यम किया और बहुतसा धन कमाया। धनवान बनकर वह अपने देशको लौटा और बहिनसे मिलने गया। बहिनने सुना कि भाई बहुत अच्छी दशामें आया है, अपने मकानमें बड़े आरामसे ठहराया और भोजनके लिये अच्छी अच्छी सामग्री बनाकर थाल परोसा। भाई जो आभूषण पहिने हुवे था वे सब, और रुपयोंकी एक थैली थालके सामने रखकर कहने लगा–"भोजन करो, द्रव्य! तू भोजन कर!"

बहिन बोली–भाई, यह क्या बात है? "आप भोजन क्यों नहीं करते?"

वह बोला "बहिन, तूने भोजन इन्हींके लिये बनाया है अतः मैं इन्हींसे–धन आदिसे ही कहता हूं कि भोजन करो, यदि तू मुझे ही खिलाती तो जब यहां पहिले आया था तब ही खिलाती–इसी प्रकार भोजन कराती।" सच है धनीकी वे लोग भी निन्दा करते जिनका उनसे कोई स्वार्थ नहीं सधता। निर्धनीकी वे भी निन्दा करते हैं जिनके स्वार्थके लिये वह सदैव प्रयत्नवान रहता है। हम कहते हैं कि विद्याके द्वारा बड़े बड़े कार्य हो सकते हैं एवं धनोपार्जन भी विद्यासे हो सकता है यह नहीं, आजकल इसके विपरीत बात है। आजकल विद्या भी धनसे प्राप्त होती है। जिसके पास सैकड़ों हजारों रुपये स्कूलकी फीस देनेको और पुस्तकें खरीदनेको रक्खे हैं वही विद्या पढ़ सकता है। बाकी निर्धनका कुछ सहारा नहीं। निर्धनोंका सहारा धनिक हैं। उन्हें योग्य है कि निर्धनोंको पढ़ावें उन्हें स्कालरशिप आदि सहायता देवें पर धनिकोंकी आंखें खुलें तब ना? उन्हें अभी पुत्र विवाह आदिमें कहो तो लाखों रुपया लगा दें, पर इस कार्यमें-परोपकारमें वे क्यों लगाने लगे? उन्हें यह

ज्ञान कहा रखता है कि परोपकारमें । धर्म कृत्योंमें लगाया हुवा द्रव्य खेतीकी भांति है, कि एक गुना बीज डालें और कई गुना अधिक फल पावें। लक्ष्मीसे सम्बन्ध स्थिर रखना है अगर चाहते हो कि आगेको फिर मिले तो इसे सत्कार्योंमें लगावो।

प्रिय बन्धुगण! धन ऐसी ही वस्तु है। पर धनकी प्राप्ति कैसे हो? हम धनके लिये इतना परिश्रम करते हैं तो भी उसकी प्राप्ति नहीं होती इसका क्या कारण है? इसका उत्तर यह है कि प्रथम तो हम सच्चा प्रयत्न ही नहीं करते और फिर जैसा प्रयत्न करते हैं वैसे साधन नहीं हैं, इसी लिये कार्यकी सिद्धि होना कठिन है। कारणसे कार्यकी उत्पत्ति होती है। और उसके अनुसार चले विना कार्य सिद्धिकी आशा करना नितान्त भूल है। धन लाभ-द्रव्य प्राप्तिके सम्बन्धमें कई तो प्रारब्धको मुख्य मानते हैं और कई उद्योगको। यद्यपि धनी होना प्रारब्धपर निर्भर है, बिना प्रारब्धके कोई विशेष श्रीमान नहीं हो सका हैं, तथापि प्रयत्न करनेसे कोई मनुष्य दरिद्री नहीं रह सकता। विचारिये प्रारब्ध भी क्या चीज है? प्रारब्ध भी पूर्वजन्ममें किये हुए शुभ अशुभ कर्मोंके फल ही है, इसलिये हमें निरुद्यमी-आलसी नहीं बनना चाहिये। जो मनुष्य आलसी होता है उसको कभी सफलता नहीं होती। आलस्य मनुष्यका परम शत्रु है। आलस्यको कभी पास न आने देना चाहिये और सदैव प्रयत्न शील उद्योगी बने रहना योग्य है। इस जगह में इतना और कह देता हूं कि उद्योग करनेके पूर्व यह अवश्य विचार लेना चाहिये कि यह हमारा उद्योग शुभ है व अशुभ, नीतियुक्त है व अनीतियुक्त, शुभ परिणामी है व अशुभ परिणामी, इन बातोंका निर्णय करके आगे बढ़ना चाहिये। अन्यायसे, निकृष्ट कर्मोंसे कभी भी द्रव्योपार्जन करना योग्य नहीं है। आजकल धनके लिये लोग नीचसे नीच काम करते हैं, यहां तक कि इस धनके खातिर ही अपनी प्यारी बेटीको भी बेच देते हैं। ऐसा द्रव्योपार्जनका मार्ग कभी ठीक नहीं हो सकता। व्यापारादिमें हम छलछिद्र कपट करनेसे बिल्कुल नहीं डरते है। पर हमें याद रखना चाहिये कि कपटसे हमारे व्यापारको बड़ी हानि पहुंचती है।

झूठ व्यवहार, कपटसे हमारा विश्वास छूट जाता है और हम हमारे उद्योगमें, व्यापारमें निष्फल हो जाते हैं। ग्राहक आता है तो हम हमारी वस्तुके दुगुने, तिगुने दाम मांगते हैं। ग्राहक एकदम कम दाम कहता है, फिर क्रमशः वह बढ़ता जाता है और हम घटते जाते हैं। यह ढंग ठीक नहीं। इससे दुकानदारका तथा ग्राहक दोनोंका समय व्यर्थ जाता है, क्योंकि ग्राहकको भी ठीक जचाईके हेतु ३-४ दुकनदारोंके यहां फिरना पड़ता है और तब फिर कहीं सौदा एक दुकनदारसे पटता है। विदेशी दुकनदारोंको लीजिये उनके यहां एक मूल्य नियत रहता है। उसी वस्तुको चाहे एक अनजान बच्चा खरीद लावे चाहे एक समझदार मनुष्य, मूल्य एक ही लगेगा। कहा है

Honesty is the best Policy इसको हमें अच्छी तरहसे ध्यानमें रखना योग्य हैं, क्योंकि निकृष्ट कर्मोंके द्वारा जो प्रतिष्ठा होती है वह यथार्थ प्रतिष्ठा नहीं है। मनुष्यकी यथार्थ प्रतिष्ठाके लिये शुद्ध आचरणकी आवश्यक्ता है। आचरणके सम्मुख धन किसी भी गिनतीमें नहीं। महात्माओंकी प्रतिष्ठा धनसे नहीं हुई है केवल शुद्धाचरणसे हुई है, अतः शुद्धाचरण ही सबसे श्रेष्ठ है। न्यायका पालन करना ही शुद्धाचरण है। और इसीलिये शास्त्र कहते हैं कि नीतिज्ञ लोग, चाहे निन्दा करो व प्रशंसा, धन सम्पति चाहे रहे और चाहे वह नाश हो जावे, चाहे आज ही मृत्यु हो और चाहे एक कल्पभर जीवित रहे, किन्तु न्यायके पालनेसे कभी विमुख नहीं होना चाहिये। अन्यायसे अधिक धनोपार्जन करके महल बनाकर रहनेसे थोड़ा धन कमाकर झोंपड़ा बनाकर रहना अच्छा है। न्यायसे कमाकर सुखी रोटी खाना अच्छा है पर अन्यायसे विविध प्रकारके व्यञ्जनोंका खाना अच्छा नहीं है। अन्यायसे प्राप्त किया हुवा द्रव्य अल्प काममें ही नष्ट हो जाता है। न्यायसे उत्पन्न किये हुवे द्रव्यसे मनुष्यकी विशेष उन्नति होती है, अन्यायसे प्राप्त करनेसे समाजको हानि पहुंचती है। अतः अन्यायसे द्रव्योपार्जन करना महा पाप है।

इसलिये प्रियबन्धु गण, न्यायसे द्रव्य कमाना चाहिये और उद्यम सदैव करते रहना चाहिये। निरुद्यमी होनेसे ही भारतवर्षकी यह दशा हो रही है। समय अनमोल है—उसका मोल नहीं हो सकता, जो समय निकल जाता है वह चाहे जितनी मिहनत करो, व चाहे जितना धन व्यय करो फिर नहीं आ सकता। अतः एक मिनिट भी समय व्यर्थ नहीं खोना चाहिये।

संसारमें जलचर, थलचर, नभचर, सभी कुछ न कुछ काममें लगे हैं, निरुद्यमीका कोई भी आदर नहीं करता। सबको काम ही प्यारा है "Motion means life and stagnation means death" पुरुषार्थ ही जीवन है और आलस्य या प्रमाद, मृत्यु या ह्रास है। जो प्राणी, जो पुरुष, जो जातियां इस प्राकृतिक नियमका पालन करती हैं वे सुखी, समृद्धिशाली और चिरंजीवी रहती हैं और जो इसके विरुद्ध चलती हैं वे दुखी, दरिद्री और अल्पजीवी होती हैं। लोहा जब तक प्रयोगमें रहता है तलवार कहलाता है और शत्रुके हृदयको दहला देता है, परन्तु जब बेकार हुवा तो काटा जाता है और पाती कहलाता है और कोई उसकी कदर नहीं करता। बहता हुवा जल सबके मनको भाता है, पर गड़ेके स्थिर जलको कौन पसन्द करता है? कार्य करनेसे, परिश्रम करनेसे ही कार्यकी सिद्धि होती है "There are no gains without any pains." बिना परिश्रमके लाभ नहीं होता। और भी कहा है कि:—

उद्यमेन हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥

प्रिय बन्धुओ, जिस देश व समाजने पुरुषार्थकी जितनी धार ली है वह उतना ही

विभवशाली, प्रतापी और सुखी हुवा है। पश्चिमीय देशोंने पुरुषार्थपर कमर कसी तो देखिये क्या क्या कर दिखाया है और व्यापारमें कैसी उन्नति करली है। इसी पुरुषार्थकी बदौलत यूरुपका प्रभाव सारे संसारपर छा गया है। अमेरिकामें मजदूर तक भी अपना समय व्यर्थ नहीं खोते। एक नवयुवक रोजगारकी तलाश करता हुवा एक दुकनदारके यहां गया, उसने कहा "अभी कोई जगह खाली नही है, अगर तुम चाहो तो यों ही १५) रु० मासिक दे दूंगा।" युवकने यह सुनकर दुकनदारके गोली मारनी चाही और कहा "**क्या तुम मुझे मुफ्तखोर समझते हो?**"

पुरातन कालमें जबकि भारतवर्ष पूर्ण समृद्धिशाली था और इसकी सभ्यताकी ख्याति सारे संसारमें छाई हुई थी, तब यह सब पुरुषार्थके कारण ही था। पूर्वकालमें क्यों, वर्तमानमें भी एक व्यक्ति कुछ वर्ष पहिले मारवाड़से मात्र डोर लोटा और कुछ पैसे लेकर बंबई गया था वह आज इसी पुरुषार्थके कारण बहुत बड़ा आदमी बन गया है और लाखों रुपये पैदा कर लिये है। हा! एक वही समय था कि हमारे पूर्वज सुबहसे शाम तक पैदल चलते थे, मोटे देशी रेजीके कपड़े पहिनते थे, श्रीराम और उनके साथ साथ सीताजी भी १४ वर्ष तक बनमें रहीं तो वे पैदल ही फिरते थे। आज हम ऐसे आलसी हुवे हैं कि कुछ कदम भी पैदल चलना कठिन हो रहा है, बोझ उठाना तो दूर रहा। बिना मोटर, ट्राम, सवारी आदिके तो हमारी गति ही नहीं है। स्टेशन आया कि बाबूजी अपने हेंड-बेगके लिये (जिसमें कि कठिनतासे ५ सेर बोझ भी न होगा) कुली कुली पुकारने लगे। मुसाफिरखानेके बाहिर पहुंचे कि इके बग्गीपर सवार हुवे। अहा! क्या ही अच्छा हो यदि रेलगाड़ीसे उतरते ही स्टेशनके बाहिर ले जानेको भी कोई साधन हो जाय।

प्रिय बन्धुओ! आलस्य, विषयवासना और विलासप्रियताको त्यागो। समय काम करनेका है, और जाति देश समृद्धिशाली बने इसका प्रयत्न करो। उद्योगी बनो, व्यापारी बनो, कारण "व्यापारे वसते लक्ष्मीः" इसको याद रक्खो और शिल्पविद्याका प्रचार करो।

हाय! यह भारत कैसा समृद्धिशाली था और आज इसकी क्या दशा हो गई है, यह विचार करते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। यह भारत तुर्कों, मुगलों द्वारा कई बार लूटा गया, यहांसे लूट लूट कर द्रव्यकी गाड़ियां की गाड़ियां बाहिर चली गईं, इसके लूटके द्रव्यसे कई बादशाहतें बन गई। लेकिन देखो अब क्या अमनचैनका समय है। न्यायप्रिय बृटिश शासनकी छत्रछायामें कैसी स्वतन्त्रता और निर्भयता हमें प्राप्त हुई है। पर हाय! उस निर्भयताका—उस स्वतंत्रताका हमने क्या उपयोग किया? हम हमारी कला—कुशलता, व्यापार, शिल्पचातुरी, आदि सबको भुलाकर निरुद्यमी, आलसी और विलासप्रिय बन बैठे। प्रिय भ्रातागण, उठो

और व्यापार कर, उद्यम कर, कलाकौशल सीखकर भारतको समृद्धिशाली बनावो। और एक दिन वह फिर आवे कि इस बूढे भारतकी पुरातन कालकी भांति फिरसे व्यापारकी, कलाकौशल्यकी तूती चारों ओर बजने लगे।

व्यापारका अर्थ यही नहीं है कि विलायतसे माल मंगवा लिया और यहांपर बैठे बैठे वेचकर अपने देशके धनको बाहिर भेजते रहे, और न यह है कि सौदा सट्टा कर अपने भाइयोंका द्रव्य समेट लिया। बाहिरसे माल मंगाकर बेचना तो उन देशोंकी, उन शिल्पव्यसनी मुल्कोंकी दलाली मात्र है। देखो हमें हमारी खर्चकी सामग्रीके वास्ते भी पराये देशोंपर रहना पडता है—अन्य शिल्पव्यसनी देशोंकी तर्फ मुंह ताकना पड़ता है। वहांसे सामग्री न आवे तो हाथ पर हाथ दिये बैठे रहो।

इस महा युद्धके कारण कई वस्तुओंका मूल्य कितना बढ़ गया है और बढ रहा है यह बतलानेकी आवश्यक्ता नहीं—सब जानते हैं, और कई वस्तुओंका तो मिलना भी कठिन हो गया है। ऐसे अवसरको जापानने जाने न दिया—उसका उपयोग कर लिया और देखो कई चीजें बना डालीं और पैसा पैदा कर रहा है।

हाय! हम कुछ भी नहीं कर सक्ते ! करें कैसे? हमें हमारे देशकी समृद्धिका विचार हो तब न! हम तो हमारे पासकी व्यापारिक चीजोंपर बढे हुवे मूल्यसे ही खुशी हैं। नहीं, नहीं, मित्रो, यह झूंठी खुशी है और हमें योग्य है कि हम भी जापानकी भांति कलाकौशल्य, उद्योग धंधों और कारखानोंमें लग जायं।

हमें इस महा युद्धसे शिक्षा लेनी योग्य है। बाहिरसे आनेवाली प्रत्येक वस्तुकी ऐसी मंहगीको देखकर मनमें कुछ भय लाना चाहिये और हमें हमारी नित्यकी आवश्यकीय वस्तुओंके लिये भी अन्य देशोंका मुंह न ताकना पड़े इसके लिये प्रत्येक वस्तु जो यहां न बनती हो बनानेके कारखाने खोलने योग्य हैं, तब ही हम धन—सच्चा धन कमा सकते हैं और देश समृद्धिशाली बन सकता हैं, वरना इच्छित वस्तुओंका दुगुना, तिगुना, चौगुना एवं कई गुना मूल्य दिये जावो और कंगाल बने जावो।

अब मैं डाक्टर स्माइल्स कथित ५ अति उपयोगी नियमोंको लिखकर लेखनीको विश्राम देता हूं।

(१) आयसे व्यय कम करो (२) प्रत्येक वस्तु नकद मूल्य देकर खरीदो (३) भावी लाभकी आशापर कभी व्यय न करो (४) आय और व्ययका पूरा हिसाब रखो (५) कोई वस्तु व्यर्थ न जाने पावे।

प्रिय बन्धुओ, ये नियम बड़े उपयोगी हैं। इन्हें सदैव ध्यानमें रखना योग्य है। इनपर चलने वाला मनुष्य कभी दरिद्री नहीं हो सकता। संसारमें सुखी होनेके ये मुख्य साधन हैं।

(१) आयसे व्यय कम करो—यह बड़ा

उपयोगी नियम है। हमें जो कुछ भी हमारी आमदनी हो उसमेंसे अवश्य कुछ न कुछ बचाना योग्य है। कदाचित् ऐसा समय आ जाय कि हमारी आय कुछ भी न रहे तो फिर क्या होगा ? यही बचाया हुवा द्रव्य हमारी रक्षा करेगा और हमें दूसरोंका मुह न ताकना पडेगा। हम कह सकते हैं कि हम क्या बचावें, हमारी आय तो बहुत कम है, उसमें तो खर्च भी नहीं चल सकता है। यह कहना भूल भरा है। आय कम है तो व्यय भी कम करो और उसीमेंसे जो कुछ बचे बचाओ। हम भोजनादि व्ययमें २५) रुपया मासिक व्यय करते हैं तो १५) मासिकसे भी काम चला सकते है। वस्त्रादिकमें बढिया कपडे बनाकर ५०) खर्च करते हैं तो शरीर रक्षा हेतु ५) के कपडेसे भी काम चला सकते हैं। जिस प्रकार एक अमीर अपने घर खर्चमें १०००) रुपया मासिक व्यय करता है तो एक १०) रु० मासिक पानेवाला मजुर भी ८) रुपयेमें काम चलाकर २) रुपये बचा सकता है। जो काम कम खर्चोंमें हो सके उसमें अधिक खर्च न करना चाहिये और आमदनीसे खर्च कम होना चाहिये।

(२) दूसरा नियम पालन करेंगे तो हम अति सुख पावेंगे। देखिये नकद दाम देनेपर वस्तु भी अच्छी एव सस्ती मिलती है, और उधार लेनेपर चीज अच्छी नहीं मिलती और दुकनदार भी मनमाना दाम लगाता है। नकद दामसे तो हम ३-४ दुकानोंपर वस्तुकी अच्छी प्रकार परीक्षा तथा मूल्यकी अच्छी तरह जाच कर सकते है। उधारका तो स्वभाव ही न डालना चाहिये। पासमें पैसे न हों तो न सही वस्तु मत खरीदिये और आवश्यकताको दबानेका प्रयत्न करिये, वरना यदि आवश्यक्ता आपको दबा लेगी तो वह आपको बार बार दबाये ही जायगी, और तब आपको ऋणके बडे बोझ तले दब जाना पड़ेगा और फिर उसके चुकानेको चिन्तित रहना पडेगा। चिन्ता चितासे भी बढकर है।

(३) भावी आशापर व्यय मत करो। इसपर अधिक कहनेकी आवश्यक्ता नही। क्योंकि शायद आशा फलीभूत न हो तो कैसा भयकर समय उपस्थित होगा और हमको नीचा देखना पड़ेगा। मेहको उमडा हुवा देखकर घडा फोडना बुद्धिमानी नही है, वैसे ही भावी आशापर व्यय करना मूर्खता है।

(४) आय और व्ययका लेखा रखो—आय व्ययका लेखा रखना आवश्यक है। हिसाब रखे बिना हमे यह भी कैसे मालूम हो सकता है कि हम क्या बचा सके हैं। देखिये हम किसी दुकनदारसे नकद दामपर वस्तु खरीद लाये। दुकानदार फिर मूल्य मागने आया तो हमारे पास हिसाब होगा तो झट दिखला देंगे कि देखो फला मितीमे इतने रुपये हमने तुमको दिये।

(५) कोई वस्तु व्यर्थ न जाने पावे—इसके साथमें हमे यह भी ध्यान रखना योग्य है कि कोई व्यर्थकी—विना कामकी वस्तु मोल भी न लें। कभी हम विचारते हैं यह वस्तु अच्छी है चलो खरीद लें। पर अच्छी है, सुन्दर है सो

इससे हमें क्या ? यह हमारे क्या लाभकी ? यह विचारना चाहिये, क्योंकि संसारमें वस्तुएं तो अधिक हैं हम क्या क्या खरीद करेंगे। कभी कभी कोई वस्तु कुछ सस्ती मालूम होती है तो हमारा मन झट खरीदनेको हो जाता है। पर विना कामकी चीज़ यद्यपि सस्ती हो तौभी खरीद कर पैसेकी तंगी करना योग्य नहीं है। क्या मालूम वह अभीसे भी अधिक सस्ती हो जाय, पर हमें सस्तीसे भी क्या मतलब? हमारे तो वह कामकी ही नहीं है। हमे कोई भी वस्तु पहिले उसकी आवश्यकता अनावश्यकतापर विचार कर खरीदनी योग्य है। और यह तो याद रखनी ही चाहिये कि कोई वस्तु हमारे पास रक्खी है, वह अभी हमारे कुछ काम नहीं आती, पर ऐसा विचार कर उसे व्यर्थ न जाने देना चाहिये, न मालूम उससे कभी क्या काम पड़ जाय और फिर हमें उसके लिये दाम खर्चने पड़ें।

शरीर—रचना वर्णन

भाग २ जो।

(ले० हाथीचंद माणेकचंद दलाल)

इन्द्रियविज्ञान, याने तेनी क्रिया.

शरीरनी अंदरनी इन्द्रियो अथवा अवयवोना जीवने व्यापार संबंधी ज्ञानने इंद्रियविज्ञान शास्त्र कहे छे. आगला भागमां शरीररचना अने तेना मुख्य भागोनुं वर्णन करवामां आव्युं छे. हवे आ भागमां शरीरनो जीवन व्यापार चल वनारां क्यां क्यां यंत्रो छे अने ते यंत्रो अथवा क्रियाओ शरीरमां शुं शुं क्रिया करे छे तेनुं संक्षिप्त वर्णन करवामां आवे छे. वैद्यकशास्त्रना ज्ञाननी जुदी जुदी शाखाओमां आ इंद्रियविज्ञानशास्त्र सौथी वधारे महत्व धरावे छे. आ ज्ञान वगरनुं वैद्यकज्ञान नकामुं छे. शरीरमां चैतन्यवाळी क्रिया थवी तेनुं नाम **जीव** छे, अने ए क्रिया बंध पडवी तेनुं नाम **मृत्यु** छे, ए वात आपणे जाणीए छीए, पण ए चैतन्यवाळी क्रिया शी रीते चाले छे, अने तेने बंध पाडनारां (मृत्यु करनारां) केवां केवां कारणो शरीरमां बनवा पामे छे तेनुं ज्ञान आ इंद्रिय विज्ञानशास्त्र बतावे छे.

शरीरमां चैतन्य व्यापार चलाववावाळा मुख्य अवयवो अथवा मर्मस्थानो त्रण छे—मगज, फेफसां अने रक्ताशय. विद्वानो जींदगीनो मुकाबळो त्रण पायावाळी मोटी साथे करे छे, ते बराबर छे. शरीरमां आ त्रण मर्मस्थानो आ शरीररूपी तीरपाईना त्रण पग छे. तीरपाईनो एक पग

भांगे छे के खोटके छे तो, तीरवाई नकामी थाय छे. एवीज रीते आ त्रण मुख्य मर्मस्थानोमांनुं एक मर्मस्थान खोटके के अटकी पडे तो, शरीरनो जीवन व्यापार तरत अटकीने मृत्यु नीपजे छे. शरीरने एक यंत्रनी उपमा आपी शकाय. काम करवानां कारखानाओमा जेम यंत्रो अने सांचा कामो गोठवेला होय छे, एवी रचना आपणा शरीरनी छे. यंत्रोमां जेम चक्रो गोठवेलां होय छे, तेम शरीरमा पण क्रिया करवावाळा चक्रो होय छे.

शरीरमा जीवन व्यापार घणा प्रकारना चाले छे. आमांना मुख्य मुख्य व्यापारो अथवा क्रियाओनां नीचे प्रमाणे वर्ग पाडी वर्णन करवामां आवशे.

रुधिराभिसरण यंत्र-Circulatory System.
श्वासोश्वास यंत्र-Respiratory System.
पक्वाशय यंत्र-Digestive System.
मूत्राशय यंत्र-Urinary System.
जननेन्द्रिय यंत्र-Generative System.
चेतना यंत्र-Nervous System
ज्ञानेन्द्रिय चक्रो-Organs of Senses
सप्तधातुओनी स्त्रविया-Primary Secretions.
त्रण दोष-वात पित्त कफ-Vat-Pit-Kat
स्वाभाविक वेगो- Natural Calls

रुधिराभिसरण यंत्र-(लोही Blood) शरीरमा **लोही** एक मुख्य जीवन छे. आखा शरीरनुं पोषण लोही वडे थाय छे. खोराकनो पोषण करनारो सारभूत भाग केटलीक रसायणी क्रियाथी जुदो पडीने लोहीनी साथे मळे छे. आ पोषणकारक भाग ने लोही पोतानी गतिमा जुदा जुदा भागने, जोइए एटला प्रमाणमां वहेंची आपे छे. लोही आ प्रमाणे शरीरना तमाम भागोनुं पोषण करवाना काममां मददगार थाय छे, एटलुंज नहीं पण ते भागोनी अंदर नकामा पदार्थो अथवा मेल कचरो होय तेने पोताना प्रवाहमां खेंची लई, शरीर बहार काढी नांखवानी जगाओमां फेंकी दे छे; अथवा शुद्ध करवानी जगामां पोतानी साथे खेंची जाय छे. लोहीनुं बीजुं एक अगत्यनुं काम शरीरमां गरमी आपवानुं छे. लोही फरतुं न होय तो छातीना भागपर जेवी गरमी लागे छे, एवी हाथ पगना छेडापर लागती नथी. बहु मंदवाडमां ज्यारे लोहीनुं फरवुं बराबर नथी थतुं, त्यारे प्रथम हाथ पग ठंडा पडे छे, तेनुं एज कारण छे. लोही झडपथी फरे छे, अने तेनी गरमी एक सरखी होवाथी ते शरीरना सघळा अवयवोने समान उष्णतामां राखे छे. **लोहीनी रचना**-शरीरमां जे लोही फरे छे ते बे जातनुं छे. हृदयना डाबा खंडमां, तथा धमनी एटले धोरी नसोमां लाल कीरमजी रंगनुं लोही होय छे, अने हृदयना जमणा खंडमां तथा काळी नसोमा ते मेलुं जांबुडा अथवा काळा रंगनुं होय छे. आ काळा रंगनुं लोही केटलाक लोको धारे छे तेम निरुपयोगी नथी. फेफसामा जई शुद्ध थया पछी एज लोही शरीरनुं पोषण करे छे. लोही जरा घाडुं, चीकासवाळुं, अने पाणी करतां सहेज भारे छे, तेमज स्वादमां जरा खारुं छे. लोहीमां उष्णता १०० डिग्रीनी छे. लोहीना बे भाग करी शकाय छे. एक भाग रक्त रजकणो, अने बीजो भाग रक्त जळ. रक्त रजकणो एटले लोहीमां

असंख्य बारीक रातां रजकणो होवाने लीधे ते रातुं देखाय छे. लोहीनो प्रवाही भाग जे रक्त जळ तेमां रंग होतो नथी. आ रक्तजळ बे पदार्थोनुं बनेलुं छे, जेमने अंग्रेजीमां फिब्रिन अने सीरम कहेवामां आवे छे. लोहीना एक हजार भागमां ७९० भाग पाणीना अने बाकीना २१० भागमां १३० भाग लोहीना दाणाना, ६७ भाग आल्ब्युमेनना, २ भाग फिब्रिनना, अने ११ भागमां चुनो,मेगनीशिया, सोडा, लोह वगेरे पदार्थो आवे छे, एवुं रसायणी प्रयोगथी प्रथक्करण करी जोनारा विद्वानोने मालम पडेलुं छे.

लोहीनुं फरवुं–मोटी धमनी, नसो,फसो, केशवाहिनीओ ए लोहीने फरवानी म्होटी न्हानी नदीओ छे. आपणा शरीरमां लोही चक्रनी पेठे फर्या करे छे. तेने फेरवनारुं मुख्य हथियार अथवा साधन **रक्ताशय** छे. रक्ताशय ए लोहीनो एक होज छे, जेना बे भाग छे. डाबी बाजुना भागमां रातुं अथवा शुद्ध लोही भरेलुं छे अने जमणी बाजुना भागमां काळुं अथवा अशुद्ध लोही भरेलुं छे. चित्र आपीने बतावथी लोहीना फरवानी वधारे सारी समजण पडी शके छे. डाबी बाजुना रक्ताशयमांथी शुद्ध लोहीनो एक नळ जेने धोरी नस कहेवामां आवे छे, ते नीकळे छे, जेनी एक मोटी शाखा पेट तथा बन्ने पगमां जाय छे, अने बीजी शाखाओ बन्ने हाथ तथा माथामां जाय छे. आगळ जतां वृक्षनी माफक आ मोटी शाखाओमांथी बारीक नसो अने तेमांथी छेवट केशवाहिनी एटले वाल जेवी सुक्ष्म नळीओ जाळनी माफक, छेक त्वचा सुधी पथराई जाय छे. आ जाळमां रातुं लोही फरी रह्युं एटले तेमांथी पाछी एवीज बारीक फसो नीकळे छे, अने जेम न्हाना न्हाना वहेळाओ मळीने आगळ जतां एक मोटी नदी थाय; अथवा वृक्षनो दाखलो लइए तो जेम न्हानी न्हानी डाळीओ अने पछी डाळीओ मळीने अंते थड थाय छे, तेवी रीते आवी न्हानी न्हानी अनेक फसो एकत्र मळीने, एक मोटी फस शरीरना नीचला भागमांथी, अने एक बीजी मोटी फस बन्ने हाथ तथा माथा तरफनी शाखाओमांथी उपरना भागमांथी, एम बे म्होटी फसो काळुं लोही लईने रक्ताशयना जमणा खंडमां उतरे छे; अने त्यां ते लोहीने रेडे छे. त्यांथी ए काळा लोहीना बे फांटा थई एक एक रग बन्ने फेफसांमां जायछे. फेफसांमां गयेली आ रगो पण, शरीरनी केशवाहिनीओनी पेठे, जाळनी माफक पथराई जाय छे; अने फेफसांमांना हवाना खाडाओनी झीणी नसनी जाळ साथे संबंधमां आवतां ए काळुं लोही त्यां शुद्ध थई केशवाहिनीओ मारफते स्वच्छ रातुं लोही त्यांथी पाछुं फरे छे, अने ए जाळो आगळ जतां एकत्र मळीने तेनी एक एक धमनी थाय छे. ते शुद्ध लोहीने पाछुं रक्ताशयनी डाबी बाजुना खंडमां दाखल करे छे के ज्यां आगळथी प्रथम जणाव्या प्रमाणे शुद्ध लोही सौथी मोटी धमनी वाटे नीकळ्युं हतुं. आ प्रमाणे शुद्ध लोही रक्ताशयना डाबा खंडमांथी मोटी धमनी वाटे नीकळीने शरीरना भागोमां फेलाय छे; अने त्यांथी काळुं लोही

शुद्ध थईने पाछुं रक्ताशयना जमणा खंडमां दाखल थाय छे, अने त्यांथी फरी शरीरना पोषण माटे मोटी धमनी वाटे शरीरमां फेलाय छे. लोहीनो आवो एक फेरो थतां १॥ मिनीट लागे छे. होजरी, आंतरडां अने बरोळनी शिराओनुं लोही परभारुं रक्ताशयमां नहि जतां, कळेजामां जाय छे. त्यां फेफसांनी पेठेन तेनी बारीक शाखाओ पथराईने ते लोहीनी शुद्धि थाय छे; अने पछी रक्ताशय तरफ वहे छे. स्त्रीओना गर्भाशयमां आ लोहीनी गति वळी जुदा प्रकारनी थाय छे. कहेवाय छे के गर्भनां फेफसां काम करतां नथी अने गर्भने ताजुं लोही ओरमांथी मळे छे. गर्भनी नाभिमां नाळ होय छे, ते वाटे केटलुंक लाल लोही गर्भना पेटमां जाय छे, अने बाकीनुं लोही परभारुं, अने थोडो भाग कलेजामां थईने रक्ताशय तथा फेफसामां फरी वळी गर्भ नाळनी धमनी वाटे, ओरमां शुद्ध थवा जाय छे; एवुं केटलाक विद्वानोनुं मानवुं छे.

लोहीने गतिमां कोण मुके छे— लोही शरीरमा निरंतर फर्या करे छे, ए वात तो खरी छे, पण एवी रीते गतिमां मूकनार वस्तु शुं छे, ते एक अगत्यनो सवाल छे. प्रथम तो लोही बहु झडपथी अने जुस्साथी फरे छे तेनुं कारण एवुं छे के रक्ताशय मांसमय कोथळीनुं बनेलुं छे. तेनी अंदरना मांसना स्नायुओ तंग थईने, एटले संकोचाई तेने बहार कहाडवानो प्रयत्न करे छे, अने खाली थाय छे त्यारे तेम स्नायुओ पाछा ढीला थई, कोथळीने पहोळी करी, बीजा लोहीने आववानो रस्तो करे छे. स्नायुओनो आवो धर्म छे. हवे रक्ताशयमां रक्तना जुदा जुदा खंडो छे, अने तेनी वच्चमां पडदावाळा दरवाजा छे, ते एवा छे के वारंवार उघडे छे अने मीडाय छे. रक्ताशयना एक खंडमां लोही भराय छे, त्यारे संकोच पामे छे; अने तेज वखते सामेनो खंड पहोळो थाय छे, जेथी लोही बीजा खंडमां धकेलाय छे अने त्यांथी धमनीओमां धकेलाय छे. रक्ताशयना आ खंडो वाराफरती तंग ढीला थाय छे, अने तेथी रक्तने धक्को मळ्या करे छे. वळी धमनीओमां रक्तनी जोडा जोड पवन होय छे ते पवन रक्तने गति आप्या करे छे. आ शिवाय रक्तने धकेलनारां बीजां न्हानां कारणो पण घणां छे. धमनीओ स्थितिस्थापक होवाथी लोहीने गति मळे छे. शरीरना स्नायुनी निरंतर गतिथी पासेनी रक्त शिराओ उपर दबाण थया करे छे; अने तेथी पण रक्त आगळ धकेलाय छे. श्वासोश्वासनी क्रियाथी पण रक्तनी गतिने कांईक उत्तेजन मळे छे. आम घणा प्रकारनी शरीरनी क्रियाओ लोहीने झडपथी फरतुं राखे छे. आ क्रियाओ एज शरीरनुं चैतन्य छे.

नाडी—लोहीना फरवाने अने नाडीने शुं संबंध छे ते पण जाणवा जेवी वात छे. डाबा रक्ताशयमांथी रक्त मोटी धमनीमां जाय छे, तेथी धमनी पहोळी थाय छे, अने तेनो धक्को धमनीना छेडाओ सुधी पहोंचे छे. एवा दरेक धक्काने 'नाडी' अथवा नाडीनो धबकारो कहेवामां आवे छे. रक्ताशयना दरेक वखतना संकोचवाथी दरेक नाडी उत्पन्न थाय छे. आवी

संकोचननी, धक्कानी अने धबकारानी क्रिया अथवा नाडी; जुवान आदमीना शरीरमां दर एक मीनिटमां आशरे ७५ वखत थाय छे.

श्वासोश्वास यंत्र—ए शरीर मांहेनी एक घणीज अगत्यनी क्रिया छे. लोही ए शरीरनुं जीवन छे, पण ए लोहीने जीवनवाळुं बनावनार श्वासोश्वासनी क्रिया छे. लोही शरीरमां फरे छे अने फेफसांमां शुद्ध थाय छे. त्यां तेने शुद्ध कोण करे छे ? एक प्राण आपनार वायुने दाखल करनार, अने (बाहरथी आवीने प्राणने हरे) एवा एक बीमा झेरी वायुने फेफसामांथी बहार काढी नांखनार श्वासोश्वासनी क्रिया. आपणे श्वास लईए छीए त्यारे बहारनी हवा अंदर जाय छे; अने श्वास मूकीए छीए त्यारे, शरीरनी अंदरनी हवा बहार जाय छे. आ वात आपणे जाणीए छीए, अने दर पळे प्रत्यक्ष अनुभवीए छीए, पण ते हवा अंदर क्यां जाय छे अने शुं करे छे, ते वात थोडा जाणे छे; अने ज्यां सुधी ए वातनुं ज्ञान होतुं नथी त्यां सुधी ए वातने खास्सी अगत्यता पण आपवामां आवती नथी.

श्वास नळी—शरीरनी अंदरनी सूक्ष्म रचनानो बे घडी विचार करतां आपणे खरेखर आफरीन थईए छीए। .

शरीरनी अंदर ज्ञान अने गति तंतुओनी, अपार हाडीओ, धमनीओ, तथा रगोनी वाळ करतां पण वधारे बारीक जाळो सर्वत्र पथराएली छे. आवीज ये म्होटी जाळो बे फेफसांमां, वायु नळीनी फेलायली जोवामां आवे छे. नाकना नसकोरांथी फेफसां सुधीना मार्गने वायु मार्ग अथवा श्वास नळी कहेवामां आवे छे. हवा नाक वाटे गळाना पाछला भागमांथी स्वर नळीमां थई श्वास नळीमांथी फेफसामां जाय छे. स्वर नळी अने श्वास नळी ए बन्ने एकज मार्ग छे, पण तेनी जुदी जुदी क्रिय समजवाने माटे तेना बे भाग कल्पवामां आं छे. उपलो भाग जे जीभना थड आगळथ गळना नळ गोटा सुधी आवेलो छे, तेने स्व नळी नाम आपवामां आवेलुं छे. अने नीचेन भागने, श्वास नळी नाम आपवामां आवेलुं छे श्वास नळीनो उपलो भाग पहोळो अने म्होटो छे गळाना उपला भागमां बहारथी जे टेकरो माल पडे छे, ते ए स्वर नळीवाळो भाग छे; अने ते आपणे नळ गोटो एवा नामथी ओळखी छीए. ए नळ गोटा अथवा स्वर नळीनुं का अवाज पेदा करवानुं छे. एना मध्य मार्गन बन्ने बाजुए, बन्ने तार छे. ते तार तंबुरान तारनुं काम करे छे, एटले जुदा जुदा स्व उत्पन्न करे छे.

ए तारनी वचेनो रस्तो लांबो, सांकडो अने त्रिकोणकार छे, तेमांथी हवा जाय आवे छे. ते **कंठद्वार** कहेवाय छे. आ तार स्नायुना संबंधथी हाले छे, अने तेथी ते रस्तो सांकडो, पहोळो के बंध करी शकाय छे. आ रस्ते हवा सिवाय बीजो कोई पदार्थ जई शकतो नथी, अने कदाच कोई पदार्थ अकस्मात जवानुं करे छे के तुरतज आ रस्तो बंध पडी जाय छे. पाणी पीतां के खातां हसवुं आववाथी, गळामां गयेलो पदार्थ पोतानो मार्ग मूकीने, स्वर नळी तरफ जाय छे; तेने कंठद्वार बंध पाडी अट-

काबी दे छे. आवी गरबड थाय छे तेने, 'ओ-नाळ गयुं" कहीए छीए, तेम कारणथी जैन शास्त्रोमां नमतां बोलवानी मनाई करी हशे, गां नळगोटाथी नीचेना मार्गने श्वासनळी कहेवामां आवे छे।

(अपूर्ण)

श्राविकाश्रम, बम्बई।

जिन भगिनियोंको अपनी जातिकी अवनत दशापर दुःख होता है और जातिकी दशाको सुधारनेके लिये अध्यापिका, उपदेशिका तथा सुयोग्य गृहिणी बनना चाहती हैं वे श्राविकाश्रम बम्बईमें आकर शिक्षा प्राप्त करें। यह आश्रम आठ वर्षसे यहां स्थापित है। इतने ही समयमें इस आश्रमके द्वारा अनेक स्त्रियाँ तैयार होकर अध्यापिका, तथा उपदेशिकाका कार्य करके जातिसेवा कर रही हैं। आश्रममें जैनधर्मानुयायिनी जैन कन्याएं, सधवा तथा विधवा स्त्रियां भरती की जाती हैं। असमर्थ स्त्रियोंको छात्रवृत्ति भी दी जाती है। यदि कोई अजैन स्त्री आश्रममें प्रवेश होना चाहे तो वह भी आश्रमके नियमानुसार चलनेपर प्रविष्ट हो सकती है।

यह आश्रम एक बहुत रमणीक, एकान्त और सुरक्षित स्थानमें है। इसमें कई बाइयां आनरेरी रीतिसे कार्य सम्पादन करती हैं। भरती होने वाली बाइयोंको निम्न लिखित पतेपर फार्म और नियमावली मंगाकर भेजना चाहिये।

निवेदिका—मगनबाई माणिकचन्द—
सचालिका 'श्राविकाश्रम'
जुबिलीबाग, तारदेव—बम्बई।

दिगंबर कोमे शुं करवुं जोईए?

અંગ્રેજોના આ દેશમાં આગમન પછી મદ્રાસીઓ, બંગાલીઓ, મહારાષ્ટ્રીય બ્રાહ્મણો, અને પારસીઓએ ઇંગ્લીશ કેળવણી લેવા માંડી. તેમાંથી ઉત્પન્ન થયેલાં ઉત્તમ ફળો આસેખી ગુજરાતીઓએ પણ તેની શરૂઆત કરી. ગુજરાતના દિગમ્બર જૈનો સિવાય અન્ય સમસ્ત કોમોએ તેમાં ઘણોજ વધારો કર્યો. પોતાની નજરે સામા અન્ય કોમોના અતીશય આગળ વધવાનાં દ્રષ્ટાંતો મોજુદ છતાં ગુજરાતના દિગંબર જૈનો હતા ત્યાંને ત્યાંજ અંધારામાં રહેવા લાગ્યા. તેમની આવી અધમ સ્થિતીને સમયે **સ્વર્ગસ્થ શેઠ માણેકચંદ હીરાચંદ જે. પી.** એ ગુજરાતના પાટનગર અમદાવાદમાં એક બોર્ડિંગ સ્થાપી ઉચ્ચ કેળવણીનો પ્રકાશ પ્રસરાવવાનું મહાન માન પ્રથમ સંપાદન કર્યું અને તેમણે કેળવણીનાં બીજ બોર્ડિંગ રૂપી ક્ષેત્રમાં વાવ્યાં, જ્ઞાનનો દીપ સળગાવ્યો. બોર્ડિંગને સ્થાપન થયાને આજે ઘણા વર્ષો વીતી ગયા. જ્યારે બોર્ડિંગ સ્થાપન થઈ ત્યારે આપણી કોમમાં કેળવણીની શરૂઆત હતી. તે સમયે એક બોર્ડિંગ ગુજરાતના દિગંબરોને માટે પુરતી હતી. તે બોર્ડિંગમાં સઘળાનો સમાવેશ થતો હતો. કોઇને નીરાશ થઇ જવું પડતું ન હોતું. કોઇ પણ દિગંબર જૈનને મદદ માટે બીજે જવું શરમ ભરેલું લાગતું હતું. શેઠનો વિદ્યાર્થીઓ પ્રત્યે એટલો બધો પ્રેમ હતો કે વિદ્યાર્થીઓ તેમને પિતા તુલ્ય ગણી કોઇ પણ જાતની મદદ અને શેઠ સાહેબની મીલ્કત પણ પોતાનીજ હોય તેમ પોતાનો હક સમજતા હતા. જ્યારે આપણી કોમના બીજા તવંગરો પોતાની મીલ્કત વધારવાના વિચાર વમળમાં તણાતા હતા, જ્યારે આપણા પંડિતો અને ભટ્ટારકો ધર્મની નકામી તકરારોમાં યા તો પોતાની મોજમજામાં પોતાનો વખત વ્યતીત કરતા હતા; ત્યારે શેઠ સાહેબે કોમને આગળ વધારવાને ખાતર, કોમના હીતને ખાતર, કેળ

પરમાર્થને માટે પોતાની મીલ્કતનો એક મહાન ભાગ કોમને માટે ખર્ચી નાંખ્યો. આપણી કોમે કેળવણીના ફળનું આસ્વાદન કર્યાને ઘણો સમય થયો. કેળવણીનાં મીઠાં ફળ ચાખ્યા પછી કોમના યુવાનોને તે વધારે ખાવાની તીવ્ર ઇચ્છા ઉત્પન્ન થયેલી નજરે પડે છે. ઇગ્લીશ કેળવણીનો પવન પુર જોશમાં સમસ્ત દિગંબર કોમપર ફુંકાતો જાય છે. અને દર વર્ષે ઘણા વિદ્યાર્થીઓ કેળવણી લેવાને બહાર આવતા જાય છે. વિદ્યાપિપાસુ વિદ્યાર્થીઓની વધતી જતી સંખ્યાને પહોંચી વળવાને અમદાવાદ બોર્ડિંગ તથા મુંબઇ બોર્ડિંગનું ફંડ પુરતું નથી. બોર્ડિંગનાં ખરચ આવક કરતા વિશેષ થાય છે. ઘણાઓને મદદ સિવાય અભ્યાસ અટકાવવો પડે છે. મદદ નહિ મળવાથી ઘણા નિરાશ થઇ અન્યસ્થળે મદદને માટે પ્રયત્ન કરે છે, અથવાતો રખડીને કરી પોતાનો અમૂલ્ય સમય બગાડી અભ્યાસને હાનિ પહોંચાડે છે. જે દિગંબર કોમમાં કરોડપતી શેઠીઆઓ છે, જે દિગંબર કોમમાં ચાંદી તથા રૂના બજારને કબજે રાખે એવા શેઠીઆઓ છે, જે દિગંબર કોમ ધર્મપરાયણ હોય, શાસ્ત્રને આધારે ચાલી, વિદ્યાદાનને સૌથી મહાન દાન ગણે છે, તેજ દિગંબર કોમનાં ઉછરતા આશાવંત યુવાન વિદ્યાર્થીઓને વિદ્યા સંપાદન કરવામાં આટલી બધી વિટંબણાઓ નડે, તેજ દિગંબર કોમના વિદ્યાર્થીઓને પોતાની કોમમાંથી મદદ નહિ મળવાથી બીજી કોમો પાસેથી મદદની યાચના કરવી પડે, છતાં પણ દિગંબર જૈન શેઠીઆઓ તેને માટે કંઇ ન કરે તે કેટલું શરમાવા જેવું છે? માણેકચંદ શેઠે આપણી કોમની સાચવી રાખેલી આબરૂ તેમના સ્વર્ગમાં સીધાવ્યા પછી આપણા આગેવાનો ગુમાવવા બેઠા છે. ઉપર મેં જે લખ્યું છે તે આગેવાનોની નજર બહાર નથી. તેઓ સઘળું જાણે છે, પણ આળસમાં પોતાનો વખત ગુમાવી ન્યાતને માટે કંઇપણ કરવા તેઓ પ્રયત્ન કરતા નથી. જ્યાંસુધી શેઠસાહેબ જીવતા હતા ત્યાં સુધી એકપણ દિગંબર વિદ્યાર્થીને બીજી કોમના માણસ પાસે મદદ માટે જવું પડતું નહોતું. મુંબઇની જૈન બોર્ડિંગ જ્યારે શ્વેતાંબર અને સ્થાનકવાસી વિદ્યાર્થીઓથી ભરપુર રહેતી ત્યારે શ્વેતાંબર બોર્ડિંગમાં એક પણ દિગંબર વિદ્યાર્થી નહોતો. જ્યારે અનેક શ્વેતાંબર વિદ્યાર્થીઓ આપણી બોર્ડિંગમાંથી મદદ મેળવતા હતા ત્યારે એકપણ દિગંબર વિદ્યાર્થી શ્વેતાંબર શેઠ પાસેથી પાઇ પણ મેળવતો નહોતો. આ ઉપરથી આપણી દિગંબર કોમને કેટલું મગરૂર થવા જેવું હતું. આ ઉપરથી હું એમ નથી કહેતો કે દિગંબરોએ શ્વેતામ્બરો પાસેથી મદદ ન મેળવવી, અથવા દિગંબરોએ શ્વેતાંબરોની બોર્ડિંગમાં ના રહેવું. બન્ને ફીરકાના વિદ્યાર્થીઓ જો ભેગાં રહે તો ઉત્તમ વાત છે. પણ મારે એટલુંજ કહેવાનું છે જ્યાં સુધી બને ત્યાં સુધી એક કોમે પોતાના વિદ્યાર્થીઓને જોઇતી મદદ આપવી જોઇએ. બીજી કોમો નવી નવી બોર્ડિંગો યા સ્કોલરશીપ ફંડો કાઢી જેમ બને તેમ કેળવણી બને તેટલી વધારવા પ્રયત્ન કરી રહી છે, ત્યારે આપણી કોમમાં વિદ્યાર્થીઓની વધતી જતી સંખ્યાને મદદ કરવાનો કોઇપણ પ્રયાસ જોવામાં આવતો નથી. ખરેખર આ બીના શોચનીય છે અને કોમને શરમાવનારી છે. જે ઇંગ્લીશ કેળવણીથી આપણા દેશમાં જાગૃતી આવી છે, અને જે કેળવણીથી હિંદુસ્તાનની જુદી જુદી કોમો એક થતી જાય છે, ત્યારે આપણી કોમવાળાઓ તેને આગળ વધારવામાં, અથવા આગળ વધતાં અટકાવનાર અડચણોને દૂર કરવામાં જરાપણ મદદ નથી કરતા. જો આપણી કોમને ઉન્નત દશામાં આવેલી, સારી સ્થિતીએ પહોંચેલી, અથવા સુધરેલી જોવા ચહાતા હો, તો આપણા યુવાનોને જરૂર કેળવણી આપો. દુનીઆના ઇતિહાસપર નજર ફેરવશો તો માલમ પડશે કે જે જે દેશો અને જે જે કોમો વ્યેપાર, સત્તા, અને સંપાદનના

શીખરપર પહોંચેલી હતી, તે દેશો તથા કોમો બીજા દેશો અથવા કોમો કરતાં કેળવણીમાં અગ્રસ્થાન ભોગવતી હતી. અમેરિકા, જર્મની અને ઈંગ્લાંડની પ્રજામાં કોઇ પણ કેળવણી વિનાનો મનુષ્ય નજરે પડતો નથી. સ્પેન, પોર્ટુગાલ, ઇટલી, ચીન વગેરે રાજ્યો કેળવણીના અભાવે કરીને આગળ વધતા દેશો સાથે રહી શક્યાં નહિ અને પડતીમાં આવી પડયાં. ફક્ત એક જર્મનીનો દાખલો લેશો તો માલમ પડશે કે જર્મની કેવી રીતે આગળ વધ્યું અને જર્મનીની સત્તા આટલી કેમ વધી. આજથી પચાસ વર્ષ પહેલાં જર્મનીની ગણના નાનાં રાજ્યોમાં થતી હતી. ત્યાંની સરકારે એકદમ કેળવણી વધારવા માંડી, અને ત્યાંના લોકો દુનીઆના કોઇપણ દેશ કરતાં કેળવણીમાં આગળ વધ્યા, કેળવણી વધ્યા પછી નવી નવી શોધખોળો ત્યા થવા લાગી. આ શોધખોળોને લઇ ત્યાંનો માલ સોંઘો થવા લાગ્યો, અને દુનીઆના બજારોમા જર્મનીનો સોંઘો માલ વધારે ખપવા લાગ્યો. જેમ જેમ માલ વધારે ખપતો ગયો તેમ તેમ તેમનો વ્હેપાર વધતો ગયો, અને બીજા દેશોના હાથમાંથી ઘણો ખરો વ્હેપાર જર્મનીએ કબજે કર્યો. વ્હેપાર વધવાથી ત્યાં પૈસો પણ વધ્યો અને દેશ એકદમ આબાદ થયો, અને પોતાનો બહોળો વ્હેપાર ચાલુ રહે, તેને માટે દુનીઆના દરેક ભાગમા પોતાના વ્હેપારી મથકો લુચ્ચાઇથી અથવા લડાઇ જાહેર કરવાની ધમકી આપી મેળવ્યાં. ચીનને ધમકી આપી પામીફીક મહાસાગર પર કીઆકચીઆઉ લીધું, ફ્રાન્સ અને ઇંગ્લંડ સાથે ખટપટ કરી પૂર્વ આફ્રિકા અને પશ્ચીમ આફ્રિકામાં કેટલોક મુલક મેળવ્યો. ત્યાર પછી પોતાના દરીઆપારના વ્હેપારને માટે અનેક આગબોટો બાંધી અને તે બધાની સલામતી માટે, વ્હેપારમાંથી પ્રાપ્ત કરેલા પુષ્કળ પૈસામાંથી કરોડો રૂપીઆ ખરચી એક મહાન લડાયક કાફલો તૈયાર કર્યો દેશમા પુષ્કળ પૈસા આવતા હોવાથી દર વર્ષે મરજારી તીજોરી પણ ટેક્સના પૈસાથી ભરચક રહેવા લાગી. આ પૈસાનો ઉપયોગ જર્મનીએ નવી નવી મહાન તોપો તૈયાર કરવામાં, જંગી અભેદ્ય પોલાદી કિલ્લાઓ બનાવવામાં, નવી નવી જાતનાં લડાઇનાં યંત્રો પોતાના લશ્કરમાં દાખલ કરવામાં અને પોતાનું લશ્કર વધારવામાં ખર્ચ્યો. પોતાનો તૈયાર દરિયાઇ કાફલો તથા લાખ્ખો લડવઇયાઓ જોઇ જર્મનીની મહાત્વાકાંક્ષા એકદમ આગળ વધી. જર્મનીની આબાદી તથા સત્તાનું મૂળ કારણ કેળવણી છે. દુનીઆમા એક પણ દેશ જર્મનીની સાથે કેળવણીમાં હરીફાઇ કરી શકે તેવો નથી. આપણા એશિઆમાં વસતા જાપાનનો દાખલો પણ તેવોજ છે. આજથી ચાળીસ વર્ષ ઉપર જાપાનની સ્થિતી આપણા કરતાં પણ વધારે ખરાબ હતી, લશ્કરમા દમ નહોતો, પરદેશો જોડે વ્હેપારજ ન હતો, લોકો અંદર અંદર લડતા હતા, અને દેશ ઘણો ગરીબ હતો.

પરદેશીઓને જાપાનીઓ પોતાના દેશમાં પેસવા દેતા નહોતા, તેથી વ્હેપાર નહોતો અને વ્હેપાર નહોતો એટલે પૈસા નહોતા. આ સ્થિતી હતી તે સમયે અમેરિકાના કેટલાક લોકો ત્યા ગયા. તે લોકોને જાપાનીઓએ દેશમા આવવા દીધા નહિ, તેથી અમેરિકાએ જાપાન ઉપર ચાર પાંચ લડાયક વહાણોની ચઢાઇ મોકલી. જાપાનીઓ આથી બ્હી ગયા, અને અમુક શહેરો પરદેશીઓ માટે ખુલ્લાં મુક્યાં. આ બનાવથી ત્યાંના લોકોને ઘણુંજ શરમ ભરેલું લાગ્યું. તે વખતથીજ જાપાનની ચડતીનો આરંભ થયો, તે દિવસથીજ જાપાનનાં નવા જમાનાનો ઉદય થયો. ત્યાંની સરકારે એકદમ હજારો વિદ્યાર્થીઓને યુરોપ, અમેરિકા આદી પરદેશોમા ઉચ્ચ કેળવણી લેવા મોકલી આપ્યા. ત્યાં તેઓ નવા ઉદ્યોગ હુનરો શીખ્યા, અને પોતાના દેશમા આવી તેવા ઉદ્યોગો ચલાવવા મંડયા. આ રીતે દર વર્ષે હજારો જાપાની યુવાનો પરદેશોમા જવા લાગ્યા,

જાપાનમાં નવી નવી અનેક જાતની ઘણી કોલેજો ઉઘાડવામાં આવી અને કેળવણીનો પ્રચાર એટલો બધો કર્યો કે અત્યારે જાપાનમાં એક પણ માણસ કેળવણી વગરનો છે નહિ. જાપાનીઓએ જોયું કે દેશની ચઢતી યા પડતીનો આધાર દેશના કેળવાયલા પુરૂષો ઉપર છે. આપણા અધમ સ્થિતિમાં આવી પડેલા દેશની અને તેની સાથે આપણી સૌથી પછાત પડેલી કોમની ચઢતી કરવી હોય તો આપણા યુવાનોને બને તેટલી કેળવણી આપો. કેળવણીને માટે જોઇતાં સાધનો પુરા પાડો. ગરીબ વિદ્યાર્થીઓની મદદને માટે નવી નવી બોર્ડિંગો યા સ્કોલરશીપ ફંડો કાઢો. કેળવણી ચઢતીની ખરી ચાવી છે, કેળવણી સુધારા યા આબાદીનું પહેલું પગથીયું છે, કોમને આગળ વધારવાનું યંત્ર છે. ટુંકામાં સઘળી જાતનાં સુખોને ઉત્પન્ન કરનાર કલ્પવૃક્ષ છે. આપણાથી બને તેટલી પૈસાની મદદ આપી કેળવણીને ઉત્તેજન આપો, મદદ વિનાના વિદ્યાર્થીઓને મદદ આપો, કેળવણીનો બહોળો ફેલાવો કરો અને જુઓ કે પૈસા, તન્દુરસ્તી, આબાદી, ચઢતી વીગેરે સર્વે ચીજો આપોઆપ આપણી કોમને મળી રહેશે, આથી બીજી કોમો આપણી કોમને માન આપતાં શીખશે. ગામડામાં વસતા આપણા કોમના માણસોને બીજી કોમોથી દબાવું પડે છે તે બંધ થશે, ગામડાના હલકા પગારદારોથી જે આપણે બીવું પડે છે તે નહિ થાય. પારસી, દક્ષીણી વીગેરે કોમોના કેટલા પુરૂષો સરકારી નોકરીમાં છે, કેટલા આપણા દેશની કાઉન્સીલોમાં છે, કેટલા ડાકટરો છે, કેટલા મ્હોટા વહેપારીઓ છે. આપણી કોમમાં કેટલા છે તેનો વિચાર કરો. રેલ્વેમાં જતાં તમને કેટલી હાડમારીઓ વેઠવી પડે છે, તેનો વિચાર કરો. જ્યાં જોશો ત્યાં પારસી વીગેરે જોવામાં આવે છે, તે લોકોને બીલકુલ વેઠવું પડતું નથી. આ બધું ફકત આપણી કોમમાં ભણેલાઓની સંખ્યા ઓછી છે તેથીજ છે. કદાચ કેટલાકોનો ખ્યાલ એવો છે કે મ્હોટા વ્હેપારીઓ કંઇ ભણેલા નથી હોતા; પણ યાદ રાખજો કે તે વિચાર ભૂલ ખવડાવનાર છે. આપણી કોમ પહેલેથી વ્હેપારી કોમ છે, બાપદાદાનો ધંધો ચાલતો આવેલો હોઇ કેટલાક વ્હેપારીઓ તમારામાં છે, પણ જમાનો જેમ જેમ બદલાતો જાય છે, તેમ તેમ અન્ય કોમો વ્હેપારમાં પ્રવેશ કરવા લાગી છે. વ્હેપારી હરીફાઇ વધતી જાય છે. પરદેશ સાથે આપણો સંબંધ ઘણો ઓછો હતો, હવે તે સંબંધ ઘણો વધી ગયો છે, અને દુનીઆના વ્હેપારનાં સાધનો પણ બહુ બહોળાં થયાં છે.

યુરોપીય વ્હેપારીઓ આપણા દેશમાં આવી આપણો વ્હેપાર પોતાના હાથમાં લેવા લાગ્યા છે, આજકાલ જાપાનીઓ પણ રૂનું બજાર હાથ કરતા જાય છે આવી સ્થિતીમાં, જો આપણા વ્હેપારીઓ અજ્ઞાન રહેશે તો જરૂર જે કંઇ બાકી રહ્યો છે, તે વ્હેપાર પણ ગુમાવશે. જ્યારે હિંદુસ્તાનમાં ચારે બાજુએ કેળવણીની આટલી બધી જરૂર લોકોને જણાવા લાગી છે, જ્યારે તે વધારવાને અનેક પ્રયત્નો થાય છે, ત્યારે **અમદાવાદ બોર્ડિંગમાંથી** વિદ્યાર્થીઓની સંખ્યા કમી કરી અથવા કલબ સીસ્ટમ દાખલ કરી વિદ્યાર્થીઓને મળતી મદદ કમી કરી આવક જાવક સમાન કરવાની વાતો સંભળાય છે. અમદાવાદ બોર્ડિંગની વ્યવસ્થામાં જો ફેરફાર કરવામાં ન આવે, અને હાલમાં ચાલે છે તેમ જો ચાલવા દેવામાં આવે તો આવકના કરતાં જાવક વધારે હોવાથી થોડા વર્ષોમાં બોર્ડિંગનું કાયમ ફંડ ખર્ચાઇ જાય, અને તેને સ્થાપન કરી દાખલો બેસાડનાર નરવીર સ્વર્ગસ્થ શેઠનું નામ નાબુદ થઇ જાય, માટે એ બોર્ડિંગ કાયમ ચાલવા માટે એનું ખર્ચ આવકની પ્રમાણમાંજ રાખવું જોઇએ. આવા સંજોગોમાં આપણા વિદ્યાર્થીઓને પુરતી મદદ મળે તે માટે ફંડ એકઠું કરવાને દરેક જ્ઞાતિના આગેવાન ઉત્સાહી ગૃહ-

સ્થોની એક કમીટી બોર્ડિંગના આવતા મેળાવડા વખતે નીમાવી જોઇએ તે કમીટીએ પોતાના સમયનો અમુક ભોગ આપી ફંડ એકઠું કરવાને બનતો પ્રયાસ કરવો જોઇએ. જો આવી કમીટી નીમવામાં આવે તો હું નથી ધારતો કે જે જૈનો હજારો રૂપીઆ દેહેરા બંધાવવા પાછળ, સંઘ કાઢવા પાછળ, લોકોને જમાડવાને ન્યાતો પાછળ ખર્ચે છે, તે જૈનો વિદ્યાદાનને માટે પોતાનાથી બનતી મદદ નહિ કરે? યાદ રાખવુ જોઇએ કે પ્રત્યેક જમાનામાં પૈસા ખર્ચવાની રીતો બદલાતી જાયછે. એક વખત એવો પણ હતો કે જ્યારે દેહેરા વીગેરે બંધાવ્યા સિવાય પૈસા ખરચવાનો રસ્તો નહોતો. તે સમયે કેળવણી હાલના જેટલી મોંઘી નહોતી. અને હાલમા જેવી કેળવણી આપવામા આવે છે તેવી કેળવણી પણ નહોતી. હાલમા કોલેજનુ ખર્ચ વર્ષે ૪૦૦) રૂપીઆ આવે છે. ગુજરાતના દિગંબરો ઘણાખરા સાધારણ સ્થિતીના માણસો છે. દરેકની સરેરાશ વાર્ષિક આવક ૨૦૦)થી૭૦૦) સુધીની હોય છે. આવી થોડી આવકમાથી જેને કુટુંબનું પોષણ કરવાનુ હોયછે, જેને કુટુંબમા થતા મરણ યા લગ્ન પાછળ ખર્ચ કરવું પડે છે તે ૪૦૦) રૂપીઆ રોકડા કેવી રીતે આપી શકે તેનો મુબઇમા વસતા તવંગરો કે જેને ત્યા ૫૦૦)થી હજાર રૂપીઆનુ માસિક ખર્ચ થાય છે તેમને ખ્યાલ પણ ક્યાથી આવે? સ્વર્ગસ્થ શેઠ ગુજરાતના દિગંબરોની સ્થિતી સમજતા હતા તેથી તેઓ સંપૂર્ણ ઉદારવૃત્તિ થી જોઇએ તેટલી મદદ આપવાને હમેશાં તૈયાર હતા. તેમનાથી બન્યુ તેટલુ તેઓ કરી ગયા છે. પોતાના કુટુંબના ભલા કરતા કોમનુ ભલુ તેમણે વધારે ગણ્યુ છે મરતા મરતા પણ તેઓ અઢીલાખ રૂપીઆની બાદશાહી સખાવત કરતા ગયા છે તે કુટુંબ પામેલા હશે એક પાઇ પણ એવી સમસ્ત દિગંબર કોમને હીનપત લગાડે તેવી છે. સ્વર્ગસ્થ શેઠ સાહેબ જેટલીજ મીલકતવાળા ઘણા શેઠીઆઓ મુંબઇમા વસે છે તેમને ગરીબ લોકોની વીટંબણાનું ભાન નથી. ગરીબો પોતાનુ ગુજરાન વર્ષે દિવસે ૨૦૦) રૂપીઆમા કેવી રીતે કરતા હશે તેની કલ્પના પણ તેઓ કરી શકે તેમ નથી તેમના કાન ઉઘાડવાની આપણા આગેવાનોની ફરજ છે. તેમની પાસે જઇ તેમને બધું અસરકારક રીતે સમજાવવાની જરૂર છે અને હું ખાત્રીથી કહું છુ કે જો એક લાગવગવાળા, વજનદાર ગૃહસ્થોની એકકમીટી તેમની પાસે જઇ ફંડની માગણી કરે તો જરૂર એક સારી રકમ તેઓ મેળવવાને શક્તિમાન થશે. આપણી કોમમાં મદદ મેળવનાર વિદ્યાર્થીઓની સંખ્યા બહુ મોટી નથી. ૫૦ હજાર રૂપીઆનુ ફંડ થોડા વર્ષો માટે પુરતુ થશે.

પ્રેક્ષક.

विषयानुक्रम ।



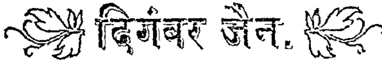
आजकल करते २ अरसा २० सालसे मैं एक ऐसी दवाकी खोजमें था जो जगत्‌को आशीर्वाद रूप हो जाय, एक ही छोटी शीशी अपने जेबमें रखनेसे सारा दवाखाना निवरामा हो जाय यानी अपनी जाकिटकी जेबमें एक छोटीसी शीशीके अंदर सारा दवाखाना आजाय। परदेशमें, रेलमें, जहाजमें, जंगलमें, छोटे मोटे गांवमें जहां जिस वक्त कोई बिमारी उमड़ आई उसी दम उसका इलाज अपने जेबमेंसे निकल पड़े। कई आशा निराशाके झोंके खाते आज २० वर्षके बड़े परिश्रमके बाद मैने यह **"चन्द्रामृत"** पाया है।

इससे बादी, बदहजमी, दस्त, कै, खांसी, दमा, शिरदर्द, जुखाम, आंखका दर्द, दांत व डाढ़का दर्द, व्रण रोग, दाद, खुजली, खाज, हैजा, सूक्ष्म गठिया, वात, लकवा, कमजोरी, अशक्ति, नामर्दी, जहरी डंक, प्लीहा, अण्डवृद्धी, प्रदर रोग, सादी, बवासीर, मुंहके छाले, प्रमेह, रक्त शुद्धि, जलना, ताप (बुखार) न्हारुआ, हिचकी, दुर्गंधी खटमल आदि प्रायः सर्व रोगोंका पूरा २ इलाज है। गृहस्थोंको एक शीशी अवश्य पास रखना चाहिये। कीमत अमीर गरीब सबके लिये थोड़ी रखी है खाने लगानेकी तरकीब दवाके साथ मिलती है। की० फी शीशी ।।।) तीन शीशी २) रु० डा० खर्च अलग।

दवा मंगानेका स्थल:—

चन्द्रसेन जैन वैद्य, चन्द्राश्रम-इटावह. *U. P.*

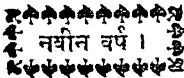
|| श्रीवीतरागाय नमः ||



THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
सबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्ततां, दैगम्बर जैन समाज मात्रम् ॥

वर्ष ११ वाँ. || वीर संवत् २४४४. कार्तिक–मार्गशीर्ष विक्रम सं० १९७४ || अंक १–२.



(१)

नवीन वर्ष, नवीन हर्ष !
नवीन दर्श, लोकमें !

(२)

बीती रात, प्रभु प्रताप.
दिव्य प्रभात, देशमें !

(३)

कनक सूर्य, नवीन नूर;
भातु अपूर्व, देशमें !

(४)

नवीन भाव, अरु प्रभाव,
नवीन चाव, देशमें !

(५)

नवीन तेज, अरु तरङ्ग,
नवीन रंग, देशमें !

(६)

'ब्रिटिश ताज,' धरत आज.
दे "स्वराज्य" देशमें !

(७)

फलित चाव, पुनित भाव,
"नवीन" आये देशमें !

गुजरातीमें अनुवादक–
सनीलालचन्द्र एम, सूरत ।

नूतन वर्षारंभे अभिनंदन.

दोहरा छंद ।

शुभ वर्ष नवु महावीर तणु,
नीवडो जगमत सदाय घणु,
सहु आश फलो नवला वरसे,
परिवार सदैव रहो हरखे. १.
गुन केळवणी दईने हरखे,
पर दुःखर हाथ धरे चहाने;
धन धान्य अने सुख संपत्तिथी,
नवरा करशे हरता मनथी. २.
हिंद व्योम विषे सुख रश्मी वधो,
परिताप व्यथा दरिये डुबजो,
वधो आयु सीमा वध दंश घणी,
कीर्ति प्रसरो सहु विश्व विषे. ३.
भरपुर करो जन मंडलने,
मोतीलाल' रडे प्रभु महावीरने,
वर शाप अने सु सुखकारी,
जन मंडल रहो सुख शांति धरी ४.

❦ ❦ ❦

वड वर्ष नवे सुख रूप धन्यो,
नव वर्षज नेम गाजो गुणमा,
दूरी क्लेश थशो नवरा हरनो,
कर दीन ए प्रभु दक्ष भणी. १
जय ब्रिटिश राज सरोजभजो,
गुरु क्षेत्र विषे जय तो वरजो,
सुख शांति करो अति हर्षने,
कर जोड ए प्रभु दक्ष भणी. २.

मोतीलाल त्रिकमदास मडूवी वाकोल

हिन्दी भाषाका आदर।

दिगम्बर जैनका जन्म दश वर्ष हुए गुजरात प्रान्तके भाइयोंकी हितार्थ गुजराती भाषामें ही हुआ था परंतु शनैः २ इसका क्षेत्र बढ़ता गया इस लिये हमें भी हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपिको स्थान देना पड़ा, वह यहां तक कि अब विशेष करके हिन्दी भाषाके लेख ही प्रकट करने पड़ते हैं। कई वर्षोंसे हिन्दमें एक ही राष्ट्रभाषा होनेके लिये चर्चा चल रही है जिसको अब तो विशेष अनुमोदन मिल रहा है और उसमें सारे हिन्दमें **हिन्दी भाषाको** ही राष्ट्रभाषाका मान देना सभीको स्वीकृत है क्योंकि हिन्दी भाषा एक ऐसी भाषा है कि जिसको हिन्दके सभी प्रान्तोंके लोग तो क्या परन्तु विदेशी भी समझ सकते हैं। हमारे लोकनायक लो० तिलकने भी इसीको स्वीकार किया है और आप भी हिन्दीमें बोलने और लिखने लगे हैं, जब आप मराठी भाषा भाषी हैं। दूसरी ओर महात्मा गांधीजी गुजराती भाषाभाषी होनेपर भी हिन्दीका ही आदर कर रहे हैं तो क्या हम सबका कर्तव्य नहीं है कि हम भी जहांतक होसके हिन्दी भाषाको ही राष्ट्रभाषा बनानेका उद्योग न करें? आशा है कि हमारे सभी पाठकगण भी इसी कार्य प्रणालीसे संतुष्ट होवेंगे और हिन्दीको राष्ट्रभाषा बनानेका पूर्ण उद्योग करते रहेंगे।

इस वर्षके उपहार।

गत वर्षमें उपहारके कई ग्रन्थ देने रह गये है परन्तु इस वर्षमें तो श्री महावीरचरित्र, धर्मचर्चासंग्रह, आदि ९-६ ग्रन्थ अवश्य उपहारमें दिये जावेंगे। अनेक कार्यवशात् इस वार यह विशेषांक प्रकट करनेमें विलम्ब हुआ और फिर वार्षिक मूल्य वसूल करनेके लिये वी० पी० से विशेषांक भेजे जायं तो फिर और भी विलम्ब हो जाय इसलिये इसवार तो सभी पुराने और नये ग्राहकोंको विशेषांक सामान्यरूपसे ही भेजा जाता है. इसलिये सभी पुराने और नवीन ग्राहकोंको आग्रह पूर्वक निवेदन करते हैं कि वे वार्षिक मूल्य १-१२-० शीघ्र ही मनिओर्डर द्वारा भेज देवें। यदि किसीको इस वर्षमें ग्राहक रहना अस्वीकार हो तो वे इस विशेषांकको पढ़कर वापिस भेज या रख करके ही संतुष्ट हो जावें और एक कार्ड द्वारा हमें सूचित कर दें ताकि उनको आगामी अंकसे भेजना बंद किया जाय परंतु सभीको हम चिताये देते हैं कि कागजकी अतीव महँगीके समयमें भी भगवान् **महावीरस्वामीका बृहत् जीवन-चरित्र** (अगले भवों सहित) आदि करीब ढाई या तीन रुपयेके ग्रन्थ उपहारमें मिलेंगे जिससे आपको मासिक जैसे मुफ्तमें ही पड़ जायगा।

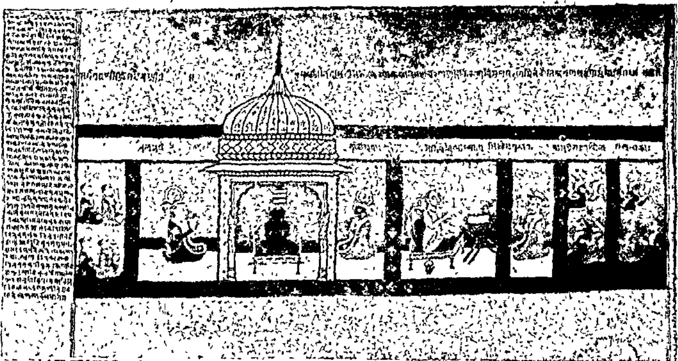
  

जैसे दान और परोपकारके लिये स्वर्गीय दानवीर जै-कुलभूषण सेठ माणिकचन्दजी-से हिन्दुस्थानके जैन परिचित हो गये थे उसी तरह जैन समाजकी सेवाके लिये अपना जीवन अर्पण करनेवाले पं० अर्जुनलाल सेठी बी० ए० जैसे बहुमूल्य व्यक्तिको जयपुर राज्य और फिर ब्रिटिश राज्यने विना न्याय नजरबंद कर रखा है जिससे हिन्दके सारे जैनोंमें तो क्या परन्तु समस्त हिंदुस्तान भरमें सेठीजीका नाम परिचित हो गया है। करीब साढे तीन वर्ष तक तो जयपुर राज्यने सेठीजीको जयपुरमें नजरबंद रखा तब उनको छोडनेके लिये या तो उनका न्याय करनेके लिये हजारों तार किये गये जिसकी कुछ भी सुनाई नहीं हुई तब हमारे वाईसराय महोदयको वडे तार और चिट्ठियें भेजे गई तो बहुत करके उत्तरही नहीं मिला और कहीं मिला तो सिर्फ इतना ही कि हम जयपुर राज्यके कार्यमें हस्तक्षेप नहीं करते आदि। ठीक, यह भी सही, अब आगेका हाल सुनिये। जयपुरमें नजरबन्द करनेसे यह तो साफ २ मालूम होता था कि सेठीजी जयपुर स्टेटके कैदी हैं परन्तु गत २० नवम्बरको एक आश्चर्यकारक घटना यह हुई कि सेठीजीको जयपुर जेलसे मोटरमें बैठाकर जयपुरके रेल्वे स्टेशनपर लाये गये और वहांसे कहीं भेजे गये जिनका पता कुछ दिनों बाद मालूम हुआ कि सेठीजी तो **ब्रिटिश राज्यमें** और दक्षिणमें वेल्लोर (मद्रास) जेलमें भेजे गये हैं। अब जेपुर जेलमें सेठीजीके दर्शन-पूजनके लिये जिनेन्द्र प्रतिमाजीका प्रबंध था परंतु वेल्लोरमें ऐसा प्रबंध न होनेसे जैपुर छोडनेके बाद ही सेठीजीने आहारपान लेना त्याग कर दिया और ८ दिन तक बराबर उपवास किये परंतु फिर शरीरस्थिति पर विचार करके सिर्फ दूध लेना स्वीकार किया परंतु विना अन्नाहार किये दिन व्यतीत करने लगे। इस समाचारसे जैन समाजमें वडी भारी खलबल और अशांति उत्पन्न होगई और सेठीजीकी पत्नी और बच्चे जैपुरमें ही चिल्लाते रहे!!! ऐसे विकट समयमें सरकारसे पत्रव्यवहार करना और वेल्लोर जाकर सेठीजीके आहारका प्रबंध कराना कुछ सहज बात नहीं थी। उधर समय बीतने लगा और सेठीजी भूखे ही अपने दिन काटने लगे और शरीर भी कृष होता चला। ऐसी घोर विपत्तिमें अविश्रांत परिश्रम करनेवाले दो वीर नर बाबू अजितप्रसादजी (लखनऊ) और बाबू भगवानदिनजी निकल आये और आपने खूब आन्दोलन किया यहां तक कि सरकार द्वारा कुछ संतोषजनक उत्तर न मिला तब इस मामलेको कॉंग्रेसमें आ उपस्थित किया तो इस बारकी कोन्ग्रेसकी प्रमुखा **श्रीमती एनी बिसेन्टने** इस मामलेको स्वीकार किया और इस मामलेका प्रस्ताव खुद अपनी तरफसे कॉंग्रेसमें उपस्थित किया और सर्वानुमतिसे पास कराया। इसके बाद श्रीमतीजी वाईसरॉयसे मिली और वेल्लोर जेलमें प्रतिमाजी रखने और सेठीजीकी पत्नी

और बच्चेको मिलने देनेकी स्वीकारता ली तब बाबू भगवानदीनजी जयपुर गये और वहाँसे प्रतिमाजी, पत्नी गुलाबबाई, पुत्र प्रकाशचन्द्र और तीन पुत्रियोंको लेकर वेलोर रवाना हुए और सोलापुर होते हुए वेलोर पहुंचे और वहां दोएक दिन; कोशिश करनी पड़ी तब **सेठीजीका मिलाप** सभीको हुआ, **प्रतीमाजीकी स्थापना** जेलमें की गई, सेठीजीने ९५ दिन बाद ९६ वें दिनको (ता० १५ जनवरीको) प्रतिमाजीका दर्शन–पूजन करके अन्नाहार ग्रहण किया और अपने बच्चोंको जेलमें पढ़ानेकी आज्ञा मिली। अभी श्रीमती गुलाबबाई आदि वहां ही हैं। अब सेठीजीको आहार मिलनेका प्रबंध हो गया इससे अपनेको संतोष कर चुप बैठ रहना ठीक नहीं है। हमें तो अब विशेष आन्दोलन करना चाहिये तब ही सेठीजीका छुटकारा करा सकेंगे। इसलिये दो बातोंकी आवश्यकता है। एक तो यह कि इसके लिये धर्मप्रेमी बाबू अजितप्रसादजीने **अजिताश्रम, लखनऊमें** खास ऑफिस खोल रक्खी है और रात दिन तार चिट्ठि आदिका कार्य होता है जिसमें तथा भ्रमण और गुलाबबाईके निभावके लिये खर्चकी आवश्यकता है इसलिये हरएक स्थानसे कुछ न कुछ चन्दा करके वह मनिओर्डर द्वारा लखनऊ भेजते रहना चाहिये। तथा बार २ सभा करके उसमें सेठीजीके छोड़ देनेका प्रस्ताव करके वाइसरायको भेजते रहना चाहिये। विना घोर आन्दोलन किये हमारी सुनाई कभी भी नहीं होगी। और हमारे न्यायी ब्रिटिश सरकारको हम एकबार और आग्रहपूर्वक निवेदन करते हैं कि आप चाहे सेठीजीका न्याय करके यदि वे दोषी ठहरें तो उचित दंड दीजिए या तो छोड़ दीजिए। जैन एक शांत प्रजा है और उसमें राजद्रोहकी गंध तक नहीं है। इसलिये सेठीजीको छोड़कर जैनसमाजमें फैली हुई अशांतिको मिटाइए। सेठीजीका चित्र हमने इस अंकमें मुखपृष्ठपर इसीलिये प्रकट किया है कि हमारे पाठक सेठीजीको भूल न जायें और इनको छुड़ानेके लिये हरएक प्रयत्न जारी रक्खें।

हमारे स्व० दानवीर सेठ माणिकचन्दजीके तीन भ्राताओंमें सिर्फ

सेठ नवलचंदजी। श्रीमान् सेठ नवलचंदजी मौजूद थे जिनसे भी हमारे पाठक अच्छी तरहसे परिचित है क्योंकि गत दाहोदवाले अधिवेशनमें आप ही सभापति हुए थे और आपका चित्र गत वर्षमें प्रकट किया गया था परंतु अतीव दुःखके साथ प्रकट करना पड़ता है कि आपका स्वर्गवास मगसर सुद १० ता० २४ दिसम्बरको बम्बईमें ६२ वर्षकी आयुमें हो गया जिससे सेठ हीरानंद गुमानजीके चारों पुत्रोंमें अब एक भी मौजूद नहीं रहा है। सेठ नवलचंदजीकी मृत्युसे हमको एक धर्मात्मा महा पुरुषकी कमी हुई है क्योंकि आपकी श्री सम्मेदशिखरजी, मक्सीजी, अंतरीक्षजी, मांगीतुंगीजी आदि



श्रीमद् नेमीचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती चामुंडरायको उपदेश दे रहे हैं।
(एक हस्तलिखित प्राचीन ग्रन्थके एक पृष्ठसे उद्धृत)

जैनविजय प्रेस-सूरत.

तीर्थोंकी रक्षाकी भक्ति सुप्रसिद्ध है और स्वर्गीय सेठ माणिकचन्दजी समाजसेवाके जो कार्य कर गये हैं वे सब आपके संयुक्तपन और सहानुभूतिसे ही हुए हैं। आपके दो पुत्र सेठ ताराचंद और रतनचंद तथा एक पुत्री विद्यमान हैं। हमारी यही भावना है कि आपकी आत्माको शान्ति, और कुटुम्बको धैर्य प्राप्त हो तथा दोनों पुत्र अपने काकाजी और पिताजीके दानका और समाजसेवाका अनुकरण करें तथा आपकी विधवा श्रीमती परसनबाई भी अपना शेष समय दान धर्ममें निगमन कर मनुष्यपर्यायको सफल करें। सेठ नवलचन्दजीके शोक प्रकाशनार्थ बम्बईमें सेठ सुखानन्दजीके सभापतित्वमें दो सभा हुई थीं जिसमें एक स्मारक फंड भी स्थापित होकर ८००) भरे गये हैं जिसमें खास करके हमारे गुजरातके भाइयोंको कुछ न कुछ सहायता भेजना चाहिए जिससे इन सेठजीका भी कुछ स्मारकचिन्ह कायम हो सके। हर्ष है कि आप मृत्यु समय २६०००) तीर्थोंके जीर्णोद्धारके लिये निकाल गये हैं जिसकी व्यवस्थाका हाल मिलनेपर प्रकट किया जायगा।

बाबू माणिकचंदजी वकील-खंडवा। हमारी समाजमेंसे तैयार हुए अनेक युवकोंका वियोग हो रहा है जिसमें खंडवा निवासी बाबू माणिकचंदजी वकील बी०ए० एल०एल० बी०का कलकत्तामें गत ता. १७को अचानक स्वर्गवास अतीव खटकता है। आप अंग्रेजी पढ़ेलिखे, धर्मप्रेमी, उत्साही नेता और लेखक भी थे। आपने अंग्रेजीमें महावीरचरित्र, स्त्री शिक्षा आदि पुस्तकें प्रकट की हैं, भारत जैन महामंडलके मंत्रीका काम भी आपने कई वर्षों तक किया था, और भारत जैन महामंडलके लखनऊ वाले अधिवेशनके सभापति आप ही बनाये गये थे। आप जैसे विद्वान् और उत्साही पुरुषकी क्षति पूरी होना मुश्किल है। आपकी आत्माको हम शान्ति चाहते हैं।

प्रान्तिक सभा। गुजरात प्रान्तमें जागृति फैलानेवाली काम कोई संस्था है तो वह बम्बई दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा ही है। बम्बई प्रान्तिक सभाने आज तक ठीक काम कर दिखाया है जिसका कारण प्रतिवर्ष भिन्न २ स्थानों पर अधिवेशन होनेका है। वर्षमें एकबार अधिवेशन होनेसे ही सभाके कार्यमें चेतनता रहती है। गत वर्ष तो दाहोदके भाइयोंने बम्बई और मालवा दोनों प्रान्तिक सभाओंको अपनाई थीं परंतु इस वर्ष अभी तक दोनोंमेंसे किसीको कहीं भी आमंत्रण नहीं मिला है। सुना है कि आमोद (भडोंच, गुजरात) में प्रतिष्ठा होनेवाली है जिसपर प्रान्तिक सभाको आमन्त्रण मिलनेके प्रयत्न चल रहे हैं। आशा है कि आमोदमें सेठ जेठाभाई गोरधनदास, सेठ

हरजीवन रायचंद शाह, सेठ शंकरलाल तापीदास जैसे प्रान्तिक सभामें उत्साहसे योग देनेवाले मौजूद हैं तो आशा है कि आप लोग इस सभाको अवश्य अपनावेंगे और गुजरात प्रान्तको धर्मकार्योंमें विशेष जागृत करनेका हरएक प्रयत्न करेंगे।

स्वतंत्रता. આ પત્રની શરૂઆત અમદાવાદની શેઠ પ્રેમચંદ મોતીચંદ દિગંબર જૈન બોર્ડિંગ તરફથી થઈ હતી અને ૧૪ વર્ષ થયાં આ બોર્ડિંગ તરફથીજ પ્રકટ થતું હતું, એટલે એના નફા તોટાનો સબંધ બોર્ડિંગ પર હતો, પણ હવે આ બોર્ડિંગનો વહીવટ કરનાર હી. ગુ. જૈન બોર્ડિંગની મેનેજીંગ કમીટિએ આ પત્રનો વહીવટ અમને સોંપી દેવાનો ઠરાવ પસાર કર્યો છે, જેથી આ વરસથી આ અંકથી આ પત્ર સ્વતંત્ર માલિકીથી પ્રકટ થાય છે અને થશે, જેથી હવે **અમદાવાદ બોર્ડિંગ અને રતલામ બોર્ડિંગની વિઝિટર્સ** કમેટિના **મેમ્બરોને** સૂચના કરવામાં આવે છે કે દરેક પોતાની મેમ્બર ફી બોર્ડિંગમાં મોકલવી અને આ વર્ષથી તેમણે આ પત્રનું લવાજમ રૂ० १-१२-० જુદું ભરવું પડશે, જે મનીઓર્ડરથી અમને મોકલી આપવું. કદાચ કોઈ મેમ્બરને 'દિગંબર જૈન' મંગાવવા વિચાર ન હોય તો તેની ખબર અમોને પત્ર દ્વારા આપવી.

आवश्यकता—रा० ब० सेठ हुकमचन्द दि० जैन महाविद्यालयके लिये विशारद खंडके १० विद्यार्थिओंकी और कंचनबाई श्राविकाश्रमके लिये एक सुपरिन्टेन्डेन्ट बाईकी आवश्यकता है। बाई अनुभवी और ३० वर्षसे अधिक उमरकी होनी चाहिये। पत्रव्यवहार—मंत्री हजारीलाल जैन, **जंवरीबाग–इन्दौर।**

नूतन समाचार।

कुशलगढ़में सभा और कन्या विक्रय बंद—बाबू धूलचन्द धनराज लिखते हैं कि यहां गत ता० २ जनवरीको एक आम सभा दरबार सेक्रेटरी मि० शारदाप्रसादजीके सभापतित्वमें हुई थी जिसमें ५०० स्त्री पुरुष एकत्र हुए थे। कुंवरी ला श्रीदेवी (बेंगलोर)ने जैनियोंके सामाजिक सुधार पर मनोहर व्याख्यान दिया। तत्पश्चात् सभापति साहबने व्याख्यान देते हुए कहा कि "अति शोककी बात है कि जो जैन धर्म 'अहिंसा परमोधर्मः' की तालीम दे रहा है, उसके माननेवालोंमें ऐसा क्रूर रिवाज क्यों जारी हो रहा है कि वे अपनी प्यारी पुत्रियोंको धनके लालचसे धर्मके विपरीत चलकर वृद्ध धनाढ्य आदमियोंसे व्याह देते हैं। वे बिचारी अभागनी थोड़े ही समयमें विधवा होकर बरबाद हो जाती हैं और नौजवान कौम इन कुरीतिसे धनहीन होकर व्यभिचारमें फंसी जाती है आदि।" इस व्याख्यानका इतना असर पड़ा कि सब सज्जनोंने प्रतिज्ञा की कि जब तक हम इस कुरीतिको न मिटा लेंगे तब तक यहांसे न हटेंगे। तत्पश्चात् निश्चय हुआ कि आयन्देसे कोई सज्जन अपनी लड़कीके **विवाहमें लड़केवालेसे दापा (रुपये) न लेगा।** फिर ता० १२ को उसी मैदानमें दूसरी सभा वही सेक्रेटरी साहबके सभापतित्वमें हुई जिसमें १००० जन संख्या उपस्थित थी जिसमें

सबने समापति तथा कुंवारीबाईका आभार माना।

लखनऊमें माघ सुद ९ को बड़ी धूमधामसे रथयात्रा होगी।

औरंगबादमें—कनैयालाल गंगवालके सुपुत्रका विवाह घनशामजीकी पुत्रिसे हुआ जिसमें आतिशबाजी, वेश्यानृत्य कुदेवादिका पूजन आदि न होकर राक्षसभुवनके मंदिरमें १२१) और कचनेर पाठशालाको १५) दान दिये तथा ६००) चन्दाके वसूल हुए तथा पाठशाल के लिये १५०) का चन्दा लिखा गया। यहां वैशाखमें वेदी प्रतिष्ठा होनेवाली है तथा कचनेरवाली पाठशाला यहां आकर ठीक चल है। ५० छात्र पढते हैं।

—**इन्दौरकी** हुकमचन्द बोर्डिंगमें पौष शुद ८ मीको सभा होकर बाबू माणिकचन्दजी खंडवा तथा एक छात्र हीरालालके मृत्यु पर शोक प्रकट किया गया।

प्राचीन प्रतिमा—चिरगांव (झांसी) में वेतवा नदीके किनारे पर एक मूर्ति नीकली है। प्रतिबिंब पद्मासन मनोज्ञ और पाषाणके है। आसनमें दो सिंह है, दोनों तरफ इन्द्र चमर लिये खड़े हैं। चिन्हसे महावीर स्वामी मालूम होते हैं। इसके लेआनेका प्रबंध हो रहा है।

दक्षिण म० जैन कोन्फरंसका २० वां अधिवेशन श्री स्तवनिधि क्षेत्रमें सोलापुर निवासी सेठ हीराचंद नेमचंद दोशीके सभापतित्वमें ता० १०-११-१२ फर्वरीको होगा जिसमें जैन महिला परिषद् तथा राजकीय विषयक स्वतंत्र परिषद् भी ता० ११ को होगी।

अम्बालामें—महा सभाका अधिवेशन ता० २३ से २८ फर्वरी तक होगा जिसमें भारत दि० जैन महिला परिषद्का वार्षिक अधिवेशन श्रीमती सुशीलादेवी धर्मपत्नी रा० ब० लाला सुलतानसिंहजीके सभापतित्वमें होगा।

મહુવા (કાઠીયાવાડ) જીવરક્ષક સભાનો ૨૭ મો વાર્ષિકોત્સવ મકરસંક્રાંતિને દિને ભારે ઠાઠથી થયો હતો જે પ્રસંગે સર્વે ૨૦૦૦ ગાયોને શણગારી આખા શહેરમાં તેનું સરઘસ ફેરવી તમને ભાવનગર મહારાજા, દીવાન વગેરે તરફથી મળેલી રકમોમાંથી લાડવા ખવાડવામાં આવ્યા હતા તથા બીજી ૬००) ની મદદથી સર્વે ગાયોને ખડ અને કપાસ ખવાડાયું હતું. વળી એક ખાસ સભા મહેતા ગણેશ વનમાળીના પ્રમુખપણા નીચે થઇ હતી, જેમાં રિપોર્ટ વગેરે વંચાઇ આ સંસ્થાના સ્થાપક ઓધવજી રામજી સંઘવીના આત્મભોગનું વિવેચન થયું હતું.

નૃસિંહપુરા જાતિના આશરે ૨० થી ३० ના ઉંમરના, એક મહેનતુ, પ્રમાણિક અને ચાલાક આદમીની જરૂર છે. રહેવા તથા ભોજનની સગવડ મળશે. પગાર વાર્ષિક ५०) થી १००) સુધી તરતજ લખો—સેવા અર્થસ જૈની-સુ.ન.

- **शिखरजी केस**—पूनावाले मुकद्दमा नं० २८८ की जो अपील हाईकोर्टमें दायर है उसमें अपनी तरफसे दरख्वास्त दी गई थी कि श्वे० लोग जल मंदिरके आसपास परकोटा खींचकर हमारी रास्ता रोक रहे हैं तथा

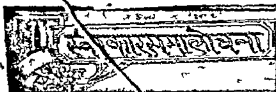
धर्मशालामें ठहरने और टोंकोंमें पूजा प्रक्षाल करनेमें बाधा करते हैं अतः उन्हें रोक दिया जाय, तदनुसार हाईकोर्टसे श्वेतांबरी को इंजक्सन जारी हो गया है। और पहाड़के पट्टे संबंधी मुकद्दमा नं० २७९ की अपील पटना हाईकोर्टमें दायर हो चुकी है उसमें अपनी तरफसे दरख्वास्त दी गई थी कि सरकार श्वेताम्बरियोंको पहाड़ बेंच देना चाहती है लेकिन जब तक पट्टेवाले मामलेका अंतिम निपटारा न होवे तब तक पहाड़का बंदोबस्त किसीके साथ न किया जाय। अपनी यह दरख्वास्त भी मंजूर होकर इसका हुक्म राजा पालगंज पर जारी हो गया है।

मुफ्त—केवल ≈) खर्च मात्र भेजनेवालेको "बलवर्द्धक वटी" जो कि वैद्यक शास्त्रानुसार उमदा वनज जड़ी बूटियोंसे बनाई है बीस दिवसकी खुराक मुफ्तमें मिलती है। पता—सत्येन्दु गुप्त, चंदावाडी—सूरत।

मोरेनामें मुनिजी—मुनिश्री अनंतकीर्तिजी महाराज बम्बई, आगरा, शिखरजी आदि होकर आजकल मोरेना (ग्वालियर)में विराज रहे हैं और कई दिनों तक यहां ही ठहर कर विद्याध्ययन करेंगे।

ઉપદેશનો પ્રભાવ—કાબુસા મિત્રમંડળી જણાવે છે કે નવા વર્ષને દિને અત્રેના ભાઇઓ સાયખા દર્શન માટે ગયા હતા ત્યાં સભા કરી ઉપદેશ આપવાથી ગામના પાટીદાર તથા બારૈયા ભાઇઓએ કહ્યું કે તમે જૈનો જો ભાદરવા સુદ ૧૪ ને દિને વ્યાપાર ધંધો બંધ કરીને એક દિવસની પેદાશ ધર્માદા કરો તો અમો આખું ગામ પ્રતિજ્ઞા લઇએ કે તે દિવસે કોઇએ બળદની ખાંધે ધુંસરી મુકવી નહિ, તે દિવસે કામ ધંધો કરવો નહિ, દારૂ માંસ આદિ પદાર્થોનું સેવન કરવું નહિ તથા હિંસા કરવી નહિ. આ ઉપર ચર્ચા થતાં આખરે જૈનોએ ઉચક રકમ - દરેક દુકાન દીઠ ધર્માદા કાઢવાનું સ્વીકાર્યું જેથી બધા લોકો એ દિવસે ખાંત્રીથી પશુ પીડાનાં કામો છોડી દેવા બંધાયા હતા.

લગ્નમાં દાન—ફલટણમાં મુંબઇવાળા સ્વ૦ માણેકચંદ લાભચંદ ચોકશીના પુત્ર હીરાચંદના લગ્ન માગશર સુદ ૯ને દિને થયાં હતાં, જેની ખુશાલીમાં શ્રીમતી માણેકબાઇએ ૨૫) બ્રહ્મચર્યાશ્રમ, ૨૫) હડર-પાઠશાળા, ૨૦) મુંબાઇ શ્રાવિકાશ્રમ, ૧૫) કુંથલગિરી આશ્રમ, ૧૦) મુંબાઇ પાઠશાળા, ૧૦) ઓરસદ શ્રાવિકાશ્રમ, ૧૦) બ્હેરાં મુંગા સ્કૂલ, ૧૦) સત્યાગ્રહાશ્રમ અમદાવાદ તથા પરચુરણ મળી ૧૫૮)નું દાન મોકલવામાં આવ્યું હતું.



'मुनि'का विशेषांक श्री महावीर मुनिमंडलके मुख मासिकपत्रका सचित्र खास अंक। वर्ष २. अंक १. प्रकाशक कालूरामजी शर्मा, बोदवड (पूर्व खानदेश)। उत्तम कागज और छपाईवाले इस १७१ पृष्ठके खास अंकमें सेठ राजमलजी जामनेर, स्व. दा. माणिकचन्दजी, पं. लालन, महात्मा गांधी, सेठीजी, संसारवृक्ष, कल्पतरुसिंचन, व डीलाल मो. शाह अनेक श्रावक और मिथ्यात्वी देव, बाललग्न वृद्ध विवाहके दुष्परिणामोंके हृदयद्रावक दृश्य, सट्टेबाजकी दुर्दशा आदि १८ चित्र हैं और कुल ३७ लेख और कविताएं हैं जिसमें भेदभाव नहीं है, हमारी वर्तमान स्थिति, पापका प्रकाश, हमारे समाजकी उन्नति कैसे हो? १द्वी पदार्थोंका उपयोग, मुनि सुधारकी आवश्यकता, आजकलकी उपदेशपद्धति, साधु और मुनियोंका कर्तव्य, स्थानकवासी मुनियोंको खुल्ला पत्र, साधुता, साधु-मुनियोंका महत्व, क्या कुछ और क्सर है आदि लेख पढ़ने योग्य हैं। कागजकी अतीव महँगीके समयमें भी इतना सुंदर और बड़ा अंक निकलना महावीर मुनिमंडलका ही साहस है। इसके संचालक स्थानकवासी बंधु होनेपर भी इसमें सभी लेख तीनों संप्रदायके पढ़ने योग्य रहते हैं। यह तो विशेषांक है परन्तु सामान्य अंक भी ३२ पृष्ठोंका नियमित प्रकट होता है। वार्षिक मूल्य २) और इस अंकका मूल्य ॥=) मिलनेका पता—मैनेजर, मुनि, बोदवड़ (पूर्व खानदेश)

जैन संसार—संपादक प्रेम और उप संपादक नेमिचंद्र कोठारी। वर्ष २. अंक १२, वार्षिक मूल्य २≡) यह संयुक्त जैन श्वेतांबर वराड प्रान्तिक कान्फरन्सका मुखपत्र है। इस १६० पृष्ठोंके अंकमें साधुओं, श्रीमती मगनबाई, सेठीजी आदिके १२ चित्र भी हैं। मुखपृष्ठका चित्र आकर्षणीय है जिसमें जैनसमाजरूपी नौकामें दि. श्वे. और स्थानकवासी तीनों संप्रदायके साधु और श्रावकको बैठाये हैं और यह दिखाया है कि तीनों संयुक्त होकर इस नौकाको चलाते रहेंगे तो नौका संसाररूपी समुद्रसे पार हो जायगी और यदि एक भी भिन्न होगा तो नौका डूब जायगी। लेखोंमें मानव धर्म, रंगे गीदड़ोंसे बचो, प्रेमसे जाति उद्धार (कविता), विचार और उनकी फिलासफी, भ माशा है आदि पढ़ने योग्य हैं। वार्षिक मूल्य २≡) और इस अंकका ।॥)

विश्वविद्या प्रचारक—लखनऊसे प्रकाशित सचित्र मासिक पत्र। वर्ष १० अं २ और वार्षिक मूल्य १।) लेख अच्छे रहते हैं। इस अंकमें मालवीयजीका सचित्र जीवनचरित्र पढ़ने योग्य है। मुखपृष्ठ पर हिन्द देवीका आकर्षणीय चित्र रहता है।

चंद्रप्रभा—सनावद (नीमार) से प्रकाशित नवीन सचित्र मासिक पत्र. वर्ष १. अंक १. पृ. ३३. वार्षिक मूल्य २॥) इस अंकमें, भरतपुरके

प्रतापी राजा सूरजमल जाटका सचित्र परिचय पढ़ने योग्य है। साईजके प्रमाणमें मूल्य ज्यादह दीखता है।

जयाजीप्रताप—श्रीमान् ग्वालियर नरेशके जन्म दिनका यह विशेषांक बड़े ५० पृष्ठोंका और प्राचीन कारीगिरीके २० चित्रों सहित है जिनमें चंदेरीके जैन मन्दिरका चित्र भी है। कुल ४४ लेखोंमें ६ इंग्लिश हैं। हिन्दी लेखोंमें कई लेख महत्वके और पढ़ने योग्य हैं। यह साप्ताहिक पत्र राज्यकी ओरसे ही प्रकाशित होता है और इसने अपनी और ग्वालियर राज्यकी प्रजाकी बहुत उन्नति की है और कर रहा है। वार्षिक मूल्य ३) है। पता-मैनेजर, जयाजी प्रताप, लश्कर (ग्वा.)

सुभाषित रत्नसंदोह—श्रीमद् अमितगति आचार्य कृत इस महान् ग्रन्थका हिन्दी अनुवाद पं. श्रीलाल जैन काव्यतीर्थने किया है और जैन साहित्योद्धारक पं. पन्नालालजी बाकलीवालने भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशिनी संस्था (विश्वकोशलेन, बाग बाजार, कलकत्ता) द्वारा अभी ही ग्रन्थाकारमें प्रकाशित किया है। छपाई सफाई और कागज बहुत बढ़िया है। प्रथम पृष्ठपर संस्थाके खास सहायक सेठ हरिभाई देवकरण (सोलापुर) के तीन पृष्ठों सेठ वालचंदभाई आदिके चित्र भी हैं। इस ग्रन्थके २८२ पृष्ठोंमें ९२२ श्लोक अर्थ सहित हैं जिसकी विषय सूची पढ़नेसे ही ग्रन्थ कितने महत्वका है यह मालूम होता है। कुल ३३ विषयोंमें मुख्य २ निम्न लिखित हैं—संसारिक विषय निराकरण, कोप दूर करनेका उपाय, लोभ दूर करनेका उपाय, स्त्रीके गुणदोषोंका विचार, सम्यग्दर्शन—ज्ञान—चारित्रका निरूपण, जन्म—जरा—मृत्यु निरूपण, अनित्यताका वर्णन, जीव संबोधन, दुर्जन—सज्जन निरूपण, दान निरूपण, मद्य—मांस—मधु—वेश्यासंग—द्यूत निषेध, गुरु विवेचन, धर्म निरूपण, शोक निराकरण निरूपण, शौच और श्रावक धर्म निरूपण, तप निरूपण आदि। इसकी भाषा भी इतनी सरल है कि सामान्य पढ़ा लिखा मनुष्य भी इस ग्रन्थका स्वाध्याय करके लाभ उठा सकता है। अनेक विषयोंपर व्याख्यान देनेके प्रमाणोंमें इसके बहुतसे श्लोक कंठाग्र करने योग्य है। मूल संस्कृतमें तो इस ग्रन्थको निर्णयसागर प्रेस (बम्बई)ने कई वर्षोंसे प्रकट किया है और इसका संस्कृत भाषियोंमें बहुत आदर है परंतु इसका हिन्दी अनुवाद प्रकट करके पं. पन्नालालजीने जैन समाजका बहुत ही उपकार किया है। इतने बड़े ग्रन्थका २॥) मूल्य अल्प ही है। हरएक जैनीका कर्तव्य है कि इस ग्रन्थको मंगाकर अवश्य २ स्वाध्याय करें।

मोहिनी—लेखक, मैयालाल जैन। प्रकाशक—प्रेमपुजारी (कुमार देवेन्द्रप्रसाद), प्रेम मंदिर, आरा। पृ. ८३. छपाई सफाई उत्तम और मू. ॥) हमने चार वर्ष हुए 'रूपसुंदरी' नामक पुस्तक गुजराती भाषामें प्रकट करके पाठकोंको उपहार स्वरूप दी थी उसका यह हिन्दी अनुवाद है। इसका मुख्य सिद्धान्त स्त्रियोंमें शील रक्षाका उपदेश है। शीलके प्रभावसे स्त्री अपनी आत्मिक शक्तिमें कितनी

उन्नति कर सकती है, संसारमें वह कितनी उज्ज्वल चरित्रा हो सकती है आदि बातोंका चित्र इसमें भलीभांति दर्शाया है। भाषा भी सरल है। इस उपन्यासको मंगाकर अवश्य लाभ उठाना चाहिये।

The Householder's Dharma. (**श्री रत्नकरंड श्रावकाचार**) श्री समन्तभद्राचार्य कृत सुप्रसिद्ध रत्नकरंड श्रावकाचारका यह अंग्रेजी (English) अनुवाद बाबू चम्पतराय जैन बेरिस्टर (हरदोई)ने किया है और **कुमार देवेन्द्रप्रसाद** जैनने ही सेन्ट्रल जैन पब्लिशिंग हाउस—**आरा** द्वारा अभी ही प्रकाशित किया है। छपाई सफाई उत्तम, पृ. १२५ और मूल्य ॥।) इसमें ४७ पृष्ठोंमें तो अनुवादक महोदयने इस ग्रन्थपर समालोचना लिखी है जो अतीव महत्वकी है। इस शास्त्रीय ग्रन्थका अंग्रेजी अनुवाद करनेके लिये जैन समाज, बेरिस्टर साहबकी आभारी है। अंग्रेजी पढ़े लिखे भाइयोंका फर्ज है कि इस पुस्तकको मंगाकर अवश्य पढ़ें।

सद्विचार पुस्तकमाला—बाबू दयाचंद्र गोयलीय जैन बी. ए. एक हिन्दी साहित्य भंडार स्थापन करके उसके द्वारा इस पुस्तकमालाको प्रकट कर रहे हैं जिसके तीन ग्रन्थ (१) जैसे चाहो वैसे बन जाओ (पृ. ६०); (२) सुख और सफलताके उपाय (पृ. ३०), (३) सुखकी प्राप्तिका मार्ग (पृ. ७१) हमारे सामने हैं। यह तीनों पुस्तक प्रसिद्ध अंग्रेजी लेखक जेम्स एलनकी पुस्तकोंका हिन्दी अनुवाद है। मूल्य क्रमशः ≡॥), ≈॥), और ।≈ है। इसके पढ़नेसे बहुत कुछ शिक्षा मिल सकती है। अवश्य मंगाना चाहिये। पता-हिन्दी साहित्य भंडार—लखनऊ।

मोक्षमार्गकी सच्ची कहानियाँ—प्रकाशक, बुद्धूलाल श्रावक, पाठक, जैन शाला दमोह (पृ. ८० और मूल्य ।≈) इसमें सम्यग्दर्शनके आठ अंगोंकी आठ कथा, पांच अणुव्रत और पांच पापोंकी १० कथाएं, चार दानकी चार कथा और पूजाके फलकी कथा आदि २३ कहानियां (कथाओं)का संग्रह सरल भाषामें संक्षेप रूपसे है। स्वाध्याय करने और मनन करनेयोग्य है।

Love-Buds (**प्रेम-कली**,—प्रकाशक-प्रेम पुजारी, प्रेम मंदिर—आरा। इसमें कुमार देवेंद्रप्रसादजीने अनेक कवियोंकी प्रेम विषयदर्शक कविताओंको और कई अंग्रेजी लेखकोंकी प्रेमदर्शक अंग्रेजी कविताओंको हिन्दी अनुवाद सहित प्रकट की हैं। पुस्तककी सजावट अवश्य देखने योग्य है। कई चित्र भी हैं। सारी पुस्तक बढ़िया लाल स्याहीसे छपी हुई है। पृ. १५० और मूल्य १) हरएक हिन्दी साहित्यप्रेमीको ऐसी पुस्तकका अवश्य संग्रह करना चाहिए।

हितैषी गायन—प्रकाशक, पं० मनीराम नन्नूमल जैन, धरमपुरा, देहली। बालक भजन संग्रहका यह चौथा भाग जैनमित्रमंडल देहलीने ट्रेक्ट नं० ६में प्रकट किया है। मूल्य -)

बारहमासा तथा स्तवन संग्रह—प्रकाशक आत्मानंद जैन सभा, अंबाला शहर। पृ. ६३ और मूल्य -) सिर्फ।

देहली शास्त्रार्थ–देहलीमें गत जुलाई समें ६ दिन तक जैनी और आर्यसमाजके बीचमें र कर्तृत्व और तीर्थंकर-सर्वज्ञत्व खंडनमंडन पदक शास्त्रार्थ हुआ था जिसमें जैनमित्र डलीकी तरफसे न्यायालंकार वादीभकेशरी ० मक्खनलालजी शास्त्री (प्र. अध्यापक श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम) और आर्यसमाजकी तरफसे विताकिक पं. नरसिंहदेवजी शास्त्री थे। इस न्थमें इस शास्त्रार्थका विवरण है जिसको कट करके **जैनमित्र मंडली, धरम-रा, देहलीने** जैन समाजका बहुत कुछ उपकार किया है। इसको पढनेसे साफ २ ालूम होता है कि जैन समाजकी युक्तियां कितनी प्रबल थीं और आर्यसमाजके पंडितकी युक्तियां कितनी पोच थीं। इस शास्त्रार्थसे देहली भरमें क्या सारे पंजाब प्रान्तमें जैन र्मका अच्छा महत्व प्रकट हुआ है। पृ. ११२ और मूल्य लागत मात्र, चार आना ही है। सको मंगा लेना चाहिए।

श्रीधर्म-सार—प्रकाशक—बाबू पुरनचन्द्र गोलालीय जैन-सिंगोडी (छिंदवाड़ा) पृ. ८२ और मू. ।।) यह **तारनपंथी** समाजकी पुस्तक है और इसमें पं. शिरोमणिदास कृत कविताओंमें धर्मका उपदेश है। भाषा पुरानी है।

जैनशिक्षण पाठमाला—प्रकाशक-कुंवर मोतीलाल रांका-ब्यावर (राजपूतान) पृ. ६० और मू. =) और पाठशालाओंको ८) सैकड़ा। इसमें २५ पाठोंमें विद्यार्थियोंको पढ़ाने योग्य धर्म, नीति, और व्यवहारिक विषयोंका उपदेश है। टाईप भी बड़े हैं। स्था० जैन पाठशालाओंमें प्रवेश करने योग्य है।

वर्तमान जैन तीर्थंकर दर्पण चार्ट नं. १-प्रकाशक मनीराम नन्नूमलजी, धर्मपुरा, देहली, मूल्य –) इसमें वर्तमान २४ तीर्थंकरोंके माता, पिता, वर्ण, चिन्ह, कायकी ऊंचाई, आयु, गणधर, एक दूसरे तीर्थंकरका अंतर समय, दिक्षा वृक्ष, पूर्व भव, कल्याणकोंकी तिथि, और निर्वाण स्थानका कोष्टक है। मंगाकर संग्रह करने योग्य है।

आत्मावबोध-प्रकाशक—भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशिनी संस्था, विश्वकोश लेन, बाग बाजार-कलकत्ता। ग्रन्थाकार, छपाई सफाई सुन्दर पृ. १६० और मूल्य ।।–) तेरहवीं शताब्दीमें श्रीकुमार नामक कवि होगये हैं जिन्होंने इस ग्रन्थको १४९ श्लोकोंका बनवाया था जिसका अनुवाद पं. गजाधरलाल न्यायतीर्थसे कराकर पं. पन्नालाल बाकलीवालने प्रकाशित किया है। साथमें अध्यात्मप्रेमी स्वर्गीय स्वरित श्री वीरसेन स्वामी भट्टारकका सुन्दर चित्र भी है। इसमें संक्षेपमें आत्माका स्वरूप बताकर अनेक प्रकारका उपदेश सरल भाषामें दिया गया है। इसका स्वाध्याय करनेसे चित्त शांत होकर हृदय निर्मल होता है और सुमार्गपर चलनेका उपदेश मिल सकता है।

जैन समाज सेवक मंडलकी ट्रेक्ट-इन्दौरमें इस नामका एक मंडल स्थापित हुआ है जिसका उद्देश विशेष करके इन्दौरमें कई वर्षोंसे पड़ी हुई फूटको मिटानेका प्रयत्न करना

है। इसने तीन ट्रेक्ट प्रकट करके उनका मुफ्त प्रचार किया है जिनके नाम हैं-(१) जैनोंका धर्म, (२) इन्दौरके जैनियों ! अबके पर्युषण पर्वमें क्या करना होगा ?, (३) इन्दौरका जैन समाज और फूटका राज्य। इसमें खूब ही तेज भाषामें फूटको मिटानेका उपदेश दिया है।

षट्संघ-सम्मेलन-प्रकाशक जीर्णोद्धारक जैन तार-मंडल-सिंगोडी (छिन्दवाडा) मूल्य -) यह भी तारनपंथी समाजका एक ट्रेक्ट है और इसमें तारनसमाजके ६ संघका वर्णन और कुछ उपदेश भी है।

सप्तभंगी नय-यह आत्मानंद जैन ट्रेक्ट सोसायटी अंबाला शहरकी २२वीं ट्रेक्ट है। पृ. २२ और मू -) इसके लेखक हैं लाला कन्नोमल एम. ए.। इसमें सप्तभंगी नयका स्वरूप संक्षेपमें सरल रूपसे दिया गया है।

पंच परमेष्ठीके १४३ मूलगुण-(चार्ट नं० ९) यह भी एक वंशरूपी नकशा है जिसमें पांचो परमेष्ठीके १४३ मूल गुण वंशावलीके रूपमें दर्शाया है। संग्रह करने योग्य है। मूल्य -) मिलनेका पता-कुमार देवेन्द्रप्रसाद जैन-आरा।

कृपण-प्रकाशक-बी० एफ० सी० डी जैन, शिकोहाबाद यु० पी०। यह एक प्रहसन है। पृ. संख्या सिर्फ १२ होनेपर भी मूल्य =) अधिक है।

सच्चा विश्वास-प्रकाशक, कुमार देवेन्द्रप्रसाद जैन, प्रेम मन्दिर आरा। इसमें फुटकल उपदेश अच्छा है। मुखपृष्ठ पर महात्मा गांधीका चित्र है। छपाई सफाई सुन्दर, पृ ४२ और मूल्य =)

बालिका विनय-सम्पादिका एक जैन महिला और प्रकाशक उपरोक्त महाशय ही। पृ. ४४, उत्तम छपाई और मूल्य =) इसमें बालिकाओंके लिये अच्छा उपदेश है। कन्या पाठशालाओंमें प्रवेश करने और बांटने योग्य है।

जैनसिद्धांत विद्यालयकी रिपोर्ट-स्वा. पं. गोपालदासजी बरैया द्वारा स्थापित मोरेनाकी संस्थाकी यह सातवीं वार्षिक रिपोर्ट है। इसमें संस्कृत विभागमें २७ और हिन्दी विभागमें ४५ विद्यार्थी हैं। इसमेंसे आजतक कई पंडित तैयार हुए हैं। अंग्रेजी भी पढ़ाई जाती है। बोर्डिंगका भी प्रबंध है। आजकल प. धन्नालालजी अधिष्ठाता और मंत्री पं. खूबचंद्रजी शास्त्री हैं। इसके लिये एक लाख रुपयेके फंडकी आवश्यकता है जिसमें करीब ६०-७० हजार भरे गये हैं; श्रीमानोंका फर्ज है कि शेष रुपयेकी शीघ्र पूर्ति कर देवें और विद्यालयके साथ स्वर्गीय प. गोपालदासजी बरेयाका नाम जोडकर पंडितजीकी कीर्ति अमर करें। इस रिपोर्टवाले वर्षमें कुल ७७६४)। खर्च हुआ है। बड़ा स्थायी फंड न होनेसे श्रीमानोंको मासिक सहायता पहुंचाते रहना चाहिये और छोटे बडे प्रसंगोंपर फुटकल सहायता भी भेजनी चाहिए।

सप्तम हिन्दी साहित्य सम्मेलन कार्य विवरण दूसरा भाग-इसमें सम्मेलनमें आये हुए लेखोंका संग्रह है। अनेक लेख पढ़ने योग्य है। साइज बड़ी पृ २१५ और मूल्य

सिर्फ ।।≈) मिलनेका पता—हिं. सा. स्वागत-कारिणी सभा कार्यालय—जबलपुर।

सौनागिर—सिद्धक्षेत्रकी प्र. सभाका प्रथम वार्षिक विवरण। प्रकाशक—बाबू गोपीलाल गोवा—लश्कर।

दि. जैन प्रान्तिकसभा बम्बईकी १६वीं वार्षिक रिपोर्ट। प्रकाशक—बाबू माणिकचन्द बैनाडा महामंत्री, हीराबाग—बम्बई।

भारत० दि०जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का १२वां वार्षिक विवरण—वीर सं. २४४०का, प्रकाशक लाला भागमल प्रभुदयाल महामंत्री, हीराबाग, बम्बई। बहुत शिकायत होनेपर यह रिपोर्ट बहुत देरसे प्रकट हुई है। इसमें सब तीर्थोंका हिसाब और शिखरजी आदिके मुकदमेका हिसाब भी है। ८८ पृष्ठकी यह रिपोर्ट विना मूल्य मिलती है।

दुधगांव शिक्षण प्रचारक संस्थाका छठा वा० रिपोर्ट—प्रकाशक नाना रावजी येडेकर—दुधगांव (सतारा)

जैन अंग्लो वर्नाक्युलर स्कूल बांदाकी ४थी रिपोर्ट—प्रकाशक नायक राजाराम मंत्री-बांदा।

जैन पाठशाला मेरठका—चतुर्थ रिपोर्ट—प्रकाशक रघुनाथप्रसाद गोयल, मेरठ।

दिगम्बर जैन श्राविकाश्रम मुरादाबादकी १९१६-१७की रिपोर्ट—प्रकाशिका संचालिका गंगादेवी मुरादाबाद। यह आश्रम भी ठीक कार्य कर रहा है। सबको सहायता देते रहना चाहिए।

વ્રતરસ્યા આરાધને આસૂન નુકસાન—લેખક અને પ્રકાશક—શેઠ હીરાચંદ નેમચંદ દોશી—સોલાપુર. પૃ. ૨૪ અને કિ. માત્ર એ આનો. આ મરાઠી પુસ્તકમાં વ્રતશૈની આરાધના કરવાથી થતાં નુકશાનોનું વર્ણન દાખલા દલીલો સાથે છે. મરાઠી ભાષા જાણનારે અવશ્ય મંગાવી લેવું જોઇએ.

ભટ્ટારક ચર્ચા—લેખક અને પ્રકાશક—શેઠ હીરાચંદ નેમચંદ દોશી—સોલાપુર. પૃ. ૩૨ અને કિ. બે આના. મરાઠી ભાષાના આ પુસ્તકમાં ભટ્ટારક શબ્દની વ્યાખ્યા, અને ભટ્ટારક કોણ હોઇ શકે અને ભટ્ટારકમાં કેટલી યોગ્યતા હોવી જોઇએ, વગેરે દાખલા દલીલો સાથે બતાવી હાલના નામના ભટ્ટારકોના શિથિલાચારનું વર્ણન કરી હવે પછી ભટ્ટારક નામ બદલી ગ્રહસ્થાચાર્ય નામ સ્થાપન કરવા માટે સંમતિ દર્શાવેલી છે જે સમયાનુસાર યોગ્યજ છે.

મસ્તવચનામૃત અને સ્વાનુભવ પ્રકાશ—પ્રકાશક—હરીદાસ જગજીવનદાસ, લીમડાપોળ. વડોદરા. આ બંને ટ્રેક્ટો તદન મફત મળે છે.

નીતિની શિખામણ—પ્રકાશક ચુનીલાલ બાપુજી મોદી, ખપાટિયા ચકલા, સુરત. આ પુસ્તક ગુજરાતી સ્કુલોમાં ચલાવવા લાયક છે તથા એનો હિન્દી અનુવાદ પણ થવો લાયક છે. વિષય તો નામથીજ પ્રકટ થાય છે. કિ. એક આનો.

અનાથ વિદ્યાર્થી ગૃહ—પુનાનો આઠમો રિપોર્ટ—આ અનાથાશ્રમ ઉત્તમ કાર્ય કરી રહેલું છે. એની કાર્યપ્રણાલી અનુકરણ કરવા યોગ્ય છે.

ધી ઇલેક્ટ્રો-મેટલ રીફાઇનીંગ કંપની લીમીટેડ—ના ઉદ્દેશ અને નિયમો—આ કંપનીની સ્થાપના અમદાવાદમાં થઇ છે, જેણે પાંચ લાખની થાપણ કરવા ૨૫) અને ૧૦)ના એમ બે જાતના શેરો કાઢ્યા છે. એનો ઉદ્દેશ અમદાવાદ કે મુંબાઇમાં તાંબા, પીતલ, લોખંડ, જર્મન સીલ્વર, એલ્યુમિનમ વગેરે ધાતુની પરાઆમની,

શકાન સામગ્રી-ચીજો-તથા અનેક જાતના ખારો વગેરે બનાવવ તથા વેચવાનો છે. આ ઉદ્દેશ અત્યુત્તમ છે. અને એ જો મોટા પાયાપર સ્થપાય તો ઘણોજ મોટો લાભ મેળવવા ઉપરાંત સ્વદેશી વસ્તુને ઉત્તેજન મળી દેશનો પૈસો વિદેશમાં નહીં ઘસડાઇ જતાં દેશમાંજ રહે. ગમે તે રીતે ભાગીદારને સેંકડે સાત ટકાનું વ્યાજ આપવા કંપની બંધાય છે. શેર લેવાની ઇચ્છા રાખનારે વધુ માહિતી માટે નીચેને સ્થળે પત્ર લખી નિયમો વગેરે અવશ્ય મંગાવવાં—ધી ઇલેકટ્રો મેટલ રીફાઇનીંગ કંપની-રીચીરોડ-અમદાવાદ.

શેઠ હીરાચંદ ગુમાનજીની સંસ્થાઓનો રીપોર્ટ—શ્રીમાન સ્વર્ગીય દાનવીર જૈનકુલભૂષણ શેઠ માણેકચંદજી અનેક સંસ્થાઓ સ્થાપી ગયા છે તે પૈકી જે જે સંસ્થાઓ ખાસ પોતાની મદદથી ચાલી રહેલી છે અને જેનો વહીવટ કરવા માટે શેઠ હીરાચંદ ગુમાનજી બોર્ડિંગની ટ્રસ્ટ કમીટિને નીમેલી છે જે બધો વહીવટ કરે છે અને બધી સંસ્થાઓનો ભેગો રિપોર્ટ બહાર પાડે છે તેનોજ આ ૧૯૭૫-૭૬ નો રિપોર્ટ છે, જે જોતાં જણાય છે કે એમાં (૧) દી. ગુ જૈન બોર્ડિંગ મુંબાઇ, (૨) દી. ગુ. ધર્મશાળા (હીરાબાગ) મુંબાઇ. (૩) શેઠ માણેકચંદ પાનાચંદ દિગંબર જૈન બોર્ડિંગ રતલામ, (૪) શેઠ માણેકચંદ હીરાચંદ જ્યુબીલીબાગ ટ્રસ્ટ ફંડ, અને (૫) શેઠ પ્રેમચંદ મોતીચંદ દિગંબર જૈન બોર્ડિંગ, અમદાવાદના રિપોર્ટો છે. આ પાંચ સંસ્થાઓ ઉપરાંત બીજી સંસ્થાઓ પણ જો વહીવટ કરવાનું સોંપે તો તે પણ ઉપલી ટ્રસ્ટ કમીટિ કરે છે, એટલે લગભગ ત્રણ લાખ રૂપીયાની સખાવતોનો વહીવટ આ કમીટિ કરે છે. સ્થાનાભાવથી અમો દરેક સંસ્થાની સમાલોચના કરી શકતા નથી. જેથી એકંદરે જણાવીશું કે મુંબાઇ, અમદાવાદ અને રતલામ બોર્ડિંગથી ગુજરાત અને માળવા પ્રાંતને અતી લાભ પહોંચ્યો છે તેમજ મુંબાઇમાં હીરાબાગ ધર્મશાળાનો સાર્વજનિક લાભ તો જગજાહેર છે વળી જ્યુબીલીબાગ ટ્રસ્ટ કે જે લગભગ અઢી લાખની મિલકતનું છે તેની ઉપજમાંથી શેઠ માણેકચંદજી જુદાં જુદાં ખાતાંઓનો નિભાવ કરવાની સ્થાયી ગોઠવણ કરી ગયેલા છે જે સર્વેને ધ્યાનમાં લેવા યોગ્ય અને બીજા શ્રીમાનોએ અનુકરણ કરવા યોગ્ય છે કે જે કામ કરોડાપતિઓ નથી કરી શકયા તેવું કાર્ય શેઠ માણેકચંદજી થોડી મીલકતમાં અને થોડા સમયમાં સ્થાયી તરીકે કરી ગયા છે. લગભગ ૨૨૫ પાનાંનો આ રિપોર્ટ દરેકે વાંચવા અને વિચારવા લાયક છે. પોસ્ટેજ માટે માત્ર એક આનાની ટીકીટ બીડવાથી સુપ્રીટેન્ડંટ, દી. ગુ. જૈન બોર્ડિંગ, તારદેવ. મુંબાઇને લખવાથી મફત મળી શકશે.

મુંબાઈ શહેરમાં સામાન્ય અને મધ્યમ વર્ગના જૈનો માટે સસ્તા ભાડાના અને સુખાકારી મકાનોની આવશ્યકતા સંબંધી પત્રવ્યવહાર—પ્રકાશક—નરોત્તમદાસ બી૦ શાહ, (મેમનવાડા રોડ-મુંબાઇ). મકાનોના ભાડાં મુંબાઇમાં એટલાં બધાં ચઢી ગયાં છે કે જેથી ગરીબ જૈનોને ત્યાં રહેવાની અતીવ અગવડતા છે, જેના ભોગે તેઓને ઘણા સંકટો સહેવા પડે છે, કેટલાક તો માંદા થઇ દેશ સીધાવે છે, કેટલાકનાં મૃત્યુ થાય છે તેમજ વ્યાપાર માટે મુંબાઇ નવા જનારા પાછી પાની કરે છે. આ અગવડો દૂર કરવા ત્યાં સસ્તા ભાડાંની હવા ઉજાસવાલી ચાલીઓ થવાની જરૂર છે, જે સંબંધી મી૦ શાહ ત્રણ વર્ષ થયાં ઘણોજ પરિશ્રમ અને અર્થવ્યય કરી રહ્યા છે અને એ સંબંધી કરેલી હિલચાલોનો રિપોર્ટ આ પુસ્તકમાં છે. મુંબાઇ શહેરની વસ્તી અને મરણ પ્રમાણના આંકડાઓ પણ રજુ કરેલા છે. આ ૫૦ પાનાંનો રિપોર્ટ પોસ્ટેજ માટે એક આનાની ટિકીટ બીડવાથી મફત મળે છે. શ્રીમાનોએ આ બાબત ખાસ લક્ષમાં લેવા યોગ્ય છે.

શ્રી ધુળીઆ પાંજરાપોળનો હિસાબ—આ ખાતાંનો સં૦ ૧૯૭૨નો આ રિપોર્ટ જોતાં

જણાય છે કે શહેરના અમુક લાગાઓથી એમાં ખોટાં ઢોરો પળાય છે. સાફ સુઘડાઇની ગોઠવણ અતિ ઉત્તમ જણાય છે.

શ્રી અજરામર જૈન વિદ્યાશાળા–(લિંબડી) નો ૧૯૬૮ થી ૭૨ નો રિપોર્ટ–સ્થાનકવાસી બંધુઓની આ પાઠશાળા ચાલુ મદદથી ઠીક ચાલે છે પણ સ્થાયી ફંડની જરૂર છે.

દશમી શ્વે. જૈન કોન્ફરન્સનો રિપોર્ટ–મુંબાઇમાં શ્વેતાંબર જૈન કોન્ફરન્સ ૧૯૧૬ માં ભરાઇ હતી તેનો અથી એકનો આ સવિસ્તર હેવાલ છે, જે આપણા દિગંબરી ભાઇઓએ વાંચીને અનુકરણ કરવા યોગ્ય છે. આવો રિપોર્ટ આપણી મહાસભા અને મુંબાઇ પ્રાંતિક સભા ક્યારે બહાર પડશે?

જૈન શ્વે. કોન્ફરન્સનો રિપોર્ટ–સં० ૧૯૭૨.

શેઠ હીરાચંદ ગુમાનજી જૈન બોર્ડીંગ સ્કુલમાં ખોલવામાં આવેલું–

શેઠ નવલચંદ હીરાચંદ સ્મારક ફંડ.

'દિગંબર જૈન'ના સુજ્ઞ વાચક વર્ગ,

વિ० વિ० સાથે લખવાનું કે ઉપરોક્તસંસ્થા તરફથી મરહુમ શેઠ નવલચંદ હીરાચંદની યાદગીરી કાયમ રાખવાને શેઠ નવલચંદ હીરાચંદ સ્મારક ફંડ આ સંસ્થાને અંગે ખોલવામાં આવ્યું છે.

આપ શ્રી અમારી સંસ્થા પ્રત્યે સહાનુભૂતિ ધરાવતા હોવાથી, તેમજ આપ હંમેશ શુભપ્રવૃત્તિ માટે સારી ભાવના રાખતા હોવાથી આપને વિનંતિ કરવાની કે આપ મજકુર ફંડમાં એક સારી રકમ ભરી આ સંસ્થાના સુપરીન્ટેન્ડેન્ટના સરનામે મોકલી આપવા કૃપા કરશો.

ભરાયલી રકમની પહોંચ મોકલવામાં આવશે, તેમજ તેઓ શ્રીના શુભ નામો 'દિગંબર જૈન' પત્રમાં બહાર પાડવામાં આવશે.

લી० સેવકો.

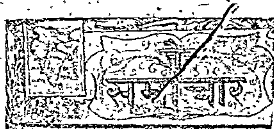
માસ્તર મગનલાલ દામોદરદાસ.

સુપરીન્ટેન્ડેન્ટ.

શાહ કાલીદાસ ફુલચંદ.

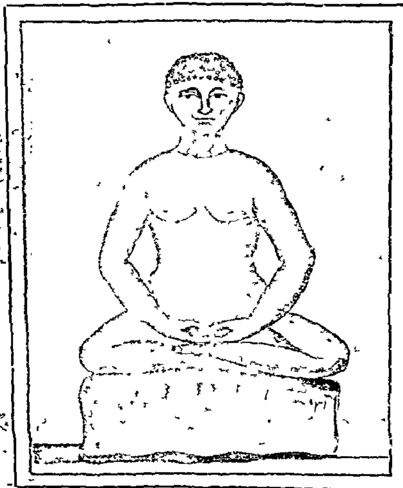
સેક્રેટરી, લીટરરી સોસાઇટી.

શેઠ હી. ગું. જૈન બોર્ડીંગ સ્કુલ, તારદેવ–મુંબઈ.



सौ० गुलाबबाईका आगमन—पं० अर्जुनलाल सेठीजीकी धर्मपत्नी सौ० गुलाबबाई अपने तीन बच्चोंको और प्रतिमाजीको लेकर बाबू भगवानदीनजीको साथमें लेकर जयपुरसे वेलोर जा रहीथी तब सोलापुर पधारी थीं। वहां आपका अच्छा स्वागत हुआ था। यहांकी स्त्री समाज गुलाबबाईको मिलनेके लिए एकत्रित हुई थी और स्त्रियोंने सेठीजीके संकट निवारणार्थ रु० ३५०) का चंदा कर दिया था।

मैनाबाई आविकाश्रम—पूनासे पांच माईलपर हिंगणे गांवमें प्रो० कर्वेका अनाथ बालिकाश्रम और कन्या महाविद्यालय कई वर्षोंसे है और २५० कन्याएँ पढ़ती हैं तथा कालेजके पठनक्रम तक पढ़ाई होती है, वहांपर जैन कन्याओंको भी शिक्षा मिले इसलिये सोलापुर निवासी सेठ हरीभाई देवकरणवाले सेठ हीराचंद रामचंदने अपने माताजी मैनाबाईके नामके यहां जैन कन्याओंके लिये बोर्डिंग और आश्रम खोलनेका मुहूर्त गत ता. ६ जनवरीको श्रीमती कंकुबाईके सभापतित्वमें किया था। सेठजीने वहां बोर्डिंग हाउस खोल दिया और मासिक दस २ रुपयेकी छ स्कालरशिप जैन कन्याओंके लिये अपनी तरफसे रखती है। इसमें सांगलीकी मंडलीने १०००), सौ० मुक्तेपनाबाई तेरदा-



श्रीमद् नेमीचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती।

(श्री गोमट्टसार, लब्धिसार, क्षपणासार, त्रिलोकसार, द्रव्यसंग्रह आदिके कर्ता महदाचार्य.)

(एक हस्तलिखित प्राचीन चित्रसे उद्धृत)

जैनविजय प्रेस-सूरत.

लकर ५०) और अमृत तवनाणा गरगट्टेने ५००) स्वीकार किया। सौ० गोदुबाई उपाध्ये और उनके पतिने ऑ री काम करना स्वीकार किया है। अभी तीन कन्याएँ प्रवेश हो चुकी है।

अजैनोंको विना मूल्य—'जैनधर्मके विषयमें अजैन विद्वानोंकी सम्मतियाँ' नामक ट्रेक्ट निम्नलिखित पतेसे कार्ड लिखनेपर मुफ्त मिलता है। बांटनेके लिये ३) सेकडा है—उपमंत्री, जैनधर्म संरक्षणी सभा—अमरोहा (मुरादाबाद)।

अध्यापकके स्मरणार्थ १००००) का दान—कुचामन (मारवाड़)की जैन पाठशालामें वृद्ध पं० जिनेश्वरदासजी कई वर्षोंसे उत्तमतासे पढा रहे थे उनका करीब एक मास हुए स्वर्गवास हो गया है। आपकी योग्यताकी कदर यहां तक हुई है कि कलकत्तेमें आपके लिये शोकसभा होकर उसमें सेठ चैनसुख गंभीरमलने १००००) पंडितजीके स्मरणार्थ देना स्वीकार किया है। यह रकम इस पाठशालामें लगाकर इसका नाम 'जिनेश्वरदास जैन पाठशाला' रखा जायगा। उक्त पंडितजी एक कवि भी थे।

नैनागिरिजीका मेला—मगसर सुद १५को इस क्षेत्रपर मेला हो गया ब्र० पं० गणेशप्रसादजी न्यायाचार्य, ब्र० भगीरथजी वर्णी, पं० मुन्नालालजी, मा. दीपचंदजी आदिके पधारनेसे जनसमूह भी अच्छा जमा था और धर्मोपदेश भी खूब हुआ था। विशेष उल्लेखनीय बात यह हुई कि गोलापूरव ज्ञातिमें पंचवीसे और वीस वीसे भाइओंमें रोटी व्यवहार था परंतु कई वर्षोंसे बेटी व्यवहार बंद था जिसके लिये पंचोंने मिलकर खास प्रस्ताव कर लिया कि पंचवीसे भाइयोंके साथ वीस वीसे भाई सहर्ष **रोटी व्यवहारके साथ बेटी व्यवहार करें**—इस मौके पर पत्र सौ ग्रामके पंच उपस्थित थे और सबके हस्ताक्षर हो गये यानी यह सामान्य प्रस्ताव नहीं परंतु असली प्रस्ताव हो गया है। और इस मेलेमें सागर जैन पाठशालाके २९ और अन्य २९ जैनोंने विधिपूर्वक यज्ञोपवीत धारण किया। वहां धर्मशाला बनानेके लिये भी १३५०)का चंदा हुआ था।

२५०००) का दान—बम्बई निवासी सेठ नवलचंद हीराचंदजीने अपने मृत्यु समय तीर्थोंके जीर्णोद्धारके लिये २५०००) का दान किया है।

श्वेताम्बर कॉन्फरंस और एक लाख रुपयेका फंड—गत मासमें कांग्रेसके समय कलकत्तेमें ग्यारहवी श्वे० जैन कोन्फरन्स बम्बई निवासी सेठ खेतशी खीयशीके सभापतित्वमें हुई थी जिसमें महात्मा गांधी, लो० तिलक, मालवीयजी आदिने भी पधार कर व्याख्यान दिया था और बनारस हिंदू युनीवर्सिटीमें जैन तत्वकी शिक्षाके प्रबंधके लिये और जैन विद्यार्थियोंके ठहरने, खानेपीने, दर्शन पूजन आदिके प्रबंधके लिये अपील होते ही उसी वक्त करीब १०००००) भर गये हैं जिसमें १२५००) तो सभापतिजीने ही दिये हैं। धन्य है ऐसे दानवीरोंको!

दक्षिण महाराष्ट्र जैन कान्फरंस इस कान्फरंसका वार्षिक अधिवेशन इसवार ता० १०-११-१२ फर्वरी (माघ वदी १४ से माघ सुदी १ तक) श्री **स्तवनिधि** क्षेत्र पर होना निश्चित हुआ है। सभापतिका आसन बहुत करके सोलापुर निवासी सेठ हीराचंद नेमचंद दोशी ग्रहण करेंगे। अधिवेशनके लिये सब प्रकारकी तैयारियां चल रही हैं।

कान्ग्रेसमें सेठीजी—कलकत्तेमें गत कान्ग्रेसमें पं० अर्जुनलालजी सेठीके कष्ट निवारणार्थ खास प्रस्ताव प्रमुखा श्रीमती एनी-बिसेन्टने तीसरी बैठकमें अंग्रेजी भाषामें खुद पेश किया था जो सर्वानुमतिसे स्वीकार हुआ था। इस प्रस्तावका भावार्थ इस प्रकार है—'यह कांग्रेस वेल्लोर (मद्रास) जेलमें अब पडे हुए जैन पंडित अर्जुनलाल सेठीका मामला सभापति द्वारा बहुत जरूरी समझकर कि अपने धार्मिक सिद्धांतोंके कारण उनका जीवन आहार न लेनेसे बहुत संकटमें है, भारत सर्कारसे प्रार्थना करती है कि वे बीचमें *पड़कर उनकी जान बचावें।*'

'श्रीगंधहस्ति महाभाष्य' का पता—श्री समंतभद्राचार्य कृत इस महान् ग्रन्थराजका कहीं पता नहीं था और इसका दर्शन यदि कोई महाशय करा दे तो स्व० दा० सेठ माणिकचंदजीने १०००) इनाम देना प्रकट किया था। हमारे सेठजी तो इस अभिलाषामें स्वर्गपुरीमें प्रयाण कर गये और अतीव हर्ष है कि पं० वंशीधरजी न्यायतीर्थ (सोलापुर) को पूनाकी दक्खन कोलेज लाथब्रेरीमेंसे 'अनगार धर्मामृत' का पता लगाते २ इस महान् ग्रन्थराजका पता कार्तिक वदी ८ को लग गया है कि **आस्ट्रिया** (युरोप)के **वियेना** शहरकी लायब्रेरीमें रखे हुए दिगम्बर जैन ग्रन्थोंकी सूचीमें इसी महान् ग्रन्थराजका नाम है। इसकी प्रतिलिपि करनेको पं० वंशीधरजी आस्ट्रिया जानेके लिये तैयार हुए हैं जो महा युद्धके अनन्तर जा सकते हैं परंतु वहां जाने आने, ठहरने आदिके लिये एक फंडकी आवश्यकता है जिसमें १०००) तो सोलापुर निवासी सेठ हीराचंद अमीचंद शाहने देना स्वीकार किया है। करीब दो वर्ष तक ठहरने पर ही नकल तैयार हो सकेगी जिसमें करीब १५०००) लगना संभव है। श्रीमानोंका फर्ज है कि इसका शीघ्र ही प्रबंध कर देवें।

भारत जैन महामंडल और जैन पोलीटिकल कान्फरन्स—हमारे भारत जैन महामंडलका वार्षिक अधिवेशन कान्ग्रेसके समय कलकत्तेमें श्रीमान् जैनधर्मभूषण ब्र० शीतलप्रसादजीके सभापतित्वमें समारोहके *साथ हुआ था। इसमें लो० मा० तिलक और* दादासाहब खापर्डेने भी पधार कर वक्तता दी थी। सभापतिका विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान अन्यत्र प्रकट किया है जिसको हमारे पाठक अवश्य २ पढ़ें। कुल ११ प्रस्ताव हुए थे जिनमें सबसे महत्वका प्रस्ताव सेठजीके बारेमें था जिसको यहां हम अक्षरशः प्रकट करते हैं—'यह मंडल अपनी गाढ़ श्रद्धा और दृढ़ विश्वाससे प्रकट करता है कि **पंडित अर्जुनलाल** सेठी सर्वतया निर्दोष, धर्मपरायण, शिक्षाप्रेमी,

जैन जातिके नेता पंडित हैं और आशा करता है कि इस ..सीम राजभक्त और शांतचित्त चुपचुपाती जैन जातिके हृदयको शांत करनेके अर्थ भारत सर्कार पं० अर्जुनलाल सेठीको नजरबन्दीसे शीघ्र ही मुक्त करके अपना कर्तव्य पालन करेगी और जबतक कि वह मुक्त न किये जावें उनको किसी ऐसे स्थानपर जहां दिगम्बर जैनियोंकी संख्या पर्याप्त हो, रक्खेगी जिसमें वह अपना धर्मपालन करते हुए शरीरक्षा कर सकें। भारतवर्षीय समस्त जैन जातिको यह मानकर घोर सन्ताप हो रहा है कि २० नवम्बरसे पंडित अर्जुनलाल सेठीने भोजन नहीं किया है क्योंकि उनके मूर्तिपूजाका कोई प्रबन्ध वेल्लोरमें नहीं किया गया जहां कि वह आजकल नजरबन्द हैं। समस्त जैन जाति और यह कान्फरंस देशनेताओंसे निवेदन करती है कि वह शीघ्र ही उचित प्रबन्ध करके इस जैन जातिके नेता और पंडितको नजरबन्दीसे मुक्त करा कर उनके कुटुम्बियों और जैन भाइयोंको शान्तहृदय और चिर अनुग्रहीत करें।"

जैन राजकीय कान्फरंसका प्रथम अधिवेशन भी इसके साथ दा० सा० खापर्डेके सभापतित्वमें हुआ था जिसमें सभापतिने जैनोंको खास उपदेश दिया कि वे राजकीय कार्योंमें अवश्य हस्तक्षेप करें, इसीसे ही वे उन्नति कर सकेंगे। इसमें सेठीजीका उपरोक्त प्रस्ताव और कांग्रेस तथा मुसलिम लीगकी स्वराज्य स्कीमको स्वीकार करनेका ऐसे दो प्रस्ताव खास पास हुए थे।

बम्बईमें मुनिजी—मुनिश्री अनन्तकीर्तिजी महाराज यात्रार्थ शिखरजी जा रहे थे तब ता० १४–१२–१७को तीन दिन बम्बई ठहरे थे। मुनिजीके दर्शनके लिये खूब भीड़ रहती थी। आपने एक दिन हीराबागमें श्राविकाश्रमकी बाइयोंसे आहार ग्रहण किया था और एक दिन सेठ सुखानंदजीके यहां आहार ग्रहण किया था। इनके निरंतराय आहार होनेपर हमारे धर्मप्रेमी और दानी सेठजी इतने आनन्दित हो गये कि आपने उसी वक्त ३१००) धर्मकार्यके लिये अलग निकाले। ता० १४को हीराबागमें मुनिजीका धर्मोपदेश हुआ था। नग्नावस्था होनेपर पुलिस कमिश्नरने राजकीय कानूनसे महाराजको बाहर आनेकी आज्ञा नहीं दी। इसके लिये पूरा २ आन्दोलन होना चाहिए और जैनी साधुओंको आवागमनमें बाधा न हो इस प्रकारकी आज्ञा सरकारसे ली जावे।

खास उपदेशक—स्व० दानवीर सेठ माणिकचन्दजीके ट्रस्टके अनुसार 'माणिकचन्द हीराचन्द उपदेशक संस्था' स्थापित होकर कार्य प्रारंभ हुआ है। अभी पं० दौबलि शास्त्री महाराष्ट्र प्रान्तमें दौरा कर रहे हैं। इसके मंत्री सेठ रावजी सखाराम दोशी सोलापुर हैं।

सवालाख रु० का दान—बम्बईके श्रे० जैन सेठ खेतशी खीयशीने १०१००१) निराश्रितोंको अन्न तथा वस्त्रदानमें, ९००१) कच्छी जैन बोर्डिंग, ९००१) कच्छी जैन बालाश्रम और १००१) फरग्युसन कालेजको मिलकर करीब सवालाख रुपयेका दान अभी ही किया है।

कान्ग्रेस और जैनी—आगामी कान्ग्रेस देहलीमें करनेका आमंत्रण देहलीके भाइओंकी ओरसे हमारे ऑ० रायबहादुर बाबू सुल्तानसिंहजी रईस व ऑ० मजिस्ट्रेटने किया है और अभी ही देहलीमें देहली और अजमेर प्रान्तके लिये प्रांतिक कान्ग्रेस कमिटी स्थापित हुई है जिसके सभापति हमारे रायसाहब बाबू प्यारेलालजी वकील और एक उपसभापति रा० बा० सुलतानसिंहजी ही नियुक्त हुए हैं। यह मार्केकी खबर है।

रायबहादुरका अपमान—कलकत्तेसे देहली स्टेशनपर आते ही रा० ब० लाला सुल्तानसिंहजीका एक गोरे सैनिक अफसरने अपमान किया था जिसके उपर रा० ब० ने मुकद्दमा चलाया तो देहलीके मजिस्ट्रेटने उस गोरे अफसरको २९) जुर्माना किया है। इस मामलेमें रा० बहादुरकी ओरसे चार वकील उपस्थित थे, लोगोंकी बहुत भीड़ थी और सबको आशा थी कि मजिस्ट्रेट साहब बहुत कड़ा दंड देवेगा क्योंकि उस अफसरने *बिना कारण रायबहादुरके मुंहपर घूंसा मार कर* चश्मे तकको चुर २ कर डाला था और मुंहपर इजा भी की थी।

महासभाका अधिवेशन आगामी ता० २७–२८ को अंबाला छावनीमें उत्सवके समय होगा, जिस वख्त भारत० दि० जैन महिला परिषद्का आधिवेशन होना भी निश्चित हुआ है जिसके लिये श्रीमती मगनबाईजी प्रयास कर रही हैं।

कचनेरजी मेला और खंडेलवाल सभा—श्री कचनेरजीके गत मेलेपर महाराष्ट्रीय खंडेलवाल दि० जैन पंच महासभाका ७–८ वाँ वा० अधिवेशन खंडेलवालकुलभूषण पं० पन्नालालजीके सभापतित्वमें हुआ था जिसमें जाति सुधार संबंधी अनेक उपयोगी प्रस्ताव हुए और कचनेर पाठशालाके लिये ५०००)का चंदा हुआ था और कचनेर पाठशालाका स्थान बदलनेका निश्चित हुआ जो अमलमें आ चुका है यानी अब यह पाठशाला औरंगाबादमें लाई गई है जहां अच्छा सुभीता है।

श्री हस्तिनापुरजीमें कार्तिक शुक्ल १५ पर मेलेके समय श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रमका वार्षिक अधिवेशन हुआ था जिसमें आश्रमके लिये १२००) का चंदा हुआ और आश्रमका स्थान **मवानेमें** लेजानेका निश्चय किया और वहीं मकान बनवानेके लिये १००००) की सहायता सेठ हुकमचन्दजीसे लेनेके लिये इन्दौर डेप्युटेशन लेजानेका ठराव हुआ था। आश्रमके अधिष्ठाता ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी और *उपअधिष्ठाता ब्र० गेंदनलालजी* हुए हैं।

बम्बई श्राविकाश्रमको अजमेरनिवासी रा० ब० सेठ नेमिचन्दजीकी ओरसे १००१)की सहायता प्राप्त हुई है।

सेठी अर्जुनलालजीके छुटकारा निवारणार्थ पालीताणाके धर्मप्रेमी वृद्ध मुनीम धरमचंदजीने १००) दिये हैं। हमारे श्रीमानोंसे तो हमारे मुनीमजी बढ़ गये। जाति प्रेम इसीका नाम है!

ज्वर नाशक चूर्ण—इस चूर्णसे सब प्रकारका ज्वर नाश होता है। सिर्फ आध आनेका टिकिट भेजनेपर मुफ्त मिलनेका पता—भाऊराव कन्हैयालाल पाटणी—कांबी (अहमदनगर)

शोक-ईडरनी पाठशाळाना अध्यापक भाई नाथालाल सौभागचंद गत कार्तिक वद ८ ने दिने प्लेगथी ओचिंता मृत्यु पामवाथी ए पाठशाळाने तथा ईडरना भाईओने एक जैनधर्मप्रेमी उत्साही बंधुनी खोट पडी छे. आ भाई धर्मना अभ्यासी तथा गुजराती जैन साहित्यना उद्धार माटे घणो प्रयास करता हता. आदि पुराणनुं गुजराती भाषांतर एओ लखी गया छे, जे प्रकट थवानी जरूर छे. शुं कोई ईडरनाज बंधु आ ग्रन्थनो उद्धार भाई नाथालालना स्मरणार्थे करी एनो मफत फेलावो नहीं करे?

मेरठ पाठशालाके लिये शिकायत—श्यामसुन्दरलाल जैन बैंकर मेरठ शहरसे 'अच्छी सूझी' शीर्षक चिट्ठीमें लिखते हैं कि—यहांकी दि० जैन पाठशालाके कार्यकर्त्ताओंमें मुख्य भाग अजैनोंका है, धार्मिक शिक्षा बराबर नहीं होती है, शूद्रोंके लड़के क्यों लिये जाते हैं? अब कार्यकर्त्ता जैन समाजसे ९०००) मांग रहे हैं और स्कूलको सर्कारमें रिकग्नाइज्ड करानेवाले हैं। क्या समाज इसके बारेमें कुछ विचार न करेगी और अपनी एक धार्मिक संस्थाको इस तरहसे खोकर सदाके लिये पश्चाताप करना पसंद करेगी' मैं तो समझता हूं कि कभी नहीं। समाज विना विचारे चन्दा देनेके लिये तैयार नहीं होगी किन्तु सुप्रबन्ध करनेके लिये विचार करेगी।

एक लुप्तप्रायः तीर्थके उद्धारकी आवश्यकता।

करोड़ों रुपयोंकी संपत्ति, सरकारके पास जाती है।

तारीख १० नवम्बरको तीर्थक्षेत्र कमेटीकी एक चिट्ठीसे मालूम हुआ कि 'देवगढ़ तहसील ललितपुर जिला झांसीके जैन मंदिर संयुक्त प्रान्तकी गवर्नमेंट अपने अधिकारमें लेती है। इस आज्ञाका विरोध झांसीकी जैन पंचायतसे होना चाहिये" तदनुसार मैं उसीदिन देवगढ़को अपनी आंखोंसे प्रत्यक्ष देखकर पश्चात उचित कार्रवाई करनेके लिये देवगढ़ रवाना हो गया। देवगढके लिये जाखलौन जी. आई. पी. आर. के स्टेशन पर उतरना पड़ता है। जाखलौन गांव स्टेशनसे १॥ माईल है वहांसे देवगढ़ गाड़ीके मार्गसे ८ माईल और पैदलका मार्ग ६ माईल है।

देवगढ गांवसे रावत लोग पहाड़पर मंदिर बतलानेके लिये मिल जाते हैं। पहाड़ बहुत ऊंचा नहीं है, श्री सोनागिरजीके समान ऊंचा समझना चाहिये।

देवगढ़का वर्णन।

देवगढ़की ऊंचाई तय करने पर एक दरवाजा मिलता है। यह कोटका द्वार है। कोट और द्वार दोनों ही खंडित हो रहे हैं। द्वारसे चक्कर आध माईलके फासले पर एक और कोट मिलता है। यह कोट मंदिरोंको घेरे हुए था पर अब यह भी धराशायी हो रहा है। इस कोटके अंदर सैकड़ों जैन दिगम्बर मंदिर हैं। लाखों जैन मूर्तियां हैं। मूर्तियां ऐसी मनोहर हैं कि मैंने तो आज तक इस अवयवकी नहीं देखीं। आधीसे अधिक मूर्तियां अखंडित हैं। एक पाषाणका सहस्रकूट चैत्यालय है। बड़ा मंदिर शान्तिनाथ भगवानका है।

शान्तिनाथ स्वामीकी १२ फीटकी ऊंची खड्गासन मूर्ति है। ६–७ फीटकी कई हैं। एक १० फीटकी भी है। करीब आधी मूर्तियें खड्गासन हैं। शान्तिनाथकी मूर्ति अतिशयवान भी है। जाखलौनके बड़े बूढ़े जैनियोंका कहना है कि इस मूर्तिको शिरके ऊपरका छत्रका पत्थर एक अंगुलके फासलेपर था पर अब वह २ हाथके फासले पर है, अर्थात् मूर्ति छोटी होती जाती है। यह उन *लोगोंका कहना है कि जिन्होंने एक अंगुलका* फासला अपनी आंखसे देखा है, किन्तु समतल भागमें कुछ अन्तर नहीं पड़ा है। मूर्ति एक मोंहरेके अन्दर है इससे इस मंदिरका नाम गुप्तमंदिर भी है।

बड़े मंदिर सब समूचे मालूम होते हैं कुछ मरम्मतकी ज़रूरत है। किवाड जोड़ी किसीमें नहीं है। दो मंदिर दुमंजले भी हैं। मंदिरोंपर पुरानी चित्रकारीके बड़े अपूर्व नमूने हैं। दो पाषाणके मानस्थंभ भी हैं। इनपर ऊपरकी ओर चारों ओर चार मूर्तिएं हैं। एक मंदिर पर संवत १२०९ निर्माणकाल लिखा मिला है। *दो और मंदिरोंपर भी सम्वत देखा है,* पर वे इससे पुराने नहीं हैं। आठसौ वर्षके पुराने मंदिर अभी तक समूचे रहनेका कारण यह है कि यह सब मंदिर पाषाणके बने हुए हैं। कुछ शिलालेखोंकी नकल पं. नाथूरलाल शास्त्रीजी नकल करनेके लिये अपने साथ ले गये हैं, अभी वापिस आया नहीं। शास्त्रीजी जैनगजटमें अपना लेख प्रकाशित करावेंगे उसमें कुछ शिलालेखोंका विवरण पढ़नेको मिल जायगा। छोटे मंदिरोंको अधिकांश गिर पड़नेसे अच्छी २ मनोज्ञ और अखंडित मूर्तियोंकी बहुत दुर्दशा हो रही है। वे मैदानमें इधर उधर बिखरी पड़ी हैं। बरसातमें काई जमनेसे, घाससे आच्छादित हो जानेसे, मूर्तियोंसे रूप रंगमें भी अन्तर पड़ता जाता है। शायद इसीसे सरकार इनको अपने अधिकारमें लेना चाहती है। *यह इरादा सरकारने एक* दफा पहले भी किया था और ३९ मूर्तियें लखनऊके अजायब घरमें लेजाना चाहती थी पर यह जाखलौनके पंचोंके उज्र करनेसे बन *रहीं, किन्तु इन्होंने अपनी आर्थिक अवस्था* अच्छी न होनेके कारण उस वक्तसे अबतक मंदिर और मूर्तियोंकी रक्षाका कोई प्रबंध नहीं *किया इससे सरकारको पुन: अपना हुक्म निकाला* पड़ा है। यदि अब भी इनकी रक्षाका प्रबंध न हुआ और उजड़ारीके घमंडमें बैठे रहे तो कोई परिणाम नहीं निकलेगा। अंग्रेज सरकारके यहां मरहठी चिप-चिप नहीं चलती। यह आपकी ढीलपोल देखकर अपना अधिकार जमा लेगी जैसा कि उसने अभी साफ तौरपर लिख दिया है "सरकार अपने अधिकारमें लेती है, कोई बिना *सरकारी आज्ञाके उनके रूप रंगको न बदले* और न उनके आसपास कोई नया मंदिर बनावे" ऐसा हो जानेसे आपको पूजा वंदना करनेमें भी अनेक प्रकारकी बाधाएं उपस्थित होंगी। मूर्तियोंको लखनऊके अजायबघरमें ले जानेसे भी आप नहीं रोक सकेंगे। जितना रुपया अब उनकी मरम्मतमें लग सकता है उतना रुपया पीछे उजड़ारीमें खर्च कर देनेसे भी उनका मिलना कठिन हो जायगा। अतः शीघ्र चेतिये, अपनी करोड़ो रुपयेकी सम्पत्तिकी रक्षा कीजिए। प्राचीन मंदिरका जीर्णोद्धार

करा देना, नये मंदिरके बनवा देने जैसा फल होता है इसलिये ध्यानमें रखकर सिंघई, सेठ और श्रीमंत सेठोंको इस अतिशय क्षेत्रकी रक्षा करनी चाहिए।

केवल २५-३० हजारमें सब मरम्मत हो जायगी, किवाड़ जोड़िए भी लग जायगी। किन्तु खंडित मूर्तियोंके लिये एक नहींवर अजायबघर और कोटकी मरम्मतके लिये तथा एक नीचे धर्मशालाके लिए अलग रकम की जरूरत होगी।

यह स्थान बड़ा रमणीक वेतवा नदीके किनारेपर है। इस किनारेको घाटी कहते हैं। सुना है घाटीमें एक पत्थरमें ७ दि० जैन मूर्तियें खुदी हुई हैं। यहांपर पांडवोंकी भी मूर्तिएं है तथा एक शिवालय है। किन्तु पहाड़पर सिवाय जैनके दूसरे मतकी कोई मूर्ति नहीं है। इससे यह स्थान वास्तवमें देवगढ़ तो है ही पर जैन गढ़ भी कहा जासकता है। गर्वमेन्ट हो जानेसे आशा है सरकार वहाँतक पक्की सड़क बनवा देगी और पहाड़के जगहपर कुछ अंशोंसे कायम किया हुआ अपना अधिकार भी उठा लेगी। इससे पुनः कहता हूं कि एक अतिशय क्षेत्रका उद्धार कीजिए, करोड़ों रुपयोंकी प्राचीन कीर्तिकी रक्षा कीजिए और जैनसमाजपर अपने देव स्थानोंकी रक्षा नहीं करनेका कलंक मत लगने दीजिए।

जिनको अपने धर्मका और द्रव्यका स्तुत्य योग्य अनुराग है उन्हें देवगढ़के मंदिरोंकी रक्षाके लिये शीघ्र एक बड़ी रकम निकालकर तीर्थक्षेत्र कमेटीको सूचना करनी चाहिये।

विश्वम्भरदास गार्गीय, झांसी छावनी।

द्वादशानुप्रेक्षा।

(वसन्ततिलका)

तू देख खोलकर अन्तर दृष्टि प्यारे ?
थे जो कभी पुत्र गये नहिं आज हैं वे।
दे छोड़ मान मनका जग है अनित्य,
व्यर्थ कदर्थयसि किं नर-जन्म मित्र ॥१॥

है मौतका तु जब आ बनता नकारा,
कोई नहीं तब बचा सकता किसीको।
कल्याणकारि जगमें कर कार्य नित्य,
व्यर्थ कदर्थयसि किं नर-जन्म मित्र ॥२॥

ये देव नारक पशू नर योनि भाई,
तूने धरी बहुत हैं अरु हैं गँवाई।
तू मान ले, सफल लेकर एकको तो,
व्यर्थ कदर्थयसि किं नर-जन्म मित्र ॥३॥

मा, बाप, बन्धु, सुत, दार, व दास, स्वामी,
सम्बन्ध कोइ इनसे तेरा नहीं है।
आपा भुलाय फस नित्य ममत्वमें तू,
व्यर्थ कदर्थयसि किं नर-जन्म मित्र ॥४॥

तू है निरन्तर जिनेश प्रतिपालतारे ?
होता शरीर वह भी तुझसे निराला।
तू एक मान जिनको अरु देह को रे ?
व्यर्थ कदर्थयसि किं नर-जन्म मित्र ॥५॥

दुर्गन्ध युक्त नित है यह देह तेरा,
या यों कहो कि मल-मूत्र भरा पड़ा है।
हो बावला रम मगन इसमें सदा तू,
व्यर्थ कदर्थयसि किं नर-जन्म मित्र ॥६॥

मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद कषाय योग,
ये हैं महा दुखद आस्रव रूप भाई।
ले शीघ्र रोक इनको करके प्रयत्न,
व्यर्थ कदर्थयसि किं नर-जन्म मित्र ॥७॥

है कर्म संवरण ही मुक्तका निदान;
हो बादमें न जिससे परतन्त्र आत्म।
हैं कर्म रोक बहुते भव खो गये तू—
व्यर्थ कदर्थयसि किं नर—जन्म मित्र ॥८॥

ज्यों योगसे अनलके जल नष्ट होता,
त्यों कर्मके प्रचयको शुभ ध्यान खोता।
सद्ध्यानसे विमुख हो, कर पाप कृत्य,
व्यर्थ कदर्थयसि किं नर—जन्म मित्र ॥९॥

दोनों पसार पद और कटि धार हस्त,
ज्यों हो खड़ा मनुज त्यों यह लोक चित्र।
तू भेष धार "इसमें कर नित्य नृत्य,
व्यर्थ कदर्थयसि किं नर—जन्म मित्र ॥१०॥

सारे सुयोग यदि जीवनमें मिले भी,
पाया विवेक नहिं तो फिर व्यर्थ हैं वे।
तू आत्म बोध नहि पाकर मूर्खतासे,
व्यर्थ कदर्थयसि किं नर—जन्म मित्र ॥११॥

जैनेन्द्रसे कथित, सत्य—स्वरूप धर्म,
शान्ति, क्षमा, विनयमूल, प्रशस्त—कर्म।
ले शीघ्र धार मनमें करके प्रयत्न,
व्यर्थ कदर्थयसि किं नर—जन्म मित्र ॥१२॥

* * *

मोह-नामको नकुल-सम, बारह भावन सार।
भाकर नर पा अमरपद, हो जाते भवपार॥

नोट नं० १—प्रत्येक छंदके चतुर्थ चरणमें यह पद भी बोला जा सकता है—" सोचो निरर्थक नहीं नर—जन्म मित्र "

नोट नं० २—"व्यर्थ कदर्थयसि किं नर—जन्म मित्र ?" इस समस्याको प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद पं. गोपालदासजी प्रायः कभी २ बोला करते थे, और इसको बनाकर उन्होंने अपने एक मित्रकी विरुद्ध समस्याका हल किया था, उसी समस्याको लेकर [illegible] बारह भावनाके रूपमें यह तुकबन्दी [illegible] है; पहले गुरुजीके जमानेमें "जैनमित्र" में "समस्यापूर्ति" की भी कुछ चर्चा रहा करती थी, जिससे पाठकोंके मनोरंजनके अतिरिक्त विद्यार्थियोंका भी लिखने पढ़नेका उत्साह बढ़ता था, शिक्षित महाशयोंसे निवेदन है कि इस प्रथाको फिर चलानेका यत्न करें। इस उपर्युक्त समस्याकी पूर्ति वीर, श्रृंगार, करुणा आदि कई रसोंकी रचना द्वारा हो सकती है, इसलिये यदि कोई महाशय इसपर लिखनेकी कृपा करेंगे तो बहुत उत्तम होगा।

निवेदक—उमरावसिंह न्यायतीर्थ।

बोरगांवमंजु (अकोला)के एक मौरामें प्राचीन मन्दिर है जिसकी दशा बड़ी शोचनीय है। इसमें ११ खड्गासन और १९ पद्मासन प्रतिमा अति प्राचीन हैं। ऊपरसे मन्दिर गिरकर मैदान होगया है। इससे इसके जीर्णोद्धारकी आवश्यकता है। यहां पहले परतवाड़ावाले [illegible] महाशयने आकर (८५०) चंदा किया था जो मेरे पास है जिसमें २००) मैंने भी दिया था। और विशेष सहायताकी आवश्यकता है तब ही कार्य शुरू हो सकता है। परतवाड़ाके और इसके आसपासके सेठ-साहूकार भाईयोंको इसकी पूर्ति करना चाहिये।

गंगाधर अजमेरा,
बोरगांव मंजु (अकोला)

ANALYSIS OF TATTVARTHA SUTRA.

BY-

Justice J. L. Jaini M.A., M.R.A.S., Bar-at-Law,

Judge High Court, Indore.

The book is an exposition of the 7 Principle of Jainism, i.e., the 7 *Tattvas*.

The opening *sutra* serves the purposes of an Introduction, Justification and Recapitulation of the whole book. It was necessary to indicate the position of the Principles (*Tattva*) in the whole range of Jaina Knowledge. They are the subject-matter of right belief, and the relation of the two cannot be appreciated fully, unless we consider the position of right belief in the scheme of Jaina philosophy. This position is indicated by the first Sutra. This brings us to the Justification also. The first purpose of everything Living is Happiness. Happiness to be worth anything must be eternal, faultless and independent. Such happiness is identical with the Jaina conception of Liberation. Right belief in and right knowledge of the 7 Principles, along with a life led in the light of the knowledge, and firmly established on the basis of the belief is the sole threefold one path of final and everlasting deliverance. Thus the first Sutra is a justification of the book which deals with these basic principles of belief and action. It is also a Recapitulation, because the whole book can easily be seen to be merely an expansion of the various aspects, details and developments of this mighty and all comprehensive Sutra of Jainism.

The ground-plan of the book itself admits of analysis as follows.

The whole book consists of 357 Sutras, divided into 10 chapters with 33, 53, 39, 42, 42, 27, 39, 26, 47, and 9 Sutras respectively.

Chapter I.

Sutra 1 introduces the Subject.

„ 2 defines Right Belief.

„ 3 gives the two means of acquiring Right Belief.

„ 4 developes the definition of Right Belief, and gives the names of the 7 Principles.

„ 5 gives the 4 different senses in which these names may be employed.

„ 6-8 develop the modes of acquiring *Adhigama* (Right knowledge).

Sutra 6 gives the two *means* of acquiring it.

„ 7-8 give the *modes* of employing these two means.

„ 9-32 deal with *Pramana*, the first means of acquiring knowledge (*Adhigama.*)

Sutra 9-12 classify and name the pramanas or 5 kinds of knowledge.

„ 13-19 deal with Sensitive Knowledge, (*Mati jnana*), the first kind of knowledge.

Sutra 13 gives the Nirdesa, definition or description of Sensitive Knowledge.
„ 14 gives the Sadhana, or means of acquiring it.
„ 15 gives the Vidhana, or divisions of it.
„ 16 gives its sub-divisions and thus the Sankhya, or number of it.
„ 17 limits the Scope of these sub-divisions.
„ *18–19* give the exceptions.

„ 20 refers to Scriptural Knowledge (*Sruta jnana*).
„ 21–22 refer to Direct Visual knowledge (*Avadhi jnana.*)
23–25 refer to Direct Mental knowledge *Manah paryaya jnana*.
„ 26–29. deal with the subjectmatter of the 5 kinds of knowledge.

Sutra 26 of Sensitive & Scriptural.
„ 27 of Direct Visual.
„ 28 of Direct Mental.
„ 29 of Perfect (*Kevala.*)

„ 30 gives the extent (Alpa Bahutva, Less or more), combined with number (Sankhya), and habitat (Svamitva) of the 5 kinds of knowledge.
„ 31–32 deal with wrong knowledge.

Sutra 31 gives its three kinds.
„ 32 defines wrong knowledge.

„ 33 deals with *Naya*, the second means of acquiring Adhigama, or knowledge.

Chapters II–IV.

Chapters II, III & IV deal with the first Principle only, namely with *Jiva* (the Living Substance) or Soul.

Chapter II treats of Soul generally; of its nature, differentia, classifications, processes of incarnation, bodies, and sex. It treats of Life here and hereafter in the world.

Chapter III treats of the hellish, human, and sub-human beings, and of the regions occupied by them.

Chapter IV treats of the various orders of celestial beings, and of the regions in which they live.

Chapter II.

Sutras 1 to 7 deal with the thought-nature of *Jiva*.
Sutra 1. gives the classes of thought-natures.
Sutra 2 gives the number of sub-divisions.

Sutra 3 names the sub-divisions of 1st thought-nature.
Sutra 4 „ „ 2nd „
„ 5 „ „ 3rd „
„ 6 „ „ 4th „
„ 7 „ „ 5th „

Sutras 8-9 give the differentia of *Jiva.*
Sutra 8 names it.
„ 9 classifies it.

Sutra 10 classifies the Jivas into Mundane & Liberated.

Sutras 11-24 deal with the Mundane Souls.
Sutra 11 and 12 give their classes.
Sutra 11 According to whether they have mind or not.
Sutra 12 According to the number of their senses :- *Sthavara* with 1 sense. *Trasa* with more.
Sutra 13-20 deal with this
Sutra 13 gives kinds of Sthavara
Sutra 14 gives kinds of Trasa
Sutra 15-20 deal with the senses.
Sutra 15 gives their number.
„ 16 gives their 2 classes.
„ 17 subdivides the 1st class.
„ 18 subdivides the 2nd class.
„ 19 names the senses.
„ 20 subdivides their functions.
Sutra 21 gives the function of mind.
Sutras 22 & 23 give the *Svamitva* of the senses.
Sutra 22 of 1 sense.
„ 23 „ others
Sutra 24 gives the *Svamitva* of mind.

Sutras 25-30 deal with the transition of the soul from one condition of existence to another.
Sutra 25 gives the concomitant of transmigration.
Sutra 26 gives the character of transmigration.
Sutra 27 gives the character of Liberated souls.
Sutra 28 gives the character of Mundane souls.
Sutras 29-30 give the time of transmigration.

Sutras 31-35 deal with the different kinds of birth.
Sutra 31 gives the kinds.
„ 32 „ „ different embryos
„ 33 „ Svamitva of 2nd kind of birth.
„ 34 „ „ „ 3rd „
„ 35 „ „ „ 1st „

Sutras 36-49 deal with the various bodies.

Sutra 36 gives names of bodies
,, 37 ,, their distinctions.
,,s 38-39 ,, ,, constitution.
,,s 40-41 ,, the capacity of the last 2 bodies.
,,s 42 ,, ,, *Svamitva* ,, ,, ,, ,,
,, 43 ,, ,, number of bodies with a Soul.
,, 44 ,, a special quality of the "last body."
,,s 45-48 ,, the *Svamitva* of the bodies.
,, 49 deals with the 3rd body.

Sutra 50-52 deal with the sexes of the different *Jivas*.
Sutra 53 names the *Jivas* whose mundane life cannot be cut short.

Chapter III

Sutras 1-6 describe the hells.

Sutra 1, names the 7earths i e., the 7 parallel planes of earth below ours.
,, 2, gives the number of hells in each earth.
,,s 3-5, describe the hellish beings
,, 6, gives their ages.

Sutras 7-39 describe the *Madhya Loka* or middle regions, the abode of human & subhuman beings.

Sutra 7 names the Oceans & continents.
,, 8 gives their form & dimensions
,,s 9-32 deal with *Jambudvipa*, the central continent, which contains us.

Sutra 9 gives its dimensions.
,, 10 ,, ,, 7 divisions.
,, 11 ,, ,, 6 mountains, which make the 7 divisions.
,,s 12-13 describe the mountains.
,, 14 names the 6 Lakes on them.
,,s 15-16 give the dimensions of the 1st Lake.
,, 17 describes the island in it
,, 18 gives dimensions of other lakes & islands.
,, 19 describes the goddesses of the 6 islands.
,, 20 names the 14 rivers which rise from the 6 lakes & traverse the 7 divisions, 2 in each division.
,,s 21-2 name the direction in which the rivers flow & fall into the Ocean.

,, 23 gives the number of their tributaries.
,, 24 gives the dimensions of the 1st division. *Bharat ksetra.*
,, 25 gives the dimensions of the other divisions & mountains of the southern half of Jambudvipa.
,, 26 describes the Northern half.
,, 27 describes the conditions of life &c in the 1st. & last i.e., the extreme North & South divisions of *Jambu-dvipa.*
,, 28 describes the condition of life &c. in other divisions
,,s 29-30 describe the age of beings in 6 *bhoga bhumis* of Jambu dvipa
,, 31 describes the age of beings in *Videha.*
,, 32 gives the proportion of *Bharata ksetra* to *Jambudvipa*

Sutra 33 deals with the next continent *Dhataki khanda.*
,, 34 deals with the nearest half of the next continent *Puskaravaradvipa.*
,, 35 limits the habitat of man.
,, 36 classifies him.
,, 37 names the divisions, where man has to work for his living, i.e., the *Karma bhumis.*
,, 38 gives the maximum & minimum age of human beings.
,, 39 gives the maximum & minimum age of Sub-human beings

Chapter IV.

Sutra 1 gives the 4 orders of Celestial beings.
,, 2 ,, ,, thought-colours of the 1st 3 Orders.
,, 3 ,, ,, number of the classes of the 4 Orders
,,s 4-6 describe the grades in these Classes.
,,s 7-9 ,, their sexual life.
,, 10 names the classes of Residentials (1st Order)
,, 11 ... ... Peripatetics (2d. Order)
,, 12 ... ... Stellars (3d. ,,)
,, 13-15 deal with the Stellars.
,, 16-26 ,, ,, ,, Heavenly Order (4th.)
Sutras 16-17 give 2 main divisions of them.
,, 18-19 ,, their names & positions.
,, 20-21 ,, ,, characteristics, age, power, faculties, &c.

„ 22 gives their thought-colours
„ 23 gives the limits of the 2 divisions.
„ 24–25 deal with the *Laukantikas*.
„ 26 deals with the 4 *Anuttaras*.

„ 27 defines the sub-human species.

„ 28–42 deal with the ages of celestial beings.

„ 28 gives *maximum* age of Residentials.
„ 29-32 give maximum age of Heavenly beings.
„ 33–34 gives minimum age of Heavenly beings.
„ 35–36 gives minimum „ „ hellish beings
„ 37 gives minimum „ „ Residentials.
„ 38 gives minimum „ „ Peripatetics.
„ 39 gives maximum „ „ Peripatetics.
„ 40 gives maximum „ „ Slellars.
„ 41 gives minimum „ „ Slellars.
„ 42 gives age of *Laukantikas*.

Chapter V.

It treats of the Ajiva (Non–Soul) Tattva.

Sutras 1–3 give the 5 Astikayas, which are Dravyas also
„ 4–7 describe them, *Nirdesa*.
„ 8–11 give the *Sankhya*, number of their *pradesas*.
„ 12–16 give their *ksetra* & *sparsana*.
„ 17–22 give their functions.

Sutra 23 gives the definition (*Nirdesa*) of matter.
„ 24 gives the kinds of conditions of matter.
„ 25 gives the 2 kinds (*vidhana*) of matter.
„ 26–28 give the Cause (sadhana) of the 2 kinds.
„ 29–30 give the definition of Substance.
„ 31 gives the meaning of Permanence.
„ 32 gives the mode of dealing with contradictory attributes in the same substance
„ 33–37 give the rules of atomic combination to form molecules
„ 38 gives another definition of Substance.
„ 39–40 deals with Time as a Substance.
„ 41 defines Attributes.
„ 42 „ Modifications.

Chapters VI & VII deal with Asrava or Inflow.

Chapter VI

It deals with Asrava generally.

Sutras 1-2 define Inflow, in its 2 aspects of Subjective (*Bhāva*) & objective (*Dravya*) Inflow

„ 3 classifies Inflow into (*Punya & Papa asrava*) merit and Demerit Inflow.

„ 4 gives *svamitva* of Inflow & its *Vidhana*.

„ 5 gives *vidhana* of *Samprayika* (mundane) Inflow.

„ 6 gives *Sadhana* of *Samprayika*.

„ 7 gives Vidhana of a Sadhana or cause named Adhikarana (Jiva & Ajivadhikarana)

„ 8 gives nirdesa & vidhana of *Jivadhikarana*.

„ 9 gives nirdesa & vidhana of *Ajivadhikarana*.

„ 10-27 give cause of Asravas of the 8 Karmas.

- Sutra 10 gives the Sadhana of knowledge & conation-obscuring karmas.
- „ 11 gives Sadhana of Pain-feeling Karmas.
- „ 12 gives Sadhana of Pleasure-feeling Karmas.
- „ 13 gives Sadhana of right-belief-deluding Karma.
- „ 14 gives Sadhana of right-conduct-deluding Karma.
- „ 15-21 gives Sadhana of age Karmas,
  - Sutra 15 of hellish beings.
  - „ 16 „ sub-human „
  - „ 17-19 „ human „
  - „ 20-21 „ celestial „
- „ 22-24 gives Sadhana of Body-making Karmas.
  - Sutra 22 for (bad) asubha Karmas.
  - „ 23 „ (good) subha „
  - „ 24 „ Tirthankara „
- „ 25-26 gives Sadhana of family-determining (Status)
  - „ 25 for low-family-determining (Status)
  - „ 26 for high-family-determining (Status)
- „ 27 gives Sadhana of Obstructive Karmas.

Chapter VII.

Sutra 1 gives Nirdesa and 5 vidhanas of *Vrata*, vow.

„ 2 „ 2 Vidhanas „ „

„ 3 „ 5 Sadhanas for each vow.

„ 4-8 „ the kinds of 5 Sadhanas.

- Sutra 4 „ „ „ „ „ for 1st vow
- „ 5 „ „ „ „ „ 2nd „

„ 6 „ „ „ „ „ 3rd „
„ 7 „ „ „ „ „ 4th „
„ 8 „ „ „ „ „ 5th „

„ 9-12 „ more sadhanas:
„ 13 „ Nirdesa of subject-matter of 1st vow.
„ 14 ... ... 2nd ...
„ 15 ... ... 3rd ...
„ 16 ... ... 4th ...
„ 17 ... ... 5th ...
„ 18 Nirdesa of a man with vows, *Vrati.*
„ 19 Vidhana ... ...
„ 20-22 Nirdesa of a man with partial vows.
„ 23 Sadhana, of a Vrati.
„ 24-37 gives 5 Sadhanas for each of the 5 Vidhana of vows and 7 of a *Vrati.* And 5 for Peaceful death.
„ 38-39 Nirdesa of Charity.

Chapter VIII.

It deals with Bondage.

Sutra 1 Sadhana of Bondage
„ 2 Nirdesa of „
„ 3 Vidhana of „ 4 kinds
„ 4 Nirdesa and 8 Vidhanas of 1st kind
„ 5 gives number of these 8 Vidhanas
„ 6-13 „ names of classes of these 8 Vidhanas
„ 14-20 „ the Vidhana of the 2d kind
„ 21-23 Nirdesa of the 3rd kind
„ 24 „ „ 4th „
„ 25 Nirdesa and vidhana of Punya
„ 26 „ „ „ of Papa

Chapter IX.

It deals with Stoppage and Shedding.

Sutra 1 Nirdesa, of Stoppage.
2 6 Sadhanas of „
3 1 „ „ „ and of Shedding.
4 Nirdesa and Vidhana of 1st Sadhana.
5 ... ... 2d ...
6 ... ... 3d ...
7 ... ... 4th ...
8-17 deal with the 5th Sadhana

Sutras 8 gives Nirdesa
9 „ Vidhana.
10-12 „ Svamitva.
13-16 „ Sadhana.
17 „ Sthiti and Adhikarana.
18 Nirdesa and Vidhanas of 6th Sadhana.
19-44 deal with the 7th „ (Tapa).
Sutra 19 Nirdesa and 6 Vidhanas of External austerity (Tapa).
„ 20 „ „ „ Internal „
„ 21-25 Vidhanas of 5 „ „ „
„ 22-26 Nirdesa and vidhanas of these 5 Vidhanas.
„ 27 Nirdesa and Svamitva; and Sthiti of the 6th Internal tapa, i.e. Concentration.
28-4 Vidhanas of Concentration.
29 Nirdesa of the 4 „ „ „
30-33 „ and Vidhana of the 1st or Arta concentration.
34 Svamitva.
35 Nirdesa, Svamitva and Vidhana of 2nd.
36 „ „ and Vidhana of 3rd.
37-8 Nirdesa, Svamitva and Vidhana of 4th.
39 Names of 4 Vidhanas of 4th.
40 Sadhana and Adhikarana of these 4 Vidhanas.
41-44 Nirdesa of the first two of these 4 Vidhanas.
45 give Svamitva and Sthiti of Shedding.
46 Nirdesa and Vidhana of Nirgrantha.
47 Sadhana of Nirgrantha

Chapter X.

Sutra 1 Sadhana of Perfect Knowledge.
2-4 „ and Nirdesa of Liberation.
5 Adhikarana of Liberation.
6-8 Sadhana of this Adhikarana.
9-12 Sadhana and Vidhanas of Liberated Souls.

The Scope of the Book.

As to the Scope of the contents of the different chapters, the following analysis may be useful.

I.

Sutras.
4,5,6,7,8, Categories and Predicables & *Logic.*
9-33 Pramana. *Psychology, Induction, Deduction, Logic.*

II.

1-10 *Metaphysics.*
11-12 *Psychology.* 13-22 Mineralogy, Physics, Zoology.
15-20 *Physiology and Anatomy*
21-24 *Psychology.*
23 Zoology. Psychology.
25-30 Transmigration. (Theology).
31-35 Embryology. (Theology-Hellish and Celestial beings.)
36-49 Physiology. Anatomy. Theology (Angels.) Physics (Electric body.)
50-53 Physiology " " "

III.

1 Mineralogy and Geology.
2-6 Theology (Hells)
7-35 Geography. 36-89, Anthropology.

IV.

1-12 Heavens. Theology; and Astronomy (12, 13, 14, 15)

V.

Metaphysics. Physics. Chemistry (25-28) Space 1,4,6,7,9,12,18 Matter 1,4,5,10, 11,14,19,20,23,28 33,37
Time 22,39,40. Heat 23
Motion | 1,4,5,7,8,13,17 Light 23,24.
Rest | Sound 24.19.
Soul 3,8,15,16,21.
Substance 29,30,31,38,41,42.

VI.

Psychology-Connection between mind and matter. (The mighty influence of mind on matter).

VII.

Ethics in the light of Psychology.

VIII.

Physics and Psychology. Kinds and Character of Connection between mind and matter.

IX.

Asceticism in the light of Psychology and Physics-Psychology.

X.

The GOAL

Peace to All Beings!

OPTIMISM OF LIFE.

(By. Herbert Warren, 81 Shelgate road, Battersea, London S. W.)

Some of our suffering is caused by ourselves. If I have a sore knee through carelessly getting off a moving omnibus, the suffering is due to my own action. Is all our suffering caused by *ourselves*? *If not*, we *must* assume the possibility of suffering without causing it: is such an assumption rational? It is very common, and is the cause of much pessimism; but upon reflection it will be seen that it is not reasonably tenable; for it would be against the law of justice, and there would be no guarantee against suffering, we should always be liable to be the victims of circumstances If by being careful we can avoid suffering, then it is impossible to suffer if we are careful to avoid it; this means that it is not possible *to suffer without having a hand* in bringing it about. So we must conclude that all our suffering is caused by ourselves.

It is necessary to remember, however, that events have two causes, namely, the substantial (upadana) and the instrumental (nimitta); and when we say that all our suffering is caused by ourselves it means that it has ourselves as its substantial cause; we cannot be the instrumental cause of our own suffering; in order that we may suffer there must be some not-self thing or being acting upon us. And when we suffer something which we cannot connect up with any action of our own as its substantial cause, we are apt to blame the instrumental cause, especially if it be a person or other living being. It would be absured to blame the earth for hurting our knee, and it would not be proper to blame a cat if we tease it and it scratches us in return; the earth will not hurt us if we are careful, nor will the cat scratch us.

If we are to believe that all our suffering is caused by ourselves, we must believe in the extension of our life backwards into the past before our birth here; because there are many *things we suffer in this life* which cannot be accounted for by anything we have done in this life. This is especially the case in young life, such as where *kittens die* from starvation through being born to a cat without milk; it is

impossible to explain such a case by anything done by the kittens in this life. But this belief in previous existence is certainly preferable to the belief that we suffer without causing it. It is sometimes objected to on the ground that we do not remember it. But this fact is not proof; during sleep we do not remember the previous day's existence.

The search for an explanation of suffering is one of the main themes of philosophy; and if we believe our suffering to be caused by *ourselves*, then we *have* an explanation of it. When we know the cause we have the explanation,—that our sore knee, for instance, is due to falling down,—and we do not go on asking questions as to why were we born to suffer, why is God so unkind as to let us have a sore knee, and so forth. On the other hand, if we do not believe that our suffering is caused by ourselves, then we shall find it difficult to get a satisfactory explanation of the suffering. If we are the causes of our own suffering, then we need not repeat the causes, and consequently need not suffer. This is surely an *optimistic* view.

Is optimism possible while the world suffers ! This is perhaps a side issue, but it may very well be brought in at this point. Is it possible for one man to be happy while he knows that another is miserable ? Is it possible for one soul to be enjoying the blissfulness of heaven while he knows others are suffering the torments of hell ? While we are the cause of our own suffering, we are to a large extent the instrumental cause in the suffering of others; and anybody who sees to it that he does not inflict cause, or consent to the suffering of any *other being* will be able to be optimistic; he will know that he is not and will not be instrumental in the world's suffering. And he will relieve such suffering as he can. Also, pity, sympathy, etc, are not contradictory of optimism, a state of pity is not a miserable state.

If, then, we stop renewing the causes of our suffering, we shall not suffer, and life will be entirely enjoyable. In order to stop the causes, we must know what *they are*; and *one* of the chief ones is himsa or being instrumental in the suffering of others. Generally speaking, if we know that some particular kind *of* action causes us pain, we stop it. Others have found out what

activities do cause pain, and have stopped them; and have given us the benefit of their discoveries. These are embodied in the ordinary moral codes, that is to say, we stop the causes of much suffering by practising kindness, truthfulness, honesty, morality, and contentment with limited possessions.

Much of the suffering we endure is the result of something we have enjoyed doing: so to stop the causes means in some cases to stop doing something we enjoy doing. And here comes in difficulty.

After we have left off repeating those activities which cause suffering, we have to wait until the old effects have worn off, and here comes in the question of the possibility of getting rid of the effects more quickly than they would naturally take. This possibility is illustrated by the tale already elsewhere mentioned of a man who had just committed a murder and was walking through a wood carrying the head of the person whom he had just decapitated. He came across a meditating monk, and said to this monk, "Now tell me what my proper duty is. I have just committed this murder, and if you do not tell me I will cut your head off too."

The monk did not wish to be killed; he uttered three words of duty, namely, concentration, self-control, and stopping the inflow of karma, and then, having the power of levitation, rose up and disappeared. The murderer had heard of these things in his youth; he stood still and began to think; his body was more or less smeared with blood, ants crawled up and eat into his body; he went on meditating, and in about half an hour all his karmas worked out and he was in the final condition of blissfulness called Moksha. This undoutedly would be an exceptional case, but it would show the possibility. The theory upon which these things are based *is that the soul is* already in existence in each living being, complete; it does not have to be constructed; it is choked up with dross and as soon as this is removed, be it done a minute or a million years, the soul is clean and pure, with all his qualities liberated, no more ignorance, no more mistakes.

If all our suffering is due to something we do or have done, if we never suffer anything which we have not started,

then if we cease renewing the causes, our life will be entirely enjoyable as soon as the effects of past wrong actions have exhausted themselves. We none of us have any knowledge of a life which is entirely enjoyable; such a thing is necessarily for us a matter of inference, hope, belief, faith; but there are one or two facts which support the belief. First, life at present is not altogether painful, part of it is enjoyable; and so we can conclude to the possibility of a life entirely so. Secondly, pain is always resented, and looked upon as an intruder; we always try to avoid it, and there is in the mind the permanent though perhaps unrecognized conviction that life ought to be entirely free from pain and misery; we instinctly take it for granted that pain is wrong an something to be got rid of. And we do not, according to Jainism, have to cease to exist in order to avoid it.

It may perhaps be as well to mention here that our present actions are not the effects of past actions. It is our present sufferings which are the effects, the reaction upon us of the not-self universe; our present actions are free at every moment. If our present life is the effect of our previous life or lives, and is therefore necessarily what it is; and in its turn becomes the cause of our future life, then there would be no hope; but the relation of cause and effect does not subsist between actions and subsequent actions; it subsists between actions and subsequent experience or reaction upon us. Action is free.

So it would seem that by beloving that there is the relation of cause and effect between our doings and our experiences, and that by ceasing to renew the causes of suffering and so come into an entirely enjoyable life,—by so believing and acting accordingly it will be possible to be optimistic in spite of all the pain and misery that there are in life.

H. Warren.

London.

NEW PUBLICATIONS.

Lakhimpur
30-11-17.

To,

FRIENDS OF THE JAIN COMMUNITY.

My dear friends,

The day of activity has dawned in the world. People of other nations have not only shaken off their slumber and got up from their beds, but are actually busy with their ploughs in making the soil of thoughts fertile. They have joined hands for the common weal and are *helping their neighbours* if they are short of oxen or the plough. This co-operation is not a new thing in India. It has been in existence in all its villages from time immemorial. The dawn has, however, given a new life to it. They are all very busy for common good and are gradually banishing the idea of private property of dark ages Some are engaged in weeding and some in irrigating the soil; some are making new plantations and some are working as partners of a common firm.

You also awake and arise and have your share of work in the common struggle against the evil spirits which take pleasure in ruining the fruits of all labour towards making the field refreshing green-pleasant and useful. Your sleep too has not been undisturbed by them.

Now rub your eyes and see what is going in all around you. The *afimchi* (opium-eater) China is also on her legs and has shaken off narcotic influence. Democratic spirit has infused a new life into it. The battles of freedom and justice are being fought all over the world against tyranny and oppression of the Control Powers. Evil spirits are being quickly banished. Even in India *the Moslems and Hindus have* started a Limited Company for certain common objects. No religious animosities stand in their way. Its branches and off-shoots are spreading all around and making the growth of the mushrooms and fungi impossible. Fortunately some of the shares are yet to be sold and unless you hasten to purchase them even with a premium, you lose your opportunity for ever. Your Capital (the potential energy) will remain buried under ground. It will bring no interest and is likely to be lost for all generations to come; as often this upheaval they will not be in a position to dig it out and spend it on useful purposes.

The Swetamber Jain Conference, the Digamber Jain Mahasabha, the Sthanakvasi Jain Conference, the Swetamber Graduates' Association, the Swetamber Jain Association of India, the Maharashtra Digamber Jain Sabha, the Madras Jain Association, the Arrah Central Jain Publishing House, and Jain periodicals and newspapers are different parts of your body and their movements show that your corporal body is still active. This indicates that you have got life and are not yet dead. There is still hope that you will recover from torpor sooner or later. This enboldens one to predict that re-birth will not be necessary for fresh activities. There is hope of renewed energies in this very life.

However, your spiritual and ethereal self are not working. You cannot be said to be awake when they are asleep. Drums in the form of public meeting and agitations are beating near you. It is wonder that you are even then unaware of the fact that the sun has risen up; and you still on your bed like the Delhi Mogul Emperors of the nineteen th century.

During your sleep the community has lost many jewels which are now shining in other places and forming an ornament to them. It has lost its respect in the eyes sf the Government, in the eyes of other communities, nay, in the eyes of even its own people. It has been censured, maligned, & severely criticised. It is considered to be a thing of no consequence in the comity of nations and in the arrangement ot nature. It is regarded as a useless freak of nature on the surface of the earth. you are responsible for this state of things. God helps those who help themselves. Seeing that you do not care for them, they have also deserted you. Indra has reserved its shawess of blessings for others. Varuna does not fertelize your soil. Sarasvati is playing on the harp of your opponents. Eloquent speeches are not threfore your spare. Important office of state are too high for you. The cabinet and the Council do not find you worthy of their society. The Hindus are obliged to believe that your name on the list of members is only a vocenary vil in the court of the Hindu University. You cannot enlist yourself even among the followers, nothing to say of being a leader or a commander. The total annhilation is there-

at the rate of about one percent a year. 200 much sleep naturally shortens life.

Arise and be awake, therefore, if you want to have your place in the world. Remember, you are Jains, the followers of Jinas—those who conquered those evil spirits that were a plague to the whole world, a curse to gods, and a trouble to *Allah.* Think for a while of the potent strength in you which is lying dormant. The world wide war which is making a havoc in the world might have been over long since by the melodious heating of your peaceful heart. Young hearts and old heads might have cooperated in putting an end of it. But, alas! you are asleep. The Jain papers are slow in publishing what is useful to peace & welcome news of hair splitting which add, fuel to fire. What a great fall! mutual admiration, co-operation & support in times of need are things of the past for the Jain Comminity. However, there is yet time. Other people have made the iron pot. It is your duty now to strike while it is hot. If it grows cold, no human labours will be able to mould it into the desired and useful shape.

Arise and be awake. Life may not become entint. Work for the salvation of the world if you want to have your salvation.

Yours Cordially,
Chaitandas
(one devoted to the spirit of the world and the heavens.)



मनुष्यके लिये प्रत्येक समाजमें अपना व्यवहार शुद्ध और हितानुकूल रखना बड़ा कठिन कार्य है, परन्तु विचार करके देखा जाय तो मनुष्य जीवनका सारा दारमदार इसीपर निर्भर है। जो लोग प्रति समय अपने आपको स्थिर नहीं रख सकते वे व्यवहारमें बड़ी२ गलतियां कर डालते हैं। जो कि जन्मभर उनके लिये कण्टक स्वरूप खटकती रहती हैं। हमको हर समय इस वातका पूरा ध्यान रखना चाहिये कि कोई गलती कभी हमसे न होने पावे। यद्यपि ऐसा होना अत्यन्त कठिन एवम् असाध्य है कि मनुष्य सदैव एकसा योग्य आचरण करता रहे। कभी भोजनके समय एक प्रकारके भाव रहते हैं कभी अन्य प्रकारके भाव रहते हैं, कभी शयन करते समय वैराग्य रहता है, कभी रागांश रहता है, परन्तु तौ भी जो मनुष्य अपने अन्तरंगमें असावधानीसे बचनेका उपाय सोचता रहता है वह अनुचित गलती कभी नहीं कर सकता। यद्यपि कषायोंके उदयसे परिणामोंमें किञ्चित हेरफेर होता रहता है तथापि कषाय उसके इतनी प्रचण्ड नहीं हो सकती जिससे कि वह कोई बड़ी गल्ती कर बैठे। अतएव हम लोगोंका प्रथम कर्त्तव्य है कि हम अपने अभ्यासोंको सुधारें। कभी अपने मन वचन कायसे कोई व्यर्थ वितण्डावाद न होने देवें।

बहुतसे मनुष्य यह सोचते हैं कि हम सभ्य हैं। हम कभी गाली गुफ्तार नहीं करते तौ भी नौकरको कभी २ जांय वे जांय डांटनेमें या जोरू (स्त्री) को कभी २ दो चार धौल तमाचे मारनेमें क्या हर्ज है, हमारा छटे छमासेका क्रोध कुछ हानिकारक नहीं होगा इत्यादि २ परन्तु विचार करके देखा जाय तो प्रति समयका वर्त्ताव मनुष्य जीवनमें हेरफेर करता है।

किसी मनुष्यको यदि हम एकदिन क्रोध या ईर्षादिके वश कुछ मर्मभेदी वचन कह डालें तो हम तो क्षणभरके पश्चात शान्ति सुखमें आकर सब भूल जायंगे। परन्तु जिस मनुष्यसे मर्मभेदी वचन कहे गये हैं वह बहुत दिन तक नहीं भूलेगा। सम्भव है कि जन्मभर न भूले। इससे यह होगा कि वह अपने हृदयमें सदैव हमारी ओर घृणाकी दृष्टिसे देखेगा तथा समय२ पर अन्यान्य लोगोंसे भी हमारी मनमानी निन्दा करेगा। इस एक ही समयके क्रोधसे सैकड़ों मनुष्योंमें हमारा अपयश फैल जायगा। इसी प्रकार अनेक ऐसे व्यवहार हैं जिन्हें असावधानीसे मनुष्य क्षणिक समय तक करता है और बहुत समय तक फल भोगता है।

हमारी बहुतसी भोली बहिनें प्रथमावस्थामें अपने पति पुत्रादि मनुष्योंसे कोई घरकी वस्तु छिपा लेतीं हैं या झूठ बोल बैठती हैं बस फिर चाहे वे अपने इस अभ्यासको बार २ काममें न लावें या छोड़ ही देवें परन्तु उनका जो गौरव चला जाता है वह फिर वापिस नहीं आता।

पृथ्वी पर जितना मान या जितनी इज्जत आबरू है, वह सब व्यवहारके बल पर ही खड़ी है। अहा; वह मनुष्य कितना धन्य है जिसने अपना व्यवहार हर समय और हर मनुष्यके साथ समुचित रीतिसे सदा पालन किया हो।

मनुष्य उचित रीतिसे संसार यात्रा पूरी करे तो कर्मबन्ध भी बहुत कम होता है। सदैव क्रोध, मान, माया, लोभ, इन चार कषायों की तेजीसे कठिन और मन्दतासे मन्द बन्ध होता रहता है। यदि मनुष्य एक वार १ क्षणके लिये भी तीव्रतर कषायोंमें मग्न हो जावे तो करोड़ों वर्षोंके लिये अशुभ कर्मोंका परदा आत्मा पर आ जमता है, नर्क निगोदके दुःख भी यही कर्मबंध सहन कराता है।

अपनी समाजमें मनुष्यके कर्तव्यका ज्ञान अत्यन्त कम है, यही कारण है कि घर २ में कलह फूट दीखती है, तथा अनेक घृणित कार्य नित्य प्रति सुने जाते हैं। जो लोग विद्याहीन हैं उनकी तो बात ही क्या परन्तु नाममात्रके स्वाध्याय करनेवाले और अपने आपको योग्य समझनेवाले नरनारी भी **योग्यायोग्य** मिश्रित व्यवहार करते हैं। इधर शास्त्र भी सुन आए, मन्दिर भी हो आए, उधर घरमें आकर भंग, तमाखू, ताश, जुआ आदि सभी करने लगते हैं।

इस व्यवहारका यह फल होता है कि पढ़े लिखे मनुष्योंकी साख भी पृथ्वीसे उठी जाती है।

अतएव समस्त सुज्ञबन्धु! एवं बहिनोंको चाहिये कि अपने प्रत्येक कार्यको शुद्धतासे करें। यदि धर्मात्माओंमें गणना कराई है तो अपने वचनोंको सदैव मिष्ठ हितकर बोलनेका प्रयत्न करना उचित है।

और हृदयको शुभ चिन्तवनकी तरफ खींचना उचित है। तथा शरीरसे यदि बहुत परोपकार न हो सके तो न सही परन्तु दूसरोंके सतानेमें व कुशीलादि घृणित कार्योंमें कभी नष्ट न करना चाहिये।

यदि किसीको शिक्षा भी देनी हो तो सरलतासे गंभीरतासे दो। अपने व्यवहारमें कालिमा मत लगने दो।

व्यापारादि गृहस्थीके कार्य करनेमें भी इहलोक परलोकका विचार कर न्याय मार्गका अवलम्बन करके साफ २ व्यवहार करो। मनुष्य समस्त जीवनभर धनार्जनके लिये परिश्रम करते २ मृत्यु शय्यापर पड़ जाते हैं परन्तु अन्तमें सुखी वही होते हैं। जिसका व्यवहार ठीक रहा होगा, यश भी उसीका रहता है। जो मूर्ख लोग हैं वे धनको इस तरह अटका देते हैं कि न आप ही सुख पाते हैं न पीछेसे देश या जाति या सन्तानको ही कुछ लाभ होता है। यह पाप हमारी बहिनोंके शिरपर बहुत है। जो बहिनें लाखों करोड़ोंकी स्वामिनी होती हैं जो कि अपने धनसे धर्मका, जातिका, देशका सैकड़ों अनाथ बच्चोंका भला कर सकती हैं। वे बहिनें सब कामोंसे मुख मोड़ झूंठा सच्चा एक लड़का गोद लेकर झूंठी गृहस्थी बसा जाती हैं। बड़े पुण्य कर्मसे प्राप्त हुई लक्ष्मीको जबरदस्ती सुनार, दर्जी, आतशबाजी वालोंको दे डालती हैं। और व्यर्थही देशके धनको बरबाद करती हैं। अपने धनका व्यवहार

करना नहीं जानतीं। इसी कारण न स्वयं सुख पाती हैं न धन ही सार्थक होता है।

अतएव समस्त बहिनोंको चाहिये कि चाहे किसी अवस्थामें हों परन्तु प्रत्येक काम सोच समझ कर करैं। एक समय भी असावधानीसे व्यवहार न होने देवैं। इस व्यवहारको बनानेके लिये पुराणोंका स्वाध्याय करना बड़े २ लोगोंकी जीवनी पढ़ना यह अत्यन्त हितकारी है।

मनुष्यको सदैव भावना करनी चाहिये कि जो कुछ मेरे पास है मेरा तन मेरा धन मेरा परिश्रम समस्त ही स्वपर कल्याणकारी कार्योंमें व्यय होना चाहिये। यह आत्मा संसार-रूपी सरायमें सचेत होकर पापोंसे बचकर अपने सर्वस्वको उचित स्थानमें लगाता रहे और गलती करनेका अभ्यास छोडदे तो निरपराधी हो जावे। संसार बन्धनसे भी कतिपय भवोंमें अवश्य छूट जावे।

सेविका—चन्दाबाई—आरा।

जैन पारिभाषिक शब्दकोष।

अत्यन्त हर्षका विषय है कि हमारी जैन समाजमें कुछ दिनोंसे जागृति हुई है। हमारे अनेक गण्य मान्य धनाढ्य महाशय भी जैन जाति व जैनधर्मकी उन्नतिके लिये अनेक उपाय सोचने लगे हैं। तथा कार्य करने लगे हैं। सबसे पहिले जैन जातिमें अत्यावश्यकीय व समस्त बुराइयोंकी जड़ काटनेवाली विद्याकी उन्नति करनेपर लक्ष्य गया है। जिसके लिये आज प्रायः २० वर्ष हो गये, प्राचीन संस्कृत विद्या और धार्मिक ज्ञान करानेके लिये जगह २ छोटी मोटी पाठशालाएं स्थापन करके पठनपाठन करनेका कार्य जारी किया है। अनेक जगह जैन पुस्तकालय भी स्थापन किये गये हैं तथा स्वाध्यायके प्रचारका भी उपाय महासभाके द्वारा हो रहा है। स्वाध्यायके प्रचारमें *ग्रन्थोंकी प्राप्ति न होना एक बड़ा* भारी विघ्न था सो भी छापेके प्रभावसे दूर हो गया है। अब सिवाय अलीगढ़ और खुर्जाके कोई भी ऐसा प्रांत व जिला व ग्राम नहीं है जहां कि छापेके ग्रन्थोंका पठनपाठन न होता हो। वे सब कार्य जैन शास्त्रोंके कथनको सत्य श्रद्धान करनेवाले प्राचीन पद्धतिके पक्षपाती विद्वानोंके उपदेशका ही फल है। इधर हमारे आधुनिक अंगरेजी विद्याके विद्वानोंने भी सभा सोसाइटियां करके तथा इंगरेजी गजट वा इंगरेजीमें जैन ग्रन्थोंको प्रकाशित करके व प्रधानतासे लौकिकोन्नतिका कार्य करने लगे हैं। परन्तु जैन शास्त्रोंकी आज्ञाके विरुद्ध प्राचीन समीचीन रीतियोंको उठाकर विधवाविवाह प्रचार व वर्णव्यवस्थाको उठाकर एकाकार करके भोले भाइयोंको बहकाकर समीचीन मार्गसे भ्रष्ट कर देनेका दुःसाहस करते हैं व इसीमें उन्नति समझकर स्वतंत्रतासे उच्छृंखल मार्ग ग्रहण किया है सो ठीक नहीं है।

यद्यपि विद्योन्नतिके लिये प्रायः सब ही उपाय हो रहे हैं परन्तु दुर्दैववशमें भी

जैसी चाहिये वैसी विद्याकी उन्नति नहीं हुई। पांच सात मोरेना जैनसिद्धांत विद्यालयके ही पंडित नजर आते हैं। इसका कारण क्या है? इसके कारण न होना हमारी समझमें तीन हैं।

१. पढ़ाईका क्रम ठीक न होना।

२. समस्त पाठशालाओंकी पढ़ाई एक न होना।

३. योग्य अध्यापकोंका न मिलना।

क्रम ठीक न होनेका कारण पाठशालाओंमें पढ़ाने योग्य समस्त प्रकारके ग्रंथ बने हुए व छपे हुए तैयार नहीं हैं। और समस्त पाठशालाओंका एकसा क्रम न होना, पाठशालाओंके संचालकोंकी मान कषाय व अज्ञानताके प्रभावसे है और योग्य अध्यापक थोड़ा वेतन होनेसे आदर सत्कार न होनेसे जैनी तो तैयार ही नहीं होते। जो होना चाहते हैं उनके लिये अध्यापक तैयार करनेवाली पाठशालाओंमें स्कॅालरशिप व खर्चका अभाव है। लाचार थोड़े साधारण वेतनके अजैन (ब्राह्मण) पंडित रख कर ही विद्यार्थियोंके पढ़ानेका प्रबन्ध करते हैं सो ब्राह्मण पंडित जैनियोंकी परिभाषा व जैन ग्रंथोंसे अनभिज्ञ होनेसे कुछका कुछ पढ़ाते व जैन ग्रंथोंकी जगह लघु सिद्धान्त कौमदी, तर्क संग्रह आदि अजैन ग्रंथोंको पढ़ानेकी प्रक्रिया ही चलाते रहते हैं।

इन कारणोंमेंसे पढ़ाईका क्रम ठीक करनेके लिये तो जो प्राचीन पाठ्य ग्रंथ हैं वे टीका टिप्पणी सहित छपने चाहिये और जो पाठ्य ग्रंथ प्राचीन ग्रंथोंमें दुष्प्राप्य हों वे विद्वानोंको द्रव्य सहायता देकर नये बनवाना चाहिये। और प्रकाशकोंको द्रव्य सहायता देकर छपवाना चाहिये। और समस्त पाठशालाओंकी पढ़ाई एकसी करनेके लिये महासभाके विद्यालय और परीक्षालयके संचालकोंको बम्बई जैन प्रांतिक सभाके परीक्षालयवालोंसे मिलकर महासभामें प्रस्ताव करके दोनों परीक्षालयोंको मिलाकर एक ही परीक्षालय द्वारा समस्त जगहकी पाठशालाओंका क्रम ठीक करना चाहिये। इसके लिये कमसे कम ४ योग्य इन्स्पेक्टर तनखा देकर नियत करने चाहिये। जैन व अजैन विद्वानोंको योग्य अध्यापक तैयार करनेके लिये जैन परिभाषा शब्द कोष व पढानेकी तरकी व सिखानेवाली पुस्तकें तैयार कराकर उनको पढ़ाकर मोरेनाके जैन सिद्धांत विद्यालयमें एक अध्यापक क्लास खोलना चाहिये व परीक्षालयमें अध्यापकोंकी परीक्षा भी होना चाहिये। इन सब उपायोंका प्रबंध करनेके लिये महासभा व मालवा जैन प्रांतिक सभा व बम्बई जैन प्रांतिक सभा आदिको मिलकर काम बांटकर केवल कागदी प्रस्ताव न करके काम करनेका शीघ्र ही प्रयत्न करना चाहिये।

पाठक महाशय! उपर्युक्त व्यवस्थामें एक **जैन पारिभाषिक शब्दकोष** बननेकी केवल अध्यापकोंके लिये बनाने व छपवानेकी जरूरत बताई है सो केवल अध्यापकोंके लिये ही नहीं किंतु जैन विद्या संबंधी समस्त कार्योंमें व अजैनी विद्वानोंमें जैन धर्मके प्रचार करने वा प्रभावना करने, स्वाध्याय प्रचार करने व इंगरेजी बाबूलोगोंको जैन सिद्धांत समझा कर जैन सिद्धांतोंके भक्त

बनाने वगैरह समस्त कार्योंमें इसकी बड़ी भारी आवश्यकता है इसकी कितनी आवश्यकता है सो पीछे बताई जायगी। पहिले आप यह समझ लीजिये कि यह पारिभाषिक शब्दकोष कैसा बनेगा।

वर्तमान समयमें जितने कोष हैं और जितने बड़े २ कोष छपे हैं उनमें जैनियोंके ग्रंथोंमें जो जो शब्द आते हैं उनका अर्थ नहीं मिलता और जिनका साधारण अर्थ मिलता भी है तो पारिभाषिक जो खास जैनाचार्योंने जो अर्थ माने हैं वे अर्थ नहीं आते। जैसे उन कोषमें सम्यग्दर्शन, स्पर्द्धक, अवग्रह, आस्रव, ईहा इत्यादि शब्दोंका अर्थ देखेंगे तो सामान्य अर्थ भले प्रकार सम्यग्दर्शन शब्दको देखना, स्पर्द्धक शब्दका स्पर्द्धा करनेवाला, अवग्रह शब्दका ग्रहण करना, आस्रव शब्द ही नहीं मिलेगा। आश्रव शब्द मिलेगा तो उसका अर्थ सुनना आदि मिलेगा। ईहा शब्दका अर्थ इच्छा मिलेगा। तब बताइये कि अजैनी विद्वान् जैन ग्रंथ देखें और जिन शब्दोंका अर्थ न आवे तो कोषकी सहायता लें परंतु कोषमें उक्त अर्थ ही मिलेंगे। सम्यग्दर्शनका निर्दोष श्रद्धान करना, स्पर्द्धक शब्दका अर्थ कर्मोंकी वर्गणा विशेष इत्यादि अर्थ थोड़ा ही मिलेगा? इसी लिये जैन पारिभाषिक शब्दकोषमें पहिले बड़े २ अक्षरोंमें वह शब्द रक्खा जायगा। वह शब्द संस्कृत है व प्राकृत वा अपभ्रंश (हिन्दी भाषा वगैरह) इसका चिन्ह लिखा जायगा। उसके बाद उस शब्दका क्या अर्थ है सो लिखा जायगा। वह अर्थको कौनसे ग्रंथोंमें किस जगहपर माना गया है, उन सबके श्लोक व वाक्योंका प्रमाण लिखा जायगा। प्रमाण वाक्योंका हिंदीमें अर्थ लिखा जायगा तत्पश्चात् इस शब्दकी परिभाषा व लक्षण जैनियोंने क्या माना है वह अर्थ हिंदीमें लिखा जायगा और कौन २ से ग्रंथमें उसके लक्षण किस २ प्रकारसे माने हैं, सब ग्रंथोंके मूल वाक्यके श्लोक लिखे जायंगे। उन लक्षण वाक्योंका शब्दार्थ लिखा जायगा। जब शब्दका एक मुख्य अर्थ व लक्षणोंका उक्त प्रकारसे उल्लेख हो जायगा तब उस शब्दके दूसरे क्या क्या अर्थ होते हैं और वे अर्थ कौन २ से कोष वा ग्रंथमें माने गये हैं उनके प्रमाण सहित लिखे जायंगे। भावार्थ—जिस किसी भी पदार्थका स्वरूप जानना होगा उसे यह कोष कल्पवृक्षकी तरह बता देगा।

इस प्रकार जैन मतके तत्वार्थसूत्र व इसकी समस्त टीकायें तथा चारों अनुयोगोंके प्रसिद्ध २ ग्रंथोंके समस्त शब्दोंको स्वतंत्रतासे संग्रह करके अकारादि क्रमसे लिखकर यह कोष तैयार करना पड़ेगा। और इस शब्दकी उत्पत्ति कौनसे धातुसे कौनसे प्रत्ययसे जैन व्याकरणानुसार हुई सो लिखी जायगी।

इस कोषके छप जानेपर फायदे क्या क्या होंगे सो सुनिये।

१. स्वाध्याय करनेवाले भाई जब स्वाध्याय करेंगे और उस समय कोई भी शब्द ऐसा आ जायगा कि उसका लक्षण व स्वरूप समझे बिना आगे समझमें ही नहीं आता है, उस समय यह कोष पास रखनेसे झट खोलकर

उस शब्दका अर्थ - स्वरूप समझ लेंगे तो स्वाध्याय तपका पूरा फल मिलेगा।

२. जब कोई महाशय सभाका शास्त्र बांचेगा तो उनके शब्दोंके अर्थ नहीं आनेसे संक्षेप करके या गोलमाल करके श्रोताओंको समझा देते हैं, किसी शब्द व पदार्थ का स्वरूप श्रोता पूछते हैं तो वक्ताको याद न रहनेसे कह देते हैं कि इसका स्वरूप कठिन है, विस्तारसे है, सो फिर कभी समझना। इससे श्रोताओंकी ज्ञानोन्नतिमें विघ्न पड़ता है। यदि कोष पासमें रक्खा होगा तो चट निकालकर बता देंगे वा समझा देंगे।

३. छोटी २ जैन पाठशालाओंमें अल्पज्ञ जैनी अध्यापक तथा जैन धर्मसे निरे अजान अजैनी ब्राह्मण अध्यापक ही जैन धर्म पढ़ाते हैं विद्यार्थीगण उसमें अनेक शब्दोंके अर्थ भावार्थ पूछते हैं तो वे भी टाल देते हैं यदि कोष पाठशालामें रहेगा तो प्रत्येक शब्द व पदार्थका स्वरूप अध्यापक समझा सकता है तथा चतुर विद्यार्थी स्वयं कोष देखकर मालूम करके अपना पाठ सार्थ याद कर लावेगा।

४. अखबारोंके द्वारा उपदेश मिलनेसे हमारे दक्षिणी, कर्णाटकी व गुजराती भाई भी स्वाध्याय करने लगे हैं। ग्रंथ उनकी भाषामें है नहीं, शास्त्र प्रायः ढूंढाड़ी व हिंदी भाषामें छपे हुए या हस्त लिखित मिलते हैं उनमें ढूंढाड़ी वगैरह हिंदी शब्दोंका अर्थ मालूम न होनेसे स्वाध्याय नहीं करते सो इस कोषके पास रखनेसे हरएक देशका भाई प्रत्येक पदार्थका स्वरूप हिंदीमें सविस्तर समझकर अपना ज्ञान बढ़ा सकेंगे।

५. अंग्रेजी संस्कृत पढ़े हुए अनेक जैनी अजैनी विद्वान् आजकल प्राचीन ग्रन्थोंका अवलोकन करनेमें उत्सुक हुए हैं उनको अंग्रेजीमें ग्रंथ मिल जांय तो कहना ही क्या? सो बौद्ध ग्रंथोंका प्रायः सब ही ग्रंथोंका अंग्रेजीमें अनुवाद मिल जानेसे ये लोग सबसे श्रेष्ठ बौद्ध मतको ही शिरोमणि मानने लगे। बौद्ध धर्म जैन धर्मकी नकल है सो असल मतको देखनेके लिये अंग्रेजीमें ग्रंथ नहीं। यदि संस्कृत ग्रंथ भी हों तो वे देख सकते हैं परन्तु जैनियोंके पारिभाषिक शब्दोंका अर्थ व शैली मालूम न होनेसे ग्रंथ नहि देख सकते। यही कारण है कि आज कल जैन धर्मकी आलोचना न करके सर्वत्र बौद्ध धर्म व पाली भाषाका ही पठनपाठन व प्रचार हो रहा है, यहां तक कि प्राचीन प्राकृत भाषामें हजारों जैन ग्रंथ होनेपर भी कॉलेजोंमें पालीभाषाका कोर्स रक्खा जाता है। और बौद्ध ग्रंथोंके देखनेका (जो कि सिवाय ग्रन्थ पाली भाषामें हैं) सुभीता कर दिया जाता है। इस प्रकारके जो विद्वान् दर्शनोंकी आलोचना पठनपाठन करनेवाले हैं उनके लिये यह कोष बहुत ही लाभ दायक होगा। सब विद्वान् जैन धर्मके कठिन २ ग्रंथ हिंदीमें देखनेमें समर्थ हो जांयगे और जब यह कोष लक्षणात्मक अर्थ बतानेवाला तैयार हो जायगा तो इंग्रेजी बंगाली वगैरहमें भी इसका अनुवाद होकर तुरत छप जायगा। तो जैन धर्म देखनेका प्रचार विद्वानोंमें बहुत जल्दी हो जायगा

इत्यादि अनेक लाभ हैं।

इस कोषके शब्द संग्रह करनेमें कमसे कम आठ दश हजार रुपये और कमसे कम दो पंडित निरंतर बैठकर काम करें तौ चार पांच वर्षमें तैयार कर सकते हैं। फिर उसकी प्रेस कापी लिखने वा छपानेमें पांच सात हजार रुपये व दो तीन वर्ष काल चाहिये। ऐसा एक प्राकृत कोष श्वेतांबरी जैन साधु राजेंद्रलालजीने बनवाया है जिसमें १ लाख रुपये तौ बनानेमें ही खर्च हो गये और अन्य १० वर्षसे छप रहा है। सो हाल आधा ही हो पाया है। इसी प्रकार काशीकी नागरी प्रचारणी सभाने एकदम २५-३० पंडित रख कर हिन्दी शब्दोंके संग्रह करनेका काम कराया था जिसमें २५-३० हजार रुपये खर्च हो गये। अब वह भी छप रहा है सो दो तीन वर्षमें छप जायगा।

छपानेके लिये रुपया लगानेवाले तौ अनेक जैन अजैन बुकसेलर मिल जायंगे क्योंकि इसको छपाकर वेचनेमें हजारों प्रतियोंकी खपत होगी सो छपानेवाला हजारों रुपये पैदा कर सकेगा परन्तु बनानेमें पांच सात वर्ष तक रुपया लगा सके ऐसा कोई भी ग्रन्थ प्रकाशक बुकसेलर वा धार्मिक संस्था नहीं है। धनपात्रोंमें कोई महाशय ऐसा समझदार नहीं है जो इस कोषकी जरूरत समझे व इसके बनानेमें रुपया लगाकर धनको सार्थक कर सके। ऐसे कोषके बनानेके लिये एक बार बाबू अर्जुनलालजी सेठी व दयाचन्दजी गोयलीयने प्रस्ताव करके एक लेख किसी जैन पत्रमें दिया था परन्तु उसका कोई फल नहीं हुआ। किसीने किसी प्रकारकी सहानुभूति तक न दिखाई। उसके बाद भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशिनी संस्थाने भी एक बार साहस करके बनानेके लिये विचार किया था और शब्द संग्रह करनेके लिये १६००० कार्ड (कागजके टुकड़े) व ग्रंथोंकी नामावली छपाकर कई स्वाध्याय करनेवाले विद्वानोंके पास भेज भेजकर शब्द संग्रह करते जानेकी प्रार्थना की थी परंतु किसीने भी कुछ जबाब नहीं दिया। कई धन पात्रोंसे प्रार्थना की थी कि एक पंडित रखकर यह काम चलाया जावे परंतु उन्होंने कुछ भी इस कामको जरूरी न समझा। लाचार वे कार्ड और इस्तहार ज्योंके त्यों पड़े हैं।

अब हम समाजके विद्वानों और जैन धर्मकी उन्नति चाहनेवाले समझदार धर्मात्मा धनपात्र दानी महाशयोंसे प्रार्थना करते हैं कि इस कोषके बनाये विना हमारे सब कामोंमें पूरी २ हानि है, उसे दूर करनेके लिये स्वाध्याय करनेवाले विद्वान् तो कुछ २ समय खर्च करके शब्द संग्रह करना स्वीकार करें और दानवीर धनाढ्य महाशय अपने यहां घर पर वा किसी संस्थामें कमसे कम दो विद्वानोंको वेतनसे रखकर व ग्रंथोंकी प्राप्ति करके इस कोषके बनानेके लिये शब्द संग्रह करानेका पांच वर्षके लिये भार लें। यदि वे महाशय इतनी उदारता दानशीलता दिखानेके लिये धर्मार्थ रकम लगानेमें असमर्थ हों तौ बतौर कर्जके ही रकम लगावें। जिस दिन यह कोष तैयार हो जायगा उस

दिन जितनी रकम उसमें लगेगी उतनी रकम व्याज सहित देकर अनेक बुक्सेलर लेनेके लिये तैयार हो जांयगे। परन्तु यह कार्य सिवाय धनपात्रोंके कोई दूसरा करा ही नहीं सकता। इसलिये विद्वानोंको चाहिये कि—अपनी सत्संगतिमें रहनेवाले धनपात्रोंको उपदेश देकर इस कार्यमें द्रव्य लगानेको तैयार करें। और जिस प्रकार हो इस कोषको शीघ्र ही बनानेका प्रारम्भ करावें।

समाजका हितैषी, दास—

पन्नालाल बाकलीवाल।

दिवाली और दो मित्रोंका वार्त्तालाप।

(वीर) (२४) (अमावस)
तीर्थंकर मुक्तहि गये, कातिक भी अंधियार।
गति घाती घाती नमों, गौतम प्रभु सुखकार॥

कार्तिक कृष्ण १२की रात्रिको टेकचन्दजी जल्दी सोगये इसलिये नींद भी जल्दी ही खुलगई और फिर न आई। करवटें बदल रहे थे कि दीवालीकी याद आगई चटसे अपनी पत्नीको पुकारा, वह चौंक उठी, परंतु टेकचंदजीने उसे सान्त्वना देकर दिवाली पर कहीं सिद्धक्षेत्रपर जानेकी बात छेड़ी, तब स्त्री बोली अच्छा हो यदि यह सम्मति हमलोग लाला जयचंदजीके पास चल कर करें। बस प्रातःकालका समय था सोचा चलो वायु सेवन भी होगा और सामायिक जयचंदके बागमें ही करेंगे। पश्चात् सलाह करके नहाधोकर वहीं चैत्यालयमें पूजन करके चले आवेंगे। बस गाड़ी कसाई और चल दिये, वहां पहुंचकर सामायिक स्नान पूजन स्वाध्यायादि करके टेकचंदजी बोले—क्यों भैया जयचंद! दिवाली देखने कहां चलोगे? और दिवालीका क्या अभिप्राय है, क्यों और कबसे चली, सो कृपा करके कहिये आपकी भौजी इसके लिये बहुत लालायित हो रही हैं।

जयः—सुना है कि दिवालीकी अमावस्याको पंडित गणेशप्रशादजी वर्णी रेसंदीगिरि (नैनागिरि) जावेंगे, इससे मालूम होता है कि कदाचित् आसपासके ग्रामीण जन भी १००-१२५के लगभग पहुंचेंगे। यह वर्षका दिन है, श्रीमत् परम देवाधिदेव १००८ महावीर प्रभुके निर्वाणका दिन है, इस दिन कितने भाग्यवान भव्य जीव श्री पावापुरीजी (जो कि उक्त महावीर प्रभुकी निर्वाण भूमि है) को जाते हैं और वहांपर इस परमोत्सवका आनन्द भोगते हैं। परंतु यदि अपनी शक्ति न होवे, तो यथाशक्ति अवकाशानुसार ऐसे ही अपने निकटवर्ती निर्वाण क्षेत्रपर जाकर पूजन वंदनादि कार्य किया करें तो भी बहुत कुछ लाभ हो सकता है।

२. यदि मनुष्य अपनी **शक्तिको न छिपाकर** और **शक्तिको** उलंघन किये बिना असली पदार्थके अभावमें उसकी कल्पना भी कर लेवे तो भी उसे वही उत्कृष्ट फल मिल सकता है। देखो न आज महावीर प्रभुको मोक्ष गये हुए २४४३वर्ष हो चुके हैं, और वे समस्त कर्मोंसे रहित हुए आज लोकके

अंतमें निश्चल हुए स्वात्मानंदमें निमग्न हुए सदाके लिये अवस्थित हो रहे हैं। यद्यपि वे आज साक्षात् इस मृत्यु लोकमें किसी भी स्थानपर नहीं हैं, और जब थे तब भी किसी एक क्षेत्र व्यापी ही तो रहते थे, जिनसे एक ही क्षेत्रवाले जीवोंको उनके दर्शन स्तवन और उपदेश श्रवणका लाभ मिलता था। न कि सब क्षेत्र और सब कालोंमें सब ही प्राणियोंको ऐसी अवस्थामें बहु संख्यक जनोंको जिन्हें प्रत्यक्ष लाभ नहीं मिल सकता है, परोक्ष कल्पना करना ही कर्तव्य होता है। और इस परोक्ष कल्पनामें भी कभी कभी प्रत्यक्ष जैसा आनन्द आ जाता है। यह कल्पना वाली बात कोई नई नहीं है, प्रायः बहुत कालसे चली आती है और आगे भी चलेगी ही, क्योंकि यदि यह कल्पना बिल्कुल भी न की जाय तो संसारका व्यवहार ही नहीं चल सकता है। व्यवहार तो सब कल्पित ही है। हां! यदि असली पदार्थोंके सद्भावमें भी हम कल्पना करें जैसे कि पुष्पोंको रंगीन चांवलोंमें, दीपको रंगी हुई गरीकी चिटकोंमें, नैवेद्यकी गरी व चिरौंजी आदिमें जैसी कि हमलोग कर लिया करते हैं, निःसन्देह निष्फल है। क्या अग्निमें खेनेके बदले धूपको द्रव्य चढ़ानेके थालमें ही भड़ा देनेसे सुगंधी आजावेगी! और धूम्र दशों दिशामें व्याप्त होजावेगा? क्या कभी असत पदार्थकी भी उत्पत्ति होसकती है! क्या धूपके लिये अग्नि, दीपके लिये शुद्ध प्रासुक घी और कपासकी बत्ती या कर्पूर, नैवेद्यके लिये पूरी पकौड़ी खाजा आदि जैसा कि पूजाके पाठमें पढ़ते हैं, और पुष्पोंके लिये साक्षात् गुलाब, चंपा कमल, आदिके फूल नहीं मिल सकते हैं? जब कि हमारे भोगोपभोगोंके लिये प्रत्येक प्रकारके उत्तमोत्तम फल, फूल, दीप, धूप, नैवेद्य, आदि मिल सकते हैं तो क्या पूजाको नहीं मिल सकते हैं? यदि कहो कि शुद्ध प्रासुक नहीं मिलते हैं तो फिर खानेको कहांसे आते हैं? और पूजामें कल्पनाहीसे फल होजाता है तो फिर भोजनमें केवल पानी आदिमें सब भोज्य पदार्थोंकी कल्पना करलेवे और रात्रिको घरोंमें दीपकके बदले रंगी हुई गरी रखदेवे, पुष्पमालके बदले चांवलोंको रंग कर माला ही बनाकर पहिर लिया करें परन्तु क्या ऐसा करनेवाले लोग संसारमें हंसीके पात्र न होंगे? क्या उनके घरका अंधेरा मिट जावेगा? नहीं नहीं कभी नहीं, ऐसी कल्पना कुछ भी फलदायक नहीं है किन्तु उल्टी हास्यजनक है। कल्पना सदैव साक्षात् पदार्थके न होनेपर ही की जाती है, जैसे कि आज न तो इस क्षेत्रकालमें महावीर प्रभु हैं और न गौतम गणधर। न उनकी दिव्य ध्वनि ही सुनाई दे रही है और न निर्वाणका महोत्सव ही परंतु तोभी कल्पनामें हमें उसी काल और भावका अनुभवानंद आता है जो कि प्रत्यक्षमें आता होगा।

यह दूसरी बात है कि लोगोंका सच्चा उपदेश न मिलनेसे और अविद्याके कारणसे सच्ची बातका लोप हो जाय और पदार्थका सार निकल जाकर ऊपरका ढांचा और फोकही रह जाय और कालान्तरमें उस ढांचेका भी रूपान्तर हो जाय,

परंतु किसी कालमें वही ढांचा खोखट मात्र ही न था किन्तु सजी।था; ठोस था। आजकल भारतवर्षके प्राय: सभी नगरोंमें, ग्रामोंमें, शहरोंमें, और रामवाड़ोंमें ऐसा कोई भी व्यक्ति और क्षेत्र न मिलेगा, जो इस परम पवित्र दिवाली (दीपावलि) के त्योहारसे अपरिचित हो। यह पर्व भारतके सभी वर्ण और सभी क्षेत्रोंमें सभी धर्मवाले मानते हैं, यदि वास्तवमें देखा जाय तो इसके समान सर्व मान्य और उत्तम पर्व कदाचित् ही दूसरा होता हो क्योंकि दिवालीके आनेके पहिलेही से लोगोंके घरोंमें सफाई होने लगती है। घर छापे (मरम्मत) किये जाते हैं, पोते जाते हैं, लीपे जाते हैं, धोये जाते हैं, घरके वासन वर्तन मांजकर साफ किये जाते हैं, कपड़े धोये व धुलाये जाते हैं, वर्षोंका कचरा साफ किया जाता है, हिसाब किताब आदि ठीक किया जाता है, दूकानका आंकड़ा बांधकर हानि लाभका लेखा निकाला जाता है, नवीन व्यापार आदिका विचार भी किया जाता है, इस दिन लोग अपने घरके किसी स्थानमे चौक पूर कर वहां दीपक जलाते हैं। प्रत्येक प्रकारके फलफूल मिठाई आदि पदार्थ जो उन्हें मिल सक्ते हैं लाकर रखते है कहीं कहीं एक मिट्टीकी पुतली जिसके मस्तकपर और भुजाओंपर आठ दीपक रहते हैं रक्खी जाती है। चौकके भीतर सोलह दीपक और पांच दीपक बीचे ऐसे २१ दीपक रखे जाते हैं, सभीमें चार बत्ती जलाई जाती हैं, उस समय पासमें जिसके जो नकद रुपया मुहरें आदि होते हैं उसी चौकके पास रखते हैं और नवीन वही बनाकर नवीन कलम और स्याहीसे प्रथम ही ॐ लिखकर साथिया काढ़ते फिर पांच महात्माओंके नाम लिखकर मिती संवत् आदि लिखते हैं और तब उसमें नकद रोकड़ बाकी लिखकर नवीन (आगामी) वर्षका हिसाब प्रारंभ करते हैं। रुपया और वही दोनोंपर चन्दन, अक्षत, पुष्पादि क्षेपते हैं और रकाबीमें धानकी फूली (खीलें, या लाई) और मेवा, फल, मिठाई आदि रखकर दीपक लेकर आरती करते हैं, अर्चा करते हैं, धूप खेते हैं, अगरबत्ती जलाते हैं, पैर पड़ते हैं, उस समय वहां उपस्थित मान्य व आश्रित जनोंको प्रसाद (लाई लड्डू आदि) और कुछ नकद पैसा रुपया आदि भी देकर संतोषित करते हैं। रात्रिमें जागरण करते हैं, घरके चहुंओर दीपक जलाते हैं (जगाजोत लगाते हैं) फटाका फोड़ते बन्दूकें छोड़ते हैं इत्यादि अनेकों प्रकारके उत्सव मनाते हैं। यह पर्व **दिवाली या दीपावलि** इस नामसे प्रसिद्ध है। और इस दिन उक्त पूजन, अर्चन, आदि जो होती है सो लक्ष्मी पूजन या वहीपूजनके नामसे प्रसिद्ध है। लोग इस रात्रिको जूआ भी खेलते हैं परन्तु यह जूआ (द्यूत) कुछ क्षुद्र लोगोंके सिवाय उत्तम प्रकृति वाले सज्जन नहीं खेलते हैं। अब इसमें यह विचारना है कि यह सब क्या है? और कहांसे कबसे क्यों चला? यद्यपि स्थानान्तरोंमें अवश्य उक्त रूढियोंसे कुछ अंतर होगा तो भी बहुत ही बातें मत भेद रहित भी होंगी, जो कुछ भी हो, हमें

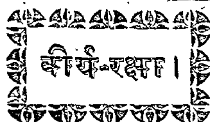
इसका मूल भेद जानना चाहिये। हमारी बुद्धिके अनुसार तो हमें यही प्रतीत होता है कि यह पर्व **जैनियोंके** द्वारा ही चलाया गया है, क्योंकि इनके पुराणों और आचारोंसे बहुत कुछ ये बातें मिलती जुलती हैं, यद्यपि कहीं २ रूपान्तर भी होगया होगा तो भी अभी तक कई बातें सार रहित खोलेके समान अवश्य ही प्रचलित हैं। जैन पुराणों और श्रावकाचारोंके अनुसार महावीर (चौवीसवें) तीर्थंकरको मोक्ष हुए अभी २४४३ वर्ष हुए हैं जिसदिन उनका मोक्ष हुआ था। वह कार्तिक कृष्ण(गुजराती अश्विन कृष्ण)चतुर्दशीकी रात्रिको अंत और अमावस्याका प्रातःकालका समय था। इस दिन महावीर प्रभुको मोक्ष प्राप्ति और उनके मुख्य शिष्य (गणधर) गौतम स्वामीको केवलज्ञान (आत्मिक सम्पूर्ण ज्ञान) प्राप्त हुआ था। इसलिये महावीर प्रभुको निर्वाण प्राप्त होनेसे उनको जो स्वाधीन स्वसम्यक्त्व स्वात्मानन्दका लाभ हुआ और उन्होंने संसार गर्तमें डूबते हुए मोही जीवोंको मोक्षका मार्ग बताया इसलिये उस परम स्वाधीन स्वसम्पत्ति (मोक्ष) के प्राप्तिके हेतु मोक्ष लक्ष्मीकी पूजा की जाती है। जिसका रूपान्तर होकर अब रुपया पैसादि बाह्य लक्ष्मी (जड़पदार्थ) की पूजा होने लगी है। और गौतम गणधर (गणेश) को केवलज्ञान हुआ, इसीसे सरस्वती (जिनवाणी) की पूजा की जाती है, जिसका रूपान्तर होकर बही (कागजों) की पूजा हो गई है। पुराणोंमें लिखा है कि जब किसी महात्माको केवलज्ञान प्राप्त होता है, तब इन्द्रादिक देवगण समवशरणकी रचना करते हैं वहां वह महात्मा यद्यपि एक-मुखधारी ही है तो भी चतुर्मुख दीखता है और वहां दिनरात्रिका कुछ भी भेद नहीं दिखाई देता है, तात्पर्य वहां अंधकार नहीं होता है। सो जब गौतमप्रभुको केवलज्ञान हुआ तो देवोंने समवशरण (गंधकुटी) बनाई और बड़ा भारी उत्सव मनाया। सो लोगोंने भी उसीकी नकल की और रात्रिको दीपक जलाकर अंधकार दूर किया। एक स्त्रीके भुजाओंपर आठ दीपक और मस्तकपरका कलश यह द्योतन करता है कि अष्टकर्मोंको जलाकर प्रभु ज्योंही मुक्त हुए त्योंही वह (मोक्ष लक्ष्मी) सिरपर कलश रखकर आपके स्वागतके लिये आई है। सोलह मिट्टीके दीपोंका यह अभिप्राय प्रतीत होता है कि इन महावीर प्रभुने अपने पूर्वजन्मोंमें तीर्थंकर प्रकृतिको कारणभूत दर्शनविशुद्धि आदि षोड़सकारण भावनाएं भाई थीं जिससे उनका आत्मा इतना विशाल हुआ कि उन्होंने संसारके कल्याणार्थ जन्म लिया सो उस महात्माके उत्पन्न होने (गर्भमें आने) के समयसे इन्द्रादि देवोंने पंच कल्याणक (गर्भ जन्म तप ज्ञान और निर्वाण महोत्सव) किया जो कि पांच घृतके दीपकोंसे संकेत प्रकट होता है। दूसरा भाव पांच दीपोंसे यह भी है कि प्रभुने स्व पर हितार्थ विषयभोगोंको त्यागकर सर्व प्रथम **साधु** पद ग्रहण किया और उन्हें जो जन्मान्तरके सम्बन्धसे श्रुतज्ञान था उससे वे (ग्यारह अंग

और चौदह पूर्वके धारी) **उपाध्याय** भी कहाये, फिर उस समयमें उनसे विशेष ज्ञानी कोई न होनेसे वे ही दीक्षा शिक्षा देनेवाले हुए इससे **आचार्य** भी कहाये। और चार घातिकर्मोंको नाश करके सर्वज्ञपदको प्राप्त हुए इससे आप्त व **अर्हन्त** कहाये और आयुके अंतमें कार्तिक (गुजराती आश्विन) कृष्ण ३० को प्रातःकाल शेष अघाती कर्म नाशकर सिद्ध हुए। इस प्रकार प्रभु पांच परम इष्ट (उत्कृष्ट) पदोंको प्राप्त हुए इसीको बतानेवाले वे पांच घीके दीपक हैं। चौमुखे दीपक चार गतियोंको जलती हुई, जिनसे प्रभुने मुक्ति पाई है बतारहे हैं। पूजाकी द्रव्योंमें जल, गंध, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, दीप, धूप, व फल ये अष्ट द्रव्यें भी जैन ग्रन्थानुसार देखे जाते हैं। रात्रि जागरण करनेमें भजनादिके बदले मनोरंजन करनेके हेतु लोगोंने जुआ आदि खेल तमाशे प्रारंभ कर दिये हैं यह रूपान्तर होगया है। इससे प्रतीत होता है यह वर्ष जैनियों ही के द्वारा प्रचलित हुआ है इसे सबको श्रद्धा सह मानना चाहिये और भी देखो—वर्ष और मास भी अमावस्या ही को पूर्ण होता है, दूकानदार व्यापारियों आदिकी दूकानोंके खाते नये बदले जाते हैं और मासका अंत अमावस्याको समझना चाहिये कि अमावस्याको ३०का अंक लिखते हैं और पूनमको १५का इसलिये पूनम मासके मध्यमें आती है, और गुजराती व दक्षिणी लोग अपना मास शुक्ल एकमसे प्रारंभ करते हैं। कृष्णपक्षकी प्रतिपदाको प्रतिपदा और शुक्ल प्रतिपदाको एकम कहते हैं गुजरात व दक्षिण वालोंका कार्तिक मास हमारे कार्तिक शुक्ल एकमसे प्रारंभ होता है और हमारे कार्तिक कृष्णा अमावसको उनका आश्विन पूर्ण होता है। तब कि हमारा आधा मास बीत चुकता है। तात्पर्य उनका मास हमसे १५ दिन बाद शुक्ल पक्षसे प्रारंभ गिनाजाता है और हमारा १५दिन पहिले कृष्ण पक्षसे यथार्थमें यदि उक्त पाठों परसे विचारा जाय तो उनका हिसाब ठीक प्रतीत होता है। पहिले तेईस तीर्थंकरोंका निर्वाण उत्सव लोकमें इतना प्रसिद्ध न होनेका कारण यही है कि महावीर प्रभु अंतिम हुए। यह वर्तमान शासन इन्हींका है और इस समय भी अधिक नहीं हुआ है। निर्वाण क्षेत्रका स्थान भी शास्त्रानुसार लक्षणोंसे लक्षित पाया जाता है। इन्होंने संसारके सभी प्राणियोंके हितार्थ उपदेश किया सबको समान भावसे देखा। इसी लिये सब ही ने इनके उत्सवको मनाया और मनाते हैं तथा मनावेंगे। धन्य है जिन्होंने '**वसुधैव कुटुम्बकम्**'की नीतिको चरितार्थकर दिखाया। इस प्रकार आज जयचंदजीका व्याख्यान समाप्त हुआ, और टेकचंदजी भी चलने लगे इतनेमें टेकचंदजीकी स्त्री बोली लालाजी नैनागिरि न चलोगे?

जय०—भाभीजी अवश्य चलेगा। क्यों भैया टेकचंद?

टेक०—हां अवश्य। अच्छा समय बहुत हुआ जुहारु। जुहारु भैया—अब तो नैनागिरिमें खूब आनन्द आवेगा, उपदेशका भी बड़ा लाभ होगा, जुहारु।

दीपचंद परवार
नरसिंहपुर (C.P.)



वीर्य-रक्षा।

(लेखक:-हिराचन्द मलुकचन्द दोशी (काका) ऑनरेरी अध्यापक, मारवाड़ी और म्युनिसिपल, कसरतशाला शोलापुर)

वीर्यरक्षा कमसे कम वीस वर्षकी उम्र तक करनी चाहिये क्योंकि इससे मनुष्यका शरीर दृढ़, दीर्घायु, निरोगी, बन सकता है और मनुष्य सर्वदाके लिये निरोगी रह सकता है, तथा धर्म कार्य भी कर सकता है। क्योंकि किसी महात्माका वचन है " शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् " अर्थात शरीर ही धर्मसाधनका आद्य कारण है, इसकी रक्षाके लिये वीस वर्ष तक चटकीला अन्न (भोजनादि) न खाना, स्त्रियोंको कुदृष्टिसे कदाचित भी नहीं देखना, खराब काव्य, उपन्यासादि नहीं पढ़ना, नाटक, सिनेमा, शृङ्गारिक खेल तमाशे नहीं देखना, इन्द्रियको विना कारण दुष्ट विचारसे हस्तस्पर्श नहीं करना, चाय नहीं पीना, बीड़ी, चुरट, भङ्गादि मादक चीजें नहीं पीना, पान सुपारी नहीं खाना, वीस वर्षतक विवाह नहीं करना, पौष्टिक पदार्थ खाना, और नित्य नियमित रूपसे सर्वाङ्गावयवी प्रातःकाल व्यायाम करना, व्यायाम करनेसे वीर्य रक्तमें मिल कर बल बढ़ाता है। कसरत न होनेसे वीर्य पतन होता है। गरम और मादक चीजें नहीं खाना, मिरच कम खाना, और रात्रिको ९ बजे सोजाना, और सुबह ५ बजे उठना चाहिये। उल्टे सोना अच्छा नहीं, क्योंकि उल्टे सो जानेसे मूत्राशयका दाब वीर्यपर पड़ता है और स्वप्नावस्था प्राप्त होती है। रात्रिको सोजानेके पहिले कमसे कम १ घन्टे पूर्व पेय पदार्थ लेना चाहिये। सोनेके समय खाना पीना नहीं। हमेशा दाहिने व बांई करवट सोते रहना उचित है। नींद खुलते ही विछौनेको त्याग देना, वीस वर्षके उपरान्त उम्रवालोंको नियमित रूपसे स्त्री प्रसङ्ग करना। यदि वीर्य विगड़ा हो तो वीर्य शुद्ध होने समय तक स्त्री प्रसङ्ग नहीं करना।

शरीर यदि रोगी हो तो उसको औषधि आदिसे निरोग करना, फिर कसरत करके पौष्टिक पदार्थ खाकर पौष्टिक पदार्थ पचाना। वर्ष दो वर्ष तक सेवन करनेसे वे भलीभांति पचने लगेंगे और वीर्य अवश्य अच्छा हो जायगा। अतएव ऐसा न हो तबतक तो ऊपर लिखे नियम उनको अवश्य पालने होंगे। वीर्य स्तंभक बटी आदि औषधि लेनेसे कुछ भी नहीं होता, खाली पैसे खर्च करनेका धंधा है। उसके जाटमें पड़ना वही श्रीमन्तोंके लिये पिस्ता, बदाम, दूध, घी हैं। लेकिन गरीबोंके लिये यह बात मुश्किल है। अतएव उनके लिये पदार्थ-द्विदल धान्य और मूंगफली आदि हैं। चने, मूंग, मटर, उड़द, आदिकी दाल थोड़ेसे पानीमें भीगोकर सवेरे कसरत करके खाना। दाल जैसे हजम होती जाय, वैसे दालका परिमाण बढ़ाना। इसके अनुसार

चलनेसे वीर्यकी रक्षा जरूर होगी। वीर्य शरीरका राजा है यह खूब ध्यानमें रखना! प्रजोत्पत्तिके सिवाय इसका व्यर्थ कामान्ध होकर व्यय नहीं करना व्यर्थ व्यय करोगे तो अल्पायुषी बनोगे। इत्यलम्।

इस विषयमें जितना लिखा जाय उतना ही थोड़ा है।

कसरतकी तरकीबें।

कसरत नाम शरीरको यथायोग्य रीतिसे सर्वाङ्गावयवोंको हलन चलन मिलना है। शरीरको हलनचलन मिलनेसे सर्व अवयव सतेज रहते हैं। और पचनेन्द्रिय सर्वोत्कृष्ट रहती है पचनेन्द्रिय अच्छी होनेसे अन्न भी भलीभांति हजम होता है। अन्न हजम होनेसे शरीरमें रक्त बढता है, रक्त बढ़नेसे वीर्य बढता है और वीर्य बढ़नेसे शरीर सशक्त होता है।

शरीर नीरोगी होनेसे मनुष्य दीर्घायु होता है और आनन्दित रहता है। आनन्दित रहनेसे सर्व प्रकारके कार्य सुन्दरता पूर्वक होते हैं।

कसरत करनेकी तरकीबें वर्तमान समयमें दो प्रकारकी हैं एक इंग्रेजी तरकीब और दूसरी देशी तरकीब।

इंग्रेजी तरकीबसे शारिरिक फायदा थोड़ा और खर्च बहुत होता है। और समय भी बहुत लगता है।

देशी तरकीबसे शारीरिक और इतरस्त. फायदे बहुत होते हैं और खर्च (पैसा) कम लगता है। देशी तरकीबमें दण्ड, बैठक, पानीमें तैरना, मल्लखंभपर चढ़ना, लाठी फिराना, कुश्ती लड़ना, दौड़ना, नमस्कार करना, कबड्डी खेलना, खो खो, आटिया पाटिया, शूर करेन्ग, मुद्गल आदिके खेल होते हैं।

इंग्रेजी तरकीबमें, क्रीकेट, हौकी, टेनिस, फुटबौल, पैरलि बौर, सिंगल बौर, डबल बौर, बॅार बॅाल, डम्बिल्स, बोटिंग आदि खेल होते हैं।

कुछ इंग्रेजी खेलसे एकांङ्गावयवी कसरत होती है और यह कसरत परतन्त्र, परावलम्बी मूल्यवान, अनियमित होती है। देखिये क्रीकेट खिलनेवालोंको ग्रामसे दूर जाना पड़ता है। कमसे कम ११-१२ आदमी इकट्ठे हुए विना यह खेल नहीं होता, क्रीकेटके सामानके लिये पैसा बहुत खर्च करना पडता है और हमेशा टूटफूट भी होती रहती है, धूपमें खेलना पड़ता है, ज्यादा समय दोपहरकी धूपमें खेलना हानिकारक है। देशी कसरतमें पैसा कुछ नहीं पड़ेगा। कसरत स्वतंत्रतासे चाहे जिस स्थानपर नियमित रूपसे होगी। कभी बन्द नहीं रहेगी, भगवान्के सामने नमस्कार करनेसे भाव शुद्ध रहेंगे। भाव शुद्ध रहनेसे शरीरको बिगाड़ने वाले गुण अंगमें पैदा नहीं होंगे। नमस्कारमें एक ही समयमें कसरत भी होगी और ईश्वर भक्ति भी हो जायगी। नमस्कारमें दंड बैठककी मिलान होती है, इससे शरीर खूबसूरत होता है। देशी कसरतसे शारीरिक लाभ होकर और जो कुछ अन्य लाभ होते हैं वे नीचे लिखे अनुसार हैं।

कुश्तीसे-शरीरमें चपलता आती है, बुद्धि सतेज होती है, और दुर्जनोंका पड़ाव करनेके गुण प्राप्त होते हैं।

दौड़—दुष्ट लोगोंके हाथमें वक्त पर पड़ते नहीं।

तैरना—स्वयं पानीमें गिर जायें तो तैरनेसे बच जायंगे। और दूसरा कोई मनुष्य बावड़ी आदिमें गिर जाय तो उसको बचावेंगे।

मल्लखम्भ चढ़ना—घरको अङ्गार लगेगी तो खम्भेपरसे नीचे झट उतर आवेंगे, जंगलमें हिंसक जन्तुओंसे बचाव करनेके लिये शीघ्र वृक्षपर चढ़ जानेसे शीघ्र रक्षा होजायगी।

लाठी फिराना—लाठी फिरानेसे सभीको पादाक्रांत करेंगे, शरीरमें चपलता रहेगी।

शरीरको प्रातःकालीन धूप अच्छी होती है। वर्षा ऋतु आती है तब यह खेल बंध करना पड़ता है। हिसावमें आदमी नहीं आवे तो खेल बंध करना पड़ता है। इससे आनियमितपन आजाना यह भी अच्छा नहीं है, कारण कि शरीरको कसरत नियमित रूपसे होना चाहिये, नहींतो हानिकी संभावना है। यह खेल आनन्द-दायी होनेसे कभी कभी ज्यादा कसरत करनी पड़ती है। यह भी शरीरको बड़ा भारी धक्का पहुँचाती है। इससे शरीरका रक्त भीगजाता है, और क्षय रोग बढ़ता है और खानपान भी देखा जाय तो चेवड़ा, चाय, सोडा लिमनेड, बिस्कुट, आदि, गरीब होतो कमेटीके नलका पानी, ऐसे निसत्व पदार्थ पेटमें जानेसे शरीरमें अशक्तता क्यों नहीं बढ़ेगी! और शॉर्ट साइट क्यों न होगी? और तब तरुण चश्मे वाले क्यों न दीखेंगे? और रोती सूरत वाले क्यों न देखे जायेंगे। जरा विचार करनेकी बात है कि-ऐसा होनेका कारण ऐसे खेल खेलने वालोंका संसर्ग दूसरा कुछ नहीं। इस प्रकार इंग्रेजी खेलमें बहुतसे नुकसान होते हैं। क्लबमें ब्रह्मचर्यका महत्व प्रधानतासे नहीं माना जाता।

अब देशी कसरतमेंकी "नमस्कार" नामक तरकीब लीजिये—भगवान्‌के सामने प्रातःकाल शौच, मुख मार्जनादि करके पश्चात् सर्वदा नियमित नमस्कार शुद्ध हवामें करेंगे तो सर्व अवयवोंको कसरत होकर शरीर अच्छा रहेगा।

इससे राजनिष्ठता रहती है और ब्रह्मचर्यव्रत पाला जाता है। और उसके अनुसार अपना वर्ताव रखना तथा तदनुसार चलनेका अभ्यास करना चाहिये। अनीतिका कुछ भी प्रचार नहीं होने देना जबतक ऐसा अखाड़ा नहीं बने तबतक अपने गृहमें ही शुद्ध जगहपर नित्य नियमित रूपसे प्रातःकाल (शीत ऋतु) में दंड, बैठक, नमस्कार करना। १० से १५ वर्ष प्रमाण वालोंको ३० बैठक और पन्द्रह दंड प्रथम ७-८ आठ दिनतक निकालना अथवा नमस्कार २० करना, फिर आठ दिनके बाद प्रत्येक हफ्तामें ५ दंड और १० बैठक बढ़ाना चाहिये अथवा ५ नमस्कार बढ़ाना चाहिये।

इस प्रकार बढ़ानेका कार्य १०० दंड और सौ बैठक तक बढ़ाना अथवा १०० नमस्कार बढ़ाना इससे ज्यादा नहीं करना। १५ से ३० की अवस्था वालोंको इससे दुगनी कसरत करनी चाहिये। प्रारम्भमें १०-१५

वर्षवालोंको तथा ३०से ५०तक उम्रवालों-को १-१९ उम्रवालेकी तरह करना चाहिये और ५०से ऊपर वर्ष वालोंको प्रकृति अनुसार करनी चाहिये। नहीं तो प्रातःकाल शुद्ध हवामें टहलने जाना संध्याको कभी भी टहलने नहीं जाना क्योंकि इस समय वायु खराब रहती है। तरुणोंको केवल टहलनेसे ही कसरतकी इति-श्री नहीं करना चाहिये। यह रीति वृद्धोंके लिये है।

कसरत करके पश्चात् आधा घन्टे विश्रान्ति लेना, फिर स्नान करके पौष्टिक पदार्थ अच्छा रुचिके साथ खाना। स्नान हुए बाद शीघ्र कसरत करना अच्छा और लाभदायक है। किन्तु कसरतके पश्चात् शीघ्र स्नान नहीं करना चाहिये।

सार्वाङ्गावयवी सात मिनटमें कसरत होती है। आटिया, पाटिया, कबड्डी, खो खो इस खेलसे शत्रुका बेड़ा तोड देना आदि गुण प्राप्त होते हैं सर्वाङ्गावयवी और थोड़े समयमें सशास्त्र शरीरको कसरत देनेवाली तरकीब कुछ हैं तो कुस्ती, नमस्कार, मल्लखम्भ चढ़ना, पानीमें तैरना, लाठी फिराना, दंड बैठक यह है। दंड बैठक और नमस्कार इन तरकीबों को कोई भी साधारण कसरत करनेवाला बना सक्ता है।

अब रही लाठी फिराना, मल्लखम्भ चढ़ना, तैरना, कुस्ती खेलना, आदि तरकीबें जो मनुष्य कसरतखानेमें उस्ताद होता है वह जरूर पढ़ाता है। ऐसे उस्ताद बहुतसे शहरमें थोड़े बहुत मिलते हैं, उनके पास आप सज्जन मण्डलीका अखाड़ा बनाकर उसमें सीख लेना। अज्ञानी (दुरवर्त्तीशक) लोगोंके अखाड़ेमें जाना नहीं कारण कि उसमें जानेसे दुर्गुण लगते हैं। देशी कसरतकी तरकीबें बहुत करके वर्तमानमें मूर्ख लोगोंके हाथ मौजूद हैं। वह जो कुछ मनुष्य अपने सद्गुण संभालकर बड़े कष्टके साथ देशी कसरतकी तरकीबें प्राप्त कर लेंगे। और दूसरेको बतावेंगे तो उनको बहुत उपकार होगा। यह नहीं होगा तो प्रथम चार पांचसौ रुपया खर्च करके एक अच्छा अखाड़ा बनवाया जाय और उसमें अच्छे नियम रखकर और राजनिष्ठतासे सुव्यवस्थित चलायेंगे और देशी कसरत जाननेवाले उस्ताद-को तनख्वा देके सौ-पचास मनुष्य तैयार हो जायंगे तो सर्वोत्तम बात होगी। पुनः उसका सज्जन मनुष्योंमें प्रसिद्ध होनेकी देर न होगी। कसरतशालामें राजा लोगों और ब्रह्मचारि-योंके चित्र लगाना चाहिये। धूपमें कसरत नहीं करना, एकाङ्गावयवी कसरत नहीं करना, वर्षमें कमसे कम एक दिन उपवास करना "जबतक जीमते (भोजन लेते) हैं तब तक कसरत हर हालतमें करना पड़ेगी।"

कसरत करते समय मन आनन्दित रखना, और वज्राङ्गदेही बनूंगा ऐसी भावना रखना, व्यर्थ फिक्र न करना, "फिक्र करनेसे नुकसानके सिवाय कुछ नहीं" यह विश्वास रखना। शरीर दुबला भी हो तो कुछ हर्ज नहीं कसरतसे शरीर सशक्त होगा लेकिन कुछ देरी लगेगी, हां ऊपर लिखे अनुसार बर्त्ताव होगा तब, "गुरु विना विद्या नहीं" यह युक्ति कुछ झूंठ नहीं है। इत्यलम् विस्तरेण।

व्याख्यान

जैनधर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी,

सभापति, भारत जैन महामंडल, अधिवेशन, कलकत्ता।

मंगलाचरण।

गाथा—इदं सद वंदियाणं तिहुअण हिद मधुर विसद वकाणं।
अंतातीद गुणाणं णमो जिणाणं जिद भवाण॥
श्लोक—भुवनांभोजमार्तंडं धर्मामृतपयोधरम्।
योगिकल्पतरुं नौमि देवदेवं वृषध्वजम्॥

भावार्थ—सौधर्म आदि १०० इन्द्रोंसे वंदनीक, तीन भुवनके जीवोंको हितकारी, मिष्ट और निर्मल वाणीको प्रकट करनेवाले, अनंत गुणोंके धारी, और संसारको जीतनेवाले जिनोंको नमस्कार होहु। तीन भुवनके प्राणी रूप कमलोंको विकसित करनेके लिये सूर्य, धर्मरूपी अमृतको वर्षानेके लिये मेघ, योगियोंके लिये कल्पवृक्ष और देवोंके देव ऐसे धर्मकी ध्वजा रूप व वृषभके चिन्हको रखनेवाले श्री ऋषभदेव इस अवसर्पिणी कालके प्रथम तीर्थंकरको नमस्कार करता हूं।

प्रिय सज्जन महोदयगण और सवारी वर्ग! कलकत्ते ऐसे भारतके वृहत् नगरमें इस "भारत जैन महामंडल"का वार्षिकोत्सव होनेपर यह बहुत उचित होता यदि इस सम्मेलनको सफलता पूर्वक निर्वाह ले जानेका उत्तरदायित्व अर्थात् सभापतिका पद जैन समाजमें उपस्थित अनेक विद्वान् और प्रतिष्ठित पुरुषोंमेंसे किसीको दिया गया होता। मुझ अल्पश्रुत, तुच्छबुद्धि और साधारण पुरुष पर ऐसे महान् कार्यका भार सौंपना एक अल्पवयस्क बालकके मस्तक पर कई मन भार लाद देना है। पर अब जब आप महानुभावोंने मुझ अल्पज्ञसे ही इस महान् कार्यके सम्पादनको लेना एक मत हो प्रकट किया है तब यह अनुचित जान पड़ता है कि मैं आपकी इच्छाका अपमान करूं। अतएव मैं इसे स्वीकार करता हुआ आप सज्जनोंसे इस बातकी दृढ़ आशा रक्खूंगा कि मेरे द्वारा यह कार्य निर्विघ्न पूर्ण हो, इसमें मुझे हर प्रकारकी सहायता दे और ऐसा प्रयत्न करें जिससे हम आप सर्व परम मंगल सहित कुछ वास्तविक कार्यका उपाय करके सहर्ष अपने २ स्थानको विदा हों।

प्रथम इसके कि मैं आसन ग्रहण करूं यह उचित जान पड़ता है कि मैं अपने विचार आपके सामने उपस्थित करूं और आप उन्हें एक- चित्त हो श्रवण करें। आप यह अवश्य ध्यानमें रक्खें कि जो कुछ मेरा वक्तव्य होगा वह मेरा अपना ही विचार होगा। उसका उत्तरदायित्व मेरे पर होगा। वह विचार इस मंडलका है व जैनसमाजका है ऐसा उस समय तक नहीं माना जासकता जब तक वह प्रस्तावरूपमें स्वीकार न कर लिया जावे।

जिनधर्म।

जिस धर्मकी शक्तिने आज हम आप सबको इस स्थान पर आकर्षित कर लिया है, वह धर्म कैसा जगतके जीवोंका कल्याणकारी है, पहले मुझे इस पर थोड़ासा विचार करना है।

किसी भी वस्तुके स्वरूपको विचारते हुए व उसका वर्णन करते हुए समयमें उसका सर्व स्वरूप विचारना व कहना खास कर उस व्यक्तिके लिये जो सर्वज्ञ न हो बिल्कुल असंभव है। एक समयमें सर्व पदार्थोंके सर्व स्वरूपको जाननेकी शक्ति केवलज्ञानमें होती है। यह ज्ञान आत्माका स्वभाव है। योगियोंके ईश्वर—इस अवसर्पिणी कालमें होचुके श्री ऋषभ आदि श्री महावीर पर्यंत २४ तीर्थंकर व श्री भरत, सगर, विजय, अचल, बाहुबली, हनूमान, प्रद्युम्न, गौतम, सुधर्म, जंबूस्वामी आदि, अनगिनती केवली—इन्होंने केवलज्ञान प्राप्त कर वस्तुके सर्व स्वरूपको एक कालमें जान लिया था। हम इस समय अल्पज्ञानी हैं इससे एक वस्तुके स्वरूपको धीरे २ ही विचार सकते और कह सकते हैं।

यद्यपि एक पदार्थमें अनंत गुण होते हैं पर किसी पदार्थको पहचाननेके लिये कि यह अमुक पदार्थ है व अमुक नहीं है कुछ थोडेसे गुण छांट लेने पड़ते हैं—इन्ही गुणोंके द्वारा हम वस्तुओंकी भिन्न२ पहचान कर सकते हैं। ऐसा होने पर भी हम उस वस्तुके छांटे हुए गुण या स्वभावोंको भी अपने वचनोंके द्वारा एक साथ दूसरोंको नहीं समझा सकते। हमको अपने शब्दोंसे काम लेना पड़ेगा। वे शब्द अक्षरोंसे बने होते हैं इसलिये अक्षर या शब्द कहनेमें समय तो बहुत चला जायगा पर सुनने व समझने वालेको उसके एक स्वभावका ही ज्ञान होगा जब कि दूसरे स्वभावोंको बतानेके लिये दूसरा शब्द व्यवहार करना पड़ेगा।

एक शब्द द्वारा वस्तुका स्वरूप बताते हुए समझनेवालेको यह ज्ञात रहे कि इसमें और भी स्वभाव हैं। जैनाचार्योंने "स्यात्" शब्दका प्रयोग बताया है। जिसके अर्थ हैं "कथंचित्" या किसी अपेक्षासे "from some point of view".

वस्तुके स्वरूपको किसी अपेक्षा कहनेको ही "स्याद्वाद" कहते हैं, स्याद्वाद द्वारा पदार्थका स्वरूप **अनेकांत** या अनेक स्वभाववाला है ऐसा प्रतीत होता है। जिससे समझनेवालेको एक अंशरूप मिथ्याज्ञान नहीं होने पाता है। "अग्नि दाहक है" ऐसा कहना ईंधनको जलानेकी अपेक्षा ठीक है पर सर्वथा उसमें इतना ही गुण नहीं है किन्तु वह भोजन पकानेकी अपेक्षा "पाचक" और प्रकाश करनेकी अपेक्षा "प्रकाशक भी है। इस स्यात्के लिये स्यात् दाहक, स्यात् पाचक, स्यात् प्रकाशक है। जिस समय हम स्यात् या कथंचित् या किसी अपेक्षासे दाहक है ऐसा कहेंगे तो सुननेवाले को यह अवश्य ध्यानमें आयगा कि इसमें और भी स्वभाव हैं। वह मात्र दाहक ही है, पाचक या प्रकाशक आदि रूप नहीं है ऐसा ऐकान्तिक मिथ्याज्ञान न होगा। अग्निमें दाहक, पाचक या प्रकाशक तीनों स्वभाव एक ही समयमें रहते हुए शब्दोंसे एक कालमें तीनोंका कहना असंभव है। पर जो अग्निको समझना चाहता है उसे अग्निका यथार्थ ज्ञान होना चाहिये अन्यथा वह अग्निसे अपना काम न निकाल सकेगा।

इस दृष्टान्तसे यह सिद्ध है कि किसी पदार्थका ज्ञान करनेके लिये "स्याद्वाद" की अतीव आवश्यकता है, यह बात सत्य है—यथार्थ है—इसीलिये विक्रमकी २ री शताब्दीमें होनेवाले दिग्विजयी न्यायवेत्ता **स्वामी समन्तभद्राचार्यने** आप्तमीमांसामें कहा है—

तत्वज्ञानं प्रमाणं ते युगपत्सर्वभासनम् ।
क्रमभावि च यज्ज्ञानं स्याद्वादनयसस्कृतम् ॥१०१॥
स्याद्वादकेवलज्ञाने सर्वतत्त्वप्रकाशने ।
भेदः साक्षादसाक्षाच्च ह्यवस्त्वन्यतमं भवेत् ॥१०२॥

भावार्थ—जैसे एक कालमें सर्व पदार्थोंको प्रकाशनेवाला केवलज्ञान प्रमाण अर्थात् सम्यग्ज्ञान है ऐसे ही क्रम २ से होनेवाला जो स्याद्वाद नयके द्वारा संस्कारित व प्रकाशित ज्ञान है सो भी प्रमाण ज्ञान है।

सर्व तत्वोंके प्रकट करनेमें केवलज्ञान और स्याद्वाद दोनों ही समर्थ हैं भेद केवल प्रत्यक्ष और परोक्षका है। इन दोनोंके सिवाय जो वस्तुका स्वरूप है वह अवस्तु सदृश ही होता है। अर्थात् स्याद्वाद नयके विना पदार्थोंका स्वरूप हम छद्मस्थों द्वारा ठीक २ नहीं जाना जासकता।

वस्तुके भीतर एक ही कालमें नित्य, अनित्य, एक, अनेक, अस्ति, नास्ति आदि विरोधी स्वभाव हैं इनका कथन स्याद्वाद नयके द्वारा अविरोध हो सकता है। जैसे वस्तु अपने गुणोंके ध्रौव्यपनेकी अपेक्षा नित्य है पर उन गुणोंमें जो समय२ पर परिणमन या पर्यायें होती हैं उनकी अपेक्षा अनित्य है—क्योंकि हरएक वस्तु या द्रव्यका यह लक्षण है—

'सत् द्रव्यलक्षणम्' 'उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत्' गुणपर्ययवत् द्रव्यम् (२९. ३०. ३८ अ० ५ तत्वार्थ सूत्र श्री उमास्वामीकृत वि० सं० ८१)

भावार्थ—जो सत् हो सो द्रव्य है, जिसमें एक ही काल उत्पत्ति, विनाश, और ध्रौव्य या अविनाशी या नित्यपना पाया जाय सो सत् है अथवा जिसमें गुण और पर्यायें या अवस्थाएं एक कालमें रहें उसे द्रव्य कहते हैं। मतलब यह हुआ कि गुण सदा बने रहते हैं और उनमें जो समय२ स्वाभाविक या वैभाविक, सदृश या विसदृश अति सूक्ष्म समुद्रकी कल्लोलें व रत्नकी कांतिवत् परिणमन होता है वह अनित्य है अर्थात् समय २ नया २ परिणमन होनेसे पुराने परिणमनका व्यय अर्थात् नाश और नएका उत्पाद अर्थात् उपजना होता है। वृक्षमें आमके भीतर वर्ण गुण रहते हुए उस वर्णकी हरी अवस्थाका पीला होते जाना परिणमन है अर्थात् हरेपनका व्यय होकर पीलेपनका उत्पाद है।

नित्य और अनित्य दोनों स्वभावोंको समझनेके लिये हमें कहना पड़ेगा कि 'स्यात् नित्यं', 'स्यात् अनित्यं', तथा दोनोंको एक साथ लगाकर कहनेकी अपेक्षा 'स्यात् नित्यानित्यम्,' क्योंकि वचनोंमें एक समयमें इनके कहनेकी शक्ति नहीं है। जब कि दोनों स्वभाव एक समयमें ही हैं इस अपेक्षा 'स्यात् अवक्तव्यं' अर्थात् इस अपेक्षासे स्वरूप कथन वचनगोचर नहीं है। परंतु ऐसा अवक्तव्य होने पर भी नित्य है, या अनित्य है या

नित्यानित्य है। इस तरह नित्य, अनित्य और अवक्तव्य तीन स्वभावोंके सात भंग बन जाते हैं। इसीसे स्याद्वादनयको **सप्तभंगी** भी कहते हैं। विक्रम सम्वत् ४९ में होनेवाले **श्री कुंदकुंदाचार्य** महाराजने **श्री पंचास्तिकाय**में इस सप्तभंगकी आवश्यकता बताई है—

गाथा-सिय अत्थि णत्थि उहयं अव्वत्तव्वं पुणोय तत्तिदय।
दव्वं खु सत्तभग आदेसवसेण सभवदि ॥१४॥

इस स्याद्वादके स्वरूपको शंकराचार्यने कुछका कुछ समझकर अपने भाष्यमें खंडन किया है। प्रयागके विद्वान महामहोपाध्याय डा० **गंगानाथ** झा ने साफ तौरसे कहा है कि यदि शंकराचार्य जैनशास्त्रोंका मनन करते तो उनको ऐसा कहना न पड़ता। इस स्याद्वादकी यथार्थताको पूनाके डॉ० **भण्डारकर** और जर्मनीके प्रोफेसर जैकोवीने यथार्थ माना है।

वर्तमान जैन विद्वान् बाबू चम्पतराय बेरिष्टर हरदोईने अपने **की ऑफ नॉलेज** Key of Knowbrgeमें सफा ७२८में इस सिद्धांतके महत्त्वको बताते हुए कहा है It gives us a many-sided, and therefore, necessarily true view of the truth which we are all seeking to discover" यह हमें सत्यका अनेक आपेक्षिक और इसलिये बिल्कुल सत्य स्वरूप बता देता है जिस सत्यकी हम सब खोज कर रहे हैं। **सप्तभङ्गीतरंगिणी** और **स्याद्वादमंजरी**से इस स्याद्वादका स्वरूप विस्तारसे प्रगट हो सकता है।

इस अनादि जगतमें आत्माका हित करनेवाला जो वस्तुके स्वरूपका यथार्थ ज्ञान है वह "स्याद्वाद" के द्वारा होता है और यही **जिन आगम**का मूल बीज है। इसलिये इस तरफ आपका लक्ष्य दिलाना इसीलिये उचित समझा गया कि आप धार्मिक तत्वोंको यथार्थ जानकर अपना हित कर सकें। यही **स्याद्वाद** या **अनेकांत** नय परस्परके वादियोंके विरोधोंको दूर कर **एकता** और **समता**का लाने वाला है इसीलिये स्वामी अमृतचंद्र आचार्यने विक्रमकी १०वीं शताब्दीमें अपने **पुरुषार्थसिद्ध्युपाय** ग्रंथमें कहा है "विरोधमथनं नमाम्यनेकांतं" यह अनेकांत विरोधको मेटनेवाला है इसीलिये मैं नमस्कार करता हूं। यह जिनधर्म किसीका ऐसा सिद्धांत नहीं है कि जिसको हमें बलात्कार मनाया जाय—यह वास्तवमें आत्माकी उन्नतिका एक सत्य विज्ञान है इस कारण इसको 'Self Science' या 'Key to Self realisation' यानी आत्म विज्ञान या आत्मानुभवकी कुंजी कहें तो कोई अत्युक्ति नहीं है।

हम और आप या सर्व प्राणी सुख और शांति peace and happiness चाहते हैं पर उसके लिये बाहरी चीज़ोंके भोगनेमें जाते हैं। उसका फल यह होता है कि तृष्णा और आकुलता बढ़ती जाती है। सुख शांतिके बदलेमें अशांति और दुःख हमें प्राप्त होता है।

जहांतक विचारा गया है व आप विचार करेंगे तो प्रकट होगा कि सुख और शांति हमारे ही आत्माका स्वभाव है। हम जब

अपने और इस कागज़के मध्यमें जो हमारे हाथमें है क्या अंतर है इसपर लक्ष्य देंगे तो विदित होगा कि समझने, देखने, जाननेकी शक्ति हमारेमें है पर इस कागज़में नहीं है। इस शक्तिको **चेतनाशक्ति** कहते हैं। शक्ति गुण हैं। गुणका लक्षण है "द्रव्याश्रया निर्गुणागुणाः" (४० अ०९ त० सूत्र) जो द्रव्यके आश्रय रहें व उनमें और गुण न हों सो गुण हैं। अतएव जिस द्रव्यमें चेतनागुण है उसीको जीव या आत्मा तथा जिसमें नहीं है उसीको अजीव या अनात्मा या जड़ कहते हैं। बस इस लक्षणसे यह प्रकट है कि जो वस्तु हमारे शरीरमें रहती है वह जीव या आत्मा है। उसके रहते हुए शरीरके अगोपांग काम करते व इन्द्रियोंके द्वारा ज्ञान होता पर उसके न रहते हुए कुछ नहीं होता है।

आत्मामें जैसे चेतना गुण है ऐसे ही शांति या वीतरागता भी गुण है क्योंकि जब हम क्रोध, मान, माया, लोभ करते हमारा आत्मा क्लेशित होता—दुःखी होता। पर जब वे नहीं होते या मन्द होते हैं तो हमारा आत्मा शांत और सुखी रहता है तथा इसीसे यह भी सिद्ध है कि सुख भी आत्माका स्वभाव है। इसलिये आत्माके विशेष गुण चेतना, शांतता और आनन्द हैं—जो परमाणु या स्कंधरूप पदार्थ हैं उनको **पुद्गल** कहते हैं जिनमें इस आत्माके तो विशेष गुण नहीं हैं पर स्पर्श, रस, गंध और वर्ण हैं जो प्रत्यक्ष प्रकट हैं।

ये दो मुख्य द्रव्य हैं। इन्हीं दोनोंके सम्बन्धसे जगतकी नाना क्रियाएं हो रहीं हैं। प्रकृतिमें मेघोंका पानी होना, पानीसे मेघ होना, नदी बहना, पृथ्वी तटकी मिट्टी-का बहना, नदीके मध्यमें उसका जमा हो पृथ्वी बन जाना, बर्फ गिरना, आतप व चंद्र प्रकाश होना आदि कृत्य पुद्गलके परस्पर सम्बन्ध और वियोगके कार्य प्रत्यक्ष प्रकट हैं। घर, घट, पट, वर्तन आदि वस्तुओंका बनाना इस शरीरी प्राणधारीका प्रकट है। ऐसी ही क्रिया अनादि कालसे चली आ रही है और चली जायगी। इसीसे यह जगत् सत् है अर्थात् जो २ पदार्थोंका यह समुदाय है वे सर्व सदासे हैं सदा रहेंगे। केवल उनमें अवस्था बदलती दीखती है इसीसे यह जगत् असत् है।

प्रत्येक आत्मा अपने शरीरप्रमाण आकारको लिये हुए झलकता है सो सत्य है क्योंकि प्रदेशत्व, अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, अगुरुलघुत्व, प्रमेयत्व साधारण गुण हैं जो सर्व आत्माओंमें, सर्व परमाणु व अन्य स्कंधोंमें तथा अन्य चार द्रव्योंमें पाए जाते हैं जिनकी भी सत्ता इस जगत्में है। स्थान घेरनेके स्वभावको प्रदेशत्व गुण कहते हैं। इसलिये हरएक वस्तु आकारको रखने-वाली है, आत्मा और पुद्गल जगत्में ४ कार्य करते हैं—चलना, ठहरना, स्थान पाना और नित्य परिणमन करते रहना। हरएक कार्यके लिये उपादान और निमित्त कारणकी आवश्यक्ता होती है। इन चारों कार्योंके उपादान कारण वे स्वयं हैं पर निमित्त कारण ये चार मूल द्रव्य हैं। **धर्मास्तिकाय**

और अधर्मास्तिकाय जो दोनों अखंड, अमूर्तिक लोकव्यापी अजीव द्रव्य हैं चलने और ठहरनेमें क्रमसे उदासीनपनेमें कारण हैं तथा आकाश द्रव्य सर्वको स्थान देता और काल द्रव्य पर्याय पल्टनमें सहाई है। आकाश अखंड और अनंत है। कालके कालाणु लोकाकाशके असंख्यात प्रदेशोंके समान असंख्यात हैं।

सुख शांति जो हमारे ही आत्माके स्वभावमें है उसीको प्राप्त करना हमारे आत्माका परम हित है। इसलिये हमें अपने ही आत्माके असली स्वरूपको जान कर उसपर दृढ श्रद्धान लाकर उसका ध्यान, मनन, पूजन, भजन करना चाहिये। यही **जिनधर्म** है। आत्मामें जो मिथ्याभाव, अज्ञान और असंयम या रागद्वेषादि विकार हैं उनको मेट कर आत्माको सच्चा श्रद्धावान, ज्ञानी, और संयमी या वीतराग बनाना सुख शांतिका पूर्ण लाभ करना है। और इस उपायको जितने अंश किया जायगा सुख शांति प्राप्त होगी। आत्मा आप ही अपना विगाड़ या सुधार करने वाला है। यह आप ही कर्त्ता और भोक्ता है। सुखशांति और चेतना आत्माका स्वभाव होने पर भी हमारे और आपके आत्माओंको इसका ठीक और पूर्ण लाभ नहीं है। यह इस बातको प्रमाणित करता है कि हमारे आत्मामें कुछ अशुद्धता है। अशुद्धता दूसरी वस्तुके मेलसे होती है। जिस वस्तुका मेल है उसे कर्म या पाप पुण्य कहते हैं। जैन सिद्धांत कर्मोंको पुद्गलकी वर्गणाएं बतलाता है। जब २ हमारेमें शुभ या अशुभ कोई अशुद्ध भाव होता है इनका आकर्षण या आश्रव होता है—साथ ही रागद्वेषके निमित्तसे इनका आत्माके साथ कुछ कालके लिये बंध होजाता है—उन्हींका असर होते रहना दुःख या संसारिक सुखका भोगना है। आत्माको इनसे बचानेके लिये वे शुद्ध भाव करने होंगे जिनसे इनका आना रुके या संवर हो तथा जो पूर्व बद्ध हैं उनकी निर्जरा हो जावे जिससें आत्मा सर्व बंधनोंसे छूटकर मोक्ष हो जावे। और अपने परम सुख शांत मय चैतन्य स्वरूपको प्राप्त कर सदाके लिये पवित्रात्मा हो जावे।

आत्माका आत्माके सिवाय पर पदार्थोंमें मोह करना जब बंधका कारण है तब अपने ही शुद्ध स्वरूपका ध्यान करना मोक्षका कारण है। इसी उद्देश्यके लिये जो इन्द्रिय विजयी होते हैं वे सर्व परिग्रह त्याग निर्ग्रंथ हो निरंतर स्वाध्याय करते हुए इसी तरह साधुमार्ग धारण करते हैं जैसा **श्री महावीरस्वामीने** किया था। प्रभुने वस्त्रादि रहित परम हंसकी अवस्थामें केवलज्ञान प्राप्त किया था।

जो इस मार्गको धार नहीं सकते वे गृहस्थमें रहते हुए धर्म, अर्थ काम, पुरुषार्थोंको पालते हैं। न्यायपूर्वक द्रव्य कमाना, जीवदयाके तत्त्वको ध्यानमें रखकर भोजनपान वस्त्राच्छादन आदि करना जिससे शरीर स्वास्थ्ययुक्त रहे और पशुपक्षी आदिकोंको

कष्ट न पहुंचे। तथा आत्मोन्नतिके उद्देश्यको ध्यानमें रखते हुए जिन तीर्थकरोंने व अन्य आत्माओंने अपनेको शुद्ध कर लिया उनकी भक्ति उनके नाम लेकर, उनकी ध्यानाकार मूर्तिओंके द्वारा उनके ध्यान व मोक्ष स्थानों व उनके परमपदके कालका निमित्त मिलाकर व उनके गुणोंको स्मरण करके करते हैं, निर्ग्रंथ साधुओंकी सेवा करते हैं, पवित्र शास्त्रोंको पढ़ते हैं, मन और इन्द्रियोंको वशमें करनेके लिये संयम पालते हैं, प्रातः और संध्याको ध्यानका अभ्यास करते हैं और यथायोग्य पात्रोंको धर्मसे व करुणाबुद्धिसे सर्वको आहार, औषधि, अभय और विद्यादान करते हैं। अहिंसाणुव्रत, सत्याणुव्रत, अचौर्याणुव्रत, स्वस्त्रीसन्तोष और परिग्रह प्रमाण इन पांच व्रतोंका अभ्यास करते हैं। यही **जिनधर्म** है जिसको अनादिकालसे तीर्थंकरादिकोंने पाला था और इसीका उपदेश किया था।

स्याद्वाद नयके द्वारा पदार्थोंको जानकर तथा समदृष्टी होकर रागद्वेष त्यागनेका अभ्यास करते हुए स्व और परकी उन्नति करना ही जिनधर्म है।

ऐसा ही **श्री कुंदकुंदाचार्य्य** और उनके शिष्य **उमास्वामी** ने कहा है:—

दसणं णाणचरित्ताणि सेवि दव्वाणि साहुणा णिच्चं।
ताणि पुण जाण तिण्णिवि अप्पाणं चेव णिच्छयदो
॥१॥ स० सार

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ॥ १
। अ० १ त० सूत्र ॥

अत्तागमतच्चाणं। सद्दहणादो हवेइ सम्मत्तं।
ववगय असेस दोसो सयलगुणप्पा हवे अत्तो
॥५॥ नि० सा०

छुह तण्ह भीरु रोसो रागो मोहो चिंता
जरा रुजा मिच्चू।
स्वेद खेदं मदो रई विण्हिय णिद्दा ज णुव्वेगो
॥६॥ नि० सा०

तस्स मुहग्गद वयणं पुव्वावरदोस विरहिय सुद्धं।
आगममिदि परिकहियं तेणदु कहिया हवंति तच्चत्था
॥८॥ नि० सा०

जीवा पुग्गलकाया धम्माधम्माय काल. आयासं।
तच्चत्था इदि भणिदा णाणा गुण पज्ज. एहिं
संजुत्ता ॥९॥ नि० सा०

जीवाजीवाश्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ॥ ४
अ० १ त० सूत्र

भावार्थ— सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक् चारित्र आत्माकी शुद्धिका उपाय है निश्चयसे तीनों ही आत्माका गुण है—इसीसे उसीकी रुचि, ज्ञान व उसीमें तन्मय होना मोक्षका मार्ग या अपनी स्वतंत्रताका लाभ करना है। व्यवहारसे आप्त, आगम, तत्त्वार्थोंका श्रद्धान करना सम्यग्दर्शन, उनका ज्ञान सम्यग्ज्ञान, उनका सेवन सम्यक्चारित्र है। क्षुधा, तृषा, भय, द्वेष, राग, मोह, चिंता, जरा, रोग, मरण, स्वेद, खेद, मद, रति, विस्मय, निद्रा, जन्म, उद्वेग ऐसे १८ दोष रहित सर्व आत्मिक गुणोंसे पूर्ण आप्त या पूज्य देव हैं उसके द्वारा प्रकट पूर्वापर दोष रहित और शुद्ध आगम है। जीव, अजीव, आश्रव, बंध, संवर, निर्जरा, और मोक्ष ये सात तत्त्व हैं। जीव अजीवमें जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, काल और आकाश छः द्रव्य गर्भित हैं। जीव और अजीवके सम्बन्धसे ही आश्रव आदि पांच तत्त्व हैं। यही जिनधर्म है। जगतके अन्य

सिद्धांतोंसे मुकावला किये जाने पर एक निष्पक्ष तत्वज्ञानीको इसीके द्वारा सन्तोष होता है। उक्त चम्पतराय वैरिष्टर १००० सफेकी पुस्तक "की ऑफ नोलेज" Key of Knowledgeमें वादानुवाद और विचारके पीछे सफा ८४६में कहते हैं-

"When we approach religion as humble seekers after Truth, and not in the spirit of bigotry or conceit, it will be seen that Jainism stands unrivalled among the systems which claim to impart the Truth."

भाव—जब हम धर्मको हठ या छलकी दृष्टिसे नहीं किंतु सत्यकी खोजसे देखेंगे तो हमें मालूम होगा कि सत्य बतानेका दावा करनेवाले सिद्धांतोंमें जैन सिद्धांत सर्वोच स्थान पाता है।

हम आप जब जैनी या जिनधर्मधारी या यों कहिये वीतराग विज्ञानी, भाव, कर्म, रागद्वेषादि, द्रव्यकर्म ज्ञानावरणादि तथा नोकर्म शरीरादि इन तीनों प्रकारके कर्मोको जीतने वाले **जिन**के भक्त प्रसिद्ध हैं तब यह तो सबसे पहले हमारा कर्तव्यहै कि हम इस जिन धर्मका पक्का श्रद्धान करके इसको अपने अभ्यासमें लावें।

हम जानते हैं कि आपमें बहुतोंका यह उत्साह है कि यह पवित्र धर्म जिसकी उत्पत्तिका पता इतिहासकी खोजके बाहर है जो आज २४४४ वर्ष हुए श्री **महावीरस्वामी**के समय भी विद्यमान था। श्री महावीरस्वामीने इसे चलाया नहीं था क्योंकि बौद्धोंके **त्रिपिटक** आदि प्राचीन ग्रंथोंमें भी महावीरस्वामीको जिन धर्मका चलानेवाला न लिख कर उपदेश दाता लिखा है। उस धर्मका प्रचार करें अर्थात् और अनेक जनोंको इसकी सची रोशनीमें लाकर उनकी आत्माका कल्याण करें। पर यह आपकी भावना तब ही सफल होसकेगी जब आप इसको धारण करोगे-स्वयं अपने चारित्रसे अपनेको श्री महावीरस्वामीका अनुयायी प्रकट करोगे। जैसा पहले क्षत्रियवीर चंद्रगुप्त चामुंडरायादि जैनी राजाओंने जब ग्रहस्थ में रहे तब न्यायपूर्वक राज्य किया, शत्रुओंसे देशको बचाया और जब निर्वृत्तिमार्गी हुए तब कर्मोको परास्त करनेका यत्न किया ऐसा ही वीरत्व जब आप धारण करोगे, आपकी छायामें अनेक आत्माएं आकर अपना कल्याण करेंगीं।

इस समय जो इस पवित्र धर्ममें दिगम्बर और श्वेतांबर भेद है सो न श्री ऋषभदेवके समयमें, न श्री पार्श्वनाथके वक्तमें और न महावीरस्वामीके समयमें थे। इस भेदका प्रारंभ यद्यपि राजा चंद्रगुप्त मौर्यके समयमें हुआ था पर इसकी पृथक् २ स्थिति विक्रमकी द्वितीय शताब्दीमें हुई हो ऐसा प्रकट होता है।

जो कुछ भी हो, इस समय हम सब जैन नामधारियोंका यह कर्तव्य है कि मूल सिद्धांतोंको जानकर उन पर चलें और अपना हित करें। तथा जब हम सब जैनी कहलाते हैं तब हम अपनी एक श-

किसे जो कुछ काम परस्पर मिलके कर सकते हैं उनको करें। परस्पर एक दूसरेके श्रद्धान, ज्ञान, चारित्रमें बाधा न पहुंचाकर परस्पर एकता रखकर हम जो कुछ काम करसकते हैं उसे अच्छी तरह सफाईसे करें।

भारत जैन महामंडल।

वर्तमानमें इस मंडलका यही उद्देश्य मालूम होता है। यद्यपि यह मंडल सन् १८९९में जैन यंग मेन्स एसोसियेशनके नामसे भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाके कुछ सदस्यों द्वारा इसलिये खुला था कि इंग्रेजी पढ़े जैनी भाई अपने धर्मका ज्ञान प्राप्त करें व महासभाके कार्योंकी उन्नति करके जैन समाजको तरक्कीपर लावें। उस समय इसका क्षेत्र अप्रकट रूपसे दिगम्बर जैन समाज ही था पर पीछे इसका क्षेत्र कुल जैन समाजके अंदर एकता रखते हुए जैन समाजकी उन्नति और जैन धर्मकी प्रभावना करना होगया है। इस मंडलने १८ वर्षमें यद्यपि कोई बहुत बड़ा अमली काम करके नहीं बताया है पर अपने इंग्रेजी 'जैन-गज़ट' मासिकपत्रको चलाकर अंग्रेजी पढ़ोंमें धर्मकी जागृतिको बनाए रखनेके सिवाय इसने पश्चिममें जैन धर्मका बीज बुवाया है व जैन ग्रंथको इंग्रेजीमें प्रकाशित करा इंग्रेजी पढ़ी दुनियांको जैन धर्मका रस पिलानेका उपाय किया है। परमात्मा प्रकाशका उल्था पढ़के बहुतसे भारतके विद्वानोंने जैन धर्मकी प्रशंसामें पत्र भेजे हैं। Key of Knowledge, Practical Path, Draya Sangrah, Outlines of Jainism आदि ग्रंथोंका इंग्रेजीमें प्रकट होना मंडलके उत्साही सदस्यों-का ही काम है। यह मंडलकी ही प्रेरणाका फल है जिससे बाबू सरचंद्र घोषाल एम. ए. जैसे कई बंगाल देशके विद्वानोंको जैन ग्रंथोंके अवलोकन व उल्थाका शौक पड़ा है।

मंडलके मुखिया मि. जुगमन्दिरलाल जैनी जज हाईकोर्ट इन्दौर कई वर्षोंसे कई जैन ग्रंथोंके उल्था करनेमें लीन हैं। मंडलकी सोची हुई प्रणालीके अनुसार आपने जैन धर्मके मुख्य २ शब्दोंका एक छोटा कोष भी बना दिया है जो Central Jain Publishing House. Arrah के व्यवस्थापक बाबू देवेन्द्रकुमार द्वारा छप रहा है। परम विद्वान् श्री. नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती द्वारा रचित सूक्ष्म विद्याके भंडार श्री गोमट्टसार जीवकांडका सामान्य उल्था समाप्त करके अब उसके कर्मकांडका उल्था कर रहे हैं।

वर्तमान दशा।

यद्यपि मंडलने कुछ किया है ऐसा कहा गया है पर वर्तमानमें जो दशा जैनजातिकी हो रही है वह भी अतिशय शोचनीय है।

(१) पहली बात तो यह है कि हमारे धर्मग्रंथ बहुतसे अभी तक तालोंमें बन्द हैं, दीमकोंके भक्ष्य हो रहे हैं। उनमें अनेक रत्न हैं पर वे प्रकाशित नहीं होते। कर्णाटक देशमें धवल, जयधवल, महाधवल व अन्य बहुतसे ऐसे ग्रंथ हैं जिनका प्रकाश करना अतिशय जरूरी है। धर्मकी उन्नतिके कोई योग्य साधन नहीं हैं। न हमारे अनेक

उपदेशदाता भ्रमण करते हैं और न हम अपने सिद्धांतोंको अनेक भाषाओंमें उत्था कराकर प्रकाशमें लाते, न उनका भाव बतानेवाली लाखों पुस्तकें प्रकट कर मुफ्त वितरण करते हैं। धर्मप्रचारके ये दो जो बड़े साधन हैं जिनके बलसे बौद्धधर्म फैला व ईसाई धर्म फैल रहा है, हमने अपने हाथमें नहीं धारण किये हैं।.

(२) दूसरी बात यह है कि हमारेमें एकता नहीं है। हम परस्पर ईर्षा रखते हुए एक दूसरेको हानि पहुंचानेका उपाय करते हैं।

(३) तीसरी बात यह है कि हमारेमें शिक्षाका बहुत कम प्रचार है। जिस शिक्षाको श्री ऋषभदेवने स्वयं अपने पुत्र व पुत्रियोंको बताया था वह शिक्षा हमारे सर्व बालक व बालिकाओंमें नहीं है—१००० में ९०९ बालक और ९९० बालिकाओंका अशिक्षित रहना क्या हमारी जातिको पशु समान नहीं बनाए हुए है? जिस जातिकी माताएं मूर्खा हों वहां शिक्षाका प्रचार कैसे हो?

(४) चौथी बात यह है कि हमारे यहां बालविवाह, वृद्धविवाह, कन्याविक्रय, व्यर्थ व्यय आदि कुरीतियां अभी तक फैली हुई हैं।

(५) पांचवी बात यह है कि हममें चारित्रकी हीनता होती जा रही है; शुद्ध खानपान, व्यायाम और ब्रह्मचर्य जो खास शरीर रक्षाके साधन हैं उनसे हम विमुख हो रहे हैं। हमने अपने मन्य न्याययुक्त व्यवहारको कलंकित कर दिया है। हमने न्याय व शांतिसे व्यवहार करना छोड़ दिया है। हम दुनियांके फेशन पर चलकर चमड़ेकी अधिक वस्तुएं व्यवहार कर दिन पर दिन हीन चारित्र होते जाते हैं।

(६) छठी बात यह है कि कुछ उच्च विद्याके अभाव व कुछ प्रमाद वश हम देशकी सेवामें भाग नहीं ले रहे हैं। हमारे जैनियोंका कोई मेम्बर वाइसरायकी लेजिस्लेटिव कौंसिलमें मेम्बर नहीं, कोई हाईकोर्ट जज नहीं; कोई देशका नेता नहीं।

हमारी सामाजिक बुराइयोंके कारण व परस्पर धर्म स्थिरताका उपाय न होनेसे स्वास्थ्यकी रक्षा अपनी व अपने बालिकाओंकी खासकर न करनेसे हमारी संख्या दिनपर दिन हीन होती जारही है। इत्यादि जैसी कुछ हीन दशा इस हमारी जैन जातिकी है उसको देखकर सिवाय रोनेके और क्या कहा जा सकता है?

हमारा कर्तव्य।

(१) **एकता**—दशा जैसी कुछ है वह प्रकट है। राग जैसा कुछ है वह विद्यमान है। अब आवश्यकता है कि रोगको दूर करनेका उपाय किया जावे। पहली ज़रूरी बात यह है कि हम सब जैन नामधारी भाइयोंको परस्पर एकताका भाव स्थापित करना चाहिये—अब समय एकताका है। जब शिया सुन्नी मुसैलमान एक हैं—अपनी २ श्रद्धानुसार धर्म पालते हुए मुसलमानपनेके

नातेसे एक आवाज़से बोल रहे हैं, जब शैव, ब्राह्म, शाक्त आदि भेद होनेपर भी सर्व हिन्दू एक स्वरसे हिन्दूपनका शब्द निकाल रहे हैं, जब प्रोटेस्टेन्ट कैथलिक आदि भेदोंको रखते हुए भी सर्व ईसाई एक स्वरसे हो रहे हैं, जब महायन और हिनायन भेदोंको रखते हुए सर्व बौद्ध एकतामें गूंज रहे हैं तब क्या यह असंभव है कि हम अपनी श्रद्धाके अनुकूल भेद रखते हुए भी परस्पर एकता न रख सकें ?

एकताका साधन न्याययुक्त नम्र व्यवहार और सहिष्णुता है। जिनके साथ हम एकता रखना चाहते हैं उनसे हम नीति और धर्म पूर्वक मान मत्सर छोड़कर नम्रतासे व्यवहार करें तथा कभी कोई तुच्छ दोषको भी सह कर उसको समतासे निवारण करनेका यत्न करें—तो एकता रह सकती है।

२६ वर्ष पहले दिगम्बर और श्वेताम्बरमें बहुत अंशोंमें एकता थी। अब इस एकताके हटनेका कारण यदि देखा जाय तो इन्हीं दोनों गुणोंका अभाव है।

उन तीर्थ स्थानोंपर जहां दोनों आम्नायवाले पूजन करते हैं जबसे एक दूसरे स्वामी होना चाहने लगे तथा एक दूसरेके धर्मसाधनमें विघ्न उपस्थित करने लगे तब ही से ऐसे झगड़े बढ़े कि जिनके कारण लाखों रुपये अदालतोंमें व्यय हुए व हो रहे हैं। हमें यहां यह विवेचनकी जरूरत नहीं है कि किसका दोष है व किसका नहीं है व किसका अधिक व किसका कम है। निष्पक्ष महाशय स्वयं इस बातको जान सकते हैं।

वास्तवमें तीर्थ उन तीर्थकरोंके हैं जो वहांसे मुक्त पहुंचे हैं। उनके स्थानोंकी पूजा कोई भी जैनी करें उसको जैनत्वके नातेसे पूरा हक है। तथा एक जैनीको तो यही समझना चाहिये और यही भाव रखने चाहिये कि इन तीर्थोंकी भक्तिसे जितने अधिक जीव लाभ उठावें उतना ही श्रेष्ठ है।

श्री शिखरजी—हमारे सर्व तीर्थोंमें परम माननीय श्री शिखरजी या सम्मेदाचल पर्वत है जो इसी बंगालमें है व जहांसे अनंत तीर्थंकर मोक्ष गए व जावेंगे। इस तीर्थके सम्बन्धमें जो अदालतें परस्पर हो रही हैं, क्या जैन धर्मके सिद्धांतपर लक्ष्य देनेसे एक दिनमें नहीं दूर हो सकती हैं? दिगम्बरी भाइयोंका फर्ज है कि श्वेताम्बर भाइयोंके धर्मसाधनमें कोई विघ्न न करें। श्वेताम्बरी भाइयोंका फर्ज़ है कि दिगम्बरी भाइयोंके धर्मसाधनमें कोई विघ्न न करें। जो पूज्यनीय स्थान स्मारकके रूपमें सदासे चले आ रहे हैं उनको उसी प्राचीन रूपमें चिरस्थाई रक्खें। यदि कोई धर्मस्थान इतने बड़े पर्वतपर बनाना चाहे तो उसमें कोई एक दूसरेको विघ्नकारक न हो। तथा सब ही पर्वतकी जैसी पवित्रता कायम है उसीको स्थिर रखनेका यत्न करें। उसपर कोई वस्ती न बसने देवें। उचित तो यह है कि पर्वत पर कोई कार्य जैनियोंकी श्रद्धाके प्रतिकूल न हो ऐसी लिखा पढ़ी सर्कार व राजाद्वारा

लेना चाहिये। यदि दोनोंकी एक सम्मतिसे उद्योग हो तो यह बात सिद्ध होसकती है। तब इसकी कोई आवश्यकता नहीं कि पर्वतको पट्टेकी लिया जाय या खरीदा जाय। आवश्यकता इस बातपर ही है कि पर्वतकी पवित्रतामें भविष्यमें कोई सन्देह न हो। पर परस्पर अनैक्य होनेसे जैन जातिकी सर्वथा हानि होगी व अन्योंको लाभ पहुंचेगा। यह सर्व काम परस्पर विश्वास और दिल खोल कर बात करने ही से हो सक्ता है। आप सर्व भाइयोंका कर्तव्य है कि इस तीर्थ संबंधी चिंताका समाधान कराके अनैक्यके बीजको मिटा दें। यदि मंडलके सदस्योंने इस कार्यमें सफलता पाई तो कहना होगा कि उन्होंने एक बड़ी भारी फूट राक्षसीका विजय करके अपने निर्मल यशको स्थापित किया है।

(२) **जैन कालेज**—जैन जाति एकताके सूत्रमें बँध कर जैन समाजको उन्नतिका जो सर्वसे मुख्य उपाय **जैन कालेज**का स्थापन है उसको सुगमतासे कर सकती है।

जैन कालेजकी आवश्यकता जैन जातिमें मुद्दतोंसे होरही है। पर यह काम अभी तक नहीं हुआ है। यद्यपि स्वर्गवासी दानवीर सेठ माणिकचंदके उद्योगसे कालेजके स्थानों पर जैन बोर्डिङ्ग खुल गए हैं और उनसे कुछ लाभ भी हुआ है पर जातीय कालिजके लाभसे कोट गुणा कम है।

यदि विचार कर देखा जाय तो कोई भी जाति ऐसे विद्वानोंके बिना उन्नति नहीं पासक्ती जो उच्च शिक्षाके भंडार हों व जातीयताका अभिमान रखने वाले परोपकारी हों। मुसल्मानोंको अलीगढ़ कालेजने, हिन्दुओंको हिन्दू कालेज व हिन्दू विद्यालयने जीता जागता हुआ रक्खा पर जैनियोंमें जातीयताके पैदा करनेका साधन अबतक न हुआ। १२॥ लाख जैनी एक कालेजके लिये थोड़े नहीं हैं। यदि औसत दरजे एक २ रुपया भी देवें तो कालिज स्थापित कर सकते हैं। यह काम जैन जातिके विद्वानोंका है। यदि दो चार भी विद्वान् परोपकारी गेजुएट अपना जीवन कालेज स्थापनके लिये अर्पण करदें और आजकलकी आवश्यकतानुसार विज्ञान शिल्पादिकी शिक्षाको देनेवाला कालेजका मसौदा व नियम बनाकर जगह २ जाकर बिना किसी भेदभावके उद्योग करें तो कालेजके लायक रुपया क्या नहीं होसकता हैं? अवश्य होसकता है। एक आम्नाय कम दे या ज्यादा दे इस प्रश्नको बीचमें न लाकर सर्व जैनी मात्रसे उसकी शक्ति व भक्तिके अनुसार लेना चाहिये। जैन जातिमें रुपयोंकी कमी नहीं है पर सच्चे कार्य कर्ताओंकी कमी है। यदि सर्व आम्नायोंमेंसे तीन चार विद्वान् इस बातका बीड़ा उठावें तो यथाशक्ति मैं भी सहाय कर सक्ता हूं। सर्व जैनी लौकिक विषय साथ २ पढ़ सकते हैं। धार्मिक विषयोंमें अपनी २ आम्नायके भिन्न २ अध्यापकों द्वारा भिन्न २ पुस्तकें पढ़ सकते हैं अथवा तात्विक पुस्तकें ऐसी भी हैं जिनको सर्व सम्प्रदायके छात्र एक साथ पढ़ सकते हैं। यह एक कार्य है जिसे हम सर्व जैनियोंको मिलके करना चाहिये। कोई २ इस कामको

भी असंभव ख़याल करते हैं ? यह उनकी भूल है क्योंकि जब आर्यसमाजी मूर्ति अपूजक व मूर्तिपूजक हिन्दू जो प्रायः लड़ा करते हैं हिन्दू विश्वविद्यालयके काममें परस्पर मिल गए तो क्या हम इस विद्योन्नतिके काममें नहीं मिल सकते ? प्रश्न यह होगा कि इस कालेजको कहां स्थापित किया जाय। मेरी सम्मतिमें काशीसे बढ़ कर दूसरा स्थान नहीं है जहांपर हर प्रकारके विद्वानोंका सुभीता व हिन्दू विश्वविद्यालयका सम्पर्क है।

(३) **जीवदया प्रचार**—यह एक ऐसा कार्य हैं जिसको हम परस्पर मिलके बहुत कुछ कर सकते हैं। हमें जगह २ सोसायटी खोलनी चाहिये, जीवदयाकी पुस्तकें व नोटिस बांटने चाहिये, उपदेश देना चाहिये व मांसाहार निषेधार्थ शाकाहारी भोजनालय खुलवाना चाहिये जिससे मांसाहारी स्वच्छता, स्वादिष्ट व स्वास्थ्ययुक्त भोजन पानेका अभ्यास करके मांसाहारसे बचें तथा स्थान २ पर जो बलि देवियोंके मठोंपर होती हैं उसे एक साथ उद्योग करके बंद करावें।

(४) एक जैन सहायक बैंक (A Jain Co-operative Bank) खोलें जिससे नवयुवक छात्रोंको कलाकौशल्यमें शिक्षित होनेको व उन्हें व अन्य जैनियोंको व्यापारादिमें लगानेको उधार रुपया दिया जाय। इससे समग्र जैनजातिकी आर्थिक दशाका सुधार हो सकता है। इसी बैंकमें हम अपनी जातिके उन रुपयेको भी रख सकते हैं जिन्हें हम अन्य बैंकोंमें व्याज पर रखते फिरते हैं।

(५) **अमली कार्रवाई**—समजमेंसे जिन २ कुरीतियोंको निकालना है व धर्मसे अविरुद्ध सुरीतियोंका प्रचार करना है उसके लिये मंडलके सभासदोंको स्वयं अमली कार्रवाई दिखलानी चाहिये व उसकी रिपोर्ट मंडलके वार्षिक जल्सेमें पेशकर अमली कार्रवाई करनेवाले सभासदोंको धन्यवाद देना चाहिये। बालविवाह, वृद्धविवाह, कन्याविक्रय कोई न करे, संतान जन्म व मरण होनेपर साधारण खर्चके सिवाय बिरादरीके जीमन आदिमें द्रव्य न लगावें। विवाह शादी थोड़े खर्चमें निवटावें। अपने २ सन्तानोंको धार्मिक शिक्षा देवें व उन्हें धर्मरीतिसे चलावें। तथा हरएक सभासद गृहस्थके नित्य कर्म देवपूजा, दर्शन, स्वाध्याय, सामायिकादिको करे। पानी छानकर वर्तें। अभक्ष्यसे बचें। न्याययुक्त व्यवहार करें, यही उपाय है। जनतामें धर्मज्ञान व धर्माचरण फैलाने व परस्पर धार्मिक विश्वास जमानेका है। मंडलको चाहिये कि एक २ फार्म प्रत्येक सभासदसे मासिक अमली कार्रवाईका भराकर मंगावें उसमें यह भी नोट हो कि अमुक ग्रन्थका स्वाध्याय इतना किया व इसमें यह विषय उपयोगी निकला आदि।

(६) **जैन धर्मके ग्रंथ**—जिनमें जीवके गुणस्थान मार्गणा व कर्मबंध आदिका वर्णन हो व जो अध्यात्म रसमें गर्भित हों—जिनमें तत्वज्ञान विशेष हो उसको अनेक भाषाओंमें प्रकाशित करना। इस कामको इसीतरह एकतासे किया जासकता है जिस तरह बम्बईका परमश्रुतप्रभावक मंडल रायचंद

शास्त्रमाला द्वारा तात्त्विक ग्रंथोंको प्रकट करता है-परस्पर आम्नाय सम्बन्धी पूजा पाठ व साधुओं श्रावकोंके वाहरी आचरण सम्बन्धी व कथा ग्रन्थों प्रकट करनेकी बहुत आवश्यकता है-मंडलके पास इस ग्रंथ प्रकाशनके लिये कुछ व भंडार रहनेकी ज़रूरत है।

(७) **स्त्री शिक्षाका प्रचार**-मंडलका यह भी फर्ज है कि वह एक वृहत् कन्या-महाविद्यालय उसी ढंगका स्थापित करे जिस ढंग पर एक जैन कालेज स्थापित करना है। जब तक योग्य माताएं न बनेंगीं योग्य संतानका होना दुःसाध्य है।

(८) **प्राथमिक शिक्षाका प्रचार**-प्रत्येक जैन बालक व बालिका शिक्षा लेती है या नहीं इसकी देखभाल करके इसका प्रबन्ध प्रत्येक स्थानकी बिरादरीसे कराना मंडलका सबसे बड़ा कर्तव्य है। जहां जुदी पाठशाला व कन्याशाला स्थापित हो सकती है वहां स्थापित कराना व जहां नहीं हो सकती हैं वहांके लड़के लड़कियोंको सर्कारी शालाओंमें भिजवाना तथा इसकी रिपोर्ट वार्षिक जलसेमें प्रकट करना चाहिये।

(९) **विधवाओंकी उपयोगिता**-मंडलका यह कर्तव्य भी है कि विधवाओंकी कमीके लिये उनके कारणोंके मेटनेके सिवाय हमें उनका जीवन पवित्र और उपयोगी बनानेकी प्रेरणा करनी चाहिये। आर्य समाजकी विदुषी कुमारी लज्जावती देवीने ता० २९ नवम्बरको लखनऊमें व्याख्यान देते हुए विधवाओंके लिये कहा कि उनके लिये श्रेष्ठ मार्ग यही है कि उन्हें शिक्षा देकर परिचारिका, शिक्षिका, प्रचारिका, पाचिका आदि बनाया जाय-उन्हें स्वार्थ त्यागकी मूर्तियां बनाया जाय। देशका अधिकांश सुधार इन विधवाओंसे हो सकता है। उन्हें बताइये कि सारा देश ही तुम्हारा घर है व सारे देशके बच्चे ही तुम्हारे बच्चे हैं। इनसे जनतामें शिक्षाकी वृद्धि हो सकती है। धर्मका प्रचार भी इनसे खासा हो सकता है। बौद्ध कालमें सम्राट अशोककी कन्याने सीलोन जाकर धर्मप्रचार किया था। मंडलका कर्तव्य है कि विधवाओंकी शिक्षाका पूर्ण प्रयत्न करावे।

(१०) **जैन सेवा समिति**-जैन उत्साही नवयुवकोंका कर्तव्य है कि अपने यहां जो जैन मेले होते हैं उनमें जाकर स्त्रीबच्चोंकी रक्षा कर व दुःखियोंकी सहायता करें, सर्वसाधारणके लाभार्थ उपदेश देवें, दुःखोंका निवारण करें तथा जैन संस्थाओंमें काम करें, धर्मोपदेश देवें व बोर्डिंगोंके सुप०का काम करके छात्रोंको सुपथगामी बनावें।

(११) **श्रीमान् पंडित अर्जुनलालजी सेठी**-अंतमें मैं आपका ध्यान जैन जातिके सेवक सेठीजी पर आकर्षण करता हूं। वह किस विपत्तिमें हैं यह बात आपसे छिपी नहीं है। अब वह बिलौर जिले मद्रासमें भेज दिये गए हैं। भा० दि० जैन महासभाके सहायक मंत्री मूलचंदजी वकीलने ता० १० दिसम्बरको रेजिडेन्ट जैपुरको तार किया था-वह तार तथा उसका उत्तर जैन गज़ट ता०

१७ दिसम्बरमें मुद्रित है। वह यह है-

Kindly inform if provisions made by Government for Arjunlal Sethi's religious scruples in Villore. Jain Sabha shall be grateful to know his offence and period of internment—भावार्थ—अर्जुनलाल सेठी-के धार्मिक विचारोंकी रक्षामें क्या प्रबन्ध हुआ है तथा उनपर क्या जुर्म है व कबतक मुहलत नज़रबंद रहनेकी है। इसका उत्तर आया—Your telegram 10th. Arrangement being made but at present none of his family willing proceed Villore. Stop for latter portion telegram refer Villore. भावार्थ—तार पाया। प्रबन्ध हो रहा है पर अभी तक उनके कुटुम्बका कोई आदमी विलौर जानेको राजी नहीं है। दूसरी बातके लिये विलौर पूछो—इन तारोंको सुनकर आपका यह कर्तव्य है कि सेठीजीका शरीर व धर्मकी रक्षाके लिये शीघ्र दो भाइयोंके भेजनेका प्रबन्ध करें। कुटुम्बकी अकेली स्त्री व बच्चे वहां कैसे जाकर क्या कर सकते हैं?

यह इस समय बड़ी भारी सेवा आपके लिये उपस्थित है। यदि सेठीजीका शरीर न रहा तो जैन कौमको भी एक भारी कलंक लगेगा। सेठीजीको तीन वर्षसे अधिक नज़रबन्दीमें होचुका। शासनकर्ता कोई सुनाई नहीं करते, परंतु इसमें मैं कहूंगा कि समग्र जैन जातिका पूर्ण उद्योग नहीं है। आज सेठीजी पर संकट है कल दूसरे पर आसकता है इससे आप सहस्रोंका कर्तव्य है कि जिस तरह बने वाइसराय और भारत मंत्रीकी सेवामें जाकर अपना दुःख सुनाओ। यदि सुनाई न हो तो इंग्लैंडमें पार्लियामेंटमें जाकर पुकार करो—एक जाति बंधुके संकटको दूर करना आपकी जाति व धर्मकी रक्षाका उपाय है। श्वेताम्बरी भाइयोंको भी दिगम्बरियोंके साथ पूर्ण योग देकर इस परम कर्तव्यको निर्वाह करना चाहिये।

अंतमें मैं बृटिश राज्यकी इस महा भारी युद्धमें विजय कामनाकी भावना करता हुआ इस हिंसामय युद्धकी शीघ्र शांति चाहता हूं। और अपने उपस्थित अनुपस्थित जैनी भाइयोंको प्रेरणा करता हूं कि वे अपनी सर्कारकी युद्धमें विजय होने तक हर तरह तन मन धनसे मदद करते रहें।

मैं अपने जैनी भाइयोंसे यह भी कहूंगा कि वे अपने देशके सुधारके कार्योंमें भी पूरा २ योग देवें। वे भी भारतके एक अंग है। भारतमें शिक्षा प्रचार हो, स्वास्थ्य स्थिर रहे, दुर्भिक्षोंका अंत हो; व अहिंसा धर्मका प्रचार हो, इस विषयमें पूर्ण योग देवें। यहांके गरीब मज़दूरोंके लाभार्थ यहांका बना कपड़ा आदि सामान यथासंभव व्यवहार कर देशको लाभ पहुंचावें।

प्रिय भाइयो। जो कुछ मैंने कहा है उसका सारांश यह है कि आप लोग अपने जीवनको जिनधर्ममय बनाओ और उस आनन्दका स्वाद लो जो अपने आत्माका स्वभाव है। तथा इस जिनधर्म व जैनसमाजकी उन्नतिके लिये जो२ उपाय मैंने विचार सो

आपके सामने उपस्थित किये हैं। आशा है आप लोग हंसवत् इसमेंसे सार ग्रहण कर मुझे कृतार्थ करेंगे। और जैन जातिकी आवश्यकता-ओंको विचार कर इस कल्कत्तेके अधिवेशनको स्मरणीय बना देंगे। आपलोग पारसी कौमसे १२ गुणे हैं—यदि आप प्रमादको हटाकर अपनी उन्नतिके लिये कमर कसके खडे हो जावेंगे तो मुझे कुछ भी निराशा नही है कि आप उन्नतिपथ पर आरूढ होजांयगे। आप कभी अपने चित्तमें निराशाको न आने दें। सदा सच्चे मनसे श्रद्धापूर्वक पुरुषार्थ करते चले जावें। वास्तवमें पुरुषार्थका फल अवश्य होता है।

मंगल भगवान् वीरो। मंगल गौतमो गणि।
मंगल कुंदकुंदाद्यो जैनधर्मोस्तु मंगलम्॥

अब उद्धार कैसे हो ?

लगी दिन रैन है चिन्ता कि अब उद्धार कैसे हो।
पड़ी मझधारमें भगवन् ये नैया पार कैसे हो ॥१॥



चले आँधी निराशाकी न सूझे आपना बेगाना।
खिवैया चोकड़ी, मूढे प्रभो निस्तार कैसे हो ॥२॥



नदी जीवन समरकी है विजय उद्देश्य जिसका तट।
पहुँच उसतक अविद्याकी यह हलका भार कैसे हो ॥३॥



भयानक भ्रम भँवरमें पड गई सब मान मर्यादा।
हुए मदमत्त स्वारथमें सुमति सन्चार कैसे हो ॥४॥



गमी कर्तव्य विसराये न निश्चय आम शक्तीपर।
भला फिर सद् विचारोंका अमय उद्गार कैसे हो ॥५॥

"प्रेमी" हजारीलाल जैन–आगरा।

श्रद्धा उन्नतिकी जड़ है।

(ले० जैन धर्मभूषण ब्र० शीतलप्रसादजी।)

यह ऊपरका शीर्षक एक ऐसा मूल मंत्र है, जिसके आधार पर सारे जगत्‌की सर्व प्रकारकी उन्नति निर्भर है। जिसकी जिस बातमें पहले श्रद्धा होती है तब उसका प्रयत्न हार्दिक प्रेमसे होता है। जिसका उद्योग हृदयसे किया जाता है उसमें यदि बाधक कारण कोई उपस्थित न होकर साधक कारण मिल जाय तो वह कार्य अवश्य सफल हो जाता है। पहले हम लौकिक कार्यों ही में देखते हैं—जिस किसीको यह श्रद्धान हो कि वह युद्धमें शत्रुका सामना कर सकेगा और वह युद्धमे जाए भी तो उसके भीतर अश्रद्धाभाव साहसके गुणको भस्म कर देगा। वह या तो कायर हो भाग जायगा या शत्रुसे पराजित होगा। मै वीर हूं—साहसी हूं यही श्रद्धा उसे साहसी बनाएगी और वह बहुत अंशमें सफलता पालेगा। एक व्यापारी मनुष्य किसी मालको उसी समय खरीद करता है जब उसके चित्तमें यह श्रद्धा गाढ हो जाती है कि इसका व्यापार करनेसे मैं अवश्य लाभ उठाऊंगा। यदि अश्रद्धा भावसे करेगा तो धोखा खा जायगा।

श्रद्धाके बलसे ही पाश्चिमात्य देशोंने आश्चर्य-कारक जड पदार्थोंकी उन्नति कर डाली है। एक विद्यार्थी इस श्रद्धा से कि मैं इस विषयपर ध्यान दूंगा तो अवश्य सीख जाऊंगा, उस

विषयका पारगामी हो जाता है। यदि संशकित व अश्रद्धालु हो तो उसका प्रयत्न उसी थके हुए बैलके समान होता है जो जाना तो न चाहे पर कोड़ोंकी मारसे चलाया जाय। श्रद्धाके बलसे एक विज्ञानवेत्ता किसी पदार्थके गुणोंकी परीक्षामें एकचित्तता व धैर्यके साथ काम कर सकता है और अपने चिर प्रयत्नसे इच्छित खोजमें सफल हो जाता है। यह श्रद्धा है जो उसको आगे उत्तेजित उसी तरह करती रहती है जैसे एञ्जिन गाड़ीके डब्बोंको ढकेलता व खींचता रहता है। श्रद्धाके बलसे ही वेतारका तार, टेलीफोन, हवाई जहाज़, बिजलीकी शक्तिकी खोज आदि संसारोपयोगी आविष्कार निकल पड़े हैं। एक जानेवाला तब ही किसी स्थानपर पहुंच सकता है जब उसके चित्तमें यह श्रद्धा हो कि मैं चढ़ सकता हूं और वह हार्दिक भावसे उत्साहसे भरा हुआ चलने लग जावे-देखा जाता है कि श्रद्धाके बलसे एक ८ या ९ वर्षका बालक ६ मीलकी चढ़ाई श्री **सम्मेदशिखर** पर्वतकी कर लेता है। उसके दिलमें यह विश्वास होता है कि मैं पहुंच जाऊंगा बस यह विश्वास उसके चित्तको उत्साहित करता है। यह उत्साह उसे वेधड़क इच्छित स्थानपर पहुंचा देता है।

श्रद्धाके प्रतापसे ही एक शिल्पकार या एक चित्रकार अपना उपयोग किसी शिल्प या चित्रके यथोचित बनानेमें ठीक २ लगाकर उसमें सफलता पालेता है। वास्तवमें श्रद्धा कार्यकी जननी है। श्रद्धा चारित्रको सफलीभूत करती है। श्रद्धा ही ज्ञानको सार्थक बनाती है। श्रद्धा विना ज्ञान अज्ञान है-न होनेके समान है।

जापान देशने जो लौकिक उन्नति इतनी आश्चर्यजनक करडाली है उसका मूल कारण उसके शासनकर्ता व प्रजामें इस बातका दृढ श्रद्धान होता है कि हम अन्य देशोंके समान अवश्य हो सकते हैं। यदि अपनी शक्तिकी अश्रद्धा होती तो उन्नति पथपर रुचिसे न चलते हुए कभी भी सफलता न होती। भारतवर्षमें जो लौकिक उन्नतिकी गति अति मंद हो गई है इसका कारण हम उन्नति कर सकते हैं और करें इस गाढ़ श्रद्धाका अभाव है। विना श्रद्धाके एक चींटी दीवार व टेढ़े स्थान पर नहीं चढ़ सकती है। चाहे उसे बाहमें व्यक्त न हो पर उसकी आत्मामें यह श्रद्धा है कि वह चढ़ सकती है इसीसे पुनः पुनः गिरने पर भी चढ़ती है और एक दफे अपने कार्यमें सफल हो जाती है। महा आलसी मनुष्यको भी श्रद्धा महापरिश्रमी बना देती है। एक आलसी आदमी बेकार बैठा हो पर हो वह लोभी। यदि उसे कोई कहे कि अमुक स्थानपर जानेसे तुझे १०००) की प्राप्ति होगी पर तू जायगा तो होगी अन्यथा नहीं होगी। जिस समय वह लोभसे प्रेरित हो इस बातपर दृढ विश्वास कर लेगा उसका मन पक्का इरादा बांध लेगा कि चाहे जिस तरह वहां पहुंचना बस उस श्रद्धावश अवश्य जायगा और जाना लाभ पायगा। लौकिक उन्नतिके जो २ साधन हैं उनको

इसप्रकार करनेसे सफलता होगी ऐसा उपदेश भारतवासियोंके दिलों तक पहुंचना चाहिये। उनके भीतर यह उपदेश जमना चाहिये। वास्तवमें, वचनमात्रका उपदेश चित्तमें अंकित नहीं होता जब तक कि उसके साथ उदाहरण भी न हो। दृष्टान्त सहित उपदेश सचा काम करता है और अवश्य उस उपदेशपर श्रद्धान जमा देता है।

यदि भारतवासी शिक्षकवर्ग लौकिक उन्नतिके साधनोंका श्रद्धान करके उस श्रद्धाके अनुकूल स्वयं परिश्रम करने लग जावें और तब उपदेश करें अवश्य उनका वचन अनपढे किसानोंको, अनपढ़े शिल्पकारोंको असर कर जायगा और वे इस बातमें श्रद्धा करेंगे। बस श्रद्धाके होते ही उनको जो कुछ ज्ञान हुआ है उसको अमली काममें परिणमन करने लग जायंगे।

कहते है सब कोई कि भारतवासी अपने देशकी बनी चीजें ही काममें लावें। पर ऐसी चीजें जो सस्ती और सुंदर हों, विदेशी चीजोंके मुकाबलेमें ठहर सकें हम तैयार करके बतावें ऐसा उद्योग नहीं होनेसे कोई सफलता नहीं होती। इसका कारण यही है कि जो कहने है वे स्वयं श्रद्धालु नहीं। यदि सच्ची श्रद्धा होवे तो स्वयं उद्यम करें बस तब फिर उनका उपदेश व्यापक होके अपना असर कर डाले।

और जो एक दो भारतवासी कुछ उद्यमी है और कुछ चमत्कारिक लौकिक उन्नति बता रहे हैं जैसे डा० बोस, डा० पी० सी० राय उनकी इस उन्नतिका क्या कारण है। पता लगेगा कि उनका दृढ श्रद्धान ही इसमें कारण है।

दूर क्यों जाइये। जिस स्वराज्यके लिये आज सारा भारत लालायित हो रहा है—हिन्दू मुसलमान एकचित्त हो स्वराज्य स्थापनकी भावना भारहे हैं—इस स्वराज्य भावके इतने व्यापक होनेका कारण क्या है? यदि आप देखेंगे तो पता चलेगा कि यह लोकमान्य **तिलक**, व मिस **एनी बेसेन्ट**की दृढ श्रद्धा सहित होकर उसके अनुकूल वर्तन करना है। यदि लोकमान्य तिलक स्वयं दृढ श्रद्धानी न होते व अनेक आपत्ति आने पर भी अपने श्रद्धानके अत्यागी न होते—श्रद्धान बदलनेके बदलेमें प्राणत्याग ऐसे फलकी भी परवाह न करते होते तो आज उनका श्रद्धान इतना व्यापक न होता और उनकी जैसी गाढ मान्यता भारतवासियोंके दिलोंमें है वह हरगिज न होती। यदि मिस एनी बेसेन्ट जेलमें पडनेके भयसे अपनी स्वराज्यकी श्रद्धा छोड बैठतीं तो कभी भी सफल न होतीं। श्रद्धा दृढ रखकर जो उन्होंने कष्ट भोगा उसहीका परिणाम उनकी श्रद्धाका भारतव्यापी होना और उनकी सम्मति भारतियोंके चित्तमें सहस्र-गुणा बढ जाना है।

इसीसे यह कहना सर्वथा सत्य है कि "श्रद्धा उन्नतिकी जड है"।

अब विचारना यह है कि मानवको क्या२ उन्नति करना है जिसके लिये उसे श्रद्धाकी आवश्यकता है।

एक मानव केवल जड़ परमाणुओंसे बना

हुआ भौतिक शरीर नहीं है किन्तु एक आत्मा पदार्थके साथ जड़ वस्तुओंसे बना हुआ ढांचा है। वास्तवमें देखा जाय तो मानव तो वह आत्मा है—और यह शरीर उसके रहनेका झोंपड़ा है। जगत्‌में जो दो प्रकारकी उन्नति प्रसिद्ध है उसमें पारमार्थिक उन्नतिका सम्बन्ध आत्मासे और लौकिक उन्नतिका सम्बन्ध इस जड़के बने झोंपड़ेसे है। इस झोंपड़ेकी ही रक्षा, इसीको ही खिलाने पिलाने, नहाने, सुलाने, पहनाने, चलाने, फिराने आदिके कामोंके लिये अनेक लौकिक वस्तुओंकी आवश्यकता पड़ती है—उनको विना किसी कष्टके रहना—उसमें कोई बाधक न होना यही लौकिक उन्नतिकी हद है। एक व्यक्ति लौकिक उन्नतिका फल अपने उस शरीरमें रहने तक ही भोग सकता है आज वह फल उसके लिये नहीं हो सकता—हां इसमें कोई इनकार नहीं हो सक्ता कि उसका फल उसकी सन्तान व अन्य जन भोगें। पर पारमार्थिक उन्नतिका फल इतना सुन्दर है कि जितनी २ उन्नति मानव करता जायगा उतना २ फल पाता जायगा। क्या वह फल भविष्य जीवनको भी उत्तम बनानेका मूल कारण पड़ जायगा। इतना ही नहीं उसका संस्कार, उसे और अधिक उन्नतरूप होनेके लिये बाध्य करेगा। यहां तक कि उन्नतिकी चरमसीमा जो परमात्मपद है उसको पहुंच जायगा।

पर इस पारमार्थिक उन्नतिके लिये भी श्रद्धाकी आवश्यकता है। श्रद्धा विना आत्माकी कोई भी उन्नति नहीं होसकती।

आत्मा, धर्म, उसका फल यद्यपि ज्ञानीकी दृष्टिमें प्रत्यक्ष है पर अज्ञानीको परोक्ष मालूम होते हैं—इसीलिये उसे इनका या तो विश्वास ही नहीं होता और यदि होता है तो यथार्थका नहीं होता चाहे जैसेका होता है पर इससे काम सिद्ध नहीं होता। जैसे कोई दिहलीसे कलकत्तेको जानेकी इच्छा करनेवाला यदि यह उल्टा श्रद्धान करले कि दिहलीसे पश्चिमकी ओर कलकत्ता है और इस श्रद्धावश उधर गमन भी करे तो भी वह कभी कलकत्ते नहीं पहुंच सकता। वह तो लाहौर व पेशावर आदिकी तरफ जाता हुआ कलकत्तेसे और अधिक परे हटता हुआ खेदखिन्न और दुःखी ही होगा परंतु यदि उसे यह श्रद्धान होगा कि दिहलीसे पूर्वकी ओर कलकत्ता है और वह उसी तरफ गमन करेगा तो वह अवश्य पहुंचेगा। इसलिये पदार्थ या कारणमई मार्गका श्रद्धान यथार्थ होना चाहिये। तब ही हमारे कार्यमें सफलता होगी। **आत्मोन्नति** जब वांच्छनीय है तब उसके अर्थ यही होसकते हैं कि आत्मा जहां तक शुद्ध होसकता है वहां तक यह शुद्ध और पूर्ण होजाय। इसमें कोई विकार या दोष न रहे—अतएव इस बातके दृढ़ विश्वासकी जरूरत है कि आत्माका स्वरूप तो अमुक है तथा यह अपनी अशुद्धताको मेट सकता है। इन दो बातोंका दृढ़ श्रद्धान होना ही आत्मोन्नतिकी जड़को प्राप्त कर लेना है।

आत्माके स्वरूपके विषयमें मानवके

बुद्धिमानोंके भिन्न २ मत हैं उनमें किसीको ठीक मानना यह बड़ा दुष्कर कार्य है। अतएव यदि न्यायशास्त्रका ज्ञान हो तो उसके द्वारा परीक्षा करके निर्णय करे परंतु यदि ज्ञान न हो तो इस खटपटको छोड़कर अपने ही अनुभवसे विचार करे।

न्यायशास्त्रके जोरसे जिसने आत्माको सिद्ध कर लिया हो तौभी उसको अनुभव द्वारा समझनेकी जरूरत है।

वास्तवमें जब तक अपने अनुभवमें कोई बात न खुलेगी तबतक उसपर श्रद्धा नहीं बैठ सकेगी। इसलिये स्वानुभवसे जाना हुआ पदार्थ ही प्रथम ज्ञेय होकर हेय उपादेयमेंसे किसीमें छांट लिया जाता है।

एक स्थूल ज्ञानवाला भी थोड़े विचारसे समझ लेगा कि मेरेमें और मेरे कलम या कागजमें क्या भेद है। मेरेको कोई थप थपावे मैं तुरत जानकर उसकी तरफ राग या द्वेषका कोई न कोई भाव करूंगा परंतु कलमको चाहे जैसा करने पर भी इसमें इसके साथ की हुई क्रियाका इसे ज्ञान नहीं होता इसीसे इसमें राग द्वेष कोई पैदा नहीं होता। यही हाल किसी जंतुके मुर्दे शरीरका है। एक मक्खी अभी २ खूब दौड़ती कूदती फिरती थी, मेरी थालीके चारोंओर आती थी—घृतकी सुगंध उसे भोजनकी तरफ खींचती थी—उसे हटाते भी वह फिर आती थी। पर जब कहीं वह घीमें गिर पड़ी और मर गई तब वह फिर क्रिया करनेसे रहित हो गई। इसकी जिन्दा और मुर्दा दशामें क्या अंतर रहा। इन्हीं मोटी २ बातोंको विचारनेसे पता लग जायगा कि कोई शक्ति हमारेमें व जिन्दा मक्खीमें ऐसी है जिससे ज्ञान पूर्वक क्रिया होती है पर वह शक्ति कलममें या मुर्दा मक्खीमें नहीं है। इसीको चेतना शक्ति कहते हैं। यह शक्ति जिसमें होती है वही आत्मा या जीव है जिसमें नहीं होती वही अनात्मा या अजीव है। क्योंकि कोई भी शक्ति या गुण किसी शक्तिधारी या गुणी पदार्थमें ही रह सकती है। गुणीसे बाहर इसका कहीं भी दर्शन नहीं होता। सफेदी सफेद वस्तुमें, गुलाबी गुलाबमें, कालस कोयलेमें सुनहरापन सुवर्णमें ही नज़र आते हैं। इनके सिवाय कहीं अलग पाए नहीं जाते। आत्मामें चेतना है, इसके सिवाय और भी क्या २ गुण हैं सो भी कुछ हमारे ध्यानमें अपने अनुभवसे ही आ जायगे। जब हमारे ही अंदर क्रोध, मान, माया—लोभ चारकी तीव्र क्रिया होती है तब एकप्रकारका भारीपन संक्लेशपन व आकुलतापन हो जाता है और जब कम होते हैं तब हलकापन, सातापन व निराकुलतापन हो जाता है। बात यह है कि क्रोध, मान, माया, लोभ आदि विकारी भाव हमारे असली स्वभाव नहीं हैं इसीसे इनके होनेमें क्लेश होता है—आत्माका असल स्वभाव इनसे रहित शुद्ध वीतराग है। यह विकारी भाव शरीरादि निमित्तोंके संयोगसे ही होते हैं। और अधिक विचारोगे तो यह भी पता लगेगा कि आनन्द भी आत्माका गुण है। जब कभी हमारे भावोंमें शांति आती है व

मोह कम होता है—स्वयं सुख झलकता है यह सुख सच्चा सुख है और यह आत्माका एक गुण है।

आगे विचार करते हैं तो मालूम होता है कि यह आत्मा हमारे शरीरके आकार है क्योंकि स्पर्श की हुई वस्तुका ज्ञान पगसे मस्तक तकका होता है—उससे बाहरका नहीं होता है। जब प्रत्यक्ष रूप रस गंध स्पर्श गुणोंको रखनेवाले जड़ पुद्गलमें कि जिससे यह कलम या कागज बना है **चेतना** नहीं है और हमारी आत्मामें है तब यह स्वयं सिद्ध है कि जब वह मूर्तिक है तब यह आत्मा मूर्तिक नहीं किंतु अमूर्ति है। यदि मूर्तिक हो तो यह भी जड़ पदार्थकी तरह अपनी इन्द्रियोंसे ग्रहणमें आने लगे। अमूर्तिक होने पर भी यह अपना आकार रखती है क्योंकि विना आकारके तो कोई वस्तु जगतमें हो ही नहीं सकती। जिसमें गुण होंगे वह वस्तु होगी। और वस्तु होगी वह आकाशमें रहेगी। अतएव कुछ न कुछ जगह घेरेगी।

इत्यादि बातोंसे विचार करनेपर मालूम हो जायगा कि यह आत्मा जो मेरे ही शरीरमें है शरीरसे भिन्न है—शरीरके आकार है। चेतनामई अर्थात् ज्ञान दर्शन-मई है, क्रोधादिसे रहित वीतराग है। तथा आनन्दमय है। और यह अविनाशी अर्थात् नित्य भी है क्योंकि कोई भी वस्तु जगत्में प्रलयरूप नहीं होती, केवल अवस्था अवश्य बदलती है। लकड़ीसे कोयला होता है पर जिन परमाणुओंसे लकड़ी बनी है वे सबके सब स्थिर रहते हैं। केवल उनकी दशा बदलती है—इसीतरह आत्मा कभी नाश नहीं होता पर अवस्थाको बदलता है। बालक से युवा, युवासे वृद्ध, पशुसे मनुष्य, मनुष्यसे पशु इत्यादि स्थूल अवस्थाको तथा भावोंकी अपेक्षा समय २ अपनी परिणतियोंको बदलता है इसीसे यह जिस समय नित्य है उसी समय अनित्य है। इसतरह द्रव्यकी अपेक्षा नित्य पर पर्याय बदलनेकी अपेक्षा अनित्य है।

तथा अभ्यासके बलसे यह सिद्ध हो जायगा कि यह अपनी अशुद्धताको थोड़ा २ मेट सकता है। जो कोई एक क्षण मात्र भी अपने भावको सर्व पर द्रव्योंसे हटाकर अपने ही आत्माके असल स्वरूपकी तरफ ले जावे और ठहरे उसी समय विदित होगा कि एक विलक्षण शांतिका लाभ होता है। इसतरह नित्य अपने आत्माका परद्रव्यसे भिन्न अनुभव करते २ व उसका गुण विचारते २ आत्माकी दशा उन्नतरूप होती है।

ऐसा ही श्री अमृतचंद्र आचार्यने कहा है—

निजमहिमरतानां भेदविज्ञानशक्त्या।
भवति नियतमेषां शुद्धतत्वोपलम्भः।
अचलितमखिलान्य द्रव्य दूरे स्थितानां।
भवति सति च तस्मिन्नक्षयः कर्म मोक्षः ॥८॥

भावार्थ—जो कोई मानव भेद विज्ञानकी शक्तिसे अपने आत्माकी महिमामें रत होते हैं उनको शुद्ध आत्मतत्वका लाभ अवश्य होता है। उसके लाभ होनेपर जो निश्चलपने अन्य द्रव्योंसे दूर रहते हैं उनको अवश्य उन

कर्मोंमे मोक्ष या छुटकारा हो जाता है जिनके कारण यह अशुद्ध हो रहा है।

जब स्वानुभवसे मैं आत्माकी अशुद्धताको क्रमशः मेट सकता हूं इसका पूरा २ श्रद्धान हो जायगा। यही श्रद्धाभाव आत्मोन्नतिकी जड है।

जो कोई मानव अपने जीवनके अमूल्य समयको जो कि मध्यकी अवस्थाका है केवल मात्र शंकाशील रहनेमें व आत्माके व धर्मके जाननेकी वे परवाही रखनेसे व जानकर भी श्रद्धाभाव लानेमें विना देते हैं उनका आत्मा रागद्वेषादि विकारोंसे निरंतर मैला रहता है। तर्क करते२ व झगडा करते २ उसका अमूल्य समय नष्ट हो जाता है। वृद्धावस्था आनेपर वे कुछ न कर सकते हुए एकाएक मरण आने पर पछताते रह जाते हैं।

इसलिये उचित है कि एक दफे श्रद्धा पक्की जमाकर अभ्यास पर लग जाना चाहिये।

प्रिय पाठको! धार्मिक और लौकिक हर प्रकारकी उन्नतिकी जड श्रद्धा है ऐसा जानकर श्रद्धा, रुचि, प्रतीति, शौकके साथ हरएक काम करो अवश्य सफलता प्राप्त करोगे। जैन धर्मका तो यह मूल मंत्र है कि सम्यक्त्व विना ज्ञान अज्ञान और चारित्र कुचारित्र है। सम्यक् श्रद्धावान थोडा भी चारित्र पाले तौभी वह अच्छा है सुमार्गी है, क्योंकि वह श्रद्धा व रुचि विशेष चारित्र पालनेकी रखता है पर अधिक करनेकी अयोग्यता व लाचारी पर ही नहीं कर सकता है।

इत्यादी कथनको समझ कर श्रद्धाको जमा कर हर एक मानवको विचार पूर्वक पारमार्थिक और लौकिक उन्नतिमें दत्तचित्त रह कर आचरण करना चाहिये। प्रमाद, आलस्यमें समय न खोना चाहिये।

सुख-शांति चाहनेवाले बन्धु बहिनोंके लिये उपयोगी हित वचन। *

(१) क्षमा ही वीरका भूषण है। अपराधी जीव तकके लिये भला विचारना कि जिससे वह किसी समय सद्भाग्योदयसे प्राप्त शुभ अवसरका लाभ लेकर अपना भावी जीवन सुधार सके और स्वय सुखी बनकर अन्यको सुखी कर सके।

(२) स्व-परहितके लिये प्राप्त शक्तियोंका सदुपयोग करना ही मानव जीवन पानेका उत्तम फल है।

(३) जिनके विचार, वचन और आचार शुद्ध-निर्दोष होंगे वे ही अचूक स्व परहित कर सकते हैं।

(४) जिनके विचार, वचन और आचार पल्लवित नहीं वे स्व परहित करनेको समर्थ नहीं।

(५) किसी भी शुभ या अशुभ कार्यका आदि कारण विचार ही कहा जा सकता है, इसीलिये विचार शुद्धिकी अधिक जरूरत है।

(६) कितने ही शुभ विचार करके ठंडे पड जाते हैं। उत्पन्न हुए शुभ विचारोंको कार्यरूपमें परिणत करनेमें ही वास्तविक लाभ है।

---

* 'सत्संगसे' अनुवादित।

(७) कायर पुरुष कोई भी उपयोगी हित-कार्य नहीं कर सकते। मध्यम श्रेणी वाले शुभ कार्यको शुरू तो कर देते हैं, परन्तु तनिक भी विघ्न आने पर उस कामको अधूरा छोड़ देते हैं। सिर्फ उत्तम कोटिके मानव ही चाहे जिस तरह हो अपने हाथमें लिये हुए कार्यको पूरा करके स्वपुरुषार्थकी सिद्धि प्राप्त करते हैं।

(८) अविश्रान्त प्रयत्नसे, धैर्य और श्रद्धा रखकर जगत्का हित करने वाले विरले होते हैं ऐसे ही नररत्नोंकी बहुत जरूरत है!

(९) "जननी! जनिये भक्त जन, कै दाता कै शूर। नहींतो रहिये बांझ ही, मती गवांवे नूर।" सच्चे भक्तों, सच्चे दाताओं और सच्चे शूरवीरोंकी ही कमी है। ऐसे ही नररत्नों की माताएं रत्न-कूँख वाली कहाती हैं।

(१०)जिनका लक्षबिंदु सदा काल एकसा रहता है वे ही समाजका हित कर सकते हैं। कहने मात्रसे कुछ नहीं होता यह निर्विवाद सत्य है।

(११) जो निःस्वार्थ भावसे समाज सेवा कर सकते हैं वे ही सांचे समाज सेवकके गुणों की यथार्थ कदर कर सकते हैं।

(१२) बहुत कुछ कहा सुना और तत्त्वसार बात की शोध की, अब तो उसका अमल करना ही रहा है।

(१३) जिनमें हिताहित समझ सकनेकी बुद्धि जागृत करनेवाला विवेक-दीपक प्रकट हुआ है उनके लिये इशारा काफी है।

(१४) परंतु जिनमें घोर जड़ता, अज्ञानता व्याप रही है उनके लिये चाहे जितना कहा जाय तब भी "भैंसके आगे भागवत पसारना है।

(१५) सुख-साचा सुख, सुख-दुःख रहित स्थायी सुख किसे प्रिय नहीं? और दुःख अशांति अन्याय अनीति किसे प्रिय होगी? परंतु सच्ची भक्ति-स्वार्थत्याग रहित मुक्ति। आत्यंतिक सुख, कि जिससे अनंत दुखमेंसे छुटकारा हो सके, कैसा?

(१६) बाह्य शत्रुओंकी अपेक्षा काम, क्रोध, मोह, मद मत्सरादिक अंतरंग शत्रु अधिक बलवान और दुःख देनेवाले हैं। इनका नाश करना सबसे पहले अत्यावश्यकीय है। अंतरंग शत्रुओंको जो अपनी शक्ति बलसे जीत लेगा उसके सामने सभी बाह्य शत्रु पानी भरेंगे।

(१७) दूसरेकी गलती देखना सहज है, पर अपनी अनंत भूलें जान लेना, लक्षमें आना बहुत कठिन है। जब अपनी खुदकी भूलें जो क्षम्य न हों बराबर बातका उन्हें जीती जागती दुःख देनेवाली डायन जान ले तभी अनंत शक्तिवाला अपनेको गिनना ठीक है।

—रामलाल, मोदी-देवरी (सागर)

पुत्रीको माताका उपदेश

(ससुराल जाते समय)

मम वीर प्रभो!!!

(लेखक-लोकमणि जैन-महावीर औषधालय। गोटेगांव C. P.)

दयासमुद्र, गुणनिधि, दीनानाथ, अनन्त ज्ञानी, सर्वदर्शी, सर्वहितैषी, क्षमाभूषण, सत्यसिन्धु, जितेन्द्रिय, शान्तिमूर्ति, सर्वबन्धु, और कर्मभेत्ता महावीर, मम वीर प्रभो! आइये! आइये! मम हृदयमें विराजिये, ज्ञानज्योतिसे हृदयान्धकार नष्ट कीजिये। आइये! शान्तिसमुद्र सन्तप्त हृदयको शीतल कीजिये। हमें अपना रास्ता बतलाइये-स्वतन्त्र बनाइये, सरल परोपकारी एवं परम वीरताका पाठ सिखाइये।-तब आइये! शीघ्र ही आइये, अब विलम्ब न कीजिये।

प्रभो! हम पतित हैं, कर्तव्यभ्रष्ट हैं, लक्ष्य भ्रष्ट हैं, हृदयशून्य हैं, प्रेमरहित हैं, ऐक्य बंधसे कर्मबंधकी तरह आपसे विरुग हैं, तब हमारा पुण्य दूर है, शुभकर्म दूर हैं, अभीष्ट फलानुभवन दूर है, सच्चा हृदय दूर है, वात्सल्य दूर है और हमारा आत्मिक स्वभाव भी दूर है। प्रभो! आइये हमें पावन कीजिये, प्रेमी बनाइये, कुछ कार्य सिखाइये! अब चैन नहीं, सुख नहीं, विश्राम नहीं और तनिक भी शान्ति नहीं है। कषायें बढ़ रहीं हैं, अपमान कर रहे और हो रहे हैं। माया बिन काम नहीं चलता, लोभ बिन पद नहीं चलते, दरवाजेसे निकलते समय चोखट लग गई तो विना लाठी प्रहार किये क्रोध शान्त नहीं होता। प्रभो! हमारी स्थिति बिगड़ती जा रही है, समाज सच्चे सेवकोंसे खाली है। पुरानी लकीरें मिटती नहीं। समाज गहरी नींद ले रही है, व्यसन छाया जैसे साथ छोड़ते नहीं। ज्ञान दीपक बुझ गया-तुम्हारे वाक्य शास्त्रोंसे बाहर हो गये, उनके बदले हमें तुमसे विरुग रखनेके लिये बहुतसे असम्बद्ध वाक्य उनमें योजित कर दिये, पर प्रभो, छाया तुम्हारी ही है। आश्रय तुम्हारा ही और साक्षी तुम्हारी ही है। जैन नाटकशालामें यह तुम्हारा ही परदा आगे लग रहा है 'अहिंसा परमो धर्मः' प्रभो! परदा सुन्दर है, तुम्हारा नाटक बनाया भी श्रेयस्कर है, सामान सब सुन्दर है, पर प्रभो! परदेके अन्दर खेल जो आज हम खेल रहे हैं, वे सुन्दर नहीं हैं, 'इस नाटकशालामें हम छुपे २ तलवार चलाते हैं, लाठी मारते हैं। परस्त्री सेवन करते हैं। चोरीसे चूकते नहीं। डांके डालते हैं। शराब पीते हैं। मांसका भी कभी कभी स्वाद ले लिया करते हैं। झूठ बोलते हैं। मुकदमें लड़ते हैं। भाई भाईको शूली चढ़वा देते हैं। मान करते हैं। छलकपट विन दिन नहीं खोते। दो चारको मृतक चर्मापान किये सोते नहीं। गरीबोंका खून विना चूसे पानी नहीं पीते। किसी बड़े आदमीको विना कोसे कवलगृहण नहीं करते। अब हमारे यही व्रत हैं और येही मोक्षके अनन्त-मार्ग हो रहे हैं। नाटकके पात्र 'पात्र माने बर्तन हो रहे हैं, चाहे तो आग रखलो। चाहे पानी भरलो। चाहे धान्य भरलो। चाहे भूमासे भरे रहो। चाहे उलटे रखदो। चाहे सीधे रखे रहने दो। हो सके तो मुंहपर ढक्कन भी रखदो उन्हें इतराज नहीं। प्रभो! उसीके

अन्दर उसी परदेकी आड़में बड़े २ रतन, मोती, हीरा, पन्ना, चन्द्र अग्रे कृत्वा तकिया लगाये तोंद बढ़ाए शरद मेघके समान सुन्दर बैठे रहते हैं। नगरनारीं निजनारीं हो रहीं है। उनकी उर्वशी उनकी प्यारी, उनकी दुलारीं अब वे ही 'स्याही सोख' जैसी हो रहीं हैं–शुभ अवसरों पर इन्हींको रंग रंगीले और चमकीले वस्त्राभूषणोंसे सुसज्जित कर सभामंडपमें प्रातिहार्यकी उनमें स्थापना कर स्थापित कर देते हैं। ये सब खेल अब तुम्हारी परम पुनीत नाट्यभूमिमें हो रहे हैं–पात्रोंने विदुषक भी बड़ा योग्य चुन लिया है–देखो वह खड़ा है–लाल पीली आंखें किये। क्योंजी तुम्हारा नाम क्या है! हमारा नाम-विदूषकराट्का नाम, खास राशिका नाम है। पंचमकाल....। क्यों सुना। जी हा कहना नहीं होगा। आजकल कई पण्डितोंकी राशि भी पंचमकालसे मिलती जुलती है, न मानो तो किसी ज्योतिषीसे पूछ लो।

प्रभो! आइये!. आनेका समय है। हम नहीं; पर समय तुम्हारा अवतरण चाहता है। प्रेमबन्धन हमारा टूट गया। इसमें गांठ बांध जाइये। पैर शिथिल पड़ गये, बिना सहरे मुंहकी मक्खियां नहीं उड़ती। स्वतन्त्रताका सबक पढ़ा जाइये। परतन्त्रताकी बेड़ी काट जाइये। एक घड़ीके लिये जिन मंदिर ही में आकर जैनियोंको उपदेश दे जाइये। पाषाण-मूर्तिसे ही कहला दीजिये कि तुम सच्चे जैनी बनो। बाहर सफेदी और भीतर कालिमा मत रक्खो। बगुलावृत्ति छोड़ हंसवृत्ति धारण करो। तुम सब मिलजुलकर ऐक्यसूत्रसे सम्बद्ध हो जावो। आपसी फूट, कलह, तीर्थविषयक झगड़े और घृणादृष्टि इनको चकनाचूर कर स्वातन्त्रगिरिकी प्रचण्ड पवनसे उड़ा दो। प्रेमकी निर्मल धारामें वहादो। और अब समयानुकूल कार्य करो।

प्रभो! लाखो जिन मंदिर बन गये। बनते जा रहे हैं। कई लक्ष मूर्तियोंमें आपकी स्थापना कर चुके। जन्मसे ही आज तक तुम्हारी निर्मल वाणी मंदिरोंमें तुम्हारे साम्हने सुनी। तुम्हारी पूजा, भक्ति जन्मसे ही की। अहर्निश तुम्हारे नामकी बड़ी २ एकसौ आठ गुरियावाली मालाएं फेरीं। आपकी पूजाके साथ साथ लाखों भाइयोंकी पेटपूजा भी करा चुके। अनेकवार आपके दर्शन शिखरजी, गिरनारजी, सोनागिरिजी आकर कर आए। कई लक्ष रुपया तुम्हारे निर्वाणस्थानोंकी रक्षा हो एतदर्थ विद्वेषाग्निमें भस्म कर दिये। उनकी रक्षासे अनेकोंकी रक्षा होने लगी। पर प्रभो! हमारी अवनति बढ़ती ही रही। हमारे अधःपतनने अपनी गतिको मंद न की। हमें स्थिर सुख और शान्ति न मिली। दश वीस कोड़ाकोड़ीके उपवासोंका फल नजर नहीं आया। शास्त्र सुनते २ कान बहरे हो गये पर हमारी कषाएं तनिक भी कृश न हुई। अज्ञान हमारा जरा भी न पिघला, मिथ्यात्व हमारा बना ही रहा। चंडी, मुंडी, भैरों, कालीकी उपासना तब भी करते ही रहे। जैनी शब्दका अर्थ समझ भी न सके। ११ भैनी हम बने ही रहे। प्रभो!

हमारी रक्षा करो। जैनियोंको सद्बुद्धि दो कि वे समयका, द्रव्यका सदुपयोग करना सीखें।

वीर प्रभो! आइये, अब हमारी दशाको सुधारिये। हमारी संघशक्ति तेरह तीन हो गई। हम, सबकी दृष्टिमें बुरे नजर आने लगे हैं। हमें प्रेम विहीन देख सब ही धिकार देते हैं। हमारी जातिमें ये दीनमुख तो अनेक बच्चों सहित भूखों मर रहे हैं। भूखके मारे उदर पीठसे मिला जा रहा है। छातीकी हड्डियां धनुष जैसी तन रहीं हैं। बच्चे मुह फाड़ फाड़ कर रो रहे हैं, वस्त्र विन सच्चे दिगम्बर बन रहे हैं। उनकी बेटी व्याह योग्य हो गई है। पैसा उधार नहीं मिलता। पापी पेटको भरनेके लिये तरस रहे हैं। पर प्रभो! हमें उसकी दीन दशापर जरा भी दुःख नहीं होता। कुबेरचन्दजी बड़ी २ सुवर्णमाला गलेमें पहिने गद्दीपर बैठे है। पीकदान लिए नौकर आगे खड़ा है। नये मकान बन रहे हैं। नई शादियां दो दो तीन तीन हो रही हैं। कुरसी टेबुलोंसे घर भर रहा है। बड़े २ प्रतिष्ठित अंग्रेजों, रईसों, वकीलों और बैरिष्टरोंके भोज करा रहे है। सड़कें गुलाबजलसे सिंच रही हैं। पर विचारे दीनमुखकी ओर दृष्टि भी नहीं जाती। क्योंकि वह जातिका है। गरीब है। झोंपड़ीमें रहता है। कुरूप है। मैला रहता है। भला फिर कुबेरचन्दकी निर्मल दृष्टि उसे स्पर्श क्योंकर कर सकती है? उनकी पवित्र लक्ष्मी क्यों उसकी सड़ी झोंपड़ीमें रहना पसंद करेगी? उनका पवित्र उत्तम भोजन क्योंकर उसके पापी पेटमें जाना स्वीकार करेगा। उनकी निर्मल कीर्ति क्यों उसकी झोंपड़ीके चक्कर लगाना स्वीकार करेगी। उनके रसिक कान उसकी दुःखभरी कर्ण कटुक आवाज कैसे सुन सकते हैं। अनेक मंद सुगन्ध पवनके झकोरोंसे वेष्टित उनका शरीर, कैसे दीनमुख-का मलिन शरीर स्पर्श कर अपनी इज्जतमें बट्टा लगावेगा? कुबेरचन्दजी चार घोड़ोंकी टमटम पर चल रहे हैं और उन्हीके जातिभाई भूखे, वस्त्र रहित, उनके आगे २ दौड़ते जा रहे हैं। प्रभो! कैसा भयानक दृश्य है। कैसी विषम समस्या है, एक ओर तो स्वर्गीय सुख दूसरी ओर नरकयातनाका भीषण दृश्य, प्रभो! रक्षा करो, अवलम्ब दो–।

प्रभो! आइये जातिको बचाइये उन्हें बताइये। जैसी चलै बयार पीठ पुन तैसी दीजै। जैनियोंके हृदयमें विराजकर उन्हें समझाइये। उन्हे कमसे कम यह ज्ञात करा दीजिये कि जाड़ेके दिनोंमें गरमियोंके उपचार न करें। सब समय एक ही गीत न गाया करें। आज जो कार्य हितकर हुए पड़ते हैं जिनसे हमारा कल्याण होता है, कालान्तरमें वे हमें दु खोत्पादक भी हो सकते हैं....इसका दृष्टान्त यह हो सकता है कि गर्मियोंके दिन थे, सूर्यके प्रखर प्रतापसे पृथ्वी क्रोधित हो रही थी। समस्त ठंडक मगरमच्छोंकी तरह जलाशयोंकी ओर भागी जा रही थी। कोई पर्वतोंकी तलहटीमें भी जा छिपी थी। ऐसे महागर्मियोंके दिनोंमें पं. भोलानाथ तिवारीके यहां उनके परमपूज्य गुरु महाराज

शान्तिलालजी यजमान होकर पधारे। वे दुपहरको आये थे इसलिये उनके आते ही तिवारीजी आतिथ्य करने लगे। ठंडा जल लाकर पैर धोए। बरफके जलसे स्नान कराये, ठंडे २ भोजन कराए। ऊपरसे ठंडाई पिलाई। रात्रिका समय हुआ तो बाहर चौकमें पलंग बिछवाया, नरम स्वच्छ गद्दे पर गुरु महाराजको लिटाया, एक महीन वस्त्र गुलाबजलमें भिगोकर गुरु महाराजको उढ़ाया और फिर सब कुटुम्बी जन लगे पंखा करने। गुरु महाराज कुछ दिनके बाद घर चले गये। जब और कुछ दिन बीते तब तिवारीजी भी चल बसे सो भी सदाके लिये। रहे घरमें उनके लड़के। गुरु महाराज तिवारीजीकी खबरको फिर आए। अबकी बार जाड़ेका मौसम था ठंड बहुत जोरकी पड़ रही थी। घर२ अग्नि देवकी पूजा हो रही थी। अबका पहिलेसे बिल्कुल उल्टा समय था, वह था। ज्येष्ठका महीना और यह है पौषका महीना। गुरू महाराजके आते ही तिवारीजीके पुत्रोंने आतिथ्यमें कुछ उठा न रक्खी, उनके स्वर्गीय पिताने जैसा आतिथ्य कियाथा वह था बारह आने तो पुत्रोंने चार आने और बढ़ा कर आतिथ्य किया था। वही जब संध्याकाल आया तो गुरु महाराजका बाहर चौकमें पलंग बिछवाया। उस पर गुरुमहाराजको लिटा कर वही गुलाबी जलसे भींगा वस्त्र उढ़ाकर सब ही लगे पंखा करने। (कारण कि) उन्होंने सोचा कि जिसमें गुरुमहाराज यह न कहने पावें कि पिताके मरने पर ये लड़के हमारा कुछ आदर नहीं करते। गुरुमहाराजको पड़ी प्राणोंकी, क्या करें बेचारे आतिथ्यकी अवहेलना कैसे करदें। थोड़ी देरमें लड़के हाथ जोड़ कर गुरू महाराजसे बोले। पूज्यपाद गुरू महाराज, हम बालक हैं, कृपा कर कहिये हमारे सत्कार करनेमें तो कुछ कमी नहीं है? यदि हो तो हम पूर्ति करें। गुरु महाराज बोले। पुत्रो!!! तुम्हारे आतिथ्यमें, सत्कारमें, खाने पिलानेमें कुछ भी कमी नहीं है। तुम खूब ही भक्तिमें लगे हो—पर ये मेरे पापी प्राण नहीं निकलते। तो इसके लिये तुम क्या करोगे!!!...... यही हाल हमारी जैन जातिका हो रहा है।

प्रभो! आइये, हम स्वागत करते हैं। जातिको रसातल जानेसे बचाइये। कूपमें गिरते बालकोंकी रक्षा कीजिये। दिन पर दिन बहुतसे अनर्थ बढ़ते जा रहे हैं। जैनियोंको आलसदेवने मोहित कर लिया है। अज्ञानने घेर लिया है। गरीबी तंग कर रही है। फूट बढ़ रही है। पढ़े लिखोंकी संख्या कुछ बढ़तीपर है पर जातिकी संख्या बहुत ही घट रही है। धर्मकी सत्ता समूल जाना चाहती है। जैनी दयासे डरनेलगे। हिंसामें रमने लगे वात्सल्य से मुख मोड़ रहे हैं। तुम्हारे परम पवित्र धर्मको अब ये कलंक लगाने लगे। कायरोंमें इनकी गिनती होने लगी। संसारमें उपहास करवाने लगे। चारित्रहीन, श्रद्धा हीन, और ज्ञान हीन हो गये। अधःपतनके जितने कारण हैं वे सब जैनियोंके घरमें घुसते जा रहे हैं। ऐसे समयमें तुम्हारा आना प्रभो, पथप्रदर्शक होगा, धर्मरक्षक होगा। कल्याणकारी और जैनियोंका पुनर्जन्म करानेवाला होगा। (३

समय आपके परमोपदेशसे, ज्ञान वृद्धि, धर्म-वृद्धि, चरित्र शुद्धि जातिमें हो जायगी। आपसी कलह और द्वेष मिट जांयगे। धनवान मानगिरिसे उतर परोपकारमें लग जावेंगे। पंडित चारित्रशुद्धि कर जैन धर्मका वास्तविक स्वरूप जनताको सुनावेंगे। जातिमें कपटी नेताओंके बदले, सच्चे नेता और सच्चे सेवक तैयार हो जावेंगे। पण्डितोंमें जो ज्ञानवृत्ति, और वैसे ही जो नीच भाव पड़ गये हैं वे समूल नष्ट हो जावेंगे इत्यादि। प्रभो! तुम्हारे अवतरणसे इस समय बहुतसे सुधार होंगे, अनेकोंकी जान बचेगी। अनेकों भ्रम दूर होवेंगे। तब हे प्रभो! अब आनेमें विलम्ब न कीजिये। क्योंकि जब भूखसे व्याकुल हो हा हा सांसें ले रहे हैं। दुःखसे अश्रुधारा बहा रहे हैं। ऐसे समयमें तुमारा आना न होगा। तो फिर कब जैनियोंके हृदयमें, मलिन हृदयमें ही सही। एकबार, विना आदरसत्कारके ही, विना बुलाए ही आनेकी कृपा कीजिये। मम वीर प्रभो। यही हमारी विनय है।

ध्यान देने योग्य सूचनाएं।

१-शरीरका सुख सभी चाहते हैं। वह सुख तभी मिल सकता है जब कि शरीर नीरोग व पुष्ट हो। इसके लिये दो उपाय हैं; (१) वीर्यकी रक्षा, व (२) कसरत।

२-जिन्हें चाहिये हमारे पाससे वीर्यरक्षा व कसरतकी तरकीबें लिखकर मगाले।

३-हर हालतमें और चाहे जिस उम्रमें कसरत व वीर्यकी रक्षा हो सकती है। जो लोग वीर्य बिगडनेपर व कमजोर होनेपर तथा उम्र ज्यादह हो जानेपर हताश हो जाते हैं, सुधारनेकी इच्छा छोड देते हैं उन्हें चाहिये कि हमसे एकबार सलाह तो पूछलें। थोडा बहुत उपाय हरएकका हो सकता है।

४-धर्मके प्रेमियो, हमारा जो मोक्षमार्ग पंचम कालमें रुक रहा है वह वज्रवृषभनाराच नामके सर्वोत्कृष्ट संहननके खो जानेसे रुक रहा है। आगसे उस शक्तिको संभालोगे तो तुम्हें फिर भी बहुतसे सुख मिलेंगे और पुण्यकी प्राप्ति भी होगी। स्वर्गादिमें जन्मने लायक पुण्य जो अभी भी मिल सकते हैं उनका लाभ भी विना शरीर शक्ति बढ़ाये नहीं मिलसकता। तुम्हारी कोई न कोई संतान मोक्ष प्राप्त करनेवाली भी आगे होने लगेगी, अगर तुम अपनी शक्तिको अभीसे बढाना शुरु करदोगे।

५-अगर बताए हुए उपाय करोगे तो सुखी व बलवान रहोगे; नहीं तो दुध घी पीते हुए भी सुखी नहीं बनसकोगे।

६-दूध घीकी खुराक न मिलनेपर भी कसरत व वीर्यरक्षाके बताये हुए उपायोंपर चलनेसे शरीर बलवान् व आनंदी बन सकता है, यह खूब विश्वास रक्खो।

७-देशी कसरतको पैसा कम लगता है, समय कम लगता है, स्वतंत्रतासे होती है, सर्व अवयवोंको होती है, फायदा सशास्त्र होता है, चपलता धैर्य और स्वसंरक्षणकी तर्कीबें प्राप्त होती हैं, आयुष्य बढता है, अंग्रेजी कसरतको पैसा बहुत लगता है, परतंत्र होती है, स्वसंरक्षणकी तर्कीबें प्राप्त होती नहीं; कभी कभी वह एकांगी कसरत होती है और अनियमित होती है, इससे यथायोग्य आरोग्य प्राप्त न

होकर उलटा मनुष्य कुछ रोगी बनता है

८—सब कसरतोंमें कुस्ती, पानीमें तैरना, मलखंब चढ़ना, बनेटी, लाठी आदि खेलना, दंड बैठक निकालना, नमस्कार करना—इनसे थोडे वक्तमें अल्प खर्चमें सर्वांग स्वतंत्रतासे चाहे उस ठिकानेपर नियमित कसरत होकर धैर्य, चपलता, स्वसंरक्षणके गुण प्राप्त होते हैं और शारीरस्वास्थ्य एकदम अच्छा रहकर ब्रह्मचर्यका महत्व समझनेसे (आवश्यकतासे) वीर्यकी रक्षा होती हैं। इससे आयू बढता है; बुद्धि सतेज होकर उद्योगी सद्विचारी परोपकारी नररत्न तैयार होते है। ऐसे नररत्न होनेसे राष्ट्रकी उन्नति होकर धर्मकी रक्षा होती है।

९—जगह जगह औषधालयोंमें सुव्यवस्थासे कसरतकी शाला स्थापित होगी और उनमें शरीरका महत्व, ब्रह्मचर्यका महत्व, दुर्गुणोंका त्याग, निःसत्व मादक पदार्थोंका त्याग और सर्वोपयोगी सर्वगुणी सशास्त्र कसरतकी शिक्षा दी जायगी तो सारे जगभर आरोग्यका फैलाव होकर रोग नष्ट हो जायगा। रोग पैदा करके नष्ट होनेका उपाय करनेसे रोग नहीं होने देना ही ठीक है।

१०—प्रत्येकको आरोग्य रहनेके लिये नियमित आहार, नियमित कसरत करना चाहिये और सात्विक अन्न ग्रहण करना चाहिये। वीर्यकी रक्षा पचीस वर्षतक अच्छी रखना चाहिये। और नाटक, कादम्बरी पढनेका, चुरुट पीनेका, खराब चीजोंके देखनेका त्याग करना चाहिये और सद्वर्तनसे रहना चाहिये। इसीसे आरोग्य रहेगा।

११—इस विषयपर मालवा व मुंबईकी प्रांतिक जैन सभाओंके दोहदवाले संयुक्त अधिवेशनमें पास हुआ प्रस्ताव—जैनसमाजमें शारीरिक रक्षाके उपायोंमें दुर्लक्ष होता देखकर यह संयुक्त सभा प्रस्ताव करती है कि व्यायाम, ब्रह्मचर्य रक्षा और शुद्ध खानपानके नियमोंका अभ्यास अच्छी तरह किया जाय। प्रस्तावक-हिराचन्द मलुकचन्द (काका)। समर्थक-कुंवर दिग्विजयसिंहजी। निवेदक—

हिराचंद मलुकचंद दोशी (काका)
व्यवस्थापक, गो. ने. जै. व्या. शा. सोलापूर.

'सहारा दीजिये स्वामिन्'।

प्रभो तुमसे विनय मेरी सहारा दीजिये स्वामिन्
हमारा हाल बिगड़ा है सहारा दीजिये स्वामिन्॥
कहां मैत्री धरम हमरा औ ये आपसकी तकरारें।
मिले थे सो बिछुड़ते हैं सहारा दीजिये स्वामिन्॥
कहां परनारी माता सम गिनो उपदेश था तुम्हरा।
हुए व्यभिचारी खामे अब सहारा दीजिये स्वामिन्॥
नशोंसे दूर तुम भागो पास उनको न आने दो।
शराबी अब बने जाते सहारा दीजिये स्वामिन॥
पतिव्रत धर्मको पालो शीलपर प्राण भी वारो॥
पतिव्रत टूट जाता है सहारा दीजिये स्वामिन्।
दया धारो बनो प्रेमी लगाओ तुम गले सबको।
कषायी बनगये पक्के सहारा दीजिये स्वामिन्॥
दयाका न्याय विधवाओंको दुखसे त्राण देना है।
उन्हें सधवा बनाते हैं सहारा दीजिये स्वामिन॥
हमारी जर्जरी नैया भंवरिया बीच डगमग करके।
डुबाते दुःखसागरमें सहारा दीजिये स्वामिन्॥
उबारो जैन जातिको हुई बरबाद सब देखो।
विनय हर वक्त है तुमसे सहारा दीजिये स्वामिन्॥

गुलाबचन्द परमानन्द जैन गोटेगांव,

'दिगम्बर जैन' का इसी अंकका क्रोडपत्र ।

श्री गौतम नेमचंद जैन व्यायामशाला–सोलापूर ।

व्यवस्थापकः–श्रीयुत हिराचंद मलुकचंद दोशी, (काका) सोलापूर,

सप्रेम जुहारु,

हमारा शरीर प्रकृतिका विवरण इस प्रकार हैः–हम कसरत नित्य / कभी कभी देशी / इंग्रेजी पद्धतिसे करते हैं । हमारा वजन हालमें रत्तल / सेर है । दंड निकालनेकी गिनती.........बैठकोंकी गिनती............ । चाह / दूध पीते हैं। कुस्ती / दौड करते हैं । विवाहित / अविवाहित हैं । शरीर वात / पित्त वाला है । रातको सोनेका समय............. । आलस रोग / निरालस नीरोग की अवस्था है । छातीकी लंबाई   इंच । दंडोंकी गोलाई   इंच । शरीरकी ऊंचाई   फुट व   इंच । जाति   है । कसरत करनेका समय............... है । अखाडे / घर में कसरत करते हैं ।

पढने लिखनेकी तादाद.................................... ।

कसरत खुली हवा / बंद मकान में करते हैं । पानीमें तिरना आता / नहीं आता ।

तंबाखू चिरूट पीते / नहीं पीते कसरत शुरू करते समयका वजन ______ ।

कसरत शुरु करनेकी तारीख..............उम्रकी ताकाद ______

है । परस्त्रीका त्याग है / नहीं है ।

(पीछे देखो)

नोटः—१. पीछेकी खानापूरी करके व्यवस्थापकके पास जरूर भेजना चाहिये और जो भाई कसरत नहीं करते हों उन्हें जरूर करना चाहिये।

२. जहां जहां बीचमें लकीर लगाकर ऊपर नीचे दो दो बातें लिखी हैं वहां जो कबूल हो उसे कायम रखना चाहिये और दूसरी बातको काट देना चाहिये।

३. कसरत करनेवालोंके बीस बीस फार्मोंमेंसे हम अव्वलकी छांट करेंगे और अव्वलको इनाम व सर्टीफिकेट भी दिया करेंगे। यह कार्रवाई छह छह महीनेमें एक बार होती रहेगी।

पूरा नाम ————————————————

मुकाम ————————	
	हस्ताक्षर ————————
पोष्ट ————————	
	तारीख ————————
जिल्हा ————————	

जीवनके उद्देश्य।

लेखक-मनीलाल जैन-मा० मंत्री-जैन प्रचार-पुस्तकालय आगरा।

उद्देश्य वह होता है, जो किसी मनुष्यका लक्ष्य हो। न्यूनाधिक लाभके कई उद्देश्य दृष्टिमें हो सकते हैं। उन पर ही मनुष्यका जीवन सफल या निष्फल होना निर्भर है।

१-निर्वाह योग्य जीविका-किसी न किसी सीमा तक यह उद्देश्य अच्छा है। मनुष्यको स्वयं और अपनी गृहस्थीका पालन अपने पदानुसार करना चाहिए। स्वयं काम करने योग्य होते हुए भी दूसरोंके आधीन रहना निर्लज्जता है। गृहस्थीका सुख या दुःख उसकी आय-न कि उसकी पूंजीको अच्छे तरह व्यय करने पर निर्भर है।

अपने चारित्रको उज्ज्वल करने और लाभदायक कार्योंमें सहायता देनेके लिए **दान करना चाहिए।**

यह उद्देश्य मुख्य उद्देश्य न होना चाहिए, जिसके लिए और श्रेष्ठ कार्योंकी आहुति दी जावे।

२-आत्मोन्नति-किसी मनुष्यको धन संचय करनेमें ऐसा लीन न होना चाहिए कि उपकारक अध्ययनको कुछ समय ही न दिया जावे।

यह खेदकी बात है कि बहुतसे युवक विद्यालय (College) छोडने पर अपनी पुस्तकोंको एक ओर फेंक देते हैं और सब प्रकारके पढनेको तिलांजली देदेते हैं। यह बहुत बुरा कार्य है।

एक प्रसिद्ध अंग्रेजी वकीलका कहना है "मैं नहीं समझता कि मैंने कोई काम जिसमें मैं सर्वथा अनभिज्ञ था-विश्वविद्यालय (University) और पाठशाला (School) छोडनेसे पहिले सीखना प्रारंभ किया, तिस पर भी उसमें मैं पूर्ण विज्ञ हो गया।

इस-अध्ययनके लिए समयकी इच्छा करना, उस ओर झुकाव मात्रकी आवश्यकता है। जीवन भर एक **समय क्रम रक्खो।** प्रातःकाल एक घंटा अध्ययनके लिए अवश्य रखना चाहिए। यह समय विज्ञान, इतिहास, जीवन चरित्रादि जिन विषयसे न रित्र उज्ज्वल और जीवन उच्च हो-में लगाना चाहिए। दिन प्रतिदिन अधिक ज्ञानवान और उत्तम होनेकी इच्छा हममें सदैव रहनी चाहिए। मनुष्य स्वयं जितना इस ओर बढेगा उतना ही वह दूसरोंका उपकार कर सकता है। समाचारपत्रावलोकन आदि भोजनके पश्चात् तथा सायं समय करना चाहिए।

३-परोपकार-सबसे अच्छी शिक्षा उदाहरणसे दी जासकती है। परन्तु और प्रकारसे भी भलाई की जासकती है।

जिस नगरमें आप रहते हों उसका स्वास्थ्य बढानेका प्रयत्न करें। इसकेलिए **स्वच्छता** बडी **आवश्यक है।** औषधालय, वैद्य, उपवासादि चिकित्सा और **व्यायामको उत्तेजना दो।** अच्छी सडकें, रात्रिमें

प्रकाश, सार्वजनिक उद्यान आदि भी दृष्टिपात चाहते हैं।

भारतमें जो समाज—सुधार करनेवाला दल है उसको हर तरहसे उत्तेजना देना आवश्यक है। इसके कर्त्तव्य—स्त्री-शिक्षा प्रचार, विवाहोंमें सुधार तथा अन्य कुरीति निवारण हैं। धार्मिक और नैतिक सुधार और भी आवश्यकीय है। सचाई, सफाई, परमात्माके विषयमें सत्य श्रद्धान और धर्म जैसे बने उन्नत करने चाहिए।

स्वयं करके दिखानेके सिवाय हम बहुत सुधार अपने मित्रों और पड़ोसियोंसे कह कर कर सक्ते हैं। व्याख्यान (iecture) देना भी करना चाहिए। (बहुतसे ग्राम ऐसे हैं जिन्हें धार्मिक आदि किसी बातका ज्ञान है ही नहीं। उनको उपदेश देनेको **उपदेशक भेजने चाहिए।** विद्या प्रचार होनेसे साहित्यकी उन्नति बहुत अधिक हो रही है। वाचनालय स्थापित करने चाहिए। उनमें उपयोगी मासिक व अन्य शिक्षाप्रद समाचार पत्र मंगाना चाहिए।

अंग्रेजी आदि अन्य भाषाओंको अच्छी तरह जानने वाले मनुष्य मातृभाषा हिन्दीमें पुस्तकोंका अनुववाद कर सक्ते हैं। या इससे भी श्रेयस्कर मौलिक पुस्तकोंकी रचना कर सक्ते हैं।

भारत—जिसमें संसारके पंचमांश जीवधारी रहते हैं। उपकार करनेके लिए सर्वोत्तम स्थान है। बीसवीं शताब्दीमें इन और पूर्व उन्नति करनेका प्रयत्न करो। जोन वेस्लीके नियम जो नीचे दिए जाते हैं सबको पालने चाहिए।

जितना भी उपकार तुम कर सको,
जिस प्रकार भी तुम कर सको,
जितनी तरह भी तुम कर सको,
जिस स्थान पर भी तुम कर सको,
जिस समय भी तुम कर सको,
जितने भी लोगोंका तुम कर सको,
जितने समय तक तुम कर सको,—करो॥*

ह्रास और व्यभिचार।

बाल विवाह।

(१)

होरहा जैन—जातिका ह्रास,
वृद्धि पर होता है व्यभिचार।
नहीं है हमको कुछ अवकाश,
धरैं जो इसपर स्वीय विचार॥
धनी हो धन—मदसे उन्मत्त,
करैं छोटे बच्चोंका ब्याह।
न रहता फिर उनमें पुरुषत्व,
निरी सधवा भी भरती आह॥
वीर्य जो जीवनका है मूल,
कराते नष्ट उसे बेकार।
स्व—सुत—जीवन मगमें क्यों त्रिशूल,
बो रहे पिता तुम्हें धिक्कार॥

२

कई करते यों बाल—विवाह,
शीघ्र पौत्रादिक सुख हो प्राप्त।
पितामीकी तो भी यह चाह,
हुई सुतकी भी आयु समाप्त॥
अगर ये जीते वृद्ध—कुमार,
उन्होंका जीवन मृत्यु समान।

---

* एक अंग्रेजी लेखका भाषानुवाद।

सदा रहते हैं वे बीमार,
प्रमेहादिक रोगोंके स्थान ॥
अग्नि हो जाती है अतिमन्द,
न पचता थोडा भी जो खाय।
न रहती उद्यमकी, तो गन्ध,
सर्वत: होय शुष्क-सी काय ॥

(३)

दिन व दिन बढते जाते रोग,
कई आते हैं वैद्य हकीम।
न मिटते कृत कर्म्मोंके भोग,
उगे क्या आम्र बुओ यदि नीम?
अपत्योत्पादक शक्ति न रहे,
वीर्यमें क्यों कर हो सन्तान।
इसीसे "बांझ" दोषको लहे—
नारि, नरके न दोषका ज्ञान ॥
दैव वश होवे यदि सन्तान,
क्षीण-निर्बल, अरु रोगी देह।
बचै मुश्किलसे उसके प्राण,
रहे वह भय-आलसकी गेह ॥

(४)

शीघ्र जब हो जाता है ब्याह,
न रहता शिक्षा पर तब ध्यान।
ग्रहण करते कुपंथोंकी राह,
न होता धर्म्म कर्म्मका ज्ञान ॥
वधूएँ प्रसव-जननके वक्त,
मरें पाकरके कष्ट अथाह।
हेतु इसका यह ही है फक्त,
करें गुड्डे गुडियोंसे ब्याह ॥
अन व्यभिचार—हासका मूल,
छोड दो प्यारो! बाल विवाह।
रखो स्वातन्त्र्य कभी मत भूल,
बालकोंको हो वे परवाह ॥

वृद्ध विवाह।

(५)

हाय धनके वश हो मा बाप,
आत्मजा करें वृद्धके साथ।
पौत्रिको सम कन्या हा! पाप,
बने स्त्री पकडे वृद्धका हाथ ॥
अरे! पापियो! न आप समान,
कसाईका भी हृदय कठोर।
जरा दुखसे करतो निष्प्राण,
न अवलोके दु:खोंका छोर ॥
भीजती थी गीलेमें आप,
बालिकाकी न आर्द्र हो देह।
मात! देती अब यों सन्ताप,
गया कहां अब तेरा वह स्नेह? ॥

(६)

पूर्ण हो गई वृद्धकी चाह,
किन्तु कन्या न नाथके योग्य।
युवतिको जब हो मन्मथ दाह,
न जर्जर रहना उसके योग्य ॥
वृद्ध खाते पारद अरु बंग,
न तो भी मिलता है पुरुषत्व।
रहे कब तक मुरझाया अंग,
ताजा क्या पा सकता जलतत्व? ॥
बढे ज्यों चन्द्र शुक्ल पक्षीय,
कामिनीके त्यों बढता अङ्ग।
समीपी गत यम वेयस स्वीय,
शक्तिसे बढता उपथित अनंग ॥

(७)

स्वामी करते पत्नीको प्यार,
वित्त-व्ययका समझें साफल्य ।
सुन्दरीके हों कई विचार,
मिटानेको मन्मथ प्राबल्य ॥
अंतमें पतिसे होय निराश,
न सहकर मनसिज-बाण कठोर ।
देख सुत-यौवनका सु-विकाश,
चलाती चञ्चल नेत्र चकोर ॥
जान सुत भी अनुरोध अमन्द,
मानिनीका न घटाता मान ।
अग्नि कापा करके संबंध,
छोड देता घृत अपना स्थान ॥

(८)

वृद्धके सन्मुख ही यह हाल,
हुआ करते सुत-मांके संग ।
उठा ले जब बुड्ढेको काल,
खुब हों तब उस घरमें रंग ॥
कई युवकोंके संग आनंद,
उड़ाती पतिका संचित वित्त ।
गर्भ जब रह जाता दुखकंद,
जाति भयसे हो कलुषित चित्त ॥
सोचती गर्भ-पतनका यत्न,
कटुक औषधियां करती पान ।
होंय जब निष्फल निखिल प्रयत्न,
करे फिर अन्य देश प्रस्थान ॥

(९)

इसतरह फैलाती व्यभिचार,
भ्रूण हत्याएँ करती घोर ।
अरे! पंचो! कुछ करो विचार,
बनाते क्यों नहीं नियम कठोर ॥
हाय ! उन बुड्ढोंको धिक्कार,
न डरते करते जो यों पाप ।
डुबोते जो खुद गहरी धार,
सुताको धिक्! वे भी मावाप ॥
न होकर यों अयोग्य संबंध,
युवति युवकोंका हो यदि व्याह ।
नहिं रहे यों फिर विधवा-वृन्द,
न करना होगा पुनर्विवाह ॥

Pt. G. C. G. Jaipur.

દયાળુ દીલ દાઝકોને વિનંતિ.

ગઝલ.

અજ્ઞાને થઇ અંધા, અમારા ભાઇઓ ફરતા,
દયાળુ દીલ દાઝકો, તમે તે ક્યાં નહિ જોતા?
બુરા હા બાળલગ્નોએ, બુડાડી તેમની બુદ્ધિ,
દયાળુ દીલ દાઝકો, હજુ ક્યાં ન આવે સુદ્ધિ?
હજારો બાલુડી જુઓ, વધૂ વૈધવ્ય પામે છે,
દયાળુ દીલ દાઝકો, હવે તે ક્યાં અજાણ્યું છે?
રગવગતી અશ્રુલોતી, ઘર એક કોણમાં જુઓ,
દયાળુ દીલ દાઝકો, ખરે ન ખેદ ક્યાં આણો?
હજુ આ ક્યાં સુધી ઉંઘો, અમારી ઘોર નિદ્રાએ,
દયાળુ દીલ દાઝકો, વખત જલ્દી વહી ચાલે!
હમારાં બચ્ચાં ટળવળતાં, દુઃખી દરિદ્રી દુખી જાતાં,
દયાળુ દીલ દાઝકો, વિના કેમ ટકે તરસાનાં?
કૃપાળુ દેવને આપી, અતિ રિદ્ધિ અને સિદ્ધિ,
દયાળુ દીલ દાઝકો, પરાર્થે વ્યય ક્યાં કીધી?
ધનિકો સાંભળો વિનતી, હમારી જને નહિ બાર,
દીનોના દુઃખની વાતો, હમારે ક્યાં જઇ કરવી!

(C. G. Gandhi)

महावीर-चरित्रम्।

अस्ति प्रसिद्धः श्री जम्बूद्वीपे लवणोदार्णवोल्लोलकल्लोलल्हरायसरसीरुहक्षिप्तमणिमुक्तानीलचन्द्रकान्तादिहारमालाविद्रुमशोभितप्रदेशालंकृते सति। अखिलविष्टपानां द्वीपान्तरे वर्तमानेऽपि परमशोभातिशयेन प्रख्याते कलिकालचक्रपरिवर्त्तने निखिलभुवनानां पञ्चजनानां परमधीरः श्री महावीरः, ब्रह्मचर्यमः, स्वपरोद्धारकः, परम क्षत्रिय, भारतवर्षस्यार्कः श्री महावीर-तीर्थकरः।

अद्यापि श्रीमद्भिः यस्मिन् मार्गे असेधीत्, तस्य हि हितोद्देशः स्वजीवनमुक्तावस्थायां अखिलान् जीवान् सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राण्येतान्यपवर्गमार्गे संबोधयित्वा च कृतं किञ्चारूढ़मिति कक्कुमाम्बरमतस्योपरि। अनादिनिधनविष्टपे, कालचक्रस्य द्वितियावसर्पिणेः चतुर्थपादे, जैनधर्मस्य प्रचारकः, लोकपालकश्चेति, अस्माकं भारतवर्षीयजनानां चरित्राणां चरित्रनायकः, सुधारकश्च, श्री महावीर तीर्थंकरः।

श्री स्वामिना तस्मिन् धर्मक्षेत्रे कुंडपुरनाम्नि नगरे जन्म अकार्षीत्। यत्र हि अखिलनगरनिकायमाणं, नारतागण्यपण्यप्रसारितरत्नाभेरारविद्रुमगुणमणिनिनयदि द्रव्यसमूहाख्यातपारावारमहात्म्यं, विदेहदेशगोत्तरीभूतं, कुंडपुराभिधानं, नगरमिति।

यत्र स्थानान् नानाप्रार्थितानितप्रदानं कुर्वन्तः जीवात्मानः सततं शरीररहितमनेकसुखसंपत्तिशालिनं मोक्षधामं प्राप्नुवन्ति। यत्र पदे पदे केवलिनां, तीर्थंकराणां च निर्वाणभूमयः प्रत्यक्षीभूय विभान्ति येषां वन्दितुं भक्तिभरानतसगगद्गद्वद्दहर्षितदर्शितरागभावाः पुरुदेवदेवाङ्गनाः विद्याधराश्चागमनं प्रकुर्वन्ति।

यत्र च धर्मसेविनां, देवविमानानां, चानेकवनाख्यानां, भारेण भरितमिव, महत्सुन्दरसुमनसमानमानां पौराङ्गनानां समानगुणधारिणां देवानामिव गगनतलचुम्बनेषु राजसदनेषुनवासाः प्रकुर्वन्ति राजवनिता।

यत्र किञ्च राजसदनेषु दंदह्यमानागुरुधूमवर्तिः मेघपटलमिव विभाति, धूमाच्छन्नसुवर्णकलशानि वर्षान्तुमेघपटले विद्युल्लता इव, विभान्ति, तेषूपरि संलग्नपताकाः विदेशादागताः ये मानवाः तान् आतिथ्यसत्कारं प्रकुर्वन्ति।

यत्र जिनमन्दिराणि स्वर्गशृङ्गास्पर्शं कुर्वन्ति। तेषां अनिर्वचनीया शोभा, शोभते। पौरजनाश्चागत्यानेकपुण्यविशेषफलैः शालिनः भवन्ति। अर्हत्पूजां कुर्वन्ति यस्मात् स्वर्गसम्पत्तिफलस्य प्राप्तिर्जायते।

नानारसोपेतगानवाद्यादिशृङ्गारिकजनादीपोत्सवं, जिनमहिमां च चमरछत्रभामण्डलोपेतपूर्णार्कविम्बमिव श्री जिनप्रतिबिम्बमण्डलं, अर्चयन्ति धर्मोत्सुकाः साधवश्च। यत्र देवसमूहालङ्कृताः स्वर्गा इव मार्गाः विदेहक्षेत्रमुद्भासयन्तो हारा इव विहाराः, यस्मिन् खलु विविधचिन्हाः दृश्यन्तेऽन्तः प्रचुरप्रमाणाः, बहिश्च गत्वा निवत., सुशोभितनतरङ्गाः शोभन्तेऽन्तः संगीताद्यशाला, बहिश्च क्रीड़ाद्यु-

फुल्लकमलदीर्घिकाः, प्रचुरधान्यनिरुद्धाः कथमभ्यभिजानन्ति, अन्तः पण्यस्त्रियो वहिश्च क्षेत्रभूममः, नानाशुकविभूषणाः विराजन्तेऽन्तः समा, वहिश्च आम्रवनराजयः, ससौगन्धिकप्रसारा शोभन्तेऽन्तर्विपणयो, वहिश्च सलिलाशयः। अक्षरसावणानाः कविसमयेषु कवयो दृश्यन्ते, राजद्वारेषु।

यस्मिञ्छासति सिद्धार्थे न कस्यापि, कदाचिदपि दुःखमभूत, यदि चेत्तर्हि केवलं, अव्ययभावो व्याकरणोपसर्गेषु; न धनिनां धनेषु, वृत्तिकलहो वैयाकरणछात्रेषु, न स्वामिधनेषु, स्थानभेदश्चित्रकेषु न सत्पुरुषेषु, दानविच्छित्तिरुन्मायत्करिकपोलगण्डमण्डस्थलेषु, न त्यागिग्रहेषु, भोगभङ्गो भुजङ्गेषु न विलासिप्रियपल्लीकेषु, स्नेहक्षयो रजनिविरामविरमत्प्रदीपपात्रेषु, न व्यवहारेषु, एवं महत्सुखेन वरी-वर्त्तन्ते सर्वे कुंडलपुरस्य नागरिकाः।

तस्य कुंडलपुरस्य रक्षकः निखिलपृथ्वीपतिशिरः, स्वर्णाद्रिसिंह इव समभ्यर्थितराज्येन्द्र इव परः चतुः रत्नाकरमालाक्रमेखलायाभुवो स्वामी कान्तिमयप्रतापानुरागो नम्रीभूत सम्पूर्णराजचक्रः चक्रवर्तिलक्षणोपेतः, चक्रधर इव करमृणालदण्डकमलोपलक्ष्य लक्ष्यमाणः, शक्र इव सकलाञ्छनकिणाङ्कितः हरिरिव निर्जितस्मरः गृहइव मत्पुत्रशाकिनीलोत्पलयोनिरिव, तिरस्कृतराजमंडलसुधाकर, रत्नाकर इव लक्ष्मीनितः मेकलकन्यकाप्रवाह इव भागीरथ्याप्रवृत्तोऽकाशमणि इव दिवसोपमायमानोतुङ्गः स्वर्गाद्रि इव सम्पूर्णोपजीव्यमानपादपोच्छ्रायः। दिग्गिज इव सततं रतदानाद्रितिलकः वर्त्ता महासमयनामाहर्ता, ऋतूनां मुकुर इव सर्वशास्त्राणां त्रैलोक्यवाचस्पतिः कन्यानुमूलत्तिकुलविरपगुणानामागमः, उदयाचलदिनकरमणेः प्रहीनराहुरहितजनस्य प्रवर्तमानाः गोष्ठीवृन्दानां रसिकानामाश्रयः, प्रत्यदेशोकोदण्डकारिधनुर्भृतां, साहसिकानां धौरेयोगुणी विदग्धानांचापकोटिसमुत्सारितारातिकुलाचलो हरिवंश इव मेचमालायाः सूर्य काश्यपान्ववाम्बवारि मतिश्रुतावध्येतत्रितयज्ञानानामभिवृतिः नीतिमार्गप्रवर्तक। श्रीजिनेन्द्रागमप्रजानां भक्तो, परमोत्कृष्टमनोहरलक्षणोऽस्योक्तः, कुर्वंशपावनः सिद्धार्थ इति नामराजा कुंडलपुरस्यासीत्।

अथ राज्ञः कान्ताऽधिकान्ता, महिषी, महिता विश्रुता मनमोहनत्रिलोचनजितइवसंजातमंजुलमालतीमञ्जरीलतानुकारिणी प्रियकारिणीत्रिशला नामधेयाकान्ता परमप्रिया, जिनधर्मभक्तागुणवती, आसीत् विश्रुता महिषी तस्य श्री सिद्धार्थस्येति। एवं दम्पत्यो गृहस्थधर्मयोग्या हिंसासत्यधर्माचौर्यादित्रिशा त्यानरन्तौ राजनीराकररहितसुखाविभिः सुखानुभवन्तौ परमशौर्यप्रतापात् प्रजायाः पालनं चक्रुः।

अनवरतं दुःखसंक्लिमानमानां शुद्धहृदयात् परिपालनं च धर्मशीला स्वनीदनं इन्द्र इव यापयामासतुः।

यस्माचेनादृशप्रकारेण जन्म लेगे, यहि किं पुण्य, विशेषवर्माह्माना मोक्षगामिनः आयान्ति मातुगर्भं तर्हि पुण्यादयोत, शुभकर्माद्वाषुसकानि संवशान्याशानि।

एकस्मिन्नहनि मीनगारहलीरविराजिताम्रमस्तकचन्द्रकलाशोभातिशयेमन्दमन्दगमी शान्दी

लिताङ्ग तमिश्रायां रजनीमुखे प्रियकारिणी षोडससंवेशानि ददर्श।

प्रातरुत्थाय प्रभोस्मरणं सामायिकं च श्री भगवन्तं नमस्कृत्य नित्यक्रियां कृत्वा सुख-बाहुल्येनशुभप्रावरणानि कंकणनुपुराङ्गदकेयुरादिकर्णभूषणानानि परिधाय फलपुष्पसहिता सा राज्ञः समायां चचाल।

श्रीमहीपतिः आगच्छन्तीं, लावण्यवर्ती हृदयकमलप्रफुल्लितनयनद्वयो; कला इव सुदर्शी परममित्रां वीक्ष्य मृदुलवचनैः समाप्य तस्मै सुदार्द्धासनं ददौ।

अथादिशं च प्रियकारिणा मुदितमनसा इमानि शोडससंवेशानि। प्रष्टं च?

महाराज! एषां संवेशानां किं फलं भविष्यति? राज्ञः किंचित् कालं स्थित्वावधिज्ञानद्वारेण सम्यक्प्रकारेण ज्ञात्वानवीत।

प्रिये! दृष्टः गर्भः तत्फले तव तीर्थकरपुत्रस्य जन्म भविष्यति। इत्याकल्प्य च वृषभो मृगेन्द्रादिनां समस्तानां संवेशानां भिन्न भिन्न प्रकारेण फलान्यवादीत्।

आगते शुचिशुक्लषष्ठोत्तराषाढनक्षत्रे श्रीवीरप्रभो आत्मा शोडसाच्युतनामत्रिदशालयादमरपर्याये सम्पूर्णं कृत्वा प्रियकारिणेः गर्भे। यथाशुक्तिकाभ्यन्तरे सलिलबिन्दुः सुखेन प्रतिवसति तथैव सुतोऽप्युदरस्थितेऽपि मनोऽव्ययामपि नाभवत्।

माता सस्नेहेन मदनानां स्वज्ञानबलेन सततरसुतरं देवाङ्गनाभ्य अदात्, यथा कलिकालिमकपरिवर्तिनामध्ये किं श्रेयः? पंचपरमेष्ठिनां ध्यानं, जिनागमं, सततरश्मिवादिरमणोत्तरालापैः आनन्दनिमग्नवल्लरीलताचन्चरीभिः, सरलागत एवं नवमासपर्यासिमापूर्णयत्। परमशोभित प्रसुतिगृहे मधुशुक्लत्रयोदशचले श्री तीर्थकरस्य जन्म अमृत खलु भुवनतिलकः श्रेष्ठज्ञाता मतिश्रुतावधिज्ञानसहितहेममयपरमनाज्वल्यमानः वज्रऋषभस्थितवेष्टनकीलकवज्रवृषभनाराचसंहननसंयुक्तशरीराङ्गोपाङ्गः तीर्थकरः कान्तिराजितयुक्तशरीरं च सलीलविरिञ्चण, मञ्जुशिञ्जितसरसं मंजीरचारुवहन्ती च सेगयतालक्षयचंचुरप्रचुरचारनारीसंचारिणीकरणवन्धशोभेभागे सुसज्ज्ञा उत्तालसरसीरुहललितकिसलय इव कोमलवाहुवल्ली तह्वीवविद्धवाहु, याम्यदिश्यर्कोदय इव गर्भस्थानात् प्रकटी बभूव।

अस्मिन्नेव काले परमपवित्रमिन्द्रासनविभूतिसज्जितस्वानुरूपेणासनेन पाकशासनः देवसेनान्वितः मत्त्यर्धमागमत। श्री महावीरस्वामिनं इन्द्रवारणस्योपरि निधाय कनकाचलस्योपर्यनयत।

अर्धचन्द्राकारपांडुकशिलामध्ये रत्नालंकारशोभितपद्मने महावीरं स्थापयामास।

क्षीरार्णवक्षीरादष्टोत्तरशतानि कलशानि गृहीत्वा इन्द्रेण प्रभोः जन्माभिषेकोत्सवमकारीत्। तदनन्तरम् दिव्याभूषणरत्नालंकारेण अलंकार। तदैव दर्शनपाठस्तुतिपूजां च विधाय पुनः ऐरावतस्योपरि विराजमानं कृत्वा पटहनिनादिकेनेसह कुंडलपुरे आगतवान्। मातुः समीपे प्रभुं समर्पितवान् तदा हर्षितमनसा जन्मोत्सवं व्यधात्। एवं विधाय सर्वे विबुधा अमरालयमगच्छन्। श्रीमहावीरः मतिश्रुतावधिज्ञानानिदिव्येन कृपा, उत्कर्षतां प्राप। अतः विश्वपरिज्ञानकलादर्पः, धार्मिक-

विचाराश्चादिगुणाः स्वयं परणतिं प्राप।

श्री वीरप्रभुः हरिन्मणिनिर्मिताङ्गणे क्रीडन् तथा दन्तछविं प्रकाशयन् पूर्णसुधांशु इव विरराज। परिफुल्लकमलदलाकृते उत्तानशयने मुष्टिं धारयन्, उदितसरसीरुहस्य समानतां दधौ। अथ कदाचित् पवनविहारिहारिगुलुच्छगुच्छगुलगोस्तनीशिरीषलतिकापरिवेष्टितवनराजिविहारवाटिकायां अन्यैः बालकैः सह क्रीडां कुर्वन् श्री वीरः, अस्मिन्नेव काले मदोन्मत्तगजेन्द्रः समुद्धूतपृथ्वीतले, चिच्छेद च वनजातवृक्षाः धूलिषु चिक्रीडुत्सु श्री वीरसमीपे समागतवान्। गजेन्द्रेण भयभीताः सर्वे बालका इतस्ततः पलायंचक्रे। किन्तु वीरप्रभुः तस्य मस्तिष्कोपरि स्थित्वा स्वबलेन गजेन्द्रं कदर्थितं चकार।

अस्यामवस्थायां खलु श्री महावीर तीर्थंकरः गजाधिरूढः, गजेनसह नानाप्रकारक्रीडां कुर्वत्सु कदाचित् दन्तयुगलस्पर्शसुखमनुभवन्, कदाचित् शुण्डादण्डेन सह स्वभुजसाम्यमधारयन् तथा युद्धं च कुर्वन् कदाचित् शुण्डादण्डे पानीयं निक्षपन् एवं विधं विहारं कुर्वन्, कर्मप्रमिते लघीयसि वयसि स्वात्मानं शुद्धनिश्चयनयात परमानन्दमयमनुभवं कुर्वन्, गार्हस्थ्ययोग्यान्यहिंसासत्याचौर्यादिव्रतान्युररीचकार। पित्रोरत्याग्रहेऽपि परिणयं न चकार। ब्रह्मचर्यस्थो ब्रह्मचारी, एवासीत्। यस्मात श्री महावीरः त्रिंशत्तमवत्सरे क्षायिकसम्यक्त्वं प्राप्तवान्। तस्मिन्नेवकाले यदा क्षायिकसम्यक्त्वस्य प्राप्ति अभूत् तदा मनसि वैराग्यं विजजृम्भे तदा श्री महावीरस्वामिनिर्वेदमासाद्य द्वादशानुप्रेक्षामनुध्यायन तस्मिन् काले पंचम स्वर्गस्थाः लौकान्तिकदेवा आत्तवस्त्रालंकारमणयः अक्षतपुष्पाद्यंगधूपचमरछत्रादिवस्तूनि गृहीत्वा गाद्यवाद्यवेणुवीणादिकेन हर्षं प्रकर्षं तन्वन्तः समुपस्थिताः विबुधाः, श्रीमद् भगवन्तं मोक्षमार्गप्रमितां प्रदक्षिणां विधाय नमश्चक्रुः। श्रीभगवतः वैराग्यभावनानां मंगलादिस्तुत्यारात्तिकां कृत्वा प्रार्थयामासुः। यत्किल दीक्षायाः ग्रहणं विचारितं त्वया तदतिप्रशंसनीयम्। इदं खलु धर्मप्रवृत्तेः कार्यं कः कर्तुं शक्यः, धन्योऽसि त्वम्। धन्यश्च भवतः परमपवित्रवैराग्यवृत्तिः, इत्यादि स्तुतिपूजां च भगवतः वैराग्ये मानसं दृढं विधाय सर्वे किल विबुधा अगच्छन् तदनन्तरं चतुर्णिकायाः देवाः स्वीय स्वीय वाहनेषु अधिरुह्य कुंडलपुरनगरम् समागच्छन् अष्टोत्तरसहस्रैः कलशैः प्रभुमभिषिच्य नूतनमेकविमाने अपूर्वरचना रुचिरे केनाप्यवर्णनीये कान्ताश्रपदलादिमण्डिते शुभ्रपताकाभिसंयुक्ते श्री विमाने भगवन्तं संस्थाप्य दीक्षार्थमालोकशब्दं कुर्वन्तः प्रसवानां कन्दुकं निर्माय्यान्योपरि निक्षिपन्तः पूर्वदिशाप्रदेशे नन्दनवने अनैषिषुः विबुधाः। श्री भगवन्तम् तत्र किल चन्दनवृक्षतलस्थ स्फटिकशिलातले विचित्ररत्नादिकेन चूर्णेन साथियां निर्माय पुष्पमालादिसुगन्धवस्तुद्रव्येन मण्डपं रचयामास। श्री वीरप्रभुः विमानादवतरित्वा तत्रस्थमण्डपमलंचकार।

समुपस्थिताः सर्वे देवमनुष्यादयः धर्मव्याख्यानं श्रुत्वाभ्यनन्दन्। श्री वीरभगवान् इयत्यल्पीयसि वयसि दीक्षां गृह्णात्याकर्ण्य सर्वे गार्हस्थ्यजनाः दुःखिताः बभूवुः। माता तु तस्यातिशयदुःखसागरे निमग्ना बभूव, हा पुत्र!

हा प्रहरत्नप्रदीप! हा हृदय! एवं विलपन्ती दुःखरत्नाकरे निमज्जयन्ती एवं कथयन्ती अयि प्रिय पुत्र! तव सुकुमारशरीरं शिरीषकोमलमद्यापि चत्वरस्यातपं सोढुमशक्यम्। अधुना किल दिगम्बरपि कथं बहिस्थमातपं सहस्यसे इत्येवं रुदन्तीं तां विलोक्य सौधर्मेन्द्रः मातरं तोषयामास। तदनन्तरं चतुर्विंशतिप्रकारकमन्तरङ्ग-बहिरङ्गपरिग्रहं परित्यज्य सिद्धनमस्कृतिं चकार ततःपंचमुष्टिना शिरश्चिकुरादीनां केशानां लुंचनं विधाय महाव्रतमूलगुणं च धारयामास। एवं किंचित् कालव्यत्यये मार्गशीर्षकृष्णपक्षदशम्यां हस्तनक्षत्रे त्रिंशत्संवत्सरे महता भगवता श्री जैनीदीक्षा ग्रहीता। पाकशासनेन कचानादाय रत्नमण्डितरचितकिलचित्रविचित्रे पेटके धृत्वाखिलदेवाः निनादटङ्कारमांकारभीकरवाद्यतालमृदङ्गवेणुवीणादिकेन सह क्षीरवाराशेरं जग्मुः किलक्षेप्तुं च तम्। परन्तु मानुषोत्तरशैलाग्रे पुद्गलपुरुषीयांशोर्गत्यभावात् तत्रैव तेषां क्षणेन तस्मिन्नेव मणिविचित्रे पार्श्वे मन्दसुगन्धपवनमनोहरे श्री मानुषोत्तरशैले भगवन्तं श्री हियवन्तं महावीरस्वामिनं पूजास्तुत्यारार्तिकां विधाय स्वस्वसदनगमनसुग्रीवाः। महोजस्कः श्री महावीरः योगधारणं विधाय सानुरिव स्थिरं बभूव। यस्मात् द्वयप्रमिते मासे गाते सति तपःप्रभावेन मनःपर्ययज्ञानं जातम् , तत्पश्चात् अत्रैव दशानपुर नाम्नि नगरे आजगाम। यस्मिन् जिनमन्दिराणि राजसदनानि चान्तरीक्षं चुम्बन्तेव विभान्ति तस्मिन् कुलनामको राजा आसीत् तेन महन्तं श्री भगवन्तं दृष्ट्वा नमस्कृतिं मोक्षमार्गप्रमितां प्रदक्षिणां विधाय स्वसदने षड्रसाद्यशनाशनं कर्तुमादिदेश।

तदा किल स्वामिनं स्वसदनं समानीय पादप्रक्षालनं च विधाय पायसादिभोज्यद्रव्यं समर्पितवान् येनदेवैःतद्गृहोपरि पंचाश्चर्यवृष्टिर्विहिता ततः किलाशरणनीर्णारण्ये श्री महावीरो जगाम तत्र तपप्रभावेनाणिमाद्यष्टविधर्धयः सिद्धयश्च संजाताः पश्चात् श्री वीरप्रभुः भ्राम्यन् सन् एकस्मिन्नहनि उज्जयनी नाम नगर्याम्यासेश्मशाने पद्मासनेन ध्यानं धृत्वातिष्ठत् तदानीं भगवद्दर्शनेनैमातपूर्वपानिकशात्रवस्मृतिर्संजातः किल स्थाणुनामकएकादशरुद्रस्येति तदारम्य तेनानेकविधान्युपसर्गाणि कर्तुं समारब्धानि परं च स्वकल्पाकलितविकरालकाल इव विशालचमूरशूकरव्याघ्रडाकिनपिशाचपञ्चाननादिभीषणवपै. बहुविधं भयं नीतोऽपि श्री भगवान् स्वल्पमपि योगान् विचलितवान् स्वेष्टसाधनापक्वः समाप्तसमस्तसमुद्रवः चरिमोरुद्रः भगवन्तं महन्तं परिज्ञाय प्रणम्य गतवान्।

एवं विभमनेकताश्चरणादिकादीन् कुर्वन् सन्, तदा द्विचत्वारिंशत्तमे सम्वत्सरे जृम्भिकाग्रामस्य सरित्स्थारण्ये शालवृक्षमूलभागे स्थिरशिलायां ध्यानं अकार्षीत्। तत्र भगवतः तपःप्रभावेनारण्यस्थानि निखिलऋतुसम्भवानि तस्मिन्नेव समये प्रफुल्लान्यभवन्। सर्वे श्वापदाश्च स्वकीयवद्धवैरं परित्यज्य एकस्मिन्नेव स्थाने क्रूरसौहार्दैः परस्परप्रीतिं वर्धयन्तः सन्तः अभवन् स्वामिनः ध्यानप्रभावेन घातिकर्मणां त्रिषष्टिप्रकृतीनां नाशं विधाय वैशाखशुक्लदशम्यामुत्त हस्तनक्षत्रमध्ये केवलज्ञानं प्राप्तवान्।

तस्मिन् काले भगवतो महावीरस्य केवलज्ञानं नवलब्ध्यनन्तचतुष्टयादीनां प्राप्तिरभूत्। इति इन्द्रेण विज्ञाय तत्रैव स्थानादुत्थाय परोक्षं नमश्चकार तदनन्तरं धर्मोपदेशश्रवणार्थं संसारजीवोपकारार्थं समवशरणाख्यं सभामण्डपं विरचयामास तथा भगवत्सहस्रनाम्नां व्याख्याय व्याख्यानं पापनाशनकरणशीलधर्मप्रभृताः बभूवुः। सजलजलदमेघध्वनिरिव धर्मतत्वव्याख्यान् पटीयान् दिव्यध्वनि प्रचचार। प्राणिनां हृदयपथेषु चामिततत्वव्याख्यान भगवतो वाणीं गुणगणधरं गणधरं विनावधारयितुं शक्नुयात। ततः श्री वायुभूतिरेवधर्मसुतिः गणधरत्वेन मण्डयामास्। तदनु कर्मशत्रुमारणमहावीरत्वं श्रीमतो वीरस्य दिव्यध्वनौ सप्ततत्वादिमन्नानां व्याख्यानमभूदिति एवमुपर्युक्त प्रकारेण धर्मोपदेशं कुर्वन् सन् द्विसप्ततितमे संवत्सरे विहारप्रान्ते पावापुरनामके नगरे विहारंकृतवान्। तत्र पावापुरस्यारण्ये वरीवर्त्तते किलैकं सरोवरं तस्मिन्नप्यन्तराले मृत्पिण्डे स्थित्वा श्री महावीरः शुक्लध्यानं प्रारब्धवान्। येन शुक्लध्यानेनावशेषपंचाशीतिप्रकृतिनां सर्वतो भावेन नाशं विधाय कार्तिककृष्णपक्षचतुर्दश्यां गणरात्र्यये अमावस्यायाः प्रभाते किल स्वातिनक्षत्रे श्री महावीरप्रभो मोक्षं जगाम।

लेखेऽस्मिन् या काचिदशुद्धिश्चेत्तर्हि क्षन्तव्या।

ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः,

नन्दावाड़ी, } सूर्यपुरम् } सतीशचन्द्रो गुप्तः

खऱ्या धर्माचें स्वरूप.

वाचक हो, धर्म म्हणजे काय व त्याचें स्वरूप कसें काय आहे व तो कोणी उत्पन्न केला वगैरे प्रश्न मनुष्यापुढें सहज उभे राहतात. ह्या विषयीं वर्तमान पत्रांतून वेळोवेळीं प्रसिद्ध होत असलेले लेख आपण वाचलेच असतील अशी माझी खात्री आहे व पुनः पुनः त्याच विषयाचें जर चर्वितचर्वण होऊं लागलें तर त्याविषयीं वाचणाराच्या मनांत एका प्रकारचा तिटकाराहि उत्पन्न होतो. Too much familiarity breeds contempt. अशी इंग्रेजींत म्हण हि आहे. ह्याचा अर्थ असा कीं अति परिचया पासून तिरस्कार उत्पन्न होतो. आपल्या येथें जर कां एकादा पाहुणा आला तर आपण त्याचा पहिल्या प्रथम मोठा आदरसत्कार करितों. परंतु तोच जर दोन तीन दिवसा आड येऊं लागला तर त्या विषयींची आपली पूज्य बुद्धि नष्ट होऊन जाते. ही झाली मनुष्याची गोष्ट. परंतु लेखा विषयीं तसें नहीं. विषय जरी तोच असला तरी प्रत्येकाची विचारपद्धत व लेखनशैली भिन्न भिन्न असल्या मुळें तो आपण जरूर वाचल्या पाहिजे. विषय जुना म्हणून सोडून न देता त्यांत नवीन काय सांगितलें आहे व तें बरोबर आहे किंवा नहीं हे वाचणारानें पूर्ण लक्षांत घेतलें पाहिजे.

या प्रमाणें प्रस्तावना केल्यानंतर आपण आपल्या प्रस्तुत विषयाकडे वळूं. पहिल्यां प्रथम

धर्म या शब्दाची व्याख्या देऊन नंतर त्या खाली येणाऱ्या तत्वांचेंवर्णन करूं 'सद्दृष्टिज्ञानवृत्तानि धर्म धर्मेश्वरा विदुः। यदीय प्रत्यनीकानि भवन्ति भवपद्धतिः॥ अशी रत्नकरंड श्रावकाचारांत अमितगति आचार्यांनीं धर्म या शब्दाची व्याख्या सांगितली आहे. सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, आणि सम्यक् चारित्र ह्यांस पंडित लोक धर्म म्हणतात. ह्या विरुद्ध जें असेल त्यास अधर्म असें म्हणतात. फ्लिंट साहेब म्हणतात 'Religion is man's belief in a being or beings mightier than himself and in accessible to his senses but not indifferent to his sentiments and actions, with the feelings and practices that follow from such belief,' अशी फ्लिंट साहेबाची धर्माची व्याख्या आहे. धर्म म्हणजे ईश्वराचें अस्तित्व कबूल करणें व त्या प्रमाणें त्याची भक्ति करून त्यानें सांगितलेल्या नियमांचें आचरण करणें. या प्रमाणें फ्लिंट साहेबानें सांगितलेल्या धर्माच्या व्याख्येची व अमितगति आचार्यांनीं दिलेल्या धर्माच्या व्याख्येची तुलना केली तर आपणास आढळून येईल की दोन्हिंहि व्याख्यान जवळ जवळ सारख्याच आहेत. व्याख्या जरी सारख्याच असल्या तरी आपण असें समजूं नये कीं फ्लिंट साहेबाचा धर्म व आपला धर्म एकच आहे. जगांत निरनिराळें धर्म उत्पन्न होण्याचें कारण दुसरें कांहीं नसून त्या त्या संस्थापकांची ईश्वरा विषयीं निरनिराळी कल्पना हेंच होय. याप्रमाणें ज्या ज्या लोकांना जी कल्पना पसंत पडली त्या त्या प्रमाणें ते त्या संस्थापकांना मिळून त्या धर्माचे अनुयायी बनले. येणें प्रमाणें निरनिराळे धर्म अस्तित्वांत कसे आले हें आपण थोडक्यात पाहिलें आतां धर्माचा उद्देश काय ह्याकडे आपण आपली दृष्टि फेकूं.

ज्या सुखाची इच्छा नाहीं असा एकहि प्राणी ह्या जगांत सांपडणे कठीण. मनुष्यच नव्हे तर जगातील यच्चयावत् प्राणी सुख मिळविण्या करितां वाटेल त्या प्रकारचे प्रयत्न करीत असतात. तात्पर्य हेंच कीं दुःखाचा परिहार करून सुख मिळवावें हेंच सर्वांचें ध्येय आहे. Mill says, 'Happiness is desirable and the only thing desirable in the world, all other things are desirable as means to an end.' आतां साहजिकच असा प्रश्न उद्भवतो कीं सुख जर प्रत्येकाचें ध्येय आहे तर तें सुख कसें काय आहे व तें मिळविण्याचीं साधनें कोणतीं-वर वर विचार करणारास हे प्रश्न सोपे वाटतील, परंतु सूक्ष्म विचार केला असता असें आढळून येण्या सारखें आहे कीं दिसतात तितके सोपे हे प्रश्न नाहींत. मोठमोठया विद्वान लोकांनी ह्या प्रश्नचा खोल विचार करून असें प्रतिपादन केलें आहे कीं नेहमीं सुख देणारी अशी ह्या जगांत एक हि वस्तु नाहीं. ज्यास आपण सुख म्हणतो तें खरें सुख नसून केवळ सुखाभास आहे. ऐहिक वस्तु पासुन मिळणारें सुख क्षणिक आहे. ह्याचा अनुभव रोज घडून येणाऱ्या गोष्टींत, आपण पाहतच आहोंत. हें फिरून सांगणें अशी

कांहीं माझी इच्छा नाहीं; परंतु विषयानुरोधनें त्याचा येथें उल्लेख करणें भाग पडतें. सुख म्हणून जी अदृश्य वस्तु आहे ती आपणांस पंचेंद्रियांचें द्वारें मिळवितां येते हीं पंचेंद्रियें शिथिल झालीं म्हणजे अर्थातच सुखोपभोगाचीं साधनें हि नष्ट होतात हें वरून अगदीं स्पष्ट दिसुन येतें. जी इंद्रियांची वाट तीच स्त्रीपुत्रादिकांची व इष्टमित्रादिकांची. जोपर्यंत आपल्या जवळ चमकाजी आहेत तों पर्यंतच सर्व कारभार ठीक चालतात. परन्तु पैसा एकदाचा हातून गेला म्हणजे तूं कोण आणी मी कोण अशी स्थिति होऊन जाते. म्हणून संत तुकाराम म्हणतात कीं ' सुख पाहतां जवा एवढें । दुःख पर्वता एवढें ॥ सुखदुःखाची तुलना केली असतां सुख जवा एवढें तर दुःख पर्वता एवढें असें आपणांस आढळून येईल.

बरें, सुख सुख म्हणतां तर तें सुख आहे तरी कोठें याचा आपण पूर्ण विचार केला आहे काय ? आतां सुख कशांत आहे हें आपण पाहूं. अशी कल्पना करा कीं आपल्या पुढें नाना प्रकारच्या पक्वान्नांनीं भरलेलें एक ताट आणून ठेविलेलें आहे, व त्यांतला त्यांत कांहीं कारणामुळें आपली क्षुधाहि फारच खवळलेली आहे. अशा प्रसंगीं तें अन्न आपणांस किती बरें गोड वाटेल? ज्यांच्यावर असे प्रसंग ओढवले आहेत त्यांनाच त्या आनंदाची कल्पना होणार; इतरांस होणें अशक्यच. परन्तु मला असें वाटतें कीं अशा प्रकारचे प्रसंग प्रत्येकावर केव्हां ना केव्हां तरी आलेच असतील तर मग आपणच सांगा कीं अशा प्रसंगीं आपणांस जें सुख होतें तें कशापासुन होतें ? सुख त्या पक्वान्नांत आहे किंवा आपल्या जिव्हेंत आहे ? सुख हा शब्द वापरण्यापेक्षां ह्या स्थळीं स्वादिष्टपणा हा शब्द वापरणें हेंच सोयीचें होईल. परंतु स्वादिष्टपणा असला म्हणजे त्या ठिकाणीं सुख हें असतेंच. महणून स्वादिष्टपणाच्या ऐवजीं मी सुख हाच शब्द येथें राहूं देतों. सुख कशांत आहे ? सुख पक्वान्नांत आहे असें आपल्या पैकीं कांहीं म्हणतील. पण थांबा. थोडा विचार करा आणि मग उत्तर द्या. आतां मी आपणांस असा प्रश्न विचारतों कीं सुख जर अन्नांत आहे तर तें अन्न केव्हांहि घेतलें असतां त्यापासुन सुख मिळालेंच पाहिजे परंतु खरी स्थिति अशी नाहीं. सुख अन्नांत नाहीं किंवा सुख जिव्हेंत नाहीं तसें जर असतें तर मग माझें पोट भरल्यावर किंवा अजीर्ण होई पर्यंत खाल्ल्यावर मला त्या अन्नाचा कां बरें तिटकारा वाटतो ? ह्यावरून सिद्ध होतें कीं सुख पक्वान्नांत नाहीं किंवा सुख जिव्हेंत हि नाहीं. सुखाची जागा ह्या बाह्य वस्तूंत नाहीं. बाह्य वस्तूंत जर सुख असतें तर जी वस्तु मला प्रिय वाटते तीच दुसऱ्यास अप्रिय कां वाटावी ? आपणां हिंदु लोकांना पान सुपारी फार आवडते. परंतु ती इंग्रज लोकांना मुळींच आवडत नाहीं. असें कां ? आपणां पैकीं कित्येकांस ह्या प्रश्नाचें उत्तर कदाचित् माहित हि असेल परंतु मला पूर्ण खात्री आहे कीं कारण थोड्यांना तें माहित आहे परंतु सर्वांच्या ऐवजीं मीच ह्या प्रश्नाचें उत्तर देतों. सुख बाह्य वस्तूंत नाहीं किंवा सुख इंद्रियांतहि नाहीं.

सुख सर्वस्वीं प्रत्येकाच्या मनावर अवलंबून आहे. मनाचे परिणाम जसे असतात त्या त्या मानानें प्रत्येकाची सुखदु:खाची कल्पनाहि बदलत असते. 'मन एव मनुष्याणां कारणं बंधमोक्षयो:' अशी संस्कृतमध्यें म्हण आहे. मन हेंच कर्माच्या बंधनाचें किंवा मोक्षाचें कारण आहे. Mind is the only cause either of the bondage of the soul with karmas or of its freedom from them. आपल्या हातून ज्या ज्या काही बऱ्यावाईट गोष्टी घडतात त्या सर्वांचें उत्पत्तिस्थान मन हेंच होय. इतकेंच नाहीं तर जें जें मी पाहतों आणि ऐकतों तें तें सर्व मनावर अवलंबून असतें. झोपेंत असताना डोळे असून देखील मला पाहतां येत नाहीं. कान असुन देखील ऐकूं येत नाहीं. कारण अशावेळीं मनाची क्रिया दुसरी कडे कोठें तरी चाललेली असते. यावरून आपल्या लक्षांत आलेंच असेल कीं मन हेंच सुख दु:खाचें किंवा बंध मोक्षाचें कारण आहे.

आतां सुख आणि आनंद या दोहोंत कोणता भेद आहे तें पाहूं सुख याप इंग्लिशमध्यें Pleasure म्हणतात, आणि आनंदास joy म्हणतात. सुख म्हणजे इंद्रियजन्य सुख हें क्षणिक व शेवटीं दु:खदायक आहे. व चमत्कारीं वृत्ति लागल्यामुळें उत्पन्न होणारें सुख हें आनंद म्हणजे सदा टिकाऊ टिकणारें आहे. या सुखांत म्हणजे महानंदांत दु:खाचा लवलेश देखील राहत नाहीं. सुख आणि आनंद यांचा मधला भेद उदाहरणें घेऊन सांगितला असतां लवकर समजण्यासारखा आहे जो पर्यंत प्रकृति चांगली आहे तो पर्यंतच आपणांस इंद्रियांकडून सुख मिळण्याची थोडी बहुत आशा असते. एकदां पंचेंद्रियें आपापलीं कामें करण्यास असमर्थ झालीं म्हणजे मग सुखाची आशा बहुतेक संपलीच असें म्हणावयास कांहीं हरकत नाहीं. परंतु इंद्रियें असून देखील काम भागत नाहीं. त्यांच्या कडून सुख घ्यावयाचें असेल तर आपणांस आणखी एका गोष्टीची अत्यावश्यकता आहे. ती गोष्ट म्हणजे पैसा. आपली इंद्रियें अगदीं सुरक्षित आहेत परंतु पैसा नसेल तर ह्यांचा कांहीं उपयोग नाहीं. " दांत है पन चने नही, चने है पर दांत नही " अशी आपली स्थिति होउन जाते. यदा कदाचित् कर्मधर्म संयोगानें दोन्हीहि साधनें अनुकूल असलीं तरी तीं सदैव सुख देणारीं नसतात. उदाहरणार्थ एकदां पोट भरल्यावर आपणांपुढे पक्वान्नांचें ताटचे ताट जरी भरून ठेविलेलें असलें तरी त्यांचेकडे आपण फिरून देखील पाहत नाहीं. कारण आपली क्षुधा शांत झालेली असते. उलट तेंच पक्वान्न ज्यास्त खाल्ल्यास विषासारखे होतात. सारांश इंद्रियजन्य सुख हें दु:खमिश्रित असुन क्षणिक आहे.

आतां आनंदाचें स्वरूप कसें काय आहे तें पाहू अशी कल्पना करा कीं, एखादा कठीण प्रश्न सोडविण्यात आपलें मन अगदीं गढून गेलेलें आहे. अशा वेळीं जर तो प्रश्न आपल्या कडून सुटला नाहीं तर मनास वाईट वाटतें. परंतु तो जर कां आपणा कडून सुटला तर त्यापासून आपणांस जो आनंद होतो तो कांहीं

निराळाच असतो. शाळेतील एखाद्या मुलाची गोष्ट घ्या. परीक्षा पास झाल्या बद्दल त्यास जितका आनंद वाटतो तितका एकादा गोड पदार्थ खाल्ल्यावर त्यास खास वाटत नाहीं. आपण ही परिक्षा पास झालों. ह्या परिक्षेस पुनः बसण्याची आवश्यकता आतां मुळींच जरूर उरली नाहीं असें तो म्हणतो. सांगण्याचें तात्पर्य एवढेंच कीं त्या परिक्षेच्या कटकटींतून जन्मभर मोकळें झाल्या बद्दल त्यास एका प्रकारची खात्री होऊन त्यापासुन त्यास आनंद होतो. तशाच प्रकारचा आनंद आपल्या हांतून एकादें सत्कृत्य झाल्यास आपणांसहि होतो. तो आनंद शब्दांनी व्यक्त करतां येत नाहीं. ज्याचा त्यानें स्वतः अनुभव घेऊन पाहावा. त्या आनंदापासुन आपणांस एका प्रकारची शांति उत्पन्न होते व ती शांति केव्हांहि नष्ट होते नाहीं. ह्या मनाच्या शांतिच परमानंद म्हणतात. ती सुखकारी व चिरकाल टिकणारी असते.

येणें प्रमाणें सुख व आनंद किंवा आत्मानंद अथवा परमानंद ह्यांच्या मधील भेद समजल्या वर आतां बंध व मोक्ष यांचें थोडे वर्णन करून मी हा लेख संपवितो। जगाकडे दृष्टि फेंकिली असतां एकेंद्रियादि जीवा पासुन तो पंचेंद्रियादि जीवा पर्यंत आपणांस नाना प्रकारचे प्राणी आढळून येतात. परंतु अगदी एकाच नमुन्याचे असे दोन प्राणी आपणांस क्वचितच आढळले असतील. ह्याचें कारण काय बरें असावें ? ईश्वरानें तर त्यांच्यात फरक केला नसेल ! पण हो अशी कल्पना मुळीं करावयास नको. कारण ईश्वर न्यायी आहे. एकास दुःखांत लोटणें व दुसऱ्यास सुखांत वाढणें हे न्यायीपणाचें कर्तव्य नव्हे. म्हणून ईश्वर हा आपला कर्ता नाहीं. जो तो आपल्या स्वतःचा कर्ता आहे. Man is the architect of his own self. मी म्हणजे आत्मा व पुद्गल ह्यांचा संबंध होण्याचें कारण काय ? मनुष्य हा स्वभावतःच इच्छामय आहे. ईच्छे शिवाय आपण कोणतेंहि कार्य करीत नाहीं. नाहीं म्हटल्यास प्रत्येक प्राण्यांत जन्मताच कोणत्याना कोणत्या तरी प्रकारची उपजत बुद्धि असतेच. तिच्या योगानें केव्हां केव्हां त्याचाकडून फार महत्वाची कामें घडून येतात. परन्तु ही उपजत बुद्धि कोणांत चांगल्या प्रकारची असते तर कोणांत वाईट प्रकारची असते. तद्वतच ईच्छेचें हि आहे. परंतु दोहोपेक्षां इच्छा किंवा तृष्णाच बळकट्तर आहे. जो पर्यंत आपल्या पाठीमागें तृष्णा लागली आहे तो पर्यंत आपली त्रंधा पासुन कधींच मुक्तता व्हावयाची नाहीं. शिवाय जो पर्यंत तृष्णा आहे तो पर्यंत आपल्या हातुन कर्म हें घडलेंच पाहिजे; आणि जोपर्यंत आपली कर्मापसून मुक्तता होणार नाहीं तों पर्यंत आपणांस मोक्षहि मिळणार नाहीं, कारण "कृत्स्नकर्म विप्रमोक्षो मोक्षः" अशी तत्वार्थात मोक्ष शब्दाची व्याख्या सांगितली आहे, करितां मुमुक्षुनीं भवपाश तोडून टाकून मुक्त होण्याची खटपट करावी. हा भवपाश सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, व सम्यक् चारित्र ह्या रत्नत्रयांनीच तोडतां येणार आहे. हा पाश तोडण्यास रत्नत्रयांशिवाय जगांत कोणतेंच शस्त्र समर्थ नाहीं.

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञानव, सम्यक् चारित्र हें तर धर्माचें मुख्य माग आहेतच. परंतु त्यांतल्या त्यां चारित्राचें फारच महत्व आहे. मनुष्य किती ही शहाणा असला परंतु त्याचें आचरण जर चांगलें नसेल तर त्याच्या त्या विद्वत्तेची जगांत कांहींच किंमत रहात नाहीं. मो ज्ञानानें परिपूर्ण आहे व चारित्रांत ही निष्णात आहे तोच खरा खरा महात्मा उपदेश करणें फार सोपें आहे परंतु त्या प्रमाणें आपलें आचरण ठेवणें हें त्याहि पेक्षां शतपटीनें कठीण आहे. इंग्रजींत अशी म्हणहि आहे की " It is better said than done सर्व शिक्षण चा उद्देश शील बनविण्या कडे असला पाहिजे हें ध्येय धरून जर आपण आपला मार्ग क्रमूं लागलों तरच आपण सुरक्षित ठिकाणी जाऊन पोहोंचूं नाहींतर मध्यें कोठें तरी आड रस्त्यानें जाऊन आपणांस संसारार्णवांत भटकट फिरावें लागेल. हा धर्म रूपी मार्ग आक्रमण करण्याकरितां सम्यग्दर्शन, ज्ञान, व चारित्र हे तीन त्या मार्गांतले पथदर्शक होत त्यांच्या सल्यानें आपण जर वागूं लागलों तर आपण योग्य ठिकाणीं जाऊन पोहोंचूं, हें लक्षांत ठेवून प्रत्येकानें आपली व साधल्यास दुसऱ्य चीही आत्मोन्नति करण्याचा सतत प्रयत्न चालू ठेवावा. ॐ शान्तिरस्तु।

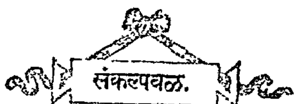
वालचंद मोतीसाव पेठकर—मलकापूर.

प्रतिष्ठासारोद्धार।

(प्रतिष्ठापाठ हिन्दी टीका सहित)

पक्की जिल्द. मूल्य ३)

मैनेजर, दि० जैन पुस्तकालय—सूरत.

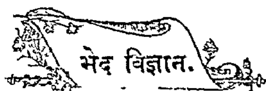


લખનારઃ—સંઘવી વાડીલાલ મુળજીભાઇ લીંબડી.

" જીંદગી મિથ્યા છે " " આયુષ્ય અલ્પ છે, " " સંસારમાં શો માલ છે. " " ઝાઝું જીવવામાં શો સાર છે, " " વહેલું મોડું પણ મરવું છે. " આવા માલ વગરના અને નિરાશાના વિચારો અને સંકલ્પોએ જીંદગીના મહત્વને ઉતારી પાડવામાં તથા તેની અલ્પતામાં ઉમેરો કરેલો છે. જીંદગી ટુંકી થવાનાં કારણોમા અયોગ્ય ખાનપાન, આહારવિહારાદિ નિયમોનું ઉલ્લંઘન, સાંસારિક હાનિકારક વ્યવહારો અને ઉત્પન્ન થતા રોગો ઇત્યાદિ અનેક કારણોની અત્યાર સુધી વિદ્વાન ડૉકટરો અને વૈદ્યો ગણના કરતા આવ્યા છે, પણ એ જીંદગી ટુંકી થવાનું એક બીજુ કારણ ગુપ્તપણે પોતાનો જબરો ભારો ચલાવે જાય છે તે આપણા લક્ષમાં નથી. એ કારણ મનનો સંકલ્પ છે સમજણા થઇએ છીએ ત્યાથીજ મૃત્યુના ભયની અને જીંદગી વ્યર્થતાની વાતોના સંકલ્પો આપણા મન સાથે બંધાતા માંડે છે. ક્ષણે ક્ષણે મૃત્યુના ભણકારા આપણા બીકણ અને ગાયલા બનેલા મનને ભડકાવે છે. " કાલની કોને ખબર છે, કાળનું ચક્ર માથે ફર્યા કરે છે, જીંદગી ટુંકી અને અસાર છે. " આવી આવી બાયલી શીખામણી (નીતિ) અને દોઢ ડહાપણથી લોકો નિર્માલ્ય, બીકણ અને પુરુષાર્થહીન થયા અને સમજણ આવ્યાની સાથેજ આપણામાં આવા હાનિકારક અને વિનાશકારક સંકલ્પો બંધાતા ગયા. એ સંકલ્પો બંધાતા ગયા અને ઉત્તરોત્તર વારસામાં મળતા ગયા અને ક્રમેક્રમે એ સંકલ્પનું બળ વધતુ ચાલ્યું, તે એટલે સુધી કે હાલના ઉગી નીકળતા સ્ત્રી કે પુરુષના અંતઃકરણમાં પણ સામાન્યતઃ નિર્બળતાના બાયલા વિચારો સ્ફુરી નીકળે છે, અને તે એ કે મારે

લાંબુ જીવવાનું નથી; બહુ તો પં૦ કે ૬૦. આજના વખતમાં પચાસ કે સાઠ વર્ષ જીવે તે તો ભાગ્યશાળી ! આવી રીતે તેઓ સંકલ્પ કરી બેઠા હોય છે અને મૃત્યુના જાસુસોને તે આ દુષ્ટ મર્યાદામાં ઉભેલા દેખતાં હોય તેમ તેઓ મૃત્યુની વાટજ જોઇ રહેલાં હોય છે.

માણસના મન ઉપર સંકલ્પબળ મોટી અસર કરે છે અને કાચી વયના માણસોના મન ઉપર તેની જબરી અસર થાય છે. એક બાળકના મન ઉપર બચપણથી જેવા સંસ્કારો અને સંકલ્પો તેમનામાં પ્રત્યક્ષ દેખાશે તે સંસ્કારો અને સંકલ્પોનાજ તેઓ બળીદાન અથવા ભોક્તા થશે. એક બાળકને બચપણથીજ નિરંતર ભય બીકણપણાની વાતો કરો તો તેનું પરિણામ શું આવશે ? તે નક્કી બીકણ અને બાયલું થવાનું. મોટપણે પણ બીવાના અથવા ભય પામવાના પડેલા સંસ્કારો જતા નથી, એવીજ રીતે એક બાળક પાસે ભયની કે બીકની વાતજ નહિ કરતાં, જો તેની પાસે નિરંતર બહાદુરીની, શૂરવીરપણાની અને પરાક્રમનીજ વાત કરો તો તેનું પરિણામ અવશ્ય એવું આવશે કે તે બાળક મોટું થતાં બહાદુર અને પરાક્રમી થશે. હથિયાર લઇ લડાઇના મેદાનમાં ઉતરી પડવાને માટે વણિકને ગમે એવી લાલચ, ઇનામ કે પગાર આપશો તોપણ તે જવાની હિંમત કરશે નહિં, અરે હથિયાર દેખીનેજ ભડકશે; પણ એક રજપુત કોળી કે ભીલનો નાનો છોકરો પણ હથિયાર પકડવાને તૈયાર થઇ જશે. તેનું શું કારણ ? વણિકને તે જાતના સંસ્કાર નથી, અને રજપૂત વગેરેને તેવા સંસ્કારો અને સંકલ્પો વારસામાંજ મળેલા છે. કેટલાક માણસો અમુક કાર્યને માટે પોતે લાયક છતાં પોતે પોતાનાજ મનથી પોતાને નાલાયક માની બેસે છે, અને પોતામાં નાલાયકનો દૃઢ સંકલ્પ કરે છે કે જેથી તે હમેશાં એ કાર્યને માટે નાલાયકજ રહે છે. મારામાં કાંઇ માલ નથી એવું માનનારાઓ હમેશાં માલ વગરનાજ રહે છે, અને જે એવો સંકલ્પ કરે છે કે અમુક કામ હાથ ધરીનેજ તે પાર પાડવું છે અને તે કામ કરવાને હું સંપૂર્ણ લાયક છું તથા તેમ હું કરીશજ; તે માણસ તે કાર્ય અવશ્ય સિદ્ધ કરે છે. આ સંકલ્પબળને સારાં કાર્યોમાં જોડો તો સારાં કાર્યો થશે, નઠારાં કામોમાં જોડો તો નઠારાં કાર્યો પણ થશેજ. હું રોગી છું, મારામાં કંઇ શક્તિ નથી, અને મારે ઝાઝું જીવવું નથી, એવા સંકલ્પો કરનારો માણસ સદા રોગીજ રહે છે, સદા અશક્તજ હોય છે અને થોડું જીવે છે. એથી ઉલટું, જે દૃઢ સંકલ્પી માણસ પોતાના મનમાં એવો દૃઢ સંકલ્પ કરે છે કે, મને કંઇ રોગ છેજ નહિ, હું સંપૂર્ણ સશક્ત અને સુખી છું અને મારે મરવુંજ નથી, તે માણસ સદા નિરોગીજ છે, બળવાન રહે છે અને લાંબો કાળ જીવે છે. સંકલ્પબળનો મહિમા ઘણો મોટો છે અને યોગવિદ્યાએ બળની સિદ્ધિ થાય છે. અમુક નિયમ કે નિશ્ચય ઉપર મનનો નિગ્રહ તેનું નામ યોગ છે, અને એવું માનસિક બળ અથવા નિગ્રહબળ ગમે તે પ્રકારે પ્રાપ્ત કરે તે યોગી છે. આ બળ પ્રાપ્ત કરવા માટે ખાસ કરીને ભગવાં પહેરવાની જરૂર પડતી નથી, ઉંડા ભોંયરામાં જઇને સમાધિ ચડાવવાની જરૂર નથી અથવા પ્રાણાયામ કરીને શ્વાસ ઘુંટવાની પણ ખાસ કરીને જરૂર નથી. અલબત તે બધા મનનો નિગ્રહ કરવાનાં સાધનો છે ખરાં, પણ એ સાધનો વિના પણ કેટલાક વ્યવહારી માણસો પોતાના સંકલ્પ બળ અને મનોબળથી યોગીના જેવું કાર્ય કરવાને સમર્થ થયા છે, એટલુંજ નહિ પણ સંકલ્પ બળથી અને એ સંકલ્પના પ્રતાપથી ઘણા દીર્ઘાયુ ભોગવવાને પણ ભાગ્યશાળી થયા છે.



(લેખક-લલિતાબાઇ, શ્રાવિકાશ્રમ, મુબઇ)

ભેદ વિજ્ઞાન=ભેદ એટલે પરસ્પર એક બીજામાં મળેલી ચીજોનું પૃથક્કરણ એટલે ભિન્ન ભિન્ન કરવું અને વિજ્ઞાન=એટલે વિશેષ જ્ઞાન, અર્થાત્ કોઇ પણ વસ્તુમા અનેક વસ્તુ મળી હોય તેને નયની યુક્તિથી સ્પષ્ટ જાણવુ તેને ભેદ કહે છે। જેવી રીતે તલમા તેલ મળેલુ છે તેને ઘાંચી જુદું કરી દે છે. વળી આપણે પણ એનો અનુભવ કરવાથી માલમ પડે છે. તેમજ લાકડામાં અગ્નિ ગુપ્ત રહેલી છે તેનુ સંઘર્ષણ કરવાથી સાક્ષાત્ અને અનુભવથી પરોક્ષ અગ્નિ અને લાકડાનું પૃથક્પણું આપણને માલમ પડે છે તથા દૂધમાં પાણી મળેલું છે તેપણ આપણે જુદું જાણી શકીયે છિયે તેમજ ઉના પાણીમાં ગરમપણું અગ્નિના સંબંધથી છે અર્થાત્ ગરમ પાણીમાં ગરમ ગુણ પાણીનો નથી પણ અગ્નિનો છે એ આપણે ભેદ વિજ્ઞાનથી જાણી શકીયે છિયે

આપણી વર્તમાન અવસ્થા એટલે મનુષ્યગતિ શરીરધારી જીવની અવસ્થા જીવ અજીવનું મિશ્રરૂપ મનુષ્યપણું છે. જીવનું સ્વરૂપ નિશ્ચયનયથી શુદ્ધ જ્ઞાન દર્શનમયી, આનંદરૂપ અવિનાશી, અમૂર્તિક સ્વસંવેદનરૂપ છે. અજીવ દ્રવ્ય પાંચ પ્રકારનાં પુદ્ગલ, ધર્મ, અધર્મ, આકાશ, અને કાળ, આઠ સ્પર્શ, પાંચ રસ, બે ગંધ, અને પાંચ વર્ણ એ પુદ્ગલના ગુણ છે, એ પુદ્ગલને છોડીને બીજા કોઇ દ્રવ્યમાં કદી પણ રહેતા નથી. પુદ્ગલ સાથે એ ગુણોનો અવિનાભાવી સંબંધ છે. જીવ અને પુદ્ગલને ચાલવામા ઉદાસીપણે સહાયતા કરનાર તે ધર્મદ્રવ્ય અને જીવ પુદ્ગલને ઉભા રહેવામાં સહાયતા કરે તે અધર્મ દ્રવ્ય, સર્વ દ્રવ્યને અવકાશ એટલે જગ્યા આપનાર તે આકાશ દ્રવ્ય અને વસ્તુની નવજીર્ણ અવસ્થા કરનાર કાળ દ્રવ્ય છે. આ પાંચે દ્રવ્ય જડ હોવાથી એમાં જ્ઞાન, દર્શન, અવિચલ સુખ કે આનંદ કાંઇ પણ નથી.

વ્હાલી બ્હેનો! તથા બંધુઓ, અનાદિ કાળથી તમારો આત્મા કર્મોથી બંધાયલો છે એ કર્મો ઘડીમાં હસાવે છે અને ઘડીમાં રડાવે છે, જ્યારે પુણ્યનો ઉદય થાય છે ત્યારે આપણે ઇષ્ટ વસ્તુ પ્રાપ્ત થાય છે અને તેથી આપણે સુખ માનીયે છિયે પરંતુ એ સુખ નિત્ય નથી કારણ પુણ્ય હમેશા એક સરખું રહેતું નથી. સંસારમાં સર્વે પરપદાર્થ ક્ષણક્ષણમા પર્યાય અપેક્ષા નાશ થાય છે એમ જાણીનેજ તીર્થંકરોએ મહાન ઋદ્ધિ છોડી અને ભેદ વિજ્ઞાન દ્વારાએ અવિચલ આત્મિક સુખની પ્રાપ્તિ કરી જ્યારે પાપોદયનુ જોર આપણા પવિત્ર આત્મા પર ચઢાઇ કરે છે ત્યારે આપણે મા, બાપ, ભાઇ, વિગેરેની તથા અન્ય જનોની શરણની આશા રાખીએ છિયે પણ એ આશાથી કાંઇ પણ લાભ થતો નથી, પરંતુ ઉલટું દર્શનમોહની કર્મ મજબૂત થાય છે તેથી સુખકર શરણ નિશ્ચયથી આપણા આત્માનું ગ્રહણ કરવુ જોઇએ. આ પંચ પરાવર્તનરૂપ સંસારમાં ભ્રમણ કરતાં ફરતા જીવને કંઇ પણ શાંતિ મળી નહીં તો સત્ય સુખશાંતિના ઇચ્છક બ્હેનોએ તથા બંધુઓએ આત્માનુભવથી શાંતિ મેળવવી જોઇએ?

આ જીવ એકલો આવ્યો છે અને એકલો જવાનો છે. એકલાને કર્મફળ ભોગવવા પડે છે માટે આપણા સંબંધીઓને માટે આપણે અન્યાય કરવો નહિ કારણકે એનું ફળ આપણે એકલાનેજ ભોગવવું પડે છે હંસ જેમ પોતાની ચાંચવડે દૂધ અને પાણી પૃથક કરી નાંખે છે તેમજ આપણે પણ આત્મરૂપી હંસની ભેદ વિજ્ઞાનરૂપી ચાંચ અંતરંગના કર્મરૂપી પડદામા નાંખીને જીવ અને પુદ્ગલ પૃથક્ કરી દેવા જોઇએ. મિથ્યાત્વ, અવિરત, કષાય, અને યોગ દ્વારા કર્મનું આવવું થાય છે તે દુઃખદાયી છે

માટે એ આસ્રવને રોકવાનો ઉપાય શોધવો જોઇએ/ એનો સાચો ઉપાય આત્મ સ્થિરતા સિવાય બીજો કાંઇ નથી. જ્યાં સુધી કર્મોનો ઉદય વિદ્યમાન છે ત્યાં સુધી પૂર્ણ સુખ મળતું નથી માટે ધીરે ધીરે કર્મનો નાશ કરવો જોઇએ. કર્મ ત્રણ પ્રકારના છે. **ભાવકર્મ**, **દ્રવ્યકર્મ** અને **નોકર્મ**. ભાવકર્મ, રાગદ્વેષ, ક્રોધ, માયા, અને લોભરૂપ વિકારી ભાવને કહે છે એ આત્માનું સ્વરૂપ નથી, પણ મોહની કર્મના કારણથી થાય છે. દ્રવ્યકર્મ, જ્ઞાનાવરણ, દર્શનાવરણ, વેદની, મોહની, આયુ, નામ, ગોત્ર, અને અંતરાય આ આઠ છે.

જ્ઞાનાવરણ આત્માના જ્ઞાનગુણને પ્રગટ થવા દેતું નથી. **દર્શનાવરણ** આત્માના દર્શનગુણને પ્રગટ થવા દેતું નથી. **વેદની** ક્ષણીક સુખ દુઃખનો અનુભવ કરાવનાર છે, **મોહની** કર્મ સત્યાર્થ આત્મસ્વરૂપનો અનુભવ કરવા દેતું નથી અને પરપદાર્થમાં રાગદ્વેષ કરાવે છે. **આયુ** જીવને શરીરરૂપી જેલમાં રોકી રાખે છે. **નામ** કર્મ નાના પ્રકારના શરીરના આકાર બનાવે છે. ગોત્ર નીચ કુલમાં જન્મ ધારણ કરાવે છે. **અંતરાય** કર્મ આત્મબલમાં વિઘ્ન નાખે છે. નોકર્મ ઔદારિક, વૈક્રિયક, અને આહારક શરીરની રચના કરે છે. આ ત્રણે પ્રકારના કર્મોથી આત્મા વ્યવહારનયથી બંધાયલો છે એમ કહેવાય છે, પણ ખરૂં જોતાં શુદ્ધ નિશ્ચયનયથી આત્મા બંધાયલો નથી. જેવી રીતે એક ગાગરમાં લાડવા ભરેલા છે અને તેમાંથી આપણે આપણા હાથમાં લાડવા લઇને કાઢવા જઇએ તો તે આપણા હાથમાં લાડુ હોવાથી હાથ ગાગરમાંથી નીકળતા નથી તેને જો એમ માનવામાં આવે કે એ ગાગરે અમને બાંધી લીધેલાં છે તો તે ખોટું છે તેમજ કર્મથી શુદ્ધ નિશ્ચયનયથી આપણે બંધાયલા નથી, પણ આપણી માન્યતા એવી થઇ રહી છે કે બંધાયલા છિયે, તેથીજ એ માન્યતા આપણને દુઃખ દે છે. આપણો આત્માજ આપણો લોક અર્થાત્ જોનાર છે. બીજો કોઇ પર પદાર્થ લોક નથી કારણ કે તેમાં દર્શનનો ગુણ નથી. વ્હેનો ! આ જીવે અનેક પર્યાય પ્રાપ્ત કરી, કોઇ વખત રાજાનો ઓદ્ધો મળ્યો, સંસારમાં રઝલાવવાવાળું કુજ્ઞાન પણ અનેક વાર પ્રાપ્ત થયું, તેમાં આપણે હોશિયાર કહેવાયા તેમાં કાંઇ પણ દુર્લભતા નથી, પણ સમ્યક્ જ્ઞાનની પ્રાપ્તિ અર્થાત્ આત્માનું યથાર્થ જ્ઞાન થવું દુર્લભ છે, તે મેળવવાની કોશીષ કરવી જોઇએ.

વ્હાલી બ્હેનો ! તથા બંધુઓ ! અમે અને તમે પૂર્વે કહ્યા પ્રમાણે ત્રણ પ્રકારનાં કર્મોથી બેજાર થઇ રહ્યા છીએ; એ કર્મ જ્યાં સુધી રહે ત્યાં સુધી પૂર્ણ સુખની પ્રાપ્તિ થતી નથી. એ ત્રણ કર્મનું મૂલ કારણ દ્રવ્ય કર્મ છે માટે દ્રવ્ય કર્મને નાશ કરવાના સાચો ઉપાય સ્વરૂપ લાભ છે તેને પ્રાપ્ત કરવો જોઇએ કારણ કે સ્વસ્વરૂપની પ્રાપ્તિથીજ સુખ શાંતિ મળે છે અને સ્વસ્વરૂપની પ્રાપ્તિ આત્માનુભવથી થાય છે આત્માનુભવ ભેદ વિજ્ઞાનથી થાય છે જેવી રીતે અમૃતચંદ્રસુરીએ સમયસારમાં કહ્યું છે—

श्लोक—

भेदज्ञानोच्छलनकलनाच्छुद्धतत्वोपलम्भा-
द्रागग्रामप्रलयकरणात्कर्मणां संवरेण ।
बिभ्रत्तोषपरममला लोकमम्लानमेकम्
ज्ञानं ज्ञाने नियतमुदितं शाश्वतो द्योतमेतत् ॥

અર્થાત્ ભેદજ્ઞાનના ઉછળવાના અભ્યાસથી શુદ્ધાત્મતત્ત્વની પ્રાપ્તિ થાય છે અને શુદ્ધાત્મ ભાવની પ્રાપ્તિથી રાગાદિ, ગ્રામનો પ્રલય થાય છે અને રાગાદિ ગ્રામના પ્રલયથી કર્મનો સંવર થાય છે અને સંવરથી ઉત્કૃષ્ટ સંતોષને ધારણ કરનાર, નિર્મલ, પ્રકાશવાન, કલુષતા રહિત શાશ્વત ઉદ્યોતમાન આ એક જ્ઞાન તે નિશ્ચલપણે જ્ઞાનમાં પ્રગટ થાય છે.

આવું સર્વોત્કૃષ્ટ અને પૂર્ણ સુખનું મૂલ જે ભેદ વિજ્ઞાન તેને સર્વ શ્રાવક શ્રાવિકાએ એકાંતમાં સામાયક દ્વારાએ વિચાર કરવાથી અથવા ધ્યાનથી પ્રાપ્ત કરી લેવું જોઇએ, તેને માટે પહેલાં સર્વ બ્હેનોએ અક્ષરજ્ઞાન કરીને અધ્યાત્મિક ગ્રંથ વાંચીને સમજી સાધ્ય તેની

બુદ્ધિનો વિકાશ કરવો જોઇએ. કેટલીક બ્હેનોનું એમ માનવું છે કે સ્ત્રીઓને ક્યાં કમાવા જવું છે એમ કહીને અભણ રહે છે, પણ બ્હેનો! જ્ઞાનની પ્રાપ્તિ કાંઇ ફક્ત પૈસા કમાવાને માટેજ નથી, પણ આપણે સાચું સુખ મળે તેને માટે છે માટે કોઇ પણ બ્હેનોએ અભણ રહેવું નહીં, પણ ભણી ગણી અધ્યાત્મિક ગ્રંથોનો સ્વાધ્યાય કરવો અને તે દ્વારા એ સર્વે સુખનું મૂલ ભેદ વિજ્ઞાન તેને પ્રાપ્ત કરીલેવું જોઇએ અથવા અધ્યાત્મિક પુજન કરીને જન્મ સફળ કરવો જોઇએ.

કારણકે ભેદ વિજ્ઞાનથી વર્તમાનમાં સુખ-શાંતિ, અનુભવાય છે, આત્મવીર્યની વૃદ્ધિ થાય છે, મનુષ્યમાં ઉંચ અવસ્થા પ્રાપ્ત થાય છે તેમજ દુઃખનું મૂળ કારણ કર્મ તેનો ધીરે ધીરે નાશ થતો જાય છે. માટે સ્ત્રી અને પુરૂષ બન્નેએ મનુષ્ય જન્મ સફળ કરવાને ભેદ વિજ્ઞાન કરવું જોઇએ. એનેજ માટે બાલ્યમાં શ્રાવિકાના બાર વ્રતો પાળવાં જોઇએ તથા બાર પ્રકારે તપ તપવા જોઇએ તથા શ્રુતજ્ઞાનનો અભ્યાસ કરવો જોઇએ, જેવી રીતે નેમીચંદ્ર મુનિએ દ્રવ્ય-સંગ્રહમાં કહ્યું છે—

ગાથા.

तवसुदवदव चेदा ज्झाणरह धुरधरो हवे जम्हा।
तम्हा तत्तियणिरदा तल्लद्धीए सदा होइ॥

ભાવાર્થ—તપ શ્રુત અને વ્રતનો ધારી આત્મા ધ્યાનરૂપી ધુરાને ધારણ કરી શકે છે તેથી તમે પણ ધ્યાનની પ્રાપ્તિને માટે તપ, શ્રુત અને વ્રતમાં રત રહો. મારી કેટલીક વિધવા બ્હેનો વૃથા સમય બરબાદ કરે છે, તેઓએ જાણવું જોઇએ કે અમને ભેદવિજ્ઞાન પ્રાપ્ત કરવાનો સુઅવસર પ્રાપ્ત થયો છે, માટે એ સુઅવસરમાં જેમ બને તેમ તપદ્વારા, જ્ઞાન દ્વારા, ધ્યાનદ્વારા, અથવા તો કોઇ પણ પ્રકારથી ભેદવિજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ કરી લેવી, ભેદવિજ્ઞાન-માંજ કાંઇ આપણે આખો દહાડો નિર્ગમન થઇ શકતો નથી તો શેષ સમય પરોપકારમાં નિર્ગમન કરો.

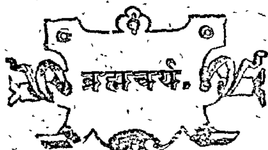
અંતમાં મારૂં કહેવાનું તાત્પર્ય એજ છે કે આપણે સર્વ બ્હેનોએ તથા બંધુઓએ ભેદ-વિજ્ઞાનનું સ્વરૂપ સમજવું જોઇએ અને તે દ્વારા આપણા આત્મામાં કેટલે અંશે રાગ દ્વેષ ભળેલા છે તેનું નિરાકરણ કરવું જોઇએ અને રાગ દ્વેષને હેય જાણીને તેથી રહિત થવાની કોશીષ કરની જોઇએ અને એને માટે વ્રત પાળવાં જોઇએ. સ્વાધ્યાય કરવો જોઇએ, તપ તપવા જોઇએ, તથા બીજા નિયમને પાળવા જોઇએ શેષ સમય ખાસ કરીને વિધવાઓએ પરોપકારમાં નિર્ગમન કરવો જોઇએ, જેથી આલોકમાં સુખ શાંતિ યશ મળે અને પરલોકમાં શુભગતિ મળે તથા પરંપરાય મોક્ષ સુખની પ્રાપ્તિ થાય. અંતમાં મારી બ્હેનોનું નુતન વર્ષ સુખદાયી અને પરોપકાર કાર્ય કરવામાં ઉત્સાહી નિવડો એવી ભાવના ભાવીને લખવું બંધ કરૂં છું.

अनुनयाष्टक।

(गज़ल)

हमरी दशा है क्या अब, जिनवर! ज़रा निहारो,
हमरे कलेश अब ये, कृपया जरा हटा दो॥१॥
आपसमे भाई बन्धु, बहु डाह कर रहे है,
शुभ ज्ञान मन्त्रसे अब, शुभ ऐक्यको बढ़ा दो॥२॥
बिन ऐक्यके न होगा, उद्धार अब हमारा,
इस ही से यह विनय है, प्रभु! एकता बढ़ा दो॥३॥
अज्ञानकी अन्धेरी, मन खून छा रही है,
शुभ-ज्ञानका दिवाकर, हृदयमें अब लगादो॥४॥
अरु काम-क्रोधने भी, हमको सता रखा है,
करके कृपा हमोंपर, "षड्-दोष" को भगादो॥५॥
अधर्मकी अन्धेरी, चहुं ओर छा रही है,
अधर्म-तममें जल्दी, धर्मेन्दु जग-मगादो॥६॥
'आपसमें भाई हम सब, शुभ-प्रेम करना सीखें,"
प्रभु वीर! सब हृदयमें, इस मन्त्रको जगादो॥७॥
आखिर विनय "प्रवासी" करता प्रभो! यही है,
शुभ नाम 'वीर जिनवर' सबके हृदय लगादो॥८॥

पन्नालाल वर्मा—सूरत।



આરોગ્યમાં પ્રથમમાં પ્રથમ જરૂર બ્રહ્મચર્યની છે. આજકાલ આપણા સમાજમાં બાલ લગ્ન વધી પડવાથી નાની ઉમરમાં બાલક અને બાલકીઓ અપકવ વીર્યને નિરર્થક ફેંકી દે છે, તેથી ૪૦ વર્ષની ઉમ્મરે પહોંચવાં પહેલાં તેમના શરીર ખોખા થઇ જાય છે અને મનની યાદ-શક્તિ અને તર્કશક્તિ કમી થઇ જાય છે.

બાલ લગ્નથી જો કે આપણો સમાજ સામાન્ય રીતે સારૂં બ્રહ્મચર્ય પાલી શક્યો નથી પરન્તુ તેથી. પણ વધારે માઠી અસર દુષ્ટ સંસ્કારને લીધે ઉત્પન્ન થાય છે અને તેનું મુખ્ય કારણ આપણી અજ્ઞાનતા છે.

બાળક જ્યારથી જન્મે છે ત્યારથી પોતાના મગજ ઉપર દરેક પુદ્‌ગળની અસર લેતું જાય છે અને માબાપોનું જે અસભ્ય વર્તન, વાણીમાં અથવા ચારિત્રમાં જુએ છે અને સાંભળે છે તે વાત મનથી સહેલાઇથી લાંબા કાળ સુધી યાદ રાખી શકે છે અને તેજ પ્રમાણે ઘણી વખત વર્તે છે. આપણને જો તપાસીને જોવાની ટેવ હશે તો જણાશે કે, આપણે જેવા માઠા અથવા સારા બોલ દરરોજ બોલતા હોઇશું તેવાજ સારા અથવા માઠા બોલ બોલવાની બાળકને ટેવ પડશે. ટુંકમાં બાળક જો કે પહેલાં આઠ વર્ષમાં બોલી શકતું નથી, ભણી શકતું નથી તેમજ કાંઇ પણ કામ કરી શકતું નથી તે છતાં પણ ઘણું જ્ઞાન મેળવે છે માટે આ સ્થિતિમાં ઉચ્ચ જ્ઞાન આપવા માબાપોએ ખાસ કાળજી રાખવી જોઇએ. એટલે બાલકની સન્મુખ વિષયની વાત અથવા ઇશારા ઇત્યાદિ પણ થવા પામવા દેવું જોઇએ નહીં. જો આમ ન બને તો આપણે મોટી ઉમ્મરે તેના લગ્ન કરીશું તોપણ તેથી વિશેષ કાંઇ ફાયદો થવાનો નથી કારણ કે જેવું તે પંદર અથવા સોળ વર્ષની વયે સમજણ શક્તિ અને સામાન્ય કામ કરવાની અથવા વિચારવાની સ્વતંત્ર શક્તિ પામશે કે તરતજ તેના વિષયના સંસ્કાર જાગૃત થશે અને સમય આવે દુષ્ટ વાસનાનો ભોગ કરશે અને કુમાર્ગે ચઢશે.

વીર્ય ખાલી થવાના અનેક માર્ગ છે. સ્ત્રીનો શારીરિક સંભોગ; સ્ત્રીનો માનસિક સંભોગ, જાગૃત અથવા સ્વપ્નાવસ્થામાં હાથરસ, પુરૂષ સંભોગ ઇત્યાદિ અનેક રીતે વીર્ય નષ્ટ પામે છે.

જ્યારે જ્યારે આપણા મનમાં આ વાસના ઉત્પન્ન થાય છે ત્યારે આપણી આજુ-બાજુએ શું થાય છે તે ભૂલી જઇએ છીએ, માન મર્યાદા બાજુ ઉપર મૂકીએ છીએ, શરીર ધ્રુજે છે, રોમાંચ અનુભવીએ છીએ, ટુંકમાં દારૂડીઆ અને ગાંડા માણસ એ બે જાતના મનુષ્યો એક વ્યક્તિમાં રજુ થાય તોપણ કામાંધ માણસ જે સ્થિતિ અનુભવે છે તેનો ખ્યાલ આવી શકે એમ નથી. ટુંકમાં પુરૂષ, મનુષ્યત્વ ગુમાવી દેછે, સ્ત્રી કરતાં પણ શારીરિક અને માનસિક બળમાં તે ગમગે નબળો બને છે અને પશુની માફક જોરજુલમથી વાસના નષ્ટ કરવા મથે છે.

વાસના નષ્ટ થયા પછી ગાત્રો શિથિલ થઇ જાય છે, શક્તિ મંદ પડી જાય છે, પસ્તાવો થાય છે, બુદ્ધિ અને બીજી બધી ઇન્દ્રીયો બહેર મારી જાય છે અને ઘણીવાર સુધી બેચેન રહે છે.

વિષયસેવનથી માણસને માનો કે એક અનહદ સુખ એક ક્ષણ માટે થાય છે પરન્તુ અનહદ દુઃખ ત્રણ અથવા ૭ કલાક સુધી અનુભવવું પડે છે; જો મનુષ્ય વિચારશીલ હશે, જેને શારિરીક અને માનસિક બળની કિંમત જણાઇ હશે, જેનાં બીજા અલૌકિક સુખનો સ્વાદ ચાખ્યો હશે, તેને ગાંડા થવા

કરતાં (rational) રહેવું વધારે પસંદ પડતું હશે તેને આ રતિ ભર સુખના ભોગ માટે આટલો બધો મ્હોટો વ્યય કરવો ઉચિત નહીં લાગે અને તેના સેવનથી દૂર રહેશે.

સ્ત્રી પુરૂષના પ્રેમમાં પણ ઘણો મોહ છે કારણકે પ્રેમનું સ્થૂળ સ્વરૂપ સેવા છે. અને જ્યાં જ્યાં આદર્શ પ્રેમ છે ત્યાં ત્યાં મોહ ઓછો હોવો જોઇએ અને સેવાના રૂપમાં બદલાઇ જવો જોઇએ. કારણકે જેને બારીકાઇથી જોવાની ટેવ પડી હશે તેને જણાશે કે બાહ્ય શરીર પણ આપણુને ઘણા જોરથી આકર્ષે છે અને તે પણ સ્વભાવિક છે. બાહ્ય શરીરથી આકર્ષાઇ જવાય તો તેનો કાંઇ બાધ નથી પરન્તુ પ્રેમનું કાર્ય સ્વરૂપ સેવા છે અને વિષયવાસના અથવા શારીરિક ભોગો નથી.

કોઈ પુછે કે તો સૃષ્ટિમાં સ્ત્રી પુરૂષની જોડ કેમ હશે? લગ્નના ગાંઠ કેમ સંસારમા બંધાય છે, જો વિષયસેવન ન હોય તો પ્રજોત્પત્તિ કેમ થાય અને સૃષ્ટિ કેમ વધે? આ બધા પ્રશ્નનું નિરાકરણ થઇ શકે એમ છે.

મનુષ્યનું આધ્યાત્મિક બંધારણ બે ભાગનું બનેલું છે-એક તો સ્થૂલ અને બીજું સુક્ષ્મ સ્થૂલ ભાગ મનુષ્યમાં દેખાય છે અને કોમળ ભાગ ગૌણ રહે છે; જ્યારે સ્ત્રીમાં ઉંધું ઘડાણુ છે પરન્તુ બેના સંબંધથી એક આખું કાર્ય પેદા થાય છે એટલે કે ટુંકમા સષ્ટિની સંપૂર્ણતા બે જાતની સૃષ્ટિયા અથવા સ્ત્રી અને પુરૂષની સષ્ટિની સંપૂર્ણ થાય છે. આ સામાન્ય સ્પષ્ટિકરણ છે, પરન્તુ ઉત્પત્તિનો પ્રશ્ન આપણાથી સંપૂર્ણ રીતે ચર્ચા શકાય નહીં

લગ્નની ગાંઠથી બંધાવાનાં કારણુ અનેક છે. માણુસ એકલો દરેક જાતની પ્રવૃત્તિ આદરી શકે નહીં અને આદરે તો ઘણુજ થોડા પ્રમાણુમાં અને કેટલીક જાતની પ્રવૃત્તિ તો જીવનનાં આધાર માટે દરેકને ખાસ અગત્યની હોય, તો ત્યાં પણુ કાનની વહેંચણી થાય તો ઠીક અને તેથીજ સ્ત્રી પુરૂષ સ્થૂલ રૂપમા જોડાય છે.

લગ્નનું ઉંડું સ્વરૂપ સ્ત્રીને મિત્ર તરીકે સ્વીકારવાનું છે. મનુષ્ય એકલો હોય તો, તે ઘણો વખત સુખ અને દુઃખનો બોજો ઉઠાવી શકતો નથી જેમકે માંદગી ઇત્યાદિ, અથવા સુખના વખતમાં, અર્થલાભ વિગેરે અને તે વખતે અને ખાસ કરીને દુઃખના વખતમાં, મિત્ર તરીકેનું કામ સ્ત્રી સારે છે. ટુંકમાં સ્ત્રીમાં મિત્ર કરતાં વધારે હું કાંઇ પણ જોવા જેવું હોય તેમ માનતો નથી. મિત્રને જેટલા પ્રેમથી, જેટલી સેવાથી અને જેટલા માનથી બોલાવીએ છીએ તેટલુંજ પત્નીને આપવું ઘટે છે.

એ વાત સત્ય છે કે કુદરતજ આપણુને વિષયનો ભોગ શિખવે છે. પરન્તુ વિષયનો ભોગ, ફક્ત સુખ ભોગવવા માટે નહી-પરન્તુ જેમ કોઈ કીર્તિ અથવા અમર નામ મેળવવા માટે તરવારથી યુદ્ધમા લડતો હોય અને પરમાર્થિક જોસ્સાથી સ્વાર્થ ભોગ આપતો હોય તેમ વિષય સેવનમાં, પ્રજોત્પત્તિ કરી અમર નામ કરવાની ઉચ્ચ લાલસા હોવી જોઇએ અને તે માટે વીર્યરૂપી બન્ને વ્યક્તિએ ઉચ્ચ સ્વાર્થ ભોગ આપવો ઘટે છે. વિષય સેવન, રતિસુખ સ્વાદ માટે નથી પરન્તુ Landablo ambition તૃપ્ત કરવા માટે છે અને તે માટેજ વીર્યનો ભોગ આપવો ઘટે છે.

હવે જો બદ્ધ વીર્યવાન્ ત્રીશ વર્ષનો યુવક હોયતો તેને બદ્ધ વીર્યવતી વીશ વર્ષની પત્ની સાથે, ત્રણ વખત ભોગ કરવાથી સંતાન પ્રાપ્તિ થાય છે. કારણકે આ ઉમ્મરે બન્નેના વીર્ય ઘણાં તાકાતવાન્ અને ઉમદા વાતાવરણવાળાં સોહીમાથી નિકળેલાં હોય છે અને તેથી સંતાન પણુ એક દિવ્ય વીર બચ્ચું જન્મ ધારણુ કરે છે. એવું દૃષ્ટાન્ત સિંહ છે. સિંહ ફક્ત સિંહણુ સાથે વર્ષમાં એકજ વખત ભોગ ભોગવે છે અને સંતાનને જન્મ આપે છે.

વારંવાર સ્ત્રી સેવનથી અને તે પણુ અપરિપકવ દશામા સેવવાથી, ઘણો ભોગ આપવો પડે છે. કારણુ કે એક વખત ભોગ ભોગવવાથી

એક પણ ખોરાક ખાવાથી જેટલી તાકાત મળી હોય તે હોમાઇ જાય છે. અનેક વ્યાધિઓ જેવીકે, ચાંદી, પરમીઓ ઇત્યાદિ ઉત્પન્ન થાય છે; યાદશક્તિ અને મગજ શક્તિ ઘટે છે અને આયુષ્ય ટુંકું થાય છે.

બ્રહ્મચર્યના સેવન માટે સાત્વિક અને શુદ્ધ ખોરાકની જરૂર છે. ઉચ્ચ સંસ્કાર તથા કેળવણી, સ્ત્રીનો અસંગ, એકાન્તનો અભાવ, એ ખાસ સાધવા માટે પ્રયત્ન કરવો જોઇએ. ઉપરાંત વિષય વાસના ઉશ્કેરે એવા વાંચન, તથા શ્રાવ્ય અથવા દશ્ય નાટક અથવા સીનેમાનું સેવન પણ અયોગ્ય છે. માનસિક સંયમની ટેવ એ બ્રહ્મચર્યનું હૃદય છે. થોડી ઉંઘ અને શારીરિક વ્યાયામ અને ખોરાક એ સાધક ઉપાયો છે.

બ્રહ્મચર્ય સ્વરૂપ વર્ણન.

ટુંકમાં હવે આપણા શાસ્ત્રોમાં બ્રહ્મચર્યનું સ્વરૂપ શું આપ્યું છે તે જણાવીશ.

स्मरणं कीर्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्यभाषणम् ।
संकल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिवृत्तिरेव च ॥
एतन्मैथुनमष्टाङ्ग प्रवदन्ति मनीषिणः ।
विपरीतं ब्रह्मचर्यमेतदेवाष्टलक्षणम् ॥ એટલે

પૂર્વે વિષય સ્મરણ, વિષય સ્તુતિ, (શ્રાવ્ય, અને વાચ્ય) વિષયવિહાર, વિષય પ્રેક્ષણ (ચિત્રમાં, નાટકમાં સીનેમામાં, અને સંસારમાં), વિષયવાદ, વિષય વિચારો, વિષય ભોગના નિશ્ચયો, વિષયમાં પ્રવૃત્તિઓ, "એ આઠ પ્રકારનું મૈથુન છે અને એનાથી એ આઠમાંથી વિરત બનવું એનું નામ બ્રહ્મચર્ય છે. એટલે બ્રહ્મચર્ય કોઇ બાહ્ય વસ્તુ નથી કે જે આપણી પાસે નથી અને મેળવવા જાણી છે પરન્તુ આપણી પાસે એ શક્તિ રહેલી છે અને તેથી બ્રહ્મચર્યની વ્યાખ્યા નકારમાં રાખેલી છે. એમાં ઉપાયનો પણ સમાવેશ થાય છે અથવા આપણા મોટા શાસ્ત્રમાં પણ "બ્રહ્મચર્ય પાળનારને પાંચ અતિચાર નડે છે એમ બતાવ્યું" છે.

स्त्रीरागकथाश्रवणतन्मनोहराङ्गनिरीक्षणपूर्वरतानुस्मरणवृष्येष्टरसस्वशरीरसंस्कारत्यागाः पञ्च ।

અને એ પાંચ અતિચાર સ્ત્રીમાં મોહ ઉત્પન્ન કરે એવી કથાઓનું શ્રવણ, તેના સુંદરાંગોપાંગનું નિરીક્ષણ, પૂર્વે ભોગવેલા રતિ સુખનું સ્મરણ, વિષયપોષક રસનું સેવન, અને શરીરને મોહથી શણગારવું એ પાંચ જાતની ક્રિયામાંથી વિરક્ત થવાથી બ્રહ્મચર્યની ભાવના સ્થિર થાય છે (तत्त्वार्थे भावनाः पञ्च पञ्च)

ઉપરોક્તિથી જણાશે કે આપણા શાસ્ત્રોમાં પણ બ્રહ્મચર્યને ઘણુંજ અગત્યનું પદ આપેલું છે. એ શારીરિક, માનસિક અને અધ્યાત્મિક ત્રણે બાબતોની મોટી સિદ્ધિ માટે ખાસ અગત્યનું છે. વિદ્યાર્થીઓમાં ખાસ એની આવશ્યક્તા હોવી જોઇએ કારણકે બ્રહ્મચર્યના પ્રભાવથીજ, સ્મરણ શક્તિ સતેજ અને ચિરકાલી રહે છે, બુદ્ધિ ચપળ બને છે અને લાંબા કાળ સુધી વાંચન અને મનન કરવાં છતાં મગજને થાક લાગતો નથી તેમજ ચ્હેરા ઉપર તેજ અને શરીરમાં કાન્તિ વધે છે.

D. B.

माशूकने एक प्रश्न !

પીધી શરાબી પ્રેમથી ગાફિલ ઘેલો હું બન્યો !
માશુક ! ત્હારી યારીમાં-બદનામ બાકી શું રહ્યો ?
જાહોજલાલી છોડીને-મુશ્કિલ ! મ્હોબ્બત તો કરી !
તુજ વસ્લ ઇન્તેઝારીમાં-મુશિબત બાકી શું રહી ?
પ્રણય પંથે પરવરી પરિપૂર્ણ પાગલ તો બન્યો !
માશુક ! મ્હોબત પંજરે-બિસ્મીલ બાકી શું રહ્યો ?
આરામ સઘળો આવરી ! દીલ દર્દ તો વ્હોર્યું સહી !
માશુક ! મશિ લા માનવી વિવેક ભૂલ્યો શું કહી ?
તસ્વીર લીધી દસ્તમાં તુજ પેરમાં મસ્તક ધરી;
માશુક ! મગરા તુજને સદી સહાદતે બાકી રહી ?
કંગીપણું રે દાખની બે રહમ દિલ રહેતું નથી;
પરોક્ષ નૂર પરખાવે છે પણ નજરો થાય કેમ નહિ ? !

સ્નેહરાગી.

જનોઈવાળા જૈનોને દિવ્ય સંદેશો।

પ્રિય ભ્રાતૃગણ,

આપણા પ્રાચીન શાસ્ત્રોમાં યજ્ઞોપવિત (જનોઇ) રાખવાનું કહેલું છે દાખલા તરીકે
विशिखोव्युपवितस्य यत्करोति न तत्कृतम्॥
ભાવાર્થ=ચોટલી તથા જનોઇ વગરનો પુરૂષ જે કંઇ ધર્મ કાર્ય કરે છે ને કર્યું ના કર્યું બરાબર છે. જે ઉપરથી જનોઇ અવશ્ય જોઇએ, એમ માલમ પડે છે, તે છતાં આપણા બંધુઓ અજ્ઞાનને વશ થઇ જનોઇ પોતે રાખતા નથી, તેમજ તેમના બાળકને પણ પહેરાવતા નથી. જેથી ધર્મભ્રષ્ટ રહી અનેક પાપકાર્યો કરી અધોલોકને પ્રાપ્ત થાય છે. માટે તેવાઓને ઉપદેશ આપી સુધારી તે પ્રથા ચાલુ કરવાના ઉદ્દેશે અને મુખ્યત્વે નીચેની બાબતોનો વિચાર કરવા આપણી જનોઇ સંસ્કારિત પુરૂષોની એક મીટીંગ ભરવી જોઇએ.

૧ આપણા બંધુઓએ વર્તમાન કાળમાં શા કારણથી જનોઇ પહેરવી છોડી દીધી છે?

૨ વર્તમાન કાળમાં જૈન પુરૂષો તેમજ તેમનાં સંતાનોનું મન જૈન ધર્મનાં સુત્રો પર શા કારણથી ચોંટતું નથી?

૩. આપણી સમાજ શા કારણથી મિથ્યાત્વી દેવોને પૂજવા લાગી છે?

૪. વ્યવહારિક ક્રિયાઓ જેવી કે સોળ સંસ્કાર, લગ્ન ક્રિયા, ગર્ભાધાનથી વાસ્તુ સુધીની ક્રિયાઓ વિગેરે શા કારણથી જૈન વિધિથી થતાં નથી?

—ઉપરોક્ત પ્રકરણનો વિચાર કરી તેનું ખરું કારણ શોધી કાઢી તેને સુધારવા માટેજ એકઠા થવાનું છે. કારણ કે—આપણે આજ સુધી વાટ જોઇ બેસી રહ્યા કે—આપણી જ્ઞાતિ, જૈન પત્રો, જૈન કોન્ફરન્સો, સભાઓ, મંડળો, પાઠશાળાઓ અને આપણી પાછળ નાણાંના લોભથી લાગ્યા ને પડ્યા રહેનારા ભટ્ટારકો, કંઇક કરશે, પણ લખ્યા સિવાય રહેવાતું નથી, કે તેમાંથી કોઇએ પણ આ બાબત માટે કંઇ પણ કર્યું હોય એમ જણાતું નથી, માટે હવે આપ મુવા વિના સ્વર્ગે જવાતું નથી, એ કહેવત અનુસાર સંસ્કારિત યુવાન વર્ગેજ બહાર આવી જ્ઞાતિના સ્વયંસેવકો બની એવું કાર્ય કરી બતાવવું કે જે દેખી દરેકના મુખમાંથી ધન્ય ધન્ય શબ્દ સાંભળવામાં આવે. આ કામમાં નાણાંની જરૂર નથી, પણ મી૦ વાડીલાલ (એક સ્થાનકવાસી ધર્મબંધુ) જેવા દૃઢ લાગણીવાળા સ્વયંસેવકોનીજ જરૂર છે, અને તેમાં મુખ્યત્વે જેણે જનોઇ ધારણ કરી છે, તેમણે પોતાનાં વ્રતોનો અમલ કરવા જલ્દી બહાર પડવું જોઇએ—કે જે વ્રતો જનોઇ પહેરતી વખતે લેવાય છે કે જૈન ધર્મનો ફેલાવો કરવો, પોતે શુદ્ધ બની બીજાને પ્રાયશ્ચિત આપી શુદ્ધ કરવા, ઉત્કૃષ્ટ આચાર પાળવો, જૈન ધર્મનાં સુત્રો પર શ્રદ્ધાન કરવું, વિગેરે વ્રતો લેવાય છે, તો તે વ્રતનો અમલ કરવાનો પ્રસંગ આવી લાગ્યો છે, તો જૈન જનોઇવાળા પુરૂષો તે જવા દેશે નહિ અને પોતાનાં વ્રત દુષિત કરશે નહિ, એમ સંપૂર્ણ આશા છે. આવા કામમાં જાતિભોગનીજ જરૂર હોય છે ને તે પણ જેનાથી ન આપાય તેને ખરો જૈન સમજવો નહિ, પણ કોઇ ઢોંગી ધાલુજ જાણવો. છેવટે દરેક બંધુ મિટિંગમાં ભાગ લેશે એમ આશા છે, તો હવે મિટિંગ ક્યાં ને કઇ રીતિએ ભરવી તે વિષે દરેક સંસ્કારિત બંધુ પોતાના વિચારો નીચેને ઠેકાણે જણાવશે તો ઉપકાર થશે. બધાના ઉત્તર આવી ગયા પછી ચોક્કસ સ્થળ અને રીતિ નક્કી કરી આ પત્ર દ્વારા દરેકને જણાવવામાં આવશે તો દરેક જૈન બંધુ આવા પારમાર્થિક કાર્ય માટે એક પૈસાનું પોસ્ટ કાર્ડ વાપરશે એમ આ મંડળી આશા રાખે છે. ઇત્યલમ્

લી૦ મંત્રી, કાણીસા મિત્રમંડળી,
મુ૦ કાણીસા (ખંભાત)

'સામાજિક બંધારણ અને તેની મુખ્ય ફરજો.'

Society is indeed a contract. It is a partnership in all science, a partnership in all arts; a partnership in every virtue and in all perfection. *Burke.*

'Caste is the great power and secret of Hinduism.'

M. K. Gandhi.

રાજકીય બાબતોમાં રાજ્ય જેમ પ્રજા સંરક્ષાર્થે પૂરતું ધ્યાન આપે છે તે પ્રમાણે હરેક પ્રકારની સામાજિક-જ્ઞાતિમંડળને લગતી બાબતો (સમાજની હરેક વ્યક્તિની માનસિક અને આત્મિક ઉન્નતિ) પર લક્ષ આપવું એ હરેક સમાજની ફરજ છે.

રાજકીય તંત્ર (Political Government) અને **સામાજિક તંત્ર** (Social construction)નું બંધારણ અને કાર્યક્રમ લગભગ એક સરખાંજ છે, ફક્ત બન્નેના વલણ યા તો પ્રવૃત્તિઓમાંજ તફાવત છે. રાજ્યતંત્ર પ્રજાનું હરેક પ્રકારના જાનમાલને લગતા બાહ્ય ઉપદ્રવોથી સંરક્ષણ કરે છે, જ્યારે સામાજિક તંત્ર માનસિક અને આત્મિક ઉન્નતિ કરવા તરફ વધુ લક્ષ આપે છે. સદ્વર્તનનો ઘણો ખરો આધાર સમાજનાજ ઉપર રહે છે. જેવું સમાજનું બંધારણ અને તેના કાર્યકર્તાઓ, તેવા વિચારશીલ અને વર્તનવાળા તે સમાજના સંબંધીઓ બને છે. સમાજથી વિરક્ત ઘણાજ થોડા પુરુષ રહે છે. હરેક વ્યક્તિ થોડેઘણે અંશે પણ કોઇને કોઇ સમાજ (Society)ને અનુસરે છે. આથી સામાજિક બંધારણ જેમ જેમ ઉચ્ચતર હોય તેમ તેમ તેના સંબંધીઓ પણ ઉચ્ચ વિચારવાન્ અને સદ્ગુણશીલ હોય એ સ્વાભાવિક છે. સામાજિક અને રાજ્યકીય બંધારણોમાં સામાજિક બંધારણ (Social constitution) રાજ્યકીય બંધારણ કરતાં પ્રથમ બંધાયલું છે એમ કેટલાક પાશ્ચિમાત્ય વિદ્વાનોનું માનવું છે અને તે વ્યાજબી લાગે છે. તેઓનું માનવું છે કે મનુષ્યો સૌથી પહેલાં તદ્દન જંગલી અવસ્થામાં હતાં અને વિચાર અને વર્તનમાં સરલ સ્વભાવી હતાં. પોતાનો જીવન નિર્વાહ આમતેમ રખડી ફલ ફૂલાદિ વનસ્પતિ ખાઇ કરતાં હતાં, પહેરવાને માટે ઝાડની છાલો શરીરે વિંટતા યા તો શરીર પર જુદા જુદા પ્રકારના રંગો ચોપડતા હતા. તેઓને રહેવાનાં સ્થળ સ્થાયિ ન હતાં. હાલ આપણે જેમ ભરવાડ જાતિને પોતાનાં ઘેટાં બકરાં સાથે આમતેમ ફરતી જોઇએ છીએ તેના જેવી સ્થિતિમાં કાંઇક તેઓ હતાં. પછી કાળે કરી એક પછી એક એમ ઘણા મનુષ્યો એક બીજાના ગાઢા સંબંધમાં જેમ જેમ આવતા ગયા તેમ તેમ તેઓએ પોતાની સાથેનાં ઢોર વિગેરે સાથે એકજ સ્થળે સ્થાયિ રહેવાનું પસંદ કર્યું. તેમાં જેને જે ફાવે તે સ્થળે તે રહ્યા અને તે જગ્યા તેની પોતાની માલકીની થઇ પડી. આ પછી એકબીજાના સહવાસમાં રહેવાથી માંહોમાંહેના વ્યવહાર માટે Mutual transaction તેમને જે યોગ્ય લાગ્યા તેવા નિયમો ઘડ્યા. આ પ્રમાણે બધા એકઠા મળી જે એકત્ર સમૂહ થયો તેને સમાજ Society નામથી ઓળખવા લાગ્યા. જેમ જેમ એક બીજાના સહવાસમાં તેઓ રહેતા ગયા તેમ તેમ સ્પર્ધા-ચડસા ચડસી અને અદેખાઇનાં મૂળ ફૂટવા લાગ્યાં અને આથી કરી 'બળીયાના બે ભાગ' (Might is Rigut) 'આ મારે તેની તરવાર' જેવી સ્થિતિ જ્યારે ઉપજી પડી અને જોરાવર કમતાકાતવાનને નાહક હેરાન કરવા લાગ્યા ત્યારે તેમાંના કેટલાકે એકઠા થઇ કોઇને આવી રીતે બળવાન પુરુષથી હેરાનગતિ ન પહોંચે અને

દરરોજના આજીવિકાના વેપાર ધંધાનું, ધાર્મિક ક્રિયાઓનું અને જાનમાલનું સંરક્ષણ થાય તે માટે તેમાંના એક યોગ્ય માણસને પસંદ કરી તેમના પર રાજ્ય કરવા 'રાજા' નીમ્યો. રાજાને મદદ કરવા રાજ્ય સભા વિગેરે મંડળો સ્થપાયાં અને આમ ધીમે ધીમે સામાજીક તેમજ રાજ્યકીય તંત્રો દિવસે દિવસે પોતાની હાજતો અને સંયોગો અનુસાર સુધારો વધારો કરતાં ગયાં અને ઘડાતાં ઘડાતાં હાલની સ્થિતિએ પહોંચ્યાં છે. આની સાથે એક બીજાના વિચારોની પણ આપ લે થઇ અને આ વિચારોમાં દિન પ્રતિદિન બીજા નવીન વિચારોનો ઉમેરો થતો જવાથી તે સઘળા વિચાર અને સિદ્ધાંતસમૂહમાંથી **સાહિત્ય** (Loteratnre) અને **તત્વજ્ઞાન** (Philosophy) શાસ્ત્રો જન્મ પામ્યાં. પશ્ચિમના લોકો તત્વજ્ઞાન અને ધર્મ એમ બે જુદા વિષયો માને છે જ્યારે આપણે ભારતવાસીઓ પ્રથમથીજ તે બન્નેને એક વિષય તરીકે ગણીએ છીએ.

પહેલાંના વખતમાં હિંદુસ્તાનમાં સામાજીક બાંધારણે હિંદુઓનું ઘણું ધ્યાન ખેંચ્યું હતું અને તેને માટે મનુસ્મૃતિ, યાજ્ઞવલ્કયસ્મૃતિ, માનવધર્મ સૂત્રો વિગેરે મોટા મોટા ગ્રંથો રચાયા છે.

હિંદુ ધર્મની કર્મ કાંડ (ક્રિયા ભાગ) ની બાબતો સ્મૃતિમાંથી મળી આવે છે અને તે બાબતોમાં વર્ણાશ્રમે જ્ઞાતિ ભેદ મુખ્ય ભાગ ભજવે છે. હિંદુ સંસારના નામથી હાલ આપણે જેને ઓળખીએ છીએ તે હિંદુ સંસારના ચાર વર્ણમા ભાગ પડયા. (૧) બ્રાહ્મણ (૨) ક્ષત્રિય (૩) વૈશ્ય (૪) શુદ્ર. આમાંના પહેલા ત્રણ દ્વિજ (બે જન્મી) નામથી ઓળખાતા હતાં. આ ચારમાં બ્રાહ્મણ જાતિને અતિ ઉચ્ચ પદ આપવામાં આવ્યું અને તેની સાથે કેટલીક બાબતોમાં તેમને ખાસ હકો (Special privileges) પણ આપવામાં આવ્યા. વર્ણાશ્રમમાં રખાયલા ભિન્નભાવનું પરિણામ આખરે એ આવ્યું કે તે વર્ણાશ્રમના ભિન્ન ભાવને નષ્ટ પ્રાય કરવા ઇ. સ. પૂર્વે ૪ થી સદીમાં મહાત્મા ગૌતમ બુદ્ધ આગળ પડયો અને તેમના ઉપદેશ વચનોમાં કલેશના મૂળરૂપ આવા ભિન્ન ભિન્ન વાડાઓનો નાશ કરવા બોધ કર્યો, છતાંએ તે વર્ણાશ્રમ ભેદો આજસુધી જળવાઇ રહ્યા છે. આ જુદા જુદા વર્ણોની એક એક સમાજ યા જ્ઞાતિ (Society) એમ મુખ્ય ચાર સમાન વિભાગ પડયા અને વર્ણ શંકરને લીધે અનુલોમ અને પ્રતિલોમ (intermarriges between higher and lower caste) પદ્ધતિ અનુસાર બીજા અનેક હલકા પ્રકારના જ્ઞાતિભેદ પડયા, પણ આ દરેક જાતિને લગતા અમુક નિયમો હતા જે નિયમો કાળે કરી ફરજ્યાત અને રીવાજ રૂપે થઇ પડયા તેની ઉંડી જડો હજુ પણ હિંદુસ્તાનમાં સર્વ સ્થળે જોવામાં આવે છે, આ નિયમોમાં મહાભારત જેવાં શાસ્ત્ર પણ દેશ, કાલ, ભાવાનુસાર સુધારો વધારો કરવા ઉપદેશે છે, પણ સ્વાર્થ યા અજ્ઞાન તેમ કરતાં અટકાવે છે

આ વર્ણાશ્રમના નિયમો આપણે જૈનો પણ પાળીએ છીએ. અને 'વટલાયું' 'અભડાયું' કહી અત્યંત ક્રોધી બની બાર ગાઉ દૂર ચાલ્યા જઇએ છીએ બ્રાહ્મણને (ભલે તે ગમે તેટલો ગંદો, દારૂડીયો કે માંસાહારી હો પણ તેને) આપણે પણ ઉચ્ચ ગણીએ છીએ અને ખુશી રીતે તેનું ગયેલું જમીએ છીએ, અને તેના વાસણમા તેનાજ ભરેલાનું પાણી પીવામાં બિલકુલ બાધ ગણતા નથી. આવા પ્રકારની બાહ્યક્રિયાઓએ હાલ આપણું એટલું બધું ધ્યાન ખેંચ્યું છે કે ક્રિયાકાંડ (શાસ્ત્રોક્ત) અંધ શ્રદ્ધાથી પણ પામવો તેજ મોક્ષદાર છે એમ મનાયું છે. આ બધું અજ્ઞાનજ જણાય છે, જેનાથી આભડછેટ વિષે બીવાનું છે તે જન્મ માત્રથી ઉંચ નીચ હોય તેનાથી નથી, પણ તે માંસાહારી, દુરાચારી યા મલીન હોય કે જેને જોતાં કે જે સંબંધી વિચાર કરતાં પણ આપણને દ્વેષ દુર્ગંછા અને મલીન વિચાર થઇ આવે તે છે. ભલે પછી તે સ્વર્ગવાસી દેવ

હો કે ઉચ્ચમાં ઉચ્ચ બ્રાહ્મણ હો. ખાલી અંધશ્રદ્ધાને ન માનતાં કાર્યનું કારણ જ્યાં શક્ય છે ત્યાં તે અવશ્ય જાણવુંજ જોઇએ.

આજકાલ હિંદમાં આ મુખ્ય ચાર વર્ણોમાં પણ બીજા અનેક વિશેષ ભેદો પડયા છે અને પડતા જાય છે તેનું મુખ્ય કારણ સ્વાર્થ અને કુસંપ છે અને સમાજ યા જ્ઞાતિ એટલે શું તેનો અર્થ સ્પષ્ટ સમજાયો નથી. દાખલા તરીકે જૈન જાતિને લઇએ તો તેના મુખ્ય ત્રણ ભેદ-દિગંબર, શ્વેતાંબર અને સ્થાનકવાસી. તેમાં દિગંબરમાં હુમડ, મેવાડા, નરસિંહપુરા, પંચમ, ચતુર્થ ઇત્યાદિ અનેક ભેદો છે. બીજા બે ભેદોમાં પણ આવીજ શોચનીય સ્થિતિ છે. આ વિભાગો કેટલેક સ્થળે તો એટલા નાના બન્યા છે કે તે વિભાગની ગૃહ સંખ્યા ગણીએ તો ભાગ્યેજ વીસ પચીસ પણ થાય અને જો તટલી થાય તો તે ફક્ત બે ત્રણ કુટુંબનીજ એટલે કે શાસ્ત્રોક્ત વચનોનું ઉલ્લંઘન કરી નજીકની સગાઇમાં લગ્ન કરવા વખત આવે તેવી છે. ધર્મ એકજ હોવા છતાં, જ્ઞાતિ બંધુઓની સંખ્યા નાની હોવા છતાં, ખાવા પીવાનો પણ વ્હેવાર હોવા છતાં, એક સાથે રહેવા છતાં, આવો ભિન્નભાવ જોવામાં આવે એ અતિ શોચનીય છે. આખી દુનિયામાં હિંદજ એવો દેશ છે કે જ્યાં ધર્મના અનેક ફાંટાઓ અને ભિન્ન ભિન્ન જ્ઞાતિઓ અસલથી ચાલી આવે છે.

આવાં જ્ઞાતિ બંધારણો (Caste System) એક દષ્ટિએ જોતાં હિંદુસ્તાનને ઘણાંજ આશીર્વાદ રૂપ છે. જ્યાં તેત્રીસ કરોડ જેટલી બહોળી વસ્તી છે, તેવા વિશાલ પ્રદેશમાં તેના નાના નાના યોગ્ય વિભાગ પાડી તે દરેક વિભાગ પર દેખરેખ રાખવા એક ઉપરી નીમ્યો હોય તો કામ ઘણું સહેલું થઇ પડે, એ હાલની બ્રીટીશ રાજ્યબંધારણની પદ્ધતિથી સત્ય જણાય છે.

આજ પ્રમાણે ધર્મના પાયા પર પડેલા જ્ઞાતિ વિભાગો પણ હિંદુસ્તાન જેવા બહોલા પ્રદેશમાં નાનાં નાનાં સંસ્થાનો સમાન હોઇ તે સાથે સંબંધ ધરાવતા વર્ગને તે આશીર્વાદ રૂપ હોય એ સ્વાભાવિક છે, પણ તે વિભાગો ત્યારેજ આશીર્વાદ રૂપ કહેવાય કે જ્યારે તે પક્ષાપક્ષીનું, એક બીજા ભાગ વચ્ચે રાગ દ્વેષ કરવાનું જરાએ કારણ થઇ ન પડે, પણ પોતે પોતાના જથ્થાનું મધ્યસ્થપણે સત્યની ઉન્નતિ કરવા ખાતરજ બિનસ્વાર્થેજ કાર્ય કરે. કુતરાં ઉશ્કેરી માંહોમાંહેની લડાઇમાં બન્ને પક્ષમાં કોણ વિજય મેળવે છે તે ટગર ટગર જોયા કરી આનંદ માનવો તે અધોગતિને પમાડનાર હલકા પ્રકારનો આનંદ છે. આવા પ્રકારનાં પક્ષાપક્ષી જ્ઞાતિધર્મના ઉપદેશકો ન કરે અને પોતાના આત્મવીર્યને અને જ્ઞાનને સન્માર્ગે દોરી પોતાના જ્ઞાતિ બંધુઓની મધ્યસ્થપણે આત્મોન્નતિ કરવા પ્રયત્ન કરી આનંદ માને તો તે સહર્ષ આદરણીય છે અને આમ થાય તોજ—રાજ્યદ્વારી અને સામાજીક બાબતો એક બીજાને અડચણ કર્યા શિવાય પોતપોતાના રાહદારી માર્ગે ચાલ્યા જાય, દરેક બાગલાઓ સત્પ્રેમ સાંકલથી એક બીજા સાથે જોડાય, સર્વાત્મબંધુભાવ સર્વત્ર વર્તે અને રૂપ વધી આર્યાવર્તની પુનઃ જાહોજલાલી અસ્તિત્વમાં આવવાને કોઇ શંકા રહે નહિ.

આ દષ્ટિએ-આ તટસ્થ— મધ્યસ્થ દષ્ટિએ-જ્ઞાતિ વિભાગો હિંદને આશીર્વાદ રૂપ છે, પણ ધર્મના ઝગડા અને રાગદ્વેષ કરવાનાં જો સાધનો થાય તો તે તિરસ્કારને પાત્ર છે. આવી મધ્યસ્થ દષ્ટિએ વર્તવા છતાં કોઇ વાંધો ઉઠાવે કે 'જ્ઞાતિ બંધનો રાજ્યદ્વારી બાબતોમાં અડચણ રૂપ છે' તો તે વાંધો ઉઠાવનારને આપણે સ્પષ્ટપણે સમજાવી શકીશું કે આવી પ્રકારના જ્ઞાતિ સમાજો રાજદ્વારી ચલવલને કોઇ પણ પ્રકારે નિવારતાં નથી એટલુંજ નહિ પણ ઉલ્ટાં

રીતે તે તેના હેતુઓ સત્વરે પાર પાડવા સાહાય્ય કરે છે. રાજ્યદ્વારી બાબતો સામાજીક બાબતોનો પ્રતિપક્ષી નથી.–તે બન્ને બાબતો એક બીજાથી તદ્દન ભિન્ન નથી. બન્ને પક્ષે એક બીજા સાથે હળી મળી હાથમાં હાથ મેળવી કામ કરવાનું છે. બન્ને પક્ષે એક બીજા સાથેનો સંબંધ સમજવો જોઇએ કે જેથી નવા સુધારક સમાજો અને ધર્મ સમાજો ફૂટતા અટકે.

જ્ઞાતિ સમાજે પોતાના બંધુઓ પ્રતિ જે વિષે ફરજો અદા કરવાની છે તે બાબતો નીચે પ્રમાણે છે.–

(૧) લગ્ન (૨) ધર્મ (૩) કેળવણી (૪) આર્થિક સ્થિતિ.

(૧) લગ્ન–લગ્ન વિષે જે કરવાનું છે તે આ પ્રમાણે છે.

(અ) **બાલવિવાહ** યતા અટકાવવા.

(બ) વર કન્યાની યોગ્ય ઉમરે પર ધ્યાન આપી કજોડાં થતાં દુર કરવા.

(ક) કન્યાવિક્રયનો પ્રતિબંધ કરવો.

આમાંની પહેલી બે બાબતો પર જો પૂરતું લક્ષ આપવામાં આવે તો બાલવિધવા થવાનો સંભવ ઘણોજ થોડો રહે એટલુંજ નહિ પણ વર અને કન્યા બન્ને પુખ્ત ઉંમરે પહોંચતા સુધીમાં કોઇપણ પ્રકારની અડચણ સિવાય વર દુનિયાદારીનું વ્યવહારિક જ્ઞાન અને કન્યા ગૃહકાર્યનું જ્ઞાન સંપાદન કરવા લાયક બને અને બન્ને લગ્ન પછી સુખી બને. લગ્ન મોડું કરવું (યોગ્ય ઉમરે) એટલુંજ નહિ પણ વિવાહ પણ મોડોજ થયો જોઇએ કારણકે વિવાહ થાય ત્યારથીજ બન્નેની દૃષ્ટિમાં વિકાર થવા પામે છે, મન વિક્ષિપ્ત રહે છે અને પોતાનું આરંભેલું કાર્ય જોઇએ તેવું ફત્તેહમંદ નીવડતું નથી. શરીરને હાનિ કરવાને અને કાર્યમાં ખલેલ પહોંચાડવાને વિવાહજ બસ છે. વિવાહ થવાની આગળથીજ તેઓની જીવન વૃત્તિમાં ફેરફાર થવા માંડે છે અને લગ્ન થયે (બાલ વયે) તેની માઠી સ્થિતિની ડીગ્રીમાં વધારો થાય છે. બાલવિવાહનું એક માઠું પરિણામ એ છે કે ઘણા અભ્યાસ કરતાં હોંશીયાર વિદ્યાર્થીઓને પણ તેમનો અભ્યાસ છોડી દેવો પડે છે.

કન્યાવિક્રય સંબંધીની વાત હાલ ઘણાનું ધ્યાન ખેંચી રહી છે પણ તે વાત કન્યાવિક્રય કરનારાના કાને વહેલી પહોંચે અને તેમના હૃદયની છુપી લોભવૃત્તિની–સ્વાર્થની–કુંચીનો વહેલો નાશ કરવામાં આવે તોજ તે માટે કરેલા સર્વ પ્રયત્નો સફલ છે.

કન્યા વિક્રયથી થતી હાનિઃ—

(૧) કજોડાં–જેવાંકે; વૃદ્ધ અને બાલકુમારિકા, આથી બાલ વિધવાઓની વૃદ્ધિ થાય છે.

(૨) યોગ્ય ઉંમરવાળા સાથે લગ્ન થાય તોપણ બન્ને વચ્ચે સત્પ્રેમની લાગણી રહેવા થોડો સંભવ છે.

(૩) કન્યાવિક્રયને લીધે કન્યાને ગમે તેવા કુલમાં, અપંગ સાથે કોઇ જ્ઞાતિમાં અને દૂર દેશમાં અયોગ્ય વર સાથે પરણાવવામાં આવે છે. આથી કન્યાને દુઃખ પડે છે અને સત્પ્રેમની લાગણી રહેવા થોડો સંભવ છે.

(૪) ગમેતેવો લાયક વર હોય છતાં તે કન્યાવિક્રયના લોભીની વૃત્તિને નહિ સંતોષી શકવાથી પરણી શકતો નથી, એટલે કે જ્ઞાતિના મધ્યમ તેમજ ગરીબ સ્થિતિના લાયક વર પણ કુંવારા રહે છે. કન્યાવિક્રયની તેમજ વરની પહેરામણીની (Dowery) હદ બહારની રીત પણ તેટલીજ નિંદનીય છે. પહેરામણીને લીધે ખેદકારક બનાવો હમણાં બે વર્ષપર બંગાળમાં બન્યા હતા.

(૨) ધર્મ–જ્ઞાતિ સમાજની બીજી અગત્યની બાબત ધર્મની દેખરેખ રાખવાની છે. ધર્મ એટલે વ્યક્તિએ કરવું જોઇએ તે સત્કાર્ય–ફરજ (Duty) જે સત્કાર્યથી મનુષ્ય જડ ચેતનનો સ્પષ્ટપણે તફાવત સમજી સૃષ્ટિના સમસ્ત પદાર્થો-

નું યથાર્થ-સ્વરૂપ સમજી જન્મ મરણના દુઃખથી સદાને માટે મુક્ત થાય. સદ્ધર્મનો ફેલાવો કરવા અને તેના ગુણ તત્ત્વોને યથાર્થ સમજાવવા સદ્‌ગુરૂઓની ખાસ જરૂર છે. અને આથી કરી જ્ઞાતિ સમાજે સદુપદેશકોની સંખ્યા વધારવા અને સદ્ધર્મનાં બીજ ઉંડા રોપવા બનતો પ્રયાસ કરવો જોઇએ.

પણ સદ્‌ગુરૂ કોને કહેવો એ એક મોટો પ્રશ્ન છે. છતાં તેનાં કેટલાંક બાહ્ય ચિન્હોથી તેને ઓળખી શકીયે. જેવાંકે:—નીતિવાન, સ્વાર્થત્યાગી, આધ્યાત્મિક તત્ત્વોનું ઉંચું જ્ઞાન ધરાવનાર, વિચારવાન, નમ્રસ્વભાવી કે જેનાં મીઠાં વચનો સાંભળવાથી હૃદયને શાંતિ મળે. જ્યાં સુધી સદ્‌ગુરૂઓ મળતા નથી ત્યાં સુધી સન્માર્ગનું ભાન થતું નથી, સન્માર્ગ સ્પષ્ટપણે સમજાતો નથી અને સત્ય સર્યું જાય છે. જ્યાં સુધી સ્વાર્થ ત્યાગી પુરૂષો સત્યને તારવાનેજ ખાતર (નહિ કે પોતાનું નામ જાહેર કરવા યાતો પક્ષાપક્ષી વધારવા) બહાર પડશે નહિ ત્યાં સુધી સદ્ધર્મનો ફેલાવો થશે નહિ; અને જન આપવા પ્રયત્ન કરવા જોઇએ. સદ્ધર્મની લાગણીઓ વંશપરંપરા ચાલી આવતી નથી માટે ધર્મ ગુરૂઓ પણ વંશપરંપરા ચાલ્યા આવવા ન જોઇએ; અને જો વંશપરંપરાનો રિવાજ કાયમ રાખવો હોય તો તે પદવીને યોગ્ય ગુણો તે પદવીએ આવનાર વ્યક્તિએ અવશ્ય ગ્રહણ કર્યા હોવા જોઇએ. આવી ઉચ્ચ પદવીએ આવનાર વ્યકિત તે પદવીને લાયક ગુણોથી યુક્ત છે કે કેમ આવો વિચાર કરવામાં પણ જે દોષ ગણે છે તેવા બ્હીકણ અણસમજુ જેને તેને સદ્‌ગુરૂ તરીકે પૂજી ધર્મનોજ નાશ કરવા કમ્મર કસે છે. બહેતર કે દુરાચરણી ગુરૂઓ કરતાં પોતેજ પોતાના ગુરૂ થઇ બેસવું. જે તર્યો નથી તે તારવાનો શું છે? જેની વર્તણુંક વિશે શંકા જાય, જે અનીતિમાન હોય અને તે સાક્ષાત્ સાબીત થયું હોય, ધર્મજ્ઞાનમાં અધુરો હોય તેવો સર્વથી વક્તા તરીકે ન પૂજાય તે માટે જ્ઞાતિ સમાજે બનતી કોશીશ કરવી. હાલમાં દિગંબર જૈન કોમમાં ધર્મોપદેશકોની સંખ્યા ઘણીજ ઓછી છે અને તેનું પરીણામ એ આવ્યું છે કે દક્ષિણ હિંદુસ્તાનમાં ઘણા જૈન ધર્મીઓ પરધર્મીઓ બની ગયા છે અને અન્ય મતાવલંબીઓ તરફથી ઘણી હેરાનગતિને પહોંચ્યા છે. તે શિવાય ગુજરાત તરફ જોઇએ તો ત્યાં પણ જોઇએ તેવો ધર્મનો જુસ્સો નથી એટલુંજ નહિ પણ ધર્મનાં મૂળ તત્ત્વોનું પણ ઘણાને ભાન પણ નથી; ફક્ત સમજે અણસમજે થોડી ઘણી બાહ્યક્રિયાઓ કરવામાં આવે છે.

દાં વળી જુના વિચારવાળા ઘરડીયાઓ અને ૧૫ હાલના કેળવાયલા જુવાન વર્ગ વચ્ચે જે ધર્મ સંબંધી મતભેદ જોવામાં આવે છે, તેનું કારણ તે ભિન્ન સંયોગોને યથાર્થ સમજી શકયા હોય એવા સદુપદેશકોની ખામી છે. હાલનો જમાનો બુદ્ધિવાદનો છે. જે વાકય સાધારણ બુદ્ધિ અને દૈનિક અનુભવ વિરૂદ્ધ ન થાય તેજ સત્ય માનવામાં આવે છે. આધ્યાત્મિક તત્ત્વવેત્તાઓના ગ્રંથોમાં ભારી તર્કશક્તિનોજ બહુધા ઉપયોગ

કર્યો હોય છે. આથી જ્ઞાતિ સમાજે પૂર્વ અને પશ્ચિમના બન્ને દેશોના તત્વજ્ઞાનનું સારું જ્ઞાન ધરાવતા હોય તેવા ઉપદેશકો મેળવવા અને તેમને ઉત્તેજન આપવા પ્રયત્ન કરવો. આને માટે સ્થાનિક પાઠશાળાઓજ સંતોષકારક કામ કરી શકતી નથી.

ધર્મનો પ્રચાર કરવા જ્યાં જ્યાં જુના વખતના પુસ્તકના ભંડાર હોય તે ખોલી તેમાંના પુસ્તકોને ઘણી સંભાળથી જાળવી રાખી છપાવવાં જોઇએ કેટલાક આવા ભંડારને ઉઘાડવા દેતા નથી અને તેમાંનાં પુસ્તકોને ઉધાઇને ખવરાવી ધર્મના કીમતી ગ્રંથોનો નાશ કરે છે. આ પુસ્તકોના પ્રસિદ્ધકર્તાઓએ પ્રસ્તાવનારા ગ્રંથની ઐતિહાસિક ઓળખાણ આપવા વધુ લક્ષ આપવું. આ પ્રમાણે ધર્મ પુસ્તકો સંબંધની શોધખોળ કરવાની પણ સમાજની ફરજ છે.

(૩) કેળવણી—જાતિની ઉન્નતિનો આધાર કેળવણી ઉપર છે. ગમે તે પ્રકારની (સત્) કેળવણી અપાય પણ દરેક સમયે તેનું દષ્ટિ બિંદુ તો એકજ હોય છે. તે દષ્ટિ બિંદુ માનસિક શક્તિની ખીલવણી છે. માનસિક ખીલવણી સત્સાધનોથી સંતોષકારક રીતે થાય તો આધ્યાત્મિક ઉન્નતિ પણ આપોઆપજ થાય, એ દેખીતું છે. કેળવણી આપવાના મુખ્ય હેતુઓ સ્વ અને પર કલ્યાણ છે. અને પર કલ્યાણમાં મુખ્ય સ્વધર્મ સેવા અને દેશ સેવા છે. આ સેવાનો જુસ્સો રગેરગમાં પ્રસરાવવા જ્ઞાતિ સમાજે બનતા પગલા લેવાં જોઇએ. પૈસો કમ મેળવવો એટલુંજ નહીં પણ પોતાની આજુબાજુ થતી દરેક પ્રકારની ચળવળમાં પણ વાકેફ થવું જોઇએ. કેળવણી ઉપર સદ્વર્તનનો પણ આધાર રહે છે. હિંદુસ્તાનમાં કેળવાયલા વર્ગનું પ્રમાણ બીજા દેશો સાથે સરખાવતાં ઘણુંજ થોડું ગણવામાં આવે છે.

કેટલાકનું માનવું છે કે આધુનિક કેળવણી લેવાથી વિદ્યાર્થીઓ સ્વચ્છંદી બને છે, ઉદ્ધત બને છે અને નાના મોટાની માન મર્યાદા રાખતા નથી. અને આ વાત વ્યાજબી છે એમ કબુલ કરીએ તો આમાં દોષ કોનો કહાડી શકાય? આમ બનવું કંઇક અંશે બીન કેળવાયલાઓનોજ. જો બધા કેળવાયલા હોય તો એક બીજાને પોતાના વિષે અભિમાન રાખવાનો કે ઉદ્ધત થવાનો પ્રસંગ પણ આવે નહિ. આવો પ્રશ્ન ફરી ઉભો ન થવા પામે માટે સદ્વર્તનવાળા, સાદા અને ઉચ્ચ વિચારવાળા નિશાળ અને કોલેજોમાં શિક્ષકો રોકવા જોઇએ.

વળી કેટલાકનુ માનવું છે કે બધી જાતના માણસો કેળવણી લેશે તો હલકા પ્રકારનો ધંધો પછી કોણ કરશે, તેઓ પોતાનો ધંધો છોડી દેશે અને તેઓ પોતે બીજાની તાબેદારી નહિ ઉઠાવે. આ પ્રશ્નનો ખુલાશો જો બધા કેળવાઇ જાય તો તરતજ થાય તેમ છે. કારણ કે જ્યારે બધાએ કેળવાયલા હશે ત્યારે કેળવણી સંબંધી પ્રશ્ન ન ઉઠતાં આર્થિક—પૈસા કમાવવા બાબતનો પ્રશ્ન ઉભો થશે અને જ્યારે પૈસા કમાવાનો સવાલ આગળ આવશે ત્યારે જે વસ્તુઓ પેદા કરવાને થોડા માણસો કામે લાગ્યા હશે અને જે વસ્તુઓની ઘણી મોટી માગણી હશે તે વસ્તુઓ પેદા કરવાને કેળવાયલા માણસો પણ કામે લાગશે એ સ્વાભાવિક છે કારણકે તે ધંધો કરવાથી વધારે કમાવાશે.— ભલે પછી ગમે તે પ્રકારનો તે ધંધો હોય. આટલુંજ નહિ પણ આમ થતાં હરિફાઇનો જુસ્સો વધશે અને તેથી કરી અમુક ધંધામાં ખાસ પ્રવીણ (Specialist) થવાના પ્રયત્ન કરવામાં આવશે. આવી રીતે ધીમે ધીમે દેશની આબાદી થશે.

કેટલાક જે પશ્ચિમની વિદ્યાનો દોષ કહાડે છે કે તે વિદ્યા ઉદ્ધત અને ધર્મભ્રષ્ટ કરે છે તેઓએ તેનો દોષ કહાડીનેજ અટકવાનું નથી કારણકે તેની અંદર કેટલાક ગુણો પણ છે કે જે ગુણોને લીધે તેઓ હાલ આપણા પર સામ્રાજ્ય ભોગવે છે; તે વિદ્યામાંથી જે જે સારભૂત હોય તે તે ગ્રહણ કરી તેના સાથે સાથે આપણી પૂર્વની વિદ્યાનો પણ સંતોષકારક અભ્યાસ કરવો જોઇએ.

પણ આ વિદ્યા સંપાદન કરવા પૂરતાં સાધનો હોવા જોઇએ. જો કે આ સાધનોમાં ભણનાર વિદ્યાર્થીની પોતાની બુદ્ધિજ મુખ્ય સાધન છે છતાં એ તે સાધન બહારનાં બીજાં સાધનો વિના પોતાનું કામ પાર પાડી શકતું નથી, માટે આ બાહ્ય સાધનો પૂરા પાડી આપવા જ્ઞાતિ મંડળોએ બનતી મદદ કરવી. કારણકે વર વહુને પરણાવવા અને જમણવારોની બાબતોમાંજ ભાંજગડ કર્યેથી તેમની ફરજો પૂરી થતી નથી.

ઉપર જણાવ્યું તેમ હિંદુસ્તાન બીજા દેશો કરતાં કેળવણીમાં ઘણું પછાત છે અને તેનાં કારણો ટુંકમાં નીચે મુજબ છે. *

૧. જૈન સમાજની કેળવણીની જરૂરીયાતના સંબંધમાં પૂરતી ખામી.

૨. જુના વિચારવાળા લોકોની માન્યતા કેઃ—પ્રાચીન સમયની પૂર્વની વિદ્યાજ સર્વોત્તમ છે અને હાલની કેળવણીથી વિદ્યાર્થીઓ સ્વચ્છંદી અને ધર્મભ્રષ્ટ થાય છે પણ બન્ને વિદ્યા સંપાદન કરવાથી ફાયદો થાય છે તેની સમજની ખામી.

૩. હાલની કેળવણી લઇ લોકો ઘણે ભાગે સારા તાબેદાર સરકારી નોકરો બને છે ખરા પણ તેથી જોઇએ તેવો આર્થિક લાભ થતો નથી.

૪. છેલ્લાં બસો ત્રણસો વર્ષ દરમ્યાન પરદેશીય હુમલાઓથી હિંદમાં રહેલી અશાન્તિ.

હવે આવી મુશ્કેલીઓને દૂર કરી કેળવણીને ઉત્તેજન અપાય તો વધારે સારૂં. અમુક પ્રકારની પદ્ધતિ ખોટી હોય તેથી તે વસ્તુ (કેળવણી) જ ખોટી છે એમ કહેવું એ ઘણું ભૂલભર્યું છે. પદ્ધતિમાં ખામી જણાતી હોય તો નવી યોગ્ય પદ્ધતિ અનુસાર કામ કરો. કેળવણીને ઉત્તેજન આપવા અને વિદ્યાર્થીઓનો માંહોમાંહે હરીફાઇનો જુસ્સો ઉત્પન્ન કરવા જ્ઞાતિ સમાજે એકત્ર પૈસાનો ભંડોળ કરી તેમાંથી યોગ્ય જણાય તેવા લાયક અને ગરીબ વિદ્યાર્થીઓને સ્કોલરશીપ (છાત્રવૃત્તિ) આપવી જોઇએ. હાલના વખતને લગતા કોઇપણ જૈન સમાજને ઉપયોગી વિષય પર હરીફાઇના ઇનામી નિબંધ લખવા જોઇએ. કેળવણીને ઉત્તેજન આપવા બોર્ડીંગ હાઉસોની પણ ઘણી જરૂર છે. તેવી બોર્ડીંગો સ્થળે સ્થળે સ્થાપી સ્વ. દાનવીર શેઠ. માણેકચંદ હીરાચંદ જે. પી. એ જૈન કોમને અત્યંત આભારી કરી છે. જૈન કોમ, તેમાં વિશેષે કરી દિગંબર જૈન કોમ, કેળવણીના સંબંધમાં ઘણીજ પછાત છે. અને આથીજ હાલની ચળવળમાં જોઇએ તેટલો ભાગ એ કોમ લઇ શકતી નથી. જેમ છોકરાઓને કેળવવાની જરૂર છે તેમ છોકરીઓને પણ તેમને યોગ્ય કેળવણી આપી કેળવવાની જરૂર છે અને તેને માટે આવિકાશ્રમ જેવી સંસ્થાઓને સ્થાપવાની તેમજ તેને ઉત્તેજન આપવાની ખાસ જરૂર છે.

(૪) આર્થિક સ્થિતિ.—જ્યાં સુધી આર્થિક સ્થિતિ સારી ન હોય ત્યાં સુધી ઉપરોક્ત કંઇ પણ થઇ શકે નહિ. માટે જ્ઞાતિની વર્તમાન આર્થિક સ્થિતિ કેવી છે અને જો તે બરાબર ન હોય તો તેમ હોવાનું શું કારણ છે તે જ્ઞાતિ મંડળે તપાસવું જોઇએ. પોતાના જ્ઞાતિ બંધુઓ કંગાલ અવસ્થામાં હોય અને આપણે તવંગર હોઇ મોજમઝાઓ ભોગવીએ અને તેમની બિલકુલ દરકાર ન કરીએ તો આપણે તેમના તરફ કઠણ હૃદય રાખી નિર્દયતાથી વર્તીએ છીએ એમ કહેવાને કોઇ વાંધો નથી. તેમને કોઇ પણ રીતે સારા ધંધામાં ઠેકાણે પાડવા એ જ્ઞાતિના પૈસાદાર વર્ગની ફરજ છે. તેમને કલાહુન્નર અને વ્હેપારી જ્ઞાન આપી આર્થિક સ્થિતિ સારી કરવા ધ્યાન આપવું.

જ્ઞાતિ મંડળ—ઉપર કહેલી બધી બાબતો જ્ઞાતિ સમાજે વિશેષ કરી ધ્યાનમાં લેવાની છે. આ બાબતો ધ્યાનમાં લેવાય અને કામ સુલભ થાય તે માટે સઘળા જ્ઞાતિ બંધુઓમાંથી અમુક અનુભવી અને વિદ્વાન્ માણસો અમુક વર્ષ સુધી કામ કરવા ચૂંટી કહાડવા. આ ચૂંટી કહાડાયલાઓ સઘળા જ્ઞાતિ બંધુઓના એકત્ર પ્રતિનિધિઓ છે. તે પ્રતિનિધિઓએ જેમ બને તેમ સ્વાર્થ ત્યજી નિષ્પક્ષપાતે જ્ઞાતિહિતાર્થે કાર્ય કરવા પ્રતિજ્ઞા લેવી જોઇએ. આ પ્રતિનિધિ મંડળે-યા જ્ઞાતિ મંડળે યા જ્ઞાતિ પંચે દર વર્ષે યા તો અનુકુલ ન હોય તો દર ત્રીજે વર્ષે પણ એકત્ર થઇ તેમના આગળ રજુ કરાયલી બાબતોપર વિચાર કરવો. અને તે અમલમાં મૂકાવા દરેક પ્રકારનાં ડહાપણભર્યાં પગલાં લેવાં કે જેથી સંપ કરતાં કુસંપ અને ઐક્યતા કરતાં અનૈક્યતા ન થાય અને તડ ન પડે

આ પ્રકારે દરેક જ્ઞાતિ પોતપોતાની ફરજ વિસ્તૃત (બહોળા) અર્થમાં સમજે અને પૂર જુસ્સાથી પોતાનું કાર્ય ઉપાડી લે તો ભારતવર્ષના ઉદયનાં કિરણો ફરી ટુંક સમયમાં હિંદ ઉપર મધ્યાન્હ કાલનો ઝગઝગતો પ્રતાપી સૂર્ય પુનઃ પોતાનું સામ્રાજ્ય વર્તાવી રહે.

અવિનાશી અરિહંત તું, એક અખંડ અમાન,
અજર અમર અણુજન્મતું, ભયભંજન ભગવાન.
આધિ વ્યાધિ ઉપાધિને, હરો તંત તોફાન.
કરૂણાકર કરૂણા કરો, ભય ભંજન ભગવાન.
નીતિ પ્રીતિ, નમ્રતા, ભલી ભક્તિનું ભાન,
આર્ય પ્રજાને આપશો, ભય ભંજન ભગવાન.
હર આળસ એદીપણું હર અઘ ને અજ્ઞાન,
હર ભ્રમણા ભારત તણી, ભય ભંજન ભગવાન.

શ્રીમદ્ રાજચંદ્ર ! લેખક—હિંમત.

पुस्तकालय ।



यह बात शनैः२ लोग मानते जाते हैं कि पुस्तकालय उन्नतिके एक प्रधान कारण है। पुस्तकालयोंके न होनेसे भारतकी अधोगति बहुत कुछ हो चुकी है। आजकल भी बहुतसे उन पुस्तकालयोंके बन्द रहनेसे–जिनके मालिक भट्टारक आदि बन बैठे हैं–उन्नतिमें बहुत बाधा पड रही है। जैन समाजमें एक ऐसे पुस्तकालयकी अत्यंत आवश्यक्ता है, जहां जैनियोंके संपूर्ण ग्रन्थोंकी मुद्रित या लिखित प्रतियां प्राप्त हो सकें। यह पुस्तकालय किसी ऐसे नगरमें होना चाहिए जो कि भारतके मध्यमें हो और जहां जैनियोंकी अच्छी वस्ती हो। ऐसे पुस्तकालयकी कुछ अंशमें पूर्ति करनेका उद्योग आगराका जैनकुमार पुस्तकालय कर रहा है। अत्यंत धनहीनताके होनेसे जैसी उन्नति होनी चाहिए थी वैसी यह नहीं कर सका है। किंतु इसके योग्य कार्यकर्ता और अन्य असुविधाओंको देखते हुए यही कहना होगा कि इसने आशातीत उन्नति कर ली है। इसकी पुस्तकें कोरी आलमारीकी शोभा ही नहीं बढाती किंतु वे प्रतिमास ६०, ६५ पढी भी जाती हैं। अबतक जिन २ विद्वानोंने इसका निरीक्षण किया है, वे सब ही इससे प्रसन्न हुए हैं। पुस्तकालयके साथ वाचनालय भी है। इस वर्ष इसमें बहुत सुधार हो गया है। आजकल उसमें २०, २२ समाचारपत्र आते हैं, पढ़नेवालोंकी भी औसत संख्या प्रति दिवसकी १५, २० है। सबसे बड़ी कमी जो माननीय निरीक्षकोंने इस पुस्तकालय व वाचनालयमें बताई है वह है स्थानकी। जिस कमरेमें वर्त्तमानमें यह है उसमें बहुतसी असुविधाएँ हैं अतः पुस्तकालयके योग्य सर्वथा नहीं है। बडी लागतकी धर्मशाला आदि बनानेवाले धर्मात्मा सज्जन क्या इस अत्यंत उपयोगी कार्यकी ओर लक्ष्य नहीं करेंगे? नहीं, हमें यह आशा नहीं है। किंतु हमें यह विश्वास है कि शीघ्र ही कोई माईका लाल धनी धर्मात्मा भाई इस शिकायतको दूर कर देगा। और हजार पांचसो रुपए लगाकर एक सुडौल बड़ासा कमरा बनवा देगा या कोई आगरेका ही भाई मौकेका बना बनाया कमरा पुस्तकके कामको दे देगा। उक्त प्रार्थनाके सिवाय हम उन विद्याप्रेमी सज्जनोंका भी चित्ताकर्षण करते हैं जो अपनी चंचल लक्ष्मीसे जैन ग्रन्थ मोल लेकर बांटा करते हैं। हमारी उनसे सविनय प्रार्थना है कि वे ऐसे समयमें इसे न भूलें। पुस्तक प्रकाशकोंसे भी हमारा नम्र निवेदन है कि वे अपनी २ छपाई पुस्तकें भेजते रहा करें जिससे सहजमें ही पुस्तकोंकी संख्या बहुत बड़ी हो जाय। क्या हमारी यह प्रार्थना धर्मात्माओंके कानोंमें पडेगी। तथास्तु।

मोती कटरा, आगरा। } **मंगीलाल जैन**
ऑ० मंत्री, जैनकुमार पुस्तकालय

सोजित्रानी दिगंबर जैन पंचने सूचना.

સવિનય જણાવવાનું કે—આપણે ધર્મશાસ્ત્રમાં બહુજ પાછળ પડી ગયા છીએ ને તેનું કારણ ફક્ત એજ માલમ પડે છે કે—આપણી પાછળ લચ્યાપચ્યા રહેનાર ભટ્ટારકોએ આપણને (આપણા વૃદ્ધ વર્ગને) ધર્મશાસ્ત્રનો અભ્યાસ કરવા દીધો નહિ, તેમ તેમણે આપણને ધર્મનો ઉપદેશ પણ આપ્યો નહિ, જેથી આપણી ધાર્મિક તેમજ વ્યવહારિક સ્થિતિ શોકરપદ થઇ ગઇ છે. હવે જમાનો બદલાયો છે, તો તે આચાર્યોને બાજુપર મુકી આપણે આપણી જાત મહેનતે પુસ્તકો દ્વારા જ્ઞાન મેળવવું જોઇએ. તે જ્ઞાનમા કેટલુંક ઉપરચોટીયું જ્ઞાન તો આપણને 'દિગંબર જૈન' માસિકદ્વારા પ્રાપ્ત થયું છે, પણ જૈન દર્શનનું પુરેપુરું રહસ્ય જાણવા માટે આપણને પ્રાચીન આચાર્યોના પુસ્તકોનો સ્વાધ્યાય કરવાની જરૂર છે. તેને માટે ગુજરાતમાં કેટલાક ભંડારો છે, જેમાંના કેટલાકનો લાભ તો ઘણા જણ લે છે, તેમજ પુસ્તકોની સ્થિતિ ઠીક છે, પરંતુ એક ભંડાર કે જે સોજીત્રા (આપણું મૂળ વતન) મા કાષ્ટાસંઘી અર્થાત્ જ્ઞાતિના મંદિરમાં છે કે જેની ચોકી અત્યાર સુધી નાણાના લોલુપી ભટ્ટારકો કરતા હતા, જેને લીધે તેનાં કોઇ દર્શન પણ કરી શકતું નહિ. જે ઉપરથી તે ગ્રંથોની સ્થીતિ એવી કફોડી થઇ ગઇ છે કે જે લખતા પણ શરમ આવે છે કેમકે જેને અનેક તરફથી ઉપાધિ નડતી હોય તેનું કામ ફલીભૂત થતું નથી તેમજ તે ગ્રંથોને જરમાદનું પાણી, જમીનની અંદર ભીનાશ, ઉદરો, ઉધાઇ વીગેરે તરફથી દર હમેશ બાધા થતીજ જાય છે, જેનાથી કેટલાક ગ્રંથો નષ્ટ પણ થઇ ગયા છે, જે ચેરમાતા જેવું છે કે સમસ્ત જ્ઞાતિના પુસ્તકોની જ્યારે આ દશા થઇ, તો પછી અરક્ષિત મંદિરની કેવી દશા થાય પુસ્તક વિષે પંચમાં એવી અંધ શ્રદ્ધા બેસી ગઇ છે કે તેને કોઇને જોવા પણ દેતા નથી. દાખલા તરીકે—૧૯૬૪ ના લગ્ન પ્રસંગે માસ્તર દીપચંદજીએ લીષ્ટ કરવા પ્રયાસ કરેલો, પણ ૨૫-૩૦ ગ્રંથો કાઢી બે ત્રણ બંધુની ચેતવણીથી બીજા ગ્રંથો કાઢવા નહોતા. કેવો વિચિત્ર પ્રસંગ કે-ગ્રંથનું દર્શન કરવાની પણ મનાઇ તો પછી આપણી ઉન્નતિ કયાંથી થાય? અને આપણો યુવાન વર્ગ ધર્મની લાગણીવાળો કયાંથી થાય? જેનું વૃક્ષ રોગવાળું છે તેનું ફળ કયાંથી સારું થાય? તેમજ વડીલો અંધ શ્રદ્ધાવાન તો બાળકો ધર્મવાળાં કયાથી હોયા માટે બંધુઓ અને સુખ્યાતે મંદિરનો વહીવટ કરનારાઓ! નીચેની બાબતોને તરત અમલમાં લ્યો કે—જેથી પુસ્તકોનો બચાવ થાય ને પ્રાચીન સાહિત્ય સચવાઇ રહે. તેની સાથે તમારે માથેથી કંઇક પાપનો બોજો ઓછો થાય ને બાળકો તેમજ સાધારણ જૈનો પણ જૈન દર્શનના જ્ઞાનનો લાભ મેળવી શકે.

अ. પુસ્તકોને ભંડારમાંથી બહાર કાઢી સાફ કરી લીષ્ટ તૈયાર કરવું.

ब. એક લીષ્ટ 'દિગંબર જૈન'માં છપાવવું ને એક મંદિરમાં ચોટાડવું.

क. પુસ્તકોને કઇ પણ પ્રકારની બાધા ન થાય તેવી જગ્યાએ ગોઠવવા (હરકત ન હોય તો પાઠશાળાનાઓ કમારોમાં મંદિરના સામેના હોલમા કે જ્યાં ગાદી (ભટ્ટારકની) રહે છે ત્યાં ગોઠવવાં જેથી દર્શન-સ્વાધ્યાયનો લાભ મળે)

ट જીર્ણ થયેલા ગ્રંથોને ફરીથી લખાવવા.

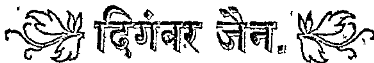
ग. ઉપયોગી પુસ્તકોને છપાવી જુજ કિંમતે પ્રચાર કરવો.

त. લાયબ્રેરીની સીસ્ટમથી પુસ્તકોને વાંચવા આપવા.

ઉપરની બાબતનો અમલ હાલ તાત્કાલિક થવો જોઇએ અને તોજ આપણી શોભા છે. લક્ષ પણ તેનાથી થશે ધરે રત ધ્યાનમાં રાખી, ખાસ કરીને આગેવાનોએ પુસ્તકને બનતાં પ્રયાસે સચવવા કોશીશ કરવી જોઇએ.

લી. જ્ઞાતિ હિતેચ્છુ—
શ્રી સાકીસા મિત્ર મંડળી-કાશીમા

॥ श्रीवीतरागाय नमः॥



THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्ततां, दैगम्बरं जैन समाज-मात्रम् ॥

वर्ष ११ वाँ.	वीर संवत् २४४४. पौष–माघ. विक्रम सं० १९७४.	अंक ३–४.



श्री शिखरजी और हम पर संकट।

इस अंकमें अन्यत्र दिये हुए ब्रह्मचारीजीके लेखसे पाठकोंको भली-भांति विदित होगा कि अपने महान् तीर्थराज श्री सम्मेदशिखरजीपर हमारे दर्शन-पूजन होनेकी स्वतंत्रतामें बडा भारी संकट उपस्थित हुआ है। हमारे श्वेताम्बरी भाईयोंकी चालबाजीसे हमें कई वर्षोंसे कई तीर्थोंपर कष्ट सहन करने पडते हैं और वकील बैरिस्टरों द्वारा खर्च भी बहुत हो रहा है। आजकल पटनामें हमारे अगुए उपस्थित हैं और श्वेतांबरी अकेलेको पहाड वेचा न जाय इसकी कोशिस कर रहे हैं। आपसमें मेल होनेके लिये हमारी तरफसे बहुत कुछ कोशिस होनेपर भी उसका कुछ भी फल नहीं हुआ और आखिर कोर्टद्वारा ही हमारों रुपये खर्च हो रहे हैं और ऐसा खर्च करके हमारे हकोंकी रक्षा करना हमारा फर्ज ही है। इस समय इस कार्यके लिये रुपयोंकी वडी भारी आवश्यकता आ उपस्थित हुई है जिसके लिये हमारी तीर्थक्षेत्र कमेटीकी ओरसे बहुतसे स्थानोंपर तारद्वारा सूचना दी गई है कि "चंदा एकत्र करके भेजिये अन्यथा शिखरजीपर हमारे हकोंकी रक्षा नहीं हो सकेगी" इसलिये हरएक स्थानके भाइयोंको हम सूचित करते हैं कि इस हालको सब भाइयोंको सुनाइये और जितना हो सके उतना चंदा शिखरजीके लिये एकत्रित करके तीर्थक्षेत्र कमेटी हीराबाग बम्बईको भिजवाइये। इस कार्यमें विलंब नहीं करना चाहिये।



सेठीजीका संकट।

चार वर्ष हुए सारी जैन कोम तो क्या परंतु कई महीनोंसे तो सारा हिंदुस्थान चिल्ला रहा है कि बिना जांच और न्याय हुए नजरबंद किये गये जैन समाजसेवक पं० अर्जुनलाल सेठीको बंधन मुक्त किजिये परंतु हमारी कुछ भी सुनाई नहीं होती यह बडा ही आश्चर्य है। हमारी मनपंथवाली प्रांतिक सभाने इस कार्यके लिये वाईसरोयके पास

डेपुटेशन भेजना निश्चित किया था और उसका मेमोरियल तैयार हुआ था तथा बाबू अजितप्रसादजी, सेठ हीराचंद अमीचंद, मि. चवरे वकील आदि डेपुटेशनमें जानेके लिये तैयार भी हुए थे परंतु ना० वाईसरोयसे मिलनेकी स्वीकारता ही नहीं मिली इससे डेपुटेशन योंका यों ही रह गया था। अब अम्बालाकी महिला परिषदमें स्त्रियोंका डेपुटेशन वाइसरोयके पास भेजना निश्चित हुआ है। अब देखते हैं कि वाइसरोय महोदय स्त्रियोंका डेपुटेशन भी स्वीकार करते हैं या नहीं। कैसे भी हो जयपुर राज्य और बिटिश सरकारका फर्ज है कि सेठीजीका न्याय करें या तो उन्हें बंधनमुक्त करके जैनसमाज तो क्या सारे भारतवर्षमें इसके लिये फैली हुई अशान्तिको दूर करें। सेठीजीके कष्ट निवारणार्थ बाबू अजितप्रसादजी (अजिताश्रम, लखनऊ)ने ऑफिस खोल रक्खी है जिसमें खर्चके लिये रुपयोंकी आवश्यकता रहती है तो भाईयोंका फर्ज है कि सेठीजी और उनके बालबच्चोंके कष्ट निवारणर्थ कुछ न कुछ सहायता लखनऊ भेजते रहें।

⚜ ⚜ ⚜

साहित्य सम्मेलनमें प्रदर्शनी। आगामी ता० २९-३०-३१ मार्चको इन्दोरमें महात्मा गांधीजीके सभापतित्वमें अष्टम हिन्दी साहित्य सम्मेलन होनेवाला है जिसके स्वागत० कमेटीके अध्यक्ष हमारे दानवीर रा० ब० सेठ हुकमचंदजी ही हैं। सम्मेलनके साथ २ एक हिन्दी साहित्य प्रदर्शिनी भी होगी जिसमें हिन्दीके पुराने पत्र, प्रसिद्ध साहित्य सेवियों के चित्र, हिन्दी हस्तलिखित और प्रकाशित प्राप्य पुस्तकें, हिन्दी ग्रन्थमालाएँ, शिलालेख, ताम्रपत्र इत्यादि प्रदर्शित किये जावेंगे। ऐसे मौकेपर हिन्दी भाषाके प्राचीन हस्तलिखत और मुद्रित जैन ग्रन्थ तथा चित्रों, शिलालेखादि भी रखने योग्य हैं। हमने भी ६१ पुस्तकें और चित्रादि प्रदर्शनीमें भेजे हैं और हमारे पाठकोंसे भी आग्रह करते हैं कि अपने भंडारोंमें हिन्दी भाषाके प्राचीन ग्रन्थादि होवें तो इस प्रदर्शनीमें अवश्य भेज देवें। प्रदर्शिनीके पूर्ण होने पर सब पुस्तकादि वापिस मिल जायँगी। पत्र व्यवहारका पता— डॉ० सरजूप्रसाद रायबहादुर, मंत्री, अष्टम हिन्दी साहित्य सम्मेलन, तुकोगंज, इन्दौर।

⚜ ⚜ ⚜

ईसरी स्टेशनपर आवश्यकता। श्री सम्मेद शिखरजी पर जानेके लिये खास करके ईसरी स्टेशनसे जाया जाता है। अब इस स्टेशनपर रेल्वे गाड़ी सिर्फ दो मिनिट ठहरती है इससे अनेक यात्रियोंको बहुत कष्ट उठाना पड़ता है जिसको दूर करनेके लिये तीर्थक्षेत्र कमेटीके नाम पर अभी फिरोजपुरकी एक चिठ्ठी 'जैनमित्र' में प्रकाशित हुई है जिसमें दर्शाया है कि (१) E. I. R. रेल्वेके एजन्टसे पत्रव्यवहार करके गाड़ीको दस या पांच मिनिट ठहरानेका प्रबंध कराना चाहिये (२) ईसरीसे ४-५ माईल पर बैलगाड़ीके

रास्तेमें ही रेल्वे लाईन पडती है तो वहां ही मधुवनरोड नामक छोटासा स्टेशन होना चाहिये इसके लिये भी E. I. R. Ry. से लिखा पढी करें और (३) मधुवन धर्मशालासे एक मील पर एक छोटासी नदी है जहां पुल होनेकी आवश्यकता है। आशा है कि तीर्थक्षेत्र कमेटीके कार्यकर्तागण इसके बारेमें शीघ्र ही रेल्वे कर्मचारियोंसे लिखा पढी करेंगे, यदि प्रयास किया जायगा तो इसमें अवश्य सफलता होगी क्योंकि ईसरी स्टेशन पर हमारे हजारों यात्रीगण आते जाते हैं।

मुनि अनंतकीर्ति-जीका वियोग हमारे पाठक दिगंबर मुनि श्री अनंतकीर्तिजी महाराजसे सुपरिचित हैं। क्योंकि आपका चित्र और परिचय भी हम दो वार प्रकट कर चुके हैं। आपके मोरेनामें ठहरनेका समाचार हम गतांकमें दे चुके थे और वहां आपका केशलौंच उत्सव भी होनेवाला था इतनेमें अकस्मात् ही माघ सुदी ५की रात्रिको ध्यान स्तंभन करते २ अकस्मात् आपका समाधिमरण हो गया। आपकी आयु सिर्फ ३४ वर्षकी ही थी। आपके स्वर्गवासका हमें इसीलिये दुःख होता है कि आप विशेष आयु भोगते तो हमें आपके दर्शन और उपदेशका अपूर्व लाभ मिलता। मुनिजीके शोक प्रदर्शनार्थ बम्बई, शोलापुर, मोरेना, आगरा, इन्दौर, करहल, बडवाहा आदि अनेक स्थानोंपर सभाएँ हुई थीं और बाजार भी बंद रखकर मंदिरोंमें पूजन किया गया था।



शिखरजी केस—ता० ११ के तार समाचारसे विदित हुआ है कि पालगंज और नवागंज स्टेट द्वारा शिखरजीका पहाड श्वेतांबरियोंको बेचा न जाय इसके लिये दिगम्बरियोंने इन्जंक्सन (मनाईहुक्म) मांगा था जिसको पटना हाईकोर्टने गत ता० ८ को खारिज कर दिया है। जिससे दिगम्बरियोंको विशेष कठिनाईयोंका सामना करना पडेगा।

देहलीमें बोर्डिंग और आश्रम—लाला जगन्नाथ जैनी तार द्वारा सूचित करते है कि यहा ता० १ मार्चको दरीबाकलांमें जैन बोर्डिंग और ता० १० को पहाडी धीरजपर जैन महिलाश्रमकी स्थापना हुई है।

अम्बालामें महिला परिषद् और सेठीजीका प्रस्ताव.—महासभाके साथ२ अम्बालामें गत् ता. २५–२६को भारत दि. जैन महिला परिषदका आठवा अधिवेशन देहलीके ओ. रा. ब. बाबू सुल्तानसिंहजीकी धर्मपत्नी श्री सुशीलादेवीके सभापतित्वमें हुआ था। जिसमें दो तीन हजार स्त्रियें उपस्थित हुई थीं। यह उत्सव अजीब सफलतापूर्वक हो गया। संख्या बढ जानेसे सभापतिका व्याख्यान तीन स्थान पर सुनाया गया था। सभापति, श्री मगनबाई, पं. चंदाबाई, पं. रामदेवीबाई आदि के महत्वपूर्ण व्याख्यान होकर कुछ छह प्रस्ताव

पास हुए जिसमें उल्लेख योग्य प्रस्ताव **पं. अर्जुनलाल सेठीजी**के बारेमें निम्नलिखित हुआ है। —"श्रीमान् पं. अर्जुनलाल सेठी बी. ए. जैन जातिके अद्वितीय, अनुभवी व स्वार्थ त्यागी विद्वान् हैं। सार्वजनिक विद्या प्रचार उनके जीवनका उद्देश्य था और है और उनकी यह उत्कट इच्छा है कि, जैन स्त्री-समाज विद्वान् बने, उसमें एक भी बालिका ऐसी न रहे जो अशिक्षित हो; और हमारेमें सम्यक्त्व के नाश करनेवाली कुप्रथाऐं हैं वे नष्ट होकर हम धर्मपरायण बनें। इस परिषदको अत्यंत खेद है कि उनको किसी संदेहवश जयपुर सरकारने ४ वर्षसे नजरकैद कर रक्खा है और बहुत कुछ प्रार्थनाऐं जैन समाजके करने पर भी उन्हें मुक्त नहीं किया। जैन समाज अपने एक स्वार्थ त्यागी पंडितके सदुपदेशसे, व सत्कार्यसे वंचित होकर कष्टका अनुभव कर रहा है अतः यह परिषद प्रस्ताव करती है कि जैन समाज की **महिलाओंका** एक मंडल (**डेपुटेशन**) नामदार वाईसरायकी सेवामें उपस्थित होकर सेठीजीको मुक्त करानेकी प्रार्थना करे। परिषद यह भी प्रस्ताव करती है कि परिषदकी ओरसे सेठीजीको मुक्त करनेके लिये एक तार भी दिया जाय।" परिषदमें श्राविकाश्रम बम्बईके लिये २०००) का चंदा भी हुआ था।

पंडितका वियोग—इटावेके पं० पुत्तूलालजीका गत ता. ९ को जैन समाजसे वियोग हो गया। आप अच्छे पंडित थे। ब्र० कुंवर दिग्विजयसिंहजीको आर्यसमाजीसे जैनी होनेका सौभाग्य आपके सहवाससे ही प्राप्त हुआ था।

रावजी सखाराम दोशी, मंत्री, सोलापुर।

अम्बालामें महासभा—अपनी महासभाका अधिवेशन अबकीवार अम्बालामें प्रतिष्ठोत्सवके समय हो गया। सभापति हुए थे न्यायदिवाकर ! पंडित पन्नालालजी, परन्तु मजेकी बात यह हुई की सभापतिजीका व्याख्यान न तो आदिमें हुआ न अन्तमें !!! न्यायदिवाकरजीका तो विचार नहीं था परंतु सबकी अनुमतिसे सेठीजीका ठहराव तो आपको रखना ही पड़ा और पास भी हो गया और देवगढ़के उद्धारका और जैन शास्त्रोंकी समीक्षाओंकी एक उत्तरदात्री कमेटीका नियुक्त होना यह दो प्रस्ताव भी महत्वके हुए हैं।

कुशलगढ़में—सेठ धूलचंद धनराजजीके प्रयाससे सद्गुण प्रसारक मंडल स्थापित हुआ है जिसके प्रयत्नसे यहां कन्याविक्रय फरज्यात बंद करना, बहारगामकी बरात आई हो और उसीके ग्राममें भी कन्याविक्रय होता हो तो उनसे २५१) मंडलमें लेना, लग्नोंके कई रीतिरिवाजें बंद या कम करना, वर कन्यामें खोड़ आ जावे, नपुंसक मालूम हो तो सगाई छोड़नेका पंचको हक देना आदि १६ प्रस्ताव हुए हैं।

भट्टारक श्री गुणचंद्रजी—सोजित्रामां लगभग ७० वर्षनी वृद्ध वये स्वर्गवासी थया छे. गुजरातना जैनोनो उद्धार थाय एवुं कोईपण कार्य भट्टारकजी करी गया होय एवुं जणातुं नथी.

आगरेमें ता० १५ से १९ फर्वरी तक रथोत्सव हो गया। कई व्याख्यान सभाएं भी हुई थीं। जैसवाल सभाका अधिवेशन भी हुआ था और 'जैसवाल जैन' नामक मासिक शीघ्र ही आगरासे निकालनेका प्रबंध हुआ है।

शास्त्रार्थका चैलेंज—आजकल देवबन्दके बाबू सूरजभानजी वकील अपने आदिपुराण आदि धर्मग्रन्थोंकी मनमानी और असत्य समालोचना कर रहे हैं जिससे उत्तेजित होकर न्यायालंकार वादीभ केशरी पं. मक्खनलालजी शास्त्री (प्र० अध्यापक ऋ० ब्रह्मचर्याश्रम) ने वकील साहबको चैलेंज दिया है कि इसके शास्त्रार्थके लिये तैयार हो जाईए। शास्त्रार्थके लिये बम्बई, इन्दौर, मुरैना और देहली इनमेंसे कोई भी स्थान उपयुक्त होगा।

देखें वकील साहब शास्त्रार्थके लिये तैयार होते हैं या नही या घर बैठे २ ही मनमानी कलम चलाया करना पसंद करते हैं।

हाईस्कूल—सोलापुरमें हरिभाई देवकरणवालोंने २७०००) लगाकर सार्वजनिक हाईस्कूल स्थापित करनेके लिये प्रबंध किया है। इसका प्रबंध जैनोंके हस्तमें होना चाहिये और इसमें जैन धर्मका शिक्षण देनेका प्रबंध भी होना आवश्यक है।

कुंथलगिरि—क्षेत्रका मेला पौष सुदी १५ को सेठ हीराचंद नेमचंद दोशीके सभापतित्वमें सफलता पूर्वक हो गया। कुलभूषण जैन विद्यालयको करीब ७००)की सहायता हुई थी। विद्यालयके छात्रगण आजकल अधिष्ठाता ब्र. पार्श्वसागरजी सहित शिखरजीकी यात्रार्थ निकले हैं। रास्तेमें पड़ते हुए बहुतसे शहरों और ग्रामोंमें विद्यालयका भ्रमण होगा।

नामधारी भट्टारकका निषेध—लातूर (वह्राड)की गादी पर विना सबकी सम्मति लिये एक बालकको भट्टारका बना दिया है जिसके निषेध प्रदर्शनार्थ कुंथलगिरिके मेलेपर बड़ी भारी सभा रा. नेमीनाथ अंनतराज पांगल्के सभापतित्वमें हुई थी जिसमें इस बालक भट्टारकको किसी तरहसे न माननेके लिये तात्या नेमीनाथ पांगल, मि० रणदिवे आदिके व्याख्यान होकर इस भट्टारकका खूब ही निषेध किया गया और उसपर वहां उपस्थित ६०-६५ गांवके मुखियाओंके हस्ताक्षर भी हो गये। गुजरातमें विना सबकी संमति लिये इस तरह दो भट्टारक बैठ गये हैं जिसका प्रबल विरोध न होना गुजरातके भाईओंकी अंधश्रद्धा और कमजोरी नहीं तो और क्या है!

कुतराओनी अपील—सुरतमां ता० १२मी फेब्रुआरीए श्री एनी बिसेंट पधारी हती त्यारे सैया भवर्स जैनी तरफथी बिसेंटनी मोटर थोभावी एक कुतरा पासे "सुरतना कुतराओनी अपील" नामे हेन्डबीलनो एक तल्तो भेट अपाव्यो हतो जेमां लखेलुं हतुं के सुरतमां अमारो घोळे दिवसे गोळी महारथी कतलथाण कतनामां आवेछे, माटे कायदानी हदमां रही अमारुं रक्षण करो इत्यादि.

विवाह और दान—स्व० मूलचन्दजी

स्था० रावलपिन्डीके पुत्र दीवानचन्द्र फोटोग्राफरका विवाह माहा वदी ५को जैनविधिसे होगया जिसके उपलक्षमें भारत जैन महामंडल, स्था० जैन कान्फरेन्स, देहली अनाथाश्रम, ब्रह्मचर्याश्रम और कई पत्रोंको ४२॥) सहायतार्थ दिये गये जिसमें दिगंबर जैनको भी २) प्राप्त हुए हैं।

प्रतिष्ठा–श्री चम्पापुरी तीर्थमें फाल्गुन शुक्ल ९ को पंचकल्याणक प्रतिष्ठोत्सव सोलापुर निवासी सेठ हीराचंद अमीचंद शाहकी ओरसे होगा।

सूरतमें श्रीमती बिसेंट और जैनोंका स्वागत।

भारतहितैषी माननीय श्रीमती एनी बिसेंट गत ता० १२ फर्वरीको एक दिनके लिये सूरत पधारी थीं तब आपका नगरवासियोंकी तर्फसे बहुत ही अच्छा सत्कार हुआ था और दुपहरको आपका एक जलूस सारे शहरमें फिराया गया था तब बहुतसे स्थानोंपर आपकी मोटर ठहराकर हारतोंर अर्पण किये गये थे जिसमें जैनोंकी ओरसे तो **चंदावाड़ी**में ऐसा अपूर्व सत्कार किया गया था कि कहीं भी ऐसा सत्कार नहीं हो सका था। चंदावाड़ीके ओटेको खूब सजाकर टमन कुर्सीकी बैठक बनाई गई थी और रास्तेपर भी एक बोर्ड लगाया था जिसपर लिखा था कि–

"बेलोअनी जेलमां ९६ दिवसना अपवासमुं पारणुं करावनार–माता एनी बीसेंट, विना न्याये साडा त्रण वर्ष थयां जेलमां पडेला जैन **पं० अर्जुनलाल सेठी**ने बंधन मुक्त करावो."

यहां जनसमूह भी ४००–५०० इकट्ठा हो गया था। श्रीमतीजीकी मोटर शामको करीब साढ़े पांच बजे आ पहुंची थी आते ही करतल ध्वानियां गूंज उठीं और उनके सहयोगियोंने तो कहा कि श्रीमतीजी नीचे नहीं उतरेंगी यहां ही जो कुछ देना हो दे दीजिये अन्यथा मोटर चला दी जायँगी आदि। यह बात जानकर श्रीमतीजी तुर्त ही स्वयं उठ कर मोटरका दरवाजा खोलने लगी और नीचे उतर कर चंदावाड़ीमें पधारीं जिस समय लोगोंका उत्साह अवर्णनीय था। आपका स्वागत करके मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने समयके अभावसे सन्मानपत्रमेंसे सेठीजीवाला हाल पढ़ कर सुनाया और आपको रेशमी रूमाल पर जरी और रेशमकी कारीगिरीका छपा हुआ मानपत्र सूरतकी अपूर्व बनावटके चंदनके बाकससे रख कर अर्पण किया और हारतोरेसे सन्मान किया तथा 'दिगम्बर जैन' का खास अंक भी भेट किया इतनेमें यहांके वी० एन० म्हेता फोटोग्राफरने एक फोटोग्रुप भी खींच लिया जो अतीव आकर्षणीय और संग्रह करने योग्य होनेसे हमने इसी अंकमें अन्यत्र प्रकट किया है। मानपत्रकी अंग्रेजी नकल और उसका अनुवाद निम्नलिखित है–

An address from the Jains of Surat.

To,

MRS ANNIE BEASANT,

Mother of India; President, Home Rule Leag e for India; President, Theosophical Society; President, 32 nd National Congress etc., etc.,

Most revered Madam,

1. You are the true builder of India's destiny in that you have awaken India from her age-worn lethargy at the great sacrifice of bodily health and peace of mind and that you only have paved the way to win Home Rule for India under the benign British flag by cultivating public opinion to the core of the people's heart. India shall ever remain grateful to you and your name which has been a homeword to the people's minds shall ever be cherished by them.

2. The well known **Jain Pandit Arjunlalji Shethi B A.** who was incarcerated in prison by the **Jaipur State** without any trial or justice more than 3 long years ago was *suddenly brought on* 20th November last to Vellore, Madras under British juri sdiction. It was you who nobly raised her voice on the Congress Platform regarding the miserable imprisonment of Shethiji and consequently made all arrangements for Sethiji's wife and children to see their near and dear one at Vellore by personal interview with the Viceroy and made the venerable Pandit give up his fast 56 days when convenience for an idol was made in his room at Vellore Jail. The Jains of India are ever obliged to you forever by this your life giving deed for they know fully well that no body in them could have performed this difficult task.

3 You are well aware with Sethiji's case and so we need not say anything more about this Suffice it to say that you will make all efforts to get him released soon, taking his question even to the *Parliament* if need be.

4 We cannot find words to express our feelings of love, res pect and esteem for you. You are a light in the dark desert of modern India. India can never be more proud of you.

5. Finally we wish that you may live long to see India win Home Rule under British flag, may you ever be happy. May all your efforts ever be crowned with success Victory to thee, Builder and Ruler of People's minds May thy name ever rise in the sky from summits of the Himalaya. Hoping to be excused for the trouble and thanking you in anticipation.

Your most obedient servant,

Chandawadi,
SURAT.
12-2-1918 } Moolchand Kasandas Kapadia.
(For the Jains of Surat.)

सूरत-जैन समाजकी ओरसे मानपत्र।

भारतमाता विदुषी एनीबेसेन्ट–प्रमुख, भारतवर्षीय स्वराज्यसंघ; अध्यक्ष, थियोसोफिकल सोसायटी; सभापति, ३२ वीं राष्ट्रीय कॉंग्रेस इत्यादि२ की सेवामें।

परमपूज्या—

(१) आपने पवित्र भारतवर्षको चिरकालकी गाढ़ निद्रामेंसे जागृत कर शारीरिक आरोग्य और चित्तशान्तिके अथाह परिश्रमसे इस महान् देशके भविष्य बांधनेमें महान् भाग लिया है। और अंग्रेज राज्यकी छत्र छायामें स्वराज्य प्राप्तिके अर्थ जनसमूहकी नसों नसमें स्वराज्यकी भावना फैलाकर स्वराज्य प्राप्तिका मार्ग खुल्ला किया है। इसलिये यह देश आपका सदैव आभारी रहेगा, और आपका नाम जो सर्वमान्य हो पड़ा है सदोदित चिरःस्मरणीय रहेगा।

(१) सुप्रसिद्ध **पं. अर्जुनलालजी सेठी** बी० ए० जिन्हें लगभग ३ वर्षसे ज्यादा हुए विना न्याय विना जांच किए जयपुरमें नज़रबंद किये गये और वे गत ता. २० नवम्बरको भारत सरकारकी देखरेखमें वेल्लोर (मद्रास भेजे गये। पंडितजीको वेल्लोरके कारागृहमें विविध प्रकारकी जो जो विपत्तियाँ झेलनी पड़ीं उसके लिये आपने भारतीं कॉंग्रेसमें प्रमुखकी हैसियतसे पुकार उठाई, इतना ही नहीं किंतु माननीय वाइसरायसे स्वतः मिलकर वेल्लोरके कारागृहमें प्रतिमाका प्रबन्ध कराके सेठीजीको ५६ दिनोंके उपवाससे मुक्त करा जीवन दान दिया। सेठीजीसे पत्नी और बालबच्चोंको मिलनेका अवसर प्राप्त कराना भी आप ही की कृपाका फल है। समस्त भारतवर्षके जैनी आपके इस पवित्र कार्यके लिये चिर ऋणी रहेंगे।

(३) सेठीजीके केससे आप भलीभांति परिचित हैं, अतएव इस विषयमें हमें विशेष कहनेकी आवश्यकता नहीं। मात्र इतना ही जता देना बस होगा कि आप आवश्यकता पड़ने पर पार्लामेन्ट तक भी यह बात लेजाकर सेठीजीको शीघ्र छुड़ावेंगी ऐसी हम आशा रखते हैं।

(४) आपके प्रति हमारी स्नेह, मान, और पूज्य भक्ति प्रकट करनेको हमारे पास पूरे शब्द नहीं। आधुनिक भारतवर्षकी अंधकारमय रात्रिमें आप दीपक समान हैं। आपके लिये यह देश जितना अभिमान करे उतना थोड़ा है।

(५) आखिरमें हमारी यह भावना है कि ब्रिटिश छत्र तले भारतवर्षको स्वराज्य भोगते हुए देखनेको आप दीर्घायु हों। आप सदा सुखी रहें, और अपने देशकार्यमें आपको विजय प्राप्त हो, और अचल कीर्ति सुख आपको सदैव मिलता रहे।

मैं हूं आपका चरण सेवक—

चंदावाड़ी सूरत.
ता. १२–२–१८ } मूलचंद किसनदास कापड़िया।
(सूरतके जैनोंकी ओरसे)



सारे भारतमें सुविख्यात और भारतहितैषी-**श्रीमती एनी बेसेंट**
ता० १२-२-१८ को **सूरत** पधारी थीं तब जैनोंकी ओरसे **चंदावाडी**के ओटे पर
मानपत्र दिया गया था उस समयका दृश्य।
(मूलचन्द किसनदासजी कापड़िया मानपत्र सुना रहे हैं और श्रीमतीजी एकाग्रतासे सुनरही है)

'जैनविजय' प्रेस-सूरत।

जैन मतकी प्राचीनता।

(लेखक-ज्योतिस्वरुप जैनी, नजफगढ़)

धम्मपद नामक पुस्तककी भूमिकामें लिखा है कि-

गौतमबुद्ध, बौद्धधर्मका चलानेवाला सन् ईसवीसे ५५७ वर्ष पहिले क्षत्रिय राजा शुद्धोदनके यहाँ कपिल वस्तुमें पैदा हुआ था जो-कि रोहिणी नदीके किनारे बनारससे १०० मील उत्तरकी ओर है। वह बचपनसे ही दयालु और बुद्धिमान् था। एक दिन सांसारिक विषय भोगोंसे विरक्त हो मोह त्यागकर उसने वैराग्य धारण करलिया, और देश देशान्तरोंमें भ्रमण कर अपने सत् उपदेश द्वारा सहस्रों मनुष्योंको सच्चे धर्मका रास्ता बतला कर यह शिक्षा दी कि "मोक्ष" न तो शरीरको कष्ट देनेसे मिलती है और न सांसारिक भोगोंमें फँसे रहनेसे। इस मोक्षसुखकी प्राप्ति होनेका हक ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारों वर्णोंको है। प्राणी मात्र इस मोक्षपदवीको प्राप्त हो सकता है।

वह समय ऐसा अंधकारका था कि लोग अपने सच्चे धर्मको छोड़ कर यज्ञादिक क्रिया, शारीरिक दुःख इत्यादि बातोंको सच्चा श्रद्धान कर धर्म मानने लगे थे। बुद्ध देवने बनारससे ...... ४५ वर्ष तक लगातार सारे मुल्कोंमें भ्रमण कर दया। धर्मका ऐसा डंका बजाया कि जिसके उपदेशसे राजा महाराजाओंने दिलसे वह शिक्षा कबूल की, और लाखों मनुष्य सच्चे धर्म पर चलने लगे। इस प्रकार बुद्धदेवने तमाम भारतवर्षमें यह बात प्रसिद्ध करदी कि सर्वोत्कृष्ट "दया धर्म" ही प्राणी मात्रका उद्धार करनेवाला है। अब हम अपने पाठकोंको यह बतलावेंगे कि बौद्ध धर्म और जैनधर्मके सिद्धान्तोंमें क्या अंतर है? कितने ही विद्वानोंने इस प्राचीन जैनमतको बौद्धमतकी एक शाखा लिखा है यह बात काहाँ तक सत्य है। जो लोग भारतवर्षके प्राचीन इतिहाससे अभिज्ञ हैं उनको उपर्युक्त कथन, अर्थात् जैनमत बौद्धमतकी शाखा है यह लिखना मिथ्या प्रतीत होगा।? अब हम बौद्ध ग्रन्थोंका अवलोकन करते हैं तो यही प्रतीत होता है कि इस मतका मूल सिद्धांत 'दया' है और कितने ही विषय जैनमतसे निकट संबंध रखते हैं। यथा-मुक्ति, पुनर्जन्म, प्रतिमा-पूजन, ईश्वर, कर्म फिलासफी, गुरु इत्यादि। उपरोक्त विषयोंमें कुछ २ अंतर है। गुरुके लक्षण जो कि जैनाचार्योंने वर्णन किये हैं उनमेंसे कुछ गुणोंको छोड़ कर कितने ही गुण उनके साधु पालन करते हैं, उन साधुओंको श्रमण कह कर पुकारते हैं। २-अब बौद्धके समयका निर्माण जैन शास्त्रोंसे इस प्रकार मिलता है। धर्म परीक्षा श्री स्वामी अमितगत्याचार्य कृत जो कि संवत् १०७० में बनाई गई है उसमें लिखा है कि पार्श्वनाथके चेले मौडिलायनने महावीरस्वामीके साथ बैर रखनेके कारण बौद्धमत चलाया। उसने शुद्धोदन पुत्र, बुद्धको परमात्मा समझा यह सब कालदोषके कारण हुआ। यथा—

रुष्टः श्री वीरनाथस्य, तपस्वीमौडिलेयनः।
शिष्यः श्री पार्श्वनाथस्य, विदधे बुद्धदर्शनम्॥२॥

शुद्धोदनसुतं बुद्धं, परमात्मानमब्रवीत्।
प्राणिनः कुर्वते किं न, कोपवैरिपराजिताः ॥२॥
अर्थात्–पार्श्वनाथ भगवान्का शिष्य एक मौडिलायन नाम तपस्वी था। उसने महावीरस्वामीसे बिगड़ कर बौद्धमतको प्रकट किया उसने शुद्धोदन राजाके पुत्रको बुद्ध परमात्म मान लिया सो ठीक है। कोपरूप बैरीसे पराजित होकर संसारी जीव क्या क्या नहीं कर सकते ? अर्थात् सब कुछ कर डालते हैं। उपरोक्त भूमिकामें भी गौतमबुद्ध सन् ईसासे ९९७ वर्ष पहले लिखा है। और अब संवत् ईसा १९१८ वर्त्तमान है इस हिसाबसे २४७९ वर्ष व्यतीत हुये उस समय बौद्धका जन्म हुआ था, और महावीरस्वामीको निर्वाण गये २४४४ वर्ष हुये। इससे प्रत्यक्ष यह सिद्ध होता है कि बौद्धका जन्म महावीरस्वामीके समयमें हुआ था इसमें कुछ विशेष अंतर नहीं प्रतीत होता। हंटर (Hunter) साहब तथा और भी कितने ही विद्वान् बुद्धको महावीर स्वामीका चेला बतलाते हैं उन्होंने इन दोनों (गौतमबुद्ध और गौतम इन्द्रभूति) को एक समझ लिया, चूंकि गौतम इन्द्रभूति महावीर स्वामीका शिष्य था इस कारण उन्होंने गौतमबुद्धको भी महावीरका चेला समझ लिया। हंटर साहिबका यह कहना कि बुद्ध महावीर स्वामीका शिष्य था, धर्मपरीक्षा ग्रंथसे मिलाया जाय तो सत्य प्रतीत होता है। यही बात ग्रंथोंसे भी मिलती है कि बुद्ध और महावीर एक ही समयमें हुये परन्तु बुद्धका जन्म महावीर स्वामीसे ४२ वर्ष पीछे हुआ। धर्मपरीक्षाके सिवाय अब हम और जैन शास्त्रोंको देखते हैं तो यही समय बौद्धका मिलता है। दर्शनसार ग्रंथ जो कि ९९०में देवनन्दि आचार्यने उज्जैनमें रचा था–लिखा है कि पार्श्वनाथके तीर्थमें बुद्धकीर्त्ति नामक साधु शास्त्रवेत्ता और पिहिताश्रवका शिष्य था। पार्श्वनाथके समयमें सरयू नदीके तटपर पिहिताश्रव नामा मुनिका शिष्य बुद्धकीर्त्ति जिसका नाम था, तपस्या कर रहा था। उस नदीके प्रवाहमें बहुतसे मरे हुये मच्छ बहते २ कांठे ऊपर आ लगे। उनको देख कर बुद्धकीर्त्तिने अपने मनमें ऐसा निश्चय किया कि मरी हुई मछलियोंके खानेमें कुछ दोष नहीं है। ऐसा विचार करके अंगीकार की हुई प्रव्रज्याव्रत छोड़ धर्मसे भ्रष्ट होकर मांस भक्षण किया। और लोगोंको यह उपदेश दिया कि मांसमें जीव नहीं हैं। इस कारण इसके खानेमें भी पाप नहीं है। इस प्रकारकी प्ररूपणा करके उसने बौद्ध मत चलाया और यह भी कथन किया कि सर्व पदार्थ क्षणिक हैं, इस कारण पुण्य पापका कर्त्ता और भोक्ता और है, ऐसा कथन किया। इस प्रमाणको अनेक पंडित स्वीकार करते हैं और कहते हैं कि बुद्ध वास्तवमें जैन साधु था, जिसने ज्ञान भ्रष्ट होकर मांसकी प्रसंशा की और रक्तांबर (लाल वस्त्र) पहनकर अपना मत चलाया। स्वामी आत्माराम "अज्ञानतिमिरभास्कर" नामकी पुस्तकमें उपरोक्त कथाका निम्न श्लोक द्वारा प्रमाण देते हैं।

सिरिपासणाहतित्थे, सरऊतीरे पलासणयरत्थे।

पिहिआसवस्ससीहे, महालुद्धोबुद्धकीत्तिमुणी ।१। तिमिपूरणासणेया, अहिगयपव्वज्जावओपरमभट्ठे। रत्तं वरं धरित्त, पवट्ठियं तेण एयत्तं ॥ २ ॥ मंसस्सणत्थिजीवो, जहा फलेदहियदुद्धसक्कराये। तह्मांतहि मुणित्ता, भक्खंतोणत्थिपाविट्ठो ॥३॥

इत्यादि श्लोकोंसे बुद्धकीर्त्ति पिहिताश्रवका चेला सिद्ध होता है, और पिहिताश्रव पार्श्वनाथके तीर्थमें हुआ। स्वामी आत्मारामजी कवलागच्छकी पट्टावलीका पता स्वामी पार्श्वनाथसे लेकर निम्न लिखित बतलाते हैं। श्री पार्श्वनाथ, श्री शुभदत्त गणधर; श्री हरिदत्तजी, श्री आर्य्यसमुद्र; श्रीस्वामी प्रभसूर्य, श्रीकेशी स्वामी; फिर यह भी बतलाते हैं कि पिहिताश्रव स्वामी प्रभसूर्य्यके साधुओंमेंसे एक था। उत्तराध्ययन सूत्र, और दूसरे श्वेताम्बरीय जैन ग्रन्थोंसे मालूम होता है कि केशी पार्श्वनाथकी मंडलीमेंसे था। और महावीरस्वामीके समयमें विद्यमान था; चूंकि बुद्धकीर्त्ति पिहिताश्रवका चेला था! और पिहिताश्रव प्रभस्वामीका शिष्य था। इसकारण बुद्धकीर्त्ति महावीर स्वामीके समयमें हुआ होगा। इन दोनों जैन ग्रन्थोंसे तथा बौद्ध ग्रन्थोंसे भी यही प्रकट होता है कि बौद्ध महावीर ही के समयमें हुआ। अब मैं अपने जातिके विद्वज्जनोंसे प्रार्थना करता हूं कि बौद्धजैनग्रन्थोंसे इसका समय निर्णय करें ताकि कई अंग्रेज विद्वान् यथा बुहलर (Buhler), जैकोबी (Jacobi) और विल्सन (Wilson), बार्थ (Barth), मेक्स मूलर (Prof Maxmuller) इत्यादि जिन्होंने कि इस प्राचीन जैन मतको बौद्ध मतसे मिलता जुलता देखकर जैनमतको बौद्धमतकी शाखा तथा अन्य मतसे निकला हुआ निरूपण किया है यह कहना कहांतक सत्य है। कितने ही विद्वान् तो चार्वाक् मतके साथ मिला हुआ और कई महावीरस्वामीके समयसे ही प्रचलित हुआ कहते हैं। यथार्थमें उपरोक्त विद्वान् जैनमतसे अनभिज्ञ थे। उनको यथार्थ निर्णय करनेके लिये जैन ग्रन्थ नहीं प्राप्त हुये। इसी कारण उन्होंने जैन धर्मको अन्य मतसे निकला हुआ लिखा है। भ्रातृगण! इस जैन धर्मके विषयमें प्रसिद्ध विद्वान् प्रोफेसर मैक्स मूलर (Prof. Maxmuller)ने, "जैन धर्मपर व्याख्यान" शीर्षक पुस्तकमें जो अपनी राय प्रकाशित है उसको मैं यहांपर पाठकोंके अवलोकनार्थ उद्धृत करता हूं। सन् १८९९ ई. में जब कि उनकी अवस्था ७६ वर्षकी थी, लिखते हैं कि मेरी अवस्था इस समय ७६ वर्षकी है। मुझे अफसोस है कि मेरे लिये इस समय इतना वक्त नहीं है जो कि मैं इस विषयमें सविस्तर वर्णन कर सकूं परन्तु कुछ थोड़ासा मैं आपके सामने वर्णन करता हूं उससे सहजमें ही यह मान सकते हैं कि लोगोंको पुराने भारतवर्षका कैसा मिथ्याहाल मालूम हुआ है। प्राचीन भारतवर्षमें एक ही मत फिलोसफी(Folosophy) नहीं थी, बल्कि अनेक मत और अनेक प्रकारकी फिलोसफी थी। जिनकी संख्या ३६३ या इससे भी अधिक थी। ठीक २ संख्या तो कौन बतला सकता है? ऐसी दशामें कौन कह सकता है कि जैनमत

बौद्धमतकी शाखा, तथा ब्राह्मण मतसे निकला हुआ है। और यह भी किस तरह कह सकते हैं कि जैनियोंने कपिल, कणाद, पतंजली, गौतम, व अन्य महात्माओंकी नकल की है। यह कथन उक्त महाशयने ७६ वर्षकी अवस्थामें किया था। शोक है कि यह महा विद्वान् जैन मतको नहीं जान सके, उनकी सारी उम्र वैदिक और बौद्ध मतके प्रकट करनेमें व्यतीत हुई। इस जैन मतके पढ़नेके लिये समय न मिल सका। इस महाविद्वान्ने एक स्थान पर यह भी लिखा है कि जितना २ अधिक मैंने दर्शनोंका अध्ययन किया उतना ही अधिक विज्ञानवेत्ता विद्वानोंकी सचाईका मुझे विश्वास हुआ कि षट्दर्शनोंमें पारस्परिक भेद होनेके पूर्वकालमें जातीय वा प्रिय तत्वज्ञानकी फिलासफी (Philosophy) सामान्य पूंजी थी अर्थात् तत्वज्ञान संबंधी विचार तथा भाषाका भूतकालमें एक मानसरोवर था जिसमें प्रत्येक ज्ञानवान पुरुष अपने २ मनोरथ सफल कर सकता था। इनके सिवाय बुहलर(Buhlor) और जैकोबी (Jacobi) इन दो विद्वानोंने बौद्धमतके ग्रंथोंको देखकर पीछे यह सिद्ध कर दिखाया है है कि जैन मत बौद्ध मतकी शाखा नहीं है। उन ग्रंथोंमें यह लिखा है कि यह निर्ग्रन्थोंका मत है जो कि बुद्धसे भी पहले मौजूद था। बौद्धग्रंथोंमें महावीर स्वामीको केवल निर्ग्रन्थोंका मुखिया लिखा है। यह नहीं लिखा कि महावीर निर्ग्रन्थ मतके चलाने वाले थे। इस प्रकार बौद्ध ग्रन्थोंसे तथा पाश्चिमीय विद्वानोंकी खोजसे यह निर्विवाद सिद्ध हो चुका है कि जैन मत, महावीर स्वामीसे भी पहलेका था। और इस मतके चलानेवाले ऋषभदेव थे। इस बातके अनेक प्रमाण वैदिक ग्रन्थोंमें भी मौजूद हैं। इस समीचीनताको सिद्ध करनेवाले प्रमाण, वैदिक ग्रंथोंसे किसी समय फिर मैं पाठकोंकी सेवामें अर्पण करूंगा। जिन महाशयोंका यह श्रद्धान है कि बौद्धमत, जैनमतसे पूर्वका है या जैनमत इस बौद्धमतकी एक शाखा है वे महाशय इस भ्रम कल्पनाके उपरोक्त प्रमाणोंसे अपना भ्रम निवृत्ति कर सकते हैं। यह अल्प लेख मैंने पुस्तकोंसे सर्व साधारण जनताके लाभार्थ लिखा है। मैं आशा करता हूं कि विद्वज्जन इसे पढ़कर विचार करेंगे और इस प्राचीनताको अन्य दर्शनोंसे स्वयं अनुभव करके स्वतः विचारोंको जैन समाचारपत्रोंद्वारा प्रसार करेंगे। उन्नतिपथप्रदर्शक अनुभवी महानुभावोंको इस ओर ध्यान देना परमावश्यक है। इत्यलम्।

બોધ !

અરે ! શિર ભાર, ધર્યો અવતાર;
જુવાનીના મદ્ય મદમાં (૨) અરે !
'વહે જીન્દગી,' સમયવર્તી;
નીંદાળી જો—જુવાનીમાં (૨) અરે.
ખેલે ખોયું બાળપણુ, જુવાની મદમાંજ ગયું.
જરા જોવામાં આવશે, ધર્મ નહિ સમજાયું.
હવે જાગી, વિરાગ લાગી, ભરી લે હૈ ભાતુંજે;
કરે વિચાર, સારાસાર, કિનારે પહોંચશે તો નાવ. અરે

સ્નેહયોગી.

सेठीजीका कष्ट।

जयपुर जेलसे छूटकर सेठीजी वेल्लोर फेंक दिये गये और उनका परिवार उनके साथ रखा गया, परन्तु नीम मीठा नहीं हुआ। अधिकारियोंकी चोटोंसे सेठीजीका छुटकारा नहीं हो सका। बलबलाते तेलसे निकलकर यदि सेठीजी अग्निमें गिरे तो लाभ ही क्या हुआ। धर्मसेवीका अपराध किसीने आज तक मुंह खोलकर न बताया। धृष्टता यहां तक बढ़ी कि, एक अहिंसाधर्म पालकके कोमल हाथोंमें लोहेकी बेड़ीयां तक पहनायी गयीं। विद्वान्‌को चोर डाकूकी तरह अपना जीवन विताना पड़ा। जिसने अपने जीवनमें कभी किसीका अहित नहीं किया, आज वह भी जेलमें धांसा गया। क्या कहा जाय? बड़ी विचित्र अवस्था है। निर्धन और निस्सहायकी सुनायी न तो शासकोंमें और न प्रजामें ही है। जैनजातिपर उदासीनताका पर्दा पड़ा हुआ है। वह कभी चेतेगी भी नहीं क्योंकि, वह चाहती नहीं कि, धनके सिवा जातिको और कोई उत्तम वस्तु मिले। अभागे सेठीजीके साथ उनकी अबला पत्नी और चार मासूम बच्चोंको भी पिस जाना पड़ा। बेचारोंके दिन कैसे कटते होंगे यह वही विचारे, जिसने कालकोठरीकी हवा खायी हो। अपरिचित स्थानमें मच्छरोंकी शिकार बनते हुए, खांसी बुखारका सामना करते हुए, एक बन्द मकानमें जीवन विताना एक परोपकारी सज्जनकी धर्मपत्नी और बच्चोंके भाग्यमें बदा है। जातिका हृदय यदि इन वातोंको सुनकर भी नहीं पसीजता तो अहिंसा धर्मकी टेर मचानेवाली जाति अब जिन्दा नहीं।

जातिका रत्न बिना किसी कारण क्यों दुःख पा रहा है। इस बातको लेकर जैनसंसार क्यों नहीं आवाज उठाता? क्या कुत्तेकी तरह पेटभर लेना ही जीवनका उद्देश्य है। ढा दिये जायँ वे महल और जड़से उखाड़ दिये जायँ वे बागबगीचे जिनमें मजा लूटनेवाले अपने जाति भाईके दुःख नहीं सुन सकते। सेठीजीके विचार धर्मके अंशोंसे भरपूर हैं। जैनसंसार क्यों नहीं स्वतन्त्र जांच करानेका उद्योग करता। सेठीजी और उनका परिवार क्यों राम सीताकी तरह कठिन वनवास सेवन कर रहा है। यदि जैनी अपने उद्योगसे सेठीजीको न छुड़ा सके अथवा उनकी जांच करानेमें असमर्थ रहे तो यह कलंक कभी न धुलेगा। सेठीजीके कष्ट और उनके परिवारकी वेदनासे हिन्दू हृदय विध जाना चाहिये। ठंडी आहके तीर छाती फाड़कर निकल जाने चाहिये। सेठीजीके हाथोंमें जिसने बेड़ी पहिनायीं वह भी विना कारण बताये कड़ेसे कड़े दंडका भागी है; जब सेठीजी पर फोजदारीका कोई मामला नहीं फिर कैसे दुस्साहस किया जाता है कि, वे बेड़ियोंसे जकड़े जायें। जैनियोंको कर्तव्यशील होकर सेठीजी और उनके परिवारको व्यर्थके कष्टसे मुक्त कराना चाहिये इसीमें जातीय हित है। सरकारको भी असन्तोषकी आग नहीं भभकानी चाहिये। विश्वस्त मनुष्योंसे

वचन लेकर सेठीजीको स्वतंत्रता प्रदान करदी जाय। यदि जयपुर दरबारकी यह करतूत है तो उसे प्रजाके मतका आदर करना सीखना चाहिये। हठ बुरी होती है।

'**विश्वमित्र**' (कलकत्ता) से उद्धृत।



रत्नत्रयकी झांकी।

(ले० पं० उमरावसिंह न्यायतीर्थ।)

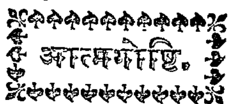
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरणको,
मुक्तिमार्ग सच्चा जानो॥
तत्त्वारथकी दृढ़ श्रद्धाको,
सम्यग्दर्शन पहिचानो॥१॥
अथवा देव, शास्त्र, गुरु श्रद्धा,
सम्यग्दर्शन कहलाती॥
तीन मूढ़ता अष्ट मान बिन,
अंगाष्टक–युत जब भाती॥२॥
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी,
होकर जो उपदेश करे॥
वही हमारा सच्चा स्वामी,
भव–सागरसे पार करे॥३॥
पूर्वापर विरोधसे वर्जित,
जो जग–हित उपदेश करे॥
आप्तरचित अरु कुमत विदारक,
शास्त्र मोक्ष–मारग उचरे॥४॥
विषयोंकी आशा नहिं जिनके,
अरु आरंभ परिग्रह हीन॥
ऐसे गुरु हैं पंच जगतमें,
ज्ञान-ध्यान, तपमें लवलीन॥५॥
देव मूढ़ता, लोक मूढ़ता,
गुरु प्रमूढ़ताको त्यागो॥
देव राग बिन, गुरु कषाय बिन,
जो हो उसमें चित्त पागो॥६॥
पूजा, ज्ञान, जाति, तप, कुल, बल,
वपु ऋद्धीका मद त्यागो॥
मार्दव भाव हृदयमें धरकर,
स्वात्म गुणोंमें चित्त पागो॥७॥
शंका, कांक्षा, विचिकित्सा अरु,
मूढ़ दृष्टिका त्याग करो॥
उपगूह स्थितिकरण प्रभावन,
वत्सलता शुभ भाव धरो॥८॥
जीव अजीव बंध अरु आस्रव,
संवर निर्जर शिव भावो॥
सप्त तत्वका ज्ञान प्राप्त कर,
सम्यग्ज्ञानी बन जावो॥९॥
विभ्रम संशय और विपर्यय,
रहित ज्ञान सच्चा मानो॥
न्यूनाधिकता रहित वस्तु जो,
जैसी हो तैसी जानो॥१०॥
हिंसा, चोरी, झूठ, परिग्रह,
अरु मैथुनका त्याग करो॥
एक देश श्रावक व्रत पालो,
सकल रूप मुनि–धर्म धरो॥११॥
पंच अणुव्रत, तीन गुणव्रत,
अरु शिक्षाव्रत चार धरो॥
पंच पंच अतिचार टालकर,
तीन शल्यका त्याग करो॥१२॥
दर्शन व्रत सामायिक प्रौषध,
सचित रात्रि–भुक्ती त्यागी॥
ब्रह्मचारि, आरंभ–परिग्रह,
अनुमति अरु उद्दिष्ट त्यागी॥१३॥

पूर्व पूर्व युत अग्रिम अग्रिम,
एकादश प्रतिमा धारी ॥
श्रावक अन्त समाधि मरण कर,
करता जीवन सुखकारी ॥१४॥
पंच महाव्रत, तीन समिति अरु,
तीन गुप्ति पालन करके ॥
दशधा धर्म पाल, मुनिव्रत धर,
द्वाविंशति परिषह सहके ॥१५॥
सामायिक छेदोपस्थापन,
अरु परिहार शुद्धि धरके ॥
सूक्ष्म कषाय तथा यथाख्यात,
संयमको पालन करके ॥१६॥
अनन्त चतुष्टय तेरहमें धर,
चौदहमें त्रियोग हरके ॥
अनादि कर्मबन्धनको काटो,
"अमर" सुरत्नत्रय धरके ॥१७॥

बाल विवाहका फल।

माता पिताने मुझको, दुल्हन बनाके मारा।
दो दिन बहार गुल्शन, मुझको दिखाके मारा ॥
अंगमें मेरे था बटना, मातमका वस्त्र लगाया।
बाली उमरमें खूनी, मेहदी लगाके मारा ॥
मैं तोड़ देती कंगना, होना जो होश मुझको।
बस मेरे हाथ कोरा, कंगना बंधाके मारा ॥
हाय हाय शुहागका सुख, मैं देख भी न पाई।
प्रीतम मेरे, सिधारे, मुझको सुनाके मारा ॥
शहरके फूल ताजा, मुरझाने भी न पाये।
जब तक शोहाग मेरा, घोड़ी चढ़ाके मारा ॥
फेरोंकी चोर मैं हूं, अय! धर्म वीर-बेशक।
नहीं और सुख मैं देखा, दुखने हलाके मारा ॥

सूरजभान जैन-अट्टस (आगरा)



आत्मगोष्टि.

प्रातःकालमां एकांत जगह अने शुद्ध चित्ते माला गणी, ए साधनथी मनने एकाग्र करी पछी बार भावनारूप आ आत्मगोष्टि करवी.

(१) हे जीव ! त्हारी आसपास नजर कर. जे जे पदार्थो तुं जुए छे ते अने त्हारा पोतामां कांई तफावत त्हने जणाय छे ? त्हारी आसपासनो दरेक पदार्थ-त्हारी लक्ष्मी-त्हारो वैभव, अरे ! त्हारुं पोतानुं शरीर पण विजळीना परपोटा जेवुं विनाशी छे-अनित्य छे. तुं गमे तेटली रखेवाळ करीश तोपण ते दरेक पदार्थ विनाशी ते विनाशीज छे.

अनित्य छे, नाश पामवानो एनो धर्मज छे. ए सर्व विनाशी-अनित्य वस्तुओना वच्चमां तुं एक अविनाशी-नित्य भूलो पडवाथी आवी च्हडयो छुं माटे ए नाशवंत वस्तुओमां मोह न पामतां तुं अविनाशी एवा त्हने पीछान. आ क्षणना प्रसंगमां न राच.

(२) हे जीव ! जो तुं अविनाशी-नित्य एवा त्हने पीछानवा श्रम नहि ले तो नक्की मानजे के नाश माटेज निर्मायली ए वस्तुओना नाश के वियोगथी त्हने थतां दुःखोमां दिलासो कोई रीते नहीं मळे. अने ज्यारे तुं ए बधी चीजोने छेली सलाम करी हमेशने माटे चाली नीकळीश त्यारे तने शरण आपवा कोई नहीं नीकळी आवे. अविनाशी एवा 'पोता'ने अथवा आत्माने जाणवा रूप जे 'धर्म' एज त्हारो सगो थशे माटे शरण सगुं के संबंधी जो त्हारे

जोईतुं होय तो अविनाशी एवा त्हारा आत्माने ज शोधी एना शरणे जा.

(३) हे जीव ! हमणा तुं जे जे वस्तुओमां आनंद मानी रह्यो छे ते वस्तुओ—अने तेथी-पण वधारे खेंचाण करनारी वस्तुओ तुं अनेकवार पाम्यो छे. दरेक चीजना भोक्ता तरीके अने दरेक प्राणीना सगा तरीके सर्व प्राणी पदार्थ साथे त्हें अनेकवार संबंध जोड्यो छे. पण कोई संबंध टकी शक्यो नहोतो. माटे कोई प्राणी के पदार्थना मोहमां दीवानो थई अविनाशी एवा निजरूपने भूलीश नहीं. एवी भूलथीज तुं अपार एवा संसार—समुद्रमां आदि वगरना काळथी भम्या करे छे. अने भ्रमणथी उद्भवतां दुःखो परवश पणे सहन करे छे. माटे ए दुःखोमांथी मुक्त थवुं होय तो संसारमां आवी पड्या छतां विरक्त पुरुष माफक वर्त. जळ कमळवत् बनी जा.

(४) हे जीव ! तुं एकलो छे. एकलो आव्यो हतो अने एकलोज जईश. एक घर छोडी बीजे घेर जती वखत पहेला घरवाळुं कोई पण सगुं त्हारी साथे आव्युं नथी अने आवशे पण नहि. ए सगाने मदद करवा माटे तें करेला पापोनुं फळ भोगववा वखते पण कोई आडो हाथ देवा नहीं आवे; तो एवो राग—एवो संबंध—एवी मैत्री त्हारूं शुं लीलुं करनार छे ? तुं त्हारा पोतामांज मित्र मेळव. निजरूपथीज सगाई कर.

(५) हे जीव ? जुए त्हारा शिवाय तुं जे कांई छे ते बधुं त्हाराथी अलगज समजजे. क्षण पण न समजतो के स्त्री त्हारी छे के पुत्र त्हारो छे. लक्ष्मी त्हारी छे के देह त्हारी छे. जो एमज होत तो ए लक्ष्मी त्हारा घरमां आव्या पछी त्हारी हयातिमां बीजुं घर करत? ए स्त्री परलोक तो दूर रह्युं पण काष्ठ सुधी पण त्हारी सोबत करवामांथी जात ? आ प्रत्यक्ष जोवाता खेल शुं एम नथी स्पष्ट समजावता के त्हारे आ इंद्रजाळथी निजरूपने अलगज मानवुं अने एमां लिप्त न थतां निज रूपमां दृढ रहेवुं ?

(६) हे जीव ! तुं कोने माटे दगा फटका करे छे ? आ रुपाळा हाडकांना पुतळाने पोषवा माटे ? जो तो खरो के आ पुतळुं गंधातुं छे—मळमूत्रथी भरेलुं छे—क्षण क्षणमां बगडी जाय छे—रोग जरानुं निवास धाम छे. हवे एने साचवी साचवीने केटलुंक साचवीश ! 'खातर ऊपर दीवेल' करतां जरा तो विचार कर, तुं त्हेने साचववा, सुंदर करवा, हृष्टपुष्ट करवा हजारो प्रपंच करे छे, हजारो प्रकारनी हिंसा करे छे; पण ते छतां ते तो त्हने दगोज दे छे. त्हारा खरा खप वखते ते त्हारी मरजी विरूद्ध लथडी पडे छे अने त्हने फसावे छे. हवे जो त्हारामां बुद्धि होय तो जेटली काळजी ए गुणचोर हाडपिंजर माटे धरावे छे, तेटलीज त्हारा पोता माटे—आत्मा माटे राखे तो अखुट गुप्त खजाना त्हारे माटे खुल्ला थाय ए निःशंक वार्त्ता छे.

(७) हे जीव ! राग—द्वेष—अज्ञान—मिथ्यात्व इत्यादि "आश्रव" अथवा त्हारा आत्मस्वरूपने मलीन करनारां "खळगाट" छे. प्रतिक्षण त्हने ए नवां कर्मोनो लेपो

नांखतांज जाय छे. एनाथीज तुं छाकटानी माफक वर्त्ते छे. एनाथीज भव भ्रमण करवा छतां तुं पोताने सुखी मानवानी मुर्खाई करे छे. माटे ए चीकणा वळगाटने ओळख,—प्रथम ओळख. एमना स्वभावथी वाकेफ था अने पछी ए लागेला वळगाटने दूर करवाना तथा हवे पछी न लागे तेवा उपाय,—उप-भोग—परिभोग आदिनी तृष्णा कमी कर. इच्छाओने मर्यादाथी बांध; जे कांई त्हारी पासे छे त्हेनो मोह ओछो करी परमार्थ एज त्हारुं सर्वस्व मान के जेथी 'आश्रव' नो मेलो वळगाट घणे दरज्जे मोळो पडे.

(८) हे जीव! जो त्हने खचीतज एवी श्रद्धा बेठी होय के रागद्वेषथी नवा कर्मोनी आवक हमेशां त्हारामां चालीज आवे छे तो ते आवकने रोकवा ज्ञान—ध्यानमां आरुढ था। ज्ञान—ध्यानमां आरूढ थयेलो आत्मा सिंह समान देखाव धारण करे छे, जेथी विचारां कर्म तेनी आगळ आवी शक्तां नथी. आवी रीते ज्ञान—ध्यानमां आरूढ थवुं एनुं नामज 'संवर' कहेवाय छे.

(९) हे जीव! आत्माने आवती राग—द्वे-पादि कर्मोनी आवक बंध तो करी पण पूर्वे थई चूकेलां कर्मोनो समूह क्षय कर्या वगर कांई त्हारो मोक्ष छे? ए कर्मोने कापवा—निर्जरवा तप-संयम रूप 'निर्जरा'नुं शरणुं त्हारे लेवुं जोईए छे. निर्जरा माटेज तप करनारो माणस मान मागतो नथी, कीर्त्ति के धन इच्छतो नथी, लोकलज्जाने गणकारतो नथी, मात्र आत्मार्थेज क्रिया करे छे अने ते क्रिया ज्ञान साथे करे छे. ज्ञान सहित क्रियानुंज नाम "निर्जरा छे."

(१०) हे जीव! आ प्रमाणे आवतां कर्मोने रोकी, थयेलां कर्मोने निर्जरी, हवे तुं चौद राजलोकनुं स्वरूप विचार. असंख्यात द्वीपसमुद्रनो ख्याल दृष्टि समक्ष लाव; अने पछी जो के आटला विशाळ अवकाशमां त्हारूं घर के तुं शा हिसाबमां छे? असंख्यात द्वीप समुद्रनी कुदरतनी वळी विचित्रता विचार अने एमां तल्लीन थई तुं देहाध्यास अने हुंपद छोड.

(११) हे जीव! वैराग्य प्राप्त करावनारी उपली १० भावना भाव्या पछी तुं विचार के हवे शांत पडेला त्हारा जीवे शुं करवा जेवुं छे अने शुं छोडवा जेवुं छे? आ निर्णय त्हने "सम्यक्त्व" वगर थई शकवानो नथी. सम्यक् एटले साचा ज्ञान विना त्हारो आत्मा दोरा वगरनी सुई माफक पाप पूंजमां-अज्ञानमां खोवाई जाय छे अने जशे, माटे सम्यक्त्व प्राप्त कर. एज सम्यक्त्व भावनाथी भरते मोक्ष प्राप्त कर्युं छे.

(१२) हे जीव! ज्ञान पाम्यो पण ते सार्थक तो त्यारे कहेवाय के ज्यारे ज्ञानने व्यवहारमां मूके अर्थात् धर्म आचरे. सर्व प्राणीने पोता समान गणवा जेटली पायरीये आववुं अने सर्वने साता पमाडतां शीखवुं एज धर्मनी साफल्यता छे. माटे एवो उत्तम धर्म धारण कर के जेथी बीजाने साता उपजावनार एवा त्हने अखंड—निराबाध-अमिश्र साता उपजे.

एकेक भावना ज्यारे बेडो पार करवा समर्थ छे तो बारे भावना भाववावाळाना मोक्षमां शुं संशय?

मुनीम धरमचंद हरजीवनदास.
पालीताना।



जिस प्रकार मनुष्योंको सांसारिक कार्योंमें भाग लेनेकी आवश्यकता है, उससे अधिक शारीरिक स्वास्थ्यपर ध्यान देनेकी आवश्यकता है। संसारके प्रत्येक कार्यको वही मनुष्य योग्य रीतिसे संपादन कर सकता है जो कि शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्यसे संयुक्त हो। जो मनुष्य सरोग हैं उनको अपना जीवन भार स्वरूप मालूम होता है। और भी संसारके जितने सुखकार्य्य हैं वे भी प्रायः बुरे ही लगते हैं। वास्तवमें मनुष्यरूपी वृक्षको ठहरनेके लिये निरोगतारूपी जड़की अत्यावश्यकता है। हम जो कि शास्त्रोंमें सुनते हैं कि अमुक मनुष्य इतना बलिष्ठ था, अथवा कान्तिमान था, इसका कारण यही है कि वे उन नियमोंकी तरफ भी नहीं जाते थे जो कि मनुष्यके स्वास्थ्यको हानिप्रद हैं किन्तु इसके विपरीत अर्थात् (१) प्रकृत्यानुसार भोजन करना, (२) शास्त्र विहित नियमोंका पालन करना, तथा (३) स्वास्थ्योपयोगी शास्त्रका अध्ययन करना इत्यादि। इन नियमोंको पालनेसे मनुष्य ऐहिक लौकिक सुखको भोगते हुए पारलौकिक सुखको भी क्रमशः प्राप्त कर लेते थे। यही तो कारण था कि भारतवर्ष पूर्वावस्थामें सब देशोंसे शिक्षा, कलादिमें बढ़ा चढ़ा था। अपनी धनसंपत्तिसे अपने ही को नहीं बल्कि विदेशियोंको भी पोषण करता था। परंतु शोक! और महाशोक! वही भारत आज उन शारीरिक स्वास्थ्योपयोगी नियमोंको न जानकर कितना अधःपतनको प्राप्त हुआ है कि जिसका पारावार नहीं। इसके अतिरिक्त हमारा धन, बल, शरीर भी क्षीण (निःसत्व) होता जा रहा है। शास्त्रोंमें लिखा है कि

'धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम्।'

अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार पुरुषार्थोंमेंसे निरोगता ही श्रेष्ठ है क्योंकि उसके होनेपर ही चार पुरुषार्थोंको कर सकते हैं। मनुष्यका भोजन ही जीवनाधार है। सबसे पहले यह भोजन जब कि मुखके अन्दर जाता है तब उसकी चर्वण करनेकी आवश्यकता पड़ती है। योग्य रीतिसे चर्वण किया हुआ भोजन आमाशय (नाभिस्तनाऽन्तरं जन्तोरामाशयः) में जाकर बहुत जल्दी पच जाता है और वह क्रमशः (रसासृड्मांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राणि धातवः) सप्त धातुओंमें परिणत हो जाता है। यदि वह भोजन योग्य एवं प्रकृत्यानुसार हुआ तो शारीरिक संधियोंको दृढ़ एवं बलिष्टकारी होता है। और यदि मिथ्या हो तो उसके द्वारा ज्वरादि हो जाते हैं। इसीके विषयमें माधव निदानमें लिखा है कि—मिथ्याहारविहाराभ्यां, दोषाह्यामाशयाश्रयाः; बहिर्निरस्य कोष्ठाग्निं ज्वरदाः स्युरस्तऽनुगाः ! अकाले चातिमात्रञ्च, असात्म्यं यच्च भोजनम्, विषमाशनञ्च यत्पूर्वं,

मिथ्याहारः स कथ्यते (२) अशक्तः कुरुते कर्म शक्तिमात्र करोति च। मिथ्याविहार-मित्युक्तं, सदा नैव विवर्जयेत ॥ २ ॥

अर्थात् मिथ्या आहार और विहार इन दो कारणोंसे कुपित हुए वात, पित्त, कफ, आमाशयमें प्राप्त होकर रसादि धातुओंको विगाड़ते हैं और कोठेके अग्निकी गरमीको वाहर निकाल कर ज्वरादि बीमारियोंको पैदा करते हैं।

ज्वर, कोई साधारण बीमारी नहीं है यह धीरे २ बढ़ता हुआ अन्तिम समय असाध्य अथवा कष्ट साध्य हो जाता है। जिस आत्माके ऊपर इसका अधिकार जम जाता है तो यह दुष्ट उस मनुष्यको अपना भोज्य वनालेता है। इसलिये हमारा कर्त्तव्य है कि हम उसके पास ही न जावें। मैं इस वातको जोरसे कहूंगा कि जो मनुष्य पथ्य भोजन करनेवाले हैं और उसके साथ २ व्यायाम भी करते हैं तथा जितेन्द्रिय हैं वे कभी किसी कालमें भी बीमार नहीं हो सकते। किसी ग्रामीण मनुष्य या स्त्रीको वैद्य या डाक्टरकी आवश्यकता नहीं पड़ती क्योंकि उन्होंके योग्य परिश्रमके द्वारा प्रतिदिनका भोजन योग्य रीतिसे परिपक्व हो जाता है और सप्त धातुओं रूप परिणत होकर उन मनुष्योंके शरीरको हृष्टपुष्ट बनाता है। जिन्होंके गृहमें घी दुग्धादिकी कमी नहीं है और जिन्होंको शारीरिक परिश्रम भी नहीं करना पड़ता है ऐसे मनुष्योंको हम सरोग और दुःखित जीवनसे परिपूर्ण देखते हैं इसका प्रधान कारण यदि वास्तवमें देखा जाय तो सिर्फ मिथ्याहार ही है। वास्तवमें जो मनुष्य निरोग होकर जीते हैं उन ही का जीवन कहा जा सकता है। और वे ही मनुष्य वास्तवमें जीते हैं और वे अन्य भवमें जानेके लिये कलेवा भी लेजाते हैं। अलमिति। वारि हंस इव क्षीरं, सारं गृह्णाति सज्जनाः, वादीभसिंहः।

हरप्रसाद वैद्य, स्या० म० काशी।

सेठी अर्जुनलालसे मेरी भेंट।

सेठीजीको नज़रबंद हुए तीन वर्षसे ऊपर हो चुके, परंतु जनताको अभी तक यह भी पता नहीं कि वे नज़रबंद हुए किसके द्वारा। जब भारत सरकारसे पूछा जाता है तब यही उत्तर मिलता है कि इस काममें हमारा कुछ भी हाथ नहीं है, किंतु जैपुर सरकार ही इस बातकी उत्तरदाता है। जब जैपुर सरकारसे पूछा जाता है तो वहांसे कोई उत्तर नहीं मिलता। अबतक जितने नज़रबंद हुए हैं उनमेंसे सेठीजीका मामिला अपने ढंगका बिलकुल नया है। कुछ भी हो इस मामिलेसे अंग्रेजी सरकार सम्बंधित नहीं ऐसी कल्पना नहीं की जा सकती। यदि यह मामिला बिलकुल स्टेटसे ही सम्बन्ध रखता है तब भी अंग्रेजी सरकारको इसमें हस्तक्षेप करना चाहिए। कानूनके अनुसार अन्यायको न रोकना भी अन्याय है। इसी नीतिके अनुसार यदि इस मामिलेमें जैपुर सरकार ही बिलकुल उत्तरदाता है, तब भी अंग्रेजी सरकारको सेठीजीके प्रति जो अन्याय हुआ उसको व्यक्तिगत न समझकर समाजगत होनेसे ख्याल करना ही था, परंतु ऐसा नहीं हुआ।

सेठीजी नवम्बर माससे वेल्लोर सेन्ट्रल जेलमें नज़रबंद हैं। इससे जनता यह अनुमान करती होगी कि इस मामिलेका सम्बन्ध अंग्रेजी सरकारसे ही है, परंतु जैसा हमको वेल्लोरके सरकारी अफ़सरोंसे मालूम हुआ, अब भी यह मामिला जैपुर सरकारसे ही सम्बन्ध रखता है। सेठीजीसे मिलने आदिकी आज्ञा जैपुर दरबार द्वारा ही प्राप्त होती है। सेठीजीका वेल्लोर जाना भी उन नियमोंके आधारपर है जो अंग्रेजी सरकार और रियासतके बीचमें मुद्दत हुए, तय हो चुके हैं।

जनता इस बातके जाननेको बड़ी उत्सुक होगी कि सेठीजीको जैपुरसे **वेल्लोर क्यों भेजा गया** और जानबूझकर उनको इस कष्टमें कि वे **५६ दिनतक निराहार रहें क्यों डाला गया**? इसका कारण सेठजीको स्वयं कुछ नहीं मालूम और न किसी रीतिसे मालूम ही किया जा सकता है।

हम नीचे वह सब मामिला ज्योंका त्यों लिख देना उचित समझते हैं जो ९ जनवरीसे २९ जनवरी तक सेठीजी अथवा उनके कुटुम्ब और जैपुर दरबारके बीचमें हुआ।

९ जनवरीकी शामको हम जैपुर पहुँचे। उसी गाड़ीसे सेठीजीकी स्त्री और बाल बच्चे वेल्लोर जानेके लिए तैयार थे। जैपुर स्टेटकी ओरसे कुछ सज्जन प्लेटफार्म पर उपस्थित थे। सेठीजीके कुटुम्बके जानेके लिए चार सेकेंड क्लास टिकिट खरीद कर स्टेटकी ओरसे उनको दे दिए गए। ये टिकिट सेठीजीकी स्त्री और उनके चार बालकोंके लिए थे। स्टेटने इसका कुछ प्रबंध नहीं किया था कि उनके साथ किसीको जाना चाहिये या नहीं। इसी कारण उनको वे सब कष्ट उठाने पड़े जिनका पहले जिकर हो चुका है। हम उनको दोहरा कर केवल इतना कहदेना उचित सम

ज्ञते हैं कि थर्ड क्लासमें भी विशेष कष्ट सहते हुए १० जनवरीके दुपहरको हम काटपादी स्टेशन पहुँचे, वहां मजिस्ट्रेटकी ओरसे एक सज्जन स्टेशन पर उपस्थित थे और झटकों (इक्कों) का तुरंत प्रबंध हो गया। घंटे भरके बाद हम लोग वेल्लोर पहुँच गए।

ठहरनेका मकान।

यह मकान वेल्लोर बस्तीसे दो मील जेलसे एक फर्लांग इस ओर सड़कके किनारे पर है। यह स्थान थोरापड़ी नामसे प्रसिद्ध है। वास्तवमें यह एक छोटासा गांव है। यहां एक ब्रांच पोस्ट आफिस भी है। उस मकानमें जिसमें सेठीजीका कुटुम्ब ठहराया गया है, चार कमरे हैं। दो कमरे हवादार और दो बिल्कुल बंद हैं। इससे मालूम होता है कि वे बंद कमरे सामान आदिके लिए हैं। इस मकानसे दक्षिणकी ओर एक थोड़ासा स्थान घेरके रूपमें इस मकानसे लगा हुआ है। जब हम पहुँचे थे, तब यह मकान साफ किया जारहा था। इस मकानके पास इधर उधर पानीके छोटे छोटे कुंड हैं जिसकी वजहसे मच्छर बहुत पैदा होते रहते हैं। मकानमें कोई ज़रूरी सामान मौजूद नहीं था। सेठीजीका कुटुम्ब इतनी दूर जानेके कारण घरका ज़रूरी सामान भी नहीं लेजा सका। इसलिए उनको बड़ी दिक्कतमें पड़ना पड़ा और २५ जनवरी तक जब तक हम वहां रहे, वे अपनी दिक्कतोंको किसी प्रकार दूर न कर सके। सेठीजीने स्वयं इन **घरेलू कष्टों**को दूर करनेके लिए वहांके मजिस्ट्रेटको लिख रक्खा है और आशा है कि वे शीघ्र प्रबंध कर देंगे।

यहां पर खाने पीनेकी सभी चीजें बहुत महंगी मिलती हैं। घी ९ छटांक और आटा ३ सेर मिलता है। इधरके लोग आटा बिलकुल इस्तेमाल नहीं करते, इसलिए वह बड़ी मुश्किलसे और कभी कभी बिलकुल नहीं मिलता। उचित खाना न मिलनेसे और मकान योग्य न होनेसे **बच्चोंके स्वास्थ्यपर बुरा प्रभाव** पड़ना प्रारंभ हो गया है। खांसी लगभग सब बालकोंको हो चली है। डाक्टरका अभी तक कोई प्रबंध नहीं हो सका। संक्षेपमें अब सेठीजी नहीं किंतु उनका कुटुम्ब आपत्तिमें पड़ गया और **जैपुरकी जनताके हिसाबसे उनका कुटुम्ब भी नजरबंद हो गया।**

मिलना जुलना।

सेठीजीकी स्त्री उनसे मिल सकती है। बच्चे सवेरे ८ बजेसे १० बजे तक उन्हींके पास पढ़ते हैं। १२ बजेके पश्चात् कोई उनसे नहीं मिल सकता। उनके कुटुम्बके सिवाय और किसीको मिलनेकी आज्ञा नहीं है। हमको सरकारसे आज्ञा प्राप्त करनी पड़ी थी तब उनसे मिल सके थे। ऐसी आज्ञा वे किन नियमोंके आधारपर देते हैं या किसको देते हैं, इसका कुछ पता नहीं, क्योंकि श्रीयुत धनदेव नयनार आर्नी निवासी ९ जनवरीको सेठीजीसे मिलनेके लिए आये थे, परन्तु उनको आज्ञा न मिल सकी। उक्त सज्जन आर्नीके एक प्रतिष्ठित जैन हैं। आर्नी वेल्लोरसे २२ मील है। जब हम इनको वापिस

लौट रहे थे, तब यह भी मालूम हुआ कि मिस हैनकाक एक मिसनरी लेडी भी उनसे मिली थी। हमको नहीं मालूम कि उनको ऐसी आज्ञा कहांसे और किस प्रकार प्राप्त हुई थी। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि सरकार किनको उनसे मिलने देना चाहती और किनको रोकना चाहती है।

हमारी भेंट।

जिस दिन सेठीजीके बालकों इत्यादिकी भेंट सेठीजीसे हुई उस दिन हम साथ नहीं थे। हम दूसरे दिन उनसे मिलनेके लिए पहुँचे। मिलनेके पहले हमारे मनमें भांति भांतिके विचार आते और जाते थे। जैसे ही हम जेलके अंदर पहुंचे, फाटकके पास ही एक कमरेमें जानेके लिए सुपरि० जेलने इशारा किया। हम उसके अंदर पहुँचे ही थे कि सेठीजी दूसरी ओरसे आते हुए मिले। हम शीघ्रतामें कुछ बोलने तक न पाए थे कि **सेठीजीने** तुरंत हमको गलेसे लगा लिया और **आंखोंमें आंसू** भर लाए। हमारी आंखोंमें भी पानी भर आया और कोई एक मिनटके लगभग वे हमको और हम उनको देखते रहे। प्रेमसे कहिए या अच. रजसे हम वार्त्तालाप न कर सके। अंतमें सेठीजीने सुपरि० जेलसे हमारे परिचयके शब्द कहकर इस मौनको तोड़ा और तत्पश्चात् हमसे सेठीजी समाजकी अवस्था और खास खास सज्जनोंकी कुशलक्षेत्र पूछते रहे। उनको **पंडित गोपालदासजीकी** मृत्युका भी कुछ पता नहीं था। इस प्रकार हाल सुनकर उनको **बड़ा दुःख** हुआ और बहुत देर तक **रोते रहे**। इसी प्रकार बहुत देर तक बातें होती रहीं और उनको कई स्थलोंपर बार बार रोना पड़ा। हम नहीं समझते कि हमने उनसे भेंट करके उनको सिवाय दुःख पहुंचानेके और क्या किया?

सेठीजीके विचार।

पहिले दिन तो हम केवल उनके प्रश्नोंका उत्तर देते रहे परंतु उनसे कोई बात न पूछ सके, परंतु चलते समय एकदिन हमको थोड़ासा अवकाश और मिला और हमने उनसे निम्न बातें पूछी थीं:—

प्रश्न १. जैपुरसे यहां आनेमें आपको किसी प्रकारका **कष्ट** तो नहीं हुआ।

उत्तर—मैं कष्ट सहते सहते कष्टको समझना ही भूल गया हूं। हां! यह मैं जानता हूं कि मुझको **जैपुर** कारागारसे **रात्रिको १२ बजे** बाहर मोटरमें बिठलाया गया। **मेरे हथकड़ियां डाल दी** गई और उसी रूपसे मैं स्टेशन सांगानेर (जैपुरसे दूसरा स्टेशन) ले जाया गया। वहां मैं सैकेंडक्लासमें बिठलाया गया। और सरकारी अफसरोंके सुपुर्द हुआ। अबतक राज्यके अफसर मेरे साथ थे। रेलमें जब मैं एक स्टेशन चढ़ चुका, तब मैंने सरकारी अफसरोंसे पूछा कि मैंने ऐसा कौनसा अपराध किया है जो मेरे हथकड़ियां डाल दी गई हैं। बहुत कुछ समझानेके बाद उन्होंने मेरी हथकड़ियां खोल दीं और फिर मैं उसी रूपसे वेलोर लाया गया। जब मैं यहां आया तब **मेरी तबियत कुछ खराब** थी

इसलिये मैं कुछ देर जेलके बाहर ही लेटा रहा। थोड़ी देरके बाद मैं जेलके अंदर दाखिल हुआ और जबसे अबतक जेलकी परिधि ही मेरी दुनियां है।

प्रश्न २–यदि सरकार आपको इस समय छोड़ दे तो आप **आगामी किस कार्य-क्षेत्रमें प्रवेश करेंगे ?**

उत्तर–अब मेरा विचार शिक्षाक्षेत्रमें प्रवेश करनेका नहीं है। मैं आगामी जीवन **धर्मप्रचार**-में विताना चाहता हूँ। मेरी वड़ी अभिलाषा यह है कि मैं अहिंसाधर्मका प्रचार प्रथमतः अपने मुसल्मान भाइयों और तत्पश्चात् ईसाई भाइयोंमें करूं। कुरान मजीदमें ऐसी वहुतसी आयतें हैं जिनसे मुझे अपने कार्यमें बड़ी सहायता मिलेगी। आप जहां तक हो सके शीघ्र अर्वीकी स्वयं शिक्षक पुस्तकें भिजवानेका प्रयत्न कीजिए।

प्रश्न ३–क्या आपने कोई **पुस्तक** लिखी है या लिखनेका विचार है ?

उत्तर–मैंने नोट अलबत्ता किए हैं। पुस्तक कोई नहीं लिखी, परन्तु लिखनेका विचार है। इस विचारकी पूर्ति तबतक नहीं हो सकती जब तक कि मुझको एक गोमट्टसारका पाठी पंडित मेरे साथ रहनेके लिए मुझे न मिल जाय। यदि ऐसी आज्ञा मुझको मिल गई तो मैं यह सेवा करनेके लिए बिलकुल तैयार हूँ।

प्रश्न ४–क्या आप पत्रोंमें **धार्मिक लेख** देनेके लिए तैयार हैं ?

उत्तर–हां, इसके लिए मैं बिलकुल तैयार हूँ।

प्रश्न ५–इस समयकी अवस्थाके अनुसार जैनसमाजका सबसे पहला कर्तव्य क्या होना चाहिए ?

उत्तर–जैनसमाजको इस समय सब कामोंको छोड़कर रेडक्रास सोसायटीका हाथ बटाना चाहिए। इस कार्यके लिए उनको स्वयं अपनी सेवा समिति तैयार करनी चाहिए। उसके मन बल, और धनबलका बिलकुल स्वयं प्रबंध करना चाहिए।

इन प्रश्नोंके अतिरिक्त हम उनसे अनेक धार्मिक शंकाएँ पूछते रहे और उचित उत्तर पाते रहे।

सेठीजीका समय विभाग।

सेठीजी प्रातःकाल उठकर साढ़े सात बजे तक नित्यकर्म और पूजा इत्यादिसे छुट्टी पालेते हैं। साढ़े सात बजेसे दस बजे तक वे बालकोंको शिक्षा देते हैं। १० बजेसे १२ बजे तक वे फिर पूजा करते हैं और तत्पश्चात् भोजन करते हैं। १२ बजेसे शाम तक वे लिखने पढ़नेमें लगे रहते हैं। कविता करनेका उन्हें खास शौक है। वे खड़े खड़े पूजाके समय नवीन पद्य बोला करते हैं। परमात्माकी स्तुति उनके पद्योंका मुख्य विषय रहता है। कभी कभी देशभक्ति पर भी कविता करने लगते हैं परन्तु वे उन सब पद्योंको लिखते नहीं जाते हैं और न ऐसा कर ही सकते हैं। रातको वे बहुत ही कम सोते हैं। विचार शृंखलाके कारण उनको नींद ही नहीं आती। इससे उनको अवश्य नुकसान पहुँचेगा। समाजको

चाहिए कि वह इसका उचित प्रबंध करानेके लिए योजना करे।

सेठीजीके बच्चोंकी शिक्षा।

समाजको यह जानकर प्रसन्नता हुई होगी कि सेठीजीके बालकोंकी शिक्षाका कार्य सेठीजीके हाथमें आगया है; परंतु हमारे लिए यह प्रसन्नताकी बात नहीं है। हम नहीं समझते कि सेठीजी स्वयं इस प्रकार विचारोंमें निमग्न रहते हुए कैसे अपने बालकोंको शिक्षा दे सकेंगे। थोड़ी देरके लिए यह मान लिया जाय कि वे ऐसा कर सकेंगे तब यह तो किसी प्रकार समझमें नहीं आता कि वे उन सब विषयोंको जिनकी आजकलके समय बालकको आवश्यकता होती है, समुचित शिक्षा देसकेंगे। हमने सेठीजीसे स्वयं इस विषय पर प्रश्न किया था तो हमें उत्तर मिला कि वे बहुत जल्दी अपने बालकोंके लिए किसी अध्यापकका प्रबंध हो जानेके लिए प्रयत्न करेंगे।

उपर्युक्त नोटसे समाजको यह भली भांति विदित होजाना चाहिए कि सेठीजीके बालकोंकी शिक्षाका अभी तक उचित प्रबंध नहीं हो पाया। सेठीजी पर हुआ अन्याय उनके बालकोंको भी सहना पड़ रहा है। इसलिए समाजको सेठीजीको मुक्त करानेके लिए और भी जोरके साथ प्रयत्न करनेकी आवश्यकता है।

भगवानदीन—अजिताश्रम, लखनऊ।

कार्यका ढंग (तरीका।)

(लेखक नाथूराम सिंघई लखनऊ।)

कार्यका ढंग उसे कहते हैं जिससे सर्व प्रकारकी असुविधा दूर होजाय। प्रकृतिमें प्रत्येक वस्तु यथास्थान पाई जाती है अतः उसको अपने कार्यमें किसी प्रकारकी बाधा नहीं आती। यदि प्रकृतिमें अनियम कार्य होने लगें तो फिर संसारके नाश होनेमें कुछ भी संदेह नहीं है। इसी प्रकार जिस मनुष्यके कार्य नियम पूर्वक नहीं होते हैं वे नाश हो जाते हैं और ऐसे मनुष्यको कभी सुख वा शांति नहीं मिलती है।

संसारके सम्पूर्ण कार्य केवल एक नियम पर ही अवलम्बित हैं। अनियम कार्य करनेसे किसी व्यापार या सभामें उन्नति नहीं हो सकती। जो उन्नतिका अभिलाषी है और जिसका अंतिम ध्येय उन्नति करना है उसे कभी नियम विरुद्ध कोई कार्य नहीं करना चाहिए।

बहुतसे विभाग ऐसे भी हैं जिनमें नियम विरुद्ध कार्य करने पर भी सफलता होती है परंतु पूर्ण सफलता उसी समय होगी जब कि नियम पर ध्यान दिया जायगा। यदि कोई अनियमित कार्य करने वाला मनुष्य व्यापारमें सफलता चाहता है तो उसको चाहिए कि वह अपने कार्यको किसी योग्य प्रबंधकको सौंपदे जो उसकी त्रुटियोंको दूर करदे और सफलता लादे।

संसारके बड़े बड़े व्यापार नियमसे ही चलते

हैं यदि उनमें तनिक भी अनियम पाया जायगा तो उनकी उन्नति में बाधा पहुँचेगी। जिस प्रकार प्रकृतिके बहुतसे कार्य नियमपूर्वक एक साथ होते रहते हैं उसी प्रकार मनुष्यके भी बहुतसे कार्य एक साथ और एक समय हो सकते हैं, यदि वे नियमपूर्वक किये जायँ। नियम विरुद्ध कार्य करनेवालेका यह विचार रहता है कि यदि कार्य पहिले अनियमपूर्वक किया जाय तो उसमें कोई भी हानि नहीं है; परन्तु उसका अंत ठीक होना चाहिए उसका यह विचार मूर्खताको लिए हुए है क्योंकि जिस वस्तुका आदि ही ठीक नहीं है उसका अंत किस प्रकार ठीक हो सकता है।

जो लोग नियम पूर्वक कार्य करना पसंद नहीं करते वे अपना बहुतसा समय और मानसिक शक्ति नष्ट करदेते हैं। उनका बहुतसा समय वस्तुके ढूंढनेमें ही चला जाता है। यदि नियमपूर्वक कार्य किया जाय तो बहुतसा समय बच सकता है और उस बचे हुए समयमें अन्य कोई कार्य किया जा सकता है। नीच और गंदे मनुष्यके यहां किसी वस्तुका निश्चित स्थान नहीं होता है इसलिए उस वस्तुके तलाश करनेमें ही उनका बहुतसा समय चला जाता है। जब किसी मनुष्यको कोई वस्तु ढूंढने पर भी नहीं मिलती है तो उस समय उसको अत्यंत क्रोध आता है, दांत पीसता है और लाल पीली आँखें करता है ऐसा करनेसे उसकी बहुतसी मानसिक शक्ति नष्ट होजाती है जो यदि किसी कार्यमें खर्च की जाती तो बड़ा ही लाभ होता।

जो मनुष्य नियमपूर्वक कार्य करना जानते हैं उनके समय और शक्ति दोनोंकी बचत होती है। वे कभी किसी वस्तुको नहीं खोते हैं अतः उनको किसी वस्तुके तलाश करनेकी भी आवश्यकता नहीं होती। प्रत्येक वस्तु यथा-स्थान पाई जाती है और अंधेरे या उजेले किसी भी समय उसको ढूंढो तो फौरन मिल जाती है। इस तरह नियमपूर्वक कार्य करनेवाले शांत-चित्त और विचारशील होजाते हैं और वे अपनी मानसिक शक्तिके द्वारा बहुत कुछ लाभ उठाते हैं।

नियममें एक प्रकारकी शक्ति विद्यमान रहती है जिसके द्वारा बड़े बड़े कार्य सुगमतापूर्वक होजाते हैं। नियमानुसार कार्य करनेसे थोड़े समयमें बहुत कुछ किया जा सकता है और उससे उसको तनिक भी परिश्रम नहीं मालूम हो सकता। वह हर समय चैतन्य ही मालूम देगा। ऐसा मनुष्य सफलताकी शिखरपर बहुत जल्दी पहुँच जाता है; परंतु उसका प्रतिपक्षी जो अनियम कार्य करता है, बड़ी गड़बड़ीमें पड़ जाता है। जो मनुष्य प्रत्येक कार्यमें नियमका बड़ा ध्यान रखता है वह अपने अभीष्टको बहुत जल्दी प्राप्त कर लेता है।

जितना एक साधु महात्माको अपने पवित्र व्रतोंका पालन करना आवश्यक है उतना ही आवश्यक व्यावहारिक संसारके कार्योंमें नियमका पालन करना है। यदि मनुष्यको नियम पालन करनेसे उसकी धर्म समाधिमें बाधा पहुँचे तो उस समय वह नियम भंग कर सकता है अन्य किसी भी समयमें नहीं। द्रव्य सम्बंधी

मामिलोंमें भी नियम पालन करना अत्यंत आवश्यक है और जो मनुष्य नियमको पूर्ण-रूपसे पालते हैं वे अपने समय, शक्ति और सम्पत्तिको नाश होनेसे बचा लेते हैं।

मानव समाजकी उन्नति नियमके विना कदापि नहीं हो सकती। थोड़ी देरके लिए साहित्यको ही ले लीजिए, देखिये इसमें कैसे कैसे उत्तम ग्रन्थ पाए जाते हैं, कैसे कैसे छन्द बन्ध मिलते हैं और कैसे कैसे व्याख्यान सुनने-में आते हैं जिनके सुननेसे एक बार हृदय भी दहल उठता है और लीजिए एक मनुष्य अपने अन्तस्थ विचारोंको दूसरों पर प्रकट कर देता है यह सब काहेसे होता है। इन सबका कारण एक नियम ही है। यदि अक्षरोंको नियम-पूर्वक न जोड़ा जाय तो एक मनुष्य दूसरेसे अपने विचार भी प्रकट नहीं कर सकता है।

दश अंकोंको सिलसिलेसे जोड़नेके कारण ही गणितमें बड़ी सफलता प्राप्त हुई है। कारखानोंमें मशीनोंको चलते हुए और उनसे बड़े बड़े काम होते हुए सबने देखा है। उनके द्वारा कठिनसे कठिन कार्य भी आसानीसे हो जाता है। इसका कारण यही है कि उनके कल पुर्जे ऐसी तरतीबसे रक्खे हुए हैं कि जो न तो आपसमें टकराते हैं और न उनसे किसी प्रकारका शब्द ही होता है।

कठिनसे कठिन भी कार्य यदि नियम पूर्वक किया जाय तो आसानीसे हो जाता है। नियम कठिन कार्यको आसान कर देता है छोटे छोटे कार्य भी यदि नियमपूर्वक किये जायँ तो अंतमें उनका बड़ा परिणाम निकलता है।

कार्यमें सफलता प्राप्त करनेका मूल सिद्धांत नियम ही है। इसीके द्वारा संसारके मनुष्य आपसमें मिलकर कार्य करते हैं जब कि उनके सिद्धांत और मन्तव्य विपरीत होते हैं। व्यापार, धर्म, विज्ञान और नीतिमें मनुष्यको नियमकी बड़ी भारी जरूरत पड़ती है क्योंकि इसके विना कार्य ठीक नहीं होता। दो मनुष्योंकी बातचीतको ही ले लीजिए यदि वे वार्तालापके ढंगको नहीं जानते हैं तो उन्हें एक दूसरेके समझनेमें बड़ी दिक्कत उठानी पड़ेगी।

वह मनुष्य बहुत ही थोड़े समय तक जीवित रहता है जो नियम विरुद्ध कार्य करता है। उसी समय ज्ञानकी वृद्धि होती है और तब ही उन्नति होती है जब कि कार्य नियम पूर्वक किया जाता है। नियम पूर्वक कार्यमें किसी प्रकारकी कोई बाधा नहीं आती। जो मनुष्य नियम पूर्वक कार्य करता है अथवा ज्ञान उपार्जन करता है उसका वह कार्य व ज्ञान बहुत बढ़ता है और अंतमें उसकी संतान तकको लाभ पहुंचता है।

प्रत्येक बड़े कार्यका कोई न कोई ढंग अवश्य होता है जिससे वह मशीनकी भांति बराबर चलता रहता है। एक बार एक मेरे प्रतिष्ठित मित्रने मुझसे कहा था कि यदि मैं अपने कार्यको सालभर तक न करूं तब भी यह बराबर होता रहेगा। उसने समय समयपर कई महीनोंके लिए काम छोड़ भी दिया था; परंतु वह बराबर होता रहा।

यदि कार्य नियमानुसार न किया जाय तो मनुष्य कभी सफलीभूत नहीं हो सकता। नियमानुसार कार्य करनेसे मनुष्यको सुख व शांति मिलती है। जो मनुष्य नियमानुकूल नहीं है, जिनका मस्तिष्क इस प्रकार शिक्षित नहीं है और जो विचार करनेमें ढीले और लापरवाह हैं उनकी आदतें और कार्य प्रणाली कभी अच्छी नहीं हो सकती और न वे सुखी रह सकते हैं। वे अपने जीवनको कंखूमय बनाते हैं। यदि वे अपने जीवनको नियमानुकूल बनालें तो जीवनके सारे क्लेश और चिंताएँ दूर हो सकती हैं।

उस मस्तिष्कको अशिक्षित ही समझना चाहिए जो नियमानुसार कार्य करना नहीं जानता। यद्यपि अशिक्षित खिलाड़ी शिक्षित खिलाड़ीकी बराबरी कर सकता है; परन्तु अनियम कार्य करनेवाला जीवनकी दौड़में नियमपूर्वक काम करनेवालेसे बाजी नहीं मार सकता। अनियम कार्य करनेवाले समझते हैं कि प्रत्येक वस्तुसे काम निकल जायगा परन्तु काम बननेके बजाय बिगड़ जाता है और उनको फिरसे प्रारम्भ करना पड़ता है। नियमानुसार कार्य करने वालेका यह विचार है कि अच्छी वस्तुसे ही काम चल सकता है बुरीसे नहीं। इसीलिये जीवनकी बड़ी बड़ी दौड़में ये लोग बहुत लाभ उठाते हैं चाहे वे शारीरिक, मानसिक या नैतिक ही क्यों न हों। जिस मनुष्यको कार्यके समय औजार नहीं मिलते हैं, न संदूककी कुंजी मिलती है और न विचारोंकी ही कुंजी मिलती है ऐसे मनुष्यको खुदबखुद पैदा की हुई आपत्तियोंका सामना करना पड़ता है जब कि उसका व्यवस्थित पड़ौसी प्रसन्नताके साथ अपने कार्यमें सफलता प्राप्त करता है। जो मनुष्य कार्य करनेका ढंग नहीं जानता, यदि उसको अपने कार्यमें असफलता हो तो वह अपने भाग्यको दोष देगा।

कार्यका ढंग एक नियम है। इसीके द्वारा चारित्र, जाति और राज्य बना हुआ है। जो मनुष्य अपने कार्यके ढंगोंमे उन्नति कर रहा है तो समझना चाहिए कि वह कार्य सम्पादनकी शक्ति प्राप्त कर रहा है। अतः प्रत्येक व्यापारीको यह आवश्यक है कि कार्यके ढंगमें तरक्की करे। नियम पूर्वक कार्य करने वाला ही कार्यको बनाता और संभालता है, परंतु अनियम कार्य करनेवाला उसको खराब कर देता है। यदि अनियम कार्य करनेवाला कार्यको ढंगसे किया जाय तो उसकी कार्य करनेकी शक्ति बहुत बढ़ जाय, उत्तम चारित्र हो जाय और कारोबार भी बढ़ जाय।

कार्यमें चुस्ती ही जिन्दादिली कहलाती है। यह एक प्रकारका जोश है जिसमें कार्य शीघ्रतासे हो जाता है। यदि नियमपूर्वक कार्य किया जाय तो इसकी बहुत ही वृद्धि होती है। प्रत्येक सेनाध्यक्षमें इस गुणका होना जरूरी है; क्योंकि यदि कोई अचानक दैवी घटना हो गई या कोई शत्रु सेना सहित चढ़ आया तो वह सेना नायक अपनी रक्षा नहीं कर सकता जिसमें तेजी और चुस्ती नहीं है। वह कभी कार्यमें सफलता प्राप्त नहीं कर सकता।

प्रत्येक व्यापारीको भी इस गुणके प्राप्त करनेकी आवश्यकता है। विचारवान मनुष्यका कर्त्तव्य है कि जो उत्तम विचार उसके मनमें उठे उसके अनुसार कार्य करनेके लिए तैयार हो जाय! काम करनेमें आलस न करे; क्योंकि आलसके समान संसारमें कोई महा शत्रु नहीं है। इसके कारण किसी प्रकारकी भी उन्नति नहीं हो सकती बल्कि अयोग्यता और मूर्खता ही बढ़ जाती है। जो मनुष्य कार्य करनेके लिए तैयार रहते हैं, जिनका मन और मस्तिष्क कार्य करनेमें फौरन लग जाता है और जो कार्यको बड़ी योग्यताके साथ करते हैं, वे ही अंतमें सुखानुभव करते हैं। यद्यपि कार्यकुशल मनुष्य सुखको रंचमात्र भी नहीं चाहते; परंतु सुख उनको अवश्य चाहता है और उनका पीछा नहीं छोड़ता है। ऐसे ही मनुष्योंको सफलता और सुख मिलता है अन्यको नहीं।

व्यापारिक कार्योंमें सफाईकी भी बहुत जरूरत है। यदि नियम पूर्वक कार्य किया जाय तो सफाई अवश्य रह सकती है; परंतु अनियम कार्य करनेसे न तो सफाई ही रह सकती है और न कार्य ही ठीक तौरसे हो सकता है। अनियम कार्यमें भूल भी अधिक होती है जिनके कारण महा हानि उठानी पड़ती है।

यह बात किसीसे भी अज्ञात नहीं है कि मनुष्योंकी आत्मीतामें दयालुता बहुत ही कम पाई जाती है। यह सबसे बड़ा दुर्गुण है और इससे बहुत बुरा असर पड़ता है। बहुत ही मनुष्य ऐसे मिलेंगे जो साफ साफ कहते हैं और जब कभी उनसे किसी बातमें कोई भूल हो जाती है तो उसके माननेके लिए सहसा तैयार हो जाते हैं।

बहुतसे मनुष्य कामको तो ठीक ठीक करनेका पूरा पूरा ध्यान रखते हैं परंतु ठीक ठीक बात चीतका कुछ भी ध्यान नहीं रखते। इसीसे मनुष्यमें पूर्ण योग्यता नहीं आती और न वह बड़े बड़े महत्वके कार्योंको ही कर सकता है। जो मनुष्य अपनी भूलोंको सुधारनेके लिये अपना या अपने मालिकका समय नष्ट करता है वह संसारमें कभी भी उच्चपदको नहीं पा सकता और न वह कभी सुख व शांतिका अनुभव कर सकता है।

संसारमें ऐसा कोई भी मनुष्य दृष्टिगोचर नहीं आता जिसने सफलता प्राप्त करनेमें भूलें न की हों; परंतु उसी मनुष्यको योग्य और विज्ञ समझना चाहिए जो अपनी भूलोंको समझता है और उनके निराकरणके लिये उपाय करता है। ऐसा मनुष्य दूसरेके द्वारा बताए हुए दोषको खुशीसे स्वीकार करता है और उसका बुरा नहीं मानता। जो मनुष्य निरे मूर्ख और अज्ञानी होते हैं वे न तो अपने दोषोंको आप जान सकते हैं न दूसरोंके बतलाने पर उनको स्वीकार करते हैं किंतु बतलाने पर बुरा ही मानते हैं।

जो मनुष्य उन्नतिशील है वह अपनी ही भूलसे नहीं; किंतु दूसरोंकी भूलसे भी लाभ उठाता है। वह सदा व्यवहारके द्वारा नेक सलाहकी परीक्षा कर लेता है और नियमोंर

ठीक ठीक तौरसे चलनेकी बड़ी कोशिश करता है। कार्यमें यथार्थतासे ही पूर्णता प्राप्त होती है। जिस मनुष्यको ठीक ठीक तौरसे काम करना आ गया, बस समझो कि उसने योग्यता प्राप्त कर ली है।

मनुष्यके कार्यमें लाभका होना ही इस बातका प्रमाण है कि उसने अपने कार्यको कायदेके अनुसार किया है। यदि परिश्रम ठीक तौरपर किया जाय तो उसका प्रतिफल अवश्य मिलता है। यदि बागका माली अपने बागसे अच्छी पैदावार चाहता है तो उसको चाहिए कि वह बीजको ठीक समयपर बोवे और ठीक समयपर काटे यदि वह सबसे अच्छी उपज चाहता है तो ठीक समयको कभी हाथसे न जाने दे। इसी प्रकार जो मनुष्य किसी कार्यमें सफलता प्राप्त करना चाहता है उसे चाहिए कि वह कार्य ठीक ठीक और उचित समय पर करे।

यदि मनुष्य अपने कार्यका अंतिम परिणाम अच्छा देखना चाहता है तो उसको भरसक प्रयत्न करना चाहिए। जिन मनुष्योंको व्यावहारिक ज्ञान नहीं होता वे प्रायः ऐसे ऐसे विचार रखते हैं कि जिनका व्यवहारसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं होता। जिस मनुष्यको कार्यके द्वारा अपनी शक्तियोंका ज्ञान हो गया है वह अपनेको व्यर्थके वितंडावादसे बचाता है और अच्छे कार्यमें लग जाता है।

जो बात व्यवहारमें नहीं आ सकती उसका कभी भी विचार न करो। जिस मनुष्यको व्यावहारिक ज्ञान नहीं है यदि उसको किसी कार्यमें असफलता हो तो इसमें आश्चर्य ही क्या है।

जब मनुष्यके विचार कार्यरूपमें परिणत हो जाते हैं तो उस समय उसकी कला, शक्ति ज्ञान और शांतिकी वृद्धि होती है। जितना ही मनुष्य समाजसेवा करता है उतना ही उसे सुख मिलता है। मनुष्य जितना ही अधिक करता है उतनी ही अधिक उसकी योग्यता जाहिर होती है, किंतु बातोंके पुलावसे कुछ भी नहीं होता।

यदि कोई व्यक्ति अपने उत्तम विचारोंके अनुसार काममें लग जाय और उसको तन मनसे करना प्रारम्भ कर दे तो उसे अवश्य सफलता होगी और स्थायी सुख मिलेगा और वही जीवनके युद्धमें ठहर सकेगा।

नियम पूर्वक कार्य करना जानते हैं जो पुरुष,
सफलता होती उन्हींको कहत हैं यह सत्पुरुष॥
नियम ही के सबबसे अंग्रेज इतने बढ़ गए,
नियम बिन ही भारती कर्त्तव्यपथसे गिर गए॥
उन्नति यदि तुम चाहते हो देशवासी भाइयो,
तो नियमपर दृढ़ रहो तब नाथको अपनाइयो॥

'नाथ'

समस्त सुखोंका केन्द्र है–प्रेम!

(लेखक–पं० लोकमणि जैन, गोरेगांव)

प्रेमकी शक्ति अकथनीय है। जिन्हें उच्चतम, पूर्ण सुखी बननेकी तीव्र अभिलाषा लगी रहती है उनके लिये 'प्रेम' करना समन्ततः अवलम्बनीय है। बड़े २ पर्वत, नदी, तालाब, समुद्र एक प्रेम शक्तिसे ही पार किये जा सकते हैं। संसारकी अमूल्य, दुष्प्राप्य, सर्वश्रेय वस्तुएँ प्रेमसे खरीदी जा सकती हैं। सबको अपना बनानेमें प्रेमसे बढ़कर संसारमें दूसरी चमत्कारी बूटी नहीं है।

प्रेमान्वित हृदय सम्पूर्ण रत्नोंका भंडार है। समस्त गुणोंका सुरभित संस्थान है। अनेक विपत्तियोंका मर्दन करनेवाला सबको शान्तिपथ प्रदर्शक तथा चन्द्रकी तरह जगतका आतापहारी है। प्रेम विहीन हृदय शुष्क काष्ठकी तरह है, जो शीघ्र ही जलाया जा सकता है। प्रेम रहित जीवन मरुभूमि है, जहां पथिकगणोंको शान्ति पहुंचानेवाले समीरुह नहीं पैदा हो सकते, जहां पशुपक्षी गण अपनी तृषाको नहीं बुझा सकते, जहां शान्तिमय मेघोंकी धारा नहीं गिरती, जहां सुरभित पुष्पावली जगतको सर्वानन्दमयी सुरभि नहीं वितरण कर सकती। प्रेमविहीन हृदय सर्वापत्तियोंका निंद्य स्थान है, समस्त दुर्गुणोंका निवासस्थान है। समस्त शत्रुओंका उत्पादक है, सर्व सुख रहित है, स्वयं दुःखी और संसारको दुःखी बनानेवाला है।

प्रेमसम्पन्न व्यक्तिको क्रोध, मान, माया, लोभादि शत्रु बाधा नहीं डाल सकते। सिंहादि क्रूर जीव क्रूरता करनेमें हिचकते हैं। संकट कभी पास नहीं फटकता, संसार उसे अपना लेता है। देवाङ्गना उसे अपना सर्वस्व बनानेको तरसती हैं। लक्ष्मी उसके गलेमें वरमाला डाल देती है। स्वर्गीय सुख उसे अपना स्वामी बना लेते हैं। प्रेमसम्पन्न व्यक्ति समन्ततः स्वर्णमयी, आनन्दमयी, दयामयी, करुणामयी ही दृष्टि डालता है। उसकी दृष्टिसे पाषाण सुवर्ण हो जाता है। उसका हृदय ब्रह्माकी तरह समस्त लोकको स्थान देनेमें समर्थ होजाता है। बड़े२ समुद्र, वन, दुर्ग सब उसके हृदयमें एक कोनेमें पड़े रहते हैं। सब कल्याणमयी चीजें उसके हृदयमें लीला करनेको दौड़ती फिरती हैं। समस्त शान्ति, क्षमा, धैर्यादि गुण उसमें निमग्न होना चाहते हैं, यहां तककि स्वयं परमात्मन ऐसे हृदयमें अपना मंदिर बनाकर ध्यानस्थ रहनेमें विश्वरूपापीपना सार्थक समझते हैं, कारण कि विश्व तो उसीके हृदयमें भरा हुआ है। तब सब जगतमें व्याप्त होनेकी अपेक्षा तो उसीके हृदयमें व्याप्त होना अच्छा है। पल्लवोंको हरा भरा रखनेके लिये वृक्षकी जड़ोंको सरस बनाए रहनेमें ही बुद्धिमत्ता है।

प्रेम क्या है? प्रेम जीवनका श्रृंगार है। प्रेम गलेका हार है। प्रेम रत्नोंका भंडार है, प्रेम जीवनका सार है, प्रेम निर्मल जलकी धार है, प्रेमका न पारावार है। प्रेम महा बीर है। प्रेम बहुत ही धीर है। प्रेम सुरभित समीर है, प्रेम हृदयका कीर है। समस्त कलंक

धोनेको प्रेम उज्वल नीर है। परमात्माके अभिषेकके लिये प्रेम सुस्वादु क्षीर है। द्वेष-मात्र नष्ट करनेके लिए प्रेम तीक्ष्ण तीर है। प्रेम निरञ्जन है। प्रेम अज्ञानीके नेत्रोंको अंजन है। मलिन भावनाओंको जर्जरित करनेको मंजन है। प्राणियोंको शांति देनेको कुञ्जन है। पति भक्ता पूज्य देवियोंके रमनेको स्वर्गीय नन्दन वन है। दुःख दरिद्रताका भञ्जन है। अनेक आपत्तियोंसे खेदखिन्न हृदयको मनोरञ्जन है।

प्रेम सुख है, प्रेम शान्ति है, प्रेम पिता है, प्रेम जगत् जननी है। प्रेम भ्राता प्रेम ही माता तब प्रेमसे ही मम नाता है।

प्रेममें जाति भेद नहीं, प्रेममें किसीसे घृणा नहीं, प्रेममें कायरता नहीं, प्रेम, ईर्ष्या, कलह, दम्भता, नीचता, दुष्टता, आदि सबसे रहित है। प्रेम ही हमारा शरीर, प्रेम ही चीर, प्रेम खानेको क्षीर है। प्रेमाञ्जन नेत्रोंमें आंजनेमे संसार प्रेममय नजर आता है। उस समय भेदभाव नजर नहीं आते, उच्च नीचका भेद नहीं रहता, जाति पांति सब पीछे हट जाती हैं। मान रहता नहीं, किसीका अपमान होता नहीं। जड़ थल सब प्रेमसे प्लावित दृष्टिगत होता है। बेकार चीज कोई दिखती नहीं, तुच्छता किसीमें भासती नहीं। उद्दण्डता पास दिखती नहीं। दूर कोई नजर आता नहीं, शत्रु कोई दीखता नहीं। जहां देखो वहीं प्रेमके फव्वारे छूटते दिखाई पड़ते हैं।

प्रेम किससे सीखें? प्रेम प्रकृतिसे सीखो, प्रकृतिके जीवोंसे सीखो, प्रकृतिकी प्रत्येक रचनासे सीखो। प्रेम कमल और सूर्यसे सीखो। प्रेम कमल और भौंरेसे सीखो। प्रेम चकवा चकवीसे सीखो। प्रेम चन्द्रकमलिनीसे सीखो। प्रेम उदधि चन्द्रसे सीखो। प्रेम उलूक रजनीसे सीखो। प्रेम पतंग दीपकसे सीखो। प्रेम चुम्बक लोहेसे सीखो प्रेम मयूर मेघोंसे सीखो। प्रेम जल मीनसे सीखो। प्रेम चातक जलबिंदुसे सीखो। प्रेम चकोर चन्द्रसे सीखो। सिखानेके लिये प्रकृतिके समस्त पदार्थ तैयार हैं पर तुम सीखनेको भी तैयार होनेमें शिथिलता न करो। प्रेमका पाठ सीखो और अवश्य सीखो। सीखने योग्य ही है।

प्रेम किसपर करें?–प्रेम दुःखियोंसे करो। प्रेम सुखियोंसे करो। प्रेम राजासे करो। प्रेम रंकसे करो। प्रेम दुष्टसे करो। प्रेम सज्जनसे करो। प्रेम गायपर करो। प्रेम शेरपर करो। प्रेम तुच्छसे तुच्छपर करो। प्रेम बड़ेसे बड़े पर करो। प्रेम कीड़ी पर करो। प्रेम हाथी पर करो। प्रेम मिट्टीसे, पत्थरसे, जलसे, अग्निमे, रात्रिसे, दिनसे, उजेलेसे, अंधेरेसे, उचसे, नीचसे, सबसे प्रेम करो। घरवालोंसे प्रेम करो, बाहरवालोंसे प्रेम करो, देश वालोंसे प्रेम करो, विदेशवालोंसे प्रेम करो, अच्छेसे प्रेम करो, बुरेसे प्रेम करो। चन्द्र सूर्य इस प्रेम करनेके विषयमें अगुवा हैं। स्मशानमें प्रकाश करते, राजमहलमें प्रकाश करते, जंगलोंमें प्रकाश करते, भंगी, चमार, चमोर, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सबके यहां प्रकाश करते और तक प्रेममय प्रकाश करते आए और करते रहेंगे। इसी लिये माना जाता है कि प्रेमका अन्त नहीं,

प्रेमको विश्राम स्थान नहीं, प्रेमका समय नहीं, जितना प्रेम बढ़ता जायगा प्रेमकी सामग्री उससे चौगुनी बढ़ती जायगी। हृदय तुम्हारा उससे भी विशाल और धीर वीर बनता चला जावेगा, प्रेमकी सीमा नहीं है। प्रेम अनन्त है। लोक शान्त, मर्यादित होनेसे ही हम कथंचित् प्रेमको शान्त कह सकते हैं।

प्रेममें कायरता करना बुरा है। आलस, करना खराब है। विपत्तियोंसे डरना अच्छा नहीं, क्योंकि प्रेम उन्नतशील, और औदार्य-गुण विशिष्ट व्यक्तिको ही चाहता है।

प्रेमका ध्येय (लक्ष्य) छोटा नहीं है। प्रेमका ध्येय विश्वको अपनानेका है। शान्ति प्राप्त करनेका, संतप्त हृदयोंको शीतल करनेका, स्वतन्त्रता प्राप्त करनेका, दुखियोंका दुःख हरनेका, कर्म प्रबन्धसे विलग होनेका, आत्मस्वरूप प्राप्त करनेका, सदाचारी, साहसी, वीर बननेका, विश्वव्यापी बननेका, दर्पणवत निर्मल होनेका, जन्मभूमि पवित्र करनेका, विश्वभूमि श्रेष्ठ बनानेका, समस्त दुःख जालोंसे छूट आत्मीय सम्पत्ति प्राप्त करनेका, मोक्ष कन्यासे भाषण करनेका, उसके साथ अनन्तकाल रमण करनेका जो ध्येय है वह प्रेमसे प्राप्य है। यह नहीं कि प्रेमसे किसी ध्येयकी प्राप्ति न हो सके, सबकी प्राप्ति हो सकती है। ध्येय प्राप्तिमें संदेह नहीं है, संदेह है हमें अपने सच्चे विश्वव्यापी प्रेम होनेमें। इसकी पूर्तिमें ध्येयकी पूर्ति है। इसलिये प्रेमी बनिये, प्रेम करना सीखिये प्रेम करिये, प्रेम कराइये और प्रेममें ही लीन हो जाइये। आइये जल्दी आइये। हृदयसे हृदय लगाइये, वैरभाव मिटाइये, संतप्त हृदयोंको प्रेम कटोरेमें ऐक्य रस पिलाइये, तब सच्चे वीर कहलाइये.........

प्रिय प्रेमी गण! धर्मोंमें भेद है तो रहने दो, विचारोंमें भेद है तो रहने दो, जातियोंमें भेद है तो रहने दो, शरीरोंमें भेद है तो रहने दो, आचरणोंमें भेद भी रहने दो और जिन जिन बातोंमें भेद है, रहने दो; पर प्रेममें भेद कभी न रहने दो। ये उपरोक्त भेद भी प्रेम भेदसे ही हो गये हैं प्रेम भेद नष्ट होते ही समस्त भेद नष्ट हो जावेंगे। प्राणियोंकी सामग्री प्रेमसे ही खरा बन सकती है।

अन्तमें मेरी प्रेम प्रार्थना है कि प्राणीमात्र प्रेममें निमग्न हो सुखानुभव करें। विश्वको प्रेम ही प्रेमसे परिपूरित कर देवें और अपना जन्म कृतार्थ करें। प्रेम ही प्रेम संसारमें दिखाई पड़े, बस यही लेखककी भावना है।



તમારી યાદગારીમાં !*

કરી કુરબાન જીન્દગાની, તમારી યાદગારીમાં !
મગર માશૂક! મને આનન્દ! તમારી યાદગારીમાં !

ગુમાવું માન જીગર-જાની, લહું પદવી દીવાનાની !
છતાં માશૂક! મને લાગી! તમારી યાદગારીમાં !

કમાયો ના મજનૂં ખોયું ! નશામાં દર્દ તો વ્હોર્યું !
"અરે! એ તો અતી પ્યારૂં!" તમારી યાદગારીમાં !

તજી આલમ તણી પરવા, અયે! માશૂક! તને મળવા !
કબુલ્યું જે' કહો કરવા, તમારી યાદગારીમાં !

કહાવે, જો કંઇ સંદેશ–નિરાશાનો તજું અંદેશ !
રહું વિચારમાં હમ્મેશ, તમારી યાદગારીમાં !

તમારા નામની તસબીર, ફીરાવું છું ગરિબ પરવર !
કરૂં છું સદી શાદાદવપર ! તમારી યાદગારીમાં !

સ્નેહયોગી.

* ટી. બી. કંથારીયાની કાવ્યબિંદુ અનુકરણે.

वडोदरा राज्यनो ज्ञाति सुधारणानो कायदो.

मेवाडा, हुमड, नृसिंहपुरा अने रायकवाल भाईओने सूचना.

(लेखक. शा. मोतीलाल त्री. मालवी-बाकरोल)

हिंदु समाजनुं प्रजा सत्ताक तंत्र एटलुं बधुं छिन्नभिन्न अने अव्यवस्थित थई पड्युं छे के हालना प्रगति काळमां घणीएक सुशिक्षित व्यक्तिओने ज्ञातिओना नामथी थता गेर इन्साफ, पक्षपात, ममत अने जुलमनो घणी वखत विना कारण भोग थवुं पडे छे. ए कुर्थाद सर्वमान्य होइ तेने पुरवार करवाने वधु दृष्टांतोनी जरूर रहेती नथी. आ उपरथी आवी स्थिति सुधारवा अने ज्ञातिओने नामे थता जुलममांथी निर्दोष व्यक्तिओने सरंक्षण आपवाना शुभ हेतुथी श्रीमंत सरकार महाराजा सयाजीराव गायकवाडनी आज्ञा अने इच्छानुसार गई ता. २२ मार्च सने १९१७नी आज्ञा पत्रिकामां "वडोदरा राज्य ज्ञाति रिवाज संबंधी नियमनो मुसदो" प्रजानी जाण अने सुचना माटे बहार पाडवामां आव्यो हतो. ए पछी बीजाज अठवाडीआमां ते कायदाना संबंधमां प्रजा तरफथी केटलीक अरजो तथा केटलाक वर्तमान (मुंबाई समाचार, सांज वर्तमान, हिंदुस्तान, गुजराती, सयाजी विजय, प्रजा बंधु आदि रोजीदां अने अठवाडीक) पत्रो द्वारा ते कायदानी विरुद्ध अने तरफेणमां केटलीक सुचनाओ साथे पुष्कळ विवेचन करवामां आव्युं हतुं, जे उपरथी श्रीमंत सरकारे तेना केटलाक शुभ हेतुओ अने उद्देशो ध्यानमां लइ तेनी केटलीक आवश्यकताने स्वीकार करी सदर कायदाने फोजदारी कायदाना स्वरूपमांथी फेरवी तेमां केटलोक सुधारो वधारो करी खास तेने माटे जुदो कायदो नहि करतां वडोदरा राज्य (संवत १९५२तो २ जो) दिवानी निबंध सुधारवो इष्ट जणायाथी तेमां केटलोक सुधारो करी संवत १९७३ना दिवानी निबंध १४ नी अंदर १ ली दुरस्ती करी दिवानी काम चलाववाना निबंधनी अन्वये प्रकरण दशनो वधारो करी दिवानी निबंधनी कलम ३४९ पछी नवीन भाग २० तथा कलमो ३६० अने ३६१ मुजब श्रीमंतना हजुर हुकमथी ता ६ सप्टेम्बर १९१७नी आज्ञा पत्रिकामां न्यायमंत्री तरफथी-बहार पाडवामा आव्यो छे ते नीचे मुजब-

भाग २० मो. ज्ञाति संबंधी फरियादो विषे-ज्ञाति संबंधी कया रीतरिवाज बंधनकारक नथी ते नीचे प्रमाणे-

३६० निबंधनी कलम ५ मां जणाव्या प्रमाणे ज्ञाति रिवाज संबंधी प्रश्न जेमां समायेलो छे एवी कोइ फरियादना काममां ते रीत अथवा रिवाज,

क अनीति भरेलो के राजनीति विरुद्ध होय अथवा,

ख ज्ञातिना लोको नी भौतिक अने अभिवृद्धि अथवा प्रगतिने अडचण-कारक होय, जेमके-

(१) तेज पेटा ज्ञातिमां अगर अमुक स्थळ सीमामांज लग्न थइ शके एवो बिन जरूरीआत प्रतिबंध नांखनारो होय अथवा-

(२) पायमाली थाय एवो खर्चाळ होय, अथवा-

(३) देशपर्यटन करवानी स्वतंत्रता उपर बिन जरूरीआत अंकुश मुकनारो होय.

तो ते रीत किंवा रिवाज बंधनकारक गणाय नहि.

अपवाद-परंतु कोइ ज्ञाति पेटाना ज्ञाति रिवाज संबंधी नियम सरकार तरफथी मंजुर करावी ले ते प्रसंगे ते नियमोने अनुसरीने ठराव थइ शकशे.

निबंधनी कलम ९ (२) मुजबनो अखत्यार कोने छे.

३६१ निबंधनी कलमे ९ नी पेटा कलम (२) मुजब फरियाद लेवानो अने तेनुं काम चलाववानो अखत्यार हकुमतवाळी हरकोइ प्रांत न्यायाधिशीने आपवामां आवे छे.

ব্বী. आंबेगांवकर.
न्यायमंत्री.

उपर जणाव्या प्रमाणे ज्ञाति सुधारणा निबंधनो समावेश-दिवानी कायदामां करवामां आव्यो छे, परंतु अपवाद मां जणाव्या प्रमाणे दरेक ज्ञातिए पोतानी ज्ञातिना रीत रिवाजो सरकार तरफथी पहेलेथी मंजुर करावी लेवा जोइए, तो ते नियमोने अनुसरी ठराव थइ शकशे दरम्यान हाल ज्ञातिओ उपर पोताना सवालोना निकाल पद्धतसर अने कायदेसर केम करवा ते जवाबदारी आवी पडेली होवाथी ज्ञातिओए तेने अनुसरीने ते नियमों करवाना कामे मदद थाय तथा ते हेतुओने अवलंबीने ज्ञातिओने इन्साफ केम आपवो ते बाबतनी सुचना मार्गदर्शक जाहेरनामा रुपे ना. दिवान साहेबनी सहीथी ता. ७ सप्टेंबर १९१७ने रोज प्रसिद्ध थयेली तेनो केटलोक सार नीचे मुजब प्रगट करवामां आवे छे.—

१. कायदो गुन्हो माने ते कृत्यने माटे ज्ञातिए शिक्षा करवी नहि. (कोइ कृत्य जे ते वखते अमलमां होय ते कायदा प्रमाणे गुन्हो गणातुं होय तो ते बाबतमां ज्ञाति तरफथी शिक्षा नहि थतां कायदा प्रमाणे शिक्षा करावी जोइए.

२. शिक्षा कृत्यना प्रमाणमां करवी (जे कृत्य बदल शिक्षा करवानी ते ते कृत्यना प्रमाणमां करवी जोइए.)

३. क्षुद्रक कृत्य माटे दरगुजर करवी. (भिन महत्वनुं अगर क्षुद्रक कृत्य कर्युं तो, ते संबंधमां शिक्षा नहि करतां दरगुजर करवी जोइए.)

४. गंभीर स्वरूपनां कृत्यो माटे ज्ञाति बहिष्कारनी शिक्षा करवी. (ज्ञाति बहिष्कृत करवानी शिक्षा विशेष गंभीर प्रकारनी होई ज्ञाति बहिष्कृत थयेला सख्सना वारसा विगेरे कुदरती हकोने हानीकारक होय छे. तेथी तेवी शिक्षा जे कृत्योने माटे करवामां आवे ते कृत्यो पण गंभीर स्वरूपनां होवां जोइए.)

५. धर्मशास्त्रना अनुशासन बहारनी बाबतोमां शिक्षा करवी नहि. (धर्मशास्त्रना अनुशासन बहारनी बाबतोमां ज्ञातिए शिक्षा करवी नहि.)

६. टुंक समयमां चोकशी करवी.

(कोइ कामनी ज्ञातिनी रुइए चोकशी करवानी होय ते चोकशी करवाने कारण उत्पन्न थयुं होय त्यार पछी योग्य टुंक समयमांज करवी)

७. चोकशी विषे राखवानी सावचेती (कोइ चोकशी केवळ द्वेष भावथी अगर ज्ञातिना कोइ सख्सने नुकशान करवाना हेतुथी करवामां आवती नथी. ए विषे खास सावचेती राखवी.)

८. चोकशी न्यायनी पद्धति प्रमाणे करवी. (जे सख्स संबंधे चोकशी करवानी होय ते स्वीकारेली न्यातनी पद्धति प्रमाणे करवी एटले- क. तेना विरुद्ध जे हकीकत होय तेनी तेने लेखी सुचना आपवी. ख. ते हकीकतनो तेना तरफथी योग्य खुलाशो करवा माटे तेने जरूर मुदत आपवी. ग ज्ञातिना लोकोने ठरावेली रीते एकत्र बोलावी तेमना समक्ष ते जे खुलाशो करे अगर पुरावो आपे ते लेवो अने (घ) एकंदर हकीकतनो पूर्ण विचार करी लेखी ठराव करवो.

९. पंच प्रतिष्ठित तथा वाकिफगार होवा जोईए. (कोइ प्रसंगे ज्ञाति विषयक तकरारोनो निवेडो करवानुं काम पंचने सोंपवामां आवे त्यारे पंच तरीके निमेला सख्सो प्रतिष्ठित तथा वाकेफगार होवा जोइए.)

१०. कृत्यमां वर्जननो पण समावेश करवो. (ઉપર દર્શાવેલી કલમોમાં કૃત્યનો બોધ કરનાર શબ્દમાં વર્જનનો પણ સમાવેશ કરવો.)

११. उपरनी सुचना करवानो हेतु-ता. ૬ માહે સપ્ટેમ્બર સન ૧૯૧૭ની આજ્ઞા પત્રિકા ભાગ ૨ના પૃષ્ટ ૪૮ ઉપર પ્રસિદ્ધ કરેલી દિવાની નિબંધ કલમ ૩૬૦ નીચે આપેલા અપવાદમાં જ્ઞાતિઓએ પોતાની જ્ઞાતિના નિયમો સરકારથી મંજુર કરાવી લેવા ઠરાવેલું છે તેથી તેના નિયમો કરવાના કામે જ્ઞાતિઓને મદદ થાય તથા જ્ઞાતિના ઠરાવ વિરૂદ્ધ દિવાની ન્યાયાધિશીમાં દાદ માગવાના પ્રસંગ ઓછા આવે અને કદાચ તેવો પ્રસંગ આવે તો ન્યાયાધિશીને તકરારનો નિકાલ કરવા સુગમ થાય તે માટે ઉપરની સુચનાઓ કરવામાં આવે છે. તા. ૭ માહે સપ્ટેમ્બર સન ૧૯૧૭.

મનુભાઇ એન. દિવાન.

આ કાયદાને આધારે હવે નીચે લખેલી જાતના કોઇ પણ જ્ઞાતિના કાયદા કોઇ પણ માણસને બંધનકારક ગણાશે નહિ.

૧. અનીતિ ભરેલા, ૨. પાયમાલી થાય એવા ખર્ચાળ, ૩. દરિયાપારની (પરદેશગમન) મુસાફરી અટકાવનારા, ૪. રાજનીતિ વિરૂદ્ધ, ૫ શારીરિક ખીલવણી તથા સાંસારિક ચઢતી અટકાવનારા, ૬. આગળ વધવામાં આડખીલા રૂપ બીજા કોઇને અને ૭. પેટા જ્ઞાતિમાંજ અગર અમુક હદમાંજ લગ્ન કરવાની ફરજ પાડનારા. વળી એમ પણ ઠરાવેલું છે કે જ્ઞાતિ સંબંધી પ્રશ્ન જેમાં સમાયેલો હોય તેવી ફરિયાદોની તપાસ કોર્ટો પણ કરી શકશે; વળી બંધનકારક નહિ એવા કાયદા તોડનારનો જો જ્ઞાતિ દંડ લે તો પ્રાંત ન્યાયાધિશી હુકમનામું કરી આપી હુકમનામાની બજવણીમાં તે દંડ ખર્ચ અને નુકશાની સાથે ફરિયાદીને પાછો અપાવી શકશે

નોટ-ઉપર પ્રમાણે હજુર હુકમથી ઠરેલું-હોઇ જ્ઞાતિઓ સંબંધી તકરારો સરકારી અદાલતોમાં ચાલી શકશે. ૬ અપવાદમાં જણાવ્યા પ્રમાણે દરેક જ્ઞાતિએ સદર કાયદાને માન આપી તથા તેને અનુસરી પોતાની જ્ઞાતિના રીત રિવાજો તથા નિયમો સરકાર તરફથી મંજુર કરાવી લીધા હશે તો તેને અનુસરીને જ્ઞાતિને પોતાની તકરારો સાંભળવા અને તેનો નિકાલ કરવાનો અધિકાર સરકારે સ્વીકારેલો છે, જેથી એક રીતે આપણું જ્ઞાતિ બંધારણ હાલની કોલાહલ અવ્યવસ્થા ને ખેંચતાણના જમાનામાં નષ્ટપ્રાયઃ થઇ જવાનાં ચિન્હો દરેક સ્થળે નજરે પડે છે, તે બંધારણને સજીવન ને સુદ્રઢ કરવાની તક દરેક સમાજને પ્રાપ્ત થઇ છે, જેનો લાભ લેવો તે દરેક જ્ઞાતિના હાથમાં છે, તો તે નિયમાનુસાર જ્ઞાતિ બંધારણ ને નિયમોને માન આપી ઇન્સાફ આપવાનું શરૂ કરશે તો કોર્ટ અને અપીલ કોર્ટને જ્ઞાતિ સુધારાના કાયદા સંબંધે સત્તા આપવામાં આવી છે ત્યાં જવાનો પ્રસંગ ઓછો આવશે.

આ કાયદો ગાયકવાડી રાજ્યમાં વસતી તથા તે હદમાં લગ્ન તેમજ જ્ઞાતિમેળા વગેરે પ્રસંગે આવી ન્યાતિ સંબંધે પંચ મારફતે ઠરાવ કરતી હરકોઇ જ્ઞાતિ તથા **સોજીત્રા ખંભાતની આપણી વીસા મેવાડા જ્ઞાતિ**; કલોલ, ડભકા આદિ ગંભાના **નૃસીંહપુરા**; ઓરણ પ્રાંતિજ વિભાગ પૈકી ખેરાળુ દેહગામ, આદિના દશા-વીસા હુંમડ; વ્યારા મહુવાના રાયકવાળ વગેરે આપણી વણીક જૈન કોમને લાગુ છે.

नीचे लख्या प्रमाणेना हानिकारक रिवाजो पैकी केटलाक गुन्हाने प्राप्त थई शके छे.

बाललग्न, कजोडां, कन्याविक्रय, वृद्ध लग्न-आ चारे હાનિકારક રીવાજો માણસાઇ અને નીતિ વિરૂદ્ધ છે. એટલુંજ નહિ પણ અનિતિને ઉત્તેજન આપનાર અને જ્ઞાતિના માણસોની શારિરીક ખીલવણી તથા ચઢતી થવામાં વિઘ્ન રૂપ છે. સરકારે એટલા માટેજ પ્રતિબંધ કર્યો છે તે આપણા હિતને માટેજ છે.

२. बाल लग्न-કન્યાની ઉમર ઓછામાં ઓછી ૧૨ ને વરની ઉમર ૧૬થી ૧૮. તેથી ઓછી

ઊમરે લગ્ન કરનારનો નિબંધની કલમ ૫–પ્રમાણે ગુન્હો ગણી શકાય.

૩. બાળ વેવીશાળ બંધ થવાની જરૂર-આ રિવાજને ટકાવી રાખનાર મિથ્યા કુળાભિમાની. એજ છે. તેઓની માન્યતા એવી છે કે અમારાં બાળકો વખતે મોટા થઇ જતાં કુદરતી ખોડ આવવાથી બદશીકલ કે લુલાં લંગડાં થઇ જાય તો કુંવારા રહી જાય, એવા વિચારથી ઘોડીઆં (પારણાં)માંથી પ્રણાય તો અમો કૃતાર્થ થયા. આવી રીતનાં નાનપણમાં કરેલાં વેવીશાળ કુદરતી ખોડ આવવાં છતાં પણ છુટી શકતાં નથી. આવી રીતે વર વધૂના પ્રેમી જોડાંની જીંદગીનો આરંભ તેમનાં માબાપોના હાથથી થાય છે એટલે વર ન જાણે કન્યા તે શું? અને કન્યા ન જાણે વર તે શું? એવી સ્થિતમાં તેમનાં વેવીશાળ થતાં હોવાથી, તેમજ તેમાં વખતે કન્યાથી વરની ઊમર નાની જોવામાં આવે છે, જેથી આવાં બાળ વેવીશાળ (બાળ વિવાહ) બંધ કરી વેવીશાળ વખતે કન્યાની ઉમર ઓછામાં ઓછી ૬થી ૮ અને વરની ૯–૧૧ નો તફાવત રાખવો. આથી ઓછી ઉમરનાં બાળ વેવીશાળ લગ્ન થતા પહેલાં અટકાવવા તથા તેમાં ફેરફાર કરી યોગ્ય જોડાં સાથે લગ્ન કરવા છુટ આપવી, અને આવાં બાળ વેવીશાળ પણ નિબંધની કલમ ૫ પ્રમાણે ગુન્હેગાર ગણી શકાય.

કજોડાંવાળાં બાળલગ્ન-એટલે કન્યાની ઉમર ૮ થી ૧૦ વર્ષ અને વરની ઉમર ૩૦થી ૪૦. વળી કોઇ વખતે કન્યાની ઉમર ૧૩થી ૧૫ અને વરની ઉમર ૧૦થી ૧૧ સુધી. આવાં લગ્ન કજોડાં વાળાં લગ્ન ગણાય છે. આવાં લગ્ન કરનારે ફોજદારી ગુન્હો કર્યો ગણાય છે. વધતી જતી અનીતિ તથા તેનાં પરિણામ પરિણામને દાબી દેવાને માટે કૃપાળુ સરકારે જે કાયદો કર્યો છે તેને વધારી લઇ તથા તેને અનુસરીને તેવાં લગ્ન વેવીશાળ (વિવાહ) થતાંની સાથે લગ્ન થતા પહેલાં અટકાવવાની જરૂર છે. તેથી ફોર્યદોજ છે. આવાં કજોડાંવાળાં લગ્ન, વિવાહ થયા પછીથી એટલે લગ્ન થતા પહેલાં અટકાવવાની જરૂર છે. આવા કજોડાંવાળાં લગ્ન વિવાહ થયા પછીથી એટલે લગ્ન થતાં પહેલાં બદલી ન શકે તો, તેને નિબંધની કલમ ૫ પ્રમાણે જવાબદાર ગણવા. આવાં લગ્ન વેળાસર અટકાવવાથી જ્ઞાતિમાં પડતી મુશ્કેલીઓ ઓછી થઇ હિંદુશાસ્ત્ર પ્રમાણે બાળ વિધવાને વિધવાપણાનું જે દુઃખ સહેવું પડે છે તે તેનાથી દુર થઇ શકશે.

૫. કન્યા વિક્રય-દુનિયામાં જન સમાજને ઉપયોગી દરેક વસ્તુ જેવી કે ખોરાકી, પોસાકી, પશુ તેમજ બીજી કેટલીક ચીજો પૈસા લઇ વેચવામાં આવે છે તેવીજ રીતે કેટલીક જ્ઞાતિઓમાં સ્વાર્થી મનુષ્યો પોતાની બાળાઓને તેના ભવિષ્યના સુખનો વિચાર નહિ કરતાં કોઇ વધુ પૈસા આપે તેવા અયોગ્ય વૃદ્ધ વર સાથે એક પશુના માફક ઘાતકીપણે લીલામ કરતા જોવામાં આવે છે. ના. બ્રિટીશ સરકારે આફ્રિકામાંથી ગુલામી ધંધો બંધ કર્યો ત્યારે આપણી દયાળુ કોમમાં છાની યા ઉઘાડી રીતે બાળાઓનો વિક્રય થાય છે. ઘણા અફસોસની વાત છે કે–તે વિક્રય બીજા કોઇને હાથે નહિ પણ તેમના માબાપોના હાથથીજ થતો જોવામાં આવે છે. આ કૃત્ય માણસાઇ ને રાજનીતિ વિરૂદ્ધ છે. માટે તેવું કૃત્ય કરનારને નિબંધની કલમ ૫ ની પેટા કલમ ક પ્રમાણે ગુન્હેગાર ગણવો.

૬. વૃદ્ધલગ્ન-પુરૂષની ઉમર લગભગ ૪૫ થી ૫૦ થવા છતાં પહેલી વારની સ્ત્રીને પુત્ર અને પુત્રીની સંતતિ (પ્રજા) હોવા છતાં મિથ્યા કુળાભિમાને કરી ફરીથી લગ્ન કરવાની ખાએસ ધરાવતો હોય તેવા મનુષ્યને નિબંધની કલમ ૫ પ્રમાણે ગુન્હેગાર ગણવો. ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણે કન્યાવિક્રય જેવા આસુરી રિવાજને ટકાવી રાખનાર તથા તેને ઉત્તેજન

આપનાર વૃદ્ધ લગ્નના હિમાયતી મનુષ્યજ છે માટે તે સત્વરે બંધ થવાની જરૂર છે. તેવું કૃત્ય કરનારને કાયદા મુજબ યોગ્ય શાસન મળવું જોઇએ.

७. एक स्त्रीनी हयाति दरम्यान बीजी-એક સ્ત્રીની હયાતિ દરમ્યાન તેને ત્રીસ વર્ષ પુરાં થયા પહેલાં અગર પુત્ર અને પુત્રીના છતા ફરજંદે ખરા કારણ સિવાય તેમજ હયાત સ્ત્રીની મંજુરી મેળવ્યા સિવાય તેમ તેને માટે પુરતો બંદોબસ્ત કર્યા સિવાય બીજી સ્ત્રી કરનારનો ગુન્હો ગણવો.

૮. फरज्यात जमणवारो-જેવી કે લગ્ન પ્રસંગે, સીમંત (અઘરણી) તેમજ મરણ પછવાડેના ફરજ્યાત ખર્ચો જેવા કે-જમણવાર પ્રસંગે આખી ન્યાત જમાડવી, અમુક પછવાડે લહાણું કરવું, અમુક પ્રસંગે અમુક ખર્ચ કરવોજ જોઇએ આવા ફરજ પાડીને કરાવવામાં આવતા ખર્ચો કોઇપણ સખ્સની સ્થિતિના પ્રમાણમાં પાયમાલી થાય તેવો ખર્ચાળ હોય તો નિબંધની પેટા કલમ ૨ પ્રમાણે ગુન્હાને પાત્ર થઇ શકે.

फटाणां विमस्त गीत-આ ખરાબ અને અનીતિ ભરેલો તેમજ ભવિષ્યની પ્રજા ઉપર ઘણી માઠી અસર નીપજાવનારો રિવાજ સત્વરે બંધ થવાની જરૂર છે. એ પણ નિબંધની કલમ ૫ પ્રમાણે ગુન્હો ગણી શકાય.

૧૦. पेटा ज्ञातिमां अगर पेटा समुह अगर अमुक हदमां लग्न करवानी फरज पाडनारो ज्ञातिनो कायदो-હવેથી સરકારના કાયદા પ્રમાણે જ્ઞાતિના કોઇપણ માણસને બંધનકારક ગણાશે નહિ.

૧૧. सास सामी भाणे सपती अने एकज धर्मनी कन्या एटले દરેક જ્ઞાતિની-કોન્ફરન્સ અને સમાજે સ્વીકારેલા નિયમાનુસાર તેવી તેવી જ્ઞાતિની કન્યા લાવનારને ને આપનારને માટે જ્ઞાતિ દંડ યા કોઇ બીજી સજા કરી શકતી હોય તો તે આ કાયદા પ્રમાણે કરી શકે નહિ, અને કદાપિ કરે તો નિબંધની કલમ ૧ પ્રમાણે તેવી રીતનો દંડ યા સજા કરનાર ગુન્હાને પાત્ર થઇ શકશે-આવી રીતે અન્યાય મળવાથી ફરિયાદી હકુમતવાળા પ્રાંત ન્યાયાધિશીમાં અપીલ કરશે તેથી તે ન્યાયાધિશી ફરિયાદીને હુકમનામું કરી આપી-હુકમનામાની બજાવણીમાં તે દંડ ખર્ચ અને નુકશાની સાથે ફરિયાદીને તે પાછો અપાવી શકશે.

૧૨. मरण प्रसंगे अयोग्य अने मर्यादा रहित कोक क्रिया-જેવી કે અમુક વિધવાએ ધણીના મરણ પછીથી ભર બજાર કે જાહેર રસ્તા ઉપર ઊઘાડી છાતીએ કુટવું, મોટે સાદેથી હાયપીટની બુમો પાડી રડવું. અથવા અમુક દિવસ સુધી અમુક રીતે રડવું યા શોક પાળવો યા બીલકુલ ઘરમાંથી બહાર નીકળવું નહિ, આવી ફરજ પાડનારા જ્ઞાતિના રિવાજો શારીરિક શક્તિ તથા તન્દુરસ્તીની હાનિ કરનારા હોવાથી તેમનો કેટલોક યોગ્ય સુધારો કરી તે રિવાજ જેમ બને તેમ ઓછો કરવો.

૧૩. दरियापारनी मुसाफरी (परदेश गमन अटकावनारा-સાર્વભૌમ બ્રિટીશ સલ્તનતની શીતળ છાયા ભારતવર્ષમાં પ્રસર્યા પછીથી આખી દુનીયાના દૂરના મુલકો એટલે યુરોપ, અમેરિકા એશીયા; આફ્રિકા, અને આસ્ટ્રેલીયા વગેરે ખંડોના મુલકો સાથે ભારતવર્ષ વ્યાપાર અને રાજકિય સંબંધથી જોડાયેલો જોવામાં આવે છે. ઉપર જણાવેલા સુધારામાં આગળ વધેલા મુલકોની પ્રજા દિન પ્રતિદિન વ્યાપાર ઉદ્યોગાદિમાં ઉન્નત દશાએ પહોંચતી જાય છે, વેપાર ઉદ્યોગાદિમાં વધારે છુટાપણાના વિચાર ધરાવવાવાળા પરદેશીઓની સામે હરીફાઇમાં ઉતરવાને માટે પરદેશગમનની ખાસ જરૂર છે. હિંદના કેટલાક કેળવાયલા ઉંચી જાતની રાષ્ટ્રિય કેળવણી તેમજ વ્યાપાર ઉદ્યોગાદિને માટે ઇગ્લેંડ, ફ્રાન્સ, અમેરિકા, ચીન, જાપાન આદિ, દરિયાપારના ને દુરના મુલકોમાં જઇ આવ્યા છે તેઓ જાતિથી ભ્રષ્ટ થાય છે એવી વ્યાં

દેશના જુના વિચારના લોકોની માન્યતા હોઇ તેને લીધે તેવા પરદેશગમન કરી આવેલા કેટલાક સુશિક્ષિત કેળવાયેલા સાહસિકોને જ્ઞાતિ બહિષ્કાર વગેરેની શિક્ષા ખમવી પડી છે, અને કેટલાકને તેવી શિક્ષા ખમવી પડેલી, જેથી કોર્ટ મારફતે તેમણે વ્યાજબી ન્યાય મેળવેલો છે, એવાં અનેક દ્રષ્ટાંતો શાસ્ત્રને આધારે સિદ્ધ થઇ ચુકયા છે, જેથી પરદેશગમન કરવાને હવે કોઇ જાતનો બાધ નથી. કદાપિ તેવી બાબતમાં કોઇ વાંધો લે, અગર જ્ઞાતિ બહિષ્કારની શિક્ષા કરે તો તે નિબંધની કલમ ૫ ની પેટા કલમ ૩ પ્રમાણે ગુન્હાને પાત્ર થઇ શકશે.

૧૪. આગળ વધવામાં આડખીલી રૂપ—ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણે કેટલાક જ્ઞાતિ રિવાજો સાંસારિક ઉન્નતિને બદલે અધોગતિએ પહોંચાડનાર ને જૈન સમાજની ચઢતી થવામાં વિઘ્ન તેમજ આડખીલા રૂપ છે. તેને માટે મારો અભિપ્રાય એવો છે કે—

પ્રથમ તો આપણી કેટલીક કોમ સમુહ અને પેટા સમુહોમાં એવી રીતથી વહેંચાઇ ગયેલી છે કે-એક એક જ્ઞાતિની અંદર સો, પચાસ અને પચીસ પચીસ ઘરના દિલગીરી ભરેલી હદ સુધીના સમુહો અને તડ પડી ગયેલાં છે, જે એક બીજા સાથે મિથ્યાભિમાને કરી લગ્ન સંબંધથી જોડાઇ શકતા નથી. આવી સંકુચિત મર્યાદાનું જ્યાં સુધી ક્ષેત્ર વિશાળ કરી એક બીજા સાથે લગ્ન સંબંધથી જોડાઇ શકશે નહિં ત્યાં સુધી બાળ-લગ્ન, કજોડાં, કન્યાવિક્રય, વૃદ્ધ લગ્ન આદિ હાનિકારક રિવાજો અટકી શકશે નહિ. તેને માટે ના. દયાળુ ગાયકવાડ સરકારે જે જ્ઞાત સુધારણાનો કાયદો પસાર કર્યો છે તેને માન આપી આગાઉમાં જણાવ્યા પ્રમાણે જ્ઞાતિ ઉન્નતિને માટે સમુહ અને પેટા સમુહે જોડાવું જોઇ ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણે કેટલાક હાનિકારક રિવાજો આપણી જ્ઞાતિમાં છે તેમાં યોગ્ય સુધારો કરી આપણી જ્ઞાતિના રીત રિવાજો સરકાર તરફથી મંજુર કરાવી લેવા જોઇએ કે જેથી તે નિયમને અનુસરીને જ્ઞાતિ તરફથી તકરારો સાંભળી નિકાલ કરવાનું આપણને સુગમ થાય, તેમજ જ્ઞાતિ તરફની તકરારો કોર્ટમાં જવા પામે નહિ.

હવે આ જ્ઞાતિ સુધારાના કાયદાને અનુસરી દરેક જ્ઞાતિના પંચે ન્યાય કેમ આપવો, તેના સંબંધમાં ના. દિવાન સાહેબની સહી સાથે જે માર્ગદર્શક જાહેરનામું પ્રસિદ્ધ થયેલું છે તેને અનુસરીને ઇન્સાફ આપવાની જરૂર છે.

હવે પંચે ઇન્સાફ કેવી રીતે આપવો તે સંબંધમાં જ્ઞાતિ તરફથી એક કમીટી નીમી તે મારફતે ગુન્હાની તપાસ તથા નિકાલ કેમ કરવો તે નીચે પ્રમાણે—

૧. પંચ પ્રતિષ્ઠિત ને વાકેફગાર હોવો જોઇએ.

૨. દરેક જ્ઞાતિના, દરેક વિભાગના અને ગામના વધુ મતે-મુખ્ય, પ્રતિષ્ઠિત પ્રમાણિક ને વાકેફગાર માણસને પોતાના તરફથી જ્ઞાતિ પંચ (કમીટી) માં નીમવો. આ પ્રમાણે ગામવાર નિમાયેલા મેંબરો નિર્ણિત સ્થળે એકઠા મળ્યા પછી વધુ મતે તે મેંબરો પૈકી જેને વધુ મત મળે તેને સરપંચ નીમવો.

૩. સરપંચે કમીટીના હાજર મેંબર રૂબરૂ જે સાક્ષીઓની જુબાની લેવાની હોય તે દરેકને એકજ જાતના સોગન આપી ગુન્હાની ચોકશી કરવી.

૪. આરોપીને સોગન ખવરાવવા નહિ.

૫. કમીટીના મેંબરો ચાલતા ગુન્હાની ચોકશી કરવામાં મદદગાર થઇ પડે એવા સવાલો સરપંચની મંજુરી મેળવી પુછી શકશે.

૬. તેના તેજ સવાલો ફરીથી વખત ગુમાવનારા અગર નકામા હેરાન કરી કંટાળો આપનારા, તેમજ કોઇની ઇજ્જતને હાની કરનાર સવાલો પુછવા સરપંચ ના પાડશે.

૭. તપાસ પુરી થયે સરપંચે સઘળા હાજી રહેલા મેંબરોના મત લઇ કે કરનો વધુ, મત

મળે તો ગુન્હો સાબીત થયો, એમ કેશમાં લખી સરપંચ તરીકે તારીખ નાંખી પોતાની સહી કરી અને ગુન્હા માટે ઠરાવેલી સજા જણાવવી, એમ કેશમાં લખવું.

૮. કમીટીના મેંબરોએ તપાસ ચાલતી હોય તે દરમ્યાન નકામી ગરબડ કરવી નહિ, કોઇની મશ્કરી યા તિરસ્કાર કરી હલકા પાડવા નહિ પણ એક ગૃહસ્થને છાજે તેવી ગંભીરાઇ ન્યાય અને વિવેક બુદ્ધિથી પક્ષપાત યા અન્યાય ન થવા પામે તેવી રીતે ચોખ્ખા અને પ્રમાણિકપણાથી નિસ્વાર્થપણે ઉમદા સ્વભાવથી જેમ બને તેમ જલદી કામનો પાર આવે ને કોઇપણ ન્યાય ટીકાને પાત્ર ન થાય તેવી રીતે વર્ત્તવું.

૯. સદર કમીટી યા પંચનો કોઇ મનુષ્ય પક્ષપાત રીતે વર્તન કરતો માલુમ પડે તો તેને કમીટીમાંથી દુર કરી બીજા લાયક માણસની નીમણુંક કરવી.

૧૦. કેટલીક જ્ઞાતિઓમાં ગુન્હેગારના ખર્ચે પંચો ભરવાનો રિવાજ છે તે રૂઢિ કાઢી નાંખી પંચ ભેગું મળે ત્યારે તેનો ખર્ચ પંચના ખર્ચેથીજ કરવો. ગુન્હાને માટે કૃત્યના પ્રમાણમાં દંડ લેવો. પણ તે ઇન્સાફ તો જ્ઞાતિના ખર્ચેજ કરવો. તેમજ જ્ઞાતિ પંચે સઘળાને સરખો ન્યાય મળે તેવી સંભાળ રાખવી. ના. દિવાન સાહેબની સહીથી ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણે જે માર્ગદર્શક જાહેરનામું પ્રગટ થયેલું છે, તે મુજબ ગુન્હાના પ્રમાણે યોગ્ય ઇન્સાફ થઇ સજા થવી જોઇએ.

૧. બિન મહત્વનો ગુન્હો માફ કરવો.

૨. દ્વેષભાવથી અગર કોઇને નુકશાન કરવાના ઇરાદાથી ચોકશી કરવામાં આવતી નથી એ વિષે ખાસ સાવચેતી રાખવી.

૩. આરોપી (ગુન્હેગાર) વિરૂદ્ધ જે હકીકત હોય તેની તેને લેખી ખબર આપવી.

૪. હકીકતનો તેની તરફથી યોગ્ય ખુલાશો થવા મુદત આપવી.

૫. જ્ઞાતિના લોકોને ઠરાવેલી રીતે એકત્ર બોલાવી તેમના સમક્ષ જે તે ખુલાશો કરે અગર પુરાવો આપે તે લખવો, અને એકંદર હકીકતનો પૂર્ણ વિચાર કરી લેખી ઠરાવ આપવો.

૧૧. જે જે વખતે પંચની નજરમાં આવે તે વખતે તેટલી રકમનો દંડ પંચવાળાઓ કરી શકે, તેવી રૂઢી બંધ કરી ગુન્હાના પ્રમાણમાં ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણે અન્યાય તેમજ પક્ષપાત થવા પામે નહિ તેવી રીતે ન્યાય આપવો.

૧૨. નહિ વહેંચણ થયેલા પુરૂષની વિધવા માટે હાલની મોંઘવારી ધ્યાનમાં લઇ યોગ્ય રકમનું પલ્લુ કાયમ રાખી પછીથી ખોરાકી પોશાકીની રકમ નક્કી કરી આપવી. તેમ નહિ કરનારને જ્ઞાતિએ યોગ્ય સજા કરવી.

૧૩. ઉપર પ્રમાણે જ્ઞાતિના ગુન્હેગારો પાસેથી આવેલી દંડની રકમ અમુક સદર ઠેકાણે જમે રાખી તેનો ઉપજ ખર્ચનો ચોખો હિસાબ વાર્ષિક રિપોર્ટમાં પ્રગટ કરવો.

૧૪. ઉપર મુજબ દંડની આવેલી રકમમાંથી ½ ભાગ જ્ઞાતિ પંચના ખર્ચને માટે કાયમ રાખાં બીજાં નાણાં-જ્ઞાતિના ગરીબ વિદ્યાર્થીને સ્કોલરશીપ, નીતિ પથે ચાલનાર જ્ઞાતિની ગરીબ વિધવાને ગુપ્ત દાન વગેરે બીજાં જ્ઞાતિહિતના કામમાં વાપરવા.

નોટ—આ સુચના કરવાનો હેતુ એ છે કે—ના. ગાયકવાડ સરકાર તરફથી જ્ઞાતિ સુધારાને માટે જે કાયદો બહાર પડેલો છે તેના અપવાદમાં જણાવ્યા પ્રમાણે ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણેના યોગ્ય સુધારો કરી આપણી જ્ઞાતિના રીત રિવાજો, કાયદેસર રીતે સરકાર તરફથી મંજુર કરાવી લેવાની જરૂર છે કે જેથી તે પદ્ધતિ પ્રમાણે દરેક જ્ઞાતિ પોતાના પંચ મારફતે ન્યાય આપી શકે. તેને માટે આ સુચના આપવામાં આવી છે. જે સર્વેના હિત માટે છે તો તેનું સર્વે જ્ઞાતિ અનુકરણ કરશે એવી આશા રાખું છું. આ સંબંધી વધુ વિગત માટે તા. ૬ અકટોબર ૧૯૧૭ની આજ્ઞાપત્રિકામાં જોવું.

શ્રાવકનાં બાર વ્રતો।

પ્રિય ધર્મ બંધુઓ,

આપણે જો શ્રાવકનું નામ ધરાવતા હોઇએ તો આપણે આપણાં વ્રતો એટલે પાળવાના કાયદાઓ શું શું છે તે ખાસ જાણવુંજ જોઇએ. શ્રાવક કુલમાં આપણો જન્મ થયો એટલે એમ માનવું ન જોઇએ કે આપણે શ્રાવક છિએ. શ્રાવક કોણ ? જે બાર વ્રતોનું પૂર્ણ રીતે માન રાખીને પોતાનું વર્તન કર્યો જાય તેજ શ્રાવક છે. એ પાળનાર પછી ભલે વાણીઓ, બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય વા શૂદ્ર હોય, અરે શૂદ્ર તો શું પણ તે જો કદિ ને ભંગી અગર ઢેડ પણ હોય તો તે વ્રતો ન પાળનાર શ્રાવક કરતાં શ્રેષ્ઠ છે. આ વ્રતો ખાસ શ્રાવકોજ પાળે એવો કાંઇ ઇજારો અપાયો નથી. એ તો જે પાળે તેનાં છે. દરિયાના પાણીનો માલિક કોણ ? ઉપયોગ કરનાર. તેવીજ રીતે આ વ્રતોને અનુસરી જે કર્તવ્ય કરે છે તેજ ખરો શ્રાવક છે. અહા ! પણ જૈની ભાઇઓમાં પણ કેટલાક એવા પડયા છે કે અજૈનો કે જે વ્રતોનું આચારણ કરે છે, આચારણ નહિ તો કાંઇ પોતે છે તેના કરતાં ધર્માનુસાર સ્થિતિમાં રહે છે તેવાને પોતાની નાતમાં પણ લેતા નથી. આ કયાંનો ન્યાય ? હે બંધુઓ ! જે શ્રાવક ધર્મ પાળવાને માંગતો હોય તેને તમે કયાં અળગો કરો છો ? શું ભૂલી ગયા કે પુરાતન કાલમાં જૈન ધર્મ સર્વ વ્યાપક હતો. સર્વે જૈની હતા તે વખતે શું કોઇ નીચ ઉંચ ધંધો નહિ કરતા હતા ? હે બંધુઓ ! આપણા આવા અજ્ઞાનને લઇને આપણે આપણી કોમની ચડતી થતાં અટકાવીએ છીએ. હા ! અફસોસની વાત છે કે આપણા જૈનીઓની સંખ્યા કાલાનુક્રમે ઘટતી જાય છે અને ભય રહે છે કે જો આવાજ વિચાર રાખી બધા બેસી રહે તો આપણી કોમનો નાશ થતાં વાર ન લાગે. જો તમો વૃદ્ધિ કરવા માંગતા હો તો શું તમને આ વિચારો અયોગ્ય લાગે છે ? યોગ્ય લાગતા હોય તો શા માટે અમલમાં મુકતા નથી ? બાર વ્રતો કયાં કયાં છે તેનો હવે વિચાર કરીશું.

વ્રતો બાર છે અને તેનાં ત્રણ ભાગ પાડવામાં આવ્યા છે. તે અણુવ્રત, ગુણવ્રત અને શિક્ષાવ્રત છે. આ ભાગોનાં પણ પેટા ભાગો છે. હવે આપણે પહેલાં વિચાર કરીશું કે અણુવ્રત એટલે શું ? હિંસા, જૂઠ, ચોરી, મૈથુન અને પરિગ્રહ એ પાંચ પાપોનો સ્થૂલપણે ત્યાગ કરવો એને અણુવ્રત કહે છે,

હવે આપણે ગુણવ્રત પર વિચાર કરીશું. મૂલગુણને વધારવા માટે દિગ્વ્રત, અનર્થદંડ, અને ભોગોપભોગ પરિમાણ એ ત્રણ "ગુણવ્રત" છે. મદ્ય, માંસ, અને મધનો ત્યાગ કરવો અને પાંચ અણુવ્રત ધારણ કરવાં એ આઠ શ્રાવકના મૂલગુણ છે.

શિક્ષાવ્રત ચાર છે.–૧ દેશાવકાશિક, (૨) સામાયિક (૩) પ્રોષધોપવાસ, અને (૪) વૈયાવૃત્ત.

આપણે વ્રતો કેટલાં અને કયાકયા એ વિષે જોઇ ગયા છીએ. હવે દરેકને બારિકીથી તપાસીએ

અહિંસા અણુવ્રતનું લક્ષણ.

(૧) અહિંસા અણુવ્રત કોને કહે છે? જે મન, વચન, અને કાયા વડે કરેલો, કરાવેલો અનુમોદના રૂપ વડે ત્રસ પ્રાણી એટલે બે ઇંદ્રિયાદિક ત્રસ પ્રાણીનો ઘાત ન કરવો તેને અહિંસા અણુવ્રત કહે છે. આના પાંચ અતિચાર છે–શરીર છેદવું. બંધનમાં રાખવું, લાકડી વિગેરેથી મારવું, હદથી વધારે ભાર ભરવો, અને ખાવા પીવામાં હરકત કરવી એ પાંચ સ્થૂલ હિંસા લાગવાના અતિચાર છે.

બંધુઓ! આપણો ધર્મ 'અહિંસા પરમો ધર્મ:'નોજ છે. અને તેથીજ અહિંસા એ ધર્મની સીડીનું પહેલું પગથીયું છે. જ્ય

થીએ ચઢતાંજ આપણે વિચારીને પગ મુકવો કારણકે કદાચ અયોગ્ય પગલું મુકાય તો પડી જવાનો સંભવ રહે.

વિચારો કે આપણા (કહેવાતા) શ્રાવક ભાઇઓ કેવી રીતે આ વ્રત પાળે છે?

ગુજરાતી નવલકથા વનરાજ ચાવડામાં તેના કર્તાએ જૈનોપર સખ્ત ટીકા કરી છે. કર્તા જણાવે છે કે "શ્રાવકો નાના જીવને પાળે છે અને મોટા જીવને મારે છે." આ વાત સત્ય કે અસત્ય તે તો દરેક જૈન ભાઇએ પોતાના આચરણ પરજ વિચાર કરી માની લેવું, પણ એટલું તો ખરૂં કે કેવી નજીવી ચીજને મોટી કરી દે છે. પોતાના લખાણને સુંદર બનાવવા અસત્યનું ભાન રાખ્યા વિના કંઇ કંઇ લખી જાય છે.

દાખલોઃ-ભવ્ય મહેલનું વર્ણન કરવા બેસશે તો લખશે કે તે પ્રાસાદના ઉપરના ભાગો ગગન સાથે ગોષ્ટી કરતા હતા. શુ ખુબી? અવાચકને વાચક બનાવવો એ તો જાણે કંઇ છેજ નહિ. આખરે એટલું તો ખરૂ હોય કે એ મહેલ ઉંચો હતો. આવીજ રીતે કદાચ કવિએ તે વખતના જૈનોનું એ પ્રમાણે કંઇક અંશે વર્તન દીઠું તે ઉપરથી ખાસી એક પાનાની દેડકા તથા ઘરડા માણસની વાત લખી મારી. સીધું મરચું સરતું એટલે લખ્યુ, પણ કોણ સત્યાસત્ય જોવા ગયુ? હાલમા એમાંતો કંઇક અંશ આપણામાં ઉતર્યો છે કે નહિ? સાબીતી માટે જુવો આપણી સ્થિતિ.

પાંજરાપોળ-કલાણા શેઠે આજે પાંજરાપોલ ખોલી. પાંજરાપોળ એટલે શું? જનાવરોને રાખવાનું સ્થાન. ના, ના; તેમ નહિ અપંગ જાનવરો અથવા પોષક વગર ભુખે મરતા ઢોરોને પાલન કરનારી સંસ્થા. એક અમેરીકને એક પાંજરાપોળ તપાસી અને પોતાનો મત જણાવ્યો કે-દર્દથી રીબાતા ટુંક સમય માટે જીંદગી નીભાવનારા હમેંશને માટે ખોડ પામેલા ઢોરોને જીવતા રાખી તેમને દુઃખ દેવા કરતાં ટુંક સમયમાં મરી જઇ પોતાનાં દર્દથી મુક્ત થાય એવા ઉપાયો લેવા જોઇએ. અપંગ ગાય કે જે ચાલી શકતી નથી તેને શા માટે રાખવી. આ ક્ષણભંગુર દુનિયાનો ત્યાગ એવા ઢોરોને પહેલો કરાવવો. વાહ! શું ઉમદા વિચાર! ભાઇઓ, કાંઇ એમને સમજાવી શકાશે? કેમ નહિ. એ સાહેબને કહેવું કે તમે તો એમજ માનો છો કે આ દુનિયા છોડી કે થયું. પછી બીજી દુનિયા. અહિં પાછું આવવું છે કોને? પણ અમારા ધર્માનુસાર વેદની કર્મ ભોગવ્યા વગર છુટકો નથી. જ્યા સુધી દુઃખ વેઠવાનું છે ત્યા સુધી તો વેઠવુંજ પડે. અસાતા વેદનીય કર્મનો નાશ થયો કે બસ થયું. જો એ કર્મ પૂર્ણ રીતે ન ભોગવાય તો બીજા જન્મમાં પણ એ ભોગવવાંજ પડે, તો પછી દુઃખીની દયા લાવી સારવાર કરવામા વાંધો શો? આપણે પણ માંદા પડીએ છીએ ત્યારે દુઃખ થાય છે. શું તે વખતે તમે ઝેર અગર ઝેરી ચીજ ખવરાવવા તૈયાર થશો ખરા કે? આવો જવાબ કદાચ તે સાહેબને ન રૂચે કારણ કે કયા વૈરાગી અને કયા રાગી? એમના વિચારો જુદા અને આપણા જુદા. હે ભાઇઓ! તમો પણ તમારા વિચાર પ્રમાણે પાંજરાપોળ સારી કે નઠારી એ વિષે વિચાર કરજો.

પશુ છોડાવવા-પશુને કસાઇના હાથમાંથી બચાવ્યું એટલે જૈનો તો એમજ માને છે કે એને જમથી બચાવ્યું. આપણામાં પર્યુષણના શુભ દિવસોમાં કસાઇ પાસેથી ઢોરો છોડાવા જાય છે. કસાઇઓ પણ ચેતી જાય છે, પણ પર્યુષણ પહેલાંજ અપંગ મરવાની તૈયારીમા રહેલા વિગેરે ઢોરો ખરીદી લાવે છે અને વધ કરવાની જગ્યાએ એવી રીતે ગોઠવે છે કે જાણે હમણાંજ કપાવાના. ત્યાં જૈનીનું જતું થાય, એટલે કસાઇ તો બસ એમજ કહેવાના કે "હમકો તો બેચના હી નહી હૈ." શેઠજી એસા તૈસા કરીને પાંચ પચ્ચીસ ઢોરો છોડાવે અને કસાઇને મ્હોં માગ્યા પૈસા આપે,

આથી તે ભાઇ તવંગર થાય અને એજ મું-ડીમાંથી વધારે જાનવરો લાવી પોતાનો ઉદર નિર્વાહ ચલાવે. વાહ! કેવી દયા? ભાઇઓ! જો તમારામાં શક્તિ હોય તો કસાઇના બધાં ઢોરો ખરીદી લો અને તેનાં છરા અને ઘાતકી હથીઆરો લઇ લો અને તેને બીજે ધંધે લાગવા ઉપદેશ આપો અથવા તમો પોતેજ તેને ધંધે લગાડવાનો પ્રબંધ કરો નહિ તો પછી કસાઇઓને આવી રીતે ઉત્તેજનજ આપ્યા જવાથી લાભને બદલે નુકશાનજ નુકશાન થયા કરવાનું.

પક્ષિ—કેટલાક મુસલમાનો યા વાઘરીઓ પક્ષિઓને પગથી બાંધે છે અને દયાળુ જૈનોને કહે છે કે અમુક રકમ આપો નહિ તો હમણા એને મારી નાંખીશ. શેઠજી ગભરાય છે, ચ્હીડાય છે અને આખરે પૈસા આપી છોડાવે છે. બાપડાં આવાં પક્ષિ ક્યાં લગી જમ જેવાની પાસે રહી એવાં તો ભયથી કંપી જાય છે કે ઉડી જવાં ઉડી જવાં પડી જાય છે અને પાછા દુષ્ટોના હાથમાં સપડાય છે. જો જો આ જૈનોની દયા!

મનુષ્યો પ્રત્યે દયા—એ તો સિદ્ધજ થશે કે જ્યારે અવાચક પશુપક્ષિ પ્રત્યે જૈનો પોતાની આટલી બધી દયા બતાવે છે તો મનુષ્ય જાતિ પર કેટલી બતાવતા હશે. હિંસા કરવી એટલે જીવથી દૂર કરવો એટલુંજ નહિ પણ લાગણી પણ ન દુઃખાવી જોઇએ. આ રીતે તો એવુંજ હોવું જોઇએ કે સર્વે સર્વેની દયા કરે, પણ ક્યાં છે આવી દયા? જુવો કેટલી **વિધવાઓ** દુઃખથી પીડાય છે? ક્યાં બતાવાય છે દયા? દયા જો બતાવાની હોત તો વિધવા ન બને તેવા પ્રથમ પગલાં લેવાય, પણ આપણામાં તો કેટલાક કન્યાવિક્રય કરે છે. જે શેઠ પગુ પક્ષીને છોડાવવા જાય છે તેજ શેઠ જો કે પોતે વયોવૃદ્ધ હોય તોપણ દુનીયાના ભોગો ભોગવવાની લાલસાથી નવી પત્ની મેળવવાની ઇચ્છા ધરાવે છે. દલાલો પણ ક્યાં ઓછા હોય છે? શેઠે દલાલને વાત કરી કે દલાલ આમ તેમ ભમતી ભિચારી નિર્દોષ અજ્ઞાન બાળાને પરણાવી દે છે. અજાણ્યા આવા પતિપત્નીને વરવહુ નહિ પણ **બાપબેટીજ** જાણે. જ્યારે **સ્ત્રી યુવાન** થાય ત્યારે **શેઠજી મરણ** શય્યા પર પડે. ભિચારી બાળા દુનિયાના સુખને સધવા છતાં ભોગવી શકતી નથી અને જ્યારે શેઠજી ગયા કે રંડાય છે. આવા બારીક સમયમાં જો તેઓને કાંઇ ધર્મનો અંશ હોય યા પોતાના મનોબળ પર પૂર્ણ કાબુ હોય તોજ તે નિષ્કલંકિત જીંદગી પસાર કરી શકે છે. આવી તો ભાગ્યેજ હોય છે. વળી કેટલીક વિધવા પોતાનાં દુષ્ટ કર્તવ્યોથી ઉત્પન્ન થયેલાં બાળકોને પાયખાનામાં ફેંકી દે છે. બચાવો બચાવો, દયાળુ જૈનો! આવી હિંસા થતી અટકાવો. જ્યારે નાના જીવને ઉગારો છો ત્યારે આવા જીવને ઉગારવા કેમ આગળ વધતા નથી. શું કાંઇ તમે કરી શકતા નથી? આનો ફક્ત એજ ઉપાય છે કે આવાં કર્તોડાં થતાં અટકાવો. અને પછી કોઇ પાપોદયને લઇને રંડાય તો તે માટે કાંઇ પ્રયત્ન કરો. આવી વિધવાઓ કે જેઓને તેના સાસરીયાં કાંઇપણ તેમની દરકાર રાખતાં નથી અને સખ્ત કામ કરાવે છે, પૂરૂં ખાવાનું આપતા નથી તેમની શું તમે દયા નહિ કરો? અહિંસા પરમો ધર્મઃ ક્યાં ગયો? તેઓને માટે શ્રાવિકાશ્રમોમાં ગોઠવણ કરો. દુરાચારી થતાંને સદાચારી બનાવો. જૈનો! આ પણ તમારોજ ધર્મ છે.

અહિંસાઅણુવ્રતના પાંચ અતિચાર.

આપણે અહિંસા અણુવ્રતના અતીચાર આગળ જોઇ ગયા છિયે. તેમાં આવી ગયું કે છેદવું બાંધવું વગેરે એમ પાંચ અતીચાર છે

છેદવું એટલે કાપવું. કોઇપણ પ્રાણીને કાપવું નહિ. ભાઇઓ, જરા કુતરાના શોખીન લોકોનો આપણે વિચાર કરીશું! તેઓ કુતરાઓના કાન પૂંછડી ઇત્યાદિ કાપી નાંખે છે. શું એ અતીચાર નહિ? કુદરત વિરૂદ્ધ પગલું નહિ? શું કુદરતમાં અક્કલ ન હતી કે? કુતરાને કાન

તથા પૂછડી હોવાથી શું બેડોલ દેખાય છે? ના ના. તેનામાં અક્કલ હતી. પણ હાલની સુધરેલી પ્રજાને બાંડા ગમે છે. ભલા મનુષ્યોના સ્હેજ સ્હેજ કાન કાપ્યા હોય તો કેમ ખરાબ દેખાય? પૂછી જોજો શોખીનોને? પણ મનુષ્યો કયા કાચા છે કે કાન કાપવા દે. એ તો કુતરા કમ અક્કલ કે કાપવા દે છે, પણ નિર્દય રાક્ષસો આગળ ગરીબનું શું જોર?

આજકાલ જ્યાં ત્યાં હોમરૂલ અને સ્વતંત્રતા મંગાય છે તો તેઓ બીજાને કેમ સ્વતંત્રતા નથી આપતા. પોપટ વિગેરે પક્ષિઓ જે વિશ્વના લોકોને મધુર ગાન સંભળાવવા તત્પર રહે છે તેઓને આપસ્વાર્થી પોતેજ એકલા તેનો લાભ લે એવી આશાથી પીંજરામાં પૂરે છે. આ કેટલા વખતની કેદ? જન્મ પર્યંતની. આ પણ એક અતીચાર.

ઘોડાગાડી રાખીને કેટલાક શેઠીઆ આનાં અતીચાર કરે છે. શું પૈસાનો આવોજ ઉપયોગ! હે શેઠીઆઓ! પહેલાં તમો તમારા ઘરમાં તમે જે અતીચાર કરો છો તે બંધ કરી બીજાં કરતાં હોય તે બંધ કરી બીજાં ન કરે તેનો ઉપદેશ દો.

બીજું સત્યાણુવ્રત.

અહિંસાણુવ્રત વિષે જોઇ ગયા છીએ. હવે આપણું બીજું વ્રત શું છે તે વિષે વિચાર કરીશું- બીજું વ્રત સત્યાણુવ્રત છે. સત્ય અણુવ્રત એટલે સ્થૂલ અસત્ય પાપ બોલે નહિ તથા બીજાની પાસે બોલાવે નહિ અથવા જે સત્ય ભાષણથી બીજાને દુઃખ ઉપજે એવું સત્ય ભાષણ પણ બોલે નહિ તથા બીજાને બોલવાને પ્રેરે પણ નહિ. એના પણ પાંચ અતીચાર છે. ૧. ખોટો ઉપદેશ આપવો. ૨. કોઇની છાની વાત પ્રકટ કરી દેવી. ૩. ખોટા દસ્તાવેજ વગેરે લખવા. ૪. સોંપેલી વસ્તુ ભૂલી જવાથી ઓછી આપવી. ૫. મંત્ર ભેદ પ્રકટ કરવો.

૧કત આ વ્રતનું આચારણ કરવાથી સત્યવાદી હરિશ્ચંદ્રને અમર ખ્યાતિ મળી અને તેનું નામ અમર થયું. હે બધુઓ! જો આપણે બારે વ્રતોનું આચારણ કરીએ તો આપણી ખ્યાતિ કેવી થાય? જ્યારે એક વ્રત પાળવાથી દેવતાઓ પણ પ્રસન્ન થયા ત્યારે બારે વ્રતો ધારણ કરવાથી કોણ પ્રસન્ન ન થાય? પણ અફસોસની વાત છે કે એ વ્રત પળાતુંજ નથી. ઉલટું વિપરીત રીતેજ વપરાય છે.

કોઇ ચીજ આપણે જાણતા હોઇએ અને હકાર યા નકાર કરીએ તો જુઠું બોલ્યા એમ શું ન કહેવાય? ધારો કે એક વિદ્યાર્થીએ ચોરી કરી અને જ્યારે તેનો શિક્ષક આવી વર્ગ મધ્યે એમ પૂછે કે આ ચોરી કોણે કરી અને જ્યારે કોઇ બોલે નહિ ત્યારે એમ ન કહેવાય કે તે છોકરો જુઠું બોલ્યો નથી? અલબત તે હડહડતું જુઠું બોલ્યો એમજ કહેવાય.

જુઓ કે ગરીબો તથા વગ વગરના આદમી કેટલા રહેંસાય છે. ખોટી સાક્ષી પુરવી, ખોટા દસ્તાવેજો કરવા એ શું?

કાણાને કાણો કહેવો એ પણ અસત્યાણુવ્રત છે. કોઇ આદમી બહેરો હોય અને તેને બહેરો બહેરો કહી ખીજવવો એ પણ અસત્યાણુવ્રત.

હિંદુસ્થાનની વ્યાપારિક સ્થીતિ જુઓ. કોઇને કોઇનો વિશ્વાસજ નહિ. જો આપણે નજીવી વસ્તુ ખરીદવાની હોય છે તો આપણે કેટલી મુશીબત પડે છે. દુકાનદારને ત્યાં જઇએ અને ભાવ પૂછીએ તો જો બે આનાની કીમત હોય તો કહેશે કે ચાર આના. આપણે પણ ખાત્રી હોય કે એવડો ભાવ ઠોકે છે. આપણે ત્યારે કહીશું કે દોઢ આનો. આખરે પચ દશ મીનીટે એક બે દુકાને ધક્કા ખાધા બાદ આપણે બે આનેજ મેળવી શકીશું. આથી ઉભયપક્ષને ગેરફાયદો થાય છે. વ્યાપારીનો તેમજ ખરીદનારનો અમૂલ્ય વખત જાય છે અને જે વ્યાપાર એક ભાવથી ૧ મીનીટમાં થાય તેજ વેપાર અસત્યથી ૧૦ મીનીટમાં થાય છે. ભલેને લોકો બુમો પાડે કે વખત અમૂલ્ય છે. ગયો વખત પાછો આવતો નથી. દરેક વસ્તુમાં પણ દગો. શા માટે

વિલાયતી છે: ખાસ લંડનમાં બન્યો છે. ઇત્યાદિ પ્રશંસનીય વચનો બોલી ખોટા ધર્મના, ૧બાપના તથા દાદાના સમ ખાઇ નકલી માલ ઘરાકને પોરવે છે. તોલ ખોટા, વચન ખોટાં, માલ ખોટો, ત્યારે ખરું શું? પૈસો. બસ પૈસા ખરા છે કે ખોટા તેનોજ વિચાર કરે. આવી પદ્ધતિ સુધારવાની ખાસ જરૂર છે. એકજ ભાવ અને ચોખ્ખો માલ રાખે તો વ્યાપારીને તેમજ ખરીદનારને સુગમતા પડે અને લાભ પણ વિશેષ મળે: ઇંગ્લીશ દુકાનો જુવો. એકજ ભાવ. લેવું હોય તો લો, નહિ તો ચાલ્યા જાવ. બસ એકજ ભાવ. આથીજ તેઓ ફાવી ગયા છે, માટે ભાઇઓ, હવે તમારાં વ્રત પાળવાનો વિચાર કરો અને હવે તમારી કોમને ઉદયમાં લાવો.

અપૂર્ણ.

मृतमिष्टान्न निषेध।

सुणजो मित्रो मारा आज, मारे करवुं मोटुं काज. टेक.

आज कालमां क्रिया खर्च तो, थाए छे बहु भारी;
काढुं तेने कम्मर बांधी, जे छे चाल नठारी. सुणजो० १.
रात दिवस जे साथे रहीने, मदद करतो भाई;
मुवा पछी तमे खावा बेठा, क्हां गई सगाई. सुणजो० २.
स्वार्थी स्नेही घणा दीसे छे, अखीले आ जगमांय;
बाळ रांडे के वृद्ध रांडे ते, घरे नहि मनमाय. सुणजो० ३.
नर होवे के नारी होवे, होवे पछी ते बाळ;
पोते तो बस लाडु खावा, भले गयो ते कौळ. सुणनो० ४.
मनुष्यंनुं जब मर्ण थाय छे, रडे पोकारी जेह;
तेह पछी तो खावा बेठा, शोक गयो निज गेहे. सुणजो० ५.
राक्षस पेटी घणा थया छे, जमवामां मशगूल;
धर्म न जाणे भेद न जाणे, भव सागरमां डूले. सुणजो० ६.
खर्च त्रियानो जब दिन आवे, करो पूजन धुमधाम;
रोनाराने शास्त्र वांचीने, समजावो सुख काम. सुणजो० ७.
आवा खर्चो कमी करीने, दान करो ते ठाम;
गुंवलाने साथे आवे, कर्या होय जे काम. सुणनो० ८.
तोज तमरो उदय थाशे, पाप थशे बहु दूर;
मोहन जैनी हेते कहे छे, बंध करो रुढी क्रूर. सुणनो० ९.

काणीसा मित्र मंडळी—काणीसा.

१. आसा. २. धम मंदिर. ३. घेर. ४. राक्षसना जेवा-सारां माठानो विचार नहि करनार. ५. डूबे. ६. बाळमानो. ७. धाउ. ८. घोडा.

आ ते लग्न के मनुष्य यज्ञ!

(૧)

અસંખ્યાત દ્વીપ સમુદ્રોથી સંગઠન થયેલી આ પૃથ્વી ઉપર મધ્યના જંબુદ્વિપમાં ભરત-નામે એક ક્ષેત્ર છે, કે જેની અંદર હિંદુ લોકો પવિત્રપણે જીવન ગાળી રહેલા છે, તે ક્ષેત્રની અંદર પવિત્ર ભૂમિથી બનેલો અને અનેક શહેરોથી શોભી રહેલો એવો ગુર્જર નામે દેશ છે, તે દેશમાં એક સાજનપુર નામે શહેર આવી રહેલું છે, જેમાં તેના નામ પ્રમાણે સાજન અર્થાત્ સજ્જન માણસો વસી રહેલા છે. વળી જેની અંદર અનેક સુવર્ણમય કલશોથી સુશોભિત એવાં જિન મંદિરો શોભી રહ્યા છે, કે જેની અનેક યાત્રીઓ યાત્રા કરે છે અને પુણ્યનો લાભ પ્રાપ્ત કરે છે. પ્રકૃતિ દેવીના સૌંદર્યની તો શહેરમાં મણાજ નથી. વળી એ શહેરમાં નર નારીઓ ધર્મપૂર્વક જીવન ગાળી રહેલા છે. તેઓમાં ઘણા જણ જૈન ધર્મનું પાલન કરનારા છે. તેઓમાં ધર્મ તરીકે બે પંથ પડેલા છે. જેમકે દિગંબર (દીશા રૂપી વસ્ત્રને ધારણ કરનાર, અર્થાત પરીગ્રહ સિવાયના નિર્ગ્રંથ), શ્વેતાંબર (શ્વેત અર્થાત સફેદ વસ્ત્ર ધારણ કરનાર). તેમાંના દિગંબરોમાં પણ દ્રવ્યલોલુપિ ભટ્ટારકોના પ્રતાપથી બે ગચ્છ થયેલા છે. જેમકે મૂળસંઘ અને કાષ્ટાસંઘ. એવા બન્ને તરહના દિગંબર જૈનો તે શહેરમાં વસી રહ્યા છે, જેમની જ્ઞાતિ ભટેવરા અર્થાત મેવાડાની છે.

અત્રે જે બીના વર્ણવવાની છે, તેમાં આવનાર પાત્રો ઉપરનીજ જ્ઞાતિના છે. તેમાં તેમનું મૂળ વતન ઉપરનુંજ શહેર છે, કે જ્યાં લગ્નાદિક ક્રિયા કરાવવા તેમને આવવું પડે છે. જે પ્રખ્યાત ઘટના બનેલી છે, તે વખતે વૈશાખ માસનો દિવસ હતો. તાપ રાજાએ સંપૂર્ણ અધિકાર ફેલાવ્યો હતો. બપોરના પવનના સપાટા ચાલી રહ્યા હતા. નગર જનો બાગ બગીચાનો આશ્રય લઈ બપોરા ગાળતા હતા, જેમાંના કોઇ હાસ્ય વિનોદ કરી રહ્યા હતા, તો કોઇ ભાંગ દેવીને આવકાર આપતા હતા, તો કોઇ નિંદ્રા દેવીનું સેવન કરતા હતા તો કોઇ નીચ પુરૂષો પરનિંદા આદિ કરી પાપનો બોજો લાવતા હતા, તો કોઇ ધર્મપ્રેમી ધર્માભ્યાસ કરી કાળ નિર્ગમન કરતા હતા. એવા સમયમાં ઉપરની જ્ઞાતિનો લગ્નગાળો આવી પહોંચ્યો, જેથી બહાર ગામથી લોકો આવી એકઠા થવા લાગ્યા ને છેવટે તમામ જૈનો એક માસની ફુરસદ મેળવી ઘેર વાળાં વાસી મનને આલ્હાદ આપવા પાટનગરમાં એકઠા થયા. તે વખતે શહેરની શોભા કંઇ જુદાજ પ્રકારની થઇ રહી હતી, એટલે કે વાટે કે ઘાટે, ચોરે કે ચૌટે, કુશેરી કે બજારે, પુર કે પાદર, ગામ કે વન, ઘર કે બહાર, જ્યાં ત્યા બસ પીળા ચાદલીયા અર્થાત્ લગનીયા જૈનોજ નજરે પડતા હતા, જેમાના ઘણા જણ પોતાના ગામમાં જૈન મંદિર નહીં હોવાના કારણથી અગર હોય તોપણ શ્રદ્ધાન નહીં હોવાના કારણથી પોતાને કોઇ દોષ ન આપે જેથી મોટા મોટા કેસરીઆ ચાંલ્લા કરી ફરતા હતા. બાકી નહોતા જતા તે મંદિરે કે નહોતી તેમની શ્રદ્ધા, પણ લોકોને જણાવવાના ખોટા આડંબરથી ચાલ્લા કરતા હતા અને સુખમાં કાળ વીતાડતા હતા. તે વખતે અનેક જમણો થતાં હોવાથી ગામની મજુરીયા વર્ગને દળવા ખાંડવાની રોજી ઠીક ચાલતી હતી અને જંગલનાં પંખીઓ જેવાં કે ગીધ, કાગડા, સમરી, વિગેરેને ખાવાનો ભક્ષ પણ ઠીક મળતો, જેથી તેઓ સંતોષ પામી તેમની ભાષામાં ગુપ્ત આશીર્વાદ આપતાં, જેથી જૈનોને બીજું કાંઇ ધર્મકાર્ય કરવાની જરૂર રહેતી નહિ અને ટૂંકામા તે કરતા પણ નહિ, પણ રાત્રે મંદિરના કંપાઉન્ડમાં અગર એવી બીજી જગ્યાએ એકત્ર થઇ સહેજ વાતો ચલાવી વિખેરાઇ જતા હતા, પણ નહીં કરતા

કોઇ સભા કે નહોતું આપતું કોઇ ભાષણ, જેથી એ જ્ઞાતિ પછાત પડેલી હતી, કારણ કે —"તે જ્ઞાતિ મૂળથી વહેમી ને વળી ભૂલે કરડ્યા" એમ કોઇ ધર્મના ઉંડા જ્ઞાનવાળો નહિ, તેમજ જે ઇંગ્લીશ ભણેલા છે તેઓ તો ધર્મશિક્ષણના અભાવે વદન નાસ્તિક થયેલા. કદાચ કોઇ ધાર્મિક લાગણીવાળા હશે તો તે તો બહાર પડનારજ નહિ, જેથી તેનું નામ કંઇજ નાહ. એ સૂત્ર પ્રમાણે તેઓ ઉન્નતિને રસ્તે ચઢી શકતા નહિ. તેમજ એવી સાતસો ઘરની જ્ઞાતિના પાટનગરમાં જ્યાં બંને ગચ્છના ભટ્ટારકો પડયા પાથર્યા રહે છે, તેમ તેમના પંડિતો પણ હોય છે, તે છતાં ત્યાં નથી જૈન શાસ્ત્ર શીખવવાની શાળા કે નથી રાત્રિ પાઠશાળા. એ બાબતમાં મુસલમાનોને ધન્યવાદ ઘટે છે કે તેમનાં જે ગામમાં પંદરેક ઘર હોય ત્યાં ઉર્દુશાળા હોયજ, તો તે પ્રમાણે આપણી સાતસો અરે બાજુનાં બસો ઘર વચ્ચે એક પણ પાઠશાળા નહિ, તે શું શરમાવવાની વાત નથી? બંધુઓ, ઉઠો, તૈયાર થાઓ; પાઠશાળા ખોલો અને તેમાં સભાના દરેકને પોતાના બાળકને ભણાવવાની ફરજ પાડો. તેમ ભટ્ટારકોને શિક્ષણ આપવાની ફરજ પાડો કે જેનાથી શિક્ષકનો પગાર ખચશે તેની સાથેજ આચાર્ય દ્વારા શિક્ષણ અપાશે તેથી બાળકો પણ હોશિયાર થશે, માટે તેને માટે અત્યારેજ ઠરાવ કરો અને પાઠશાળા સ્થાપન કરી બાળકોને જૈન દર્શનનું ઉંડું રહસ્ય સમજાવો, તોજ તમારો ઉદય જલદી થશે,

(૨)

હવે મૂળ વાત પર જઇએ. ઉપરની ધમાલ જે વખતે ચાલી રહી છે, તે અરસામાં એક ભેદભર્યું લગ્ન થવાનું હતું, જેનો મૂળ પ્રતિહાસ નીચે મુજબ છેઃ—

એક નદીસંગમ નામના ગામમાં રહેતો એક જૈન પુરુષ કે જેનું નામ ભીમાશા કરીને હતું તેને એક કન્યા ચૌદ પંદર વર્ષની ઉમરની હતી. તેનું સગપણ કરવાનું હતું ને લાયક વર મળતો નહીં, જેથી ભીમાશા તેમજ તેમનાં પત્ની શીલકોર ઉદાસ રહેતાં હતાં, તેજ અરસામાં (અર્થાત્ ઉપરના લગ્ન અવસરની પહેલાં ચાર માસ પર) એક શાહપુર નામના ગામડામાં રહેતા શેઠ જયકીસનદાસના પુત્ર ત્રિલોકચંદ કે જેની ઉમર ૪૮ વર્ષ લગભગની હતી, તેની સ્ત્રી મરણ પામી. તે મરનાર સ્ત્રી બીજીવારની હતી તેમ તેને ઘેર પુત્ર પુત્રીની સંતતિ પણ ઠીક હતી.

તે શ્રેષ્ઠી (બીજવર) ને ત્યાં ઉપરના ભીમાશાએ પોતાની કન્યાનું સગપણ કરવા એક માણસને મોકલ્યો, તેને કહેલું કે બરોબર તપાસ કરી યોગ્ય વર હોય તોજ સગપણ કરજો, નહિતો પાછા આવજો, પણ આવનાર માણસે ત્રિલોકચંદના બાપે ઇન્કાર કર્યો તે છતાં પરાણે પરાણે સગપણ નક્કી કર્યું. અરે! **દીવો સાથે રાખી કુવામાં** પડયો અથવા કહો કે પોતાના પગપર પોતેજ કુહાડો માર્યો. આવી રીતે કામ કરી તે માણસ પોતાને ગામ ગયો. પછી જ્યારે કન્યાના બાપને ખબર પડી કે વેવીશાળ કરેલો પુરુષ ૪૮ વર્ષની વૃદ્ધ ઉમરનો છે, તથા તેને બે ત્રણ સંતાન પણ છે, ત્યારે તેઓ ઘણા દિલગીર થયાં, પણ તે જ્ઞાતિમાં બદોબસ્ત હતો કે વેવીશાળ કરેલું જોડું મરે ત્યારે છુટું પડે, જેથી લાચાર થયાં. જ્ઞાતિના આવા કઠંગા રીવાજોને પણ ધિક્કાર છે કે જેનામાં ઉપરના જેવો અયોગ્ય લગ્નો થવા વખત આવે તે છતાં તે તોડવાનો ધારોજ નથી. તેમજ નાનપણમાં લગ્ન સંબંધમાં જોડી દે છે, જેથી કરી ઘણાં કજોડાં બને છે, જેનાથી સંસાર ઘણોજ દુઃખમય બની જાય છે, અને અંતે વંશવૃદ્ધિ પણ અટકે છે. માટે જૈનો,! વિચાર કરો અને આવાં સગપણ બંધ કરો તેની સાથે અયોગ્ય થયેલાં સગપણોને બીજી જગ્યાએ સગપણ કરવાની છૂટ આપો.

હવે સગપણ થયા પછી બધી વાત જણવામાં આવવાથી કન્યાનાં માબાપ દિલગીર થયા

તેની સાથે એમ પણ ધારીનેજ બેઠાં કે ક્યારે એમાંથી એકનું મૃત્યુ થાય કે-આપણને જંપ વળે, પણ 'કરણી તેવી પાર ઉતરણી,' એ અનુસાર તેમ બન્યું નહિ, પણ જોડું કાયમ રહ્યું. હવે **લગ્નગાળો** નજીકમાં આવવા લાગ્યો, તેમ તેમ કન્યાનાં માબાપ વધુ વધુ દિલગીર થવા લાગ્યાં અને એ ચિંતાને લીધે એમનું શરીર ઘણું શોષાવા લાગ્યું, પણ ઇલાજ હતો નહિ. એટલે કરે શું? .

ધીમે ધીમે **વૈશાખ** માસ આવી પહોંચ્યો અને કન્યા મોટી ઉમરની થયેલી, તેમજ ભરાવદાર બાંધાની હોવાથી લગ્ન લીધા સિવાય છુટકો નહિ. કારણ કહ્યું છે કે-જે પુરુષ રજુવંતી કન્યાને પોતાને ઘેર રાખે છે, તે પોતાના પુત્ર સહિત બાલહત્યા નામના પાપમા પડે છે. એ દૃષ્ટાંતને યાદ આણી કન્યાના બાપે લગ્ન જોવરાવવા જ્યોતિષીને આમંત્રણ કર્યું. જોશીએ આવી લગ્ન નક્કી કર્યું, પણ કન્યાના કર્મને દોષે કહો કે પછી જોશીની ભુલને લીધે લગ્નમાં ખામી હતી, તે જોશીના જાણવામાં આવી નહિ અને **બીજ** મહુર્તે લગ્ન દિવસ મુકરર કર્યો, ને તરતજ પત્રિકામાં લખી કન્યાના સાસરે રવાના કરી આ તરફ કન્યા શિક્ષિત હોવાથી ને તેનો પતિ વૃદ્ધ છે, એમ તેના જાણવામાં આવવાથી છાતીફાટ કલ્પાંત કરવા લાગી. તેમજ તેનાં માતા પિતા પણ ગુપ્ત રીતે રડતા હતાં, પણ ઇલાજ હતો નહિ.

લગ્ન દિવસ મુકરર થયા પછી કન્યાના બાપને એવા બે માણસોની ખોટ પડી કે જેના સિવાય તેને ચાલે નહિ તેમજ લગ્ન વખતે પણ તેઓની જરૂર પડત, પણ કર્મ બળવાન છે, એ વાત ધ્યાનમાં રાખી લગ્ન કાર્યને માટે બન્ને પક્ષના માણસો પાટનગરમાં પોતાના ગૃહ સંસાર સહિત આવી પહોંચ્યા અને ત્યાં કેવી રીતે રહેવા લાગ્યા તે વાત પાછળ આવી ગઇ છે.

હવે લગ્નગે (લગ્ન અવસરે) પાપડ તથા વડી બન્ને ઘેર થવા લાગ્યાં, પણ એકે તરફના માણસો પ્રસન્ન હતા નહિ. પછી શુભ મુહર્તે બન્નેને ઘેર **માંડવા મુહૂર્ત** અર્થાત સ્તંભારોપણ કર્યું, પણ બીજાં લગ્નની માફક વાજાંનો ધ્વનિ તથા **મંગલ ગીતો તો એકે તરફ હતાંજ** નહિ, જેથી પ્રેક્ષકના મનમાં એમ થયા વિના રહેતું નહિ કે આ નીચ વર્ણના નાતરા કરતાં પણ ભૂંડો બનાવ છે. લગ્નને દિવસે સવારથી **કન્યાના રૂદનનો પાર હતો** નહિ. બન્નેએ પીઠી ચોળી અને મિથ્યાત્વી ચાલ, ગોત્રઘરો, શાંતક, કન્યાનું વરના ઘર પર સેવો જમવા આવવું, કન્યાને ત્યાં વરનું જમવા જવું, વિગેરે કાર્ય થયા.

લગ્ન સમયે આપણા **બુઢ્ઢા વરરાજા** એક નાજુક ઘોડા પર સ્વાર થઇ પાંચ માણસના સરઘસ સહિત અપ્રસન્નતાથી કન્યાના માંડવે આવી ઉપસ્થિત થયા. કલાક ઉભા રહ્યા પણ **કન્યાની માતા પોંકવા આવે** નહિ, કારણ કે પોતાની કન્યાને આવા રાક્ષસ જેવા પતિ સાથે પરણાવવા તેની હિંમત ચાલતી નહિ અને તે એટલી ધ્રુજતી હતી કે તેનાથી ઉભું પણ રહી શકાતું નહિ તથા તે વખતે કન્યાનો બાપ તો એવો જણાતો હતો કે કોઇ સ્મશાની માણસ હોય.

ઘણું ઘણું સમજાવ્યા પછી કન્યાની માતાએ ધ્રુજતે હૃદયે વરરાજાને પોંખીને મંડપમાં લીધા અને બાજઠ પર બેસાડયા. ઘણો વખત થયો, પણ ગોર આવ્યો નહિ કારણ કે આખી જ્ઞાતિમાં ગોર બે કે ત્રણ હતા. તેમજ તેને તે રાત્રે ત્રણ લગ્ન કરાવવાનાં હતાં, જેથી બીજી જગ્યાએ લગ્ન કરાવવા ગયો હતો. બંધુઓ! વિચાર કરો કે-તમારાં સંતાનોના લગ્ન યોગ્ય મુહૂર્તે થવાં નથી, તો પછીથી સુખી ક્યાંથી થાય, કારણકે કેટલોક કાળ (વખત) એવો હોય છે કે જેમાં સારૂં કાર્ય કરીએ તો તેનો વિનાશજ થાય છે, તો લગ્નનું શ્રેય ક્યાંથી થાય? માટે વિચાર કરો અને જ્ઞાતિમાં ગોરની વૃદ્ધિ કરો, તેની સાથે ગોરને યોગ્ય વખતે આવવા ફરજ પાડો, તેજ વખે

સુખી થશો ને સંસાર પણ સુખમય નિવડશે, માટે ગોરને તો મુહૂર્તેજ આવવા ફરજ પાડો. હવે લગ્ન વખત નીકળી ગયા પછી (કારણકે કન્યાનું ભાગ્યજ વાંકું હતું) ગોર આવી પહોંચ્યો. તેણે આવી એકાદ કવિતા બોલી (કારણકે તેને સંસ્કૃત જ્ઞાન હતું નહિ, તેમ જીભ પણ લથડાવી હતી) કન્યાને પધરાવરાવી તે વખતે કન્યા **છાતીફાટ રૂદન** કરતી હતી. પછી હાથજોડ (બ્રાહ્મણોમાં પૂજા વખતે કરવાની વિધિ) કરાવી વર કન્યાને **હસ્ત મેલાપ** કરાવ્યો અને અગ્નિના ફેરા વરકન્યાને ફેરવ્યા, તે વખતે ગોર બે ત્રણ શાર્દુલવિક્રિડીત છંદ ગુજરાતીમાં અશુદ્ધ ભાષામાં બોલતો બોલતો હતો. જે વખતે વરરાજાએ કન્યાના **હસ્તનું ગ્રહણ** કર્યું, તે વખતે કન્યા **કંપારી** ખાઇ પડતી પડતી રહી ગઇ, તોપણ કઠણ હૃદયના માણસો પર તેમની કંઇ અસર થઈ નહિ. રંગ ઠીક જામ્યો હતો કે લગ્ન વખતે પણ ગીત નહિ તેમ મંગલ ઘોષ નહિ. અહા! શું કર્મ દેવતાનું તાત્પર્ય છે કે તેને લીધે માણસો આ દુનિયા રૂપી રંગ ભૂમિ પર કેવા કેવા ખેલ કરી રહે છે. લગ્ન પૂર્ણ થયું અને વરરાજા પોતાને ઘેર કન્યા સાહિત પધાર્યા. ઘરની પુત્રીઓ નવી માને દેખી આનંદ પામી, પણ નવી માના પેટમાં તેલ રેડાતું હતું. કન્યાને તેનો બાપ પોતાને ઘેર તેડી ગયો.

(૩)

દિવાળી આવી. વધુ-પ્રવેશ કરાવવા અર્થાત્ વહુને તેડવા વરનો ભાઇ મહીપુર ગયો ને ત્યાંથી રડની કકળતી તે કન્યાને તેડી લાવ્યો. રાત્રે ગૃહસ્થ ધર્મની સાધનાને માટે કન્યા પતિના શયન ભુવનમાં ગઇ, પણ પતિનું વીર્ય વૃદ્ધાવસ્થાને લીધે નિસ્તેજ થયેલું હોવાથી કંઇ લાભ મેળવી શકી નહિ. આ પહેલાજ દિવસના સહવાસ પછી કન્યાને પોતાપર ગુજરનાર દુઃખ સ્વપ્રે પૂર્ણ ખાત્રી થઇ, પણ આ વખત ગામમાં અજાણ હોવાથી તેમજ ઘરમાં બીજાં માણસો હોવાથી કંઇ થઈ શક્યું નહિ, પણ ફરીથી પીયેર જઇ આવ્યા પછી તો તે ઘરની ને ગામની પૂર્ણ માહીતગાર થઇ, જેથી તેણી શેરીમાંની સ્ત્રીઓની સોબત કરવા લાગી, અને એમ કરતાં કરતાં તે સ્ત્રીઓએ તેને નીચ કૃત્ય કે જેને આપણે વ્યભિચાર કહીએ છીએ તે કરવા શીખવ્યું, અને તેણે પણ તે કૃત્ય કરવા કોશીશ કરવા માંડી, કારણકે તેને વૃદ્ધ પતિથી પૂર્ણ સંતોષ મળતો નહિ, તેમ નીચ સ્ત્રીઓની શીખવણીથી તે તે કૃત્ય તરફ વળી. ધિક્કાર છે તેમને કે જે પોતે નીચ કૃત્યો કરી બીજાને પણ તેવાં કામ કરવા શિખવે છે. આ દુનિયા પરથી તેવા માણસો ક્યારે નાશ પામશે કે, જેથી લોકો આવાં કૃત્ય કરતાં બચશે.

ધીરે ધીરે તે સ્ત્રીએ લાયક જારની તપાસ કરવા માંડી. ને તે તેને મળી પણ ગયો કે જે પણ એક જૈનજ હતો. અરે! તેને શું કહેવો ઠીક પડશે કારણ કે જે પોતાનીજ જ્ઞાતિની સ્ત્રીનું શીલ તોડવા ઉભો થયો છે. પછી તે સ્ત્રી તે તરુણ સાથે દિવસો ગુજારવા લાગી. આ વાતની જો કે તેના પતિને ખબર થઇ હતી, પણ પોતાનામાં શક્તિ હતી નહિ જેથી તે સમજીને કંઇ બોલતોજ નહિ.

પુત્રીના નીચ કર્મની જ્યારે તેની માતાને ખબર પડી, ત્યારે તે કલ્પાંત કરવા લાગી કે મેં ભૂલથી મારી પુત્રીને વૃદ્ધ પુરુષ સાથે પરણાવી, જેથી તે પોતાના ધર્મ પર પાણી ફેરવવા લાગી. હાય! મને ધિક્કાર છે, કે મેં આવી નીચ બુદ્ધિની પુત્રીને જન્મ આપ્યો. જો જમીન જગ્યા આપે તો સમાઇ જાઉં એવી રીતે રાત્રિ દિનના કલ્પાંતને અંતે તે જમ સદનમાં પહોંચી ગઈ અર્થાત્ મરણને શરણ થઈ.

આ નરક પેદા તરુણ પુરુષની સાથે તે સ્ત્રી દિવસો વીતાવતી હતી. પછી એક દિવસ બંને પ્રેમી હાસ્ય વિનોદ કરી રહ્યાં હતાં, તે હાસ્યને બદલે તરુણે પ્રશ્ન કર્યો કે વહાલા! આમ આપણે ગુપ્તપણે ક્યાં સુધી રહીશું.

જો હું આ ખોખલાને ઠેકાણે કરી દઉં, તો આપણે મનગમતા ભોગ ભોગવીએ. સ્ત્રીએ કહ્યું કે વહાલા, એ વાત ખરી પણ તેમનો નાશ કેવી રીતે કરવો તે જણાવો તો પછી કામ ફતેહ થઇ જાય. તરૂણે કહ્યું કે તું આજે તેને આ પડીકું ભોજનમાં સાથે આપજે (તે પુરૂષે સોમલનું પડીકું તે દિવસે આપ્યું હતું) જેથી ચાર દિવસમાં ધીમે ધીમે પલળીને તે ડોસો નાશ પામશે અને આપણા આ કૃત્યની કોઇને ખબર થશે નહિ. શાથી કે—ચાર દિવસના મંદવાડ પછીજ ડોસાનું મરણ થશે, માટે તું વારે આ કામ કરજે. હું હવે જાઉં છું કારણ ડોસાને આવવાનો વખત થઇ ગયો છે. પછી તરૂણ પોતાને ઘેર ગયો. અને તે સ્ત્રીનો પતિ ઘેર આવ્યો એટલે ભોજનમાં વિષનો પ્રયોગ અજમાવ્યો. અરે! **પોતે પોતાની મેળે વિધવા થવા તૈયાર થઇ!** અરે! નીચ વિષય સુખ! તને ધિક્કાર છે કે તું તારો અધિકાર જમાવી માણસ પાસે ન કરાવવાનાં કૃત્ય કરાવી બેસે છે

ચાર દિવસે ઝેર દ્વારા ડોસો મરણ પામ્યો અને તરૂણ તેમજ તે દુષ્ટ સ્ત્રી પ્રસન્ન થયાં, પણ બહારના ખોટા આડંબરથી તે સ્ત્રીએ છાતીફાટ કલ્પાંત કરવા માંડ્યું અને પોતાના માતાપિતાને ગાળો દેવા માંડી કે ઓ દુષ્ટ માબાપ ! તમને બીજો મારો વર મળ્યો નહીં કે આવા ટુંક આયુષ્યવાળા સાથે મારૂં લગ્ન કર્યું ? **જો તમને વર ન મળ્યો તો મને મારી નાંખવી હતી, પણ આવી વિધવા બનાવવી નહોતી.**

(૪)

શેઠની આબરૂ ગામમાં ઠીક હતી. જેથી લોકો ઘણા દિલગીર થયા અને સગાંવહાલાં કાણે આવવા લાગ્યાં, જેમાંનાં જે ખરી લાગણીવાળાં હતાં તે તો અંતઃકરણથી રડતાં હતાં, પણ જે દેખાદેખી આવતાં હતાં તે તો ઉલટી તે સ્ત્રીના કૃત્યની વાતો કરતાં ને બારમાનું ક્યારે થશે તે પૂછતાં. સ્ત્રીઓ ચકલે ચકલે છાતી ખુલ્લી કરી કૂટતી હતી ને રાજીયાં ગાતી હતી. અહા! કેવો નીચ સમય કે જે જૈનોની સ્ત્રી પડદે રહી કોઇ પુરૂષને પોતાનું મુખ પણ બતાવતી નહિ, તેજ જૈનોની સ્ત્રીઓ ચકલે ને વળી પુરૂષોની હદ વચ્ચે ઉઘાડી છાતીએ કૂટે છે. અહા! કળીકાળ! તને ધિક્કાર છે, કે, તું જળને ઠેકાણે સ્થળ ને સ્થળને ઠેકાણે જળ બનાવવા બેઠો છે.

બાર દિવસ સુધી લોકો કાણે આવવા લાગ્યા, પણ પછી તો ધીમે ધીમે બંધ થયા, ને સ્ત્રીને ગામના જૈનોએ બારમાની સામગ્રી કરવા સમજાવવા માંડી. અને સામગ્રી થઇને **બારમાનો દિવસ** નક્કી થયો, ને તે યુવાન સ્ત્રીના પતિનું બારમું ખાવા ગામેગામથી સગાંવહાલા એકઠાં થયાં, ને જમી જમી પોતાને ઘેર ગયાં ને સ્ત્રીએ પણ ધીમે ધીમે શોકને તિલાંજલી આપવા માંડી.

તે સ્ત્રીનો બાપ તો પોતાની કન્યા રંડાવાથી ઘણો ખેદખિન્ન થયો ને તેજ ચિંતામાં તે પણ મૃત્યુ પામ્યો. અરે! એકજ કન્યાના વૃદ્ધ સાથે લગ્ન થવાથી ચાર માણસો નાશ પામ્યાં ને હજુ કોણ જાણે શુંએ થશે? જેમ જેમ દિવસો વીતવા ગયા તેમ તેમ સ્ત્રીએ શોક સમાપ્ત કરવા માંડ્યો ને આખરે પહેલાંની માફક પોતાના જારની સાથે છુટથી વ્યભિચાર કરવા લાગી. આનાં આ કૃત્યથી તેની ઓળમાની કન્યાઓ પણ ખેદખિન્ન થઇ બાપને ઘેર આવતી બંધ થઇ. આ વાત ધીમે ધીમે આખી જ્ઞાતિમાં ફેલાઇ ગઇ ને તેને ઘણા જણ શિખામણ દેવા આવ્યા, પણ યુવાની વિકાર સમાવી ન શકવાથી કોઇની વાત ધ્યાનમાં લીધી નહિ ને ઇચ્છાનુસાર નીચ કૃત્ય કરવા લાગી. પુરૂષ તે સ્ત્રીને તે ગામમાંથી નાશી જવાનું સૂચવતો હતો, પણ થવા કાળના મોઢા આગળ કોઇ ડાહ્યું નથી, જેથી તેણે માન્યું નહિ કે તેને તે જારથી ગર્ભ રહ્યો ને તે તેણે, આખરે સ્રાવ કરવા ઘણી મહેનત લીધી, પણ

कार्य करनेमें कायर व डरपोक न हों—यदि शांतिसे धर्म पालते हुए मरण भी होजाय या कोई मार भी डाले तो भी कोई हर्ज नहीं है क्योंकि धर्मार्थ प्राण विर्जन शुभ गतिका कारण है। ऐ दिगम्बर जैनियो! अपने पैरों खड़े हो—पर्वतराजकी भक्तिमें दृढ़ रहो कोई रोके रुको नहीं किंतु महान कष्ट सह कर धर्म पालो। जिन टोंकोंसे तीर्थंकरोंने मुक्ति पाई है वे हर एक जैनको माननीय हैं—उनकी भक्ति करना अपना धर्म है—यदि कोई धर्म साधन न करने दे तो प्राणत्यागना भला है पर धर्मकी रूकावटका अपमान अच्छा नहीं।

यदि कोई श्वेताम्बरी इसी रुकावट डालनेमें ही धर्म समझते हों तो समझें पर जो जैन धर्मसे कुछ भी विज्ञ है वह ऐसी रुकावट डाल कर अपने लिये महान अंतरायकर्मका बंध नहीं कर सकता। यदि महात्मा गांधीके समान सत्य पर कायम रहोगे व स्वयं दुःख सहोगे, दूसरोंको कष्ट न दोगे अवश्य तुम्हारे धार्मिक हकोंकी रक्षा होगी।

ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी।

क्या 'अर्जुन' नहीं छूटेंगे?

क्या पण्डित अर्जुनलालजी सेठी काराग्रहकी घोर यातनाएँ सहते ही रहेंगे? हमारे तन्त्र मन्त्र सब रक्खे ही रहेंगे, उनसे कुछ सफलता न होगी? क्या सरकारको उचित है कि वह निरपराध, धर्मश्रद्धालु व्यक्तिको काराग्रहमें डालकर उसकी धार्मिक क्रियाओं और विचारोंमें विघ्न डाले? जिस व्यक्तिने आनतक अपने जीवनमें किसीका बुरा नहीं विचारा, जिसने समाजके हितके लिये सभा, समितियां खोलकर समाजका उपकार किया, आज वे ही पं० अर्जुनलाल सेठी काराग्रहकी यातनायें भोग रहे हैं।

प्यारे जैन जातिके वीरो! यदि तुम अकलंककी सन्तान कहलाते हो, यदि तुम जातिका उद्धार करना चाहते हो, तो तुम ऐसी घोर निद्राको त्यागो, उठो, जागो। सब जातियां अपनी२ उन्नतिके लिये आगे पैर बढ़ा रही हैं, तुम भी कुछ कर डालोगे तो अच्छा है। तुम्हारी जातिका नेता, शिक्षाप्रेमी, धर्म श्रद्धालु, जैन समाजको जीवन अर्पण करनेवालेको क्यों नहीं अन्यायसे बचाते, अपनी न्यायरूपी कृपाणसे क्यों रक्षा नहीं करते, अब तन, मन, धनसे **प्रण** और **ऐक्यता**से यदि काम करोगे तो मैं दावेके साथ कह सकता हूं कि आप अपने कार्यमें सफलता प्राप्त कर सकोगे। शिक्षा प्रेमीको तो क्या यदि आप चाहेंगे तो सुमेरुको भी हिलाकर उखाड़कर फैंक सकते हैं—एक महात्माका वचन है कि—

चारिमनें चारि हूं दिशातें चार कोन गहि,
मेरुको हिलायके उखारें तो उखरि जाय॥

इसलिये प्यारे मित्रो! आप अपने हृदयमें प्रण और ऐक्यताको रखकर काम करो। यही उन्नतिकी जड़ और सब सुखोंका भण्डार है। प्रण व ऐक्यता करनेवालोंसे क्या क्या सिद्ध नहीं होता? अर्थात् सब कार्य सिद्ध होसकते हैं। अतः निम्नलिखित कविताको हृदयपट पर घोर आन्दोलन करो, यही मेरी भावना है—

प्रण।

वैर प्रीति करिवेकी मनमें राखै शक,
 राज राव देखिके न छाती धाकै धारकी।
अपनी उमगकी निवाहिवे की चाह जिन्हे,
 एकसो दिखात तिन्हें बाघ और बाकरी ॥१॥
ठाकुर कहत मैं विचार कईबार देख्यो,
 यहै मरदाननकी एक बात आकरी।
गही जौन गही जौन छाड़ी तौन छाड़ी दई,
 करी तौन करी बात ना करी सो ना करी ॥१॥

ऐक्यता।

शामिलमे पीरमें शरीरमें न राखै भेद,
 हिम्मतसे कपट उघारै तो उघरि जाय।
ऐसो ठान ठानै तो विना हू जन्त्र मन्त्र कीन्हें,
 सापके जहरको उतारै तो उतरि जाय॥
ठाकुर कहत कुछ कठिन न जानौ यह,
 हिम्मत किये ते कहो कहा न सुधरि जाय।
चारि जनें चारि हू दिशातें चार कोन गहि,
 मेरुको हिलायके उखारै ता उखरि जाय ॥२॥

सतीशचन्द्र गुप्त, सूरत।

"सेठ नवलचंद हीराचंद–स्मारक फंड."

જૈન કોમને અંધકારમાંથી ઉન્નતિને માર્ગે દોરનાર મુંબાઇ નિવાસી શેઠ નવલચંદ હીરાચંદ ઝવેરીની યાદગીરી કાયમ રાખવાને માટે શેઠ હીરાચંદ ગુમાનજી જૈન બોર્ડિંગને અંગે ખોલવામાં આવેલા 'શેઠ નવલચંદ હીરાચંદ સ્મારક ફંડ'માં નિમ્ન લિખિત સદ્ગૃહસ્થો તરફથી નીચે પ્રમાણે રકમ ભરાયાં આવી છે, જે ઘણા આભારસહ સ્વીકારીએ છીએ.

૨૫૧) શ્રીમાન શેઠ ગુ સુખરાય સુખાનંદજી
૧૦૧) શ્રી શેઠ સુરજમલ લલ્લુભાઇ ઝવેરી
૧૦૧) ,, શેઠ નાથારંગજી
૧૨૫) ,, શેઠ તુલસીદાસ તીભોવનદાસ
૧૦૧) શ્રી શેઠ નારણદાસ અર્જુનમલ
૫૧) ,, ,, બાબુ જુગમંદિરલાલજી જૈની
૧૧) ,, ,, જૈની વિષ્ણુ મીઠારામ
૫૧) ,, ,, મોહનલાલ ચુનીલાલ
૫) ,, ,, ગોરધનદાસ જગજીવનદાસ
૫૧) ,, ,, માધવદાસ અમરસી
૫૧) ,, ,, સુરજમલ ભોજુભાય સોલીસીટર
૫૧) ,, ,, ચુનીલાલ હેમચંદ જરીવાળા
૪૧) ,, ,, ઠાકોરદાસ ભગવાનદાસ ઝવેરી
૪૧) ,, ,, જયચંદ માનચંદ
૩૧) ,, ,, ભાઇશંકરગુભાઇ મીયાંચંદભાઇ
૪૧) ,, ,, લલ્લુભાઇ લક્ષ્મીચંદ ચોકસી
૨૫) ,, ,, મથુરદાસ લાલજી
૨૧) ,, ,, જીવનલાલ ત્રીભોવનદાસ
૧૩) ,, ,, નાનચંદ કસ્તુરચંદ મોદી
૧૧) ,, ,, અમરતલાલ વિઠ્ઠલદાસ ધામી
૧૫) ,, ,, મગનલાલ દામોદરદાસ
૧૫) ,, ,, માણેકચંદ લાલચંદ ચોકસી
૫) ,, ,, અરમણજી બમનજી વૈદ્ય
૭) ,, ,, મનોહરલાલજી પંડિત
૫) ,, ,, શંકર કાશીનાથ સોની
૧૧) ,, ,, કસ્તુરચંદ ખેચરદાસ
૨૧) ,, ,, જેસીંગભાઇ મછાચંદ
૧૫) ,, ,, કાપડીઆ જે. સી એન્ડ કો
૧૭) ,, ,, મનસુખલાલ તથા મોહનલાલ
૨) ,, ,, સોમચંદ બાપરદાસ
૨૧) ,, ,, નારણદાસ પરસોતમદાસ
૧૧) ,, ,, નાથુભાઇ હેરીદાસ
૭) ,, ,, હીરાચંદ ઉગરચંદ
૧૫) ,, ,, અમથાલાલ ખેમચંદ
૧૫) ,, ,, સી. આર. દેશાઇ
૧૦) ,, ,, મોહનલાલ મોતીચંદ
૧૫) ,, ,, પ્રેમચંદ ધનચંદ
૧૦) ,, ,, નિહાલચંદ ગીરધરલાલજી
૭) ,, ,, માણેકચંદજી એનાડા
૭) ,, ,, બિહારીલાલજી
૫) ,, ,, બાલચંદ મહાદેવ

११) શ્રી શેઠ રાધુભાઇ દેવચંદ દોભાડા
७) ,, ,, જૈન ગ્રંથ રત્નાકર કાર્યાલય
११) ,, ,, રામચંદ મોતીચંદ
५) ,, ,, નારણદાસ રણછોડદાસ
३१) ,, ,, મથુરદાસ મનજી
११) ,, ,, ઝવેરલાલ શંકરલાલ
५१) ,, ,, પ્રેમચંદ મોતીચંદ
५१) ,, ,, રતનચંદ ખીમચંદ સંઘવી
५) ,, રતીલાલ મગનલાલ દેશાઇ
३) ,, ,, મોતીલાલ ધરમચંદ કોઠારી
३) ,, ,, કાલીદાસ ફુલચંદ શાહ
४) ,, કેશવલાલ દલાભાઇ શાહ
१) ,, ,, એ૦.જે૦ પાટીલ
२) ,, ,, દીપચંદ ભાઇચંદ શાહ
२१) ,, ,, મનોહરલાલ મુકુંદીલાલ
१०२) ,, ,, પ્રેમાનંદ નારણદાસ
१५) ,, ,, જેઠાલાલ ત્રીકમદાસ
५) ,, ,, માણેકલાલ શામજી ઝાંટકીઆ
११) ,, ,, ગણપત ઉગરચંદ મોદી
१०) ,, ,, કેવળદાસ કીલાભાઇ
२५) ,, ,, એમ૦ એલ૦ વર્ધમાનૈયા
५) ,, ,, ચીમનલાલ નેમચંદ
५) ,, ,, હરજીવનદાસ રાયચંદ શાહ
२) ,, ,, સી૦ એલ૦ મહેતા
२) ,, ,, ચંદુલાલ શકરચંદ
२) ,, ,, એક ઓર્ડર
५) ,, ,, એચ. જી. મહેતા
३) ,, ,, ડી. પી. શાહ
५) ,, ,, મોહનલાલ દલીચંદ દેશાઇ
७) ,, ,, મકનજી જુઠાભાઇ મહેતા
२) ,, ,, ખીમચંદ અમરચંદ દીવાન
१) ,, ,, ચંદુલાલ અમરતલાલ
२) ,, ,, મોહનલાલ પ્રેમચંદ શાહ
) ,, ,, એન. કે. શાહ
) ,, ,, ચુનીલાલ શીવલાલ શાહ
,, ડાલાભાઇ મગનલાલ પરીખ
,, ભાઇલાલ કાળીદાસ શાહ

१. कि कारा और त्यागमतके

४) શ્રી શેઠ દામોદરદાસ વ્રજલાલ
२) ,, ,, સી. એસ. સંઘવી
२) ,, ,, વી. એમ. લાકડાવાળો
१) ,, ,, આર. જી. ગુજર
३) ,, ,, સી. એલ. મહેતા
१०) ,, ,, સાયમા મેવાડા પંચ
३) ,, ,, મગનલાલ વલમજી
२) ,, ,, હીમતલાલ વરજીવનદાસ
२०) ,, ,, એ. બી. લઠ્ઠે એમ. એ.
२५) ,, ,, માનાજીરાવ અને ખેરાજ ઓધા
२) ,, ,, શા. તલકચંદ નરોતમદાસ
३) ,, ,, ચીમનલાલ નરસિંહદાસ
५) ,, ,, ડી. વાય. આલટેકર
२५) ,, ,, સુલેમાનજી ડોસાભાઇ
५१) ,, ,, અનુપચંદ માણેકચંદ
२१) ,, ,, કુંદનજી કપુરચંદ ધિયાવાળા
५१) ,, ,, સદાશીવ લક્ષ્મણ
११) ,, ,, છગનલાલ બેહેચરદાસ
११) ,, ,, ચુનીલાલ વેણીદાસ
२) ,, ,, નેમચંદ ઊગરચંદ
१) ,, ,, એલ એ. શાહ
११) ,, ,, તલકચંદ સખારામ
१) ,, ,, ડી. કે. શાહ
११) ,, ,, મોતીચંદગીરધરલાલ સોલીસીટર
१५) ,, ,, રીખવદાસ મન્નાલાલ
२५) ,, ,, શીવજીભાઇ દેવશીભાઇ
१५) ,, ,, ચુનીલાલ કાળીદાસ
१) ,, ,, છોટાલાલ બેહેચરદાસ
१) ,, ,, એ. સી. શાહ
१०) ,, ,, છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી
२५) ,, ,, ભગવાનદાસ છગન પનજી
२) ,, ,, એસ. પી. ખજાસુરીઆ
१) ,, ,, જે. એમ. ગુજર
२) ,, ,, એલ. એ. ફલટાણી
२) ,, ,, બી. એ. ભોગાર
२) ,, ,, મુલચંદ બેહેચરદાસ
३) ,, ,, ગુંજલ પી. એમ.

॥ वीतरागाय नमः ॥

दिगंबर जैन.

THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कथाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
सद्बोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्तताम्, दैगम्बर जैन समाज मात्रम् ॥

वर्ष १० वाँ. ‖ वीर संवत् २४४४. फाल्गुन विक्रम सं० १९७४ ‖ अंक ४.

वीर प्रार्थना ।



हे शुभ दर्श,
हो मम हर्ष,
दर्शन देकर मुझे शांति दो,
प्रेम सुधाकी विमल कांति दो ॥१॥

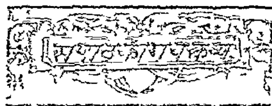
जाति उद्धार,
हृदय उद्गार
जाति उद्धारका मार्ग बतादो,
हृदय-कमलको शीघ्र खिलादो ॥२॥

ऋषि सन्तान,
कृषि विज्ञान,
सच्ची ऋषि सन्तान बनादो,
कृषि-शास्त्र पाठ पढ़ादो, ॥३॥

स्वराज्य तन,
जैन मैन,
हमें स्वराज्यकी शान दिखादो,
नहीं हमारा मन बनादो ॥४॥

सुयोग दृष्टि,
सुभोग वृष्टि,
योग शास्त्रका पाठ बनादो,
सुयोगका दृढ़ गेह बनादो ॥५॥

सतीशचन्द्र जैन-मुरार।



महावीर जयंतिका कर्तव्य।

करीब पांच, छह वर्ष हुए जैनोंमें महावीर जयंतिका उत्सव मनानेकी प्रथाका प्रादुर्भाव हुआ है और वह उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है, यह योग्य ही है। इस वर्ष भी यह शुभ दिन आगामी चैत्र सुदी १३ के दिन आ पहुंचा है। यह वही परम पवित्र दिन है जो आजसे २५१६ वर्ष ऊपर कुंडलपुर नगरमें अपने चौबीसवें (अंतिम) तीर्थंकर श्री महावीर यानी वर्द्धमान प्रभुने सिद्धार्थ राजाके गृहपर माता त्रिशलाके उदरसे जन्म लिया था, और देश-स्थानपर आनंद हो गया था। हम अपने और अपने माता, पिता, पुत्रादिका जन्म दिन मनाते ही हैं तो हमें हमारे महावीर प्रभुके जन्म दिनको क्या धूमधामसे नहीं मनाना चाहिये? अभी भी नहीं। महापुरुषोंके गुणोंका स्मरण करनेके लिये उनकी जयंति मनाना आवश्यक ही है, और ऐसी यह जयंति जो हमें इस कार्य